सचित्र ज्योतिष-शिक्षा

तृतीय (फलित) खण्ड

(द्वितीय भाग)

बी० एल० ठाकुर ज्योतिषाचार्य
सिंहसदन
नरसिंहपुर (मध्यप्रदेश)

मोती लाल बनारसी दास
दिल्ली - पटना - वाराणसी

सचित्र ज्योतिष-शिक्षा

तृतीय (फलित) खण्ड

(द्वितीय भाग)

बी० एल० ठाकुर ज्योतिषाचार्य
सिंहसदन
नरसिंहपुर (मध्यप्रदेश)

मोतीलाल बनारसीदास
दिल्ली : : वाराणसी : : पटना

© मोतीलाल बनारसीदास
मुख्य कार्यालय : बंगलो रोड, जवाहरनगर, दिल्ली–७
शाखाएँ : (१) चौक, वाराणसी–१
(२) अशोक राजपथ, पटना–४

प्रथम संस्करण, वाराणसी १९७४

मूल्य : रु० २४·००

श्री सुन्दरलाल जैन, मोतीलाल बनारसीदास चौक, वाराणसी
द्वारा प्रकाशित तथा केशव मुद्रणालय, खजुरी,
वाराणसी–२ द्वारा मुद्रित

विषय-सूची

तृतीय (फलित) खण्ड—द्वितीय भाग

अध्याय	विषय	पृष्ठ
१	ग्रहों की दृष्टि का फल	१
२	अनेक ग्रहों के एक राशि में होने का फल	२५
३	योग विचार	४८
४	षड्वर्ग विचार	५९
५	अष्टक वर्ग	९४
६	गोचर विचार	१५१
७	सर्वतोभद्र चक्र	१८२
८	आयुर्दाय विचार	२०३
९	मारक स्थान	२५४
१०	नीरोगता	३०
११	राजयोग	३१
१२	नाभस आदि योग	४००

अध्याय १

ग्रहों की दृष्टि का फल

(१) सूर्य पर भिन्न-भिन्न ग्रहों की दृष्टि का फल

(१) भौम स्थानी (१-८ राशि के) सूर्य पर दृष्टि

चंद्र की दृष्टि—दान धर्म युक्त, बहुत नौकरों वाला, कोमल, निर्मल देह, अपना घर उसको बड़ा प्यारा।

मंगल की - क्रूर, संग्राम में धीर, आँखें पैर लालवर्ण, पूर्ण बलवान्।

बुध की—सुख और पराक्रम तथा धन से हीन, दूतों का काम करने वाला, परदेश वासी, सदा मलिन, शत्रु युक्त।

गुरु की—राजा का मंत्री, दानी, दयावान्, बहुत धन वाला, अपने कुटुम्ब में श्रेष्ठ।

शुक्र की—हीन वर्ण की स्त्री का प्रेमी, अत्यन्त दीन, धनहीन, दुष्ट मित्रों वाला, त्वचा में विकार।

शनि की—उत्साह रहित, मलिन, अत्यन्त दीन, दुःख सहित, बुद्धि हीन।

(२) शुक्र स्थानी (२-७ राशि के) रवि पर दृष्टि

चंद्र की दृष्टि - श्रेष्ठ स्त्रियों का प्रेमी, बहुत स्त्रियों वाला, जल सम्बन्धी पदार्थ के व्यापार से जीविका करने वाला।

मंगल की—संग्राम में धीरज, अत्यन्त तेज, श्रेष्ठ, साहस से धन प्राप्त, यशवान्।

बुध की— संगीत विद्या और सत्काव्य की कलाओं का प्रेमी, लेखन कला में कुशल, प्रसन्न चित्त।

गुरु की—अपने वंश के समान, राजा का प्रधान मंत्री, श्रेष्ठ रत्न आभूषण तथा धन सहित, डरपोक।

शुक्र की—सुन्दर नेत्र, शोभायमान देह व प्रधान होता है, शत्रु-मित्र सहित, चिंता युक्त।

शनि की—दीन, धन हीन, आलसी, स्त्रियों के साथ भिन्न मन वाला, दुष्ट आजीविका करने वाला, रोग युक्त।

(३) बुध स्थानी (३-६ राशि के) सूर्य पर दृष्टि

चंद्र की दृष्टि—मित्र और शत्रुओं से परिपीड़ित, परदेश जाने वाला, धन हीन, सदा उदास।

मंगल की—शत्रुओं से भयभीत, कलह आदि से युक्त, अत्यन्त दीन, संग्राम में हारने वाला, अत्यन्त लज्जालु, आलसी।

बुध की—राजा की कृपा, पुत्रों से ऐश्वर्य, उसके मित्र और शत्रु सदा संताप को प्राप्त हो।

गुरु की—छिपे हुए मन्त्र वाला, अत्यन्त स्वतंत्र, स्त्री पुत्रादि के गर्व सहित।

शुक्र की - परदेश वासी, चपल, विलासी, देह अग्नि या शस्त्र से अंकित हो, राजा का दूत हो।

शनि की—धूर्त, बहुत नोकरों वाला, बुद्धिहीन, उद्विग्न चित्त।

(४) कर्क के रवि पर दृष्टि

चंद्र की—जल सम्बन्धी व्यापार करके बड़ा धनवान, राजा का राजमंत्री, बड़ा उग्र।

मंगल की—अपने बंधुओं से चित्त को दूर करने वाला, सूजन का रोग व भगंदर से पीड़ित।

बुध की—विद्या यश तथा मान से विराजित, राजा की कृपा से मन की अभिलाषा को प्राप्त, शत्रु रहित।

गुरु की—अपने कुल में श्रेष्ठ, निर्मल यश, राजा से बड़ा पद प्राप्त।

शुक्र की—स्त्री के आश्रय से वस्त्र और धन प्राप्त, पराये काम में हृदय से विषाद पैदा करता है।

शनि की—कफ और वात से दुःखी और पराये कार्य में विघ्न डालने वाला, चपल स्वभाव, क्लेशी।

(५) स्वस्थानी सूर्य पर दृष्टि

चंद्र की—धूर्त और गम्भीर, राजा से मान प्राप्त, धन की प्राप्ति से धनवान, प्रसिद्ध।

मंगल की—अनेक स्त्रियों से प्रीति करने वाला, अत्यन्त धूर्त, कफ प्रकृति, बड़ा शूर वीर, उदासी।

बुध की—धूर्त, राजा की आज्ञा में चलने वाला, पंडितों से प्रीति, लेख करने में तत्पर।

गुरु की—देव स्थान और तालाब बावड़ी का बनाने वाला। स्वजनों से प्रीति।

शुक्र की—त्वचा के दोष वाला, क्रोधी, अपयश का भागी, उत्सव रहित, स्वजनों का त्यागा हुआ, सत्य और दया रहित।

शनि की—शठ, काम को बिगाड़ने वाला, स्वजनों से संताप को प्राप्त।

(६) गुरु स्थानी (९-१२ राशि के) सूर्य पर दृष्टि

चन्द्र की दृष्टि—शोभायमान देह, पुत्र सौख्य युक्त, वाणी के विलास में कुशल, कुलवान्।

मंगल की—संग्राम में विशेष यश, वक्ता, स्वजनों के संग से रहित, स्थिर आजीविका करने वाला, प्रचंड।

बुध की—धातु क्रिया, काव्य कला और कथाओं का जानने वाला, श्रेष्ठ वाक्य, श्रेष्ठ मंत्र आदि की विधि में चतुर, सत्पुरुषों की सम्मति सहित।

गुरु की—राजा का मन्त्री, अपने कुल में राजा, कला की विधि जानने वाला, धन-धान्य सहित, विद्वान्।

शुक्र की—सुगन्ध माला, सुगन्ध वस्त्र धारण करने वाला, सुन्दर स्त्री और आभूषणों का सौख्य भोगता है।

शनि की—पराये अन्न का भोगी, नीच पुरुषों में प्रवृत्ति, चौपायों से प्रीत।

(७) शनि स्थानी (१०-११राशि के) सूर्य पर दृष्टि

चंद्र को दृष्टि—स्त्री के संग से धन और सौख्य का नाश, माया में चतुर, चंचल चित्त।

मंगल की—शत्रु से झगड़ा कर धन नाश करने वाला, व्याधि, वैर से संतापित, अत्यन्त व्याकुल देह, बहुत चिन्ता।

बुध की—हिजड़ों ऐसा स्वभाव, पराये चित्त को हरण करने वाला, साधुओं से रहित, शूरवीर।

गुरु की—श्रेष्ठ कर्म कर्ता, बुद्धिमान्, बहुत पुरुषों का पालने वाला।

शुक्र की—शंख, मूँगा, निर्मल रत्न, धन, सुन्दर, स्त्रियों से धन की प्राप्ति।

शनि की—बड़े प्रताप से शत्रुओं को जीतने वाला, राजा की प्रीति से प्रसन्नता, प्रसन्न मूर्ति।

(८) सूर्य को शुभ ग्रह देखे - राजा की सेवा से धन प्राप्त।

सूर्य को शत्रु ग्रह देखे—झगड़ा, दुःख, पेट और आँखों में रोग।

सूर्य को मित्र ग्रह देखे - जय तथा बांधवों से लाभ।

सूर्य को पाप ग्रह देखे--रोगी हो।

(९) पंचम भाव में सूर्य हो और भिन्न-भिन्न ग्रहों से दृष्ट हो तो फल

पाप दृष्ट हो—बुद्धि स्थिर हो, अल्प संतान हो।

पाप ग्रहों की दृष्टि हो—मृत संतान हो।

शनि की दृष्टि हो—लोह अग्नि से उत्पन्न पीड़ा और संतान से उत्पन्न पीड़ा हो।

मंगल की दृष्टि हो—गर्भ च्युत हो या पुत्र नाश हो।

बुध की दृष्टि हो—२ पुत्र ५ कन्या हो।

राहु की दृष्टि हो—गर्भपात हो या कन्या का मरण हो या निःसंतान हो।

केतु की दृष्टि हो—गर्भपात हो या काकवंध्या हो। (जा० सं०)

२—चंद्र पर भिन्न-भिन्न ग्रहों की दृष्टि का फल

(१) मेष के चंद्र पर दृष्टि

सूर्य की—उग्र स्वभाव, नम्र जनों से नम्र, धैर्यवान्, राजा से गौरव, संग्राम में डरपोक (जा० भ०)। गरीब (निर्धन) हो (फल दी०) (वृ० जा०) (जा० पारि०)।

मंगल की—विष अग्नि पात व शस्त्र से भय, कभी-कभी मूत्रकृच्छ्र रोग हो। बड़े आश्रय सहित, दाँत व नेत्र की पीड़ा (जा० भ०)। कुलानुमान राजा (वृ० जा०)।

बुध की—प्रकाशवान्, निर्मल यश, सब विद्याओं में प्रवीण, धन और गुण से युक्त, सज्जनों की सम्मति सहित, श्रेष्ठ सम्पत्ति से प्रतिष्ठित (जा० भ०)। विद्वान् पंडित (वृ० जा०)।

गुरु की—राजा का मंत्री या सेना का स्वामी, कुलानुसार बहुत सम्पदाओं से युक्त (जा० भ०)। राजा तुल्य (वृ० जा०)।

शुक्र की—स्त्री भूषण धन और पुत्र का सुख भोगे, श्रेष्ठ वक्ता, क्रोध रहित, गुणी (जा० भ०)। गुणवान् (वृ० जा०) राजा तुल्य (फल०)।

शनि की—रोगी, मित्र की उन्नति से नष्ट, धनहीन, मिथ्या भाषी, दुष्ट पुत्र (जा० भ०)। चोर (वृ० जा०)।

(२) वृष के चंद्र पर दृष्टि

सूर्य की—खेती के काम पर तत्पर, खेती की विधि जानने वाला, मंत्री, वाहन और धान्य से युक्त (जा० भ०)। दास या नौकर (वृ० जा०) दूत (जा० परि०)।

मंगल की—कामातुर, स्त्रियों का चित्त हरणकर्त्ता, सत्पुरुषों का मित्र, सदा पवित्र, प्रसन्न मूर्ति (जा० भ०)। निर्धन (दरिद्री) (वृ० जा०)।

बुध की—चतुर विधियों को जानने वाला, कृपा सहित, हर्षयुक्त, जीवों का हितैषी, गुणयुक्त (जा० भ०)। चोर (वृ० जा०)। राजा (जा० परि०)।

गुरु की—स्त्री और पुत्रों के आनन्द सहित, श्रेष्ठ, कीर्तिमान्, धर्म क्रिया में तत्पर, माता-पिता की भक्ति में चित्त (जा० भ०)। राजमान्य (वृ० जा०)।

शुक्र की—आभूषण, वस्त्र, गृह, भोजन, सुगन्धित वाला, चौपायों का सुख। राजा (वृ० जा०)।

शनि की—माता की मृत्यु (जा० भ०)। धनी (जा० पारि०) (वृ० जा०)। वृष परार्द्ध में चंद्र हो और शनि की दृष्टि—पिता का नाश (जा० भ०)।

(३) मिथुन के चंद्र पर दृष्टि

सूर्य की दृष्टि—चतुर, श्रेष्ठशील, धनहीन, निरन्तर क्लेश, सम्पूर्ण उत्सवों को प्राप्त (जा० भ०)। दरिद्री (वृ० पा०)।

मंगल की—उदार चित्त, चतुर, शूरवीर, बुद्धिमान्, सुज्ञ, धनवाहन आदि से युक्त (जा० भ०)। लोहे के औजार का व्यापार (वृ० जा०)। विकल (जा० पारि०)।

बुध की—धैर्यवान्, सदा आचारयुक्त, उदार, राजा से धन प्राप्त (जा० भ०)। राजा (वृ० जा०)।

गुरु की—विद्या और विवेकयुक्त, धनवान्, प्रसिद्ध, नम्रतायुक्त, निरन्तर पुण्यवान्, (जा० भ०)। विद्वान् (वृ० जा०)।

शुक्र को—वस्त्र, पुष्प, धन, अन्न श्रेष्ठ स्त्री के सहित, श्रेष्ठ वाहन, आभूषणों का सौख्य (जा० भ०)। भयरहित (वृ० जा०) धीर (जा० पारि०)।

शनि की —धन, स्त्री, वाहन और पुत्रादि से हीन, निन्दक (जा० भ०)। कपड़ा बुनने वाला (वृ० जा०)।

(४) कर्क के चन्द्र पर दृष्टि

सूर्य की –निष्प्रयोजन नीच जाति के मनुष्यों से क्लेश, राजा के आश्रय से किले पर अधिकार करने वाला (जा० भ०)। नेत्र रोगी (वृ० जा०)।

मंगल की—चतुर, शूरवीर, माता के विरुद्ध, दुर्बल देह (जा० भ०)। युद्ध जोतने वाला योद्धा (वृ० जा०), पराक्रमी (जा० पारि०)।

बुध की—स्त्री धन पुत्र की उन्नति, नीति के सौख्य सहित, सेना का स्वामी या राजा का मंत्री (जा० भ०)। कविता करने वाला (वृ० जा०) विद्वान् (फल०)।

गुरु की—राजा से अधिकार प्राप्त, गुणवान्, नीति का जानने वाला, सुखी, श्रेष्ठ पराक्रम वाला, राजा (जा० भ०)। पंडित (वृ० जा०) चतुर (फल०)।

शुक्र की—श्रेष्ठ रत्न और सुवर्णयुक्त, रत्न, आभूषण व श्रेष्ठ स्त्री का निरन्तर सुख (जा० भ०)। राजा (वृ० जा०)।

शनि की—सत्य रहित, माता का विरोधी, सदा भ्रमण, पाप में तत्पर, धनहीन (जा० भ०) शस्त्र का व्यापारी (वृ० जा०) लोहा आदि का व्यापारी (फल०)।

(५) सिंह के चंद्र पर दृष्टि

सूर्य की—गुणयुक्त, सदा राजा का प्यारा, अधिकार को प्राप्त, विलम्ब से संतान प्राप्त (जा० भ०)। राजा (वृ० जा०)।

मंगल की—राजा या मंत्री, धन वाहन पुत्र स्त्री के सुख से युक्त (जा० भ०)। राजा (वृ० जा०)।

बुध की –धन, स्त्री तथा वाहन पुत्रादिकों के सुख से पूर्ण (जा० भ०)। ज्योतिषी (वृ० जा०)।

गुरु की—बहुश्रुत, साधु वृत्त, भूलने वाला, राजा का मंत्री (जा० भ०)। धनी (वृ० जा०)।

शुक्र की—स्त्री प्रयुक्त, वैभव सहित, गुणवान्, गुणों को जानने वाला, चतुर विधियों को जानने वाला (जा० भ०)। राजा (वृ० पा०)।

शनि की—स्त्री रहित, खेती में चतुर, राजा के किले का स्वामी, थोड़ा धन (जा० भ०)। पापी (जा० पारि०)। नाई (फल०)।

(६) कन्या के चंद्र पर दृष्टि

सूर्य की—राजखजाने का मालिक, श्रेष्ठ वृत्ति वाला, स्त्री रहित, भक्ति में तत्पर (जा० भ०)। स्त्री के आश्रय से जीवन (वृ० पा०)। राजा (फल०)। सुखी (जा० पारि०)।

मंगल की—हिंसा में तत्पर, शूरवीर, क्रोध सहित, राजा का आश्रय करने वाला, संग्राम में जय प्राप्त (जा० भ०)। स्त्री के आश्रय से जीवन (वृ० जा०)। चतुर (फल०)। धनिक (जा० पारि०)।

बुध की—ज्योतिष शास्त्र और काव्य तथा संगीत विद्याओं का ज्ञाता, चतुर, संग्राम में यश प्राप्त, नम्रता सहित (जा० भ०)। राजा (वृ० जा०)। विभु (जा० पारि०)।

गुरु की— बहुत भाइयों वाला, राजा का प्यारा, श्रेष्ठ वृत्ति से सुन्दर यश वाला (जा० भ०)। सेनापति (वृ० जा०)। प्रभु सदृश (जा० पारि)।

शुक्र की—वेश्या विलास में चित्त, स्त्री का आश्रित, राजा से धन प्राप्त (जा० भ०)। सब बातों में निपुण (वृ० जा०)। विद्वान् (जा० पारि०)।

शनि की—धन हीन, बुद्धि रहित, निरन्तर स्त्री के आश्रय से धन प्राप्त करने वाला, माता से हीन (जा० भ०)। स्त्री के आश्रित से जीवन (वृ० पा०)। राजा (फल०) शक्ति रहित (जा० पारि०)।

(७) तुला के चन्द्र पर दृष्टि

सूर्य की दृष्टि–सदा भ्रमणकर्त्ता, सुख और धन से हीन, श्रेष्ठ स्त्री और पुत्रों से रहित मित्र और शत्रुओं से संताप (जा० भ०)। जीवघाती (वृ० वा०) ठग (जा० पारि०)। दुष्ट (फल०)।

मंगल की—बुद्धि से दूसरे के धन में चित्त, माया सहित, विषयों से संताप (जा० भ०)। जीवघाती (वृ० जा०)। ठग (जा० पारि०)। शठ (फल दीप०)।

बुध की—कलाओं का ज्ञाता, धन-धान्य सहित, बोलने की विद्या और वैभव सहित (जा० भ०)। राजा (वृ० जा०)।

गुरु की—वस्त्र और भूषण के कार्य में चतुर, इनके खरीदने बेचने में चतुर (जा० भ०)। सुनार (वृ० जा०)।

शुक्र की—अनेक उद्यम से अर्थ सिद्ध करनेवाला, राजाओं का कृपापात्र, प्रसन्न चित्त, पुष्ट देह (जा० भ०)। व्यापारी-वैश्य (वृ० जा०)।

शनि की—धनधान्य श्रेष्ठ वाहनों से युक्त, विषय भोग से रहित, (जा० भ०)। जीवघाती (वृ० जा०)। चुगलखोर (फल०)। ठग (जा० पारि०)।

(८) वृश्चिक के चन्द्र पर दृष्टि

सूर्य की—श्रेष्ठ वृत्ति रहित, धनवान्, मनुष्यों को असह्य, अत्यन्त उद्यम करने वाला, सेना में रहने वाला (जा० भ०) धनहीन दरिद्री (वृ० जा०)।

मंगल की—युद्ध में विशेषकर यश को प्राप्त; गंभीरता और गौरव से राजा की कृपा से धन पैदा करने वाला (जा० भ०)। राजा (वृ० जा०)। राजा का मन्त्री (जा० पारि०)।

बुध की—बोलने में चतुर, युद्ध करने वाला, गीत और हत्या में तत्पर, निरन्तर

झूठ कर्मों में चतुर (जा० भ०)। यमल (जुड़वाँ लड़कों) का पिता या २ पिता (वृ० जा०)। २ माता (जा० पारि०)।

गुरु की--संसार की इच्छा के समान चलने वाला, सुन्दर रूप, श्रेष्ठ कर्म, धन और भूषण युक्त (जा० भ०)। दृष्टि से नम्र (वृ० जा०)। राजा (फल०)। राजप्रिय (जा० पारि०)।

शुक्र की—प्रसन्न चित्त, उदार यश, छल-छिद्र का ज्ञाता, धन वाहनों से युक्त, मित्रों से धन कपट (जा० भ०)। धोबी (वृ० जा०)। नीच कर्म (जा० पारि०)।

शनि की—कोई अंग विकृत (फल०)। अंग हीन (वृ० जा०)। रोगी (जा० पारि०)।

(९) धन के चन्द्र पर दृष्टि

सूर्य की—बड़ा प्रतापी, उत्तम यश, सम्पदा युक्त, श्रेष्ठ वाहन, संग्राम में यशस्वी, राजकृपा युक्त (जा० भ०)। पाखण्ड धर्म वाला (वृ० जा०)। दरिद्र (जा० पारि०)।

मंगल की—सेना का स्वामी, बड़ा प्रताप वाला, लक्ष्मी का स्थान, आभूषणों का लाभ (जा० भ०)। पराये कार्य में विमुख (वृ० जा०)। दगाबाज (फल०)।

बुध की—श्रेष्ठ वाणी के विलास और बहुत नौकरों वाला, ज्योतिषी, शिल्प विद्या जानने वाला, (जा० भ०)। स्वकुल श्रेष्ठ (वृ० जा०)। स्वजन रक्षक (फल०)।

गुरु की—बड़ा अधिकार प्राप्त, धनवान्, श्रेष्ठ वृत्ति, सुन्दर शरीर (जा० भ०)। राजा (वृ० जा०)।

शुक्र की—संतान धन धर्म प्राप्त, निरन्तर सौख्ययुक्त (जा० भ०)। कई पुरुषों को आश्रय देने वाला (वृ० जा०)।

शनि की—बल युक्त, सदा शास्त्र में आसक्त, श्रेष्ठ वक्ता, प्रचंड प्रतापी (जा० भ०)। दंभी, झूठा (वृ० जा०)। शठ (फल०)। शुभ दृष्टि से विद्या ज्ञान तथा धन में बली। पाप दृष्टि से सभा-शठ, वेश्याओं का प्रेमी (जा० पारि०)।

(१०) मकर के चन्द्र पर दृष्टि

सूर्य की—धनहीन, मलिन, भ्रमण का प्रेमी, बुद्धि हीन, दुर्दिन (जा० भ०)। दरिद्री (वृ० जा०)।

मंगल की—अत्यन्त प्रचण्ड, धन वाहन युक्त, चतुर, स्त्री और पुत्रों से युक्त, निरन्तर वभव युक्त (जा० भ०)। राजा तुल्य (वृ० जा०)।

बुध की—बुद्धि हीन, धन रहित, घर का त्यागने वाला, स्त्री पुत्रों से त्यक्त (जा० भ०)। राजा (वृ० जा०)।

गुरु की—राज्य पुत्र एवं सत्य सहित, गुणों को जानने वाला, स्त्री पुत्र युक्त, राजा (वृ० जा०)।

शुक्र की—सुन्दर नेत्र, धन वाहन युक्त, पुत्र, भूषण, वस्त्र का सुख (जा० भ०)। विद्वान् पण्डित (वृ० जा०)।

शनि बड़ा आलसी, धन हीन, सत्य रहित, मलिन, व्यसनों से युक्त (जा० भ०)। धनी (वृ० जा०)।

(११) कुम्भ के चन्द्र पर दृष्टि

सूर्य की - खेती के बल सहित, जुआ खेलने वाला, राजा के आश्रित, धर्म में तत्पर (जा० भ०)। परस्त्री गामी (वृ० जा०)।

मंगल की—मकान, धन तथा माता-पिता के वियोग को प्राप्त, बड़े कठिन पदार्थों को पैदा करने वाला, बहुत बोलने वाला, मलिन चित्त, अत्यन्त धूर्त (जा० भ०)। परस्त्री रत (वृ० जा०)।

बुध की—विषय और सौख्य सहित, भोजन विद्या जानने वाला, अत्यन्त पवित्र, प्यारी वाणी (जा० भ०)। राजा (वृ० जा०)।

गुरु की धरती, नगर, ग्राम आदि के सुख से युक्त, भोगों से युक्त, सत्पुरुषों में प्रवृत्ति करने वाला; श्रेष्ठ पुरुष (जा० भ०)। राजा तुल्य (वृ० जा०)।

शुक्र की – मित्र, पुत्र, स्त्री तथा मकान के सौख्य से रहित, दीन, गौरव हीन, (जा० भ०)। पराई स्त्री में तत्पर (वृ० जा०)।

शनि की— गधा, ऊँचे नवीन घोड़ों का लाभ करने वाला, खोटी स्त्री में तत्पर, धर्म के विरुद्ध वृत्ति वाला (जा० भ०)। परस्त्रीगामी (वृ० जा०)। शुभ ग्रह की दृष्टि से, यश धन युक्त। पाप ग्रह की दृष्टि हो तो, परस्त्रीगामी (जा० पारि०)।

(१२) मीन के चन्द्र पर दृष्टि

सूर्य की— कामदेव का सौख्य अत्यन्त प्राप्त, सेना का स्वामी, बहुधन की वृद्धि, श्रेष्ठ कर्मों की सिद्धि को प्राप्त (जा० भ०)। पापी (वृ० जा०)।

मंगल की --शत्रु युक्त, कुलटा स्त्री से मित्रता, सुख से हीन, पाप में तत्पर (जा० भ०)। पापी (वृ० जा०)।

बुध की—श्रेष्ठ स्त्री पुरुषों के सुख को प्राप्त, मान और धन राजा की कृपा से प्राप्त (जा० भ०)। मशखरा (वृ० जा०)।

गुरु की—उदार चित्त, सुकुमार शरीर, श्री, स्त्री और पुत्रादि का सौख्य, राजा (जा० भ०)। राजा (वृ० जा०)।

शुक्र की—श्रेष्ठ गति, श्रेष्ठ विद्या में तत्पर, श्रेष्ठ वृत्ति वाला, स्त्री के साथ विलास करने में शक्ति, विद्वान् (वृ० जा०)।

शनि—कामातुर, स्त्री और पुत्र रहित, नीच स्त्रियों के साथ मित्रता (जा० भ०) पापी (वृ० जा०)।

शुभ दृष्टि से हास्य प्रिय, राजा या विद्वान् हो। पाप दृष्टि से कठोर वचन भाषी और पापात्मा हो। (जा० पारि०)।

चन्द्र पर पाप ग्रह की दृष्टि से धन हानि, सिर व नेत्र में रोग।

,, शत्रु ,, ,, पापकर्म, धननाश, गमागम होता है।

चन्द्र पर शुभ ग्रह दृष्टि सुखी, रोग रहित, बांधवों के द्वारा लाभ।

,, मित्र ,, ,, लाभ, जय क्षेत्र तथा देश का लाभ।

पापांशक में चन्द्र हो या पाप ग्रह को दृष्टि हो तो शठ बुद्धि, परस्त्रीरमण।

शुभांशक में चन्द्र हो या शुभ ग्रह को दृष्टि हो तो यशस्वी (जा० पारि०)।

राशि का जो फल कहा है वही नवांशक में भी विचारे, शुभग्रह की दृष्टि या योग से शुभ फल होता है।

उपरोक्त दृष्टि विचार में इन राशियों का चन्द्र हो और उपरोक्त ग्रहों की दृष्टि हो तो क्या फल होता है। परन्तु चन्द्र के स्थान पर, लग्न पर भी इन ग्रहों की दृष्टि का उपरोक्त फल विचारना। संक्षिप्त में चन्द्र पर ग्रहों की दृष्टि या चन्द्र की इन ग्रहों पर दृष्टि होने का फल यहाँ दिया है।

चाहे चन्द्र द्रष्टा हो या दृश्य इस प्रकार फल होगा

चन्द्र राशि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धन	मकर	कुम्भ	मीन
सूर्य	दरिद्री	नौकर	दरिद्री	हृदय रोग	राजा का आश्रय	स्त्रियों	धानकी	दरिद्री	दंभिक	दरिद्री पर स्त्री रत	पाप कर्मी	
मंगल	अधिकारी	दरिद्री वेचे	शास्त्र झगड़ालू	राजा	,,	,,	राजा	,,	राजा	,,	,,	
शनि	चोर	धनवान्	कपटी	शत्रु	माली	,,	,,	अंगहीन	,,	द्रव्यवान्	,,	,,
बुध	पण्डित	चोर	राजा	काव्य कर्ता	जोगी	सेनापति	राजा	यमल संतान	पोषण करता	राजा	राजा	भट
गुरु	कामदार	साहूकार	पंडित	पंडित	साहूकार	सर्प कर्म साधक	सुनार	नम्र हो	राजा	,,	कारवारी	राजा
शुक्र	गुमास्ता	राजा	निर्भय	राजा	राजा	जोशी	बनिया	धोबी आश्रय दाता	पंडित	परस्त्री आधीन	पंडित	

चन्द्र के नवांश पर ग्रहों की दृष्टि का फल

(१) चन्द्र-मंगल (१–८ रा०) के नवांश में हो उसपर इन ग्रहों की दृष्टि का फल—सूर्य की–नगर रक्षक, मंगल की–प्राणघाती, बुध की–युद्ध कुशल, गुरु की–राजा या धनवान्, शुक्र की–कलहकारी।

(२) चन्द्र शुक्र (२–७ रा०) के नवांश में हो उस पर दृष्टि का फल—सूर्य की–मूर्ख, मंगल की–पर स्त्रीगामी, बुध की–सुकवि, गुरु की–अच्छा लेखक या सुकवि, शुक्र की–सब सुख प्राप्त, शनि की–परस्त्री से संग।

(३) चन्द्र बुध (३–६ रा०) के नवांश में हो उस पर दृष्टि का फल—सूर्य

को–नट या मल्ल, मंगल की–चोर, बुध की–श्रेष्ठ कवि, गुरु की–मंत्री, शुक्र की–संगीतज्ञ, शनि की–यन्त्र कलादक्ष या शिल्पी।

(४) चन्द्र स्वनवांश में हो उस पर ग्रह दृष्टि—सूर्य की दृष्टि–देह दुर्बल, मंगल की–धन लोभी, कृपण, बुध की–तपस्वी, गुरु की–मुख्य प्रधान हो, शुक्र की–स्त्रियों का सेवक या स्त्रियों से पाला जावे, शनि की–कर्तव्य परायण।

(५) चन्द्र सिंह के नवांश में हो उस पर ग्रह दृष्टि—सूर्य की–क्रोधी, मंगल की–राजा का मित्र, बुध की–निधियों (छिपे धन) का स्वामी, गुरु की–बड़ा स्वामी, शुक्र की–सन्तान रहित, शनि की–क्रूर कर्म कर्त्ता।

(६) चन्द्र गुरु के नवांश (९–१२ रा०) में हो उस पर ग्रह दृष्टि का फल—सूर्य की–प्रसिद्ध, शूरता वाला, मंगल की–चतुर योद्धा, बुध की–हास्यज्ञ (मशखरा), गुरु की–मन्त्री, शुक्र की–काम रहित, (नपुंसक), शनि की–शील युक्त या धर्म मति।

(७) चन्द्र यदि शनि के नवांश (१०–११ रा०) में हो उस पर दृष्टि का फल–सूर्य की–अल्प सन्तान, मंगल की–अल्प धन, दुःखी जीवन, या धन प्राप्ति में दुःख, बुध की–क्रोधी या घमण्डी, गुरु की–कर्म निष्ठ, (कर्म में आसक्त), शुक्र की–दुष्ट स्त्रियों का प्यारा, शनि की–सहज क्रोधी, कृपण (वृ० जा०)।

चन्द्र दृष्टि पर विशेष विचार

(१) द्वादशांश फल – कई राशियों के चन्द्र पर जो दृष्टि फल बताया है वह द्वादशांश में भी विचारना।

(२) प्रभाव—नवांश दृष्टि फल शुभाशुभ २ प्रकार का कहा है जैसे (१) आरक्षिक (२) वध रुचि अर्थात् ऊपर जो ग्रह दृष्टि का शुभाशुभ फल कहा है वह—

शुभ फल—वर्गोत्तम में		स्वनवांश में	अन्य नवांश में
	अति शुभ	मध्यम शुभ	अल्प शुभ
अशुभ फल–अल्प फल		मध्यम फल	अति अशुभ फल

अर्थात् उपरोक्त प्रकार से शुभ फल होता है परन्तु बुरे प्रभाव से इसका उल्टा फल होता है।

(३) बली नवांशेश का फल—चन्द्र का नवांशेश बली हो तो भिन्न-भिन्न राशियों के चन्द्र पर जो ग्रहों की दृष्टि का प्रभाव कहा है वह फल नहीं देगा। केवल वे ही फल होंगे जो किसी विशेष अंश पर विशेष ग्रहों की दृष्टि में कहे हैं।

अर्थात् जिस नवांश में चन्द्रमा हो उसका स्वामी बली हो तो चन्द्र नवांशक दृष्टि फल प्रबल होगा और पूर्वोक्त राशि दृष्टि फल, होरा द्रेष्काण फल, द्वादशांश फल आदि को दबा कर अंश दृष्टि फल ही देगा।

(४) परस्पर दृश्य द्रष्टा फल विचार – यहाँ जो चन्द्र पर सूर्य आदि ग्रहों का फल कहा है वही फल सूर्यादि ग्रहों पर उस विशेष चन्द्र की दृष्टि का भी समझना अर्थात् चन्द्र पर जिस ग्रह की दृष्टि का फल बताया है उस ग्रह को दृश्य मानकर चन्द्र को द्रष्टा मानकर उसी प्रकार फल का विचार करना।

इसी प्रकार चन्द्र पर दृष्टि के अनुसार लग्न पर भिन्न-भिन्न ग्रहों को दृष्टि का विचार करना।

(५) बली ग्रह की दृष्टि का फल प्रथम होगा—चन्द्र सूर्य जो अधिक बली हो वह बली ग्रह दूसरों के फल को दबाकर अपने फल देगा।

३—मंगल पर भिन्न-भिन्न ग्रहों की दृष्टि का फल

(१) स्वस्थानी (१–८ राशि) के मंगल पर दृष्टि

सूर्य की—चतुर श्रेष्ठ वक्ता, माता-पिता का भक्त, धनवानों में श्रेष्ठ, अत्यन्त उदार।

चन्द्र की –परस्त्री से प्रेम, बड़ा शूर वीर, कृपा रहित, चोरों को मारने वाला।

बुध की–वेश्या के अलंकार और वस्त्र बनाने में एक चित्त, बड़ा चतुर, पराया धन हरने वाला।

गुरु की—स्वनवांश में राजा, धनवान्, क्रोध युक्त, राज चिह्नों से युक्त, औरों से मित्रता करने वाला।

शुक्र की—बारम्बार भोजन की इच्छा, स्त्री के निमित्त सदा यात्रा की चिंता।

शनि की—मित्रों से परित्यक्त, माता के वियोग से संताप, दुर्बल देह, कुटुम्ब का विरोधो, अति ईर्ष्या युक्त।

(२) शुक्र स्थानी (२–७ राशि के) मंगल पर दृष्टि

सूर्य की—स्त्री के मन की वृत्ति से रहित, बड़े-बड़े वन और पर्वत में रहने की इच्छा, शत्रु हीन, बड़ा क्रोधी।

चन्द्र की–माता के विरुद्ध, संग्राम में डरपोक, बहुत स्त्रियों का स्वामी।

बुध की—शास्त्र में प्रवृत्ति, बड़ाई का प्रिय, बहुत बोलनेवाला, अल्पधन का आगम, शोभायमान रहे।

गुरु की—भाइयों की प्रीत में तत्पर, अत्यन्त भाग्यवान्, गीत नृत्य आदि में चतुर।

शुक्र की—प्रशंसा के योग्य, राजा का मंत्री या सेनापति, बहुत सौख्य।

शनि की—प्रसिद्ध, नम्रता युक्त, धनवान्, श्रेष्ठ मित्रों वाला, पवित्र बुद्धि, शास्त्र में यत्न करने वाला, नगर या ग्राम का स्वामी।

(३) बुध स्थानी (३–६ राशि के) मंगल पर दृष्टि

सूर्य की—विद्या धन, ऐश्वर्य युक्त, बल युक्त, वन पर्वत तथा किले में रहने वाला।

चन्द्र की –अपनी रक्षा के लिये राजा से नियुक्त किया हुआ, स्त्री में तत्पर मन युक्त, संतोषी।

बुध की–बहुत बोलने वाला, गणित शास्त्र में चतुर, काव्य जिसको प्यारा हो, झूठी रचना कर सुन्दर वाणी बोले। दूतों का काम करने में बड़ा उद्यमी।

गुरुकी—परदेश में भ्रमण, व्यसनी, उच्च स्थान को प्राप्त।

शुक्र की—वस्त्र, अन्न, जल, के सुख से युक्त, स्त्री में आसक्त, निरंतर समृद्धियों सहित।

शनि की—बड़ा शूर वीर, मलिन, आलसी, किला कोट वन पर्वत में विलास करें।

(४) कर्क के मंगल पर दृष्टि

सूर्य की—पित्त प्रकोप से दुःखी, अत्यन्त धैर्यवान्, फौजदारी का अधिष्ठाता (दंडाधिकारी) निरंतर बड़े यश वाला।

चन्द्र की—रोग युक्त, नयी चीज का सोच करने वाला, कुरूप, साधुवृत्त से हीन।

बुध की—पित्त रहित, थोड़ा कुटुम्ब, पाप का प्रचारक, दुष्ट चित्त।

गुरु की—राजा का मंत्री, गुण और गौरव युक्त, बड़े मान युक्त, प्रसिद्ध।

शुक्र की—बुरे कर्मों में धन नाश, सदा बुरे कर्मों का विचार कर्ता।

शनि की—जलोत्पन्न धान्य से धन की प्राप्ति, श्रेष्ठ क्रांति, राजा से धन प्राप्त।

(५) सिंह के मंगल पर दृष्टि

सूर्य की दृष्टि—अपने प्यारों से प्रीत, शत्रुओं से वैर कर्त्ता, वन पर्वत कुंजों में रहने वाला।

चन्द्र की—पुष्ट स्वरूप, कठिन स्वभाव, माता से नम्र, कार्य में चतुर, तीव्र सुन्दर बुद्धि।

बुध की—श्रेष्ट काव्य शिल्पादि कलाओं का ज्ञाता, लोभी, चंचल चित्त, अपने कार्य साधन में चतुर।

गुरु की—श्रेष्ठ बुद्धि, राजा का मित्र, सेना का स्वामी, बहुत मनुष्यों के मनोरथ पूर्ण करने वाला, विद्या में प्रवीण।

शुक्र की—अभिमान से ऊँचा, अत्यन्त सुन्दर, शोभायमान देह, अनेक स्त्रियों का भोगी, सम्पूर्ण समृद्धि सहित।

शनि की पराये घर वास, अत्यन्त चिन्ता, बूढ़ों के समान रूप, धन हीन।

(६) गुरु स्थानी (९-१२ राशि के) मंगल पर दृष्टि

सूर्य की—वन पर्वत किला कोट में वास, क्रूर स्वभाव, मनुष्यों में पूजित।

चन्द्र की—पंडितों की विधि का ज्ञाता, राजा को नहीं मानने वाला, लड़ाई प्रिय।

बुध की—चतुर, शिल्प विद्या में निपुण, श्रेष्ठ शील, सब विद्याओं में चतुर, नम्रता।

गुरु की—स्त्री की अत्यन्त चिन्ता करने वाला, शत्रुओं से सदा लड़ाई करने वाला, स्थान भ्रष्ट।

शुक्र की—उदार चित्त, विषयों में आसक्त, अनेक प्रकार के गहने, भाग्यवान्।

शनि की—देह क्रांति हीन, अनेक स्थानों में भ्रमण, दुःखी, पराये कार्य में तत्पर।

(७) शनि स्थानी (१०-११ राशि के) मंगल पर दृष्टि

सूर्य की—स्त्री-पुत्र, धन के सुखयुक्त, तरुण स्वरूप, तीक्ष्ण, निरन्तर बड़ा शूरवीर।

चन्द्र की—श्रेष्ठ आभूषण युक्त, माता के सुख से हीन, स्थान भ्रष्ट, चंचल मित्रता, उदार चित्त।

बुध की—प्रिय वाणी, भ्रमण करने में धन प्राप्त, यत्नयुक्त, जुआ से युक्त, निर्भय।

गुरु की—बड़ी आयु, राज कृपा युक्त, गुण युक्त, भाइयों को प्यारा, सुन्दर देह की कांति, कार्य में बहुत बोलने वाला।

शुक्र की—श्रेष्ठ भोग, सौभाग्य, सुख युक्त; स्त्रियों का प्यारा, कलह प्रिय।

शनि की—राजा के धन को प्राप्त करने वाला, स्त्री के साथ वैर, बहुश्रुत, बड़ी बुद्धि वाला, कपट युक्त, संग्राम प्रिय।

मंगल पर पाप ग्रह की दृष्टि—क्षेत्र, धन-धान्य आदि का नाश।

मङ्गल पर शत्रु ग्रह की दृष्टि—बंधन रोग, युद्ध तथा दूर देश में निवास।

मङ्गल पर शुभ ग्रह की दृष्टि—विजय, देश और क्षेत्र का लाभ तथा मित्रों से शुभ।

मङ्गल पर मित्र ग्रह की दृष्टि—धन की वृद्धि हो।

४—बुध पर दृष्टि का फल

(१) मंगल स्थानी (१-८ राशि के) बुध पर दृष्टि

सूर्य की दृष्टि—भाइयों का प्यारा, सत्यवक्ता, विलासयुक्त, राजा, श्रेष्ठ गौरवयुक्त।

चंद्र की दृष्टि—श्रेष्ठ, गीत नृत्यादि में प्रीत, काम सहित, स्त्री में प्रीत, वाहन और नौकरयुक्त, चुगल।

मंगल की दृष्टि—राजा का प्यारा, बहुत धन वाला, शूरवीर, चतुर, लड़ाई में उद्यत, क्षुधायुक्त।

गुरु की दृष्टि—सुखयुक्त, चतुर श्रेष्ठ वाणी, स्त्री पुत्रादियुक्त, प्रसन्न चित्त।

शुक्र की दृष्टि—स्त्रियों के साथ विलासी, गुण और गौरवयुक्त, स्त्रियों का प्यारा, सुन्दर बुद्धि, नम्रता सहित।

शनि की दृष्टि—श्रेष्ठ साहस वाला, क्रूर स्वभाव, कुल में कलहयुक्त, प्रीत और श्रेष्ठ वृत्ति से रहित।

(२) शुक्र स्थानी (२-७ राशि) बुध पर दृष्टि

सूर्य की दृष्टि—दरिद्र और दुःख तथा रोगों से संतापित देह वाला, पराया उपकार करने में निरन्तर तत्पर, शान्त स्वभाव, शुद्ध चित्त।

चंद्र की—बहुत प्रपंची, धनधान्ययुक्त, दृढ़ प्रतिज्ञा, राजा का मंत्री प्रख्यात।

मंगल की—राजा से अपमानित, रोग से संतापित, मित्र और विषयों से रहित।

गुरु की—उत्तम देश, ग्राम तथा नगरों का स्वामी, राजा, चतुर, गुणों का जानने वाला, गुणवान्, शीलवान्।

शुक्र की—अति सुन्दर वेष, वस्त्राभूषणयुक्त, स्त्रियों को कामदेव और काम से बड़े हर्ष को प्राप्त, अत्यन्त चतुर, उदार, श्रेष्ठ भाग्य।

शनि की—स्त्री, पुत्र, मित्र और वाहन से दुःख, संतप्त चित्त, सुख और धन से हीन।

(३) स्वक्षेत्री बुध पर दृष्टि का फल

सूर्य की—सत्ययुक्त, सुन्दर लीला का विलास करने वाला, राजा से मान और उन्नति को प्राप्त, चंचलता रहित।

चंद्र की – बहुत बोलने वाला, मिष्ठभाषी, लड़ाई जिसे प्यारी हो, राजा के पास रहने वाला।

मंगल की —प्रसन्नदेह, चुगलखोर, कलाओं का ज्ञाता, राजा के कृत्य में निरन्तर प्रवीण, मनुष्यों का प्यारा।

गुरु की – धनयुक्त, सामर्थ्य सहित, श्रेष्ठ, राजा के मान से अधिकार को प्राप्त, बहुश्रुत।

शुक्र की - राजा का दूत, बैरियों को जीतने वाला, दोनों की संधि कराने में चतुर, वेश्या में आसक्त, मन की अभिलाषा को प्राप्त।

शनि की--प्रारम्भ किये कार्य को सिद्ध करने वाला, नम्रता रहित, श्रेष्ठ वस्त्र और आभूषण आदि समृद्धियों सहित।

(४) कर्क के बुध पर दृष्टि

सूर्य की—स्त्री के निमित्त से पूर्ण पीड़ा, धन का व्यय, अतिदुर्बल देह, बहुत उत्पातों सहित।

चंद्र की—वस्त्रादियों की शुद्धि और मणियों का संग्रह करने वाला, घर आदि स्थान बनाने में चतुर, फूलों की माला गूँथने में चतुर।

मंगल की—थोड़ा शास्त्र का ज्ञाता, अर्थ में तत्पर, शूरवीर, प्यारी बोली, झूठ बात करने में चतुर।

गुरु की—चतुर, विद्या का जानने वाला, बड़ा भाग्यवान्, श्रेष्ठ वाणी।

शुक्र की—प्यारी वाणी, सुन्दर शरीर, श्रेष्ठ गीत, बाजों की विधि में चतुर।

शनि की—गुणहीन, अपने मित्र तथा भाई-बंधु रहित, झूठ बोले, दंभ में तत्पर, कृतघ्न।

(५) सिंह के बुध पर दृष्टि

सूर्य की—कृपा रहित, चंचल स्वभाव, ईर्षालु, हिंसा में तत्पर, क्रूर, क्षुद्र।

चंद्र की—रूपवान् सुन्दर बुद्धि, नम्र, गीत और नृत्य में तत्पर, श्रेष्ठ वृत्ति।

मंगल की—कामदेव और पराक्रम रहित, वृत्तिहीन, घावों से अंकित, बुद्धिहीन, विचित्र, दुःख सहित।

गुरु—कोमल, निर्मल रुचि, कुल में श्रेष्ठ, सुन्दर नेत्र, सामर्थ्यवान्, उत्तम वाहन, धनवान्।

शुक्र—श्रेष्ठ रूप, मिष्ट वाणी, विलासी, राजा का आश्रित वाहन और धनयुक्त।

शनि—देह में पसीने की दुर्गन्ध, बड़ी देह, कुरूप, उग्र, सुखहीन।

(६) गुरु क्षेत्री बुध पर दृष्टि

सूर्य की—शूल, पथरी और प्रमेह रोग, मन की तरंग से रहित, शांति को प्राप्त।

चंद्र की—लेखन कला में चतुर, श्रेष्ठ संगीत वाला, साधु और मित्रों का संग, सुखी।

मंगल की—खानदानी चोर, वन में वास, उसका नाम राज्य में लिखा जाता है धन-अन्न से रहित।

गुरु की - ज्ञानवान् अपने कुल में शिरोमणि, राजा के खजाने में गिनने वाला, बहुत जनों का स्वामी।

शुक्र को – राजा का मंत्री, लेख के अधिकार को प्राप्त, चोरों में आसक्त, दुष्ट स्त्रीयुत, धनवान्।

शनि की—बहुत अन्न खाने वाला, मलिन, दुष्ट वृत्ति, वन पर्वत में वास, काम के लायक नहीं।

(७) शनि क्षेत्री बुध पर दृष्टि

रवि की—अपने प्रारब्ध से प्रताप सहित, श्रेष्ठ मल्ल विद्या में कुशल, दुष्ट शक्ति, कुटुम्बी।

चंद्र की—जल सम्बन्धी कार्य से आजीविका, धनवान्, डरपोक, फूल और कंद के उद्यम करने वाला।

मंगल की—लज्जा और आलस्ययुक्त, बड़े स्वभाव वाला, सौम्य मूर्ति, सुखी, चपल वाणी, धनवान्।

गुरु की—अन्न और वाहन तथा धनयुक्त, सुखी, ग्राम और नगर का स्वामी, बड़ा बुद्धिमान्।

शुक्र की – बहुत सन्तान, कुरूप, चतुरता रहित, नीचजनों का साथी, अति कामी।

शनि की—सुख रहित, पाप में तत्पर, दीन, धन रहित, हीनजनों का संग।

बुध पर पाप दृष्टि – बड़ा दुःख, शूल रोग।

शत्रु दृष्टि – अतिसार रोग, दुर्बुद्धि, विपरीत कर्म करने में उद्यत होता है।

शुभ दृष्टि – लेखक विद्वान् तथा चतुर।

मित्र दृष्टि – आभूषण, धन, रेशमी वस्त्र तथा रत्नों का लाभ।

५—गुरु पर दृष्टि का फल

(१) भौम क्षेत्री गुरु पर दृष्टि

सूर्य की दृष्टि—असत्य से डरने वाला, बहुत धर्म करने वाला, विख्यात, श्रेष्ठ, भाग्य युक्त, नम्र।

चन्द्र की—प्रसिद्ध, नम्र, स्त्री का प्यारा, श्रेष्ठ पुरुषों की सलाह लेने वाला, धर्म में तत्पर, शान्त स्वभाव।

मंगल की—क्रूर, बड़ा धूर्त, दूसरे के अभिमान को नष्ट करने वाला, राजा के आश्रय से आजीविका, बहुत मनुष्यों का स्वामी।

बुध की—श्रेष्ठ वृत्ति और सत्य उत्तम वाणी से रहित, दूसरे का छिद्र देखने वाला, नम्र, मनुष्यों का स्वामी, धूर्त ।

शुक्र की—गन्ध माला शैया, भोजन भूषण, स्त्री वस्त्र, स्थान इन सबसे सौख्य को पाता है ।

शनि की— लोभी, क्रूर, हठी, मित्र और सन्तान के सुख से रहित और सलाह करने में कठोर ।

(२) बुध क्षेत्री गुरु पर दृष्टि

सूर्य की—युद्ध में जय प्राप्त, भाव सहित, शरीर में रोग, बहुत वाहन और सेवक युक्त, राजा का मन्त्री ।

चन्द्र की—सत्य युक्त, नम्रता युक्त, परोपकारी; श्रेष्ट चित्त, श्रेष्ठ भाग्य वाला ।

मंगल की—भाग्य युक्त, पुत्र सौख्य को प्राप्त, मिष्ठ भाषी, राजा से मान प्राप्त, सदाचार युक्त ।

बुध की—श्रेष्ठ मन्त्र और विद्या में तत्पर, निरन्तर भाग्य सहित, राजा से धन प्राप्त, सुन्दर कलाओं का ज्ञाता ।

शुक्र की—धन और भूषण सहित, श्रेष्ठ वृत्ति में चित्त, ऐश्वर्यवान् ।

शनि की—श्रेष्ठ पुत्र, श्रेष्ठ स्त्रियों के सुख युक्त, नगर और ग्राम में उत्सव युक्त, चतुर ।

(३) बुध क्षेत्री गुरु पर दृष्टि

सूर्य दृष्टि—श्रेष्ठ पुत्र, स्त्री, धन तथा मित्र सौख्य युक्त, श्रेष्ठ प्रतिष्ठा को प्राप्त, शोभायमान ।

चन्द्र की—गुणी, ग्राम और नगरों में उपकार करने वाला, बहुत गौरव से शोभायमान ।

मंगल की—संग्राम में जय, घाव युक्त देह, धन पराक्रम युक्त ।

बुध की—श्रेष्ठ और स्त्री पुत्र धन सौख्य युक्त, चतुर, ज्योतिषी, शिल्प शास्त्र का ज्ञाता, सुन्दर वाणी ।

शुक्र की—धन, स्त्री पुत्रों के सुख से युक्त, मकान बावली और खेती के काम में चित्त, प्रसन्न पुरुष ।

शनि की—राजा से श्रेष्ठ गौरव प्राप्त, नित्य उत्सव सहित, गुणों से पूर्ण, नगर तथा ग्रामों का स्वामी ।

(४) कर्क के गुरु पर दृष्टि

सूर्य की दृष्टि—स्त्री पुत्र धन के उत्पन्न सौख्य को पहिले नाश करता है और पिछली अवस्था में पूर्वोक्त पदार्थों का सौख्य होता है ।

चन्द्र की—राजा के खजाने का स्वामी, श्रेष्ठ कांति, धन के सुख युक्त, श्रेष्ठ वृत्ति में चित्त ।

मंगल की—बालक स्त्री तथा सुन्दर वस्त्र भूषणों से युक्त, गुणवान्, शूर-वीर, व्रण रोग।

बुध की—मित्रों के आश्रय से सब सिद्धियाँ प्राप्त, श्रेष्ठ वृत्ति, श्रेष्ठ बुद्धि, श्रेष्ठ प्रताप, राजा का मन्त्री।

शुक्र की—मित्रों के वैभव को भोगने वाला, स्त्रियों से अनेक सौख्य को प्राप्त।

शनि की—सम्मान और भूषण तथा गुणों से युक्त, श्रेष्ठ शील, सेना नगर या ग्राम का स्वामी, बहुत बोलने वाला।

(५) सिंह के गुरु पर दृष्टि

सूर्य की - खर्च करने वाला, प्रसिद्ध, बड़ा धूर्त, राजा से धन लाभ, श्रेष्ठ कर्म में चित्त।

चन्द्र की—प्रसन्न मूर्ति, चित्त की शुद्धि से हीन, स्त्री के कारण से धन लाभ।

मंगल की - बड़े मान और गौरव युक्त, श्रेष्ठ कर्म के निर्माण करने में चतुर।

बुध की—मकान आदि बनवाने के काम में चतुर, गुणों में अग्रणी, राजा का मन्त्री, वाणी विलास में चतुर।

शुक्र की—राजा से बड़ा पद प्राप्त, स्त्रियों से प्रीति करने वाला, गुणों का जानने वाला।

शनि की—सुख से हीन, मलिन, श्रेष्ठ वाणी, दुर्बल देह, उत्सव रहित।

(६) स्वक्षेत्री गुरु पर दृष्टि

सूर्य की दृष्टि—राजा के विरुद्ध, मित्रों से अत्यन्त वैर करने वाला, जिसके सदा वैरी रहें।

चन्द्र की - भाग्य और धन वृद्धि से अभिमान, स्त्री का प्यारा, सुख युक्त, नम्रता रहित।

मंगल की - फोड़े से अंकित, युद्ध में चतुर, हिंसक, क्रूर स्वभाव, परोपकारी।

बुध की - राजा के आश्रय से बड़ा अधिकार प्राप्त, स्त्री, धन ऐश्वर्य सुख से युक्त, पराये उपकार करने में एक चित्त।

शुक्र की—सुख युक्त, धन युक्त, प्रसन्न, चतुर, सदा ऐश्वर्य युक्त।

शनि की—अधिकार से पतित, सुख और पुत्रों से रहित, युद्ध में पराजय।

(७) शनि क्षेत्री गुरु पर दृष्टि

सूर्य की—प्रसन्न, कांतिमान्, श्रेष्ठ वाणी, पराया उपकार आदर से करने वाला, राजा के कुल में उत्पन्न।

चन्द्र की—कुल को धारण करने वाला, तीव्र बुद्धि, शीलवान्, धर्म क्रिया में उदार, अभिमानी, माता-पिता का भक्त।

मंगल की—राज कृपा से धन की सिद्धि और सुख को प्राप्त करने वाला।

बुध की—शांत स्वरूप, निरन्तर स्त्री के वशीभूत, धर्म क्रियामें निरन्तर तत्पर।

शुक्र की—विद्या विवेक, धन गुण युक्त, राजा से मन की अभिलाषा को प्राप्त।

शनि की—कामना को प्राप्त, श्रेष्ठ गुणों से युक्त, घर और अर्थ की प्राप्ति, धनधान्य युक्त, नम्रता सहित।

(८) गुरु पर पाप दृष्टि - बुद्धि का पराजय तथा क्षेत्र आदि से वियोग।

गुरु पर शत्रु दृष्टि—कुष्ट रोग, त्वचा में दोष, कलह तथा युद्ध।

गुरु पर मित्र दृष्टि—जय, धन का लाभ, स्त्री क्षेत्र आदि का संग्रह।

गुरु पर शुभ दृष्टि—धर्म के कार्यों में उद्यम करता है और सुखी होता है।

(९) नवम स्थान में गुरु हो तो उस पर दृष्टि का विचार

सूर्य से दृष्ट—मन्त्री, राजतुल्य होता है।

सूर्य चन्द्र से—बहुत आयु वाला और निन्दित पद से युक्त।

बली सूर्य चन्द्र दोनों से दृष्ट—विख्यात, राज तुल्य, पंडित, बहुत स्त्रियों से युक्त और समृद्ध, साहसी, धनी।

सूर्य बुध दोनों से—सुन्दर ऐश्वर्य, मनोहर, धन, स्त्री और भूषण से युक्त, काव्य कला का ज्ञाता।

सूर्य शुक्र दोनों से—सामवेद का जानने वाला, उत्सव कर्त्ता और गौ महिषी, बकरी, गधा इनसे युक्त, साहसी।

सूर्य शनि दोनों से दृष्ट- कोष पति और संग्रह कर्ता, चतुर विख्यात और गुणी तथा देश गुरु और श्रेणी नायक होता है।

चन्द्र से दृष्ट—प्रिया कांता का भोगने वाला।

चन्द्र या मंगल से दृष्ट—सेनाचार्य और सौख्य युक्त, सुन्दर ऐश्वर्य युक्त या मंत्री।

चन्द्र बुध से दृष्ट—गृह शयन अन्नादि का भोगने वाला, तेजस्वी, क्षमाशील और बुद्धिमान्।

चन्द्र शुक्र से दृष्ट—कर्मयुक्त, शुभाचार, शूरवीर, सम्पन्न और परिवार युक्त।

मंगल से दृष्ट—धनवान्।

मंगल बुध से दृष्ट—तेजस्वी, सत्ययुक्त, सेवा कर्म में तत्पर, चतुर बुद्धि।

मंगल शुक्र से दृष्ट—धनवान्, चतुर बुद्धि, विद्वान्, सत्यभाषी, विदेशगामी।

मंगल शनि से दृष्ट—नीच, विदेशगामी, चाकरी वाला, निन्दक, चुगल, ठग।

बुध शुक्र से दृष्ट—कारीगरी का जानने वाला, सुदर भाग्य, विद्वान्, अच्छा भेष का धारण करने वाला, शीलवान्, आज्ञा पालक, गौ वाहन धन से युक्त।

बुध शनि से दृष्ट—सुन्दर ऐश्वय, मनोहर, विद्वान्, वक्ता, शूरवीर, सुखी, विनय सम्पन्न।

शुक्र शनि से दृष्ट—देश भक्त, धनी।

शनि से दृष्ट--भैंसा तथा वृक्ष से युक्त धनवान् होना है।

द्वादशेश से दृष्ट--विवाद कर्ता और प्रिय बोलने वाला।

सब ग्रहों से दृष्ट--समृद्ध, धर्मात्मा, तेजस्वी, रूपवान्, गुणवान्।

६--शुक्र पर दृष्टि का फल

(१) मंगल क्षेत्री शुक्र पर दृष्टि का फल

सूर्य की--विशेष करके राजा की निरंतर कृपा वाला, स्त्री के कपट से अत्यंत दुःखी

चन्द्र की--श्रेष्ठ प्रतिष्ठा वाला, चंचल चित्त वृत्ति, कामातुरता का विकार।

मंगल की--धनवान्, सुख से रहित, विशेष दीन और मलिन।

बुध की--खोटा धन तथा सम्बन्धियों से रहित, अपनी बुद्धि और सामर्थ्य से रहित, क्रूर, पराये धन को हरण करने वाला।

गुरु की--स्त्री पुत्रादिकों के सुख से रहित, श्रेष्ठ देह, शोभायमान, नम्रता युक्त, उदार चित्त।

शनि की--गुप्त धन, शांत स्वभाव, माननीय, श्रेष्ठ, अपने जनों की सम्पत्ति सहित।

(२) स्वक्षेत्री शुक्र पर दृष्टि

सूर्य की--श्रेष्ठ स्त्रियों के धन वाहनों से निश्चय सुख लाभ।

चन्द्र की--वेश्याओं में विलास, अपने कुल का पालक, निर्मल बुद्धि, सुशील, श्रेष्ठ वाणी के विलास में चतुर।

मंगल की--ग्रह और सौख्य से रहित लड़ाई में अपमान को प्राप्त।

बुध की--गुणवान्, श्रेष्ठ भाग्य, काम सहित, सौम्य स्वभाव, बलवान्, धैर्य सहित।

गुरु की--श्रेष्ठ वाहन और स्त्री, गुण श्रेष्ठ, मित्र-पुत्र धनादि संपूर्ण वस्तुओं का लाभ।

शनि की--रोगी, साधुवृत्त से हीन, सौख्य और धन से हीन।

(३) बुध क्षेत्री शुक्र पर दृष्टि

सूर्य की--राजा के रनवास का ड्योढ़ीवान्, नम्र, गुण युक्त, शास्त्र जानने वाला।

चन्द्र की--श्रेष्ठ अन्न, वस्त्रादि सुख युक्त, नील कमल के समान स्याम, सुंदर नेत्र, सुन्दर बाल।

मंगल की--भाग्ययुक्त, कामकला में चतुर, स्त्री के निमित्त धन का व्यय करने वाला, कामी।

बुध की--चतुर, वाहन और धन की वृद्धि वाला, सेना का स्वामी, परिवार के सौख्य से युक्त, बुद्धिमान्।

गुरु की - श्रेष्ट बुद्धि, वृद्धि सहित, बहुत वैभव युक्त, प्रसन्न चित्त निरन्तर नम्र।

शनि की - अपमान युक्त, चपल स्वभाव, दुःख सहित, मनुष्यों से त्यक्त।

(४) कर्क के शुक्र पर दृष्टि का फल

सूर्य की--क्रोधी, हर्ष का नाश, वैरियों से पीड़ित।

चन्द्र की—पहिले कन्या, पीछे पुत्र उत्पन्न हो। माता और विमाता का मान करने वाला।

मंगल की—कलाओं में चतुर, शत्रुनाशक, बुद्धि से सौख्य युक्त, स्त्रीचिन्ता।

बुध की—विद्यामें प्रवीण, गुणवान्, स्त्री-पुत्रोंसे अत्यन्त संतापित, मनुष्यों से त्यक्त।

गुरु की—अत्यन्त चतुर, उदार, सुन्दर मूर्ति, नम्रता युक्त, मति और वैभव युक्त, स्त्री-पुत्रों के सौख्य युक्त, प्यारी वाणी।

शनि की—श्रेष्ठ वृत्ति और सौख्य रहित, धन हीन, व्यर्थ परिश्रम करने वाला, स्त्री से जीता गया, स्थान से पतित।

(५) सिंह के शुक्र पर दृष्टि का फल

सूर्य की—स्पर्धा से चित्त वृत्ति को बढ़ाने वाला, स्त्री के आश्रय से धन का लाभ या ऊँट, गधा, घोड़ों से धन लाभ।

चन्द्र की—माता दो होवें, स्त्री से विरोध करने वाला, ऐश्वर्य सहित।

मंगल की—राजा का प्यारा, अन्न धन युक्त, काम कला के व्यसनों युक्त।

बुध की—धन सहित, संग्रह करने में चित्त की वृत्ति, लोभी, कामदेव की अधिकता से बुरे विचारों को प्राप्त।

गुरु की—राजा का मन्त्री, धन-वाहन युक्त, बहुत स्त्री पुत्र सेवकों के सौख्य वाला।

शनि की—राजा के समान सम्पूर्ण समृद्धियों का भागी। फौजदारी के मुकदमे का आफीसर (दंडाधिकारी)।

(६) गुरु क्षेत्री शुक्र पर दृष्टि

सूर्य की—क्रूर, चतुर, भाग्य और सौभाग्य का भागी, बल सहित, विशेष धनवान्, अनेक देशों की यात्रा।

चन्द्र की—श्रेष्ठ, राजमान्य, प्रसिद्ध, नम्र, बहुत भोग युक्त, धीर, बलवान्।

मंगल की—वैरियों को नहीं संहारने वाला, धनवान्, प्रसन्न, स्त्री कृत प्रेम से युक्त, श्रेष्ठ, पुण्यवान्, श्रेष्ठ वाहनों से युक्त।

बुध की—श्रेष्ठ वाहन धन वस्त्र आभूषण का लाभ, श्रेष्ठ अन्नों के सुख सहित।

गुरु की—घोड़ा, सोना, वस्त्र, आभूषण, बड़े हाथी व स्त्रियों के सुख से युक्त।

शनि की—श्रेष्ठ भोग, उत्तम सौख्य और कर्मों का भागी, नित्य उत्सव सहित, धनी।

(७) शनि क्षेत्री शुक्र पर दृष्टि

सूर्य की—स्थिर स्वभाव, वैभव युक्त, मणि युक्त, धन सहित, बल से विराजमान।

चन्द्र की—यशस्वी, सुन्दर शरीर, बड़ा बलवान्, धन और वाहन युक्त।

मंगल की—श्रम और रोग से अत्यन्त तप्त स्वरूप, अनर्थ से धन नाश।

बुध की—पंडितों की विधि को जानने वाला, धनी, संतुष्ट, चतुर, बलयुक्त, बड़ा प्रचण्ड, श्रेष्ठ वाणी का विलास करने वाला।

गुरु को--श्रेष्ठ गन्ध और माला वस्त्र सुन्दर बाजे सहित, संगीत विद्या का ज्ञाता।

शनि को--प्रसन्न देह, अनेक वस्तु लाभ करने वाला, धन वाहन स्त्री और पुत्रों के सौख्य से युक्त।

शुक्र पर पाप दृष्टि फल--पराजय, स्त्रीवियोग, धन नाश।

शुक्र पर शत्रु दृष्टि फल--मूत्रकृच्छ्र आदि बड़े रोग होते हैं।

शुक्र पर शुभ दृष्टि फल--स्त्री का लाभ, सुख, आभूषण तथा धन का लाभ।

शुक्र पर मित्र दृष्टि फल--पट्ट बन्ध तथा देश लाभ आदि हो।

७--शनि पर भिन्न ग्रहों की दृष्टि का फल

(१) मंगलक्षेत्री शनि पर दृष्टि

सूर्य की--भैंस, गाय, बकरी, भेंड़ की समृद्धि वाला, खेती के काम में सदा तत्पर, श्रेष्ठ कर्म में आसक्त।

चन्द्र की--नीच संगति वाला, चपल, दुष्ट शील, खल, दुःखी और धन रहित।

मंगल की--बहुत बोलने वाला, सम्पदा रहित, कार्यनाशक, धनहीन।

बुध की--चोरी करने वाला, कलह में तत्पर, स्त्री और उत्सव रहित।

गुरु की--सुखी, धनयुक्त, राजा का मन्त्री, राजा के आश्रय से मुख्यता को प्राप्त।

शुक्र की--बहुत यात्रा करने वाला, कांतिहीन, पपिनी स्त्री में आसक्ति से दुःखी।

(२) शुक्र क्षेत्री शनि पर दृष्टि

सूर्य की दृष्टि--विद्या के विचार में अधिक, बड़ा वक्ता, पराया अन्न खाने वाला, धनहीन, शान्त।

चन्द्र की--राजा की कृपा से बड़े अधिकार को प्राप्त, स्त्री भूषण तथा वस्त्र के सौख्य को प्राप्त, बलवान्।

मंगल की--युद्ध के काम में तत्पर, निरन्तर बहुत बोलने वाला, बड़ी कृपा वाला।

बुध की--स्त्री में तत्पर, नीच पुरुषों का संग, विनोद और हास्य में तत्पर, धनहीन, हिजड़ों से मित्रता।

गुरु की--पराये उपकार में चित्त, दुःख से दुःखी, दाता और उद्यमी।

शुक्र की--रत्न आदि पदार्थों का लाभ, स्त्री के विलास में तत्पर, यानों की अधिकता वाला, राजा से गौरव प्राप्त।

(३) बुधक्षेत्री शनि पर दृष्टि

सूर्य की--सुख रहित, नीचों में तत्पर, क्रोधी, अधर्मी, बैर करने वाला, धर्मवान्।

चन्द्र की--प्रसन्न मूर्ति, राजा की कृपा से अधिकार को प्राप्त, ऊँचे कार्यों में प्रवृत्ति करने वाला, स्त्रियों के अधिकार को प्राप्त।

मंगल की--बड़ा बुद्धिमान्, निरन्तर विधि को जानने वाला, प्रसिद्ध, गंभीर।

बुध की--धन युक्त, सुन्दर बुद्धि, नम्रता सहित, गीत प्रिय, संग्राम के कार्य में चतुर, शिल्प का ज्ञाता।

गुरु की--राजा का आश्रय करने वाला, सुन्दर गुणों से युक्त, सत्पुरुषों का प्यारा, गुप्तधनवान् ।

शुक्र की--स्त्री के आभूषण बनाने में चतुर, श्रेष्ठ कर्म और धर्म में निरन्तर तत्पर, स्त्रियों में आसक्त चित्त ।

(४) कर्क के शनि पर दृष्टि

सूर्य की--आनन्द स्त्री और धन से हीन, अन्न भोग से हीन, माता को क्लेशदायक ।

चन्द्र की—बन्धुजनों तथा माता को दुःख देने वाला, धन की वृद्धि सहित ।

मंगल की— बल से हीन, क्षीण देह, राजा के दिये धन से वैभव ।

बुध की--वाग्विलास में कठिन, भ्रमण करने में बुद्धि, मनोवांछित फलप्राप्त, पाखंड करने में चतुर ।

गुरु की--धरती, पुत्र घर स्त्री, धन, रत्न, वाहन, आभूषण से युक्त ।

शुक्र की--उदार, गौरव युक्त, सुन्दर यान युक्त, सौन्दर्य तथा निर्मल वाणी विलास से हीन ।

(५) सिंह के शनि पर दृष्टि

सूर्य की-- धन, अन्न, वाहन से श्रेष्ठ वृत्ति से सत्य और उत्तम चरित्र से हीन ।

चन्द्र की--श्रेष्ठ रत्न, आभूषण, वस्त्र, सुन्दर यश, स्त्री, मित्र, पुत्रादिकों के सुख में पूर्ण प्रसन्न चित्त ।

मंगल की--संग्राम कर्म में अत्यन्त निपुण, करुणाहीन, क्रूर स्वभाव ।

बुध की--धन, स्त्री, पुत्र के सुख से हीन, दीनता युक्त, नीच, व्यसनों से युक्त ।

गुरु की—श्रेष्ठ मित्र, पुत्रादि युक्त, गुणों सहित, प्रसिद्ध, श्रेष्ठ वृत्ति वाला । निरन्तर नम्रता सहित, पुर और ग्राम का स्वामी ।

शुक्र की- धन, अन्न और वाहन से युक्त, स्त्री से संताप को प्राप्त ।

(६) गुरुक्षेत्री शनि पर दृष्टि का फल

सूर्य की--प्रसिद्धि, धन एवं गौरवको प्राप्त करने वाला, पराये पुत्र में प्रीति ।

चन्द्र की--श्रेष्ट वृत्ति, माता रहित, अन्य नामों से शोभित, धन, पुत्र, स्त्री के सुख भोगने वाला ।

मंगल की—बातरोगी, मनुष्यों के विपरीत चलनेवाला, परदेशवासी ।

बुध की--श्रेष्ठ गुणों से युक्त, धनवान्, कामी, राजा से बड़े अधिकार को प्राप्त, सदाचार युक्त ।

गुरु की--मंत्री या सेनापति, सब कार्यों को करने वाला, बलवान्, सुशील ।

शुक्र की --परदेश वासी, बहुत कार्यों में आसक्त, दो माता, निरन्तर पवित्र ।

(७) स्वक्षेत्री शनि पर दृष्टि का फल

सूर्य की—बुरे रूप वाली स्त्री का पति, पराया अन्न खाने वाला, अनेक प्रयास सहित, रोगयुक्त, परदेश वासी ।

चन्द्र की -धन और स्त्री युक्त, दुःख से उत्पन्न हुआ, चपल स्वभाव, माता के विरुद्ध रहे, कामातुर।

मंगल की—शूरवीर, क्रूर, अच्छे गुणों से युक्त, सर्वजनों में उत्कृष्ट, सदा प्रसन्न चित्त, प्रसिद्ध।

बुध की—श्रेष्ठ वाहन युक्त, उत्साह युक्त, बलवान्, अनेक कार्यों में आसक्त।

गुरु की – गुण युक्त, राजा का मन्त्री, रोग रहित, सुन्दर शरीर।

शुक्र की - कामातुर, नियम रहित, भाग्य सहित, सुखवान्, धनवान्, भोग भोगने वाला, लक्ष्मी का स्वामी।

शनि पर पाप दृष्टि बगल में रोग, बन्धन तथा क्षय हो।

शनि पर शत्रु दृष्टि—शत्रु बाधा, पराभव तथा रोग।

शनि पर शुभ दृष्टि—रोग रहित।

शनि पर मित्र दृष्टि—बांधवों से संगम होता है।

दृष्टि का अन्य विचार

राहु दृष्टि से पाप नाश—लग्न या लग्न से ३-६-११ इन स्थानों को राहु देखता हो तो उसके पाप का नाश होता है (प्रा. यो.)।

चन्द्र की बुरी दृष्टि—लग्न पर चन्द्र की दृष्टि बुरी होती है। परन्तु कर्क लग्न से उस पर चन्द्र हो तो फल अच्छा होता है (प्रा. यो.)।

चन्द्र पर दृष्टि—दिन का जन्म हो चन्द्र दृश्य भाग में हो उसे ग्रह देखता हो तो अशुभ फल।

दिन का जन्म हो चन्द्र अदृश्य भाग में हो उसे ग्रह देखता हो तो शुभ फल।

रात का जन्म हो चन्द्र दृश्य चक्र में हो तो शुभ फल (प्रा. यो.)।

भाव या ग्रह सब ग्रहों से दृष्ट—जो भाव या ग्रह समस्त ग्रहों से दृष्ट हो वह भाव ग्रह शुभ फल देने में समर्थ होता है।

लग्न या चन्द्र पर सब ग्रहों की दृष्टि—यदि जन्म में लग्न या चन्द्र सब ग्रहों से दृष्ट हो तो राज्य देने वाले होते हैं।

लग्न सब से दृष्ट – लग्न को सब ग्रह देखें तो वह कुल में श्रेष्ठ राजा होता है शत्रु हंता, विलासयुक्त, सुखी, भाग्यवान्, बलवान् और दीर्घायु होता है।

चन्द्र सबसे दृष्ट—चन्द्र पर सब ग्रहों की दृष्टि हो तो राजकुल में उत्पन्न राजा होता है अन्य अपने कुल में श्रेष्ठ धन अन्न और नीति कुशल होता है (शंभु होरा०)।

सूर्य लग्न में हो या लग्न पर पूर्ण दृष्टि हो तो क्रोधी, शरीर में वात पित्त रोग से पीड़ा, पाषाण आदि प्रहार से कष्ट, कंठ या गुदा में व्रण या तिल। बालपने में अनेकों पीड़ा दुःख होते हैं (जा० सं०)।

शुभ ग्रह लग्नेश होकर लग्न को देखे या लग्न में हो—बिना क्लेश बड़ी आयु पावे और सुखी होता है (जा० सं०)।

लग्न पर ग्रह दृष्टि फल

लग्न पर सूर्य दृष्टि--राज सेवी, पितृधन से धनी।
लग्न पर चन्द्र दृष्टि—जल या जलचरों के व्यवहार से या रोजगार से धनी।
लग्न पर मंगल दृष्टि—धर्मात्मा, स्थूल लिंग।
लग्न पर बुध दृष्टि – विद्वान्, शिल्पज्ञ तथा यशस्वी।
लग्न पर गुरु दृष्टि—राजा का पूज्य और व्रत युक्त।
लग्न पर शुक्रदृष्टि--वेश्याओं में आसक्त, सुखी, धनी।
लग्न पर शनि दृष्टि--वृद्धा स्त्री वाला, खल, मलिन।
लग्न को कोई ग्रह न देखे तो लग्नस्थ ग्रह के वश से फल कहे (जा० पारि०)।

लग्न पर दृष्टि फल

लग्न को लग्नेश देखे--राजा या राजा का प्रिय, धनी, सुखी हो।
लग्न को शुभ ग्रह देखे—सब शुभ फल।
लग्न को पाप ग्रह देखे –अशुभ फल।
लग्न को दो आदि ग्रह देखे - सुखी।
लग्न को सब ग्रह देखे—राजा हो (जा० पारि०)

होरादि कुंडली में चन्द्र पर ग्रहों की दृष्टि का फल

चन्द्र जिस राशि के होरा में हो उसे होरा स्थित ग्रह देखे तो शुभ फल देगा। जैसे चन्द्रमा यदि सूर्य होरा में हो और सूर्य होरा स्थित ग्रह देखे तो शुभ।

,, चन्द्र ,, चन्द्र ,, ,, ,,

लग्न पर दृष्टि—इसी प्रकार लग्न में भी होरेश का फल विचारना (वृ० जा०) यदि लग्न में चन्द्र होरा हो और चन्द्र उसे देखे तो शुभ, सूर्य का होरा स्थित ग्रह देखे तो शुभ, यदि चन्द्र अपने होरा में हो या दूसरे ग्रह सूर्य के होरा में होकर उसे देखे तो अशुभ फल होता है (प्रा० यो०)।

द्रेष्काण कुण्डली में भी ऐसा ही विचार

जिस द्रेष्काण में चन्द्र हो उसी द्रेष्काण राशि के स्वामी से चन्द्र देखा जाय तो शुभ फल होता है।

उसी प्रकार द्वादशांश त्रिंशांश व नवांश आदि में विचारना।

द्वादशांश का फल - द्वादशांश फल के लिए–पहिले जो मेषादि राशि गत चन्द्र पर दृष्टि का फल कहा है वही फल इसमें भी विचारना।

नवांश में फल – इसी प्रकार चन्द्र पर जो सूर्यादि ग्रहों का फल कहा है वही फल नवांश राशि के अनुसार भी समझना (वृ० जा०)।

———

अध्याय २

अनेक ग्रहों के एक राशि में होने का फल

२ ग्रह योग

(१) सूर्य चन्द्र—क्रूर कर्म में निपुण, घमण्डी, पत्थर के यन्त्र आदिकों के व्यापार में चतुर, निरन्तर कामी (शंभु०) । अनेक प्रकार के यन्त्र बनाने वाला, पत्थर का काम करने वाला (वृ० जा०) स्त्री के वश रहे, कपट कर्म कर्ता, बड़ा उद्धत, काम करने में बड़ा अदृड़, पराक्रमी और अल्प मन वाला (मान०) । पत्थर और यन्त्रों को बेचने वाला, माया में चतुर, कामी, चाहना सहित, अभिमानी (जा० भ०) ।

सूर्य मंगल—उत्तम धर्म कर्म तथा धन से हीन रहे, क्लेशों में तत्पर, निरन्तर क्रोध युक्त (शंभु०) । पापी (वृ० जा०) । तेजस्वी, पाप में मन, मिथ्याभाषी, बड़ा मूर्ख, भाई बन्दों से प्रेम करने वाला, बड़ा बलवान् (मान०) । बड़ा यश, बलवान्, मूर्ख, अतिशय उद्धत, झूठ बोलने वाला, साहसी, शूरवीर, (जा० भ०) ।

सूर्य बुध—प्रिय वाणी, राजमन्त्री, सेवा से धन कमावे, शास्त्रों में तत्पर, कलाओं के समूह में चतुर (शंभु) । सब कार्यों में निपुण, बुद्धि यश सौख्य युक्त (वृ० जा०) । बड़ा विद्वान्, राजाओं से मान प्राप्त, देव ब्राह्मण सेवा में मन, प्रियभाषी, यशस्वी, स्थिर धन से युक्त (मान०) प्यारी बोली, मंत्री, बहु सेवा कर धन इकट्ठा करने वाला, कलाओं में कुशल, शास्त्रों में चतुर (जा० भ०) । सूर्य बुध एक साथ होने से बुधादित्य योग होता है वह धर्मात्मा पण्डित धनवान्, बहुपुत्रवान् और सेवकों सहित तथा जितेन्द्रिय होता है (जैमिनि०) ।

सूर्य गुरु—पुरोहिताई में चतुर, राजा का मन्त्री, सुन्दर मित्रों से पाये धन से सम्पन्न, चतुराई से युक्त, उपकारी (शंभु०) क्रूर स्वभाव, निरन्तर पराये कर्म में तत्पर, (वृ० जा०), राजाओं से सत्कार प्राप्त, स्वधर्म में निष्ठा, मित्रवान्, धनवान्, विद्या पढ़ने पढ़ाने वाला, सर्वत्र विख्यात (मान०) । पुरोहिताई में निपुण, राजा का मन्त्री, मित्रता से धन की समृद्धि को प्राप्त, परोपकारक, चतुर (जा० भ०) ।

सूर्य शुक्र—सद् बुद्धि, संगीत बाजे आयुध कर्म में निपुण, नेत्र शक्ति से हीन, मित्र समाज प्राप्त रहे (शंभु), रंग, मल्लादि और आयुध (हथियार) से धन पावे, (वृ० जा०), शस्त्र से प्रहार करने वाला, जेल में बन्धन पाने वाला, नाटचशाला को हास्य भरी बातों का जानने वाला, कमजोर नेत्र, परस्त्रियों से संगम में द्रव्य प्राप्ति, परस्त्रियों में फँसा (मान०), नट बनकर या शस्त्र का प्रयोग करके द्रव्यकमाये (फल०)

गाना-बजाना और शास्त्र विद्या में सुन्दर बुद्धि, नेत्रों के बल से रहित, स्त्रीयुक्त, मित्र समाज में पूर्ण (जा० भ०)।

सूर्य शनि--धर्म में प्रीत, पुण्यबुद्धि, गुणज्ञ, स्त्री पुत्रों से सुखी सम्पन्न, अत्यन्त धातु क्रियाओं से युक्त रहे (शंभु०), तांबा आदि धातु के काम में निपुण, अनेक बर्तन भांडे आदि का बनाने वाला व इनके काम से द्रव्य पावे (वृ० जा०), विद्वान् हो तब भी क्रिया में निष्ठ रहने वाला, धातु का जानने वाला, वृद्ध पुरुषों की तरह बर्ताव करने वाला, स्त्री तथा पुत्र से रहित (मान०), धातु क्रिया व व्योहार में बुद्धि रखने वाला, गुण का जानने वाला, धर्म प्रिय पुत्र और स्त्री से सौख्य पाने वाला, सदा अत्यन्त समृद्धियों सहित (जा० भ०)।

२) चन्द्र मंगल--पुण्य कर्म से जीविका, कुटिल स्वभाव, प्रतापवान्, अपने आचार से हीन, कलह में तत्पर, रोग से पीड़ित, माता का शत्रु (शंभु०), क्रूर कर्म, स्त्री व मद्य के घड़े बेचने वाला, अपनी माता को क्रूर (वृ० जा०), रक्त की पीड़ा से व्याकुल, मृत्तिका, धातु तथा चमड़े की कारीगरी जानने वाला, धनवान्, रण में शूर, (मान०), आचार रहित, चुगल, प्रतापी, व्यापार से आजीविका, कलह प्रिय, मातृवैरी, रोग से दुःखी (जा० भ०)।

चन्द्र बुध--सुन्दर रूप, उत्तम कर्म, धन से युक्त, स्त्री में परम आसक्त, अति बोलने वाला, उत्तम वाणी के विलास वाला, कृपा से गीला मन, और छोटा शरीर (शंभु०), प्यारी वाणी, अर्थ जानने वाला, सौख्य युक्त, सबका प्यारा, कीर्तिवान् (वृ० जा०), स्त्री में अति आसक्त, रूप में सुन्दर, कविता करने में चतुर, धनवान्, गुणवान्, सदा हँसमुख, बड़ा विद्वान्, अपने कुल में धर्मात्मा (मान०), श्रेष्ठ वाणी, श्रेष्ठ रूप, दयालु, नम्र, स्त्री का अधिक प्रेमी, बड़ा वक्ता (जा० भ०)।

चन्द्र गुरु--सर्वदा गूढ़ होवे, गूढ़ बुद्धि, अति मित्रों वाला, परोपकारी, धर्म कर्म आदि से युक्त (शंभु०), शत्रु जीतने वाला, कुल में श्रेष्ठ, चपल, धनी (वृ० जा०), देव गुरु पूजक, बन्धुजनों का मान करने वाला, धनवान्, दृढ़ प्रीत करने वाला, बड़ा सुशील, (मान०), नम्रता युक्त, मजबूत, छिपी सलाह करने वाला, अपने धर्म और कर्म में तत्पर, परोपकार में चित्त (जा० भ०)।

चन्द्र शुक्र--उत्तम गन्ध पुष्प, उत्तम वस्तु में मन, वस्त्रादि व्यापार में चतुर, व्यसन वाला, विधि जानने वाला (शंभु), वस्त्र कर्म, तंतु वाय--सूत्र बिनना, रफूगिरी व वस्त्र रंगना, सीना और वस्त्र के व्यापार में चतुर (वृ० जा०), चीजों के क्रय विक्रय में चतुर, शूद्र वृत्ति वाला, कलहकारी, अल्प वस्त्र आदि से युक्त (मान०), वस्त्र आदि के क्रय विक्रय में चतुर, व्यसन रहित, विधि का जानने वाला, सुगन्ध और उत्तम पुष्प उत्तम वस्त्रों में चित्त (जा० भ०)।

चन्द्र शनि--पर स्त्री में तत्पर, वैश्य वृत्ति से जीविका, सदाचार से हीन, पराया

पुत्र और पुरुषार्थ से हीन (शंभु०), उसकी माता पुनर्भू (एक जगह ब्याही हुई दूसरी जगह पुत्र उत्पन्न किया) हो (वृ० जा०), हाथी घोड़े का पालन करने वाला, अल्प पुत्र वाला, वृद्धा स्त्री से संग, वेश्या से धन प्राप्त करे, खोटा स्वभाव (मान०), अनेक स्त्रियों के सेवन करने की इच्छा, वैश्य वृत्ति, साधु शील से रहित, पर पुत्र और पुरुषार्थ हीन (जा० भ०)।

(३) मंगल बुध--मल्ल युद्ध में चतुर, बहुत पुत्रों की अभिलाषा, अनेक प्रकार की औषधि वाला, पुण्य स्वभाव, हीन कर्म, लोह कर्म विधि जानने वाला (शंभु०), अत्तार जड़ी वक्कल, फूल पत्ते गोंद तेल और बनावटी वस्तु का व्यापार करे, कुश्ती लड़ने वाला (वृ० जा०), निर्धन, विधवा पति, दुर्भाग्य स्त्री वाला, कण वृत्ति करने वाला, सोने या लोहे की जीविका करने वाला (मान०), मल्ल विद्या में चतुर, बहुत स्त्रियों की लालसा, अनेक औषधियों का व्यापार, सोना और लोहे की विधि में बुद्धि वाला (जा० भ०)

मंगल गुरु –मन्त्र विद्या, अस्त्र शस्त्र के बोध में अत्यन्त निपुण तथा विवेकी, सेनापति राज्य, नगर या ग्राम का स्वामी, ग्रह बल के अनुसार होवे (शंभु०), नगर का स्वामी, राजा या ब्राह्मण, धनवान् (वृ० जा०), बुद्धिमान्, शिल्प शास्त्र को जानने वाला, सुनने मात्र से बात का स्मरण रखे, वाक्य चतुर, घोड़ों से प्यार करने वाला, सबों में प्रधान (मान०), मन्त्र और शास्त्र विद्या की कला में चतुर, शीलवाला, सेना का स्वामी, राजा या नगर व ग्राम का स्वामी (जा० भ०)।

मंगल शुक्र--प्रपञ्च, झूठ धूर्त कर्म में प्रीत अनेक स्त्रियों के भोग में मन, घमण्डी, सबके साथ बैर (शंभु०), मल्ल, गोपालक, चतुर, परस्त्रियों में आसक्त, जुआड़ी, ठग, (वृ० जा०) गुणों द्वारा पुरुषों में प्रधान, ज्योतिषी, जुआ खेलने, झूठ बोलने में निरत, बड़ा शठ, परस्त्रियों में आसक्त, सबों में मान्य (मान०), स्त्रियों के भोग विधान में चित्त, जुआ व झूठ में प्रीत, प्रपञ्च में तत्पर, अभिमान रहित, सबसे बैर (जा० भ०)।

मंगल शनि--अस्त्र शस्त्र जानने वाला, युद्ध कर्म में तत्पर, सुखहीन, और लोक में अति निन्द्य होवे (शंभु), दुःख कारक, झूठ बोलने वाला, निंदित काम करने वाला, (वृ० जा०), प्रशस्त वाणी, इन्द्रजाल में निपुण, अपना धर्म छोड़कर अन्य धर्म को मानने वाला, कलह प्रिय, विश्वासघाती, विष तथा मदिरा के झगड़ों में रहने वाला (मान०), अस्त्र और शस्त्र का जानने वाला, युद्ध करने वाला, चोरी और झूठ में प्रीत, सदा सौख्य रहित (जा० भ०)।

(४) बुध गुरु--संगीत जानने वाला, नीति का स्वामी, नम्र, अधिक सुखी, उत्तम गुण, धीर सुगंधित वस्तु प्रिय, उदार (शंभु०), मल्ल, गीत प्रिय, नृत्य का ज्ञाता, (वृ० जा०), नाचने गाने में कुशल, धैर्यवान्, पंडित, सदा सुखी (मान०), गान विद्या का ज्ञाता, नम्र, सौख्य युक्त, अति श्रेष्ठ धैर्य वान, निरंतर उदार, सुगंध का भोग भोगने वाला (जा० भ०)।

बुध शुक्र—उत्तम वाणी का विकास, गुणवान् विवेकी, सदा प्रसन्न, अपने कुल में श्रेष्ठ, सुन्दर वेश, बहुतों का स्वामी (शंभु), बोलने में चतुर, भूमि और गणों का स्वामी (वृ० जा०), नीति शास्त्र का ज्ञाता, अनेक प्रकार की कला में कुशल, धनवान्, सुन्दर वाक्य, वेद ज्ञाता, हास्य की लालसा (मान०), कुल में प्रतापी, श्रेष्ठ वाणी, सदा हर्ष युक्त, श्रेष्ठ वेश, नम्रता युक्त, बहुत नौकर, गुणवान्, चतुर (जा० भ०)

बुध शनि—कलह प्रिय, चंचल चित्त, कला के समूहों में चतुर, बहुतों का पालन करने वाला परम सुशील (शंभू०), दूसरे के ठगने में चतुर, गुरु आदि के वचन उल्लंघन करने वाला, (वृ० जा०) दुर्बलांग, चलने के स्वभाव वाला, उपाय रहित, सबसे कलह करने वाला, सुन्दर वाक्य बोलने वाला, काम करने में चतुर (मान०), चंचल स्वभाव, कलह प्रिय, कला के समूहों में चतुर, श्रेष्ठ वेश, बहुत मनुष्यों का पालक (जा० भ०)।

(५) गुरु शुक्र—स्त्री, धन, मित्र पुत्रादि से सदा सुखी, विद्या में पंडित, श्रेष्ठों से अत्यन्त शास्त्रार्थ करे (शंभु०), अच्छी विद्या जानने वाला, धन और स्त्री युक्त, बहुत गुणों से युक्त (वृ० जा०), सुन्दर स्त्री, धनवान्, धर्म में आस्तिक, प्रमाण जानने वाला, विद्या से आजीविका (मान०), विद्या से पंडित, सदा पंडितों से विवाद करने वाला, पुत्र मित्र और धन के सौख्य से युक्त (जा० भ०)।

गुरु शनि—अधिक यश, ग्राम नगर का स्वामी, स्त्री के पक्ष में संदेही, मनोरथ सिद्ध, शूरवा, धनवान्, कला जानने वाला (शंभु०), नाई या कुम्हार, अन्नकार (रसोई बनाने वाला) हो (वृ० जा०), जीविका से युक्त, बड़ा शूरवीर, यशस्वी, नगर का स्वामी, नगर के जनों में या सेना के मनुष्यों में मुख्य, (मान०), शूरवीर, धनवान् ग्राम और नगर का स्वामी, यश वाला, कलाओं में कुशल, स्त्री के आश्रय से मनोरथ पूर्ण करने वाला (जा० भ०)।

(६) शुक्र शनि—उत्तम शील, लेखन विधि से उत्पन्न खेल से युक्त, पत्थर के कामों में चतुर, चंचल बुद्धि, लकड़ी चीरने वाला, (शंभु०), अल्प दृष्टि, स्त्री के आश्रय से धन बढ़े, पुस्तक आदि लिखने में और चित्र बनाने में चतुर (वृ० जा०), सदा मत-वाला, पशुपालन करने वाला, बढ़ई के काम में चतुर, खारा या खट्टा पदार्थ का प्रेमी, कारीगरी जानने वाला (मान०) शिल्प शास्त्र और लेखन विधि में चतुर, कौतुकी, घोर युद्ध करने वाला, पत्थर के काम में चतुर।

(७) सूर्य चन्द्र का विशेष विचार

सूर्य पाप ग्रहों से युक्त—पिता का नाशक (ल० चं०)

चन्द्र पाप ग्रहों से युक्त—माता का नाशक

सूर्य या चन्द्र शुभ ग्रह युक्त—शुभ फल

सूर्य या चन्द्र शुभाशुभ ग्रह युक्त—शुभाशुभ (मिश्रित) फल (फ० च०)

(८) सप्तम भाव में २ ग्रह योग का फल

सप्तम में सूर्य चन्द्र—पुत्र मित्रों से हीन और स्त्री से युक्त होता है।
सप्तम में सूर्य मंगल—स्त्री से हीन और स्थिर शरीर वाला होता है।
सप्तम में सूर्य गुरु—स्त्री से युक्त धनवान् तथा राजवैरी।
सप्तम में सूर्य शुक्र—निर्धन, बड़ा शरीर, स्त्री से युक्त, पर्वतचारी।
सप्तम में सूर्य शनि—चाकरी करने वाला, दरिद्र, नीच कर्म।
सप्तम में चन्द्र मंगल—मिथ्याभाषी, ईर्ष्यालु, प्रलापी।
सप्तम में चन्द्र बुध राजा या राज्य से मान, अच्छा पंडित।
सप्तम में चन्द्र गुरु—कन्याओं से युक्त, राजा या पण्डित, वणिजी से युक्त।
सप्तम में चन्द्र शुक्र—कन्याओं से युक्त, थोड़े पुत्र, थोड़ा धन, स्त्री से युक्त।
सप्तम में चन्द्र शनि—स्त्री से हीन, नगर का स्वामी, नगर में विचरने वाला।
सप्तम में मंगल बुध—पहिली स्त्री मृत्यु को प्राप्त, विवादी, शूरवीर।
सप्तम में मंगल गुरु—पर्वत वन जल में विचरने वाला, स्त्री से हीन।
सप्तम में मंगल शुक्र—स्त्री के कारण अनर्थ, दुष्टाचार वाला।
सप्तम में मंगल शनि—स्त्री के वश रहे, निर्धन, अन्य स्त्री में रत।
सप्तम में बुध गुरु—अच्छा आचरण, उत्तम स्त्री तथा स्वजनों से युक्त।
सप्तम में बुध शुक्र—राजा का मन्त्री, कल्याण कर्म, स्त्री की चेष्टा करने वाला।
सप्तम में बुध शनि—स्त्री-पुत्र सुख से हीन, रोगी और धन युक्त।
सप्तम में गुरु शुक्र—भोगी, स्त्री रत्न से युक्त, कन्याओं से युक्त।
सप्तम में गुरु शनि—मूर्ख, मित्रों से बैर, नष्ट धन, पिता का धन वाला।
सप्तम में शुक्र शनि—धन स्त्री रत्न सौख्य इनसे युक्त, कीर्तिमान् (जा० सं०)

नवम में दो ग्रह योग

नवम में सूर्य चन्द्र—नेत्र रोगी, धनी, सुभाग्य युक्त, कलह प्रेमी।
नवम में सूर्य मंगल—दुःखी, कलह प्रिय, शूरवीर, प्रचण्ड, निपुण, राजप्रिय।
नवम में सूर्य बुध—विद्वान्, बहुतों से बैर, दुःखी, नाना रोग।
नवम में सूर्य गुरु—रोगी, भूषण वस्त्र गंध पुष्प प्रिय।
नवम में सूर्य शुक्र—नेत्र रोगी, कलह प्रिय, रोगी, भाग्यवान्, सुन्दर बुद्धि।
नवम में सूर्य शनि—शठ, धूर्त, रोगी, युद्ध प्रिय, अनर्थ कर्त्ता, निर्धन, अल्पायु।
नवम में चन्द्र मंगल—सम्पन्न, घाव युक्त, माता का अप्रिय, विकल अन्त।
नवम में चन्द्र बुध—पुत्र हीन, विफल शरीर, बहुत बोलने वाला, उत्तम, शास्त्र का ज्ञाता पंडित।
नवम में चन्द्र गुरु—सौभाग्य धन से युक्त, सुखी, गुणवान्, उत्तम।
नवम में चन्द्र शुक्र—माता की सपत्नी हो, व्याधि युक्त, व्यभिचारिणी का पति।

नवम में चन्द्र शनि—अति दुष्ट कर्म करने वाला, माता के कुल से भ्रष्ट।
नवम में मंगल बुध—मन्त्रियों के शास्त्र में चतुर, सुन्दर भाग्य, भोगी, उद्विग्न चित्त।
नवम में मंगल गुरु—पूज्य, धनधान्य युक्त, व्याधि या घावयुक्त शरीर, क्लेश युक्त।
नवम में मंगल शुक्र—परदेशगामी, क्रूर महाचार, परदेशवासी, प्रधान, स्त्री से बैर।
नवम में मंगल शनि—सौख्य और धन नष्ट, पापी, दुराचारी, अन्य स्त्रोगामी स्वजनहीन।
नवम में बुध गुरु—शास्त्र जानने वाला, न्यायी, भोगी, संपदा युक्त, समर्थ।
नवम में बुध शुक्र - पंडित, गोत प्रिय, विख्यात, अच्छी बोली, धीर, विद्वान् समर्थ।
नवम में बुध शनि—धनी प्रिय जनों से युक्त, रोगी, चतुर, विषम स्वभाव, बैर कर्त्ता, वहु मार्गी।
नवम में गुरु शुक्र—भाग्यवान्, सुन्दर ऐश्वर्य, राजा, बड़ी आयु, सुन्दर भाग्य सम्पन्न, अनेक सुख युक्त।
नवम में गुरु शनि—धन रत्न युक्त, पूज्य स्वजन हीन, व्याधि युक्त।
नवम में शुक्र शनि—यशवान्, पृथ्वी पति, व्याधि युक्त, शीलवान, बहुमित्र (जा० सं०)

(१०) लग्न से दशम में २ ग्रह योग.

दशम में सूर्य चन्द्र—सुन्दर शरीर, शत्रु पर जीत, दयाहीन, सेनापति, दुःशील युक्त राजसी स्वभाव।
दशम में सूर्य मंगल—चाकरी कर्त्ता, निष्फल कार्य, प्रधान, राजा का सेवक, नित्य उद्विग्न चित्त।
दशम में सूर्य बुध - हाथी घोड़ा पृथ्वी का स्वामी, विख्यात। यदि नीच का हो तो ऐसा नहीं होगा।
दशम में सूर्य गुरु—नीच कुल में भी जन्म लेकर राजा हो कीर्ति, सौख्य, सम्मान और धन से युक्त।
दशम में सूर्य शुक्र—राजनीति शास्त्र में चतुर, मित्र धन वाहन युक्त, बहुत कार्यों का आरम्भ करने वाला।
दशम में सूर्य शनि—परदेशगामी, चाकरी करने वाला, जो कुछ धन राजा से प्राप्त करता है उसे किसी समय चोर चुरा ले जाता है।
दशम में चंद्र मंगल—हाथी घोड़ा खजाना सम्पदा बुद्धि से युक्त, पराक्रमी।
दशम में चंद्र बुध—विख्यात, मानयुक्त, धनी, राजा, मंत्री, अवस्था के अन्त भाग में दुःखी बन्धु से हीन।
दशम में चन्द्र गुरु—विद्वान् दानकर्त्ता, मान धन कीर्ति से युक्त, समृद्ध, लम्बी भुजा सबके पूजने योग्य।
दशम में चन्द्र शुक्र—मंत्री, विख्यात क्षमायुक्त, धन विभव से युक्त।

दशम में चन्द्र शनि – विख्यात, जीते हुए शत्रु वाला, राजा, २ स्त्री।

दशम में मंगल बुध - शूरवीर बुद्धिमान्, तेजस्वी, राजा से सत्कार प्राप्त, क्रूर, सेनापति, धीर।

दशम में मंगल गुरु – बहुत से परिवार और धन वाला, राजा, कीर्तिमान् और कर्म समर्थ।

दशम में मंगल शुक्र—शास्त्र विद्या में निपुण, माला, वस्त्र, विद्या अर्थ बुद्धि से युक्त, राजमन्त्री, स्त्री के समान शरीर।

दशम में मंगल शनि – राजा से नहीं मिलने वाला, धन वाला, किसी अपराध में राजा से दण्डित, विभव में हीन।

दशम में बुध गुरु—राजा विनीत व मन्त्री, मान, आज्ञा, विख्यात इनमे युक्त, पुत्र के जारण मारण आदि रूप हिंसा कर्म से युक्त।

दशम में बुध शुक्र – नीति शास्त्र ज्ञाता, सब कर्मों का साधन कर्त्ता, साधु, नीच जनों के अनुकूल रहने वाला, राजा और समर्थ।

दशम में बुध शनि—असाधु, मलिन, मूर्ख, चाकरी करने वाला, असत्यभाषी, परोपकारी।

दशम में गुरु शुक्र—राजा, मान आज्ञा और विभव से युक्त, बहुत चाकरों वाला, सुन्दर शील युक्त।

दशम में शुक्र शनि—उत्तम कर्म कर्त्ता, विख्यात, सर्व द्वन्द्वों से हीन, राज मन्त्री।

यदि ३ या अधिक ग्रह दशम में हों तो द्विग्रहों के योग की कल्पना द्वारा युक्ति से फल विचारना। जैसे सूर्य, चन्द्र, मंगल तीनों एकत्र हों तो (१) सूर्य चन्द्र का फल (२) फिर चन्द्र मंगल का फल (३) फिर सूर्य मंगल का फल पृथक-२ विचारना।

यदि ये द्विग्रह योग २ या ३ स्थानों में हों तो प्रत्येक स्थान का फल प्रथक २ स्थान के अनुसार होगा।

चन्द्र से दशम में द्विग्रह योग

सूर्य मंगल—अलंकार वस्त्र आदि से युक्त, दिव्य वणिजी करने वाला, शूरवीर, तीक्ष्ण और अति हिंसक।

सूर्य बुध—वस्त्र वाहन भूषण का भोगने वाला, वणिजी कर्म करने वाला; जल से जीविका वाला।

सूर्य गुरु—वीर, शूर, विख्यात, राजा से सत्कार प्राप्त, कार्य सिद्धि वाला।

सूर्य शुक्र—स्त्री के आश्रय में रहने वाला, समृद्ध, सुंदर ऐश्वर्य युक्त, राज प्रिय।

सूर्य शनि—चाकरी कर्त्ता, कृपण, दीन, वध और बन्धन को प्राप्त, परदेश वासी, चोरों में मुख्य।

मंगल बुध—राजा का शत्रु, महाशूर, सुन्दर कलाओं में चतुर, दीर्घायु।

मंगल गुरु--दोनों बली होंतो, मित्र जनों से प्राप्त किये धन वाला, मित्र जनों के आश्रित रहने वाला, जीवन से युक्त।

मंगल शुक्र--वणियों की वृत्ति से परदेश में रहन, सुवर्ण, मोती मणि आदि से युक्त, स्त्रियों के आश्रित जीवन।

चन्द्र से दशम में

चन्द्र से मंगल शनि--साहसी कर्म युक्त, झूठ बोलने वाला।

चन्द्र से बुध गुरु--धर्मात्मा और स्वामी, विख्यात, राज पूज्य, धनी लेखन कर्म से युक्त, शास्त्र सूत्रों को जानने वाला।

चन्द्र से बुध शुक्र--मित्र, धन, स्त्री, सौख्य से युक्त, पंडित, मंत्री या देश पति।

चन्द्र से बुध शनि--मिट्टी का बर्तन बनाने वाला, चित्रकारी, लेखन कर्म कर्त्ता; विद्याचार्य, विख्यात।

चन्द्र से गुरु शुक्र--राजा का सेवक, ब्राह्मणों का स्वामी, समर्थ, शोक हीन विद्याचार्य।

चन्द्र से गुरु शनि--पराये संताप वाला, नीच, सिद्ध किये कार्य वाला, विख्यात कर्म करने वाला।

चन्द्र से शुक्र शनि--तेल बेचने वाला, सुवर्णकार, नाच गाना करने वाला, चित्रकारी या गन्ध से जीविका।

त्रिग्रह योग

(१) सूर्य चन्द्र मंगल--उत्तम यन्त्र, पत्थर के काम में प्रवीण, लज्जा एवं दया से रहित, शूरमा (शंभु०), मन्त्र विद्या, अश्व विद्या में कुशल, रुधिर की वेदना से पीड़ित, बड़ा शूरवीर, पुत्र रहित (मान०), शूरवीर मन्त्र और अश्व विद्या का ज्ञाता, लाज और कृपा से हीन, (जा० भ०), शत्रुओं को मारने वाला, धनी, नीति (कानून) का ज्ञाता (जा० पारि०)।

सूर्य चन्द्र बुध--राजा का काम करने वाला, बड़ा तेजस्वी, बातचीत में और सम्पूर्ण शास्त्र तथा सम्पूर्ण कलाओं में चतुर (शंभु०), विद्या धन और रूप से युक्त, काव्य और कथा का प्रेमी, सभा का प्रिय, धनवान्, राजा का सेवक, प्रिय वाक्य कहने वाला (मान०), बड़ा यश, राजा का कार्य करने वाला, बात में और शास्त्र कला में चतुर (जा० भ०), राजाओं में पूज्य, धनवान्, चण्ड, दुर्बल द्रव्य वाला, विद्यायुक्त (लग्न चन्द्र०)।

सूर्य चन्द्र गुरु--पंडित धूर्त, चंचल, प्रवीण, सेवा जानने वाला, परदेश जाने वाला (शंभु) धर्म में तत्पर, राजा का मंत्री, दृढ़ बुद्धि, भाई बन्धुओं का पालक, देव ब्राह्मण पूजक (मान०) सेवा की विधि जानने वाला, परदेश जाने वाला, चतुर, प्रवीण चपल, अत्यन्त धूर्त (जा० भ०) गुणवान्, विद्वान्, राजा का प्रिय (जा० पारि०)

सूर्य चन्द्र शुक्र--उत्तम धर्म कर्म में अरुचि, पराया कार्य नाशक, व्यसनों में तत्पर (शंभु०)। सुन्दर शरीर, शत्रुहंता, राजा के समान सुन्दर, बड़ा तेजस्वी दाँतों से विकार युक्त (मान०)। पराया धन हरने वाला, व्यसनों में आसक्त, सत्कर्म में रुचि से रहित (जा० भ०)। परस्त्रीगामी, क्रूर, शत्रुओं से डरने वाला, धनिक (जा० पारि०)।

सूर्य चन्द्र शनि--मूर्ख, अति निर्धन, पराये इशारे जानने वाला, धातु क्रिया में तत्पर, धूर्त, व्यर्थ कष्ट करने वाला (शंभु०)। धर्म में तत्पर, दरिद्र, हाथी घोड़ों का पालन कर्ता, सत्कर्म करने वाला, शक्ति रहित (मान०)। पराये इङ्गित का जानने वाला, धनहीन, मंद बुद्धि, धातु क्रिया में निरन्तर तत्पर, वृथा श्रम करने वाला, (जा० भ०)। खल बुद्धि, मायावी, देशप्रिय (जा० पारि०)।

सूर्य मंगल बुध—लज्जा, पुत्र, धन, स्त्री जन और मित्र वर्ग से रहित, चित्त वृत्ति कठोर, विख्यात, साहसी, मंद कर्मों में प्रवीण (शंभु०)। सर्वत्र विख्यात, बड़ा साहसी, निष्ठुर, निर्लज्ज, धन और पुत्र युक्त (मान०)। प्रसिद्ध, यंत्र शास्त्र की विधि में प्रवीण, साहसी, कठोर चित्त, लज्जा, धन, स्त्री, पुत्र, मित्रों सहित (जा० भ०)। सुखरहित, पुत्र, स्त्रीयुक्त (जा० पारि०)।

सूर्य मंगल गुरु—व्याख्याता, धनवान्, राजाओं का मंत्री, सेनापति, न्याय करने में समर्थ, उदार मन, सत्यवादी, विलासी, (शंभु०)। भारी मूर्ख, सत्यवक्ता, राजा का मंत्री, मिष्टभाषी, बड़ा निपुण (मान०)। वक्ता, धनयुक्त, राजा का मंत्री, सेना का स्वामी, नीति विधान में चतुर, तेजस्वी, सत्यवक्ता, विलासी (जा० भ०)। लोगों का विशेष प्रिय, मंत्री या सेनापति (जा० पारि०)।

सूर्य मंगल शुक्र—भाग्य युक्त, अति बुद्धिमान्, धनवान्, नम्र, अपने वश में, अधिक चतुर, बहुत बोलने वाला, उत्तम स्वभाव, उत्तम गुणयुक्त (शंभु०)। स्वरूप वान्, नेत्र रोगी, दुष्ट स्वभाव, वत्सल, चतुर और अति विषयी मन (मान०)। भाग्ययुक्त, अति बुद्धिमान्, नम्र, कुलीन, शीलवान्, थोड़ा बोलने वाला, चतुर (जा० भ०)। नेत्र रोगी, योगी, कुलीन, धनवान् (जा० पारि०)।

सूर्य मंगल शनि—विवेक रहित, पिता बंधु वर्ग तथा धन से हीन, कलहमें तत्पर, बहुत रोग (शंभु०)। मूर्ख, गौ धन से हीन, रोग से आर्त, स्वजनों से रहित, विकल, कलह से व्याकुल, धनहीन, कलह युक्त, त्यागी, पिता बंधु वर्ग से वियोगी, विवेक रहित (जा० भ०)। बंधुओं से रहित, मूर्ख, धनी, रोगी (जा० पारि०)।

सूर्य बुध गुरु—नेत्र रोगी, शास्त्र कला में प्रवीण, सुशील, समस्त गृह धन में अधिक होवे (शंभु०)। नेत्र रोगी, बड़ा धनवान्, शस्त्र तथा शास्त्र कला का जानने वाला और लेखक (मान०)। चतुर, शास्त्रों की कला में प्रवीण; धन संग्रह करने वाला, महा बलवान्, श्रेष्ठ शक्ति, नेत्र रोग से पीड़ित (जा० भ०)। चतुर बुद्धि, विद्वान्, यशस्वी, धनवान् (जा० पारि०)।

सूर्य बुध शुक्र - स्त्री के निमित्त मन संतप्त, बहुत बोलने वाला, विदेश वासी, सज्जनों का द्वेषी; निंद्य बुद्धि (शंभु०) । माता पिता गुरुजनों से तिरस्कृत और इनसे शाप पाकर दिशाओं में घूमने वाला, स्त्री निमित्त से दुःखी चित्त (मान०) । साधुओं का वैरी, निंदक, अति संताप को प्राप्त, स्त्री के कारण से बहुत बोलने वाला, देशों का भ्रमण करने वाला, (जा० भ०) । कोमल शरीर, विद्वान्, यशस्वी, सुखी (जा०पारि०)।

सूर्य बुध शनि - दीन आकृति, मनुष्यों से रहित, लोगों के साथ बहुत द्वेष करने वाला, अति दुष्ट, नीच संगति (शंभु०) । दुराचारी, शत्रुओं का संहारक, भाई बंधुओं से त्यक्त, सबसे शत्रुता करे (मान०) । तिरस्कार को प्राप्त, अपने जनों से रहित, अनेक दोष करने वाला, हिजड़ों कैसी आकृति, हीन वृत्ति वाला (जा० भ०) । बंधुहीन, धनहीन, बैरी, दुराचारी (जा० पारि०) ।

सूर्य गुरु शुक्र – पराये कार्य में श्रद्धालु, वाचाल, चतुर, धनहीन, राजाश्रयी, अति क्रूर (शंभु०) । राजा का मंत्री, दरिद्र, खराब नेत्र, शूरवीर, बुद्धिमान्, परोपकारी (मान०) । थोड़ा बोलने वाला, धन रहित, राजाश्रयी, पराये कार्यों में शूरता करने वाला, पुत्र स्त्री से युक्त, बुद्धिमान्, नेत्र रोगी, धनवान् (जा० पारि०) ।

सूर्य गुरु शनि – स्त्रियों में नित्य धन व्यय, बोलने में चतुर, स्त्री पुत्र आदि का सुख राजा का प्रिय (शंभु०) । पुत्र मित्र कलत्र से युक्त, भय रहित, राजा से द्वेष अपनी इच्छा से मित्रता करने वाला (मान०) । राजा का प्यारा, मित्र, स्त्री पुत्रों के सहित, शोभायमान शरीर, अच्छी नीति में खर्च, निर्भय बोलने वाला (जा० भ०) । भय रहित, राज प्रिय, सात्विक (जा० पारि०) ।

सूर्य शुक्र शनि—धन, काव्य कथा और अपने मनुष्यों से त्यक्त, दुष्ट चरित्रों में रुचि, अति भयवान्, खुजला का रोग (शंभु०) । कारीगरी तथा मान से रहित, कुष्ठी, शत्रुओं के कारण सदा भय, दुष्टों के समान आचरण (मान०) । शत्रु के भय से युक्त, श्रेष्ठ कथा और काव्य रहित, खोटे कर्म में प्रीति, अति पीड़ित, धन और बंधु वर्ग से हीन (जा० भ०) । दुष्ट चरित्र वाला, गर्वी, अभिमानी (जा० पारि०) ।

(२) चंद्र मंगल बुध – अत्यन्त दीन, अपने मनुष्यों से अपमानित, अन्न, धन से हीन, दीन मनुष्यों के अनुकूल रहने वाला (शंभु०) । नीच के समान आचरण, बड़ा पापी, जीविका से हीन, लोक में बंधुहीन (मान०) । दीन, धन धान्य रहित, अपने बंधु वर्गों से दंभ नीच जनों का साथ (जा० भ०) । सदा भोजन में रत, दुष्कर्मी, दूसरों का दूषक (जा० पारि०) ।

चंद्र मंगल गुरु—स्त्री युक्त, निर्मल देह, दूसरे के शुभ कार्यों को समझ लेने वाला, कोप युक्त, घाव से चिह्नित (शंभु०) । बड़ा कामी, वर्ण से युक्त, सबको प्रिय, स्त्री जनों के साथ रहने वाला, चंद्र समान सुन्दर मुख (मान०) । वर्ण युक्त, क्रोधी, पराया धन हरण करने वाला, स्त्री में तत्पर, शोभायमान शरीर (जा० भ०) । रोषयुक्त वचन, कामातुर, रूपवान् (जा० पारि०) ।

चंद्र मंगल शुक्र—दुष्ट स्वभाव की स्त्री, चंचल दुष्ट स्वभाव, पुत्र सुशील हो (शंभु०)। दुष्ट स्वभाव वाली स्त्री तथा माता से युक्त, सर्वत्र भ्रमण करने वाला, शीत से डरने वाला (मान०)। दुष्ट शीला स्त्री का पति, अस्थिर, दुष्ट शीला माता की संतान, थोड़ा शील (जा० भ०)। शील हीन, पुत्र हीन, भ्रमणशील (जा०पारि०)।

चंद्र मंगल शनि—बाल्यावस्था में माता की मृत्यु, सदा कलह से संतप्त, निंद्य (शंभु)। बालपने में माता मरे, दुष्ट मनुष्यों को देखने मात्र से ही द्वेषी होने वाला, विषमतायुक्त, (मान०)। बालपने में माता की मृत्यु, सदा कलह युक्त, निंदित (जा० भ०)। चंचल बुद्धि, दुष्टात्मा, माता को मारने वाला (जा० पारि०)।

चंद्र बुध गुरु - बुद्धिमान्, बड़ा तेजस्वी, बड़े ऐश्वर्य वाला, उत्तम विद्या, अनेक मित्र, विख्यात कीर्ति (शंभु०)। बड़ा तेजस्वी, धनवान्, पुत्र मित्र से युक्त, प्रशस्त प्राणी, विख्यात, कीर्तिमान् (मान०)। प्रसिद्ध यश, बुद्धिमान्, बड़ा प्रतापी, विचित्र मित्र, भाग्यवान्, श्रेष्ठ कृति (अच्छा आचरण) (जा० भ०)। भारी धनी, राजा का प्रिय (जा० पारि०)।

चंद्र बुध शुक्र—बड़ी स्पर्धा से युक्त, ईर्ष्या करने वाला, उत्तम विद्या, नीच वृत्ति, अति धन लोभी (शंभु०)। विद्या से विभूषित, ईर्ष्यालु, धन का अत्यन्त लोभी, दुष्ट आचरण (मान०)। विद्या में प्रवीण, नीच वृत्ति, सबसे द्रोह या निंदा करने वाला, धन का लोभी (जा० भ०)। विद्वान्, नीच कर्म वाला, सेवा करने योग्य (जा०पारि०)।

चंद्र बुध शनि—ख्यात, नम्र, राजा के मनोनुकूल, नगर ग्राम का अधिकारी, कला विद्या जानने वाला, बुद्धिमान् (शंभु०)। बड़ा बुद्धिमान्, राज पूज्य, बड़ा लम्बा, बड़ा दुष्ट, प्रशस्त वाणी, कलाओं के समूह में निर्मल बुद्धि, विख्यात, राजा का प्यारा, (मान०)। नगर ग्राम का पति, नम्रतायुक्त (जा० भ०)। दानी, राज पूजित, गुणवान् (जा० पारि०)।

चंद्र गुरु शुक्र—अधिक ऐश्वर्य, शुभ गुण, कीर्तिमान्, उत्तम बुद्धि, वृद्धि युक्त (शंभु०)। पतिव्रता माता का पुत्र, बड़ा पंडित, साधु, सब कलाओं का ज्ञाता, अति सुन्दर (मान०)। भाग्यवान्, सुन्दर कीर्ति, बुद्धिमान्, श्रेष्ठ वृत्ति (जा० भ०)। प्राज्ञ, सुपुत्री, कला में निपुण (जा० पारि०)।

चंद्र गुरु शनि उत्तम मंत्र शास्त्रों को जानने वाला, सुन्दर वेश, राज प्रिय, अत्यन्त चतुर, बड़ा तेजस्वी (शंभु०)। रोग से रहित, स्त्रीसंग करने वाला, शास्त्रार्थ जानने वाला, सर्वज्ञ, ग्राम नगर का पालन करने वाला (मान०)। चतुर, राजा का प्यारा, श्रेष्ठ, मंत्र शास्त्र में अधिकारी, उत्तम वेश, बड़ा प्रतापी (जा० भ०)। शास्त्री, वृद्धा स्त्री में रत, राजा के तुल्य (जा० पारि०)।

चंद्र शुक्र शनि—उत्तम ग्रंथ देखने में श्रद्धालु, उत्तम लेखनी में भी रुचि, पुण्य में तत्पर, वेद पाठियों में श्रेष्ठ और पुरोहित होवे (शंभु०)। लेखक का काम करने वाला, वेद ज्ञाता, पुरोहित के कुल में जन्म, कथा कहने वाला (मान०)। पुरोहित, वेद के

ज्ञाताओं में श्रेष्ठ, पुण्य कर्म करने में तत्पर, श्रेष्ठ पुस्तकों को देखने और लिखने वाला (जा०भ०)। वेद ज्ञाता, राज पुरोहित, अत्यन्त सुभग (जा० पारि०)।

(३) मंगल बुध गुरु—कुल में श्रेष्ठ, श्रेष्ठ कविता, गीत कला का आदर करने वाला, पराये साधन में अत्यन्त मन रहे (शंभु०)। बड़ा सत्कवि, स्त्रियों का प्रिय, परोपकारी, बड़ा उत्साही, गान विद्या में कुशल (मान०)। कुल में धरती का पालन करने वाला राजा के समान, काव्य और गाने बजाने की कला में प्रवीण, पराये कार्य साधन में एक चित्त (जा०भ०)। गंधर्व विद्या, काव्य, नाटक का ज्ञाता (जा०पा०)।

मंगल बुध शुक्र—वाचाल, अत्यन्त चपल, दुबला शरीर, सदा उत्साही, धनवान्, (शंभु०)। किसी अंग से हीन, बड़ा चंचल, हीन कुल में जन्म, सदा उत्साह युक्त, तृष और चुगलखोर (मान०)। धन सहित, दुर्बल देह, बड़ा बोलने वाला, चंचल, धृष्ट, निरंतर उत्साह में तत्पर (जा० भ०)। हीनांग, दुष्ट वंशोत्पन्न, चंचल बुद्धि (जा० पारि०)।

मंगल बुध शनि—भय युक्त क्षीण शरीर, धन की इच्छा करने वाला, दूत, परदेश वासी, कुनेत्र, सहनशील नहीं, बहुत बकने वाला (शंभु०)। परदेश में रहने वाला, नेत्र रोगी, दूतका काम करने वाला, मुख रोगी, हंसी करने वाला (मान०)। बुरे नेत्र, दुर्बल देह, वन में वास करने वाला, दूतका काम करने वाला, परदेशी, बहुत हास्ययुक्त, किसी को न सहने वाला, अपराधी होता है (जा०भ०)। दूत, नेत्र रोगी, सदा भ्रमण-शील (जा० पारि०)।

मंगल गुरु शुक्र—स्त्री पुत्र आदिकों के सुख से युक्त, राज मान्य, सज्जन संगी (शंभु०)। सुन्दर स्त्रियों से युक्त, सदा सुखी, सबों को आनन्द देने वाला, राजा का प्रिय, (मान०)। श्रेष्ठ पुत्र और स्त्री के सुख सहित, राजा से माननीय, श्रेष्ठजनों के साथ रहने वाला (जा० भ०)। राजा का मित्र, सुपुत्री, सुखी (जा० पारि०)।

मंगल गुरु शनि—राजा से मान प्राप्त, दया रहित, दुर्बल शरीर, दुष्ट वृत्ति, मित्र सुख रहित (शंभु०)। कुष्ठी शरीर, राज पूज्य, नीचों के समान आचार, निर्धन, मित्रों से निंदित (मान०)। राजा से प्राप्त मान और कृपा रहित, दुर्बल, खोटी वृत्ति, मित्रता रहित (जा० भ०)। दुबला शरीर, मानी, दुराचारी (जा० पारि०)।

मंगल शुक्र शनि—विदेशवासी, मां असभ्य होवे, सुन्दर स्त्री के कारण मान हानि आदि से सुख नाश (शंभु०)। स्त्री दुष्ट स्वभाव की, परदेशवासी, सदा सुखी (मान०)। परदेशवासी, नीच कुल की माता, वैसे ही स्त्री, वह सुखों का नाश करता है (जा०भ०)। कुपुत्री, सदा परदेश में रहने वाला (जा० पारि०)।

(४) बुध गुरु शुक्र— सत्यवादी, उसकी कीर्ति बहुधा गाई जावे, राजा की कृपा रहे, शत्रु से विजयी रहे, प्रसन्न मुख (शंभु०)। सुन्दर शरीर, राज पूज्य, शत्रुओं को जीतने वाला, बड़ा यशस्वी और सत्यवादी (मान०)। राजा की कृपा सहित, बहुत यश वाला,

प्रसन्न चित्त, शत्रुओं को जोतने वाला, सत्य में तत्पर (जा० भ०)। शत्रुओं को जीतने वाला, कीर्ति, प्रताप से युक्त। (जा० पारि)।

बुध गुरु शनि—स्थान ऐश्वर्य से उत्पन्न सुख से युक्त, उत्तम चरित्र, धारणा युक्त, बहुत बोलने वाला (शंभु०)। उत्तम आचार, अनेक भोग भोगने वाला, ऐश्वर्य से युक्त, बुद्धिमान्, सुख धैर्य से युक्त (मान०)। घर में धन और श्रेष्ठ वैभव युक्त, बहुत बोलने वाला, धृतिमान्, श्रेष्ठ वृत्ति (जा० भ०)। विशेष सुखी, श्रीमान्, अपनी स्त्री का प्रिय (जा० भ०)।

बुध शुक्र शनि—झूठ बोलने वाला, बहुत बकने वाला, धूर्त, सदाचार रहित, दूर गमन में तत्पर, कला जानने वाला (शंभु०)। बड़ा मुखर (चुगल खोर), परस्त्री गामी, दुष्ट जनों का संग, कलाओं का जानने वाला, स्वदेश में रहने वाला (मान०)। साधु शील रहित, झूठ बोलने वाला, बहुत बोलने वाला, निश्चय धूर्त, बड़ी दूर की यात्रा करने वाला, कलाओं का जानने वाला (जा० भ०)। झूठ बोलने वाला, दुष्ट, पर स्त्री गामी (जा० पारि०)।

(५) गुरु शुक्र शनि—नीच कुल में उत्पन्न हो तो भी विशाल कीर्ति युक्त राजा हो, निर्मल वृत्ति वाला (शंभु०)। राजा हो, यशस्वी, नीच कुल में उत्पन्न होनेपर भी शील स्वभाव से युक्त राजा होवे (मान०)। नीच वंश में भी हो तो भी श्रेष्ठ कीर्ति वाला पृथ्वी का स्वामी, श्रेष्ठ वृत्ति वाला हो (जा० भ०)। स्वच्छ बुद्धि, विख्यात, सुख युक्त (जा० पारि०)।

(६) ३ पाप ग्रह एक घर में—सदा दुःखी, अनम्र व निन्दित।

३ शुभ ग्रह एक घर में - सुखी हो।

चन्द्रमा पाप युक्त हो—जातक अल्प सुखी।

सूर्य पाप युक्त हो—पिता अल्प सुखी।

नवम भाव में त्रिग्रह योग फल

नवम में सूर्य चन्द्र मंगल—घाव युक्त शरीर, रूखा, मरे हुए पिता वाला, भ्रातृ हीन, रुद्र का वैरी, हिंसक।

नवम में सूर्य चन्द्र बुध—नपुंसक सम आचरण, सब जनों का वैरी, पराक्रमी, सत्य भाषी।

नवम में सूर्य चन्द्र गुरु—उत्तम कुलीन, वाहन, धन और सौख्य युक्त।

नवम में सूर्य चन्द्र शुक्र स्त्री के कलह से नष्ट धन सौख्यवाला, राजसामन्त, सुन्दर, यज्ञ कर्ता, प्रिय भाषी।

नवम में सूर्य चन्द्र शनि—अत्यन्त दुष्ट, खंडित आकार, पराई ऋद्धि से युक्त, लोक वैरी।

नवम में सूर्य मंगल बुध—प्रियभाषी, भुज बल युक्त, ज्ञान वृद्धि, समय-समय पर कार्य कर्ता, निष्ठुर, पिशाच बाधा से दुःख।

नवम में सूर्य मंगल गुरु— सदा उद्योगी, देव मित्र गण पूजने में तत्पर, सम्पन्न स्त्रियों वाला, गुणी।

नवम में सूर्य मंगल शुक्र— कलह प्रिय, कुलीन, कन्या दूषक, कर्म में चंचल, सब का वैरी।

नवम में सूर्य मंगल शनि—बड़ा साहसी, अति क्षुद्र, लोक वैरी, प्रिय, मिथ्याभाषी, क्रूर, बालपने में पिता से वर्जित।

नवम में सूर्य बुध गुरु— भाग्यवान्, धनवान्, सुन्दर ऐश्वर्य, राजप्रिय, सुन्दर वेष, सम्पन्न, सुन्दर पुत्र युक्त।

नवम में सूर्य बुध शुक्र— प्रकाशित और शान्त, शत्रु पक्ष से क्षीण, राजा के समान, तथा सार वाक्य वाला।

नवम में सूर्य बुध शनि—पापी, पर स्त्री गामी, प्रवासी, अति चतुर, चाकरी वाला, कामी।

नवम में सूर्य गुरु शुक्र— अच्छा पण्डित, मनोहर, बहुत देश वाला, अति धीर, सुन्दर बुद्धि, पंडित।

नवम में सूर्य गुरु शनि— उत्तम पुरुष, राजा और गुणवान्, धनवान्।

नवम में सूर्य शुक्र शनि—कांति हीन, मलिन, राजा के दंड से युक्त, बुद्धि हीन, मूर्ख।

नवम में चन्द्र मंगल बुध— धन, सुवर्ण, रत्न, भाग्य से युक्त, पहिली अवस्था में, संताप युक्त और सब का नाश करने वाला।

नवम में चन्द्र मंगल गुरु—जितेन्द्रिय, पंडित, गुरु देव साधु सेवा में तत्पर, विद्या युक्त, भोगी, सुन्दर ऐश्वर्य युक्त।

नवम में चन्द्र मंगल शुक्र— घाव युक्त देह, रूप हीन, प्रभा क्षीण, स्त्री प्रिय, स्त्री के वश में रहे, स्त्री द्वारा नाश को प्राप्त।

नवम में चन्द्र मंगल शनि-- भ्रातृवंश नाशक, बालपन में माता से वर्जित और राजा।

नवम में चन्द्र बुध गुरु— कुल वंश वर्धक, आचार्य, विभव, मित्र इनसे युक्त, राजा, बहु साधन युक्त।

नवम में चन्द्र बुध शुक्र—माता की सपत्नी को उत्पन्न करने वाला, आनन्द युक्त, मानयुक्त, बहुत पिता वाला, शुभ शील वाला।

नवम में चन्द्र बुध शनि— नपुंसक सम आचरण, अति विह्वल, मलिन, निन्दित बुद्धि, संग्राम से भागने वाला, दीन।

नवम में चन्द्र गुरु शुक्र— राजा तुल्य, राज कुल में हो तो राजा हो।

नवम में चन्द्र गुरु शनि— प्रिय भाषी, सदाचार युक्त, सुशील, विख्यात, समस्त शास्त्रों में प्रवीण।

नवम में चन्द्र शुक्र शनि— कृषि से वृत्ति, शत्रु के पोषण में अनुरागी, निष्पाप, शूर-वीर, अतिथि, गुरुजन, स्वजन इनका भक्त।

नवम में मंगल बुध गुरु—सत्यभाषी, जनों का प्रिय, सुन्दर शील सम्पन्न, अतीव निपुण, भाग्यवान् ।

नवम में मंगल बुध शनि—बड़ा उत्साह युक्त, बहुदेश का स्वामी, विख्यात, राज सत्कार से सत्कृत और प्रचंड ।

नवम में मंगल बुध शनि—पराया तर्क करने वाला, वचन गूढ़, मलिन और खंडाकार, पर कार्य नाशक ।

नवम में बुध गुरु शुक्र—देव समान, सुन्दर शील सम्पन्न, विख्यात, राजा, विद्वान्, धर्म शील ।

नवम में बुध गुरु शनि—पुष्ट, पुर में गुण गण्य, चतुर, राजमन्त्री, प्रकाशित, धनी, आज्ञाकारी सेवकों से युक्त ।

नवम में बुध शुक्र शनि—बुद्धिमान्, प्रकाशित, सुन्दर मनोहर वचन सुख युक्त ।

नवम में गुरु शुक्र शनि—अन्न पान, विभव वाला, सुन्दर स्थान, ऐश्वर्य युक्त, सुन्दर रूप ।

चन्द्र से दशम में त्रिग्रह योग फल

सूर्य मंगल बुध—धन युक्त, राज जन पूज्य, सर्वजन पूज्य ।

सूर्य मंगल गुरु—सुन्दर ऐश्वर्य सम्पन्न, शत्रु को जीते, समृद्धि युक्त ।

सूर्य मंगल शुक्र—क्रूर, साहसी, पर धन हरने वाला ।

सूर्य मंगल शनि—क्रूर कर्म, छिपे पाप, दुराचारी ।

सूर्य बुध गुरु—विद्वान्, रूपवान्, ऐश्वर्यवान्, धर्मात्मा, प्रिय ।

सुर्य बुध शुक्र—बड़ा यश, धर्मात्मा, क्रोधहीन, नहीं पराजित होने वाला, सौभाग्य, सामग्रियों से युक्त, समृद्धि उत्पन्न करते हैं ।

सूर्य बुध शनि—क्रूर, चपल, शील हीन, शस्त्र अग्नि से विदीर्ण शरीर ।

सूर्य गुरु शुक्र—सुन्दर ऐश्वर्य, विद्या से प्राप्त धन, धर्म में प्रीत, योग भागी ।

सूर्य गुरु शनि—रोगी, अति चपल, समस्त जनों से हीन ।

मंगल बुध गुरु—धर्मात्मा, बहुत कुटुम्ब, अनेक प्रकार का धन ।

मंगल बुध शुक्र अच्छी कारीगरी से युक्त, मालाकार, सुवर्णकार, सब लोक में हानि करने में युक्त ।

मंगल बुध शनि—धर्म शील और निद्रा युक्त, सरल स्वभाव, सत्यभाषी ।

मंगल गुरु शुक्र—धन युक्त, नीतिशास्त्र का ज्ञाता, देव ब्राह्मण का प्रेमी ।

मंगल शुक्र शनि—मलिन, असत्य भाषी, वध, बन्धन, विवाद इनसे युक्त ।

बुध गुरु शुक्र—इष्ट मित्रों से युक्त, धनी, अति सौभाग्य वाला, धर्मात्मा, सात्विक गुण युक्त, धीर ।

बुध शुक्र शनि—धन धर्म से युक्त बुद्धि वाला, दयालु, सत्यभाषी ।

गुरु शुक्र शनि—अनेक रोग, विज्ञानी, सुजन, परदेशवासी ।

चतुर्ग्रह योग का फल

(१) सूर्य चन्द्र मंगल बुध—लिखने की जीविका करे, चोर, चुगलखोर, बड़ा मायावी, प्रशस्त वाणी, बड़ा कुशल, (मान०)। लेखक का काम करने वाला, मुखर वाणी और माया में निपुण, वैद्य (लग्न चन्द्रिका)। मायावी, प्रपंची, लेखक, रागी (जा० परि०)।

सूर्य चन्द्र मंगल गुरु—बड़ा निपुण, धनवान्, तेजस्वी, शोक रहित, नीतिज्ञ (मान०)। प्रसंग में निपुण, धनी, तेजस्वी, शोकरहित, नीतिज्ञ (ल० चं०)। धनवान्, यशस्वी, बुद्धिमान्, राजा का प्रिय करने वाला, निरोग, निश्चिन्त (जा० पारि०)।

सूर्य चन्द्र मंगल शुक्र— विद्या धन संग्रह कर्त्ता, सदा सुखी, पुत्र कलत्र युक्त, वाणी से वृत्ति करने वाला (उपदेशक आदि) (मान०)। विद्या और धन का संग्रह करने वाला, सुखी, पुत्रवान्, स्त्री युक्त, वाणी की ही वृत्ति वाला (ल० चं०) स्त्री पुत्र धन से युक्त, विद्वान्, अल्पभोजी, सुखी, कार्यों में निपुण, कृपालु, (जा० पारि०)

सूर्य चन्द्र मंगल शनि—मूर्ख, धन से रहित, ठिगना, विषम देह, भिक्षा वृत्ति (मान०)। मूर्ख, दरिद्री, ह्रस्व विषमदेह, भिक्षावृत्ति (ल० चं०)। चंचल नेत्र, घूमने वाला, व्यापारिणी स्त्री का पति, निर्धन (जा० पारि०)।

सूर्य चन्द्र बुध गुरु—कारीगरी जानने वाला, धनवान्, सुन्दर रंग, रूप वाला, सुन्दर नेत्र, रोग रहित (मान०)। कारीगरी करने वाला, धनी, सुन्दर वर्ण, प्लुत नेत्रों वाला, रोगहीन (ल० चं०)। मित्र पुत्र स्त्री युक्त, धनवान्, गुणी, यशस्वी, बलवान्, उदार (जा० पारि०)

सूर्य चन्द्र बुध शुक्र—सुन्दर ठिगना शरीर, राजाओं का माननीय, प्रशस्त वाक्य, विफल (मान०)। सौभाग्यवान्, ह्रस्व, राजाओं में पूज्य, वाणी में निपुण, विफल (ल०चं०)। विफल वाचाल (जा० पारि०)

सूर्य चन्द्र बुध शनि—भिक्षावृत्ति, मातापिता से वियुक्त, नेत्रों से विकल, निर्धन (मान०)। भिक्षुक, माता पिता से वियोगी, विकल नेत्र, दरिद्री (ल०चं०)। निर्धन, कृतज्ञ (जा० पारि०)

सूर्य चन्द्र गुरु शुक्र—राजपूज्य, तालाब आदि, जंगल तथा मृगों का स्वामी, बड़ा निपुण, सदा सुखी (मान०)। राजाओं में पूज्य, जल वन और मृगों का स्वामी, निपुण, सुखी (ल०चं०)। जल में, वन स्थल में चलने वाला, राज पूज्य, भोगी (जा० पारि०)।

सूर्य चन्द्र गुरु शनि—माननीय, स्त्री का प्रेमी, बड़ा धनी, पुत्रवान्, क्षीणदेह समान और सुन्दर नेत्र (मान०)। पूज्य और स्त्री को प्यारा, बहुत द्रव्य और पुत्रों वाला, तीक्ष्ण और समनेत्र (ल० चं०) विशाल नेत्र, बहुत धन पुत्र से युक्त, वेश्या का पति (जा० पारि०)।

सूर्य चन्द्र शुक्र शनि—दुबला, स्त्री के समान आचरण, डरपोक, अगुवा (मान०)। निर्मल, डरपोक, कन्याओं के द्वारा धनोपार्जन, खाने पीने में तत्पर (जा० पारि०)। अत्यन्त दुर्बल, स्त्री के समान आचार, डरपोक, आगे चलने वाला (ल० चं०)।

सूर्य मंगल बुध गुरु—सूत्र करने वाला, पर स्त्री रत, शूरवीर, सदादुःखी, चक्र का धारण करने वाला (मान०) (ल० चं०)। सबल, विपत्ति से युक्त, स्त्री सम्पत्ति वाला, नेत्र रोगी, भ्रमणशील (जा० पारि०)।

सूर्य मंगल बुध शुक्र—पूज्य, धनवान्, सुन्दर, राजमान्य, नीतिमान् (मान०)। दूसरों की स्त्री में लीन, विषम छोटे बड़े या टेढ़े नेत्र, चोर बुद्धि, धनादि से रहित (जा० पारि०)।

सूर्य मंगल बुध शनि—योद्धा, कवि, राजमन्त्री, बड़ा तीक्ष्ण, नीचों के समान आचार (मान०)। योधा, कवि, मंत्री, सेनापति, तीक्ष्ण और नीचा आचार वाला (ल० चं०)। सेनापति या राजा का मंत्री, नीच कर्म, भोगी (जा० पारि०)।

सूर्य मंगल गुरु शुक्र—पूज्य, राजाओं में पूज्य, धनवान्, प्रख्यात, नीतिज्ञ, सौभाग्यवान् (मान०) (ल० चं०)। राजा के सदृश, विख्यात, विशेष पूज्य, धनी (जा० पारि०)।

सूर्य मंगल गुरु शनि—समूह का मुखिया, उन्माद युक्त, राजमान्य, भाग्यशाली, गणों में नायक, उन्माद युक्त, राज पूज्य, सिद्ध अर्थ वाला (ल० चं०)। निर्धन, भ्रांत, मित्र और परिवार वाला (जा० पारि०)।

सूर्य मंगल शुक्र शनि—लोक का द्वेषी, नीच के समान आचार, मूर्खों कैसी आकृति, संसार का बैरी, सर्प नेत्रों वाला, नीचाकारी, जड़ आकृति (मान०) (ल० चं०)। हारने वाला, कुकर्मियों में प्रधान (जा० पारि०)।

सूर्य बुध गुरु शुक्र—बहुबुद्धि, धनी, सुखी, सिद्धार्थ और प्रसन्न रहने वाला, बहुत बुद्धि, धनी, सुखी, सिद्ध अर्थ वाला, प्रकृष्ट (मान०) (ल० चन्द्रि०)। धन और यश में मुख्य, लोक में प्रधान (जा० पारि०)।

सूर्य बुध गुरु शनि—भाइयों से युक्त, झगड़ालू, हिजड़े के समान आचार, उद्यम रहित (मान०) भाइयों से युक्त, लड़ाई करने वाला, मानी; नपुंसकों के समान आचार, उद्यमहीन (ल० चन्द्रि०)। झगड़ालू यानी दुराचारी (जा० पारि०)।

सूर्य बुध शुक्र शनि—मित्रों से युक्त, पवित्र, चुगलखोर, सुभग, बड़ा बुद्धिमान्, सदारोगी मित्र युक्त, पवित्र, सुख, सौभाग्यवान्, बुद्धिमान्, राजा का प्यारा (मान०) (ल० चन्द्र) सुन्दर मुख, सत्यकृत आचारवान् (जा० पारि०)।

सूर्य गुरु शुक्र शनि—बड़ा लोभी, सुखी, कवि, कारीगरों का स्वामी, राजा का प्रिय (मान०)। भोग और मान युक्त कवि, राजा को प्यारा (ल० चन्द्र)। कला में निपुण, नीचों का मालिक, साहसी (जा० पारि०)।

चन्द्र मंगल बुध गुरु—शास्त्र में कुशल, राजा, महाबुद्धिमान्, राजा का मन्त्री, (मान०)। निपुण, राजा का मन्त्री, महाबुद्धिमान् (ल० चन्द्रि०) राजा का प्रिय करने वाला, मंत्री, कवि और राजा (जा० पारि०)

चन्द्र मंगल बुध शुक्र - स्त्री बंध्या, सब समय सोने वाला, कलह करने वाला, नीच समान आचरण, भाई बन्धुओं का द्वेषी (मान०)। बन्धकी का स्वामी, निद्रायुक्त,

लड़ाई करने वाला, नीच और भाइयों का द्वेसी (ल० चन्द्र)। सुन्दरी स्त्री, सुन्दर पुत्र, बुद्धिमान्, विरूप, सुखी (जा० पारि०)।

चन्द्र मंगल बुध शनि—बुरा, वीरों के कुल में जन्मा, पुत्र कलत्र, मित्र युक्त, दो माता पिता वाला (मान०) ! वीर कुल में उत्पन्न, पुत्रवान्, मित्र और कलहवान्, २ माता पिता वाला (ल० चन्द्रि०)। दो माता पिता वाला, पराक्रमी, विशेष स्त्री पुत्र वाला (जा० पारि०)।

चन्द्र मंगल गुरु शुक्र— साहसी अङ्ग से हीन, लूला आदि, धनी, पुत्रवान्, अभिमानी, विद्वान्, (मान०)। साहसी, विकल अङ्ग, धनी, पुत्रवान्, मानी, बुद्धिमान् (ल० चन्द्रि०) पापकर्म में निपुण, निद्रालु, धनादि में आतुर (जा० पारि०)

चन्द्र मंगल गुरु शनि—कान से बहरा, धनवान्, पागल, दृढ़ प्रतिज्ञ, शूरवीर, विद्वान् (मान०) बहरा, धनी, उन्माद युक्त, स्थिर वचन वीर और जानने वाला (ल० चन्द्रि०)

चन्द्र मंगल शुक्र शनि— मलिन, स्त्री कुलटा, सदा घबड़ाहट युक्त, सर्प के समान नेत्र, बड़ा प्रगल्भ, (ढीठ) (मान०)। शूद्री का पति, उद्वेगयुक्त सर्पों के तुल्य नेत्र, प्रगल्भ (ल० चन्द्रि०)।

चन्द्र बुध गुरु शुक्र—सुमन, धनवान्, मातापिता से रहित, बड़ा विद्वान्, शत्रु से रहित, सौभाग्यवान्, धनी, दो माता पिता वाला, बुद्धिमान्, शत्रु रहित (मान०) (ल० चन्द्रि०)।

चन्द्र बुध गुरु शनि—बन्धुजनों का प्रिय, बड़ा कवि, तेजस्वी, राजा का मन्त्री, यश धर्म युक्त (मान०) (ल० चन्द्रि०)। बड़ा धनी, बन्धु प्रिय, धार्मिक (जा० पारि०)।

चन्द्र बुध शुक्र शनि—राज पूज्य, नेत्र रोगी, शहर का स्वामी, अनेक स्त्री, धनवान् (मान०)।

चन्द्र गुरु शुक्र शनि - परस्त्री गामी, बुद्धिमान्, दरिद्र भाई वाला, मोटी स्त्री, पुरुषों में श्रेष्ठ (मान०)। पर स्त्री से प्रेम, बुद्धिमान्, द्रव्यहीन भाइयों वाला, मोटी स्त्री (ल० चन्द्रि०)।

मंगल बुध गुरु शुक्र – स्त्री से कलह करने वाला, धनवान्, सुशील, रोगरहित, लोक पूज्य (मान०) स्त्री कलह प्रिय, धनी, सुशील, निरोग, संसार में पूज्य (ल० चन्द्रि०) धनवान् और निन्दित (जा० पारि०)

मंगल बुध गुरु शनि—शूरवीर, निर्धन, सत्य, शौच वृत्तादि का विचार करने वाला, दीन और प्रशस्त वाणी (मान०)। शूर, द्रव्यहीन, सत्य और सुख युक्त, विद्वान्, वाद करने वाला, वाणी में निपुण (ल० चन्द्र)। रोगी, धनहीन (जा० पारि०)।

मंगल बुध शुक्र शनि—दूसरों से पाला हुआ, पहलवान, युद्ध करने वाला, लोक में विख्यात, दृढ़ अङ्ग, कुत्ता पालने वाला (मान०) मल्ल और पुष्टि में योद्धा, प्रसिद्ध पुष्ट अंग, कुकर्म में रुचि (ल० चन्द्रि०)।

मंगल गुरु शुक्र शनि—कामी, परस्त्री गामी, बड़ा अभिमानी, कपटी (मान०) । साहस प्रिय, धनी, तेजवान्, स्त्री में चंचल और धूर्त (ल० चं०) ।

बुध गुरु शुक्र शनि—चतुर, काम में आसक्त, सत्यवक्ता, तीव्र बुद्धि (मान०) । कामातुर, विधेय भृत्य, बुद्धिमान्, तीव्र, शास्त्र में रत (ल० चं०), खूब धनी, विद्वान्, शीलवान् (जा० पारि०) ।

नवम भाव में चतुर्ग्रह योग का फल

सूर्य चंद्र मंगल बुध—उत्तम पुरुष, विदेशगामी, सदा प्रसन्न ।

सूर्य चंद्र मंगल गुरु—धनवान्, विद्या में निपुण, सुन्दर ऐश्वर्ययुक्त, राजा तुल्य ।

सूर्य चंद्र मंगल शुक्र—माया करने में चतुर, स्वस्त्री में संतुष्ट, सुन्दर भाग्ययुक्त, सर्वजन प्रिय, विख्यात ।

सूर्य चन्द्र मंगल शनि—चुगुल, मायावी, शुभशील युक्त, नीच कर्म कर्ता ।

सूर्य चन्द्र बुध गुरु—प्रधान, सब राजाओं से पूज्य, सदा प्रसन्न ।

सूर्य चन्द्र बुध शुक्र—राजा, धर्मात्मा, सम्पन्न, प्रिय भाषी, शांतचित्त ।

सूर्य चन्द्र बुध शनि—नीच आचरण, दीन, पराया धन हरे, सदा आसक्त ।

सूर्य चन्द्र गुरु शुक्र—अच्छी बुद्धि, हर्षयुक्त, धर्मात्मा, सात्विक, गुण सम्पन्न, धीर ।

सूर्य चन्द्र गुरु शनि—धर्मात्मा, देवभक्त, विद्वान्, पराये डाह में कष्ट भोगने वाला ।

सूर्य मंगल बुध गुरु—पितृदेव पूजक, वृद्धों के समान आचरण, गुणवान् ।

सूर्य मंगल बुध शुक्र—निष्ठुर, सुन्दर ऐश्वर्य, साहसी, धूर्त, शत्रु का मर्दक ।

सूर्य मंगल बुध शनि—पराई स्त्री में तत्पर, खजाना नष्ट, सदैव क्षीण ।

सूर्य मंगल गुरु शुक्र—लोक का वैरी, पिपासा से दुःखी, बालपन में कन्या को दूषित करने वाला ।

सूर्य मंगल गुरु शनि—सुखहीन, सदा उद्योगी, अति प्रचण्ड, पराक्रमी, धैर्ययुक्त ।

सूर्य मंगल शुक्र शनि—शत्रु के नाश से शोक दूर, क्षुद्र के समान आचरण ।

सूर्य बुध गुरु शुक्र—उत्तम धन सुवर्ण ऐश्वर्य से युक्त ।

सूर्य बुध गुरु शनि—मानयुक्त, धन सम्पन्न, पाप कर्म में तत्पर, परस्त्री गामी, वैर कर्ता, नीच कर्म कर्ता ।

सूर्य बुध शुक्र शनि—मानयुक्त, सुन्दर ऐश्वर्य, धनवान्, सत्यभाषी, लोक विख्यात ।

सूर्य गुरु शुक्र शनि—सत्यभाषी, सुन्दर वचन, गुरु, देव, अध्यापक इनका भक्त ।

चन्द्र मंगल बुध गुरु सामग्रियों से युक्त, बालपन में माता से हीन, धनवान् ।

चन्द्र मंगल बुध शुक्र—तपस्वी, विख्यात, सुंदरभाषी, स्नेहयुक्त, परलोक परायण, बड़ा पंडित ।

चन्द्र मंगल बुध शनि—पराङ् मुख, दीन, क्षुद्र, मायी, चतुर, परदारगामी ।

चन्द्र मंगल गुरु शुक्र—राजवंश कर्ता, प्रधान, अति शूर, विद्याधन संयुक्त, लोक विख्यात, लोक मान्य ।

चन्द्र मंगल गुरु शनि—कुल को ठगने वाला, लोकद्वेषी, दरिद्र, शूर कुलोत्पन्न।

चन्द्र बुध गुरु शुक्र—धर्म युक्त, कलाओं में चतुर।

चन्द्र बुध शुक्र शनि—मायावी, प्रचण्ड, कुछ नीति वेत्ता, धनयुक्त।

चन्द्र गुरु शुक्र शनि—बुद्धिमान् पंडित, धन सुवर्ण रत्न से युक्त, सुंदर ऐश्वर्य।

मंगल बुध गुरु शुक्र - मायावी, प्रचण्ड, संग्राम में पूज्य, धीर।

मंगल बुध गुरु शनि—शत्रु पक्ष से क्षीण, संग्राम में प्रचण्ड, सुन्दर धीरज।

मंगल बुध शुक्र शनि - विदेशगामी, धनों से हीन, क्षुद्र, दयाहीन, दुष्ट स्वभाव।

मंगल गुरु शुक्र शनि—सुन्दर मुख, धनी, विद्या विनय युक्त, साहसी सुजन प्रिय।

बुध गुरु शुक्र शनि—परजनों से वाद विवाद कर्ता, पर स्त्री में प्रीत।

चंद्र से दशम में ४ ग्रह योग

सूर्य मंगल बुध गुरु—प्रकाशवान् शरीर, क्रूर, दानी, सकल कार्य कर्ता।

सूर्य मंगल बुध गुरु—मालाकार, लेखन और चित्र कार्य में युक्त और कार्य कर्ता।

सूर्य मंगल बुध शनि—नीच कर्म कर्ता, धर्म कार्य में युक्त।

सूर्य मंगल गुरु शुक्र—खेती करने वाला, धर्मात्मा, बहुत धान्य धनों से युक्त, सदा उद्यम कर्ता।

सूर्य मंगल गुरु शनि—पर धन हर्ता, क्रूर कर्म में युक्त।

सूर्य मंगल शुक्र शनि—समर्थ आचार वाला, प्रकाशित होने वाला, चतुर।

सूर्य बुध गुरु शुक्र—निपुण, मधुरवाणी, मल्ल वृत्ति, कृषि कर्ता।

सूर्य बुध गुरु शनि—पर वचनों में आसक्त, चतुर, क्रूर कर्म कर्ता।

सूर्य बुध शुक्र शनि—कृषि कर्म कर्ता, चतुर, सुंदर भाषी, कठिन स्वभाव।

सूर्य गुरु शुक्र शनि—परदेशवासी, अनेक कर्म कर्ता।

मंगल बुध गुरु शुक्र—प्रगल्भ, संग्राम में शूर, पंडित और चतुर।

मंगल बुध गुरु शनि—वैरियों का नाशक, कठिन स्वभाव, शूर वीर संग्राम में सदा उद्यत।

मंगल बुध शुक्र शनि—अच्छा विद्वान्, सबसे अधिक शूरवीर, विशाल शरीर।

मंगल गुरु शुक्र शनि—धीर, धनी, बहुत से कुटुम्ब वाला।

पंच ग्रह योग का फल

सूर्य चन्द्र मंगल बुध गुरु—बड़ा प्रपंची, दुःखी, स्त्रियों का विरही (मान०), (ल० चं०)। युद्ध में कुशल, चुगुल और समर्थ (जा० पारि०)।

सूर्य चन्द्र मंगल बुध शुक्र—सत्य और भाइयों से रहित, दूसरे का काम करने वाला, नपुंसक का मित्र (मान०), (ल० चं०)। विद्यार्थी, श्रद्धावान्, अन्य कर्म परायण, बंधु रहित (जा० पारि०)।

सूर्य चन्द्र मंगल बुध शनि—अल्पायु, विकल, दुःख भोगी, पुत्र रहित, बंधन का भागी,

(मान०)। अल्पायु, स्त्री पुत्र हीन, बंधन का भागी (ल०चं०)। अल्पायु, धन कमाने में तत्पर, बिना स्त्री पुत्र वाला (जा० पारि०)।

सूर्य चन्द्र मंगल गुरु शुक्र—जन्म से अंधा, महादुःखी, माता पिता रहित, हाथी से प्रीत (मान०)। जाति में अंधा, बहुत दुःखी, माता पिता से हीन, गान में प्रसन्न (ल० चं०)। आततायी, माता पिता बंधु जनों से त्यक्त, नेत्र हीन (जा०पारि०)।

सूर्य चन्द्र मंगल गुरु शनि—पर द्रव्य हारी, योद्धा, दूसरों को दुःख देने वाला, बड़ा खल समर्थ, (मान०)। (ल० चं०), पराये की आशा करने वाला, इच्छित स्त्री के विरह से संतप्त (जा० पारि०)।

सूर्य चन्द्र मंगल शुक्र शनि—प्रतिष्ठा आचार, धन से रहित, पर स्त्री में रत (मान०) (ल० चं०)। मान धन प्रभाव से हीन, मलिन, पर स्त्री रत (जा० पारि०)।

सूर्य चन्द्र बुध गुरु शुक्र —राजमंत्री, धनवान्, यन्त्र विद्या मोटर मशीन आदि का जानने वाला, दंड देने वाला, सर्वत्र विख्यात, बड़ा यशस्वी (मान०)। मंत्री, धनी, प्रताप से दूसरे को दंड देने वाला (जा० पारि०), (ल० चं०)।

सूर्य चन्द्र बुध गुरु शनि—दूसरे का अन्न खाने वाला, उन्माद युक्त, अपने प्रिय पुरुषों के लिये व्याकुल, ठगिया, बड़ा उग्र, बड़ा डरपोक, पर अन्न भोगी, उन्माद युक्त, प्रिय तप्त, छली, उग्र, (मान०) और भयानक (ल० चं०)। परान्न भोगी, विशेष डरपोक, पाप करने वाला, उग्र वृत्ति (जा० पारि०)।

सूर्य चन्द्र बुध शुक्र शनि —धन, पुत्र, सुख से हीन, मरने में उत्साह, अधिक लाभ युक्त, पेट, शरीर लम्बा (मान०)। (ल० चं०), धन हीन, दीर्घ आकृति, पुत्र रहित, रोगवान् (जा० पारि०)।

सूर्य चन्द्र गुरु शुक्र शनि—इन्द्रजाल विद्या जानने वाला, प्रशस्त वाणी, चंचल चित्त स्त्रियों को प्रिय, बड़ा चतुर, बुद्धिमान् (मान०)। इन्द्रजाल में रत, वाणी में निपुण, चलायमान चित्त, मनुष्यों का प्यारा, बुद्धिमान्, अपने शत्रुओं से डरने वाला (ल०चं०)। स्त्री सहित वाचाल, इन्द्रजाल करने में चतुर, भय रहित, शत्रु युक्त (जा० पारि०)।

सूर्य मंगल बुध गुरु शुक्र —प्रसन्न चित्त, बहुत घोड़ों का स्वामी, बड़ा कामी, शोक करने वाला, सेना का स्वामी, सुन्दर, राजा का प्रिय (मान०) (ल० चं०)। शोक रहित, सेना और घोड़ों का स्वामी, अन्य स्त्री में चंचल (जा० पारि०)।

सूर्य मंगल बुध गुरु शनि—भिक्षान्न भोगी, सदा रोगी, नित्य उद्वेग युक्त मन, अत्यन्त मलिन और जीर्ण (मान०) (ल० चं०)। भिक्षा से भोजन, मलिन पुराना वस्त्र धारण करने वाला (जा० पारि०)।

सूर्य मंगल बुध शुक्र शनि—व्याधि और शत्रुओं से युक्त, अपने स्थान से भ्रष्ट, भूखा रहने वाला, विकल (मान०) (ल० चं०)। श्रेष्ठ, अति दुःख, भय और रोगों से युक्त, क्षुधार्त (जा० पारि०)।

सूर्य मंगल गुरु शुक्र शनि—बड़ा विद्वान्, विचार पूर्वक काम करने वाला, लोहा आदि धातु, यन्त्र (मशीन आदि) विद्या में और रसायन के काम में प्रसिद्ध (मान०)। विचार देह, धातु मन्त्र रसायन में निपुण और प्रसिद्ध (ल० च०)। जल यन्त्र धातु पारा आदि रसायन निर्माण में निपुण, इन्हीं को प्रसिद्ध कार्य मानने वाला (सारा०)।

सूर्य बुध गुरु शुक्र शनि—मित्रों में प्रीति, शास्त्रों का ज्ञाता, धर्मवान्, गुरु को संमान, और दयालु (मान०) (ल० चं०)। ज्ञानी, देव गुरु का सन्मान कर्ता, धर्म शील, शास्त्री (जा० पारि०)। बहुत शास्त्र जानने वाला, मित्र और गुरुजनों का प्रिय, धर्मात्मा और दयालु (सारा०)।

चन्द्र मंगल बुध गुरु शुक्र—साधुता तथा कल्याण से हीन, धन तथा विद्या से सुखी, बहु पुत्र (मान०)। साधु, पापहीन, धन विद्या और सुख से युक्त, बहु मित्र, सुखी, धन धान्य में प्रबल, विद्वान् (जा० पारि०) (ल० चं०)।

चन्द्र मंगल बुध शुक्र शनि—दुर्भग, मलिन, मूर्ख, दास, नपुंसक, दरिद्री (मान०)। (ल० चं०)। बहुत मित्र और बहुत शत्रु वाला, परोपकारी, ठेढ़ा स्वभाव (सारावली)।

चन्द्र मंगल बुध गुरु शनि—यन्त्र क्रिया में, धातु विषय में तथा बल में प्रसिद्ध (जा० पारि०)। तिमिर रोगी, दरिद्र, परान्न भोजी, दीन, अपने बन्धुओं को लज्जित करने वाला (सारा०)।

चन्द्र मंगल गुरु शुक्र शनि—भिक्षा मागने वाला ब्राह्मण, अति मलीन, तिमिर रोगी, (मान०)। पराया अन्न पकाने वाला, सदा दरिद्री, मलिन, (ल०चं०)। दूत, दरिद्र, मलिन वेश, मूर्ख, चार (जा० पारि०)।

चन्द्र बुध गुरु शुक्र शनि—राजा के तुल्य या राजा का मंत्री, लोक पूज्य, गुणवान् (मान०)।सर्वत्र पूज्य, विकल नेत्र, राजा के तुल्य या मन्त्री (जा० पारि०)।

मंगल बुध गुरु शुक्र शनि—आलसी, तमोगुणी, पागल, राजा का प्रिय, निद्रालु (मान०)। शोकहीन, तामस, द्रव्यहीन, उन्माद युक्त, राजा को प्यारा, निद्रालु (ल.चं.)। पूज्य, रोगी, कला में निपुण, बध और बंधन से युक्त (जा० पारि०)।

षड्ग्रह योग

सूर्य चन्द्र मंगल बुध गुरु शुक्र—विद्या धन धर्म से युक्त, भोगी, भाग्यवान्, सर्वत्र विख्यात (मान०)। विद्या धर्म और धन से युक्त, बहुत बोलने वाला, भाग्यवान्, लाभयुक्त (ल० चन्द्रि०)। तीर्थ करने वाला, बन और पहाड़ में रहने वाला, स्त्री पुत्र और धन से युक्त (जा० पारि०)।

सूर्य चन्द्र मंगल बुध गुरु शनि—दूसरे का कार्य करने वाला, दान देने वाला, शुद्ध अंतःकरण, चंचल आकृति, सर्वत्र विजय कर आनन्द करने वाला (मान०)। पराया कर्म करने वाला, दाता, शुद्ध आत्मा, चंचल आकृति, मनुष्यहीन स्थान में रहने वाला (ल०चन्द्रि०)। चोर, परस्त्रीरत, बांधवों से हर्षित, पुत्रहीन, मूर्ख, विदेशी (जा०पारि०)।

सूर्य चन्द्र मंगल बुध शुक्र शनि—संशय करने वाला, बड़ा भाग्यशाली, बड़ा मानी,

विख्यात, युद्ध में शत्रु को मारने वाला झगड़े में मन (मान०) (ल०चन्द्रि०) । नीच, दूसरे के काम में लीन, क्षय और पोनस रोग से दुःखी (जा० पारि०) ।

सूर्य चन्द्र मंगल गुरु शुक्र शनि—अपनी स्त्री से प्रेम, संसार में उत्साह, वहमी, क्रोधी, लोभी, सुन्दर (मान०) । द्रव्य प्रिय, लड़ाई में उत्साह युक्त, चुगल, क्रोधी, लोभी, सौभाग्यवान् (ल० चन्द्रि०) । मंत्री, स्त्री, धन, पुत्र, हर्ष से हीन और शांत ।

सूर्य चन्द्र बुध गुरु शुक्र शनि—स्त्री से रहित, द्रव्य हीन, राजा का मंत्री क्षमायुक्त, सुन्दर (मान०) (ल० चन्द्रि०) । शिर में पीड़ा, उन्माद प्रकृति वाला, देव भूमि में वासी, विदेश में प्राप्त (जा० पारि०) ।

सूर्य मंगल बुध गुरु शुक्र शनि—द्रव्यहीन, स्त्री तथा पुत्रों से हीन, तीर्थों को जाने वाला, जंगल में रहने वाला (मान०) (ल०चन्द्रि०) । संचार शील, विद्वान् (जा०पारि०) ।

चन्द्र मंगल बुध गुरु शुक्र शनि—धनवान्, राजा का मन्त्री, बड़ा पवित्र, आलसी, बहुत स्त्री, राजा का प्रिय, प्रतापी (मान०) । धनी, पुत्रवान्, पवित्र मैत्री, बहुत स्त्री वाला, राजा का प्रिय, प्रतापी (ल०चन्द्रि.) तीर्थ करने वाला, व्रती (जा० पारि०) ।

५ या ६ ग्रह से युक्त या दृष्ट कोई भाव—यदि ५ या ६ ग्रह एक घर में हों या इन ग्रहों की दृष्टि हो तो वह प्रायः दरिद्री या मूर्ख होता है (मान०) ।

सप्त ग्रह योग

सूर्य चन्द्र मगल बुध गुरु शुक्र शनि—सातों ग्रह एक साथ हों तो सूर्य के समान तेजयुक्त, राजाओं से आदर पाने वाला, महादेव का भक्त, दाता तथा बड़ा धनी होता है (मान०) ।

अध्याय–३

योग विचार

अन्योन्याश्रय योग (परिवर्तन योग)

जब दो भावेश एक दूसरे के भाव में हों तो उसे अन्योन्याश्रय योग कहते हैं। इसे परिवर्तन योग भी कहते हैं। जैसे लग्नेश लाभ में हो और लाभेश लग्न में हो। या चतुर्थेश दशम में हो दशमेश चतुर्थ में हो।

६–८–१२ स्थान कुण्डली में अशुभ स्थान हैं यदि इन स्थानों के स्वामी अन्योन्याश्रय योग करें तो बुरा फल होता है। परन्तु ६–१०–२ ये त्रिकोण परस्पर है इसी प्रकार ८–१२–४ भी त्रिकोण स्थान हैं अर्थात् ये एक दूसरे के त्रिकोण स्थान हैं। इससे इन स्थानों के अन्योन्याश्रय योग उत्तम फल देंगे। जैसे षष्ठेश दशम में हो और दशमेश षष्ठ में हो तो ये परस्पर त्रिकोण में भावेश होने के कारण उत्तम फल देंगे। क्योंकि कोई भी भावेश त्रिकोणेश व केन्द्रेश से अन्योन्याश्रय योग करें तो उत्तम फल होता है।

एक दूसरे से नवम पंचम स्थान त्रिकोण होता है जैसे १।५,९।२,६।१०,३।७,११।, ४,८।१२ ये एक दूसरे के त्रिकोण स्थान है।

भाव धर्म और भावेश धर्म विचार कर इनके फल की कल्पना करना।

मालाश्रय योग

जब एक भाव का स्वामी जहाँ हो उस भाव का स्वामी कोई तीसरे स्थान में हो उस तीसरे स्थान का अधिपति अन्य भाव में हो इस प्रकार माला सदृश भावेशों का सम्बन्ध हो जाता है अंत का भावेश स्वगृही आदि अच्छी स्थिति में हो तो मालाश्रय योग हो जाता है। जैसे लग्नेश चतुर्थ में हो, चतुर्थेश पंचम में हो, पंचमेश नवम में हो. नवमेश दसम में हो, दशमेश लाभ में हो या लग्न में हो या स्वगृही हो तो यह मालाश्रय योग हो जाता है। जिसकी कुण्डली में इस प्रकार का योग हो तो यह राजा या राजा के समान श्रीमंत होता है।

ये मालाश्रय योग ६ प्रकार के हैं—

(१) अखण्ड मालाश्रय। (२) त्रिकोण मालाश्रय। (३) केन्द्र मालाश्रय। (४) आपोक्लिम मालाश्रय। (५) पणफर मालाश्रय। (६) अनियत मालाश्रय।

एक दूसरे से लगातार भावेश का सम्बन्ध होने से अखंड मालाश्रय होता है। और त्रिकोण केन्द्र आपोक्लिम पणफर आदि के भावेशों का सम्बन्ध होने से उपरोक्त मालाश्रय होते हैं। इनके अतिरिक्त स्थानों का अनियत मालाश्रय होता है।

इनका फल एक दूसरे की अपेक्षा कम होता है। जैसे केन्द्र से पणफर का मालाश्रय कम फलदायक है। पणफर से अनियत मालाश्रय का और कम फल होगा।

भावेश योग

जब दो या अधिक भावेशों का योग हो तो भावेश योग होता है केन्द्र त्रिकोण के भावेश का योग शुभ फल देता है परन्तु ६-८-१२ स्थान में भावेश का याग हो तो वह निर्बल हो जाता है।

भावेश दृष्टि योग

जब दो या अधिक भावेश एक दूसरे पर पूर्ण दृष्टि करते हों तो भावेश दृष्टि योग होता है। ६-८-१२ के भावेश जिस भावेश पर दृष्टि करते हों वह भावेश निर्बल हो जाता है।

त्रिकोण योग—जब दो भावेश एक दूसरे के त्रिकोण में हों तब त्रिकोण योग होता है। यह योग लक्ष्मी राज वैभव और यशदायक होता है, केन्द्रेश और त्रिकोणेश का त्रिकोण योग श्रेष्ठ होता है।

केन्द्र योग—जब दो भावेश परस्पर केन्द्र में हो तब केन्द्र योग होता है यह महत्व दर्शाता है।

लाभ योग—जब दो भावेश एक दूसरे से ३-११ स्थान में हों तब लाभ योग होता है यह बहुत सम्पत्ति देता है।

द्विर्द्वादश योग—जब दो भावेश एक दूसरे से २-१२ स्थान में हों तब द्विर्द्वादश योग होता है यह दरिद्रता लाता है।

षड़ष्टक योग—जब दो भावेश एक दूसरे से ६-८ स्थान में हों तब षड़ष्टक योग होता है यह दुःख और कष्ट देता है।

अन्योन्याश्रय योग फल

परस्पर एक दूसरे के स्थान में भावेश होने का फल

लग्नेश द्वितीयेश का—बहुत लाभ।
द्वितीयेश तृतीयेश का—राजभृत्य।
तृतीयेश चतुर्थेश का—सेनापति।
चतुर्थेश पंचमेश का—मंत्री।
पंचमेश षष्ठेश का—भयानक कर्म।
षष्ठेश सप्तमेश का—राजयोग।
सप्तमेश अष्टमेश का—स्त्री की मृत्यु।
अष्टमेश नवमेश का—भाग्य का व्यय।
नवमेश दशमेश का—राजयोग, सब प्रकार का सुख।
दशमेश लाभेश का—भूमि द्रव्य।

लाभेश व्ययेश का—ऋण तथा व्यय।

व्ययेश लग्नेश का – धन की हानि।

चतुर्थेश दशमेश का – वैद्य हो।

लग्नेश और इतर भावेश के सम्बंध से विचार

(१) लग्नेश द्वितीयेश का अर्थात् लग्नेश द्वितीय में द्वितीयेश लग्न में– धनवान्, उत्तम बुद्धि, आचार में प्रवीण, पुण्यकर्म, बली, योगी (जा० लं०)।

(२) लग्नेश तृतीयेश का – थोड़ा पराक्रम, उत्तम बंधु, राजपूज्य, अपने कुल को सुखदायक, मातृपक्ष के आश्रय से युक्त (जा० लं०)।

(३) लग्नेश चतुर्थेश का – क्षमावान्, पिता का आज्ञाकारी, राजकार्य में सरल स्वभाव, उत्तम गुरु, पितृ पक्ष में रहने वाला (जा० लं०)।

(४) लग्नेश पंचमेश का उत्तम स्वभाव, विद्यालंकार युक्त, अपने कुल में प्रसिद्ध, दानी व मानी (जा० लं०), दत्तकयुक्त हो (जा० पारि०)।

(५) लग्नेश षष्ठेश का व्याधि रहित व सदा द्रोह करने वाला, देह में बलवान्, द्रव्यवान्, वस्तुओं का संग्रह करने वाला (जा० लं०)।

(६) लग्नेश सप्तमेश का पिता का सेवक, स्त्रियों के पीछे खर्च करने वाला व उन्हीं में चञ्चल चित्त, साले को सेवा करने वाला (जा० लं०)।

(७) लग्नेश अष्टमेश का –जुआ खेलने वाला, शूरवीर, चोरी करने वाला, राजा से व किसी राज पुरुष से मृत्यु पाता है (जा० लं०)।

(८) लग्नेश नवमेश का – विदेश में रहने वाला, धर्म बुद्धि, देवता व गुरु की पूजा में आसक्त व राजपूज्य (जा० लं०), धन और वस्त्रों से पूर्ण (वृ० पा०)।

(९) लग्नेश दशमेश —राजा तथा लाभ व रूप में प्रसिद्ध, गुरु सेवा में तत्पर, चञ्चल चित्त तथा द्रव्य का स्वामी (जा० लं०)।

(१०) लग्नेश लाभेश का—शुभ कर्म करने वाला, दीर्घायु व पृथ्वी का स्वामी शुभ धन युक्त व पंडित होता है (जा० लं०) ३३ वर्ष में १ हजार स्वर्ण मुद्रा प्राप्त हो (वृ० पा०)।

(११) लग्नेश व्ययेश का—सब जनों का शत्रु हो या सब जन उसके शत्रु हों, यह निरंतर बुद्धि हीन होता है। अत्यन्त कृपण बुद्धि होता है, द्रव्य नाश करने वाला तथा चञ्चल स्वभाव का होता है (जा० लं०), धर्म कार्य में धन का व्यय (वृ० पा०)।

इसी प्रकार पिता आदि का उनके सम्बन्धी भाव से विचारना जैसे पिता का दशम घर है तो पिता सम्बन्ध से विचारने को दशम घर को लग्न मानकर योगफल से पिता का विचारना तीसरे से भाई का इत्यादि।

अन्य परिवर्तन योग

धनेश लाभ में लाभेश धन में—व्यापार धंधा करे (ज्यो० र०), विवाद वाद भाग्योदय (वृ० पा०)।

तृतीयेश लाभ में लाभेश तृतीय में—भाइयों द्वारा धन आदि प्राप्त हो (वृ० पा०)।
चतुर्थेश लाभ में लाभेश चतुर्थ में—१२ वें वर्ष में वाहनों का सुख (वृ० पा०)।
चतुर्थेश के साथ लग्नेश, भाग्येश राज्येश का परिवर्तन— वाहन आदि का अभ्युदय और अभिवृद्धि हो। राज्येश या भाग्येश वाहन स्थान या उसके स्वामी को दे दें तो भी वाहन योग होता है। (ज्यो० शा०)
द्वितीयेश नवमेश का—३२ वर्ष के बाद भाग्योदय वाहन यश लाभ (वृ० पा०)।
नवमेश दशमेश का—उसका पिता धनी और यशस्वी हो (वृ० पा०)।
दशमेश लाभेश का—सुखी हो और लाभ हो (वृ० पा०)।

उच्च नीच स्वगृही आदि ग्रह का फल

(१) उच्च ग्रह का फल

कोई ग्रह उच्च का हो तो रत्न आदि प्राप्त हो, राजा से प्रशंसा, बहुमूल्य कोष का संग्रह, उदार गुण, उच्च हृदय, आचरण, कीर्ति, वीरता, स्वतन्त्रता साहस और चतुराई, राजा के समान विक्रमहो (फल दी०)।

१ ग्रह उच्च का बली हो तो— धन्य और धनी हो।
२ ग्रह उच्च के बली हों तो—छोटा राजा।
३ ग्रह उच्च के बली हों तो —राजा।
४ ग्रह उच्च के बली केन्द्र में हों—महाराजा।
५ ग्रह उच्च के बली केन्द्र में हों—चक्रवर्ती हो (जा० पारि०)।
एक ग्रह उच्च का हो उसे उसका मित्र ग्रह देखे—बड़ा श्रीमन्त हो।
शेष उच्च का फल स्वक्षेत्र के अनुसार होता है।
सूर्य चन्द्र स्व उच्च में हो तो राजा सरीखा ऐश्वर्य देता है।
उच्च का ग्रह त्रिकोण में हो तो धनवान् और प्रसिद्ध होता है (प्रा० यो०)। एक भी ग्रह मित्र ग्रह से युक्त या दृष्ट हो तो वह राजपूज्य धनादि युक्त होता है (जा० पारि०)।
३ ग्रह उच्च के हों तो—राजा हो (जा० पारि०)।
पाप ग्रह उच्च का हो तो मनुष्य राजा नहीं होता परन्तु वह धनवान् और कलह प्रिय होता है।
६-८-१२ घर में उच्च का फल अच्छा नहीं होता।

उच्च नीच का प्रभाव

बुरे ग्रह जिन पर शुभ दृष्टि हो या अच्छे घर में हों या उच्च में हों तो अशुभ फल को बदल देते हैं और लाभजनक फल भी दे सकते हैं। जैसे उच्च का पाप ग्रह द्वितीयेश होकर द्वितीय भाव में हो उस पर कोई शुभ दृष्टि नहीं है तो भावोक्त पूर्ण शुभ फल नही देगा।

यदि ग्रह नीच का होकर पाप दृष्ट हो तो उसे बहुत हानि उठानी पड़ेगी। ग्रह का बल निर्बलता गणित से निकाल लेना चाहिये। बुरे ग्रह हानि कष्ट और बरबादी करते हैं परन्तु उनके बीच शुभ ग्रह भी हो चाहे दृष्टि द्वारा उच्चता या अच्छे वर्ग में हो तो बुरा फल अवश्य होगा पर बहुत कम रूप से होगा। आपत्ति आने पर वह मान पूर्वक उससे छुटकारा भी पा जायगा।

नीच गृही ग्रह

इसकी दशा में अपनी स्थिति से गिर जावे, अपमान हो, पाप युक्त कार्य करे, ऋण बढ़े, नीच लोगों से सहायता लेवे, अशुद्ध स्थान में रहे, नीच कार्य करे, लम्बी यात्रा करे, अनर्थ कार्य करे (फल०)।

ग्रह नीच या शत्रु स्थानी या क्रूर अंश में हो तो—धन न हो।

ऐसे २ ग्रह हों—दुःखी। ऐसे ५ ग्रह हों—कैद भोगे।

ऐसे ३ ग्रह हों—मूर्ख और जिद्दी। ऐसे ६ ग्रह हों—बधिक या कसाई हो।

ऐसे ४ ग्रह हों—रोग से पीड़ित। ऐसे ७ ग्रह हों—भयानक पापी हो (सर्व चिंता०)।

एक ग्रह शत्रु स्थानी या नीच का—निर्धन।

२ ग्रह शत्रु स्थानी या नीच के—सदा दुःखी, द्ररिद्री, सुख रहित।

३ ग्रह शत्रु स्थानी या नीच के—मूर्ख, दुःखी, दरिद्री।

४ ग्रह शत्रु स्थानी या नीच के—व्याधिष्ठ, उपरोक्त तीनों का फल और रोग।

५ ग्रह शत्रु स्थानी या नीच के—कारागृह वास, बन्धन से संताप।

६ ग्रह शत्रु स्थानी या नीच के—बहुत कष्ट, बहुत दुःख, तप्त।

७ ग्रह शत्रु स्थानी या नीच के—व्याधिष्ट, सदा मृत्यु तुल्य कष्ट (बृ० जा०)।

३ ग्रह उच्च के हों तो—राजा हो (मान०)।

३ ग्रह नीच के हों तो—दास हो (मान०)।

स्वगृही ग्रह का फल

स्वगृही ग्रह की दशा में शक्ति और बल प्राप्त होता है धनिक जनों की सहायता से या स्वतः स्वामी हो। बिना कहीं गये अपने स्थान में स्थिर रहे। नया घर प्राप्त करे, नई भूमि कृषि योग्य प्राप्त करे, अपने जनों से सम्मानित, गुमी वस्तुएँ प्राप्त हों (फल०)।

१ ग्रह स्वगृही हो—कुल सम—कुल के अनुसार वैभव।

२ ग्रह स्वगृही हों—जाति में श्रेष्ठ—कुल में श्रेष्ठ।

३ ग्रह स्वगृही हों—सब में मान्य—बन्धु जनों का पूज्य।

४ ग्रह स्वगृही हों—धनी—धनवान्।

५ ग्रह स्वगृही हों—अधिक धनी—सुखी।

६ ग्रह स्वगृही हों—राजा सदृश—अनेक भोग भोगी, राजा तुल्य।

७ ग्रह स्वगृही हों—राजा (जा० पारि०)—राजा हो (बृ० जा०)।

३ ग्रह स्वगृही हों तो मंत्री हो—(मान०)।

मित्रगृही ग्रह का फल

अपने सब प्रयत्नों में अपने मित्रों द्वारा सफलता प्राप्त करे, नई मित्रता प्राप्त हो, अनेक पुत्र स्त्री, धन अन्न और दूसरे सुख प्राप्त हों सब लोगों से सहायता मिले (फल०)।

१ ग्रह मित्र गृही हों--पर द्रव्य का भोगो--लोग उसका पोषण करें।

२ ग्रह मित्र गृही हों--मित्र धन का भोगी--मित्र पोषण करें।

३ ग्रह मित्र गृही हों--धन पेदा कर भोग करे--अपनी जाति वालों से पोषण।

४ ग्रह मित्र गृही हों--दाता--भाई पोषण करे।

५ ग्रह मित्र गृही हों--मुखिया--बहुतों का स्वामी हो।

६ ग्रह मित्र गृही हों--सेनापति--सेनापति हो।

७ ग्रह मित्र गृही हों--राजा (जा० पारि०)--राजा या बड़ा अधिकारी हो (वृ० जा०)।

१ भी ग्रह मित्र युक्त हो--सिद्धि होती है (मान०)।

१ भी ग्रह मित्र दृष्ट हो--बड़ा धनवान् (मान०)।

शत्रुगृही ग्रह का फल

निकृष्ट (नीच प्रवृत्ति) हो, दूसरे के घर में रहकर पराया अन्न भक्षण करे, अति दरिद्री और सदा बैरियों द्वारा सताया जावे। वह मनुष्य भी जो पहिले मित्र था बाद में उसका विरोधी बन जावे (फल०)।

५ ग्रह शत्रु क्षेत्री--मिश्र फल

६ ग्रह शत्रु क्षेत्री--सुखहीन

७ ग्रह शत्रु क्षेत्री--सब प्रकार का दुःख हो (जा० पारि०)।

निन्द्य ग्रह के साथ शत्रुगृही ग्रह एक से अधिक होने का फल दे चुके हैं।

१ भी ग्रह शत्रु गृही या नीच का हो--धन हीन, सुख रहित, मूर्ख, रोग युक्त, बांधवों में दुःखित तथा पाप युक्त होता है (मान०)।

सम गृही ग्रह का फल

विशेष कोई ध्यान देने योग्य प्रभाव नहीं होता पर सुख या दुःख बिना कोई प्रभाव डाले वैसा ही रहने देता है (फल०)।

वर्गोत्तम ग्रह का फल

स्वक्षेत्र में ग्रह होने का जो फल है वही वर्गोत्तम अंश में होता है (फल०)।

वक्री ग्रह फल

उच्च राशि में होने का जो फल कहा है वह फल हो चाहे ग्रह शत्रु गृही या नीच में क्यों न हो (फल०)।

अस्त ग्रह का फल

इसकी दशा में थोड़े समय में इसका अन्त हो, स्त्री पुत्र धन का भी कष्ट हो, अनावश्यक हानियाँ हों, झगड़ा में पड़ना पड़े। शत्रुता बढ़े, अपमान सहन करे (फल०)।

अस्त ग्रह सब अशुभ ही करते हैं।

३ ग्रह अस्त के हों तो—जड़ हो (मान०)।
एक भी ग्रह उच्च का हो—राजा तुल्य हो।
एक भी ग्रह मित्र से दृष्ट हो—धनवान् हो।
एक भी ग्रह मित्र ग्रह युक्त हो—सिद्धि होती है।
एक भी ग्रह शत्रु गृही या नीच का हो—धन हीन, सुःखी, मूर्ख।

शुभ ग्रह फल

साधारण प्रकार में शुभ ग्रह इन स्थानों में ये फल देते हैं—

लग्न (१)में—अच्छी आयु	(७) सप्तम में—स्त्री सुख।
(२) धन में—धन	(८) अष्टम में—चिरायु।
(३) सहज में—भ्रातृ सुख	(९) नवम में - पुण्य कर्म।
(४) चतुर्थ में—ग्रह सुख	(१०) दशम में—अपने कुल का पालक।
(५) पंचम में—अच्छी विद्या अच्छे पुत्र	(११) लाभ में—लाभ।
(६) षष्ठ में—शत्रु भय	(१२) व्यय में—हानि।

पाप ग्रह फल

साधारण प्रकार से स्थान के अनुसार पाप ग्रह फल—

लग्न (१) में—रोग	(७) सप्तम में - स्त्री पीड़ा, स्त्री नाश।
(२) धन में—निर्धनत्व	(८) अष्टम में—रोग।
(३) सहज में—पराक्रम, भाई को कष्ट	(९) नवम में—पाप की कमाई।
(४) चतुर्थ में—सुखनाश	(१०) दशम में—शूरता।
(५) पंचम में—पुत्र नाश, बुद्धिहीन	(११) लाभ में—लाभ
(६) षष्ठ में—शत्रु नाश	(१२) व्यय में—हानि।

जन्म राशि या लग्न से पाप ग्रह—४–१०–१२ घर में पिता को कष्ट।
जन्म राशि या लग्न से पाप ग्रह—२, ४, ७, १२ घर में—माता को कष्ट।
जन्म राशि या लग्न से पाप ग्रह—३, ६, ११ घर में—अच्छा फल देते हैं।
जन्म राशि या लग्न से पाप ग्रह—१, ६, ८, १२ घर में-क्षीण चंद्र अशुभ होता है।
जन्म राशि या लग्न से पाप ग्रह—१, ८, १२ घर में—पाप ग्रह अरिष्ट करते हैं।
जो भाव पाप ग्रह युक्त या दृष्ट हो—उस भाव को हानि होती है।
पाप ग्रह नीच का हो तो सम्पूर्ण फल का नाश करता है।

ग्रह का बलाबल के अनुसार मूल विचार

(१) ग्रह उच्च में—पूरा फल देता है।
(२) ग्रह मूल त्रिकोण में—पौन फल देता है।
(३) ग्रह स्वक्षेत्र में—आधा फल देता है।
(४) ग्रह अधिमित्र क्षेत्र में—$\frac{1}{3}$ फल देता है।

(५) ग्रह मित्र क्षेत्र में - $\frac{3}{4}$ फल देता है।

( ) ग्रह सम क्षेत्र में - $\frac{1}{2}$ फल देता है।

(७) ग्रह शत्रु क्षेत्र में - $\frac{1}{4}$ फल देता है।

(८) ग्रह अधि शत्रु क्षेत्र में - $\frac{1}{8}$ फल देता है।

(९) ग्रह निन्दय में - उल्टा बुरा फल देता है। अच्छा कोई फल नहीं देता। (प्रा० चो०)।

ग्रह उच्च में - पूर्ण फल देता है।
त्रिकोण में - चतुर्थांश कम।
मित्रांशक में - आधा।
शत्रु गृह में - चतुर्थांश।
नीच में - स्वल्प।
मृदु ग्रह कुल फल नहीं देता।

मूल त्रिकोण के समान - अपने नवांश में फल देता है।
स्वराशि तुल्य - मित्रांश में फल देता है
नीच में, शत्रु गृह में, अस्तंगत में - शत्रु राशि सदृश फल देता है।
(जा० पारि०)

(१) सूर्य का उच्च नीच आदि स्थिति अनुसार फल

सूर्य उच्च में - बड़ा धीर, तेज स्वभाव, चतुर, गौरांग, बड़ा शूर, अनेक कला जानने वाला, दण्ड देने के अधिकार से युक्त, धनवान् (मान०)। धनवान् उग्र स्वभाव, धन, भाई, पुत्र, स्त्री, खजाना से पूर्ण, उग्र प्रताप, शत्रु को जीते, कोप से व्याकुल भाइयों में परिपूर्ण मान (ल० चं०)।

सूर्य नीच का - निकले हुए बुरे दांत, फटा हुआ बुरा मुँह (चौड़ा मुँह), समान आँत, जंघा और हाथ पैर स्थूल, स्त्रियों में और विवाह में मन (मान०)। पतित, बंधु हीन, प्रवासो (जा० पारि०)। भाइयों से वर्जित, दास हो (ल०चं०)।

सूर्य मूल त्रिकाण का - धनवान्, सुखी, कार्य का जानने वाला (मान०), (ल० चं०), धनी, वंदनीय (जा० पारि०)।

सूर्य स्वगृही - बड़ा प्रतापी, सदा उद्यम करने वाला (मान०)। रमणीय मंदिर, दुराचारी, अतिकामी (जा० पारि०)।

सूर्य मित्र गृही - सर्वत्र विख्यात, शास्त्रज्ञ, चिर मैत्री (मान०) (ल० चं०)। दृढ़ मित्र, दाता, यशस्वो (जा० पारि०)।

सूर्य शत्रु गृही - बड़ा नीच, विषयों से पीड़ित (मान०)। पितृ सुख का त्यागी, दूसरे का सेवक (जा० पारि०)।

(२) चन्द्र का उच्च नीच आदि स्थिति अनुसार फल

चन्द्र उच्च में - विज्ञान तथा धनयुक्त, पवित्र, सत्पात्र, स्त्री का वियोगी, सबको प्रिय (मान०)। दानो भोगी, बहुत स्त्रियों का पति, संसार भर का बंधु, अनेक प्रकार के खेल खेलने में बुद्धि, चञ्चल स्वभाव, पुत्र पौत्र हाथी, घोड़ा रथों से पूर्ण घर, विलासी संसार में पूज्य, प्रसन्न मनुष्य, अच्छे भूषण, बड़ा भोगी, धनवान् (ल० चं०)।

चन्द्र नीच का—नृत्य करने या बाजा बजाने वाला, बड़ा बकवादी, धूर्तता से मित्रता करने वाला, खोटा पति, संदिग्ध मन (मान०)। रोगी, थोड़ा गुण वाला, अभागा (ल० चं०)।

चन्द्र मूल त्रिकोण का—धनवान्, भोगी (मान०) (ल० चं०)। धन सुख से युक्त (जा० पारि०)।

चन्द्र स्वगृही—काम करने में निरत, साधुओं सरीखा व्यौहार, बड़ा मनस्वी, रूपवान् (मान०)। धर्म में रत, साधु, मनस्वी, रूपवान, (ल० चं०)।

चन्द्र मित्रगृही—बड़ा भाग्यवान्, चतुर, धनवान्, (मान०) (ल० चं०)। बहुमान्य, सुखी, धनी (जा० पारि०)।

चन्द्र शत्रुगृही—हृदय रोग (मान०) (ल० चं०)। माता को कष्टदायक, हृदय रोगी (जा० पारि०)।

(३) मंगल का उच्चादि स्थिति का फल

मंगल उच्च का—बड़ा उग्र प्रहार करने वाला, क्रूर, तीक्ष्ण, शास्त्रधारण, बातचीत के कारण लोक में प्रसिद्ध, राजकुल को प्रिय, बड़ा शूर (मान०)। उग्र प्रताप, राजाओं को वशकरे, शस्त्रों के धारने में निपुण, धनधान्यों से पूर्ण, अधिक रक्त युक्त, रणभूमि में सबसे आगे जाने वाला, अच्छे पुत्र, तेजस्वी (ल० चं०)।

मंगल नीच का—अति लक्ष्मीवान्, स्थिर वैभव, बुद्धिमान्, गुणज्ञ, रात्रि में विचरने वाला, बड़ा चोर, दुष्ट (मान०)। नीच, कुत्सित, व्यसन में आतुर (ल०चं०)।

मंगल त्रिकोण का—शूरवीर; दया से हीन, बड़ा खल (मान०)। क्रोधी, निर्दयी (जा० पारि०)।

मंगल स्वगृही—बड़ा चपल, धनवान् (मान०) बड़ा चञ्चल और धनवान् (ल० चं०) कृषि और बल में विख्यात (जा० पारि०)।

मंगल मित्रगृही—शस्त्र से जीविका करने वाला, (मान०)। शस्त्रविद्या से आजीविका (ल० चन्द्रि०) मित्र प्रिय हो (जा० पारि०)।

मंगल शत्रुगृही—स्त्री के कारण जड़ और निर्धन (मान०)। स्त्री मूर्ख हो और निर्धन हो (ल० चन्द्रि०) विकल, कृतघ्न, मलिन (जा० पारि०)।

(४) बुध का उच्चादि स्थिति का फल

बुध उच्च का—उदार, पूर्ण विद्वान्, मंत्री से सदा रक्षित, पूर्ण क्रिया करने में आलस्य युक्त, सूर्योपासक, अति बुद्धिमान्, धनाढ्य, पापों से रहित, (मान०)। पढ़ाने वाला, शुभ बुद्धि, राजा, धनी, ऐश्वर्यवान्, गुणवान्, उदार, अच्छी कीर्ति, सुपुत्र, निरोग, सुन्दर मित्र वाला, सबका उपकारी, बुद्धिमान्, दृढ़ प्रतिज्ञ, नेता (ल० चन्द्रि०)।

बुध नीच का—शुभमति, शुभशील युक्त, पति के वचन को अनुमोदन करने वाली उत्तम स्त्री से युक्त, संतान रहित (मान०) क्षुद्र, भाइयों का बैरी (ल० चन्द्रि०) (जा० पारि०)।

बुध फल त्रिकोण का—बड़ा विद्वान्, क्रीड़ा करने वाला, विजयी (मान०)। जानने वाला, आनन्दी और विजयी मनुष्य (ल० चन्द्रि०) धनी, तपस्वी (जा० पारि०)।

बुध स्वक्षेत्री—अनेक कलाओं का जानने वाला, धनवान् होने पर भी पीड़ित (मान०) चञ्चल और धनवान् (ल० चन्द्रि०)।

बुध मित्रक्षेत्री—रूप तथा धन से युक्त (मान०) (ल० चन्द्रि०) चतुर, गुणवान्, हास्य में अग्रणी (जा० पारि०)।

बुध शत्रु क्षेत्री—मूर्ख, वाणी द्वारा धनवान्, दुःख से पीड़ित (मान०) मूर्ख, गूँगा और दुःख से पीड़ित (ल० चन्द्रि०) सुखी, पाप बुद्धि (जा० पारि०)।

गुरुका उच्चादि स्थिति का फल

गुरु उच्च का—उच्च आचरण, शुभ कर्म, सुन्दर स्वरूप, मांडलीक राजा, सदा प्रसन्न, अनेक भृत्य, राजाओं का मन्त्री (मान०) पृथ्वी मण्डल का स्वामी, उदार बुद्धि, दाता, ब्रह्म या आत्म बोध में निर्मल, बहुत पुत्र पौत्रों से युक्त, तीर्थ जाने में हृदय में प्रेम, पुष्ट देह के बंध वाला, मनुष्यों का स्वामी, उदार और धनी (ल० चन्द्रि०) वंश कर्त्ता, सुशील, चतुर, विद्वान्, राजा का प्रिय (जा० पारि०)।

गुरु नीच का—दिव्य स्त्री, सुवर्ण पुष्प फल आदि प्रशंसनीय वस्तुओं के समूह से परिपूर्ण, आनन्द देने वाला, सर्वत्र पूजनीय, बहुत से जीवों का पोषक, देशान्तर में रहने वाला (मान०), दुःखी, पापी (ल०चं०), अपवादी तथा खल (जा० पारि०)।

गुरु मूल त्रिकोण का—ग्राम, पुर, मठ का स्वामी, बड़ा विद्वान् (मान०), (ल० चं०), भोगी राजप्रिय (जा० पारि०)।

गुरु स्वक्षेत्री—धनी, काव्य तथा वेदों का ज्ञाता, सदा कुलानुसार चेष्टा करने वाला (मान०), नाना कलाओं का ज्ञाता, पंडित, धनी (ल० चं०)।

गुरु मित्र क्षेत्री—सज्जनों से पूजित, सत्कर्म करने वाला (मान०), पूज्य अच्छे कर्म करने वाला (ल० चं०), अच्छे लोगों का प्रेमी, सुखी (जा० पारि०)।

गुरु शत्रु क्षेत्री—नपुंसक, आजीविका रहित, अति बुभुक्षित (मान०), (ल०चं०), अच्छे कार्य में रत (जा० पारि०)।

(६) शुक्र का उच्चादि स्थिति का फल

शुक्र उच्च का—देव ज्ञान में कुशल, तंत्र तथा मंत्रों का ज्ञाता, गान विद्या में प्रवीण, बड़ा कवि, लक्ष्मीवान्, भाग्यशाली (मान०), देशों का स्वामी, पुष्ट बुद्धि, सुन्दर देह, सुन्दर मंत्रो, योद्धा, सम्पूर्ण मनुष्यों के पालने में लब्ध-यश, चोर आदि दुष्ट जनों के दंड देने में तत्पर, अच्छा कवि, सुबुद्धिमान्, कुल का स्वामी, बहुत प्रसन्न। विलासी, बहुत हँसने वाला, गान विद्या का प्रेमी (ल०चं०)।

शुक्र नीच का—बड़ा कौतुकी, विनोद करने वाला, सभा में उत्तम वाचक, सदा बुद्धि से युक्त, राज कला और मणि से भूषित (मान०), स्त्री नष्ट हो जावे, स्वनेत्र और शील से वर्जित (ल० चं०), दुःखी (जा० पारि०)।

शुक्र फल त्रिकोण का—बड़ा पंडित, सुख से युक्त, भूमि का स्वामी (मान०), अच्छा जानने वाला, सुखी और बड़ा उत्तम (ल० चं०), ग्राम पुर का स्वामी (जा० पारि०)।

शुक्र स्वक्षेत्री—दिव्य मूर्ति, खेती करने वाला (मान०)। धनाढ्य और खेती करने वाला (ल० चं०)। मनस्वी, धनी (जा० पारि०)।

शुक्र मित्रक्षेत्री—धनवान्, बन्धुजनों को प्रिय (मान०) (ल० चं०)। पुत्र सुखी, भोगी (जा० पारि०)।

शुक्र शत्रुक्षेत्री—भृत्य, कुबुद्धि युक्त, सदा दुःखी (मान०) (ल० चं०)। दास (जा० पारि०)।

(७) शनि की उच्चादि स्थिति का फल

शनि उच्च का—उत्तम माला बनाने वाला, शस्त्र धनुष आदि के कारण जीविका, सर्वत्र विख्यात, सब वाहनों का स्वामी, मित्रता युक्त, साहसी, अत्यन्त धूर्त, बड़ा मायावी, (मान०)। समुद्र पर्यंत पृथ्वी का स्वामी, दृढ़ देह बंध वाला, हिंसा में रत, रण भूमि में प्रसिद्ध प्रभाव, हाथी घोड़ा और रत्नों से परिपूर्ण घर, धनवान्, बड़ा ओहदा (ल० चं०)। ग्राम पुर बाजार का राजा, कुमारी से भोग करने वाला (जा० पारि०)।

शनि नीच का—शत्रु हंता, दृढ़ अंग, दोष, अग्नि समान कांति, चञ्चल, देश ग्राम पुर नगर में बली, चक्रवर्ती राज्य करने वाला, अपनी इच्छा से रहने वाला, विचार कुशल, अति सुन्दर, स्त्री सुख भोक्ता, और ज्ञाति भाइयों से युक्त (मान०)। काना, दरिद्री, आचार हीन, अति निंदित (ल० चं०)। निर्धनी, स्त्री के आधीन, विपत्ति युक्त और खल (जा० पारि०)।

शनि मूलत्रिकोण का—धन से पूर्ण, बड़ा शूर, कुल का धारण करने वाला (ल० चं०) (मान०)। वीर (जा० पारि०)।

शनि स्वगृही—सबों में मान्य, सुन्दर नेत्र (मान०)। लोगों में मान्य परन्तु खल स्वभाव (ल० चं०)। प्रचण्ड पराक्रम, सुख से रहित (जा० पारि०)।

शनि मित्रगृही – रोग से व्याप्त, कुकर्म में निरत (मान०)। पराया अन्न खाने वाला, कुकर्मी (ल० चं०)। अन्य से धनी, परान्न भोजी (जा० पारि०)।

शनि शत्रुगृही—व्याधि और धन के शोक से संतप्त, मलिन (मान०) (ल० चं०)। मार्ग में शोक से व्याकुल (जा० पारि०)।

(८) राहु की उच्चादि स्थिति का फल

राहु उच्च का—बड़ा क्रूर दुष्ट, बलवान्, साहस कर्म करने वाला, मंत्री जनों में विख्यात, राज सम्बन्धी कलाओं से भूषित (मान०)।

राहु मिथुन का – पृथ्वी का स्वामी, नीच जाति, प्रतापी, घोड़ा हाथी और धन से युक्त, भाइयों से विरक्त, कुटिल बुद्धि, अनीति करने वाला, बड़े खजाने से युक्त और मनुष्यों में श्रेष्ठ, बड़ा ओहदा (ल० चं०)। चोरों का स्वामी, कुल श्रेष्ठ, कुकर्मी धनी (जा० पारि०)।

राहु नीच का—कुरूप, बड़ा खल, दुष्ट, पापी, दुष्ट बुद्धि, निज कुटुम्ब पक्ष से हीन (मान०)।

राहु फल त्रिकोण का—धनी (जा० पारि०)।

राहु स्वगृही—यशस्वी (जा० पारि०)।

(९) केतु की उच्चादि स्थिति का फल

केतु उच्च का—वृद्धों में वृद्ध, नीचों के समान आचार, मिथ्याभाषी, भ्रमण करने वाला, अन्य मनुष्यों के कर्म करने में निरत (मान०)। चोरों से प्रेम, नीच, राजा का प्रिय (जा० पारि०)।

केतु नीच का—दुष्ट स्वभाव, नेत्रों से काना, स्त्री का वियोगी, शरीर के दुःख से कांति रहित, शत्रु जनों के मारने में कुशल (मान०)।

———

अध्याय ४

षड्वर्ग विचार

सप्त वर्ग से विचार—ग्रहों के स्वरूप आदि के अनुसार फल समझना।

(१) लग्न कुण्डली से—देह का सुख दुःख, आचार विचार, शरीर की आकृति आदि का विचार होता है।

(२) होरा कुण्डली से—धन सम्पत्ति, विपत्ति, शील स्वभाव, सौख्य का विचार होता है।

(३) द्रेष्काण कुण्डली से—किये हुए कार्यों का क्या फल होगा इसका ज्ञान, पदवी का, भाई बन्द का विचार।

(४) सप्तमांश से—भाइयों की संख्या का ज्ञान, भाई बहनों का, धन संचय का, पुत्र पौत्र का विचार।

(५) नवमांश से—जातक के सब फलों का ज्ञान, वर्ण, रूप, गुण, अच्छी बुद्धि, पुत्रों और स्त्रियों का विचार।

(६) द्वादशांश से—विवाहित पत्नी का सब हाल, आयु और माता-पिता का विचार।

(७) त्रिंशांश से—कष्ट, मृत्यु का विचार, स्त्री का विचार।

(१) होरा चक्र (राशि का $\frac{1}{2}$ भाग) प्रत्येक १५° का

	राशि	मेष	वृष	मि०	क०	सिं०	कन्या	तु०	वृश्चि०	धन	मकर	कुंभ	मीन	स्वामी
		१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	
अंश	१५ अंश	५	४	५	४	५	४	५	४	५	४	५	४	देवता
	३० अंश	४	५	४	५	४	५	४	५	४	५	४	५	पितर

(२) द्रेष्काण (राशि का $\frac{1}{3}$ भाग) प्रत्येक १०° का

	राशि	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	स्वामी
अंश	१०° तक	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	नारदः
	२०° ,,	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	अगस्तिः
	३०° ,,	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	दुर्वासः

(३) चतुर्थांश (राशि का $\frac{1}{4}$ भाग) प्रत्येक ७°-३०′ का

अंश	राशि	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	स्वामी
	७° ३०′	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	सनकः
	१५-०	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	सनन्दनः
	२२-३०	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	कुमारः
	३०-०	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	सनातनः

(४) सप्तमांश (राशि का $\frac{1}{7}$ भाग) प्रत्येक ४°-१७′ का

	राशि	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	स्वामी
अंश	४°-१७′	१	८	३	१०	५	१२	७	२	९	४	११	६	क्षार
	८-३४	२	९	४	११	६	१	८	३	१०	५	१२	७	क्षीर
	१२-५१	३	१०	५	१२	७	२	९	४	११	६	१	८	दधि
	१७-८	४	११	६	१	८	३	१०	५	१२	७	२	९	आज्य
	२१-२५	५	१२	७	२	९	४	११	६	१	८	३	१०	इक्षुरस
	२५-४२	६	१	८	३	१०	५	१२	७	२	९	४	११	मद्य
	३०-०	७	२	९	४	११	६	१	८	३	१०	५	१२	शुद्धजल

(५) नवमांश ($\frac{1}{9}$ भाग) एक भाग ३°.२०′ का

अंश	राशि १	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	स्वामी
३°-२०′	१	१०	७	४	१	१०	७	४	१	१०	७	४	देवता
६-४०	२	११	८	५	२	११	८	५	२	११	८	५	नर
१०-०	३	१२	९	६	३	१२	९	६	३	१२	९	६	राक्षस
१३-२०	४	१	१०	७	४	१	१०	७	४	१	१०	७	देवता
१६-४०	५	२	११	८	५	२	११	८	५	२	११	८	नर
२०-०	६	३	१२	९	६	३	१२	९	६	३	१२	९	राक्षस
२३-२०	७	४	१	१०	७	४	१	१०	७	४	१	१०	देवता
२६-४०	८	५	२	११	८	५	२	११	८	५	२	११	नर
३०-०	९	६	३	१२	९	६	३	१२	९	६	३	१२	राक्षस

(६) दशमांश ($\frac{1}{१०}$ भाग) एक भाग ३°—०′ का

अंश	राशि १	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	स्वामी विषम	सम
३°-०	१	१०	३	१२	५	२	७	४	९	६	११	८	इन्द्रः	अनंतः
६-०	२	११	४	१	६	३	८	५	१०	७	१२	९	अग्निः	पद्मजः
९-०	३	१२	५	२	७	४	९	६	११	८	१	१०	यमः	ईशानः
१२-०	४	१	६	३	८	५	१०	७	१२	९	२	११	राक्षसः	कुबेरः
१५-०	५	२	७	४	९	६	११	८	१	१०	३	१२	वरुणः	वायुः
१८-०	६	३	८	५	१०	७	१२	९	२	११	४	१	वायुः	वरुणः
२१-०	७	४	९	६	११	८	१	१०	३	१२	५	२	कुबेरः	राक्षसः
२४-०	८	५	१०	७	१२	९	२	११	४	१	६	३	ईशानः	यमः
२७-०	९	६	११	८	१	१०	३	१२	५	२	७	४	पद्मजः	अग्निः
३०-०	१०	७	१२	९	२	११	४	१	६	३	८	५	अनंतः	इन्द्रः

त्रिंशांश ($\frac{1}{३०}$ भाग)

अंश	राशि	विषम राशि					समराशि						स्वामी	
	राशि	१	३	५	९	११	राशि २	४	६	८	१०	१२	विषम	सम
५°-०′		१	१	१	१	१	५°-०′ २	२	२	२	२	२	अग्नि	वरुण
१०-०		११	११	११	११	११	१२-० ६	६	६	६	६	६	वायु	कुबेर
१८-०		९	९	९	९	९	२०-० १२	१२	१२	१२	१२	१२	इन्द्र	इन्द्र
२५-०		३	३	३	३	३	२५-० १०	१०	१०	१०	१०	१०	कुबेर	वायु
३०-०		७	७	७	७	७	३०-० ८	८	८	८	८	८	वरुण	अग्नि

(७) द्वादशांश ($\frac{१}{१२}$ भाग)—१ भाग २°–३०′ का

राशि	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	स्वामी
२°–३०′	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	गणेश
५–०	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	अश्विनीकुमार
७–३०	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	यम
१०–०		५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	अहि
१२–३०	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	गणेश
१५–०	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	अश्विनीकुमार
१७–३०	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	यम
२०–०	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	अहि
२२–३०	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	गणेश
२५–०	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	अश्विनीकुमार
२७–३०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	यम
३०–०	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	अहि

अंश

(८) षोडशांश ($\frac{१}{१६}$ भाग)—१ भाग १°–५′–३०″ का

राशि	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	स्वामी
	विषम						सम						
१°–५२–३०″	१	५	९	१	५	९	१	५	९	१	५	९	ब्रह्मा सूर्य
३–४५–०	२	६	१०	२	६	१०	२	६	१०	२	६	१०	विष्णु शिव
५–३७–३०	३	७	११	३	७	११	३	७	११	३	७	११	शिव विष्णु
७–३०–०	४	८	१२	४	८	१२	४	८	१२	४	८	१२	सूर्य ब्रह्मा
९–२२–३०	५	९	१	५	९	१	५	९	१	५	९	१	ब्रह्मा सूर्य
११–१५–०	६	१०	२	६	१०	२	६	१०	२	६	१०	२	विष्णु शिव
१३–७–३०	७	११	३	७	११	३	७	११	३	७	११	३	शिव विष्णु
१५–०–०	८	१२	४	८	१२	४	८	१२	४	८	१२	४	सूर्य ब्रह्मा
१६–२२–३०	९	१	५	९	१	५	९	१	५	९	१	५	ब्रह्मा सूर्य
१८–४५–०	१०	२	६	१०	२	६	१०	२	६	१०	२	६	विष्णु शिव
२०–३७–३०	११	३	७	११	३	७	११	३	७	११	३	७	शिव विष्णु
२२–३०–०	१२	४	८	१२	४	८	१२	४	८	१२	४	८	सूर्य ब्रह्मा
२४–२२–३०	१	५	९	१	५	९	१	५	९	१	५	९	ब्रह्मा सूर्य
२५–१५–०	२	६	१०	२	६	१०	२	६	१०	२	६	१०	विष्णु शिव
२८–७–३०	३	७	११	३	७	११	३	७	११	३	७	११	शिव विष्णु
३०–०–०	४	८	१२	४	८	१२	४	८	१२	४	८	१२	सूर्य ब्रह्मा

अंश

षष्ठ्यंश चक्र ($\frac{1}{60}$ भाग) ३०° का १ भाग

अंश तक

अंश कला	अं० क०	अं० क०	अं० क०	अं० क०
०°–३०′	६°–३०′	१२°–३०′	१८°–३०′	२४°–३०
१–०	७–०	१३–०	१९–०	२५–०
१–३०	७–३०	१३–३०	१९–३०	२५–३०
२–०	८–०	१४–०	२०–०	२६–०
२–३०	८–३०	१४–३०	२०–३०	२६ ३०
३–०	९–०	१५–०	२१–०	२७–०
३–३०	९–३०	१५–३०	२१–३०	२७–३०
४–०	१०–०	१६–०	२२–०	२८–०
४–३०	१०–३०	१६–३०	२२–३०	२८–३०
५–०	११–०	१७–०	२३–०	२९ ०
५–३०	११–३०	१७–३०	२३–३०	२९–३०
६–०	१२–०	१८–०	२४–०	३०–०

राशियाँ

मेष	वृ०	मि०	क०	सिं०	क०	तु०	वृ०	ध०	म०	कु०	मी०	क्रम				
१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	१३	२५	३७	४९
२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	१४	२६	३८	५०
३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	१५	२७	३९	५१
४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	१६	२८	४०	५२
५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	१७	२९	४१	५३
६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	१८	३०	४२	५४
७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	१९	३१	४३	५५
८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	२०	३२	४४	५६
९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	२१	३३	४५	५७
१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	२२	३४	४६	५८
११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	२३	३५	४७	५९
१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	२४	३६	४८	६०

उदाहरण—चन्द्र कुंभ का—२°-७′-५५″=२°-३०′ के भीतर कुंभ के नीचे ३ विषुव का षष्ठ्यंश आया।

सूर्य मीन ५°-४०'-४५" ६-० के भीतर मीन के नीचे ११ कुंभ का षष्ठ्यंश आया

अन्यमत—अंश का दुगुना करना कला ३० से कम हो तो १ जोड़ना ३० से अधिक कला होतो २ जोड़ना। योग में १२ का भाग देना, जो शेष बचेउस को इस प्रकार गिनना यदि राशि विषम हो तो उस राशि को १ गिनकर शेष संख्या तक गिनने में जो राशि आवे उसका षष्ठ्यंश होगा यदि राशि सम हुई तो उस राशि से शेष संख्या तक उल्टा गिनना जो आवे उसी राशि का षष्ठ्यंश होगा।

उदाहरण सूर्य—११-५°-४०'-४५"। अंश ५×२=१०+२=१२ (कला से अधिक होने से २ जोड़ा)

१२÷१२=शेष ०=१२ मीन। सूर्य मीन का समराशि है। मीन से १२ उल्टा गिना।

मीन, कुंभ, मकर, धन, प्रकार से गिना तो मेष का षष्ठ्यंश आया।

चन्द्र १०-२°-७'-५५" अंश २५२=४+१=५ (कला ३० से कम होने से १ जोड़ा।

५÷१२=शेष ५=सिंह। चन्द्र कुंभ का विषय है। कुंभ से सीधे ५ गिना।

कुंभ मीन मेष वृष आदि गिनने से मिथुन का षष्ठ्यंश आया।

षष्ठ्यंश का नाम और क्रम			षष्ठ्यंश का नाम और क्रम		
विषम	सम	षष्ठ्यंश नाम	विषम	सम	नाम
१	६०	घोरांश *	१६	४५	अहि भागांश या (अहिअंश)
२	५९	रासांश *	१७	४४	अमृतांश
३	५८	देवांश	१८	४३	चन्द्रांश
४	५७	कुवेरांश	१९	४२	मृद्वांश
५	५६	रक्षोगणांश या यक्षांश *	२०	४१	कोमलांश या मृदु
६	५५	किन्नरांश	२१	४०	पद्मभांगांश या हेरंब
७	५४	भ्रष्टांश	२२	३९	लक्ष्मीशांश या ब्रह्मा
८	५३	कुलघ्नांश *	२३	३८	वागीशांश या विष्णु
९	५२	गरलांश *	२४	३७	दिगम्बरांश या महेश्वर
१०	५१	अग्न्यांश	२५	३६	देवांश
११	५०	मायांश या आपांश	२६	३५	आद्रांश
१२	४९	प्रेत पुरीशांश या पुरीशांश *	२७	३४	कलिनाशांश
१३	४८	वरुणांश या अपांपत्यांश	२८	३३	क्षितीश्वरांश
१४	४७	इन्द्रांश या गरुत्वांश या देवगणांश	२९	३२	कमलाकरांश
१५	४६	कालांश *	३०	३१	मन्दात्यजांश * या मान्दी या गुलिक

षष्ठ्यंश का नाम और क्रम			षष्ठ्यंश का नाम और क्रम		
३१	३०	मृत्यंश *	४५	१६	सौम्यांश
३२	२९	कालांश *	४६	१५	मृद्वंश (कोमलांश)
३३	२८	दावाग्नांश *	४७	१४	सुशीतलांश या शीतलांश
३४	२७	घोरांश *	४८	१३	दंष्ट्राकराल *
३५	२६	अभयांश (यमांश) या मयांश या यम *	४९	१२	इन्दु मुखांश
			५०	११	प्रवीणांश
३६	२५	कंटकांश	५१	१०	कालाग्न्यंश
३७	२४	सुधांश	५२	९	दंडायुध
३८	२३	अमृतांश	५३	८	निर्मलांश या निर्मांश
३९	२२	परिपूर्ण चन्द्रांश	५४	७	सौम्यांश या शुभांश
४०	२१	विषप्रदग्धांश	५५	६	क्रूरांश या अशुभांश *
४१	२०	कल्यंश (किलनाशांश) या कुलनांशांश *	५६	५	अतिशीतलांश
			५७	४	सुधांश
४२	१९	वंश क्षयांश *	५८	३	पयोधीशांश
४३	१८	उत्पातकांश *	५९	२	भ्रमणांश या भ्रमणेन्दु *
४४	१७	कालरूपांश *	६०	१	इंदुरेखांश

(* चिह्न वाले अशुभ हैं)

किसी ग्रहादि के षष्ठ्यंश के नाम जानना—ग्रह की राशि को छोड़कर अंश दूने करना। कला ३० से कम हो तो १ और जोड़ना यदि कला ३० से अधिक हो तो २ जोड़ना=जो संख्या प्राप्त हो यदि वह राशि विषम है तो सीधे दिये हुए क्रम के आगे जो नाम मिले वह लेना। यदि राशि सम हो तो उल्टे क्रम से गिनने से उस षष्ठ्यंश का नाम प्रकट हो जायेगा—जैसे सूर्य मीन का ५°–४०′–४५″ है ५°×२=१०+२=१२ यहाँ कला ३० से अधिक है तो २ जोड़ा=मीन सम राशि होने से उलटा १२ जहाँ लिखा है इंदु मुखांश नाम आया। चन्द्र कुम्भ २°–७′–५५″ है। २×२+१=५ कला ३० से कम होने से १ जोड़ा कुम्भ विषम है। क्रम से पांचवाँ गिना तो रक्षोगणांश आया।

षष्ठ्यंश के नामों में मतांतर

४० क्रम तक तो कोई अन्तर नहीं है आगे एक का अन्तर पड़ने से क्रम में एक न्यूनाधिक ५७ क्रम तक होता है ५८ से ६० तक क्रम में कोई अन्तर नहीं है। ४१ के बाद ४२ नाशांश अधिक ले लेने से क्रम में अन्तर पड़ गया है।

क्रम	नाम षष्ठ्यंश		मतांतर
३९	परिपूर्ण चन्द्रांश	३९	परिपूर्ण चन्द्रांश
४०	विषप्रदग्धांश	४०	विषप्रदग्धांश

क्रम	नाम षष्ठ्यंश		मतान्तर
४१	कल्पांश	४१	कल्यंश
४२	वंशक्षयांश	४२	नाशांश
४३	उत्पातकांश	४३	वंशक्षयांश
४४	कालरूपांश	४४	उत्पातकांश
४५	सौम्यांश	४५	कालरूपांश
४६	मृद्वंश	४६	सोम्यांश
४७	सुशीतलांश	४७	मृद्वांश
४८	दंष्ट्राकरालांश	४८	सुशीतलांश
४९	इन्दुमुखांश	४९	दंष्ट्राकरालांश
५०	प्रवीणांश	५०	इन्दुमुखांश
५१	कालाग्न्यंश	५१	प्रवीणांश
५२	दंडायुधांश	५२	कालाग्न्यंश
५३	निर्मलांश	५३	दंडायुधांश
५४	सौम्यांश	५४	निर्मलांश
५५	क्रूरांश	५५	शुभांश
५६	अतिशीतलांश	५६	अशुभांश
५७	सुधांश	५७	अतिशीतलांश
५८	पयोधीशांश	५८	सुधापयोध्यंश
५९	भ्रमणांश	५९	भ्रमणांश
६०	इन्दुरेखांश	६०	इन्दुरेखांश

जैसे यहाँ बताया है। ५७ क्रम तक यह अन्तर है ५७ सुधांश और ५८ पयोधीशांश एक मिलाकर ५८ में सुधापयोध्यंश कर दिया है आगे ५९ और ६० क्रम में कोई अन्तर नहीं है।

शुभ षष्ठ्यंश—मृद्वंश, देवलोकांश, किन्नरांश आदि हैं।

क्रूर षष्ठ्यंश—घोर राक्षस, अग्नि प्रेतपुरी आदि हैं।

नाम के आगे * ऐसा चिह्न देकर बता दिया है वे अशुभ षष्ठ्यंश हैं।

क्रूर षष्ठ्यंश में ग्रह बुरा फल देते हैं।

शुभ षष्ठ्यंश में ग्रह अच्छा फल देते हैं।

वर्ग विचार

ग्रहों के वर्ग विचार में कहीं षड़वर्ग का कहीं सप्तवर्ग का कहीं १० वर्ग का विचार होता है जिनका वर्णन आगे दिया है।

१० वर्ग में जो ग्रह स्ववर्ग आदि में हों उसकी संख्या के अनुसार उसकी पारिजात आदि संज्ञाएँ होती हैं जो शुभ हैं जिनका वर्णन आगे दिया है।

अंश —फल वर्णन करने में कहीं-कहीं दिया रहता है कि ग्रह अपने अंश में हो उसका अर्थ है कि अपने नवांश में हो। अंश से सदा नवांश समझना।

वर्गोत्तम —जो राशि हो वही राशि नवांश में हो तो वर्गोत्तम कहलायगा जैसे मेष राशि हो और नवांश में भी मेष का नवांश हो तो वह वर्गोत्तम होता है।

चरराशि के आदि के नवांश वर्गोत्तम हैं —वर्गोत्तम में जन्म हो तो कुल में मुख्य होता है।

स्थिर के मध्य के नवांश वर्गोत्तम हैं।

द्विस्वभाव के अन्त के नवांश वर्गोत्तम हैं।

मतान्तर—अपने-अपने घरों में जो अपने नवांश हों वह वर्गोत्तम है।

षडवर्ग शुद्धि – षड़ वर्ग में जो राशि हो उसी राशि का अंशक (वर्ग) में जो ग्रह हो वह षड़ वर्ग शुद्धि कहलाता है जैसे मेष राशि में मेष का नवांश वृष में वृष का नवांश आदि। इसी प्रकार प्रत्येक वर्ग में विचारना।

षड़ वर्ग शुद्धि—होरा केवल सूर्य चन्द्र का होता है मंगल आदि दूसरे ग्रहों का नहीं होता। त्रिंशांश सूर्य चन्द्र का नहीं होता केवल मंगल आदि ५ ग्रहों का होता है। इससे षड़ वर्ग शुद्धि नहीं हो सकती पंचवर्ग शुद्धि ही होती है।

षड़वर्ग शुद्धि ग्रह का फल

कोई ग्रह मित्रगृही, स्वगृही, उच्च, मूल त्रिकोण में हो वह षड़वर्ग शुद्ध ग्रह सब फल देता है।

कुण्डली में एक भी षड़वर्ग शुद्ध ग्रह हो—तो वह सर्व सम्पत्तियों से युक्त हो और धन का स्वामी हो। वाहन युक्त हो।

यदि एक से अधिक २ ग्रह आदि ऐसे हों तो –पृथ्वी में सिद्ध तथा किन्नरों के समान होता है।

वर्ग में शुभाशुभ फल विचार

(१) मित्र वर्ग, सौम्य वर्ग या उच्चगत ग्रह हो—तो शुभ होता है।

(२) नीचगत शत्रु वर्ग, पाप वर्ग में हो तो—अशुभ होता है।

(३) इनमें पाप वर्ग और शुभ वर्ग का न्यूनाधिक देखके – जिसकी अधिकता हो उसके अनुसार फल कहे।

शुभाधिक्य वर्ग में क्रूर भी हो तो – शुभ होता है।

शुभाधिक्य वर्ग में शुभ ग्रह भी हो तो —अधिक शुभ होता है।

पाप वर्गाधिक्य में शुभ ग्रह भी – क्रूर होता है।

पाप वर्गाधिक्य में क्रूर ग्रह भी—अधिक क्रूर फल होता है।

षडवर्ग में शुभ गुण अधिक हो– धनी और अधिक आयु वाला हो।

षडवर्ग में लग्न क्रूर अंश में हो—दीन, शठ, अल्पायु हो।
अंशों के स्वामी बली हो तो—राजा हो।
यदि उदित नवांश स्वामी बली हो तो—सुखी।
यदि उदित द्रेष्काण स्वामी बली हो तो—राजा तुल्य।
यदि उदित लग्न राशि स्वामी बली हो तो—भाग्यवान्, भूपति हो।

वर्गों के प्रभाव में मत

नवांश का प्रभाव राशि के प्रभाव के समान होता है।
राशि में पूर्ण फल होता है।
वर्ग में आधा फल होता है।
षोड़शांश, दशांश षष्ठ्यंश में— पाव (¼) फल होता है।
ग्रहों का बल साधने के लिये यह वर्ग साधन करना पड़ता है।
शुभग्रह-अपने उच्चगत, मित्र राशिगत ग्रह— शुभ होते हैं।
पाप ग्रह-अपने नीच, शत्रु राशिस्थ ग्रह— अशुभ है।
इससे गृह होरा आदि स्थापन करके शुभ पंक्ति पृथक् रखना पाप पंक्ति पृथक् रखना
यदि शुभ पंक्ति अधिक हो— तो वह ग्रह दशा और भाव में शुभ फल देगा।
यदि पाप पंक्ति अधिक हो—तो वह ग्रह दशा और भाव में अनिष्ट फल देगा।
शुभ ग्रह शुभ वर्गाधिक हो तो— अति शुभ।
पाप ग्रह शुभ वर्गाधिक हो तो—शुभ ग्रह भी निष्फल हो जाते हैं।
इस प्रकार पाप ग्रह शुभवर्गाधिक्य होने से—शुभ हो जाता है।
इस प्रकार पाप ग्रह पापवर्गाधिक्य होने से—अति निंद्य है।

ग्रहों का वर्ग साधन करके भावों के साथ उनका सम्बन्ध देखना जैसे लग्नेश शुभ ग्रह शुभ राशि में मित्र राशि या उच्च में हो तो—लग्न शुभाधिक्य होने से लग्न सम्बन्धी सभी फल शुभ होंगे। लग्न पापाधिक वर्ग हो और उसका स्वामी पाप ग्रह, पाप-राशि गत व शत्रु राशि गत व नीच मे हो तो—लग्न सम्बन्धी अनिष्ट फल अधिक होगा।

जहाँ एक प्रकार से शुभ दूसरे प्रकार से अशुभ हो वहाँ मिश्र फल होगा जैसे लग्नेश शुभ राशि में नीच व शत्रु राशि गत हो या लग्नेश पाप, मित्र, उच्चराशि में हो तो मिश्र फल होगा।

इसी प्रकार द्वितीय तृतीय आदि भाव के सम्बन्ध से फल विचारना।

ग्रहों के वर्ग

षडवर्ग—(१) गृह (२) होरा (३) द्रेष्काण (४) नवमांश (५) द्वादशांश (६) त्रिंशांश।

सप्तवर्ग—(१) गृह (२) होरा (३) द्रेष्काण, (४) सप्तमांश, (५) नवमांश, (६) द्वादशांश, (७) त्रिंशांश।

दश वर्ग—(१) गृह, (२) होरा, (३) द्रेष्काण, (४) सप्तमांश, (५) नवमांश,

(६) दशांश, (७) द्वादशांश, (८) कालांश (षोड़शांश), (९) त्रिंशांश, (१०) षष्ठ्यंश ।

वर्ग कुण्डली बनाने का उदाहरण

लग्न २रा.-२०°-११′—५३″	बुध १०रा-२०°-५६′-५६°
सूर्य ११— ५ —४० —४५	गुरु ९—१३ —३४—९
चन्द्र १० — २— ७—५५	शुक्र ११-१३ — ३३—४८
मंगल ७ —१२—२९ —४४	शनि ४ —८ —३९—४८

(१) लग्न कुंडली के अनुसार कौन ग्रह किस स्थान में है उसके अनुसार गृह इतर होरा द्रेष्काण सप्तमांश नवमांश आदि निकालने के चक्र आगे दिये हैं उनमें किस वर्ग में कौन ग्रह किस राशि में है प्रगट होगा। जैसे लग्न २रा.-२०°-११′-५३″ है। इसका वर्ग निकालना है।

(१) लग्न कुंडली में जिस जिस राशि में जो ग्रह है स्थापित होगा।

(२) होरा मिथुन में १५° के ऊपर और ३०° के भीतर है मिथुन में ३०° के सामने ४ दिया है कर्क का होरा आया कर्क का स्वामी चन्द्र है इस कारण चन्द्र का होरा है लग्न में ४ राशि होरा कुंडली में रहेगी।

(३) द्रेष्काण चक्र में ९०° के ऊपर ३०° के सामने मिथुन के नीचे ११ दिया है। द्रेष्काण कुंडली का लग्न ११ रहेगा।

(४) सप्तमांश चक्र में १७°-८′ के आगे २१°-१५′ के भीतर लग्न है इसके सामने मिथुन के नीचे ७ दिया है। सप्तमांश कुंडली का लग्न ७ हुआ।

(५) नवमांश चक्र में २०° के ऊपर २३°-२०′ के भीतर लग्न है। २३°-२०′ के सामने मिथुन लग्न के नीचे १ दिया है। नवमांश कुण्डली का लग्न १ हुआ।

(६) दशमांश चक्र में २१° के भीतर लग्न है इसके सामने और मिथुन लग्न के नीचे ९ दिया है। दशमांश कुण्डली का लग्न ९ आया।

(७) द्वादशांश चक्र में २२°-३०′ के भीतर लग्न है। इसके सामने मिथुन के नीचे ११ है द्वादशांश कुण्डली का लग्न ११ हुआ।

(८) षोडशांश चक्र में लग्न २०°-३७′-३०″ के भीतर है इसके सीध में और मिथुन लग्न के नीचे ७ है। षोडशांश कुण्डली में तुला लग्न आया।

(९) त्रिंशांश चक्र में मिथुन विषम राशि है लग्न २५° के भीतर है इसके सामने मिथुन के नीचे ३ आया। इससे त्रिंशांश कुण्डली का लग्न मिथुन ही रहा।

(१०) षष्ठ्यंश चक्र में लग्नांश २०°-११′-३५″ मिथुन के हैं यह २०°-३०′ के भीतर है इसके सामने और मिथुन के नीचे ७ दिया है। षष्ठ्यंश कुण्डली में लग्न तुला आया।

अन्य मत से २०°×२=४०+१=(३० अंश से कम होने से १ जोड़ा)=४१÷१२ =शेष ५ है। मिथुन लग्न विषय है। मिथुन से सीधे ५ गिना तो तुला आया इसे तुला लग्न आया।

इसी प्रकार सब ग्रहों का वर्ग निकाल कर आगे चक्र में दिया है।

दश वर्ग चक्र (उपरोक्त ग्रह स्पष्ट से निकाला हुआ)

वर्ग	लग्न		सूर्य		चन्द्र		मंगल		बुध		गुरु		शुक्र		शनि	
	राशि	स्वामी	रा०	स्वा०	रा०	स्वा०	रा०	स्वा०	रा०	स्वा०	रा०	स्वा०	रा०	स्वा०	रा०	स्वा०
१ गृह	३	बु०	१२	गु०	११	श०	८ (स्व०)	मं०	११	श०	१०	श०	१२ (उच्च)	गु०	५	सू०
२ होरा	४	चं०	४	चं०	५	सू०	४	चं०	४	चं०	४ (उच्च)	चं०	४	चं०	५	सू०
३ द्रेष्काण	११	श०	१२	गु०	११	श०	१२	गु०	७	शु०	२	शु०	४	चं०	५	सू०
४ सप्तमांश	९	गु०	१२	गु०	११	श०	११ (उच्च)	श०	५	सू०	१	मं०	३	बु०	८	मं०
५ नवमांश	५	सू०	७	शु०	७	शु०	७	शु०	१	मं०	२	शु०	८	मं०	३	बु०
६ दशमांश	९	गु०	९	गु०	११	श०	८ (स्व०)	मं०	५	सू०	१०	श०	१२ (उच्च)	गु०	७ (उच्च)	शु०
७ द्वादशांश	१२	गु०	२	शु०	११	श०	१२	गु०	७	शु०	३	बु०	५	सू०	८	मं०
८ षोड़शांश	७	शु०	१२	गु०	६	बु०	११ (उच्च)	श०	४	चं०	८	मं०	४	चं०	९	गु०
९ त्रिंशांश	३	बु०	६	बु०	१	मं०	१२	गु०	३ (स्व०)	बु०	१२	गु०	१२ (उच्च)	गु०	११ (स्व०)	श०
१० षष्ठ्यंश	७	शु०	११	श०	२	बु०	८ (स्व०)	मं०	४	चं०	१	मं०	३	बु०	१० (स्व०)	श०
षष्ठ्यंश (अन्यमतसे)	७	शु०	१	मं०	३	बु०	८	मं०	४	चं०	७	शु०	७	गु०	१०	श०
	तुला ३		उच्च ×		×		सम ५		१		सम १		सम १	३	३	
	उत्तमांश						सिंहासन							उत्तमांश	उत्तमांश	

ग्रह वर्ग की उत्तमांश अनुसार संज्ञा

उत्तमांश ग्रह मूल त्रिकोण, परमोच्च, स्वगृही, वर्गोत्तम ग्रह उत्तमांश कहे जाते हैं।

२ वर्ग में स्वगृही आदि हो तो पारिजातकांश।

३ वर्ग में स्वगृही आदि हो तो उत्तमांश।

४ वर्ग में स्वगृही आदि हो तो गौपुरांश।

५ वर्ग में स्वगृही आदि हो तो सिंहासनांश।

६ वर्ग में स्वगृही आदि हो तो पारावतांश।

७ वर्ग में स्वगृही आदि हो तो देवलोकांश।

८ वर्ग में स्वगृही आदि हो तो अपरांश या कुमकुमांश या ब्रह्मलोक या सुरलोक।

९ वर्ग में स्वगृही आदि हो तो ऐरावतांश या शक्रवाहन।

१० वर्ग में स्वगृही आदि हो तो स्वांशकीय वैशेषिकांशक या वैष्णवांश या श्रीधाम।

११ वर्ग में स्वगृही आदि हो तो शैवांश।

१२ वर्ग में स्वगृही आदि हो तो भगवंदश।

१३ वर्ग में स्वगृही आदि हो तो वैशेषिकांश।

जितने वर्गों की एकता हो उसके अनुसार यहाँ नाम दिया है। इसमें स्वगृही, मूल त्रिकोण उच्च और वर्गोत्तम जिस जिस वर्ग में हो उनको गिनकर उनकी उपरोक्त संज्ञा निर्धारित करना जिसका फल आगे बताया है। अन्य प्रकार—

सप्त वर्ग में	अन्य	
२. स्ववर्ग आदि में किंशुक	२. में भेदक	८. में चन्दन वन
३. स्ववर्ग आदि में व्यंजन	३. में कुसुम	९. में पूर्णचंद
४. स्ववर्ग आदि में चामर	४. में नागपुष्प	१०. में उच्चैश्रवा
५. स्ववर्ग आदि में छत्र	५. में कंदुक	११. में धन्वन्तरि
६. स्ववर्ग आदि में कुंडल	६. में केरल	१२. में सूर्यकांत
७. स्ववर्ग आदि में मुकुट	७. में कल्पवृक्ष	१३. में विद्रुम
		१४. में शक्र सिंहासन

पारिजातकांश आदि वर्ग का फल

(१) स्वांश में ग्रह —यशस्वी, बुद्धिमान् और सुखी।

(२) पारिजातक में—धनवान्, आदरणीय, बहुगुण युक्त, विभव, मान सौख्य युक्त।

(३) उत्तमांश - सम्पूर्ण शक्तियों से युक्त, राजा का मित्र, स्वआचार निपुण, विनयी, निरोग।

(४) गौपुर—धनवान्, सम्पूर्ण विद्या जानने वाला, बंधुओं में श्रेष्ठ, शुभमति, धन, भूमि, गौ, गृहयुक्त।

(५) सिंहासन—समस्त लोकों में स्तुत्य राजा, बंधुप्रिय, सम्पत्ति और वैभवयुक्त, राजा का मित्र, या राजा तुल्य।

(६) पारावत—समस्त शास्त्र जानने वाला, अच्छा घर, अच्छा वाहन, एवं अन्य राजकीय सामग्री युक्त, विद्या, यश, बहुत धन युक्त।

(७) देवलोक—महादान करने वाला, संसार का राजा, सत्कीर्तियुक्त राजा, बहुत वाहन और सेनायुक्त।

(८) अमर (सुर लोक)—सद्भाग्य, धनधान्य पुत्रयुक्त, राजा।

(९) ऐरावत—चक्रवर्ती राजा होकर समस्त ऐश्वर्य से परिपूर्ण, इन्द्रसदृश राजा, अन्य राजाओं से वंदित राजा बनाता है।

(१०) वैशेषिकांश - सम्पूर्ण श्रेष्ठ फल।

(१) ग्रह स्ववर्ग में हो उसको परिजात आदि का फल शुभ होता है।

(२) जो ग्रह त्रिक स्थान, शत्रु राशि, नीच राशि, अस्तंगत या बलहीन हो या मरण अवस्था में हो वे परिजात आदि के शुभफल नष्ट कर देते हैं।

(३) जो ग्रह उच्च मूल त्रिकोण आदि में पूर्ण बली हो और क्रूर षष्ठचंश में हो तो उपरोक्त शुभफल का नाश कर देते हैं।

जन्म समय दशवर्ग में बलहीन ग्रह का फल

१—वर्ग में ग्रह बलहीन हो—राजा।
२—वर्ग में ग्रह बलहीन हो—धनी।
३—वर्ग में ग्रह बलहीन हो—राजा का मित्र।
४—वर्ग में ग्रह बलहीन हो—बंधुओं में श्रेष्ठ।
५—वर्ग में ग्रह बलहीन हो—बन्धुप्रिय।
६—वर्ग में ग्रह बलहीन हो—सुखहीन।
७—वर्ग में ग्रह बलहीन हो—अनर्थ (विपत्ति)।
८—वर्ग में ग्रह बलहीन हो—दुःख।
९—वर्ग में ग्रह बलहीन हो—नाश।
१०—वर्ग में ग्रह बलहीन हो—जातक की मृत्यु।

सर्व वर्ग में ग्रह बलवान् हो तो—राजाओं में श्रेष्ठ हो।

केन्द्रेश त्रिकोणेश आदि होने के अनुसार फल

वर्ग	केन्द्रेश फल	पंचमेश फल	नवमेश फल
१–परिजात	दाता	कुलोचित विद्या	तीर्थ करने वाला
२–वर्गोत्तम	श्रेष्ठ दाता	उत्तम विद्या	अनेक जन्म में तीर्थ करने वाला
३–गोपुर	पुरुषत्व से युक्त	संसार में ख्याति	यज्ञ करने वाला
४–सिंहासन	लोकमान्य	राजमंत्री	वीर सत्यवक्ता जितेन्द्रिय ब्रह्म उपासक।

५–पारावत	शूरवीर	ब्रह्मज्ञानी	परमहंस
६–देवलोक	सभापति	कर्म योगी	दंडी या त्रिदंडी
७–ब्रह्मलोक	मुनि	ईश्वरोपासक	यज्ञ कर इन्द्र पद पावे
८–ऐरावत	सर्वदा संतुष्ट	ईश्वर भक्त	स्वयं धर्मावतार होता है

(दुःखहीन)

केन्द्रेश त्रिकोणेश दोनों के परस्पर सम्बन्ध से राजयोग होता है। इनका वर्ग में फल-केन्द्रेश त्रिकोणेश दोनों यदि—

१–पारिजात में - प्रजा रक्षक राजा
२–वर्गोत्तम–श्रेष्ठ वाहन युक्त श्रेष्ठ राजा
३–गोपुर–राजाओं में मान्य राजा
४–सिंहासन–युधिष्ठिर आदि सरीखे चक्रवर्ती राजा
५–पारावत–मनु आदि सरीखे
६–देवलोक–विष्णु का अवतार
७–ब्रह्मलोक-ब्रह्मा आदि सदृश देव विश्व पालक
८–ऐरावत–पूर्व स्वयंभू मनु हुए।

वर्ग में होरा का फल

१—सूर्य में होरा का फल

(१) सूर्य होरा में जन्म—धार्मिक, सत्यवक्ता, गुरु और देवपूजक, स्वउपार्जित धन का भोगी। तेजस्वी हो परन्तु कार्य में क्रूर हो।

सिद्धि एवं राज्य प्राप्त हो सुखी धनी पुत्र पौत्र कल्याण युक्त पूर्ण आयु।

(२) सूर्य होरा क्रूर ग्रह—धन धान्य वैभव युक्त, राजप्रिय, आचार सत्व शील, निरोग, वली जितेन्द्रिय, स्त्री संभोग कठिनता से प्राप्त हो।

(३) सूर्य होरा में विषम राशि में पाप ग्रह—कीर्तिमान्, बड़ा उद्यमी, बलवान्, धनवान्, तेजस्वी।

सूर्य होरा में सम राशि में पाप ग्रह—पूर्वोक्तफल मध्यम।

सूर्य होरा में विषम राशि में शुभ ग्रह—मृदु शरीर कांति सौख्य, सौभाग्य, बुद्धि मधुर वाणी के फल उल्टे हों।

(४) सूर्य स्वहोरा में—विद्वान् सर्वत्र पुरुषार्थी जितेन्द्रिय शूरवीर उद्यमी।

सूर्य होरा में चंद्र—सदा नीच बुद्धि।

सूर्य होरा में मंगल—बड़ा धीर, वाहन वाहक, सज्जनप्रिय, बड़ा शूरवीर, विख्यात, धन सम्पन्न, उत्तम मित्र युक्त, अनेक सम्पत्ति युक्त।

सूर्य होरा में बुध—दरिद्री और चुगलखोर।
सूर्य होरा में गुरु—रोग से अनवसर मृत्यु।
सूर्य होरा में शुक्र—अगम्या स्त्री से रमण।
सूर्य होरा में शनि - वृषलीपति होता है।

२—चन्द्र होरा का फल

(१) चन्द्र के होरा में जन्म हो तो मृदु होता है। सब कार्य में शुभ है।

(२) द्विपद राशि में कुंभ लग्न को छोड़ कर अन्य लग्न में चन्द्र का होरा शुभ है।

(३) चन्द्र होरा में सम राशि में शुभ ग्रह—मृदु स्वभाव, कीर्तिमान्, सुखी, सब का प्यारा, बुद्धिमान्, मधुर वाणी, सौभाग्य युक्त।

चन्द्र होरा सम राशि में पापग्रह—पूर्वोक्त महा उद्यम बल धन तेज से हीन।

(४) चन्द्रहोरा विषम राशि में पाप ग्रह—पूर्वोक्त शुभ फल मध्यम।

इनमें बहुत ग्रह होने से बहुत फल।

इनमें थोड़ा ग्रह होने से थोड़ा फल।

(५) चन्द्र होरा में चन्द्र—अति सुन्दर और प्रिय पुत्र हो।

चन्द्र होरा में बुध—सर्वत्र विख्यात, स्त्री पतिव्रता, शुभाचार युक्त।

चन्द्र होरा में गुरु—धन रहित, तेजस्वी अनिंदनीय।

चन्द्र होरा में शुक्र—भोगने योग्य स्त्री मिले।

चन्द्र होरा में क्षीण चन्द्र—शुक्र के समान फल।

चन्द्र होरा में मंगल—मृतस्त्री और नराधम हो।

चन्द्र होरा में सूर्य—अति दुःखी, गुह्य स्थान की पीड़ा से पीड़ित।

चन्द्र होरा में शनि—दासी का पति हो (दासी से विवाह करे)।

(६) चन्द्र होरा में शुभ ग्रह हो तो—शुभ फल होता है, स्त्रियों का सनेही, स्त्रियों को प्रसन्न रखने वाला।

चन्द्र होरा में पाप ग्रह हो तो—शुभ फल नहीं होता।

(७) चन्द्र होरा में विषम राशि—वाग्मी, दाता, चारु शरीर, दयालु, लम्पट, स्त्री प्रकृति वाला।

चन्द्र होरा में सम राशि—बोलने में दक्ष, आलसी, सती स्त्री में रत।

द्रेष्काण फल विचारना

द्रेष्काण के विशेष नाम

१—आयुध द्रेष्काण—मेष का पहला, तीसरा। मिथुन का दूसरा तीसरा। सिंह का पहिला दूसरा और तीसरा, धन का तीसरा, कुम्भ के तीनों। मीन का पहिला और दूसरा द्रेष्काण।

२—सर्प द्रेष्काण—वृष का दूसरा। कर्क का दूसरा और तीसरा, वृश्चिक का पहिला और दूसरा मीन का तीसरा द्रेष्काण।

३—निगड़ (बेड़ी) द्रेष्काण—मकर का पहिला द्रेष्काण।

४—पक्षी द्रेष्काण—मिथुन का दूसरा, सिंह का पहिला, कन्या के तीनों, तुला का पहिला दूसरा, धन का पहिला, मकर का पहिला।

इनमें सिद्ध द्रेष्काण—सिंह का पहिला, तुला का दूसरा, कुंभ का पहिला।

५—चतुष्पद द्रेष्काण— मेष का पहिला दूसरा, वृष के तीनों, मिथुन का पहिला, कर्क का पहिला, सिंह का पहिला और तीसरा, तुला का तीसरा, वृश्चिक का तीसरा, मकर के तीनों द्रेष्काण।

६—वराह द्रेष्काण—कर्क का पहिला।

७—पाश (फांसी) द्रेष्काण—वृश्चिक का दूसरा।

अग्नि द्रेष्काण— पाप ग्रह का द्रेष्काण।

जल द्रेष्काण—शुभ ग्रह द्रेष्काण।

मिश्र द्रेष्काण— पाप और शुभ दोनों से युक्त या दृष्ट।

२२ वां द्रेष्काण— अष्टम स्थान में जो तत्काल द्रेष्काण हैं वही लग्न से २२ वां द्रेष्काण होता है।

द्रेष्काण फल

राशिपर	द्रेष्काण क्रम	संज्ञा	जन्म फल
५, १, ११, ८, १० ५, ७, ८, १२ ४–८	१ ३ २	क्रूर (११ द्रेष्काण)	—खल बुद्धि, घूमने वाला, पापकर्मा, अपवादी।
४–१२ १२–६ २–३	१ २ ३	(६ द्रेष्काण) जलचर	—दाता भोगी, दयालु, कृषि तथा वस्तु से धनवान् शील रहित।
१, २, ९, १०, ११ ७, ३, ६ ६, ९, ११	२ १ ३	(११ द्रेष्काण) सौम्य	—सुख, धन, पुत्र युक्त, दयालु, रमणीक शरीर।
१, ४, १० २, ९ ३, ५, ७	३ १ २	(८ द्रेष्काण) मिश्र	—कुशील, पर स्त्री में रमण, क्रूर दृष्टि, चंचल आत्मा।

द्रेष्काण विचार— यात्रा में कहीं जाते समय या दूसरी जगह से कहीं जाना हो तब विचारना।

१ द्रेष्काण शुभ का हो तो पुण्य युक्त या रत्न युक्त है शुभ ग्रह की दृष्टि हो तो—जय हो।

२ जिस द्रेष्काण में आयुध युक्त है उस पर पाप ग्रह की दृष्टि हो तो—हार या नाश हो।

३ भुजंग (सर्प), पाश, इन द्रेष्काणों में यात्रा करने से कैद होता है।

४ द्रेष्काण के समान चोर कहना यह स्वरूप बताने का प्रयोजन है ये स्वरूप आदि आगे बताये गये हैं।

५ (१) आयुध, (२) पाश, (३) निगड़, (४) गृद्ध, (५) पक्षी, (६) वाराह, (७) सर्प, (८) चतुष्पद, इन द्रेष्काणों में जन्म हो तो धन रहित, क्रूर स्वभाव, निंद्य और दरिद्र हो।

३६ द्रेष्काण की संज्ञा

राशि	द्रेष्काण क्रम		स्वरूप	स्वामी
१ मेष	(१)	नर	शस्त्र युक्त	मंगल
	(२)	पशु	मांद्य द्रेष्काण, घोड़े सदृश मुख,	सूर्य
	(३)	नर	दुष्ट द्रेष्काण शस्त्र युक्त	गुरु
२ वृष	(१)	स्त्री	रोयेदार द्रेष्काण	शुक्र
	(२)	नर	चौपाया	बुध
	(३)	नर	चौपाया	शनि
३ मिथुन	(१)	स्त्री		बुध
	(२)	नर	पक्षी द्रेष्काण–हथियार बन्द	शुक्र
	(३)	नर	हथियार बन्द	शनि
४ कर्क	(१)	नर	पशु	चन्द्र
	(२)	स्त्री		मंगल
	(३)	नर	मनुष्य, सर्प द्रेष्काण	गुरु
५ सिंह	(१)	नर	पशु पक्षी	सूर्य
	(२)	नर	हथियार बन्द	गुरु
	(३)	नर	पशु सायुध हथियार बन्द	मंगल
६ कन्या	(१)	स्त्री		बुध
	(२)	नर	सायुध	शनि
	(३)	नर		शुक्र
७ तुला	(१)	नर	मनुष्य	शुक्र
	(२)	नर	पक्षी	शनि
	(३)	नर	बन्दर की शकल का पशु	बुध
८ वृश्चिक	(१)	स्त्री	सर्प	मंगल
	(२)	स्त्री	सर्प	गुरु
	(३)	नर	चौपाया कछुआ की शकल, सिंह की शकल	चंद्र
९ धन	(१)	नर	चौपाया घोड़े का शरीर या देह	गुरु
	(२)	स्त्री		मंगल
	(३)	नर	सायुध	सूर्य

१० मकर	(१)	नर	पशु सांकल (बेड़ी) में जकड़ी	शनि
	(२)	स्त्री		शुक्र
	(३)	नर	सायुध	बुध
११ कुंभ	(१)	नर	गरुड़ पक्षी का स्वरूप	शनि
	(२)	स्त्री	रोयेदार	बुध
	(३)	नर		शुक्र
१२ मीन	(१)	नर	नाव चलाना	गुरु
	(२)	स्त्री	पुसज्जित	चन्द्र
	(३)	नर	सर्प	मंगल

द्रेष्काण का स्वरूप

द्रेष्काण के स्वरूप आगे बताये है इनका प्रयोजन यह है कि [illegible] द्रेष्काणों के रूप स्थान आदि चोर का रूप और चोरे हुए द्रव्य के स्थान आदि बताने के काम आता है।

नीचे प्रत्येक द्रेष्काण के स्वरूप आदि दिये हैं—

(१) मेष का

पहिला द्रेष्काण—पुरुष द्रेष्काण एवं उदित या आयुध द्रेष्काण। यह पाप ग्रह का द्रेष्काण है। इससे इसे अग्नि द्रेष्काण भी कहते हैं। कमर में श्वेत रंग का वस्त्र बँधा हुआ, स्याम रंग, शुभ वस्त्र, लोगों के कल्याण विषय व संरक्षण विषय में समर्थ, रूप भयंकर, लाल नेत्र। हाथ में कुल्हाड़ी या फरसा उठा कर कंधे पर धरा पृथ्वी पर रहता है। यह चौपाया द्रेष्काण भी है।

दूसरा द्रेष्काण—स्त्री रूप चौपाया द्रेष्काण है। लाल रंग का वस्त्र पहिने, भूषण और भोजन की चिन्ताकर्ता, घड़े कैसा पेट, घोड़े केसा मुख, प्यासी या पानी बहुत पिये, एक पैर से खड़ी या एक पैर से लंगड़ी, अग्नि कोण में जाती है।

तीसरा द्रेष्काण—आयुध द्रेष्काण है। विषम स्वभाव, अनेक प्रकार की कामना कला-कौशल जानने वाला, लाल वस्त्र पहिने, निरन्तर उद्यमी, वर्ण पिंगल, भूरे केश, सन्मुख हाथ से लाठी उठा कर रखता है या हाथ में डण्डा लिये, क्रोधी पुरुष, द्विपद स्वरूप, नियम भंग करने वाला।

(२) वृष का

पहिला द्रेष्काण—स्त्री द्रेष्काण, चतुष्पद, शुभ ग्रह का द्रेष्काण है। टेढ़े और छोटे सिर के बाल, घड़े के समान पेट, अग्नि से जले वस्त्र पहिने, नित्त प्यासी या बहुत पानी पीये, भोजन बहुत करे, भूषणों की इच्छा अधिक करे, भक्ति करे, भोजन बनावे ऐसी स्त्री।

दूसरा द्रेष्काण—चतुष्पद, सर्प द्रेष्काण, मिश्र द्रेष्काण है। खेती का काम, अन्न सम्हालने का काम, घर का काम, हल चलाना, गाड़ी बैल चलाना, गौ की रक्षा करने

वाला, गीत वाद्य नाच, लिखना, चित्र बनाना आदि कर्म जानने वाला, पंडित, बैल के समान कंधे या गर्दन, बहुत भूख, बकरे कैसा मुख, मलिन वस्त्र पहिने, पुरुष, चौपाया द्रेष्काण।

तीसरा द्रेष्काण—पुरुष द्रेष्काण चतुष्पद, पाप ग्रह का द्रेष्काण, हाथी के समान बड़ा स्थूल शरीर, श्वेत दांत, ऊँट के समान बड़े पैर, शरीर का रंग पिंगल (पीला), बकरे व मृगों के लोम में व्याकुल चित्त अर्थात् इनसे प्रेम, जंगल में रहना, चौपाया द्रेष्काण।

(३) मिथुन का

पहिला द्रेष्काण —स्त्री और चतुष्पद द्रेष्काण है। रूपवती स्त्री सिलाई का और कसीदे का काम जानने वाली, भूषणों से अति श्रद्धा अर्थात् भूषण पहिने, संतान रहित, दोनों भुजा उठाये रखे, ऋतुमती या अति कामी।

दूसरा द्रेष्काण—पक्षी द्रेष्काण है कवच पहिने, धनुष बाण लिये, वन बगीचे में खड़ा या रहना। शूरवीर, रणको प्यारा मानने वाला गरुड़ सरीखा मुख, अस्त्र विद्या यन्त्र विद्या (जादूगिरी) जानने वाला, क्रीड़ा (खेल) कर वाला, पुत्र, आभूषण और धन का चिंतन करने वाला पुरुष पक्षी द्रेष्काण।

तीसरा द्रेष्काण - पुरुष अग्नि क्रिया मिश्र द्रेष्काण है। बहुत आभूषण से भूषित, अनेक रत्नयुक्त कवच, धनुष बाण धारण कर्ता नाचने बजाने गाने में कुशल, कविता काव्य आदि रचने वाला पंडित, भ्रमण करने वाला, नर द्रेष्काण।

(४) कर्क

प्रथम द्रेष्काण—पुरुष द्रेष्काण, चतुपद, जल द्रेष्काण, पत्ते फूल फल इनको धारण करना या खाना, हाथी कैसा स्थूल शरीर, ऊँट कैसे लंबे पैर घोड़े कैसा गर्दन, सूकर जैसा मुख, वन विहारी या जंगल का वास, ऐसा पुरुष चतुष्पद द्रेष्काण।

दूसरा द्रेष्काण —मिश्र द्रेष्काण, स्त्री एवं सर्प द्रेष्काण, स्त्री सिर में कमल का फूल धारण करती, सर्प युक्त और वशी कठोर कर्कशा, जवानी भरी, बचपन में पलास की टहनी पकड़ कर खड़ी या पलास के पत्ते रखी हुई। एकान्त वासी।

तीसरा द्रेष्काण—पुरुष द्रेष्काण, सर्प द्रेष्काण, स्त्रियों के लिए आभूषण लाने को समुद्र में नाव पर बैठा व्यापार करे, सर्प अंग में धर कर चलता, सोने के आभूषण है, चपटा दुख।

(५) सिंह का

पहिला द्रेष्काण—पुरुष, उग्र, आयुध द्रेष्काण सेमर के वृक्ष पर एक गोध और एक स्याल (लड़िया) बैठा एक कुत्ता एक मनुष्य मैले वस्त्र पहिने मां बाप से रहित होने के वियोग से रो रहा है। यह नर द्रेष्काण, चौपाया और पक्षी है।

दूसरा द्रेष्काण—घोड़े कैसा पुष्ट शरीर शिर में गुलाबी रंग के फूल धरे काले

हिरन का चर्म ओढ़े व कम्मल लिये। सिंह के समान सहज में साध्य नहीं होता, धनुर्धारी नाक का अग्र भाग ऊँचा, पुराने कपड़े गुप्त वे पुरुष द्रेष्काण सागुध, चतुष्पद।

तीसरा द्रेष्काण—रीक्ष के समान कुरूप मुख, बानर के समान चेष्टा करे। दाढ़ी बड़ी, लाटी फल मांस धारण किये या भक्षण किये। सिर के केश मुड़ाये। पुरुष, और चतुष्पद द्रेष्काण, अग्नि द्रेष्काण है।

(६) कन्या का

पहिला द्रेष्काण—कुमारी, फूलों से भरा घड़ा सिर पर धरे, मलिन वस्त्र पहिने, वस्त्र और धन का संग्रह चाहती। गुरु की सेवा करती या गुरु कुल की ओर गमन करती स्त्री द्रेष्काण, मिश्र पक्षी द्रेष्काण।

दूसरा द्रेष्काण – श्याम रंग, हाथ में कमल का लेखनी लिये। सिर में पगड़ी बांधे आमदनी खर्च का गिन्ती करने वाला बहुत धन मिले खर्च भी करे। सर्वाङ्ग में रोम व्याप्त, बड़ा धनुष धारण किये। पुरुष द्रेष्काण, मिश्र, पक्षी द्रेष्काण।

तीसरा द्रेष्काण – गोरे रंग की स्त्री, सुन्दर स्वच्छ दुपट्टा ओढ़े लम्बा सरीर, घड़ा और करछुलो हाथ में लिये। सावधानी से मन्दिर जाने को तैयार हो रही। स्त्री द्रेष्काण, पक्षी द्रेष्काण।

(७) तुला का

पहिला द्रेष्काण—रास्ता बाजार में दूकान खोलकर तराजू हाथ में लिए पुरुष बैठा है नाप तौल में दक्ष सुवर्ण आदि द्रव्य के पात्रादिकों को तौल कर मोल बताता नर द्रेष्काण, जल और पक्षी द्रेष्काण भी है।

दूसरा द्रेष्काण—गीध पक्षी कैसा मुख, घड़ा लेकर गिरने को तैयार हो रहा, भूख और प्यास से व्याकुल पुरुष शरीर मन में भी स्त्री पुरुषों को याद कर रहा अन्य मत से घोड़े सरीखा मुख। नर द्रेष्काण, मिश्र, पक्षी द्रेष्काण।

तीसरा द्रेष्काण – पुरुष मणियों के अलंकार से भूषित। जंगल में मृगों को भय दिखाता, सोने का आभूषण धनुष, तरकस कवच लिये। फल और मांस धारण करता या भक्षण करता वानर सरीखा दिखने वाला पुरुष, चतुष्पद द्रेष्काण।

(८) वृश्चिक का

पहिला द्रेष्काण – स्त्री, वस्त्र पुष्पों से रहित, बड़े समुद्र के तीर आई अपने स्थान से भ्रष्ट, पैरों में सर्प लपटा, मनोहर सूरत, स्त्री व अग्नि और सर्प द्रेष्काण।

दूसरा द्रेष्काण—कछुवा या घड़े के समान सरीर स्त्री अपने पति के लिए स्थान सुख चाहती, शरीर में सर्पाकार चिन्ह या पति के लिए शरीर पर सर्प धारण करे, मिश्र, स्त्री और सर्प द्रेष्काण।

तीसरा द्रेष्काण—बड़ा और चिपटा सा मुख कछवे के मुख के समान, कुत्ता, हरिण, स्यार, सूकर इनको डरवाने वाला हाथ में लन्दन लगाया या चन्दन के उत्पत्ति स्थान का रक्षक मित्र द्रेष्काण, पुरुष चतुष्पद।

(९) धनु का

पहिला द्रेष्काण—मनुष्य केसा मुंह, घोड़े केसा शरीर, बड़ा धनुष धारण किये, आश्रम में बैठा, यज्ञ के उपयोगी श्रुव आदि पात्र और यज्ञ करने वाले तपस्वियों की रक्षा करना पुरुष, मिश्र, उदित (पक्षी) द्रेष्काण।

दूसरा द्रेष्काण—मन को रमण करने वाली कांति, चम्पा के पुष्प या सुवर्ण सरीखी, भद्रासन पर बैठी। अति सुन्दर भी नहीं मध्यम रूप, समुद्र के रत्न धारण करने वाली स्त्री। मिश्र द्रेष्काण, स्त्री व धनुष द्रेष्काण।

तीसरा द्रेष्काण—दाढ़ीवाला पुरुष मूछें बड़ी, सोना या चम्पा पुष्प के समान कांति, श्रेष्ठ आसन सिंहासन कुरसी आदि में बैठा हुआ। लाठी हाथ में लिये, कूसुम्बी वस्त्र पहिने मृग चर्म धारण किये। मिश्र, पुरुष व आयुध द्रेष्काण।

(१०) मकर का—पहिला द्रेष्काण—सर्वांग में दोष व्याप्त, मगर सरीखे दाँत, सुअर सरीखी देह, खेती करे बैल जोते, जाल, फांसी, वेड़ी आदि लिये, भयानक मुख, मिश्र, पुरुष व चतुष्पद द्रेष्काण।

दूसरा द्रेष्काण—सम्पूर्ण कला जानने वाली चतुर, कमल सदृश नेत्र। स्याम रंग की अनेक वस्तु को ढूँढ़ती, भूषणों से सजी कान में लोहा का भूषण पहिनी। जल द्रेष्काण, स्त्री व चतुष्पद द्रेष्काण।

तीसरा द्रेष्काण—किन्नर सरीखी योनि, घोड़े कैसा मुख, उनके सरीखा शरीर, कम्बल धारी, कवच धनुष माला लिये। रत्न सहित घड़ा कंधे पर रखा, सायुध पुरुष द्रेष्काण, मिश्र व चतुष्पद द्रेष्काण।

(११) कुम्भ का—पहिला द्रेष्काण—तेल व शराब पिये, जल-भोजन मिलने के लिये अन्तःकरण दुःखी। कम्बल ओढ़े, रेशमी वस्त्र व मृग चर्म धारण करना, गीध सरीखा मुख, अग्नि द्रेष्काण, पुरुष व आयुध द्रेष्काण।

दूसरा द्रेष्काण—स्त्री जलती गाड़ा पर बैठी, सेमल के वृक्ष के पास, लोहा लिये, वन में मैले वस्त्र पहिने, वर्तन सिर में धरे, मिश्र, सात्विक स्त्री द्रेष्काण, आयुध द्रेष्काण।

तीसरा द्रेष्काण—स्याम वर्ण, कानों में बाल जमे हुए, सिर में किरीट (मुकुट) धारण किये। लोहे के पात्र में वृक्ष की लाल, पत्ते गोंद तेल और फल को रखे, एक स्थान से दूसरे स्थान ले जाना, पुरुष, आयुध द्रेष्काण।

(१२) मीन का—पहिला द्रेष्काण—स्रुवादि यज्ञ पात्र सामान मोती मणि शंख सब हाथ में लिये, भूषण पहिने स्त्री के भूषणों के निमित्त, समुद्र में नाव आदि में बैठा जा रहा। पुरुष द्रेष्काण, आयुध द्रेष्काण।

दूसरा द्रेष्काण—ऊँची ध्वजा वाले जहाज में बैठकर कुटुम्ब सखी जनों के लेकर समुद्र के तीर चल रही। चम्पा पुष्प के समान मुख की पांति, जल स्त्री व आयुध द्रेष्काण।

तीसरा द्रेष्काण—खाई के समीप रहे, सर्प देह में धरे, बिना वस्त्र के अर्थात् नंगा

पुरुष वन में चोर और अग्नि के भय से मन में व्याकुल हो रहा। अग्नि द्रेष्काण, पुरुष, सर्प द्रेष्काण।

द्रेष्काण में चन्द्र का फल

जन्म में चन्द्र का फल द्रेष्काण अनुसार विचारना

(१) चन्द्र अपने या तात्कालिक मित्र के द्रेष्काण में हो तो—रूप गुण अच्छे हों।

चन्द्र सम द्रेष्काण में हो—गुण मध्यम।

चन्द्र शत्रु द्रेष्काण में हो—गुण रूप से हीन।

चन्द्र सर्प द्रेष्काण में हो उग्र स्वभाव।

चन्द्र उद्यत आयुध द्रे० में हो—प्राण घात के लिये हथियार उठाये रहे।

चन्द्र चौपाया द्रेष्काण में—गुरुजन की स्त्री गमन करना।

चन्द्र अंडज (पक्षी) द्रे० में हो—फिरने वाला।

जहाँ जहाँ अपने द्रेष्काण और सर्प द्रेष्काण में भी हो तो दोनों फल हों।

द्रेष्काण के अनुसार चन्द्र का फल

(१) मेष के पहिले द्रे० में चन्द्र हो—लोगों का घातक हो। यदि मित्र द्रेष्काण हो तो सुन्दर तेजस्वी।

दूसरे द्रे० में चन्द्र हो—सुन्दर, तेजस्वी, गुरुजन की पत्नी से रमण करने वाला।

तीसरे द्रे० में चन्द्र हो—पहिले द्रेष्काण के अनुसार फल।

(२) वृष के पहिले द्रे० में चन्द्र हो—गुरु स्त्रियों से गमन करता, शुक्र दृष्टि हो तो शुभ फल।

दूसरे द्रे० में चन्द्र हो—गुरु स्त्रियों में पाप बुद्धि।

तीसरे द्रे० में चन्द्र हो—लोगों का घात करने वाला।

(३) मिथुन के पहिले द्रे० में चन्द्र हो—पुरुष सुन्दर तेजस्वी।

दूसरे द्रे० में चन्द्र हो—गुणहीन, परिभ्रमण करने वाला।

तीसरे द्रे० में चन्द्र हो—रूप व गुण कम हो।

(४) कर्क के पहिले द्रे० में चन्द्र हो—सुन्दर व तेजस्वी।

दूसरे द्रे० में चन्द्र हो—उग्र स्वभाव।

तीसरे द्रे० में चन्द्र हो—सुन्दर हो पर उग्र हो।

(५) सिंह के पहिले द्रे० में चन्द्र हो—हिंसा करने वाला, सुन्दर तेजस्वी।

दूसरे द्रे० में चन्द्र हो—सुन्दर हो, परस्त्री से गमन करे।

तीसरे द्रे० में चन्द्र हो—परस्त्रियों से गमन करे, उग्र हो।

(६) कन्या के पहिले द्रे० में चन्द्र हो—परिभ्रमण करे।

दूसरे द्रे० में चन्द्र हो—परिभ्रमण करे।

तीसरे द्रे० में चन्द्र हो – भ्रमण करे, दुर्गति हो ।

(७) तुला के पहिले द्रे० में चन्द्र हो – कोमल हो, भ्रमण करे ।
दूसरे द्रे० में चन्द्र हो—निस्तेज हो, भ्रमण करे ।
तीसरे द्रे० में चन्द्र हो—सुन्दर हो, परस्त्री पर लक्ष करे ।

( ) वृश्चिक के पहिले द्रे० में चन्द्र हो – उग्र हो ।
दूसरे द्रे० में चन्द्र हो - सुन्दर. गुणवन् हो, उग्र हो ।
तीसरे द्रे० में चन्द्र हो—सुदर तेजस्वी हो, परस्त्री से गमन करे ।

(९) धन के पहिले द्रे० में चन्द्र हो – तेजस्वी हो, हिंसा करने वाला हो ।
दूसरे द्रे० में चन्द्र हो उग्र हो ।
तीसरे द्रे० में चन्द्र हो – सुन्दर हो हिंसा करने वाला हो ।

(१०) मकर के पहिले द्रे० में चन्द्र हो—गुरु पत्नी से गमन करे ।
दूसरे द्रे० में चन्द्र हो—परस्त्री से गमन करे ।
तीसरे द्रे० में चन्द्र हो—आपस वाले की स्त्री से संग हो ।

(११) कुंभ के पहिले द्रे० में चन्द्र हो—लोगों का घात करने वाला ।
दूसरे द्रे० में चन्द्र हो—लोगों का घात करने वाला ।
तीसरे द्रे० में चन्द्र को—लोगों का घात करने वाला ।

(१२) मीन के पहिले द्रे० में चन्द्र हो—घात करने वाला ।
दूसरे द्रे० में चन्द्र हो—सुन्दर हो, घात करने वाला ।
तीसरे द्रे० में चन्द्र हो—उग्र हो ।

द्रेष्काण का विशेष फल विचार

(१) द्रेष्काण में उच्च या स्ववर्ग के सौम्य ग्रह हों—वर देने वाली सत्य वादिनो लक्ष्मी का भोग करवाते हैं ।

(२) स्व द्रेष्काण में सौम्य ग्रह त्रिकोण या केन्द्र में बली होकर पड़े—द्रव्य का संचय करने वाला, मान तथा गुण से युक्त, विद्यावान्, कलाओं में चतुर ।

(३) द्रेष्काणेश शुभ ग्रह की राशि का बैठा हो या शुभ ग्रह या शुक्र से दृष्ट हो—अनेक प्रकार का सौख्य, आरोग्य, मान, यश की वृद्धि, स्वदेश के हित के कार्य करने से संसार में विख्यात किन्तु दूसरी समस्याओं के विरुद्ध रहे ।

(४) द्रेष्काणेश चन्द्र से युत या दृष्ट या मंगल से दृष्ट या शुक्र युत या दृष्ट— उसकी आयु के प्रमाणानुसार कर्म फलता है, धर्म के निमित्त, अनेक प्रकार से धन प्राप्त होता है ।

(५) द्रेष्काणेश उच्च में रहते केन्द्र में हो – राजा हो ।
द्रेष्काणेश स्वक्षेत्री हो पूर्ण धन युक्त ।
द्रेष्काण मित्र गृही हो – सन्मान युक्त ।
द्रेष्काणेश पणफर में मित्र क्षेत्री उच्च का–अच्छे मित्र सहित, राजा सदृश धनी ।

द्रेष्काणेश आपोक्लिम में मित्र गृही या स्वगृही—संतति सदाचार युक्त हो, सुबोध हो, खेती से धन प्राप्त करे।

(६) शत्रु या नीच घर में जितने ग्रह हों उसी तुल्य जन्म लग्न में भी हों—उसी के अनुसार देह में व्रण या चोट लगने का योग हो।

वह ग्रह जिस राशि में हो—उसी राशि तुल्य शरीर में चोट से व्रण होता है।

(७) द्रेष्काणेश अपने वर्ग में हो या शुभ ग्रह युक्त हो या अपने उच्च या मित्र घर में हो यदि उदित त्रिशांश, द्वादशांश या होरा (लग्न) का स्वामी बली होकर उक्त स्थान में हो तो अच्छे गुण प्राप्त हों, सदा पवित्र रहे, प्रवीण, दयावान्, धनवान्, संतान युक्त, कीर्तिमान्, दीर्घायु और राजा सरीखा हो।

(८) चन्द्र स्व या मित्र द्रेष्काण में हो—तो जातक, सतगुणी हो, देखने में सुन्दर हो, चन्द्र उत्तम वर्ग में हो तो भाग्यवान् हो।

यदि कोई दूसरे स्थान में हो तो जातक को वह गुण देवे जो उस ग्रह के हों जिसके साथ चन्द्र पैदा हो।

(९) जो ग्रह स्व द्रेष्काण में हो तो उसका कारक ग्रह उसे सब फल देगा।

(१०) ग्रह अपने स्व या उच्च के घर में हो उसी समय मित्र ग्रह से युक्त या दृष्ट हो तो वह धन युक्त राजा हो।

(११) द्विस्वभाव राशि में द्रेष्काण—क्रमानुसार अधमा, मध्यमा, उत्तमा।

चर राशि में द्रेष्काण - उल्टा क्रम—उत्तमा, मध्यमा, अधमा।

स्थिर राशि मे द्रेष्काण—अच्छा बुरा मिश्रित फल होगा।

सप्तमांश फल

(१) सप्तमांशेश चन्द्र युक्त या दृष्ट हो या सौम्य ग्रह से दृष्ट हो—सहोदर भाइयों से युक्त, बढ़ती कांति, यश, उत्तम मित्र, अति प्रगल्भ।

(२) सप्तमांशेश सूर्य रहित जितने ग्रह नीच में बैठे हों उनमें जो सबसे बली हो—उसी के अनुसार उसका भाइयों के निमित्त से चिन्ता युक्त स्थिति होती है।

(३) सप्तमांशेश उच्च में या शुभ वर्ग में हो—राजा सम पूज्य, सब कार्यों में सफलता पावे, धन से अति सम्पन्न हो।

(४) सप्तमांश में सहज भाव में सूर्य, गुरु या मंगल हो—तो अधिक लक्ष्मी को प्राप्त, मित्र की मृत्यु के पश्चात् उसके पुत्र जन्मे हों।

(५) युक्त स्थान में शुक्र, बुध या चन्द्र हो—कन्या का जन्म होता है।

(६) स्व सप्तमांश में सभी ग्रह उच्च में हों—महा धनी हो।

स्व सप्तमांश में सभी नीच क्षेत्र में हों - दरिद्री हो।

(७) सप्तमांशेश—पाप ग्रह होकर पाप ग्रह के सप्तमांश में—वे क्रूर (दुष्ट) होते हैं, बुरा फल देते हैं।

शुभ ग्रह होकर शुभ ग्रह के सप्तमांश में—उत्तम फल देते हैं।
मित्र ग्रह हो तो —मिश्र फल देते हैं।

नवांश फल

राशियों के भिन्न-भिन्न नवांश का फल

१—मेष लग्न में

(१) पहिला नवांश हो—चोरों का स्वामी, मुखिया अधिकारी हो। इस पर मंगल की दृष्टि हो तो शुभ फल हो व परस्त्री पर प्रेम करे।
(२) नवांश हो - उपभोग करने वाला
(३) नवांश हो - पंडित हो।
(४) नवांश हो मुख्य मालिक हो।
(५) नवांश हो—राजा हो।
(६) नवांश हो नपुंसक हो।
(७) नवांश हो शूर हो।
(८) नवांश हो हम्माल आदि हो।
(९) नवांश हो—चाकर हो।

२—वृष लग्न में

(१) नवांश—नाना प्रकार का पाप करे।
(२) नवांश--हिंसा करे।
(३) नवांश—ढ़ीठ व निर्भय।
(४) नवांश चोर हो।
(५) नवांश—भाइयों में प्रसिद्ध।
(६) नवांश पंडित हो।
(७) नवांश—घर में स्वामी हो।
(८) नवांश—राजा प्रमाण हो।
(९) नवांश—नपुंसक हो।

३—मिथुन में

(१) नवांश में—शूरवीर हो।
(२) नवांश में—हम्माल हो।
(३) नवांश में—चाकर हो।
(४) नवांश में—पाप करने वाला।
(५) नवांश में—घातकी।
(६) नवांश में ढीठ।
(७) नवांश में—चोर।
(८) नवांश में—उपभोग कर्त्ता।
(९) नवांश में—पंडित।

४ कर्क लग्न का नवांश फल

(१) नवांश मालिक हो।
(२) नवांश—राजा हो।
(३) नवांश - नपुंषक हो।
(४) नवांश—शूर हो।
(५) नवांश - हम्माल हो।
(६) नवांश—चाकर हो।
(७) नवांश - पापी हो।
(८) नवांश—घातकी हिंसक।
(९) नवांश—ढ़ीठ, चोर।

५—सिंह लग्न का नवांश फल

(१) नवांश - चोर।
(२) नवांश—भोक्ता।
(३) नवांश—पंडित।
(४) नवांश—स्वामी।
(५) नवांश—राजा।
(६) नवांश—नपुंसक।
(७) नवांश - शूर।
(८) नवांश—हम्माल।
(९) नवांश—चाकर।

६—कन्या लग्न के नवांश का फल

(१) नवांश—पापी।
(२) नवांश--घातकी।
(३) नवांश ढीठ।
(४) नवांश—चोर।

(५) नवांश – भोक्ता ।
(६) नवांश— पंडित ।
(७) नवांश—मालिक ।
(८) नवांश—राजा ।
(९) नवांश –नपुंसक ।

७ – तुला लग्न के नवांश का फल

(१) नवांश – शूर ।
(२) नवांश —मजदूर ।
(३) नवांश चाकर ।
(४) नवांश —पापी ।
(५) नवांश—घातकी ।
(६) नवांश—ढीठ ।
(७) नवांश – चोर ।
(८) नवांश भोक्ता ।
(९) नवांश—पंडित ।

८— वृश्चिक लग्न के नवांश का फल

(१) नवांश – मालिक ।
(२) नवांश—राजा ।
(३) नवांश –नपुंसक ।
(४) नवांश –शूर ।
(५) नवांश – मजदूर ।
(६) नवांश – चाकर ।
(७) नवांश—पापी ।
(८) नवांश –घातकी ।
(९) नवांश—धैर्यवान् ।

९—धन लग्न के नवांश का फल

(१) नवांश—चोर ।
(२) नवांश –भोक्ता ।
(३) नवांश – पंडित ।
(४) नवांश—स्वामी ।
(५) नवांश—राजा ।
(६) नवांश—नपुंसक ।
(७) नवांश – शूर ।
(८) नवांश हम्माल ।
(९) नवांश—चाकर ।

१०—मकर के नवांश का फल

(१) नवांश—पापी ।
(२) नवांश – घातकी ।
(३) नवांश—धैर्यवान् ।
(४) नवांश - चोर ।
(५) नवांश—भोक्ता ।
(६) नवांश—पंडित ।
(७) नवांश –मालिक ।
(८) नवांश – राजा ।
(९) नवांश—नपुंसक ।

११— कुंभ के नवांश का फल

(१) नवांश – शूर ।
(२) नवांश मजदूर ।
(३) नवांश —चाकर ।
(४) नवांश – पापी ।
(५) नवांश – घातकी ।
(६) नवांश धैर्यवान् ।
(७) नवांश—चोर ।
(८) नवांश –भोक्ता ।
(९) नवांश—पंडित ।

१२— मीन लग्न के नवांश का फल

(१) नवांश – स्वामी ।
(२) नवांश—राजा ।
(३) नवांश—नपुंसक ।
(४) नवांश—शूर ।
(५) नवांश – मजदूर ।
(६) नवांश – चाकर ।
(७) नवांश पापी ।
(८) नवांश—घातकी ।
(९) नवांश धैर्यवान् ।

टिप्पणी कुंभ लग्न का कुंभ नवांश या द्वादशांश हो तो–विशेष बुरा फल होता है

चन्द्र का नवांश फल

(१) मेष लग्न–में चन्द्र यहाँ बताये नवांश में किसी नवांश में हो परन्तु निम्न ग्रहों की दृष्टि हो तो उसका फल—

(१ सूर्य की दृष्टि हो–नगर का रक्षक।
(२) मगल की दृष्टि हो–घातक।
(३) बुध की दृष्टि हो–कलहकारी।
(४) गुरु की दृष्टि हो–राज्य का कार्यकारी।
(५) शुक्र की दृष्टि हो–जिमीदार।
(६) शनि की दृष्टि हो–कलहकारी।

(२) वृष लग्न–के किसी नवांश पर चंद्र हो तो ग्रहों को दृष्टि का फल —
(१) सूर्य की दृष्टि हो–मूर्ख।
(२) बुध की दृष्टि हो–काव्य करे।
(३) शुक्र की दृष्टि हो–सुखी।
(४) गुरु की दृष्टि हो–शास्त्र पढ़े।
(५) मंगल की दृष्टि हो–पर स्त्री रत।
(६) शनि–पर स्त्री रत।

( ) मिथुन लग्न-के किसी नवांश में चंद्र हो उस पर ग्रह दृष्टि का फल—
(१) सूर्य की दृष्टि हो–कुश्ती खेले।
(२) मंगल की दृष्टि हो–चोरी करे।
(३) बुध की दृष्टि हो–कविता करे।
(४) गुरु की दृष्ट हो–कार्य भारी हो।
(५) शुक्र की दृष्टि हो–गायन करे।
(६) शनि की दृष्टि हो–बढ़ई हो (शिल्पी)।

(४) कर्क लग्न–में किसी नवांश पर चन्द्र हो तो उस पर यह दृष्टि फल –
(१) सूर्य की दृष्टि हो–दुबला।
(२) बुध की दृष्टि हो–तपस्वी।
(३) मंगल की दृष्टि हो–कृपण।
(४) गुरु की दृष्टि हो-मंत्री।
(५) शुक्र की दृष्टि हो–स्त्री पालन करे।
(६) शनि की दृष्टि हो–कार्य साधे।

(५) सिह लग्न–के किसी नवांश पर चंद्र हो उस पर ग्रह दृष्टि का फल —
(१) सूर्य से दृष्ट–क्रोधी।
(२) मंगल से दृष्ट–राजा को प्रिय।
(३) बुध से दृष्ट–गड़ा द्रव्य लाभ।
(४) गुरु से दृष्ट–सब पर हुकूमत करे।
(५) शुक्र से दृष्ट–पुत्र न हो।
(६) शनि से दृष्ट–घातकी।

(६) कन्या लग्न–में किसी नवांश पर चंद्र हो उस पर ग्रह दृष्टि फल –
(१) सूर्य से दृष्ट–कुश्ती खेले।
(२) मंगल से दृष्ट–चोरी करे।
(३) बुध से दृष्ट–कविता करे।
(४) गुरु से दृष्ट–प्रधान हो।
(५) शुक्र से दृष्ट–गायन करे।
(६) शनि से दृष्ट–बढ़ई का काम करे।

(७) तुला लग्न–के किसी नवांश में चंद्र हो उस पर ग्रह दृष्टि का फल—
(१) सूर्य से दृष्ट- मूर्ख।
(२) मंगल से दृष्ट–पर स्त्री प्रेम।
(३) बुध से दृष्ट–काव्य करे।
(४) गुरु से दृष्ट–शास्त्र पढ़े।
(५) शुक्र से दृष्ट–सुखी।
(६) शनि से दृष्ट–दूसरी स्त्री तक जावे।

(८) वृश्चिक लग्न–के किसी नवांश में चन्द्र हो उस पर ग्रह दृष्टि का फल—
(१) सूर्य से दृष्ट–नगर रक्षक।
(२) मंगल से दृष्ट घातकी।
(३) बुध से दृष्ट–लड़ाई करे (कलह)।

(४) गुरु से दृष्ट–राजा हो।
(५) शुक्र से दृष्ट–जिमीदार हो।
(६) शनि से दृष्ट–कलहकारी।

(९) धन लग्न—के किसी नवांश में चन्द्र हो उस पर इन ग्रहों को दृष्टी का फल —

(१) सूर्य से दृष्ट–बलवान्।
(२) मंगल से दृष्ट–युद्ध सिखावे।
(३) बुध से दृष्ट–ठट्ठा करे।
(४) गुरु से दृष्ट–मन्त्री।
(५) शुक्र से दृष्ट–नपुंसक।
(६) शनि से दृष्ट–धर्म बुद्धि हो।

(१०) मकर लग्न–के किसी नवांश में चंद्र हो उस पर ग्रह दृष्टि का फल —

(१) सूर्य से दृष्ट–थोड़ी संतति।
(२) मंगल से दृष्ट–दुःखित।
(३) बुध से दृष्ट–गर्विष्ठ।
(४) गुरु से दृष्ट–स्वकुल प्रमाण।
(५) शुक्र से दृष्ट–बुरी स्त्री का संग।
(६) शनि से दृष्ट–कृपण हो।

(११) कुभ लग्न–के किसी नवांश में चन्द्र हो उस पर ग्रह दृष्टि का फल—

(१) सूर्य से दृष्ट–संतति थोड़ी।
(२) मंगल से दृष्ट दुःखित।
(३) बुध से दृष्ट–गर्विष्ठ।
(४) गुरु से दृष्ट–स्वकुल प्रमाण।
(५) शुक्र से दृष्ट–बुरी स्त्री का संग।
(६) शनि से दृष्ट–कृपण हो।

(१२) मीन लग्न–के किसी नवांश में चन्द्रहो उप पर ग्रह दृष्टि का फल—

(१) सूर्य से दृष्ट–बलवान्।
(२) मंगल से दृष्ट–युद्ध सिखावे।
(३) बुध से दृष्ट–ठट्ठा करे।
(४) गुरु से दृष्ट–मंत्री हो।
(५) शुक्र से दृष्ट–नपुंसक हो।
(६) शनि से दृष्ट–धार्मिक हो।

लग्न के किसी भी नवांश में चन्द्र हो उस चन्द्र पर सूर्य आदि ग्रहों की दृष्टि का फल दे चुके हैं उसी के अनुसार यदि चन्द्र किसी भी ग्रह को देखता हो तो वह ग्रह उस लग्न के नवांश में जो हो उसका फल वही होगा जो उस नवांश मे चन्द्र होने पर चन्द्र की दृष्टि का फल बताया है।

नवांश की राशि अनुसार फल

(१) जन्म मेष नवांश में हो–चोर हो।
(२) जन्म वृष नवांश में हो–भोगवान्।
(३) जन्म मिथुन नवांश में हो–पंडित।
(४) जन्म कर्क नवांश में हो–धनवान्।
(५) जन्म सिंह नवांश मे हो–राजा।
(६) जन्म कन्या नवांश में हो–नपुंसक।
(७) तुला नवांश में जन्म–शूरमा।
(८) वृश्चिक नवांश में जन्म–बिना पैर भार ढ़ोवे।
(९) धन नवांश में जन्म–दास।
(१०) मकर नवांश में जन्म–पापी।
(११) कुंभ नवांश में जन्म–क्रूर स्वभाव।
(१२) मीन नवांश में जन्म–निर्भय।

उपरोक्त फल केवल नवांश का है।

इन योगों में वर्गोत्तम हो तो उपरोक्त का राजा होता है।

जैसे मेष लग्न में मेष नवांश हो तो वर्गोत्तम होने से —चोरों का राजा होगा।

जैसे वृष लग्न में वृष नवांश हो तो वर्गोत्तम होने से – योगियों का राजा इत्यादि।

ग्रह के नवांश में जन्म का फल

१—सूर्य के नवांश में—दुष्टात्मा, बलवान्, पुत्रवान्, धनवान्, कामी, पीतनेत्र।

२—चन्द्र के नवांश में—भोग करने में दक्ष, परस्त्री विलास, गौ वंश और धन से पूर्ण, पंडित।

३—मंगल के नवांश में—क्रूरकर्मी, चञ्चलबुद्धि, घूमनेवाला, पित्तरोगी, लोभी।

४—बुध के नवांश में – त्यागी, रोगी, ललित शरीर, नामी विद्वान्, यशस्वी।

५ - गुरु के नवांश में सुवर्ण के सदृश बाल, शरीर श्रेष्ठ, रूपवान्, मंत्री।

६—शुक्र के नवांश में—पर स्त्री गामी, त्यागी, सुखी, पंडित।

७—शनि के नवांश में – पाप बुद्धि, दरिद्र, स्थूल दांत, रोगवान्।

गुरु स्वनवांश में हो—उत्तम मित्र, स्त्रीधन से सुखी, श्रेष्ठ प्रतिष्ठ, सुख सम्पत्ति पूर्ण।

गुरु नवांश में चन्द्र अनेक धन सम्पन्न, पुत्रों से युक्त, पुण्य धन से युक्त, अतिथि प्रिय, सबको आनन्द देने वाला।

गुरु नीच नवांश में हो सेवा वृत्ति से अपनी आजीविका चलाने वाला।

नवांश का और भी फल विचार

(१) लग्न और नवांश आरम्भ में पूर्ण फल देते हैं।
मध्य में मध्यम ,, ,,
अन्त में अशुभ ,, ,,

(२) सौम्य ग्रह या मित्र ग्रह के अंश – शुभ होते हैं।
पाप ,, ,, शत्रु ,, ,, – अशुभ ,,

(३) सूर्य शनि मंगल के नवांश सब शुभ कर्मों में वर्जित है।
शुभ ग्रहों के नवांश शुभ हैं शेष कुनवांश हैं।

(४) भावेश ग्रह नीच नवांश में – नीच स्त्री वाला।
,, उच्च ,, – राजा
,, स्वनवांश में – कुल समूह का स्वामी हो।
,, मित्र नवांश में – सेनापति तथा भोग और गुणों से सम्पन्न।
,, शत्रु ,, – दुःखित और अति मलिन।

(५) अपने उच्च या स्वार्थ में होकर उच्च आदि वाहनों में कुशल।
ग्रह अन्त नवांश में हो – शूरवीर, बंधु रहित।

(६) पंचम में मंगल और चतुर्थ में गुरु = तो १, ३ या ५ पुत्र हों।
नवांश कुण्डली में पंचम भाव में बुध शुक्र शनि हों=२, ४, ६ या ७ पुत्र हों।

(७) लग्न से तीसरे घर में सिंह राशि हो पंचम में गुरु केतु हो } इन योगों में
लग्न से छठे घर में शनि, सप्तम में सूर्य, केन्द्र में राहु और } संतानहीन हो।
दशम में मंगल हो।

(८) व्ययेश ग्रह क्रूर हो वह ९, ६, ३ या १२ घर में हो ८ या ५ घर में केतु हो = पुत्र हो होकर मरे।

(९) जितने पुरुष ग्रह बली होकर लग्न से पंचम में हों या पंचम को देखें = उतने पुत्र हों।

(१०) चन्द्र, शुक्र और बुध से युक्त या दृष्ट पंचम घर में हो = कन्या होती है।

(११) पंचम ग्रह पूर्ण बली शनि से युक्त या दृष्ट हो = गर्भपात हो।

ये सब नवांश कुण्डली से विचारना।

मतांतर—उक्त बातें चन्द्र के नवांश से विचारना।

नवांश के अनुसार धातु मूल जीव संज्ञा

विषम राशि में प्रथम नवांश से आरम्भ होकर धातु मूल जीव से ३ आवृत्ति होती हैं।

सम ,, ,, ,, ,, जीव मूल धातु से ,, ,,

परमोच्च नवांश--उच्च नवांश को ही परमोच्च नवांश समझो। क्योंकि कोई ग्रह उच्च में हो उसे परमोच्च नवांश में लाने को उसका उच्च स्थान ही बदल जाता है।

द्वादशांश का फल

किसी राशि के द्वादशांश का कोई क्रम हो उस द्वादशांश में जो राशि आवे उस राशि के फल के समान सभी राशियों के द्वादशांश के फल होंगे जैसे यहाँ बताया गया है। मेष लग्न में प्रत्येक द्वादशांश का फल--

(१) पहिला द्वादशांश (मेष)—नेत्र लाल, गोल, भोजन में उष्ण पदार्थ प्रिय, अल्प भोजन, जल्दी खाये, प्रसन्न कीर्ति, अल्प मैथुन, बहुत धन न हो, शूरवीर, स्त्रियों का प्रिय, नौकरी करे, खुशामदी, मस्तक में फोड़ा, गर्विष्ट, सबमें श्रेष्ठ, अति चपल, जल से भय करे, हाथ में चिह्न।

(२) दूसरा द्वादशांश (वृष)—सुन्दर, विलास कर गमन करे, जांघ के ऊपरी भाग, मुँह, पीठ का भाग व छाती के दोनों बाजू मोटे हों, दयालु, क्लेश सहन करने वाला, मुख्य अधिकारी, अधिक कन्या हों, कफ प्रकृति, लोकप्रिय, क्षमाशील, बहुत खाने वाला, स्त्री प्रिय, बहुत मित्र हों, बाल्यपन में दुःखी, तरुणपन, और वृद्धावस्था में सुखी, बंधु, धन, कुटुम्ब नहीं रहे।

(३ तीसरा द्वादशांश (मिथुन)—स्त्रियों का अभिलाष करे, कोक शास्त्र में प्रवीण, लाल नेत्र, कुंचित केश, चतुर, शास्त्र जानने वाला, नौकरी करे, बुद्धिमान्, लोगों का इशारा जाने, जुआड़ी, सुन्दर शरीर मधुर भाषण, अधिक भोजन करे, गीत नृत्य प्रिय, नपुंसक की संगति, नाक ऊँची और लम्बी।

(४) चौथा द्वादशांश (कर्क)—कुटिल, जल्दी चलने वाला, स्त्रियों के कहने में रहे, उत्तम मित्र, ज्योतिष का ज्ञान हो, बहुत घर फिरने वाला, भ्रमण, द्रव्य नाश, ठिगना, गला बड़ा, मीठी बोली से वश करने वाला, मित्रों का प्रिय, जलाशय या बगीचे में फिरे। कूल्हा बड़ा।

(५) पञ्चम द्वादशांश (सिंह) –अधार्मिक, क्रोधी, ठुड्डी गाल व मुँह बड़ा, पिंगट नेत्र, अल्प संतति, स्त्री का द्वेषी, मांस, बन और पर्वत का प्रेमी, नौकरों की बात पर क्रोध करे, असायमिक भूख व तृष्णा के कारण पेट दाँत को पोड़ा होवे, दाता व पराक्रमी, स्थिर बुद्धि गर्विष्ट मातृभक्त माता के कहने में रहे।

(६) षष्ठ द्वादशांश (कन्या)—उत्तम शरीर, गम्भीर, लज्जालु, शीतल दृष्टि, सुखी, प्रिय बोलने वाला, सत्य वक्ता, धार्मिक, परमार्थ सम्बन्धी बात करे, सूक्ष्म देह, नृत्य, गीत, वाद्य व चित्रकारी में कुशल, पंडित, बुद्धिमान्, काम साधने में तत्पर, परदेश भ्रमण, दूसरों से द्रव्य मिले, बहुत कन्या, पुत्र अल्प।

(७) सप्तम द्वादशांश (तुला) – देव ब्राह्मण साधु सन्त को मान देवे। गई बात स्मरण करे, बुद्धिमान्, विचारशील, लोगों के धन की इच्छा करे, शुद्ध, अग्निहोत्र करे, स्त्री वश, अधिक ऊँचा, नाक ऊँचो, दुबला, चञ्चल स्वभाव, अति भ्रमण, धन युक्त, अङ्गहीन हो, क्रय-विक्रय करने में कुशल, बड़ी पदवी पावे, सभ्य, रोगी, कुटुम्ब पर उपकार करे, बांधवों से निंद्य, व धुजनों को त्याग दे।

(८) अष्टम द्वादशांश (वृश्चिक) नेत्र व छाती बड़ी, गोल जाँघ, माँ बाप गुरु इनको शिक्षा में रहे, संतान से दुःखी, राज दरबार में मान व महत्त्व, पिंगट वर्ण, बुरा स्वभाव, गुप्त पापी, मछली या पक्षी द्वारा कहीं भी चिह्न हो।

(९) नवम द्वादशांश (धन) – मुँह व गर्दन लम्बी, बाप का बहुत धन हो, दयालु, कवि, अच्छा बोलने वाला, दाँत, कान व नाक बड़े, कार्य साधन मे उद्योगी, कुबड़ा, लम्बे नख, लिखने पढ़ने का ज्ञान हो, पुस्तक बाँधने व चित्रकारी का ज्ञान हो, प्रौढ़, धार्मिक प्रिय बोली बोले, बन्धुओं का द्वेष करे।

(१०) दशम द्वादशांश मकर)– स्त्री पुत्र पर बहुत प्रेम, दांभिक, अन्ध, कृश, कमर के पास दुर्बल, छोटी कमर, नेत्र उत्तम, सबकी सुनने वाला, सबका प्रिय आलसी, शीत सहन करे, परिभ्रमण करे, बलिष्ट, काव्य का करने वाला, विद्वान्, लोभी, जहाँ न जाना हो वहाँ जावे, निर्लज्ज, निर्दय।

(११) एकादश द्वादशांश (कुम्भ) – चूहे सरीखी गर्दन, अङ्गों पर बहुत नसें, कड़े केश, ऊँचा शरीर, पैर, जाँघ, जाँघ के ऊपर का भाग और पीठ का भाग लम्बा हो, मुँह, कमर व वस्ती मोटी, पर स्त्री में आसक्त, परद्रव्य लेने की बुद्धि, पापी, नाशक, मिलनसार, पुष्प चन्दन प्रिय, चलने वाला मित्रों को प्रिय।

(१२) द्वादश द्वादशांश (मीन)—जल में होने वाले पदार्थों का भोक्ता, मोती व शाक-भाजी बेचने वाला, स्त्री में आसक्त, शरीर उत्तम, नाक ऊँची, बड़ा मस्तक, शत्रु का पराभव करने वाला, स्त्री के वश, नेत्र कांति उत्तम, धनवान्, गड़ाधन प्राप्त हो।

मेष लग्न में पहिला द्वादशांश मेष राशि से आरम्भ होकर क्रमानुसार बारहवाँ मीन का होता है।

(२) वृष के द्वादशांश का फल

१—पहिला द्वा० वृष का है—मेष में दूसरा द्वादशांश जो वृष राशि का है उसी अनुसार फल होगा अर्थात् सुन्दर विकास कर गमन करे आदि जो फल कहा है : क्यों कि जो राशि होती है द्वादशांश में पहिले उसी राशि का द्वादशांश होता है। इससे जिस राशि का द्वादशांश हो उसी के अनुसार फल विचारना।

२—वृष में दूसरा द्वा० मिथुन का है इससे मेष लग्न के तीसरे द्वा० में मिथुन है उसके समान फल होगा।

३—तीसरा द्वा० कर्क का है—मेष के चौथे द्वा० में कर्क है उस समान फल होगा।

४—चौथा द्वा० सिंह का है- मेष के पांचवे द्वा० में सिंह है उस समान फल होगा।

५- पांचवा द्वा० कन्या का है मेष के छठे द्वा० में कन्या है उस समान फल होगा।

६- छठे द्वा० तुला का है-मेष के सातवें द्वा० में तुला है उस समान फल होगा।

७—सातवां द्वा० वृश्चिक का है—मेष के आठवें द्वा० में वृश्चिक है उस समान फल होगा।

८—आठवां द्वा० धन का है-मेष के नवमें द्वा० में धन है उस समान फल होगा।

९—नवां द्वा० मकर का है-मेष के दशम द्वा० में मकर है उस समान फल होगा।

१०—दशवां द्वा० कुभ का है—मेष के ग्यारहवें द्वा० में कुम्भ है उस समान फल होगा।

११ ग्यारहवां द्वा० मीन का है—मेष के बारहवें द्वा० में मीन है उस समान फल होगा।

१२ - बारहवां द्वा० मेष का है-मेष के पहिले द्वा०में मेष है उस समान फलहोगा।

इस प्रकार किसी भी राशि के द्वादशांश का फल जान सकते हैं उस द्वादशांश में जो राशि है उस राशि का फल मेष के द्वादशांश में जहाँ मिले उसके अनुसार फल जानना।

जैसे कुम्भ लग्न के दूसरे द्वादशांश का फल जानना है। कुम्भ में पहिला द्वादशांश कुम्भ का होता है। दूसरा मीन का हुआ। मेष लग्न के द्वादशांश के फल वर्णन में मीन राशि का फल मेष लग्न के अंतिम द्वादशांश में दिया है वही लेना अर्थात् जल में होने वाले पदार्थों का भोक्ता मोती व शाक भाजी बेचने वाला स्त्री में आसक्त आदि।

द्वादशांश का संक्षिप्त जन्म फल

मेष द्वादशांश में जन्म—खलात्मा, चोर, पाप आचरण।

वृष द्वादशांश में जन्म—स्त्री के धन से नी, रोगवान्।

मिथुन द्वादशांश में जन्म—जुवाड़ी, सुशील।

कर्क द्वादशांश में जन्म—दुष्ट आचरण और तपस्वी।

सिंह द्वादशांश में जन्म—सुशील, राजकार्य परायण।

कन्या द्वादशांश में जन्म—जुआड़ी, स्त्री में लीन।

तुला द्वादशांश में जन्म —व्यापारी या धनी ।

वृश्चिक द्वादशांश में जन्म—धूर्त, चोरों का स्वामी, मारने की इच्छा वाला ।

धन द्वादशांश में जन्म—पिता तथा देव ब्राह्मण भक्त ।

मकर द्वादशांश में जन्म—शस्त्रादि युक्त और दूत वाला ।

कुम्भ द्वादशांश में जन्म—खल ।

मीन द्वादशांश में जन्म—धनी और पंडित ।

ग्रह मित्र के या उच्च द्वादशांश में हो—अनेक स्त्रियों का अधिकारी और अनेक ऋद्धि सिद्धि युक्त ।

द्वादशांश से आयु और मृत्यु विचार

मेष आदि १२ राशियों के द्वादशांश के अनुसार आयु इस प्रकार है ।

राशि १ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १० ११ १२ पश्चात् ।

आयु ८० ८४ ८६ ८७ ८५ ६० ५६ ७० ९० ६६ ५६ १०० मृत्यु ।

पूर्वोक्त आयु के बीच में भी मृत्यु का भय होता है ।

१—प्रथम द्वादशांश वाला —१८ वर्ष में जल से भय ।

२—द्वितीय द्वादशांश वाला—९ वर्ष में सर्प से भय ।

३—तृतीय द्वादशांश वाला—१० वर्ष में घोर ज्वर से भय ।

४—चतुर्थ द्वादशांश वाला—१२ वर्ष में राजयक्ष्मा से भय ।

५—पंचम द्वादशांश वाला—२० वर्ष में रक्त विकार से भय ।

६—षष्ठ द्वादशांश वाला—२२ वर्ष में अग्नि से भय ।

७—सप्तम द्वादशांश वाला—२८ वर्ष में जलोदर से भय ।

८—अष्टम द्वादशांश वाला—३० वर्ष में व्याघ्र से भय ।

९—नवम द्वादशांश वाला—३२ वर्ष में बाण के पारेका से भय ।

१०—दशम द्वादशांश वाला—३० वर्ष में जल में डूबने या वायु विकार का भय ।

११—एकादश द्वादशांश वाला—३१ वर्ष में माता तथा कन्या की मृत्यु के कारण तथा जल से भय ।

१२—द्वादश द्वादशांश वाला—२९ वर्ष में गाड़ी के पहिया से दबने का भय ।

इन सब अल्प मृत्युओं से बचने पर पूर्ण आयु भोगे ।

त्रिंशांश फल

१ मंगल स्व त्रिंशांश में—स्त्री सहित हो, तेजस्वी, बल, पराक्रम आभूषण युक्त, साहस का काम करनेवाला ।

२ शनि स्व त्रिंशांश में—उसकी स्त्री शीघ्र मरे या भाग जावे या विवाह ही न हो, परस्त्री से आसक्त, दुखी, घर वस्त्र और परिवार से युक्त हो, मलिन रहे, क्रूर या क्रोधी स्वभाव का हो, रोगी रहे ।

३ गुरु स्व त्रिशांश में— धन, कीर्ति, सौख्य बुद्धि इनसे युक्त, तेजस्वी सब लोगों में मान्य उद्योगी, निरोगी, भाग्यवान् ।

४ बुध स्व त्रिशांश में — बुद्धिमान्, गीत नाच, वाद्य, पुस्तक चित्र इनका ज्ञाता, कपटी, कविता करे, बोलने में चतुर, साहसी, शास्त्रार्थ को जानने वाला, उत्तम आचार, लोक में मान्य, बढ़ई आदि कला का काम जानने वाला ।

५ शुक्र स्व त्रिशांश में — बहुत संतति, निरोग, बहुत सुख, ऐश्वर्यवान्, धनवान्, रूपवान्, स्त्री सुख हो, क्रूर स्वभाव, कोमल अंग, बहुत स्त्रीवादी ।

त्रिशांश में सूर्य और चन्द्र का त्रिशांश नहीं होता इससे सूर्य चन्द्र जिसके त्रिशांश में हों उनके फल का प्रथम विचार होता है ।

१ मंगल के त्रिशांश में सूर्य हो — शूरवीर हो ।
मंगल के त्रिशांश में चन्द्र हो - शिथिल हो (देर से काम करे ।)
२ शनि के त्रिशांश में सूर्य हो— विषम या क्रूर स्वभाव ।
शनि के त्रिशांश में चन्द्र हो हिंसक (जीवघाती) ।
३ गुरु के त्रिशांश में सूर्य हो — उत्तम गुणवान् ।
गुरु के त्रिशांश में चन्द्र हो — धनवान्, शान्त स्वभाव ।
४ बुध के त्रिशांश में सूर्य हो सुखी ।
बुध के त्रिशांश में चन्द्र हो पंडित हो ।
५ शुक्र के त्रिशांश में सूर्य हो — उत्तम शोभायुक्त शरीर ।
शुक्र के त्रिशांश में चन्द्र हो - सर्व लोक प्रिय ।

साधारण त्रिशांश फल

१ मंगल के त्रिशांश में जन्म—चपल, कठिन वचन बोलने वाला, क्रूर बुद्धि ।
२ शनि के त्रिशांश में जन्म - घूमने वाला, मलिन बुद्धि ।
३ गुरु के त्रिशांश में जन्म—धनवान् ।
४ बुध के त्रिशांश में जन्म— गुरुदेव, भक्ति में निरत, साधु प्रिय, बंधुमान् ।
५ शुक्र के त्रिशांश में जन्म—कामी सुंदर शरीर, सुखी ।

त्रिशांश विशेष फल

१ त्रिशांश कुंडली में मित्रगृही या उच्च के ग्रह हों- तो सब कार्य करने में उत्साह रखने वाला, धर्मात्मा, सज्जनों से पूज्य ।

२ त्रि० कुण्डली में ग्रहों के सत रज तम गुण विचार कर इनमें जो अधिक बली प्रकाशवान् हो—उसी ग्रह के अनुसार फल का विचार कर फल कहना ।

सूर्य चन्द्र गुरु—सतगुणी ।
शुक्र बुध—रजोगुणी ।
शनि मंगल—तमोगुणी ।

सात्विक ग्रह बली हो दयालु स्थिरता युक्त, सत्यवक्ता, विनीत, देव ब्राह्मण का भक्त।

रजोगुण ग्रह बली हो--काव्य करने वाला शूरवीर, कुल स्त्रियों में पूर्ण तन मन रखने वाला।

तमोगुणी ग्रह बली हो तो दूसरों को ठगने वाला, मूर्ख, आलसी, क्रोधी, अति निद्रालु। इन गुणों के मेल से फलों के भी कई भेद हो जाते हैं।

—:०:—

अध्याय—५

अष्टक वर्ग

फल कहने की विधि जन्म लग्न, चन्द्र लग्न, नवांश लग्न द्वारा बताई हो जाती है परन्तु गोचर का अष्टक वर्ग द्वारा सूक्ष्म फल भी निकाला जाता है।

लग्न शरीर है जिससे शरीर का विचार होता है और चन्द्र मन है जिससे मानसिक ऐहिक पारलौकिक आदि सभी कार्यों का विचार होता है ये सब जन्म कुंडली से विचार होता है। जन्म चन्द्र की राशि को आदि लेकर गोचर के वर्तमान ग्रहों की स्थिति पर राशि अनुसार फल कुछ स्थूल हो जाता है जिससे उसमें सूक्ष्मता लाने को अष्टक वर्ग द्वारा फल का विचार होता है जिसमें प्रत्येक ग्रह और लग्न को भी आदि मानकर उनके शुभ स्थानों की गणना कर अष्टक वर्ग चक्र बनाया जाता है जिससे सब कार्यों में इसके द्वारा फल का अच्छा या बुरा प्रभाव स्पष्ट रूप से प्रकट हो जाता है।

अष्टक वर्ग से ४ प्रकार से फल का विचार होता है।

(१) आयु साधन करना, (२) भिन्न भिन्न वर्गों में रेखाओं और बिन्दुओं के द्वारा अनेक प्रकार के शुभाशुभ फल बताया जाता है। (३) ऊपर वर्ग के रेखा और बिन्दु द्वारा गोचर के फल का विचार होता है। (४) अष्टक वर्ग में त्रिकोण शोधन एवं ऐकाधिपत्य शोधन के पश्चात् फल विचारने की विधि है।

अष्टक वर्ग विचार

जन्म राशि के अनुसार गोचर का फल आगे बताया गया है। गोचर फल में स्थूलता है क्योंकि एक ही राशि के अनेकों मनुष्य होते हैं। इसलिए गोचर फल में सूक्ष्मता लाने के लिए आचार्यों ने अष्टक वर्ग अंक कहा है।

गोचर में चन्द्र राशि को प्रधान मानकर शुभ स्थान की गणना कर प्रत्येक ग्रह का शुभ शुभ जाना जाता है परन्तु अष्टक वर्ग में प्रत्येक ग्रह की राशि को प्रधान मानकर उससे शुभ स्थान की गणना की जाती है इसमें ७ ग्रह और लग्न सहित ८ हो जाते हैं यहाँ ८ प्रकार से शुभत्व की गणना की जाती है इस कारण अष्टक वर्ग द्वारा फल विचारने में सूक्ष्मता आ जाती है। इसके लिए प्रत्येक ग्रह का पृथक् २ चक्र बनाना पड़ता है इस प्रकार ८ अष्टक वर्ग चक्र बन जाते हैं। इसमें शुभता सूचक रेखा और अशुभता सूचक ० शून्य बना दिया जाता है। कोई २ शुभ के लिए ० शून्य और अशुभ स्थान के लिए। रेखा का चिह्न बना देते हैं। चिह्न किसी प्रकार का हो वह तो अपनी इच्छानुसार बनाया जा सकता है जिससे शुभ या अशुभ स्थान प्रगट हो। पश्चात् प्रत्येक चक्र में शुभ रेखा का योग किया जाता है।

चक्र बनाने के लिए १२ राशियों को ऊपर लिख लो। जिस राशि पर लग्न हो वहाँ लग्न लिख दो जहाँ जो २ ग्रह हों सब ग्रह लिख देना। उसके नीचे ८ लकीर देना जिनके बाँई ओर ग्रहों के नाम लिखे हों और ग्रह से शुभ स्थान गिनते जाना जहाँ शुभ हो वहाँ रेखा जहां अशुभ हो शून्य लिख दो। पश्चात् सब शुभ रेखाओं का योग करो। इसके पश्चात् प्रत्येक चक्र की शुभ रेखाओं का एक और चक्र बना लो। इसको सब अष्टक वर्ग चक्र कहेंगे उसमें भी सब शुभ रेखाओं का योग कर दो जिससे स्पष्ट हो जावे किस राशि ने सम्पूर्ण कितनी शुभ रेखा पाई है।

पहिले प्रत्येक ग्रहों का अष्टक वर्ग शुभ चक्र देते हैं पश्चात् प्रत्येक का चक्र बनाना बतावेंगे।

प्रत्येक ग्रहों का शुभ अष्टक वर्ग चक्र

(१) सूर्य का अष्टक वर्ग

सूर्य	चंद्र	मं०	बु०	गु०	शु०	श०	लग्न
१	३	१	३	५	६	१	३
२	६	२	५	६	७	२	४
४		४	६	९	१२	४	६
७	१०	७	९	११		७	१०
८	११	८	१०			८	११
९		९				९	१२
१०		१०	११			१०	
११		११	१२			११	

शुभ योग ४८

(२) चन्द्र का अष्टक वर्ग

सूर्य	चं०	मं०	बु०	गु०	शु०	श०	लग्न
३	१	२	१	१	३	३	३
६	३	३	३		४	५	६
७	६	५	४	७	५	६	१०
८	७	६	७	१०	७	११	११
१०	१०	९	८	११	९		
११	११	११	१०	१२	११		
		११	११		११		

शुभ योग ४९

(३) मंगल का अष्टक वर्ग

सू०	च०	मं०	बु०	गु०	शु०	श०	ल०
३	३	१	३	६	६	१	१
५	६	२	५	१०	८	४	३
६	११	४	६	११	११	७	६
१०		७	११	१२	१२	८	१०
११		८				९	११
		१०				१०	
		११				११	

शुभ योग=३९

(४) बुध अष्टक वर्ग

सू०	चं०	मं०	बु०	गु०	शु०	श०	ल०
५	२	१	१	६	१	१	१
६	४	२	३	८	२	२	२
९	६	४	५	११	३	४	४
११	८	७	६	१२	४	७	६
१२	१०	८	९		५	८	८
	११	९	१०		८	९	१०
		१०	११		९	१०	११
		११	१२		११	११	

शुभ योग=५४

(५) गुरु अष्टक वर्ग

सू०	चं०	मं०	बु०	गु०	शु०	श०	ल०
१	२	१	१	१	२	३	१
२	५	२	२	२	५	५	२
३	७	४	४	३	६	६	४
४	९	७	५	४	९	१२	५
७	११	८	६	७	१०		६
८		१०	९	८	११		७
९		११	१०	१०			९
१०			११	११			१०
११							११

शुभ योग = ५६

(६) शुक्र अष्टक वर्ग

सू०	चं०	मं०	बु०	गु०	शु०	श०	ल०
८	१	३	३	५	१	३	१
११	२	५	५	८	२	४	२
१२	३	६	६	९	३	५	३
	४	९	९	१०	४	८	४
	५	११	११	११	५	९	५
	८	१२			८	१०	८
	९				९	११	९
	११				१०		११
	१२				११		

शुभ योग = ५२

(७) शनि अष्टक वर्ग

सू०	चं०	मं०	बु०	गु०	शु०	श०	लग्न
१	३	३	६	५	६	३	१
२	६	५	८	६	११	५	३
४	११	६	९	११	१२	६	४
७		१०	१०	१२		११	६
८		११	११				१०
१०		१२	१२				११
११							

शुभ योग = ३९

(८) लग्न अष्टक वर्ग

सू०	चं०	मं०	बु०	गु०	शु०	श०	लग्न
३	३	१	१	१	१	१	३
४	६	३	२	२	२	३	६
६	१०	६	४	४	३	४	१०
१०	११	१०	६	५	४	६	११
११		११	८	६	५	१०	
१२			१०	७	८	११	
			११	९	९		
				१०	११		
				११			

शुभ योग = ४९

राहु अष्टक वर्ग

सू०	चं०	मं०	बु०	गु०	शु०	श०	ल०
१	१	२	२	१	५	३	३
२	३	३	४	३	६	५	४
३	५	५	७	४	७	७	५
५	७	१२	८	६	११	१०	९
७	८		१२	८	१२	११	१२
८	९						
१०	१०						

शुभ योग = ४३

अष्टक वर्ग में लग्न सहित ७ ही ग्रह लिये जाते हैं परन्तु 'ध्रुवताराप्रकाश' में राहु का भी अष्टक वर्ग दिया है। वह भी यहाँ दे दिया गया है।

प्रत्येक अष्टक वर्ग चक्र करना आगे बताया है। किसी ग्रह को आदि लेकर उसके स्थान को गिनकर जहाँ शुभ है वहाँ रेखा बना देनी चाहिये जहाँ शुभ नहीं है केवल शून्य रख देना चाहिये।

पृथक् २ अष्टक वर्ग चक्र में शुभ रेखाओं का योग इस प्रकार है :—सूर्य=४८, चंद्र में=४९, मंगल=३९, बुध=५४, गुरु=५६, शुक्र=५२, शनि=३९, लग्न=४९, राहु=४३।

उदाहरणस्वरूप अष्टक वर्ग चक्र

अष्टक वर्ग चक्र बनाने का उदाहरण (यहां जन्म कुण्डली के अनुसार राशियाँ और ग्रह दिये हैं)।

(१) सूर्य का अष्टक वर्ग चक्र।

राशियाँ	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२
ग्रह	लग्न २।०		श०	०	०	मं	के०	गु०	चं बु०	सू० शु	०	०
१ शनि	।	०	।	।	०	।	०	०	।	।	।	।
२ गुरु	।	०	०	।	०	।	०	०	०	०	०	।
३ मंगल	।	।	।	।	०	।	।	०	।	०	०	।
४ सूर्य	।	०	०	।	।	।	।	।	०	।	।	०
५ शुक्र	०	०	।	।	०	०	०	०	।	०	०	०
६ बुध	।	।	०	०	।	।	।	।	०	०	।	०
७ चंद्र	०	।	०	०	०	।	।	०	०	०	।	०
८ लग्न	०	०	।	।	०	।	०	०	०	।	।	।
रेखा योग	५	३	४	६	२	७	४	२	३	३	५	४

(२) चंद्र का अष्टक वर्ग चक्र।

राशियाँ	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२
ग्रह	लग्न	०	श०	०	०	मं०	के०	गु०	चं०	सू०	०	०
	रा०								बु०	शु०		
१ शनि	।	०	०	०	।	०	।	।	०	०	०	०
२ गुरु	०	।	।	०	।	।	।	।	०	०	।	०
३ मंगल	०	।	।	।	०	०	।	।	०	।	।	०
४ सूर्य	०	०	।	।	।	०	।	।	०	०	०	।
५ शुक्र	।	।	०	।	०	।	।	।	०	०	०	।
६ बुध	।	०	।	।	०	।	।	०	।	०	।	।
७ चंद्र	०	।	।	०	०	।	।	०	।	०	।	०
८ लग्न	०	०	।	०	०	।	०	०	०	।	।	०
रेखा योग	३	४	६	४	३	५	७	५	२	२	५	३

(३) मंगल का अष्टक वर्ग चक्र

राशियाँ	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२
ग्रह	लग्न	०	श०	०	०	मं०	के	गु०	चं०	सू०	०	०
	रा०								बु०	शु०		
१ शनि	।	०	।	०	०	।	०	०	।	।	।	।
२ गुरु	।	०	०	०	।	।	।	०	०	०	०	०
३ मंगल	।	०	।	।	०	।	।	०	।	०	०	।
४ सूर्य	०	।	।	०	०	०	।	।	०	०	०	।
५ शुक्र	०	०	।	०	।	०	०	।	।	०	०	०
६ बुध	।	।	०	०	०	०	।	०	०	०	।	०
७ चंद्र	०	।	०	०	०	०	।	०	०	०	।	०
८ लग्न	।	०	।	०	०	।	०	०	०	।	।	०
रेखा योग	५	३	५	१	२	४	५	२	३	२	४	३

(४) बुध का अष्टक वर्ग चक्र

राशियाँ	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२
ग्रह	लग्न	०	श	०	०	मं०	के०	गु०	चं०	सू०	०	०
	रा०								बु०	चं०		
१ शनि	।	०	।	।	०	।	०	०	।	।	।	।
२ गुरु	।	०	।	०	०	।	।	०	०	०	०	०
३ मंगल	।	।	।	।	०	।	।	०	।	०	०	।
४ सूर्य	०	।	।	०	०	।	०	।	।	०	०	०
५ शुक्र	।	।	०	०	।	।	०	।	०	।	।	।
६ बुध	।	।	०	०	।	।	।	।	।	०	।	०
७ चंद्र	०	।	०	।	०	।	।	०	०	।	०	।
८ लग्न	।	।	०		०	।	०	।	०	।	।	०
रेखा योग	६	६	४	४	२	८	४	४	४	४	४	४

(५) गुरु का अष्टक वर्ग चक्र

राशि	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२
ग्रह	लग्न	०	श०	०	०	मं०	के०	गु०	चं०	सू०	०	०
	रा०								बु०	शु०		
१ शनि	०	।	०	०	।	०	।	।	०	०	०	०
२ गुरु	०	।	।	०	।	।	०	।	।	।	।	०
३ मंगल	।	०	।	।	०	।	।	०	।	०	०	।
४ सूर्य	।	०	०	।	।	।	।	।	०	।	।	।
५ शुक्र	०	।	।	०	०	।	।	।	०	०	।	०
६ बुध	।	।	०	०	।	।	।	०	।	।	०	।
७ चंद्र	।	०	।	०	।	०	।	०	०	।	०	०
८ लग्न	।	।	०	।	।	।	।	०	।	।	।	०
रेखायोग	५	५	४	३	६	६	७	४	४	५	४	३

(६) शुक्र का अष्टक वर्ग चक्र

राशि	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२
ग्रह	लग्न	०	श०	०	०	मं०	के०	गु०	चं०	सू०	०	०
१ शनि	।	०	०	०	।	।	।	०	०	।	।	।
२ गुरु	०	०	।	।	।	।	०	०	०	०	०	।
३ मंगल	०	।	०	।	।	०	०	।	०	।	।	०
४ सूर्य	०	०	०	०	।	०	०	।	।	०	०	०
५ शुक्र	।	।	०	०	।	।	।	।	०	।	।	।
६ बुध	।	।	०	०	।	०	।	०	०	०	।	०
७ चंद्र	।	०	०	।	।	०	।	।	।	।	।	।
८ लग्न	।	।	।	।	।	०	०	।	।	०	।	०
योग	५	४	२	४	८	३	४	५	३	४	६	४

(७) शनि का अष्टक वर्ग चक्र

राशि	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२
ग्रह	लग्न	०	श०	०	०	मं०	के०	गु०	चं०	सू०	०	०
	रा०								बु०	शु०		
१ शनि	।	०	०	०	।	०	।	।	०	०	०	०
२ गुरु	।	०	०	०	०	।	।	०	०	०	०	।
३ मंगल	०	०	।	।	।	०	०	।	०	।	।	०
४ सूर्य	।	०	०	।	।	०	।	।	०	।	।	०
५ शुक्र	०	०	।	०	०	०	०	।	।	०	०	०
६ बुध	०	।	०	।	।	।	।	।	०	०	०	०
७ चंद्र	०	।	०	०	०	०	।	।	०	०	।	०
८ लग्न	।	०	।	।	०	।	०	०	०	।	।	०
रेखायोग	४	२	३	४	४	३	५	५	१	३	४	१

(८) लग्न का अष्टक वर्ग चक्र

राशि	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२
ग्रह	लग्न रा०	०	श०	०	०	मं०	के०	गु०	चं० बु०	सू० शु०	०	०
१ शनि	।	०	।	०	।	।	०	।	०	०	०	।
२ गुरु	।	।	०	।	।	।	०	।	।	०	।	।
३ मंगल	०	०	।	।	०	।	०	।	०	०	।	०
४ सूर्य	।	०	।	०	०	०	।	।	।	०	०	।
५ शुक्र	।	।	०	०	।	।	०	।	०	।	।	।
६ बुध	०	।	०	।	०	।	।	०	।	।	०	।
७ चंद्र	०	।	०	०	०	।	।	०	०	०	।	०
८ लग्न	०	०	।	०	०	।	०	०	०	।	।	०
योग	४	४	४	३	३	७	३	५	३	३	५	५

प्रत्येक ग्रह का अष्टक वर्ग चक्र बनाने में कई लोग कुंडली बनाकर उसमे रेखा भर देते हैं यह ठीक नहीं है उसमें कभी भूल हो जाती है। उपरोक्त प्रकार से चक्र बना कर उसमे शुभ रेखा एवं अशुभ का शून्य भी लिख दिया जावे तो भूल नहीं हो सकती और उसकी जाँच में सुविधा होती है।

यहाँ उदाहरण में शुभ के स्थान में रेखा और अशुभ के स्थान में विन्दु दिया है। कई ग्रंथकार विन्दु को शुभ सूचक मानकर रेखा को अशुभ का चिह्न मानते हैं। परन्तु रेखा को शुभत्व का चिह्न मान लेना उचित जँचता है।

कोई ग्रंथकार रेखा के स्थान में रेखा न बना कर उसी ग्रह का सूचक संकेत अक्षर बना देते हैं जैसे रवि के लिए र० चंद्र के लिये चं इत्यादि इसको यहाँ उदाहरण देकर बताया है:—

सूर्य का अष्टक वर्ग चक्र अन्य प्रकार

राशि	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२
ग्रह	लग्न रा०	०	श०	०	०	मं०	के०	गु०	चं० बु०	सू० शु०	०	०
१ शनि	श०	०	श०	श०	०	श०	०	०	श०	श०	श०	श०
२ गुरु	गु०	०	०	गु०	०	गु०	०	०	०	०	०	गु०
३ मंगल	मं०	मं०	मं०	मं०	०	मं०	मं०	०	मं०	०	०	मं०
४ सूर्य	सू०	०	०	सू०	सू०	सू०	सू०	सू०	०	सू०	सू०	०
५ शुक्र	०	०	शु०	शु०	०	०	०	०	शु०	०	०	०
६ बुध	बु०	बु०	०	०	बु०	बु०	बु०	बु०	०	०	बु०	०
७ चन्द्र	०	चं०	०	०	०	चं०	चं०	०	०	०	चं०	०
८ लग्न	८	०	ल०	ल०	०	ल०	०	०	०	ल०	ल०	ल०
शुभ योग	५	३	४	६	२	७	४	२	३	३	५	४

इसमें विशेष कोई अन्तर नहीं है रेखा के स्थान में यहां ग्रह का नाम दिया है। परन्तु रेखा का चिह्न शुभता सूचक बना देना सरल जँचता है।

कई ग्रंथकार बाईं ओर दिये हुए ग्रहों का क्रम इस प्रकार रखते हैं (१) सूर्य (२) शनि (३) गुरु (४) शुक्र (५) मंगल (६) बुध (७) चंद्र (८) लग्न परन्तु यहाँ उपयोग किया हुआ क्रम ही उचित समझ पड़ता है।

अष्टक वर्ग चक्र की शुभ रेखाओं में मत भेद

यहाँ जो अष्टक वर्ग शुभ रेखा चक्र दिया है उसमें कुछ मत भेद भी हैं—

(१) सूर्य अष्टक वर्ग में शुभ होरा में बुध और गुरु का ८ दिया है परन्तु वृहज्जा० जा० भ० आदि अन्य ग्रन्थों में ९ दिया है ८ नहीं दिया। यहाँ जातक पारिजात के अनुसार ही बुध और गुरु में ९ दिया। ८ नहीं दिया है।

(२) चन्द्र अ० वर्ग में गुरु में वृहत्पाराशर में २ दिया है १२ नहीं दिया। वृहज्जातक जा० भ०, जा० पारि० आदि में २ नहीं दिया १२ दिया है। इससे यहाँ भी २ नहीं दिया १२ दिया है।

(३) मंगल के अ० वर्ग में बुध का जा० भ० में ११ की जगह १२ दिया है। वहत्पारा० जा० पारि० आदि कई ग्रन्थों में ११ ही दिया है १२ नहीं है। इससे यहाँ भी ११ दिया है १२ नहीं दिया।

(४) बुध अ० वर्ग में चन्द्र का २ के बदले ५ जा० भ० में दिया है अन्य ग्रन्थों में २ ही दिया है ५ नहीं दिया इससे जा० पारि० आदि के अनुसार २ दिया है ५ नहीं दिया। बुध अ० वर्ग में लग्न में जा० भ० में ८ के बदले ९ और १० के बदले १२ दिया है परन्तु जा० पारि० वृ० पारा० आदि में ८ और १० दिया है वही यहाँ भी दिया है।

(५) गुरु अ० वर्ग में शंभु हारा० में लग्न में ८ दिया है शेष ग्रन्थों में ८ नहीं दिया ९ दिया है उसी के अनुसार यहां भी दिया है।

(६) शुक्र अ० वर्ग में वृहत्पारा० में मंगल का ४ दिया है वृ० जा० जातक पारि० आदि कई ग्रंथों में ४ नहीं दिया इससे यहाँ ४ छोड़ दिया।

(७) शनि अ० वर्ग में जा० भ० में २ के बदले ३ सूर्य का दिया है। जा० पारि० वृ० पारा०, वृ० जा० आदि में २ ही दिया है ३ नहीं दिया यही यहाँ दिया है।

बुध में जा० भ० में ११ नहीं दिया जातक पारिजात आदि में ११ दिया है इससे यहाँ भी दिया है। लग्न में जा० भ० में ९ अधिक दिया है जातक पारि० आदि में ९ नहीं दिया इससे यहाँ नहीं दिया।

(८) जा० भरण, फल दीपि० आदि ने लग्न अष्ट० वर्ग नहीं दिया। शेष ग्रन्थों में दिया है यहाँ बृ० जा० वृहत्पारा० आदि के अनुसार ही दिया है।

लग्न अ० वर्ग में कहीं चन्द्र में १२ भी दिया है और शुक्र में ११ नहीं दिया। परन्तु यहाँ बृ० जा० आदि के अनुसार चन्द्र में १२ नहीं दिया। और शुक्र में ११ दिया है।

(९) राहु का शुक्र में ५ नहीं दिया शनि का १२ अधिक किसी में दिया है इस प्रकार मतभेद है।

अष्टक वर्ग चक्र उदाहरण का स्पष्टीकरण

यहाँ लग्न का अष्टक वर्ग भरना समझा देते हैं जिसके समझ लेने पर उदाहरण देख कर सम्पूर्ण अष्टक वर्ग चक्र भरना आ जायगा।

लग्न अष्टकवर्ग चक्र आठवां है उसे देखो। उसमें सूर्य ३,४,६,१०,११,१२ स्थान में शुभ रेखा देता है। यहाँ सूर्य मीन में है वहाँ से गिनना आरम्भ किया वहाँ पहले स्थान में ० रखा। वहाँ से दूसरा स्थान मेष में भी ० है तीसरे स्थान वृष में शुभ की रेखा दी है। चौथे स्थान मिथुन में भी शुभ की रेखा दी है। पाँचवा स्थान कर्क में ० है। छठे स्थान सिंह में शुभ रेखा है। ७,८,९ स्थान कन्या तुला वृश्चिक में ० है आगे १०,११,१२ स्थानों शुभ की रेखा है इससे नवाँ स्थान धन, दशम मकर और एकादश स्थान कुम्भ में रेखा दी है। चन्द्र जहाँ है वहाँ से इसीप्रकार ३,६,१०,११ स्थान में शुभ रेखा पड़ी है शेष अशुभ स्थानों में ० दिया है अर्थात् चन्द्र कुम्भ में है वहाँ से तीसरा स्थान मेष राशि, छठा स्थान कर्क में, १० स्थान वृश्चिक राशि में और चंद्र से ग्यारहवें स्थान मन राशि में शुभता सूचक रेखा दी है। इसी प्रकार प्रत्येक ग्रह या लग्न से गिन्ती करके उनके शुभ स्थानों में रेखा दी है शेष अशुभ में ० दिया है। ध्यान पूर्वक आगे भी उदाहरण देखने से सब समझ में आ जायगा।

इन अष्टक वर्ग चक्रों में एक विशेषता यहाँ दी है। सूर्य चन्द्र मंगल बुध गुरु शुक्र शनि लग्न आदि क्रम से जैसा कि इतर ग्रन्थकारों ने दिया है, यहाँ न देकर शनि गुरु मंगल सूर्य शुक्र बुध चन्द्र और लग्न इस क्रम से दिया है। इसका कारण यह है कि जब अष्टक वर्ग के अनुसार उसके प्रभाव का समय जानने की आवश्यकता हो तो उस राशि के पूरे तीस अंश में इसी क्रम से ग्रहों का प्रभाव पड़ेगा। पहिले शनि का फिर गुरु का फिर मंगल का इत्यादि यहाँ दिये क्रम से अपने-अपने अष्टमांश में प्रभाव पड़ेगा।

उस राशि के ८ भाग करने से एक भाग ३०÷८ अंश=३°–४५′ का पड़ेगा दूसरा भाग ७°–३०′ तक, तीसरा ११°–१५′ तक, चौथा १५°–०′ तक, पांववां १८°–४५′ तक, छठा २२°–३०′ तक, सातवां २६°–१५′ तक और आठवाँ भाग ३०°–०′ तक का होगा। इस प्रकार अष्टक वर्ग में जिस भाग में शुभ रेखा हो उस ग्रह के उनके अंश तक शुभता रहेगी जहाँ ० हो उस भाग में अशुभता रहेगी। इसके सम्बन्ध में गोचर में भी और समझा दिया गया है।

यह जानने के लिए कि वह शुभ या अशुभ फल किस समय तक रहेगा। उस ग्रह कि एक राशि में भुगतने के समय को ८ से भाग देने से जो अष्टमांश प्राप्त होगा वह उस रेखा या बिन्दु के फल के भोग का समय रहेगा।

ग्रह	एक राशि में भोगने का समय	१ अष्टमांश मास-दिन-घड़ी-पल	१ अष्टमांश का भोग्यांश
१ शनि	३० मास÷८	३-२२-३०—०	३–४५
२ गुरु	१३ मास÷८	१-१८-४५—०	३–४५
३ मंगल	१।। मास÷८	०- ५-३७–३०	३–४५
४ सूर्य	१ मास÷८	०- ३-४५—०	३–४५
५ शुक्र	१ मास÷८	०- ३-४५—०	३–४५
६ बुध	१ मास÷८	०- ३-४५—०	३–४५
७ चन्द्र	२। दिन÷८	०- ०-१६–५२।।	३–४५

जैसे शनि के अष्टक वर्ग से फल का समय जानना है। जन्म समय जन्म राशि से सप्तम में सिंह का शनि है। गोचर में भी मान लो सिंह राशि पर शनि है। शनि के अष्टक वर्ग में सिंह राशि में केवल तीसरा, पाँचवाँ और आठवाँ अन्तिम भाग में शुभ रेखा है शेष में अशुभ सूचक शून्य है तीसरा भाग ७°-३०′ से ११°-१५′ तक है पाँचवाँ भाग १५°-०′ से १८°-४५′ तक आठवाँ भाग २६°-१५′ के बाद ३०°-०′ तक और शनि के इनके अंशों में शुभता रहेगी शेष अंशों में अशुभता रहेगी। शनि का एक भाग ३ मास २२ दिन ३० घड़ी में भुक्त होता है इसलिये सबसे शनि के अंशों के विचार से वह समय कब से कब तक रहेगा समय निकाल लेना चाहिये। नीचे दिये हुए चक्र से वह स्पष्ट हो जायगा।

	अष्टक वर्ग का अष्टमांश	शनि का भोग्य काल	गुरु का भोग्य काल	मंगल का योग्य काल	सूर्य, बुध, शुक्र का भोग्यकाल	चन्द्र का भोग्य काल
भाग	अंश फल	मास दिन घड़ी	मास दिव घड़ी	मास दिन घड़ी	दिन घड़ी	दिन-घड़ी-पल
१	३–४५	३–२२–३०	१–१८–४५	०– ५–३७॥	३–४५	०–१६–५२॥
२	७–३०	७–१५– ०	३– ७–३०	०–११–१५	७–३०	०–३३–४५
३	११–१५	११– ७–३०	४–२६–१५	०–१६–५२॥	११–१५	०–५०–३७॥
४	१५– ०	१५– ०– ०	६–१५– ०	०–२२–३०	१५– ०	१– ७–३०
५	१८–४५	१८–२२–३०	८– ३–४५	०–२८– ७॥	१८–४५	१–२४–२२॥
६	२२–३०	२२–१५– ०	९–२२–३०	१– ३–४५	२२–३०	२–४१–१५
७	२६–१५	२६– ७–३०	११–११–१५	१– १–२२॥	२६–१५	२–५८– ७॥
८	३०– ०	३०– ०– ०	१३– ०– ०	१–१५– ०	३०– ०	२–१५– ०

प्रत्येक ग्रहों के अष्टक वर्ग में ८ चक्र बनाये गये हैं उनके सब शुभ रेखाओं के योग को एकत्र बनाने के लिये सबका एक चक्र बनाया जाता है जिसे सर्व अष्टक वर्ग चक्र कहेंगे पश्चात उन सब शुभ का योग करना जिससे पता चले कि किस राशि में कितनी शुभ रेखा पाई है। यहां उसको उदाहरण देकर बताया है।

सर्व अष्टक वर्ग चक्र का उदाहरण

राशि	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	
ग्रह	लग्न		शनि			मंगल	केतु	गुरु	चन्द्र	सूर्य			योग
	रा								बुध	शुक्र			
सूर्य	५	३	४	६	२	७	४	२	३	३	५	४	४८
चन्द्र	३	४	६	४	३	५	७	५	२	२	५	३	४९
मंगल	५	३	५	१	२	४	५	२	३	२	४	३	३९
बुध	६	६	४	४	२	८	४	४	४	४	४	४	५४
गुरु	५	५	४	३	६	६	७	४	४	५	४	३	५६
शुक्र	५	४	२	४	८	३	४	५	३	४	६	४	५२
शनि	४	२	३	४	४	३	५	५	१	३	४	१	३९
लग्न	४	४	४	३	३	७	३	५	३	३	५	५	४९
शुभ योग	३७	३१	३२	२९	३०	४३	३९	३२	२३	२६	३७	२७	३८६
													सर्वयोग

यहाँ सूर्य अष्टक वर्ग चक्र में जो योग शुभ रेखाओं का आया था वह सूर्य के आगे लिख दिया। चन्द्र अष्टक चक्र का योग चन्द्र के सामने लिख दिया इसी प्रकार प्रत्येक अष्टक वर्ग चक्र के योग को वहाँ लिखकर अन्त में सब का योग कर दिया है। यहाँ १२ भाव का शुभ रेखा चक्र नीचे लिखे अनुसार हुआ। इन रेखाओं से शुभाशुभ फल का विचार होता है। इसी से सर्व अष्टक वर्ग कुण्डली बनती है।

द्वादश भावस्थ शुभ रेखा योग चक्र

राशि	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२
भाव	लग्न	धन	सहज	चतुर्थ	पंचम	षष्ठ	सप्तम	अष्टम	नवम	दशम	लाभ	व्यय
शुभरेखा योग	३७	३१	३२	२९	२९	४३	३९	३१	२३	२६	३७	२७

सर्व अष्टक वर्ग कुण्डली

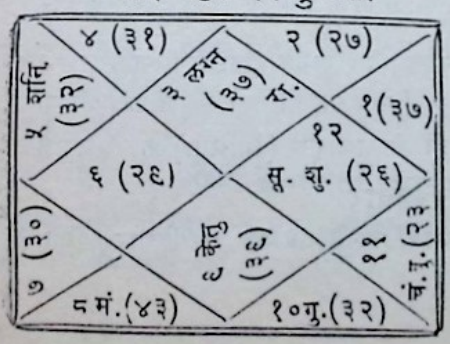

पिछले दिये हुये शुभ योग को यहाँ कुंडली में रख दिया है जिससे प्रकट हो कि भाव को कितनी रेखा मिली हैं।

इस सर्व अष्टक वर्ग कुण्डली में कोई लग्न छोड़कर केवल ग्रहों का शुभ योग दे देते हैं कोई लग्न सहित देते हैं या प्रथम दोनों दे देते हैं।

इन रेखाओं का क्या-क्या फल होता है आगे दिया है।

सर्व अष्टक वर्ग कुण्डली से अवस्था का विचार

(१) वाल्यावस्था प्रथम खंड आदि खंड की राशियाँ १२+१+२+३

(२) युवावस्था द्वितीय खंड मध्य खंड की राशियाँ ४+५+६+७

(३) वृद्धावस्था तृतीय खंड अंत्य खंड की राशियाँ ८+९+१०+११

मीन राशि से आरम्भ कर ४-४ राशियों का एक खंड होता है। इन्हीं राशियों की सर्व शुभ रेखाओं का योग करने से स्थूल रूप से जीवन का शुभाशुभ समझा जाता है। इसमें विशेष बात यह है कि इसमें अष्टम एवं द्वादश स्थान की राशियाँ नहीं जोड़ी जाती।

ऊपर की सर्व अष्टक वर्ग कुंडली देखो

(१) राशि १२ १ ३ योग १०० रेखा इसमें वृष राशि व्यय भाव
रेखा २६ ३७ ३७ में पड़ने से छोड़ दिया।

(२) राशि ४ ५ ६ ७ योग १२२ रेखा इन सबको पूरा लिया।
रेखा ३१ ३२ २९ ३०

(३) राशि ८ ९ ११
रेखा ४३ ३९ २३ योग १०५ रेखा इसमें मकर राशि अष्टम में पड़ने
सर्वयोग ३२७ सेउ से छोड़ दिया।

यहाँ प्रथम खंड से अधिक रेखा अंत्य खड में है इससे वाल्यावस्था से अंत्य की अवस्था में सुख अधिक रहेगा। मध्य अवस्था में सबसे अधिक रेखा है इससे युवा अवस्था में सबसे अधिक सुख रहेगा।

इसका और भी विचार इस प्रकार होता है कि जो तीनों खंड की रेखाओं का योग आया है उसके ३ भाग करना। इस तृतीयांश से जिस खंड में रेखा अधिक हो उस खंड में सुख अधिक रहेगा।

जैसे यहाँ सर्व रेखा योग तीनों खंड का ३२७ है÷३=१०९ एक तृतीयांश है। यहाँ प्रथम खंड में इससे कुछ कम केवल १०० रेखा है इससे इस अवस्था में साधारण सुख रहेगा। मध्य खंड में इससे अधिक १२२ रेखा है तो युवा अवस्था सुख पूर्वक बीतेगी। अंत खंड में १०९ रेखा से कुछ कम हैं (१०५ हैं) इससे इस अवस्था में साधारण सुख रहेगा।

इन खंडों में शुभ या पाप ग्रह हो तो उनका भी विचार होता है। जहाँ शुभ ग्रह हों उस खंड में शुभ फल की वृद्धि होगी। जहाँ पाप ग्रह हों वहाँ अशुभ फल की वृद्धि अर्थात् दुःख होगा। पाप और शुभ ग्रह दोनों हों तो शुभाशुभ (मिश्रित) फल होता है।

भाव की रेखाओं के अनुसार आयु खंड पर विचार

प्रत्येक खंड में पृथक्-पृथक् भाव की रेखाओं पर से भी फल का विचार होता है उसका उदाहरण नीचे दिया है—

१ खंड	भाव	१०	११	१२	१
	राशि	१२	१	२	३
	रेखा	२६	३७	२७	३७
	ग्रह	सू०शु०	+	+	रा०
२ खंड	भाव	२	३	४	५
	राशि	४	५	६	७
	रेखा	३१	३२	२९	३०
	ग्रह	+	श०	+	×
३ खंड	भाव	६	७	८	९
	र शि	८	९	१०	११
	रेखा	४३	३९	३२	२३
	ग्रह	मं०	के०	गु०	चं०बु०

---

(१) यहाँ प्रथम बाल्यावस्था में दशम भाव में २६ रेखा हैं। २७ से अधिक रेखा शुभ समझी जाती हैं। यहाँ २७ से कुछ ही कम हैं तो व्यापार पिता कर्म आदि सम्बंध से साधारण फल होगा मध्यम फल के लगभग है। क्योंकि इस भाव में सूर्य और शुक्र भी है। जिससे कुछ मिश्र उन्नति साधारण प्रकार से होगी।

लाभ में ३७ रेखा हैं अधिक रेखा होने से आर्थिक सुख अच्छा रहेगा। व्यय में २७ रेखा होने से व्यय की समता रहेगी। लग्न में ३७ रेखा होने से शारीरिक सुख आरोग्यता आदि उत्तम रहेगा।

(२) द्वितीय खंड में धन भाव में ३१ रेखा होने से धन का लाभ अच्छा रहेगा। तृतीय भाव में ३२ रेखा होने से भाई बंधुओं का सुख श्रेष्ट रहेगा। परन्तु इसमें शनि होने से पूर्ण सुख में कुछ हानि करेगा। चतुर्थ में २९ रेखा है सुख, माता का सुख आदि साधारण अच्छा रहेगा। पंचम में ३० रेखा है इससे विद्या संतान आदि का सुख साधारणतः अच्छा रहेगा।

(३) तृतीय अवस्था में रिपु भाव में ४३ रेखा है शत्रु रोग आदि का नाश होकर पूर्ण सुख रहेगा। सप्तम में ३९ रेखा है। स्त्री सुख अच्छा रहेगा परन्तु इष्ट में पाप ग्रह केतु के होने से स्त्री सुख क्षीण करेगा बाधा उत्पन्न करेगा। अष्टम में ३३ रेखा हैं स्वास्थ्य ठीक रहेगा। इसमें गुरु शुभ ग्रह होने से स्वास्थ्य सम्बन्धी सुख अच्छा रहेगा। नवम में केवल २३ रेखा हैं मध्यम से कुछ कम रेखा हैं इससे धर्म आदि सम्बन्ध से कुछ कष्ट होगा परन्तु इसमें शुभ ग्रह चन्द्र और बुध होने से शुभता को बढ़ावेंगे। इससे धर्म आदि की हानि नहीं होने पायगी।

इस प्रकार रेखाओं से साधारण प्रकार से फल का विचार होता है। यहाँ लाभ भाव में ३७ रेखा हैं व्यय में २७ ही रेखा हैं। लाभ से व्यय में कम रेखा होने से अच्छा है। लग्न में व्यय से अधिक रेखा हैं ३७ रेखा हैं इससे जातक धनवान् और भाग्यवान् रहेगा।

अवस्था के खंड त्रय विचार में कुछ मतान्तर भी है

खंड त्रय कोई भाव के अनुसार गिनते हैं :—

(१) खंड १२-१-२-३ भाव का	(१) खंड लग्न, २, ३, ४ भाव का
(२) खंड ४, ५, ६, ७ भाव का	(२) खंड ५, ६, ७, ८ भाव का
(३) खंड ९, १०, ११ भाव का	(३) खंड ९, १०, ११, १२ भाव का

परन्तु ये मत अधिक मान्य नहीं हैं। उपरोक्त मत ही मान्य है।

अष्टक वर्ग रेखाओं का फल आगे दिया है।

(४) तीनों खंड में बराबर रेखा हो तो जीवन सदा एक सा रहेगा। जिस खंड में कम रेखा हों उस भाग में सुख कम होगा। बहुत ही कम रेखा हों तो उस भाग में रोग संताप आदि से पीड़ा होगी। जिस भाग में बहुत रेखा हों वह भाग सुखदाई एवं उन्नतिकारी होगा।

अष्टक वर्ग की रेखा या शून्य पर से शुभत्व विचार

यहाँ रेखा शुभ और शून्य अशुभ बताया है।

रेखा विन्दु	शुभ अशुभ		विचार
८+०	८–०	+८/८	+१ पूर्ण शुभ अधिक
७+१	७–१	+६/८	+३/४ पौन शुभ अधिक
६+२	६–२	+४/८	+१/२ आधा शुभ अधिक
५+३	५–३	+२/८	+१/४ पाव शुभ अधिक
४+४	४–४	+०/८	+० समफल सम
३+५	३–५	–२/८	–१/४ पाव अशुभ अधिक
२+६	२–६	–४/८	–१/२ आधा अशुभ अधिक
१+७	१–७	–६/८	–३/४ पौन अशुभ अधिक
०+८	०–८	–८/८	–१ पूर्ण अशुभ अधिक

साधारण प्रकार से ८ रेखा पूर्ण शुभ फल। ६ रेखा पौन शुभ फल। ४ रेखा आधा शुभ फल। २ रेखा पाव शुभ फल ऐसे ही विन्दुओं से अशुभ फल समझना।

अर्थात किसी अटक वर्ग की राशि में पूरी ८ रेखा हो तो वहाँ पूर्ण शुभता होगी। यदि शुभ रेखा एक भी न हो पूरे ८ शून्य हो तो वहां पूर्ण अशुभता रहेगा। यदि ४ रेखा और ४ शून्य हो तो अच्छा और बुरा फल बराबर होकर सम फल होगा यदि ७

रेखा हों तो उसमें एक अशुभता आने से उस राशि में पौन शुभता की अधिकता रहेगी यदि ७ विन्दु हों तो उसमें अशुभता तो अधिक रहेगी परन्तु पूरा अशुभ फल नहीं होगा पौन अशुभ फल होगा। जहाँ+चिह्न है वहाँ शुभता अधिक रहेगी। जहाँ – ऋण चिह्न है वहाँ अशुभता अधिक रहेगी।

अब रेखाओं के अनुसार शुभाशुभ फल का विचार नीचे दिया है

(१) रेखाफल— नाना रोग, दुःख, भय, कष्ट, देशाटन।

(२) रेखाफल—मन में संताप, राज भय, चोर हानि, धन हानि।

(३) रेखाफल – मानसिक विफलता, यात्रा, शरीर कष्ट, दुःख, व्यसन।

(४) रेखाफल – समफल, सुख और दुःख, धन का लाभ और व्यय।

(५) रेखा फल—सन्तान सुख, धनागम, सन्त संगति, कल्याण, आरोग्य, नित्य सुख, विद्या लाभ।

(६) रेखा फल—यश, धन, वाहन, साहस, विजय, चित्त धन लाभ।

(७) रेखा फल—वाहन, सुख, धन एवं पद वृद्धि, पूर्ण सुख, सम्पत्ति की वृद्धि।

(८) रेखा फल—राज सन्मान, श्रेष्ठ लक्ष्मी की प्राप्ति, सब मनोरथ सिद्ध, सुख दायक समय, कार्य पूर्ण।

५ से अधिक रेखा (शुभ) जिस राशि में हो उस राशि में अपने अष्टक वर्ग में जो ग्रह हो वह सदा शुभ होता है। अल्प रेखा वाला ग्रह गोचर में दुष्ट फल देता है।

ग्रहों के अनुसार अष्टक वर्ग का रेखा विन्दु फल

१. सूर्य रेखा—जिस भाव से उत्पन्न हुई सूर्य की रेखा हो तो शत्रुओं का पराजय, सहसा सिद्धि।

'बिन्दु' अशुभ फल दायक, अधिक व्यसन करने वाला, रोग शोक देने वाला, बिना कारण राजा द्वारा उद्वेग।

२. चन्द्र रेखा—वस्त्र भूषण, भोजन प्राप्त, राजा से सम्मान, अकस्मात् उत्तम कर्म की प्राप्ति।

'विन्दु' कष्ट फल, शत्रुओं से कलह, दुष्ट स्वप्न, वित्त धन का नाश।

३. मंगल रेखा–सदा अर्थ की प्राप्ति. आरोग्यता, आयुष्य की वृद्धि, कांति की वृद्धि।

'विन्दु' सदा जठराग्नि का रोग, सिर पीड़ा, रक्त पित्त का रोग।

४ बुध रेखा– सुख और मिष्ठान्न भोजन लाभ, दान कर्म में धर्म में रत, देव द्विज और अग्नि का पूजक।

'विन्दु' भंग, शत्रुओं से कलह, दुःस्वप्न दर्शन, नित्य असमय भोजन।

५. गुरु रेखा—सदा धन सुख आदि तथा पुष्टि, स्त्री भोग दायक है शत्रु का नाश मनोत्साह अधिक, अतुल विभव वस्त्र सुदर्ण सुख आदि की वृद्धि बंधु वर्ग से सौख्य लाभ।

'विन्दु' कष्ट, धन और बुद्धि का नाश, मानसिक एवं घर की चिंता, मार्ग में दुःख, वाहन से पतन, सर्वत्र कलह, अपने ही वचनों द्वारा अपमान, शत्रुओं से द्वेष के कारण खर्च और साहस से कार्य हानि।

६. शुक्र रेखा—राज सम्मान वृद्धि, कपट का लाभ, शरीर का सुन्दर सुख, दीर्घायु, क्रीड़ा (खेल) में मग्न, ज्ञान प्राप्ति, अर्थ की सिद्धि, लक्ष्मी का लाभ, सुख सम्पत्ति की वृद्धि।

'विन्दु' शत्रु से कष्ट, धन नाश, स्त्री को पीड़ा, कलह, भूमि का नाश, बुद्धि नाश, सदा अधिक खर्च, घोड़े से गिरना, मार्ग में चोर भय आदि।

७. शनि रेखा—श्रेष्ठ फल, नौकरों के हेतु धन, कार्य सिद्धि, राजा से मित्रता, सत्पुरुषों से सम्बन्ध, भूमि की प्राप्ति दुष्ट जनों से जय प्राप्त हो, स्नान, दान, पूजन में प्रेम, राज आश्रय से मिष्टान्न भोजन खेती तथा धान्य की वृद्धि हो।

'विन्दु' कष्ट, राज से भय, बन्धुजनों में पीड़ा की वृद्धि धातु शस्त्र या दुष्टजनों से धन नाश, चित्त में उद्वेग, भूमि का नाश, कलह, बुद्धि नाश, वाहन से हीन।

इन रेखा या विन्दुओं का फल—इनकी संख्या अधिक हो तो अधिक फल होगा सख्या अल्प होगी तो अल्प फल होगा।

समुदाय रेखा अनुसार भाव फल

जिस भाव में ३० से अधिक रेखा हों वह शुभ। २५ से ३० रेखा हों तो अत्यन्त फल। २५ से कम रेखा हों तो वह भाव या राशि अशुभ है कष्ट प्रद होती है। जिस राशि में ७ रेखा या कम हो उस महीने में (उस राशि के सूर्य में मृत्यु भय हो, इस के दोष निवारण के लिये उचित दान द्वारा शांति कराये।

८ रेखा—मृत्यु संभावना।

९ रेखा—सर्प भय।

१० रेखा—शस्त्र भय।

११ रेखा—मिथ्या अपवाद का भय।

१२ रेखा—जल में डूब कर मरने का भय।

१३ रेखा—व्याघ्र आदि हिंसक जन्तु से मृत्यु भय।

१४ रेखा—मृत्यु भय या धर्म अर्थ काम की हानि, अंग पीड़ा, व्याधि।

१५ रेखा—राजभय, या बड़ी आपत्ति।

१६ रेखा—अरिष्ट भय या राजभय अंग पीड़ा, व्याधि।

१७ रेखा—रोगभय या नाश, दुःख, हानि।

१८ रेखा—कलहभय या धन हानि।

१९ रेखा—प्रवास (विदेश वास), या कुपति एवं बधु वर्ग से कष्ट।

२० रेखा बुद्धिनाश, कलह।

२१ रेखा – रोग कष्ट, हृदय में दुःख या हृदय रोग।

२२ रेखा – बंधुओं को पीड़ा, अपमान, कार्य में निष्फलता, पराजय, दीनता, बुद्धि भ्रष्ट।

२३ रेखा – स्वयं कष्ट, धर्म काम तथा अर्थ की हानि।

२४ रेखा – बन्धुओं की मृत्यु, अकस्मात धन हानि।

२५ रेखा – बुद्धि हानि, हस्तागत द्रव्य की हानि।

२६ रेखा – धन हानि, कलह, क्लेश।

२७ रेखा – धन हानि, समता दुःख सुख की समता, शुभाशुभ फल की समता।

२८ रेखा – सर्वांश में हानि या धनागम सुख, मान प्राप्ति।

२९ रेखा – अनेक चिंता से व्याकुल, या मनुष्यों में पूज्यता।

३० रेखा – धन धान्य की पूर्ण प्राप्ति, राज पूज्यता, पुण्य, सुख, मान।

३१ रेखा – धन, सुकृत और सुख प्राप्त।

३२ रेखा – विशेष सन्मान।

३३ रेखा – समस्त सिद्धि, विशेष लाभ।

३१ से ५६ तक – अधिक उत्तम फल की उत्तरोत्तर वृद्धि हो राज्य प्राप्ति कार्य सिद्धि आदि हो।

सर्व अष्टक वर्ग कुंडली पर विचार

(१) यहाँ कुम्भ में २३ रेखा=कनिष्ट फल। मीन में २६, वृष में २७, तुला में ३० रेखा है=मध्यम शुभ। कर्क ६० सिंह और मकर ३२=कुछ अधिक मध्यम से शुभ। मेष और मिथुन ३७, धन ३९=श्रेष्ठ फल। वृश्चिक ४३ का अति श्रेष्ठ फल होगा।

सर्व अष्टक वर्ग कुण्डली

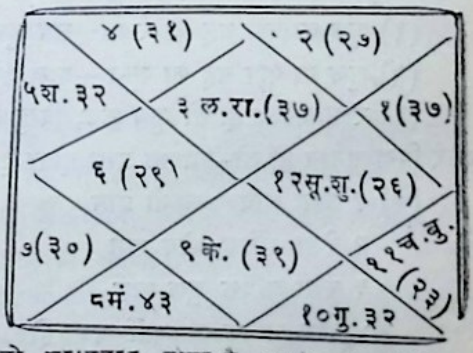

(२) लग्न में ३७ रेखा होने से भाग्यवान् होगा।

(३) सबसे लग्न की रेखा अधिक हो तो भाग्यवान् होता है सबसे कम होने से भाग्यहीन होता है।

(४) दशम से एकादश में कम रेखा होने से लाभ अल्प व्याधि अधिक हो यहाँ अधिक रेखा होने से लाभ आदि अधिक हो वहाँ दशम से लाभ में रेखा अधिक होने से शुभ है।

(५) दशम से लग्न की रेखा अधिक होने से लाभ मान आदि अधिक होगा मध्यम से मध्यम फल, हीन से भोग सम्पत्ति की हानि होती है यहाँ दशम से लग्न में अधि रेखा है शुभ है लाभजनक है।

(६) लग्न की दिशा—लग्न आदि १२ राशियों का सर्व मार्ग से पूर्व आदि क्रम से तीन-तीन राशियाँ पूर्व आदि दिशा में जानना।

जैसे पूर्व— १–१२–११ भाव
दक्षिण—१०– ९– ८ ,,
पश्चिम— ७– ६– ५ ,,
उत्तर— ४– ३– २ ,,

प्रत्येक दिशा के ३ राशियों का फल योग जहां अधिक हो उस दिशा में शुभ या लाभ। जहाँ हीन फल हो वहाँ अशुभ।

यहां लग्न से लाभ तक ३७+२७+३७=१०१ पूर्व
दशम से अष्टम ,, २६+२३+३२=८१ दक्षिण
सप्तम से पंचम ,, ३९+४३+३०=१११ पश्चिम
चतुर्थ से धन ,, २९+३२+३१=९१ उत्तर

यहाँ पश्चिम दिशा में अधिक रेखा हैं वहाँ से लाभ होगा उससे कम रेखा उत्तर की है।

यहाँ ५४ से ७५ तक क्षीण फल होता है। ७५ से ९० तक योग में मध्यम फल और ९० के ऊपर उत्तम फल होता है। यहाँ दक्षिण दिशा में मध्यम फल है। शेष दिशाओं में उत्तम फल है। उन २ दिशाओं से लाभ होगा।

(७) जिस दिशा में रेखा अधिक हो वहाँ स्वोच्च आदि गत ग्रह भी हो उस दिशा में कार्य सिद्ध होता है।

(८) धनेश जिस दिशा में हो वहाँ से धन लाभ। अष्टमेश जिस दिशा में हो वहाँ मृत्यु। वहाँ धनेश चन्द्र नवम में दक्षिण में है और अष्टमेश शनि तृतीय उत्तर में है।

अष्टक वर्ग रेखा का विशेष विचार

(१) शुक्र या पाप ग्रह की रेखा—सब शुभ फल देती है।

(२) शुभ या पाप ग्रह का शुन्य—दुःख देने वाले हैं।

(३) रेखा अधिक हो तो शुभ फल, विन्दु अधिक हो तो अशुभ फल होता है रेखा और विन्दु समान हों तो–समफल प्राप्त होता है यदि गोचर में अन्तर न होवे तब।

(४) १ रेखा अधिक–लक्ष्मी प्राप्त — १ विन्दु अधिक–उद्वेग।
२ रेखा अधिक–भोग प्राप्त — २ विन्दु अधिक–हानि।
३ रेखा अधिक–सुख प्राप्त — ३ विन्दु अधिक–रोग।
४ रेखा अधिक–चक्रवर्ती राजा हो — ४ विन्दु अधिक–मृत्यु भय।

(५) ग्रह गोचर में श्रेष्ठ हो परन्तु अष्टक वर्ग में मध्यम हो और अपनी दशा में अधम हो तो वह बहुत खराब ही होता है।

(६) अष्टक वर्ग से किसी शुभ आदि कार्य करते समय उस दिन का अष्टक वर्ग बनाकर प्रत्येक ग्रह की रेखाओं का योग करके शुभाशुभ फल का विचार होता है।

इस लिये जिस कार्य में जिस ग्रह का फल कहा है वह ग्रह जब श्रेष्ठ राशि में हो तो उस कार्य को करना। जैसे चन्द्र बल सब कार्य में देखा जाता है जब चन्द्रमा श्रेष्ठ राशि में हो तभी शुभ कार्य का आरम्भ करना। कष्टप्रद राशियों में शुभ कार्य नहीं करना।

उपनयन विवाह आदि कार्य में गुरु ग्रह की शुद्धता ली जाती है परन्तु वह भी अष्टक वर्ग में शुद्ध हो तभी ग्रहण करना गोचर शुद्धि नहीं भी हो परन्तु अष्टकवर्ग से शुद्धि हो अर्थात् उस राशि में अधिक रेखा हो तो वह समय शुद्ध समझना। अष्टकवर्ग शुद्ध हो तो गोचर शुद्ध विचारने की आवश्यकता नहीं है।

(७) जिसके समुदाय अष्टकवर्ग में दशवें भाव से एकादश भाव में अधिक रेखा हो और एकादश से व्यय भाव में अल्प रेखा हो तथा व्यय से लग्न में अधिक रेखा हो तो वह भोगवान सुखी और धनवान् होता है।

(८) जिस राशि में कम रेखा होने से अनिष्ट फल कहा है उस राशि के सम्वत्सर में जब उस राशि का मास (सौर मास) हो तथा उसी राशि में यदि चन्द्रमा आ जाय इस प्रकार कम से कम ३ ग्रहों का योग उस राशि में हो तभी पूर्वोक्त फल को (अर्थात पहिले जो सामूहिक रेखा का अच्छा या बुरा फल बता चुके हैं उसको) संभावना है। यदि उस राशि में और ग्रहों का संयोग हो जाय तब उक्त फल निश्चित रूप से समझना।

(९) जिस राशि में ३० से अधिक रेखा हो उस राशि के सम्वत्सर और मास एवं नक्षत्र में धन पुत्र तथा अनेक सुख की वृद्धि हो ४० से अधिक रेखा हो तो धन पुत्रादि प्राप्ति के साथ ही पुण्य प्रतिष्ठा एवं सम्पत्ति की भी वृद्धि होती है।

(१०) जो ग्रह उच्च, मित्र गृही हो और जो केन्द्र कोण उपचय में हो, शुभवर्ग में हो, बलवान् हो उनकी भी यदि अल्प रेखा हो तो हानि कारक हैं।

(११) जो ग्रह नीच या पाप ग्रह के वर्ग में युक्त हो जो गुलिक राशि के स्वामी के साथ हो तो वे भी यदि अधिक रेखा वाले हों तो सब काल में शुभ फल देने वाले होते हैं।

(१२) जितनी रेखा समुदाय अष्टक वर्ग कुण्डली में लग्न में हों उतने वर्ष बीतने पर वाहन, धन, पुत्र विशेष विद्या आदि प्राप्त हो यदि वह सम्पत्ति योग वाला हो।

(१३) व्यय भावेश शनि की राशि में हो और लग्न, अष्टम का स्वामी निर्बल हो तो लग्न में जितनी रेखा हों उतने वर्ष की आयु का अनुमान करना।

(१४) चतुर्थेश लग्न में और लग्नेश चतुर्थ में हो उन दोनों राशियों में यदि ३३ रेखा हों तो राजलक्ष्मी युक्त राजा हो। यदि ३०–३० ही रेखा हों तो ४० वर्ष पश्चात् अधिकार प्राप्त हो।

(१५) १–४–११ इन तीनों घर में ३० से अधिक रेखा हों तो तेजस्वी, बड़ा धनी, हो ४० वर्ष के ऊपर राज्य मिले।

(१६) २८ से ३० तक या अधिक रेखा यदि चतुर्थ और नवम राशि में हों तो २८ वर्ष के पश्चात् वाहन युक्त हो या यात्रा करे धन प्राप्त हो।

(१७) उच्च कर्क का गुरु चतुर्थ में ४० रेखा युक्त हो और लग्न में मेष का सूर्य हो तो राजा हो लक्ष घोड़ों को अपने पास रखे।

(१८) लग्न में ४० रेखा हो, धनु में गुरु, मीन में शुक्र, अपने उच्च में मंगल और कुंभ में शनि हो तो सर्व लक्षणों से युक्त सार्वभौम राजा हो।

(१९) मेषादि तीन-तीन राशि में उनके अनुसार पूर्व आदि चारों दिशाओं में अधिक रेखा वाली राशि की दिशाओं में धन आदि की वृद्धि हो।

(२०) किसी ग्रह के अष्टक वर्ग में एक भी शुभ रेखा ग्रह न हो तो गोचर में जब यह ग्रह उस राशि में आये तो मृत्युभय हो।

(२१) राशि जिसमें २५ से २८ तक शुभ रेखा हो वह मध्यम, २५ से कम रेखा शोक या दुःख उत्पन्न करती है। ३० या अधिक शुभ रेखा सदा लाभदायक है।

(२२) लग्न से १२ घरों तक सब घरों को देखो जिस-जिस भाव में अधिक रेखा हो उन भावों सम्बन्धी काम करने में अच्छा फल देगा यदि रेखा कम हों तो कष्ट होगा। इसमें ६-८-१२ घर को छोड़कर विचार करना।

(२३) लग्न से शनि तक जितने घर हैं इन दोनों के स्थानों को मिलाकर सब घर की शुभ रेखा जोड़ कर ७ का गुणा कर २७ का भाग दो लब्धि में जो प्राप्त हो उन वर्षों में जातक को रोग या कष्ट होगा।

(क) इसी प्रकार शनि से लग्न तक सब रेखा योग में ७ का गुणा कर २७ का भाग देने से लब्धि से उनके वर्ष में रोग आदि होगा।

(ख) इसी प्रकार मंगल और राहु के बीच भी गिन कर उपरोक्त क्रिया द्वारा विचार करना।

इससे खराब अनहोनी बातों का समय प्रगट होगा।

(२४) जिन घरों में शुभ ग्रह हो उनकी शुभ रेखा का योग कर ७ से गुणा कर २७ का भाग देना जो लब्धि हो उससे शुभता सूचक वर्ष प्रगट होगा उस समय जातक को संतान, धन सुख आदि प्राप्त होंगे।

(२५) जिस राशि में अधिक शुभ रेखा हैं उसमें सब शुभ काम करना उस विशेष राशि, मास भाव आदि में अधिक शुभ रेखा देख कर शुभ कार्य करना गोचर में सूर्यादि दुष्ट स्थानों में हो तो शुभ कार्य निषिद्ध है परन्तु अष्टक वर्ग के अनुसार सूर्य आदि शुद्ध हो अर्थात् इनकी अधिक रेखा हों तो शुभ कार्य करना। क्योंकि गोचर का फल स्थूल है अष्टक वर्ग का फल सूक्ष्म है अष्टक वर्ग की शुद्धि से कार्य सिद्ध होता है। अष्टकवर्ग के अनुसार जिस मास में शून्य पड़ा हो उस मास में कलह दुःख आदि होता है अतः शुभ कार्य नहीं करना।

(२६) पाप ग्रह स्वगृही है तो उस भाव के फल को बढ़ावेगा यदि शत्रु स्थान या नीच में हो तो पतन या हानि करे।

शुभ ग्रह भी यदि दुष्ट स्थान ६-८-१२ भाव में यदि उच्च का भी हो तो हानि करेगा। गत राशि का स्वामी जिस ग्रह के साथ हो वह भी अनिष्ट करता है।

परन्तु अष्टक वर्ग में रेखा अधिक हो तो शुभ फल देता है और शुभदायक ग्रह भी रेखा कम हो तो शुभ फल नहीं देते।

यदि ग्रह शुभ उच्च या स्वगृही हो अधिक रेखा हो तो फल को दुगुना करता है अन्यथा होने से उसी क्रम से हीन फल देते हैं।

(२७) जातक की कुण्डली में अन्यान्य योग हो जैसे लग्नेश धन भाव में धनेश लग्न में हो जिससे उन्नति प्रकट होती है, तो सर्वाष्टक में लग्न में जितनी रेखा पड़ती हों उतने वर्ष के पश्चात् भाग्योन्नति हो। मान लो लग्न में २१ रेखा और धन में ३० रेखा हो तो उसको उन्नति २९ या ३० वर्ष में होगी।

(२८) एकादश स्थान में एवं लग्न में बराबर रेखा हों तो रेखा तुल्य वर्ष बीतने पर राजा से मान धन और विद्या की उन्नति हो।

(२९) यदि मकर या कुम्भ लग्न हो लग्न में व्ययेश हो, लग्नेश और अष्टमेश निर्बल हो तो सर्वाष्टकवर्ग में जितनी रेखा लग्न में पड़े उतनी ही आयु हो।

(३०) सूर्य अष्टक कुण्डली में लग्न में जितनी रेखा हो उतने वर्ष में जातक की उन्नति होगी।

(३१) चन्द्र और लग्न में बराबर रेखा हो तो उतने वर्ष बीतने पर राजा से मान धन विद्या आदि प्राप्त हो।

(३२) लग्न व एकादश में ३०-३० से अधिक रेखा हो तो ४० वर्ष बाद बहुत उन्नति हो और अनेक अधिकार प्राप्त हो।

(३३) लग्न, नवम, दशम एवं लाभ में ३० रेखा से अधिक हो तो जातक सुखी एवं भाग्यवान् हो।

(३४) यदि लग्न में ३० से कम रेखा हो और तीसरे भाव में ३० से अधिक रेखा हो तो जातक उच्चाधिकारी होता है।

अष्टक वर्ग से गोचर फल विचार

(१) प्रत्येक ग्रहों को अष्टक वर्ग रेखा से गोचर में फल का विचार करने में जब वह ग्रह गोचर में किसी राशि में आता है तो उसके अष्टक वर्ग में देखना कितनी रेखा है यदि १, २ या ३ रेखा हों तो उसका फल अच्छा नहीं होगा ४ रेखा हों तो उसका फल अच्छा नहीं होगा ४ रेखा हो तो मध्यम फल होगा। ५ से अधिक रेखा हो तो उत्तम फल होगा।

जैसे सूर्य अष्टक वर्ग में कर्क में ३ रेखा पड़ी हैं इसमें गोचर में कर्क के सूर्य में अच्छा फल नहीं होगा।

(२) जिस राशि में शून्य हो एक भी रेखा नहीं जब सूर्य उस राशि में जायगा तो रोग भय अपवाद आदि होंगे।

(३) इसी प्रकार चंद्र अष्टक वर्ग द्वारा चंद्र का, मंगल अष्टक वर्ग द्वारा मंगल का गोचर फल विचार करना।

(४) गोचर या शनि जब उस राशि में आता है जिसमें रेखा नहीं है तो रोग शत्रु भय आदि उत्पन्न करता है।

(१) रेखा यदि विन्दु से कम हों तो दुःख हो दिव्य शस्त्र आदि का भय हो।

(२) जहाँ ५ रेखा से अधिक हो यहाँ शुभ फल कहना जितनी रेखा अधिक हों उतना लाभ हो।

(३) किसी ग्रह के अष्टक वर्ग से उसकी राशि से फलाफल विचारना जैसे मंगल के अष्टक वर्ग में कर्क राशि में ५ शून्य और ३ रेखा है। इसमें शुभ रेखा से २ शून्य अशुभता के अधिक हैं तो उस राशि में मंगल ३ अशुभता अधिक रहेगी। धन में ५ रेखा ३ बिन्दु हैं तो इस राशि भी ३ शुभता अधिक होने से धन का मंगल गोचर में सदा शुभ रहेगा। इस प्रकार शुभाशुभ विचार लेना। यहाँ मंगल जब २ गोचर में इन राशियों में जायगा तो इस प्रकार फल होता है—

मिथुन में रेखा ५ बिन्दु ३ शेष २ रेखा—शुभ भाग बचने से—मेष का मंगल शुभ होगा
कर्क में ३ रेखा५ बिंदु शेष २ बिन्दु–अशुभ अधिक होने से–वृष का मंगल अशुभ होगा
सिंह में ५ ,, ३ ,, शेष २ रेखा—शुभ अधिक होने से—मिथुन में शुभ होगा
कन्या में १ ,, ७ ,, शेष ६ बिन्दु—अशुभ अधिक होने से फल का सदा अशुभ होगा
तुला में १ ,, ७ ,, शेष ६ बिन्दु—अशुभ अधिक होने से तुला का सदा अशुभ होगा
वृश्चिक में ४ ,, ४ ,, शेष ० बिन्दु—शुभाशुभ सम है वृश्चिक में मध्यमफल शुभ होगा
धन में ५ ,, ३ ,, शेष २ रेखा—शुभ अधिक होने से—धन का मंगल शुभ होगा
मकर में २ ,, ६ ,, शेष ४ बिन्दु–अशुभ अधिक होने से–मकर का मंगल अशुभ होगा
कुंभ में ३ ,, ५ ,, शेष २ बिन्दु—अशुभ अधिक होने से–कुंभ का मंगल अशुभ होगा
मीन में २ ,, ६ ,, शेष ४ बिन्दु—अशुभ अधिक होने से–मीन का मंगल अशुभ होगा
मेष में ४ ,, ४ ,, शेष ० बिन्दु—सम फल होने से—मेष में मध्यमफल
वृष में ३ ,, ५ ,, शेष २ बिन्दु—अशुभ अधिक होने से–वृष का मंगल अशुभ होगा

इसी प्रकार गोचर में वह ग्रह जिस राशि में हो उस ग्रह के अष्टक वर्ग रेखा बिन्दु पर से उस का अशुभत्व का ज्ञान कर लेना।

(४) यदि वर्ष का विचार करना हो तो गुरु के अष्टक वर्ग से विचार करना
यदि मास का विचार करना हो तो सूर्य के अष्टक वर्ग से विचार करना
यदि दिन का विचार करना हो तो चन्द्र के अष्टक वर्ग से विचार करना

(५) रेखा या बिन्दु का विश्वा ज्ञान

रेखा या बिन्दु ८ है×२॥—२० विश्वा। रेखा या बिन्दु में २॥ का गुणा करने से उस का विश्वा का ज्ञान होता है। जैसे ५ रेखा×२॥—१२॥ विश्वा शुभ फल ३ बिन्दु

है ३×२॥—७॥ विश्वा अशुभ फल होगा। परन्तु जिस क्रम से रेखा या बिन्दु अष्टकवर्ग चक्र में हैं उसी क्रम से शुभ या अशुभ फल होगा।

अब अष्टक वर्ग की रेखा द्वारा जन्म कुंडली के सम्बन्ध से गोचर फल विचार करते हैं—

सम्वत् २०१८ फाल्गुन अमावस्या
मंगलवार का गोचर चक्र

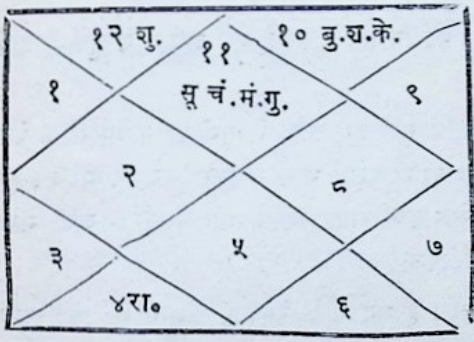

लग्न कुण्डली जन्म की

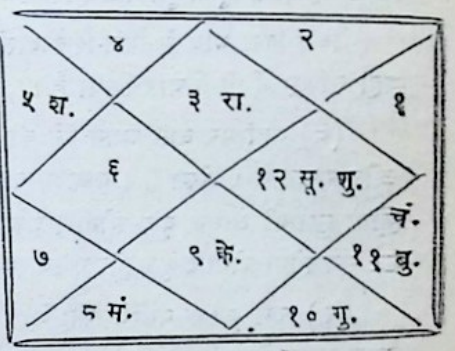

(१) गोचर में सूर्य कुंभ राशि में है। सूर्य अष्टक में कुंभ में ३ रेखा है जो कष्ट सूचक है। लग्न कुंडली में कुंभ राशि धर्म भाव में है। इससे धर्म भाव सम्बन्धी विचारणीय बातों में कष्ट या दुःख होगा।

(२) गोचर में चन्द्र कुंभ राशि में है। चन्द्र अष्टक में कुंभ में २ ही रेखा हैं जो अतिकष्ट सूचक है। जन्म में यह कुम्भ राशि धर्म भाव में है इससे धर्म सम्बन्धी विचारणीय बातों की हानि होगी और दुःख होगा।

(३) गोचर में मंगल भी कुम्भ में है। मंगल के अष्टक में कुम्भ राशि को ३ ही रेखा हैं जन्म में कुम्भ राशि धर्म भाव में है। इससे धर्म भाव की विचारणीय बातों का कष्ट होगा।

(४) गोचर में गुरु भी कुम्भ राशि में है। गुरु अष्टक में कुम्भ को ४ ही रेखा हैं जिसका फल समता सूचक है। जन्म में यह कुम्भ राशि धर्म भाव में है जिससे धर्म भाव सम्बन्धी विचारणीय बातों में समता रहेगी।

यहां उपरोक्त चारों ग्रहों का धर्म भाव सम्बन्धी बातों में कष्टप्रद फल होगा। केवल गुरु समता सूचक शेष पाप गृह का प्रभाव दुःख भय ही होगा।

(५) गोचर में शुक्र मीन का है। शुक्र के अष्टक में मीन में ४ रेखा हैं जिसका फल सम (मध्यम) है। जन्म में मीन राशि दशम भाव में है। इससे दशम भाव सम्बन्धी फल कर्म, व्यापार आदि में समता रहेगी।

(६) गोचर में बुध मकर का है। बुध अष्टक में मकर की २ ही रेखा हैं जो कष्ट-प्रद है। जन्म मे मकर राशि अष्टम भाव में है। इससे अष्टम भाव सम्बन्धी विचारणीय बातों का कष्ट ही रहेगा।

(७) गोचर में शनि मकर का है शनि अष्टक में मकर में ५ रेखा हैं जो शुभका सूचक है। जन्म में मकर राशि अष्टम में है इससे अष्टम भाव की विचारणीय बातों का सुख ही रहेगा।

यहाँ गोचर में मकर राशि में बुध और शनि दोनों हैं एक का फल खराब एक का अच्छा है इससे शुभाशुभ फल होगा।

किस-किस भाव से किन-किन बातों का विचार होता है यह अन्यत्र दे चुके हैं इससे यहाँ संक्षिप्त में ही विचार किया है।

(८) यहां पर बात ध्यान देने की है कि सूर्य अष्टक ० में सूर्य की कन्या में ६ रेखा और मकर मे ७ रेखा हैं। जन्म मे कन्या राशि चतुर्थ भाव मे है। जब कन्या का सूर्य होगा सुख की अधिक वृद्धि होगी। जन्म में मकर राशि अष्टम भाव मे है। जब मकर का सूर्य होगा रोगादि दूर होकर स्वास्थ्य ठीक रहेगा।

(९) चन्द्र अष्टक वर्ग में सिंह में ६ रेखा हैं धन में ७ रेखा हैं। जन्म में सिंह राशि भ्रातृ स्थान में है सिंह के चन्द्र में भाइयों का अति सुख होगा। धनु भाव सप्तम में है जब सप्तम में चन्द्र आयगा सप्तम भाव सम्बन्धी बातों का बहुत सुख होगा।

(१०) बुध अष्टक वर्ग में वृश्चिक में ८ रेखा हैं जन्म में यह षष्ठ भाव में है वृश्चिक का बुध हो तो शत्रुओं का नाश होकर षष्ठ भाव सम्बन्धी बातों में बहुत सुख होगा।

(११) गुरु अष्टक वर्ग मे धन मे ७ रेखा हैं। जन्म में धन राशि सप्तम में है धन का गुरु होने पर सप्तम भाव सम्बन्धी बातों का अधिक सुख देगा।

(१२) शनि अष्टक वर्ग में वृष में २ ही रेखा हैं बहुत अशुभ है। जन्म में वृषराशि व्यय स्थान में है। वृष के शनि में अधिक खर्च का कष्ट उठाना पड़ेगा।

(१३) मंगल अष्टक में कन्या में एक ही रेखा है। जन्म में कन्या राशि चतुर्थ में है इसमें कन्या के मंगल मे अति कष्ट होगा एवं चतुर्थ भाव सम्बन्धी बातों की हानि होगी।

इसी प्रकार ग्रहों के अष्टक वर्ग रेखा संख्या पर से समझ लेना कि गोचर में कौन ग्रह किस राशि में अच्छा होगा कब बुरा होगा और वह किस भाव सम्बन्ध से अच्छा या बुरा फल प्रगट करेगा।

और भी विचार

(१) जन्म समय जो राशि और नवांश हो, जब गोचर में वह उस घर में उतना अन्तर पार करके जाता है तो उस भाव का अच्छा या बुरा जैसा फल हो प्रगट करता है।

(२) किसी ग्रह के अष्टक वर्ग में सबसे अधिक रेखा हो तो देखो कि वह किस भाव में है और भाव की गिन्ती कारक ग्रह को लग्न मान कर करो।

(३) ग्रह चाहे शुभ हो या अशुभ अधिक रेखा हो तो उस भाव के फल को बढ़ाता है अर्थात् अच्छा फल देता है। यदि ग्रह कोई ऐसे भाव में जावे जिसमें शुभ रेखा न हों या बहुत कम रेखा हों तो उल्टा फल देगा अर्थात् उस भाव का बुरा फल प्रगट करेगा।

(४) चन्द्रमा या लग्न से ३–६–१०–११ घर में या अपने घर में या उच्च में या मित्र गृही या त्रिकोण में ग्रह हो अधिक रेखा होने से अष्टक वर्ग में वह पूर्ण फल देगा।

(५) परन्तु जो अपव्यय अर्थात् १,२,४,५,७,८,९,१२ स्थानों में हो या नीच में या शत्रु गृही हो तो पूर्ण फल नहीं देगा।

अष्टक वर्ग का त्रिकोण शोधन

प्रत्येक ग्रह के अष्टक वर्ग से प्राप्त शुभ रेखाओं के योग का त्रिकोण करना पड़ता है उसके पश्चात् त्रिकोण शोधन से प्राप्त संख्या का ऐकाधिपत्य शोधन करना पड़ता है।

त्रिकोण शोधन की सुगमता के निमित्त आगे बताये अनुसार त्रिकोण की ३–३ राशियों का एक चक्र बना लो जिससे भूल न होने पाये। १,५,९ पहिला, २,६,१० दूसरा, ३,७,११ तीसरा और ४–८–१२ राशियां चौथे त्रिकोण की हैं।

इस चक्र में प्रत्येक ग्रहों के अष्टक वर्ग को शुभ राशियों का योग प्रत्येक राशि के नीचे लिख दो। जैसे सूर्य अष्टक वर्ग में मिथुन में ५ रेखा हैं तो सूर्य के चक्र में मिथुन के नीचे ५ लिख दो। कर्क में ३ रेखा है तो जिस त्रिकोण में कर्क राशि हो वहाँ कर्क के नीचे ३ लिख दो। सिंह के नीचे ४ लिख दो इसीप्रकार सब राशियों के नीचे सूर्य के अंक लिख दो। पश्चात् चन्द्र आदि सब ग्रहों के अंक लग्न सहित भर दो।

त्रिकोण शोधन के लिए ३ बातों का ध्यान रखो।

(१) त्रिकोण की ३ राशियों में से किसी एक राशि की संख्या रेखा की कम हो तो उस अल्प रेखा की संख्या को उस त्रिकोण की तीनों संख्याओं में से घटा देना। इस-प्रकार घटाने से जो अंक बचे वही त्रिकोण शोधन का अंक हुआ।

(२) यदि उस त्रिकोण की रेखा संख्या में तीनों संख्या में से किसी में शून्य हो तो वह संख्या ज्यों की त्यों रहेगी। क्योंकि सबसे छोटा अंक ० जब सब में से घटाया जायगा तो कोई अन्तर नहीं आयगा वही संख्या रहेगी।

(३) यदि उस त्रिकोण में तीनों संख्या बराबर हों तो सब में ० हो जायगा क्योंकि सबसे छोटा वही अंक है सब में घटाने से ० ही बचेगा।

अभिप्राय यह है कि त्रिकोण को सबसे छोटी संख्या उस त्रिकोण की तीनों संख्याओं में से घटाने से जो बचे वही अंक त्रिकोण शोधन का हुआ। आगे चक्र देखने से सब समझ में आ जायगा।

त्रिकोण शोधन चक्र

त्रिकोण	१			२			३			४		
राशियाँ	१	५	९	२	६	१०	३	७	११	४	८	१२
१ सूर्य रेखा	५	४	४	४	६	२	५	२	३	३	७	३
—अल्प रेखा	४	४	४	२	२	२	२	२	२	३	३	३
त्रिकोण शोधन	१	०	०	२	४	०	३	०	१	०	४	०
२ चन्द्र रेखा	५	६	७	३	४	५	४	३	२	४	५	२
—अल्प रेखा	५	५	५	३	३	३	२	२	२	२	२	२
त्रिकोण शोधन	०	१	२	०	१	२	२	१	०	२	३	०
३ मंगल रेखा	४	५	५	३	१	२	५	२	३	३	४	२
—अल्प रेखा	४	४	४	१	१	१	२	२	२	२	२	२
त्रिकोण शोधन	०	१	१	२	०	१	३	०	१	१	२	०
४ बुध रेखा	४	४	४	४	४	४	६	२	४	६	८	४
—अल्प रेखा	४	४	४	४	४	४	२	२	२	४	४	४
त्रिकोण शोधन	०	०	०	०	०	०	४	०	२	२	४	०
५ गुरु रेखा	४	४	७	३	३	४	५	६	४	५	६	५
—अल्प रेखा	४	४	४	३	३	३	४	४	४	५	५	५
त्रिकोण शोधन	०	०	३	०	०	१	१	२	०	०	१	०
६ शुक्र रेखा	६	२	४	४	४	५	५	८	३	४	३	४
अल्प रेखा	२	२	२	४	४	४	३	३	३	३	३	३
त्रिकोण शोधन	४	०	२	०	०	१	२	५	०	१	०	१
७ शनि रेखा	४	३	५	१	४	५	४	४	१	२	३	३
अल्प रेखा	३	३	३	१	१	१	१	१	१	२	२	२
त्रिकोण शोधन	१	०	२	०	३	४	३	३	०	०	१	१
८ लग्न रेखा	५	४	३	५	३	५	४	३	३	४	३	७
—अल्प रेखा	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३
त्रिकोण शोधन	२	१	०	२	०	२	१	०	०	१	४	०

यहाँ सूर्य रेखा में प्रथम त्रिकोण में सबसे छोटा अंक ४ है इससे ४ को उस त्रिकोण के तीनों अंकों से घटाया तो शेष में १ सिंह और धन में ० आया यही त्रिकोण शोधन का अंक हुआ। दूसरे त्रिकोण में सबसे छोटा अंक २ होने से यहाँ के नीचे अंकों से २ घटाया तो वृष में २ कन्या में ४, मकर में० आया यही त्रि० शो० का अंक है। तीसरे त्रिकोण में सबसे छोटा २है उसे घटाया चतुर्थ में छोटा ३है उसे घटाया। इस प्रकार घटाने से जो बच रहा वही त्रिकोण शोधन का अंक आया।

ऐकाधिपत्य शोधन

अष्टक वर्ग में प्राप्त प्रत्येक ग्रहों की रेखाओं का त्रिकोण शोधन के पश्चात् ऐकाधिपत्य शोधन करना पड़ता है। जिन ग्रहों को राशियाँ (दोस्वगृह) हैं केवल उन्हीं का ऐकाधिपत्य शोधन करना पड़ता है। सूर्य चन्द्र को १-१ राशि है इससे उनको राशि का शोधन नहीं होता।

ऐकाधिपत्य शोधन के नियम ये हैं :—

(१) जिस राशि में ग्रह है वह सग्रह राशि हुई। जिस राशि में कोई ग्रह नहीं हैं वह अग्रह राशि हुई। इसका ध्यान रख कर शोधन करना पड़ता है। किसी ग्रह की २ राशियाँ हैं उनमें ही विचार करना पड़ता है कि अग्रह हैं या सग्रह और उनके त्रिकोण शोधन के पश्चात् प्राप्त अंक, दोनों एक बराबर हैं या कोई छोटा बड़ा अंक है।

(२) जब दोनों अग्रह राशि और दोनों के अंक समान हों तो दोनों अंक लुप्त हो जायँगे अर्थात् दोनों में ०-० अङ्क रखना पड़ेगा।

(३) दोनों राशि अग्रह हों उनमें एक राशि से दूसरी संख्या बड़ी हो तो=(अधिक-अल्प)=शेष को बड़ी संख्या के स्थान में रखो छोटी संख्या पूर्ववत् होगी।

(४) एक अग्रह दूसरा सग्रह दोनों के समान अंक हों तो अग्रह ० हो जायगा। सग्रह पूर्ववत् रहेगा।

(५) दोनों में से चाहे कोई एक अग्रह हो या सग्रह या दोनों सग्रह या अग्रह हों परन्तु किसी में ० हो तो दोनों में ० रख दो।

(६) अग्रह बड़ा सग्रह छोटा अंक हो तो (बड़ी संख्या–छोटी संख्या) शेष संख्या अग्रह की होगी। सग्रह पूर्ववत् रहेगा।

(७) सग्रह बड़ा अग्रह छोटा अंक हो तो अग्रह ० हो जायगा, सग्रह पूर्ववत् रहेगा।

(८ दोनों सग्रह हों तो कोई परिवर्तन नहीं होगा।

(९) यह ध्यान रहे कि सूर्य चन्द्र का ऐकाधिपत्य शोधन नहीं होता क्योंकि इनको एक-एक ही स्वराशि है। इनका जो अंक त्रिकोण शोधन से प्राप्त हुआ था वही अंक कर्क और सिंह राशि में ऐकाधिपत्य शोधन चक्र में रख देना चाहिये।

इसमें कुछ मतान्तर है—जातक पारि० में बताया है कि दोनों में से किसी में शून्य हो तो दोनों संख्या पूर्ववत् रहेगी यह उपरोक्त ५ के विरुद्ध है जैसे मेष में ० वृश्चिक में २ हैं चाहे सग्रह या अग्रह हो दोनों पूर्ववत् रहेंगे अर्थात् मेष ० वृश्चिक में २ ही ऐका० शो० में रहेगा।

ऐकाधिपत्य शोधन में मतान्तर

बृहत्पाराशरी, शंभुहोराप्रकाश आदि के अनुसार ऐकाधिपत्य शोधन करना यहाँ दिया है परन्तु इसमें कुछ का मत भिन्न है।

(३) यहाँ दोनों अग्रह राशि हों और संख्या बड़ी छोटी हो तो बड़ी से छोटी को घटाकर शेष को बड़ी संख्या के नीचे रखना छोटी पूर्ववत् रहेगी, बताया है। कई छोटी

संख्या को लुप्त कर ० रख देते हैं बड़ी संख्या को छोटी के बराबर कर देते हैं। कई छोटी के बराबर बड़ी संख्या कर देते हैं।

(५) दोनों अग्रह या दोनों सग्रह हो या एक अग्रह दूसरा सग्रह हो किसी एक में ० हो तो दोनों में शून्य हो जाना बताया गया है। परन्तु जातक पारिजात आदि में बताया है कि दोनों में से किसी में शून्य रहे तो ज्यों का त्यों रहेगा। शोधन नहीं होगा। चाहे दोनों में से किसी में या दोनों में ग्रह हो या न हो।

(६) सग्रह छोटी अग्रह बड़ी हो तो बड़े से छोटा घटाकर शेष अग्रह में रहेगा सग्रह वैसा ही रहेगा। परन्तु अन्यमत है कि छोटी संख्या दोनों में रहेगी अर्थात् सग्रह की संख्या जो हो वही संख्या अग्रह में रहेगी।

ऐकाधिपत्य शोधन चक्र

स्वामी	मंगल		शुक्र		बुध		गुरु		शनि	
राशि	१	८	२	७	३	६	९	१२	१०	११
ग्रह	०							सू०		चं०
		मं०	०	०	लग्न	०	०	शु०	गु०	बु०
सूर्य त्रि० शो०	१	४	२	०	३	४	०	०	०	१
ऐका० शो०	०	४	०	०	३	१	०	०	०	०
चन्द्र त्रि० शो०	०	३	०	१	२	१	२	०	२	०
ऐ० शोधन	०	०	०	०	१	१	०	७	०	०
मंगल त्रि० शो०	०	२	२	०	३	०	१	०	१	१
ऐका० शो०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१
बुध त्रि० शो०	०	४	०	०	४	०	०	०	०	२
ऐका० शो०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
गुरु० त्रि० शो०	०	१	०	२	१	०	३	०	१	०
ऐका० शो०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
शुक्र त्रि० शो०	४	०	०	५	२	०	२	१	१	०
ऐका० शो०	०	०	०	०	०	०	१	१	०	०
शनि त्रि० शो०	१	१	०	३	३	३	२	१	४	०
ऐका० शो०	०	१	०	०	०	०	१	१	०	०
लग्न त्रि० शो०	२	४	२	०	१	०	०	०	२	०
ऐका० शो०	०	४	०	०	०	०	०	०	०	०

यहां प्रत्येक ग्रहों की रेखाओं का त्रिकोण शोधन करने के पश्चात् जो अंक प्राप्त हुए हैं वे दिये हैं। इन्हीं अंकों का ऐका० शोधन करना है। सूर्य में राशि ८ में मंगल है ८ सग्रह में ४, मेष अग्रह में १ है। यहां सग्रह बड़ा, अग्रह छोटा है तो सग्रह के

४ पूर्ववत् रहेंगे अग्रह का १ लुप्त होकर ० हो गया। २–७ राशि में ७ में ० है तो दोनों में ० हो गया। ३–६ राशि दोनों अग्रह हैं बड़ी संख्या ४ से छोटी है ३ घटाया १ रहा यह १ बड़ी संख्या ४ के स्थान में रहा। छोटी ३ पूर्ववत् रही। ९–१२ राशि दोनों में ० होने से ० ही रहा। १०–११ राशि में से ० होने से दोनों शून्य हो गये।

चन्द्र में १–८ राशि में से १ में ० होने से दोनों में ० हो गया इसीप्रकार २–७ राशि में से १ में शून्य होने से दोनों में ० हो गया। ३–६ राशि दोनों अग्रह है एक बड़ा १ छोटा है बड़ी २ में से १ घटाया १ रहा। बड़ी के स्थान में १ हो गया छोटी संख्या १ पूर्ववत् रही। ९–१२ राशि में १ में ० होने से दोनों में ० हो गया इसीप्रकार १०–११ राशि में भी ० हो गया।

मंगल में १–८ राशि में ० होने से ० हो गया २–७, ३–६, ९–१२ राशि में भी इसीप्रकार ० हो गया १०–११ राशि दोनों सग्रह है पूर्ववत् १–१ ही रहा। बुध और गुरु में एक में ० होने से सब में शून्य हो गया। शुक्र में ९–१२ राशि में १२ सग्रह राशि में १ छोटा अंक है बड़ा २ में छोटा १ घटाया १ बचा वह अग्रह २ के स्थान में १ हो गया सग्रह १ पूर्ववत् रहा। शनि में १–८ राशि में एक अग्रह, एक सग्रह है दोनों का १–१ समान अंक है तो अग्रह ० हो गया सग्रह १ वहीं रहा। ३–६ राशि दोनों अग्रह है समान अंक ३–३ हैं तो दोनों ० हो गये ९–१२ राशि में १२ राशि सग्रह छोटी, अग्रह बड़ी है। बड़ी २ से छोटी १ संख्या को घटाया तो १ बचा वह अग्रह संख्या हुई। सग्रह १ पूर्ववत् रही। २-७ राशि और १०-११ राशि में एक स्थान में शून्य होने से दोनों में ० हो गया।

लग्न में १-८ राशि में अग्रह २ छोटी सग्रह ४ बड़ी संख्या है तो अग्रह २ का ० हो गया सग्रह ४ वैसा ही रहा। शेष में एक स्थान में शून्य होने से सब स्थानों में शून्य हो गया। इसमें कर्क और सिंह राशि के अंकों को बिना शोधन किये रख दिया है।

ऐकाधिपत्य शोधन के पश्चात् बचे हुये अंक में राशि गुणक और ग्रह गुणक द्वारा राशिपिंड और ग्रहपिंड बना कर योगपिंड बनाना पड़ता है। इसमें कर्क व सिंह के भी अंक लेना ऐका० शो० में जिनको नहीं लिया था।

राशि गुणक

राशि	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
गुणक	७	१०	८	४	१०	५	७	८	९	५	११	१२

प्रत्येक राशि को भिन्न-भिन्न बल प्राप्त होता है इसके लिए राशि गुणक द्वारा जाना जाता है। किसी राशि की ऐकाधिपत्य शोधन के पश्चात् जो रेखा बच रहे उस संख्या में उस राशि के गुणक का गुणा करना पड़ता है। जिसमें ० रेखा बची हों उसका गुणन-फल ० ही आयगा। जैसे मिथुन में सूर्य का ऐ० शो० शेष ३ है मिथुन का गुणक ८ है। इससे ३×८=२४ आया। इसे उसके नीचे रखा। कन्या का ऐका० शो० १ है कन्या का गुणक ५ है १×५=५ आया। वृश्चिक में ४ है गुणक वृश्चिक का ८ है ४×८=३२

उसके नीचे लिखा। इसी प्रकार सब अंकों में राशि के अनुसार राशि गुणक का गुणा कर रखा है।

ग्रह गुणक

ग्रह	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
गुणक	५	५	८	५	१०	७	५

जिस-जिस राशि में ग्रह हो उसके ऐका० शोधन की रेखा में जो-जो ग्रह हो उन-उन का उस अंक में गुणा कर रखना यदि एक से अधिक ग्रह एक ही राशि में हों तो प्रत्येक ग्रह के गुणक से गुणा कर सबका योग वहाँ रखना। जहाँ रेखा न हो वहाँ ० रखना। जैसे राशि ५ में शनि है, १० में गुरु, ११ में चन्द्र बुध १२ राशि में सूर्य शुक्र है इनके नीचे ऐकाधिपत्य शोधन अंक ० है इससे इन सब के नीचे शून्य रहा। केवल मंगल वृश्चिक में है जिसकी ऐका० शो० के पश्चात् ४ रेखा बची है। मंगल का गुणक ८ है ४×८=३२ अंक ग्रह गुणक का वहाँ रख दिया। शुक्र का देखो मीन राशि में सूर्य और शुक्र है ऐका० शो० अंक १ बना था। सूर्य का गुणक ५ है १×५=५। शुक्र का गुणक ७ है १×७=७, ५+७=१२ ग्रह गुणक मीन का शुक्र के अंक ० में आया इसी प्रकार सबका समझ लेना।

राशिपिण्ड बनाना

प्रत्येक राशियों के गुणक दिये हैं। यदि किसी राशि में ऐकाधिपत्य शोधन के पश्चात् जो अंक बचा हो उस अंक में उस राशि का गुणा करना सम्पूर्ण राशियों में इस प्रकार गुणा करने से जो अंक प्राप्त हो उन सब का योग करना वही राशिपिंड है। जैसे मंगल का लो, कर्क में १ रेखा बची कर्क का गुणक ४ है १×४=४, सिंह में १ बचा है सिंह का गुणक १० है १×१०=१०। मकर में १ बचा है गुणक ५ है १×५=५। कुंभ में १ है कुंभ का गुणक ११ है १×११=११। शेष में ० है। इन सब संख्या ४+१०+५+११ का योग किया=३० आया यही राशिपिंड हुआ। इसी प्रकार सबका राशिपिंड बना लेना।

ग्रहपिंड बनाना

प्रत्येक ग्रहों के गुणक दिये हैं जिन राशियों में ग्रह हो और ऐकाधिपत्य शोधन का अंक बचा हो उस अंक में उस ग्रह के गुणक से गुणा करना। उस राशि में जितने ग्रह हों सबका पृथक-पृथक गुणा कर सबका योग रखना। पश्चात् सम्पूर्ण राशियों के इस प्रकार प्राप्त अंकों का योग कर रखना वही ग्रहपिंड है। जैसे मंगल का लिया, सिंह राशि में शनि है उसमें ऐका० शो० का बचा हुआ १ अंक है। शनि का गुणक ५ है। १×५=५ मकर में गुरु है इसमें १ अंक है। गुरु गुणक १० है। १×१०=१०। कुम्भ में २ ग्रह चन्द्र और बुध हैं। कुंभ में १ अंक बचा है चन्द्र गुणक ५ है १×५=५। बुध गुणक ५ है। १×५=५ हुआ। दोनों को जोड़ा ५+५=१० आया। शेष राशियों में ऐ० शो० अंक ० है। अब सब का योग किया ५+१०+१०=२५ यह सर्व योग २५ ग्रह पिंड हुआ। इसी प्रकार प्रत्येक ग्रहों के ग्रह गुणक द्वारा ग्रहपिंड बना लेना।

योगपिंड (शोध्य पिंड)

राशि पिंड और ग्रह पिंड का योग करने से योग पिंड होता है। जैसे सूर्य में राशि पिंड ६१+ग्रह पिंड ३२ है। दोनों का योग ९३ पिंड हुआ। मंगल में राशि पिंड ३०+ ग्रह पिंड २५=५५ योग पिंड हुआ। इसी प्रकार सब ग्रहों का योगपिंड़ बना लेना।

ये सब बातें यहाँ उदाहरण स्वरूप चक्र में दी हैं जिसे देखने से समझ में आ जायगा।

अष्टकवर्ग चक्र

	राशि	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२			
	ग्रह	लग्न रा.	०	श०	०	०	मं०	के०	गु०	चं० बु.	सू० शु.	.	.	योग		पिंड
	शुभ रेखा	५	३	४	६	२	७	४	२	३	३	५	४	४८		
सूर्य	त्रिकोण शोधन	३	०	०	४	०	४	०	०	१	०	१	२	१५		
का	ऐका० शोधन	३	०	०	१	०	४	०	०	०	०	०	०	८		
	राशि गुणक	२४	.	.	५	.	३२	.	.	.	.	.	.	६१	राशि पिंड ६१	योग पि
	ग्रह गुणक	.	.	०	.	.	३२	.	०	०	०	.	.	३२	ग्रह पिंड ३२	९३ड
	शुभ रेखा	३	४	६	४	३	५	७	५	२	२	५	३	४९		
चन्द्र	त्रिकोण शोधन	२	२	१	१	१	३	२	२	०	०	०	०	१४		
का	ऐका० शोधन	१	२	१	१	०	०	०	०	०	०	०	०	५		
	राशि गुणक	८	८	१०	५	.	.	.	.	.	.	.	.	३१	राशि पिंड ३१	योग पिंड
	ग्रह गुणक	.	.	५	.	.	०	.	०	०	०	.	.	५	ग्रह पिंड ५	३६

	राशि	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२		
	ग्रह	लग्न रा.	०	श०	०	०	मं०	कि०	गु०	चं० वु.	सू० शु.	.	.	योग	पिंड
	शुभ रेखा	५	३	५	१	२	४	५	२	३	२	४	३	३९	
मंगल	त्रिकोण शोधन	३	१	१	०	०	२	१	१	१	०	०	२	१२	
का	ऐका० शोधन	०	१	१	०	०	०	०	१	१	०	०	०	४	
	राशि गुणक	.	४	१०	.	.	.	.	५	११	.	.	.	३०	राशि पिंड ३० } योग पिंड
	ग्रह गुणक	.	.	५	.	.	०	.	१०	५+५	०	.	.	२५	ग्रह पिंड २५ } ५५
	शुभ रेखा	६	६	४	४	२	८	४	४	४	४	४	४	५४	
बुध	त्रिकोण शोधन	४	२	०	०	०	४	०	०	२	०	०	०	१२	
का	ऐका० शोधन	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	.	
	राशि गुणक	.	.	.	.	.	.	.	.	.	.	.	.	.	राशि पिंड ० } योगपिंड
	ग्रह गुणक	.	.	.	.	.	.	.	.	.	.	.	.	.	ग्रह पिंड ० } ०
	शुभ रेखा	५	५	४	३	६	६	७	४	४	५	४	३	५६	
गुरु	त्रिकोण शोधन	१	०	०	०	२	१	३	१	०	०	०	०	८	
का	ऐका० शोधन	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	.	
	राशि गुणक	.	.	.	.	.	.	.	.	.	.	.	.	.	राशि पिंड ० } योगपिंड
	ग्रह गुणक	.	.	.	.	.	.	.	.	.	.	.	.	.	ग्रह पिंड ० } ०

	राशि	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२		
		लग्न	०	श०	०	०	मं०	के०	गु०	चं०	सू०	.	.	योग	पिंड
		रा.								बु.	शु.				
	शुभ रेखा	५	४	२	४	८	३	४	५	३	४	६	४	५२		
शुक्र	त्रिकोण शोधन	२	१	०	०	५	०	२	१	०	१	४	०	१६		
का	ऐ० शोधन	०	१	०	०	०	०	१	०	०	१	१	०	४		
	राशि गुणक	.	४	.	.	.	.	९	.	.	१२	७	.	३२	राशिपिंड ३२	योगपिंड
	ग्रह गुणक	.	.	.	.	.	०	.	.	.	५+७	.	.	१२	ग्रह पिंड १२	४४
	शुभ रेखा	४	२	३	४	४	३	५	५	१	३	४	१	३९		
शनि	त्रि० शोधन	३	०	०	३	३	१	२	४	०	१	१	०	१८		
का	ऐ० शोधन	०	०	०	०	०	१	१	०	०	१	०	०	३		
	राशि गुणक	.	.	.	.	.	८	९	.	.	१२	.	.	२९	राशि पिंड २९	योगपिंड
	ग्रह गुणक	.	.	.	.	.	८	.	.	.	५+७	.	.	२०	ग्रह पिंड २०	४९
	शुभरेखा	४	४	४	३	३	७	३	५	३	३	५	५	४९		
लग्न	त्रि० शोधन	१	१	१	०	०	४	०	२	०	०	२	२	१३		
का	ऐ० शोधन	०	१	१	०	०	४	०	०	०	०	०	०	६		
	राशि गुणक	.	४	१०	.	.	३२	.	.	.	.	.	.	४६	राशि पिंड ४६	योगपिंड
	ग्रह गुणक	.	.	५	.	.	३२	.	.	.	.	.	.	३७	ग्रह पिंड ३७	८३

जातक परिजात के मत से ऐकाधिपत्य शोधन करना

त्रिकोण शोधन में कोई अन्तर नहीं है परन्तु ऐकाधिपत्य शोधन में कुछ अन्तर है। यहाँ ऐका० शो० के नियम फिर से दिये जाते हैं।

(१) दोनों अग्रह समान अंक—दोनों के अंक लुप्त होंगे ०—० होगा।

* (२) दोनों अग्रह अंक भिन्न हों— छोटी के बराबर बड़ी संख्या कर देना।

(३) एक अग्रह दूसरा सग्रह—समान अंक=अग्रह ० होगा। सग्रह पूर्ववत्।

* (४) किसी में ० हो चाहे अग्रह या सग्रह हो परिवर्तन नहीं होगा।

* (५) अग्रह बड़ा सग्रह छोटा — छोटी संख्या के बराबर दोनों में रहेगा।

(६) सग्रह बड़ा अग्रह छोटा—सग्रह पूर्ववत् रहेगा। अग्रह लुप्त ० होगा।

(७) दोनों सग्रह परिवर्तन नहीं होगा।

* चिह्न में पूर्व बताये नियम से अन्तर है।

ऐकाधिपत्य शोधन चक्र

स्वामी	मंगल	शुक्र	बुध	गुरु	शनि			
राशि	१ ८	२ ७	३ ६	९ १२	१०	११		
ग्रह	. मं.	. .	लग्न .	. सू.	गु.	चं.	शु.	बु.
सूर्य त्रि० शो०	१ ४	२ ०	३ ४	०	०	०	१	
ऐका० शो०	० ४	२ ०	३ ३	०	०	०	१	
चन्द्र त्रि० शो०	० ३	० १	२ १	२	०	२	०	
ऐका० शो०	० ३	० १	१ १	२	०	२	०	
मंगल त्रि० शो०	० २	२ ०	२ ०	१	०	१	१	
ऐका० शो०	० २	२ ०	३ ०	१	०	१	१	
बुध त्रि० शो०	० ४	० ०	४ ०	०	०	०	२	
ऐका० शो०	० ४	० ०	४ ०	०	०	०	२	
गुरु त्रि० शो०	० १	० २	१ ०	३	०	१	०	
ऐका० शो०	० १	० २	१ ०	३	०	१	०	
शुक्र त्रि० शो०	४ ०	० ५	२ ०	२	१	१	०	
ऐका० शो०	४ ०	० ५	२ ०	१	१	१	०	
शनि० त्रि० शो०	१ १	० ३	३ ३	२	१	४	०	
ऐका० शो०	० ०	० ३	० ०	१	१	४	०	
लग्न त्रि० शो०	२ ४	२ ०	१ ०	०	०	२	०	
ऐका० शो०	० ४	२ ०	१ ०	०	०	२	०	

यहां सूर्य में मंगल सग्रह बड़ा अग्रह छोटा तो सग्रह ४ पूर्ववत् रहा अग्रह ० हो गया। शुक्र एक में ० है। पूर्ववत् रहा। बुध दोनों अग्रह भिन्न अंक तो छोटा ३६ बराबर दोनों में कर दिया। शनि एक में ० है पूर्ववत् रहा।

चन्द्र में—मंगल एक में ० है पूर्ववत् रहा। शुक्र का भी एक में ० होने से पूर्ववत् रहा बुध का दोनों अग्रह भिन्न अंक तो छोटी के बराबर दोनों में १ रखा गुरु और शुक्र दोनों में एक-एक शुग्य होने से पूर्ववत् रहा।

मंगल में मंगल, शुक्र, बुध, गुरु में एक में ० होने से सब पूर्ववत् रहा शनि की दोनों राशियाँ सग्रह होने से पूर्ववत् रहा।

बुध में—सबमें एक-एक शून्य होने से सब अंक पूर्ववत् रहे।

गुरु में—सब में एक-एक शून्य होने से सब अंक पूर्ववत् रहे।

शुक्र में—मंगल शुक्र बुध और शनि की राशियों में ० होने से पूर्ववत् रहे गुरु की राशियों में सग्रह मीन छोटा अग्रह बड़ा है तो छोटी संख्या १ के बराबर दोनों में १ कर दिया।

शनि में—मंगल का दोनों में समान अग्रह प्रदान अंक होने से दोनों में ० हो गया। शुक्र में ० होने से, व शनि में भी एक स्थान में ० होने से पूर्ववत् रहा बुध में दोनों अग्रह समान अंक होने से दोनों में ० हो गया।

गुरु में मीन सग्रह छोटा अग्रह बड़ा है दोनों में छोटा अंक १ के बराबर १ हो गया।

लग्न में—मंगल की राशियों में सग्रह वृश्चिक बड़ा, अग्रह छोटा है तो अग्रह २ का ० हो गया सग्रह का ४ पूर्ववत् रहा। शेष ग्रह की राशियों में १-१ शून्य होने से पूर्ववत् रहा।

इन सबको आगे एक चक्र बना कर रखा। इसमें कर्क और सिंह के अंक पूर्ववत् जो त्रि० शो० से प्राप्त हुए थे रख दिये। पश्चात् राशिगुणक ग्रहगुणक निकाल कर रखा।

सूर्य का राशिगुणक—मिथुन ३× गुणक८=२४। कन्या ३× गुणक५=१५। वृश्चिक ४× गुणक८=३२। कुंभ १× गुणक११=११। वृष २× गुणक१०=२० सबका योग १०२ यह राशिपिंड सूर्य का हुआ।

सूर्य का ग्रह गुणक—वृश्चिक में मंगल ४ है × मंगल गुणक ८=३२। कुंभ में चन्द्र १×गुणक ५=५। इसी में बुध है १×बुध गुणक ५=५। ५+५=१० ग्रह गुणक हुआ और किसी में अंक नहीं है। सब का योग ४ ग्रहपिंड हुआ।

सूर्य का योग पिंड—राशि पिंड १०२+ग्रह पिंड ४२=१४४ योग पिंड हो गया।

चन्द्र का राशि गुणक—मिथुन १× गुणक ८=८। कर्क २× गुणक४=८। सिंह १× गुणक १०=१०। कन्या १×गुणक ५=५। बुध १×गुणक ७=७। वृश्चिक ३×गुणक ८=२४। धन २×गुणक ९=१८, मकर २×गुणक ५=१०। सबका योग ९० राशिपिंड।

ग्रह गुणक=सिंह शनि १×५=५। वृश्चिक में मंगल ३× गुणक ८=२४। मकर में गुरु २×गुणक १०=२०। सबका योग ग्रह पिंड ४९ हुआ।

योग पिंड—राशि पिंड ९०+ग्रह पिंड ४९=१३९ योग पिंड। इसी प्रकार शेष सब ग्रहों के अष्टक वर्ग में राशिपिंड ग्रहपिंड योग पिंड आदि निकाल कर आगे चक्र में दिया है।

अष्टकवर्ग चक्र (मतांतर से)

अष्टक वर्ग	राशि ग्रह	३ लग्न राहु	४ .	५ श	६ .	७ -	८ मं०	९ के०	१० गु०	११ चं० बु०	१२ सू० शु०	१ .	२ .	योग	पिंड		
सूर्य का	शुभ रेखा	५	३	४	६	२	७	४	२	३	३	५	४	४८			
	त्रिकोण शोधन	३	०	०	४	०	४	०	०	१	०	१	२	१५			
	ऐका० शोधन	३	०	०	३	०	४	०	०	१	०	०	२	१३			
	राशि गुणक	२४			१५		३२			११			२०	१०२	राशिपिंड	१०२	योग पिंड १४४
	ग्रह गुणक						३२			५+५				४२	ग्रह पिंड	४२	
चन्द्रमा का	शुभ रेखा	३	४	६	४	३	५	७	५	२	२	५	३	४९			
	त्रिकोण शोधन	२	२	१	१	१	३	२	२	०	०	०	०	१४			
	ऐका० शोधन	१	२	१	१	१	३	२	२	०	०	०	०	१३			
	राशि गुणक	८	८	१०	५	७	२४	१८	१०	०	०	०	०	९०	राशिपिंड	९०	योग पिंड १३९
	ग्रह गुणक			५			२४		२०					४९		४९	

	राशि	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	योग	पिंड		
	ग्रह	लग्न राहु	.	श	.	.	मं०	के०	गु०	चं० बु०	सू० शु०	.	.				
	शुभ रेखा	५	३	५	१	२	४	५	२	३	२	४	३	३९			
मंगल	त्रिकोण शोधन	३	१	१	०	०	२	१	१	१	०	०	२	१२			
का	ऐका० शोधन	३	१	१	०	०	२	१	१	१	०	०	२	१२			
	राशि गुणक	२४	४	१०			१६	९	५	११			२०	९९	राशिपिंड	९९	योगपिंड
	ग्रह गुणक			५			१६		१०	५+५				४१	ग्रहपिंड	४१	१४०
	शुभ रेखा	६	६	४	४	२	८	४	४	४	४	४	४	५४			
बुध	त्रिकोण शोधन	४	२	०	०	०	४	०	०	२	०	०	०	१२			
का	ऐक० शोधन	४	२	०	०	०	४	०	०	२	०	०	०	१२			
	राशि गुणक	३२	८				३२			२२				९४	राशिपिंड	९४	योगपिंड
	ग्रह गुणक						३२			१०+१०				५२	ग्रहपिंड	५२	१४६
	शुभ रेखा	५	५	४	३	६	६	७	४	४	५	४	३	५६			
गुरु	त्रिकोण शोधन	१	०	०	०	२	१	३	१	०	०	०	०	८			
का	ऐ० शोधन	१	०	०	०	२	१	३	१	०	०	०	०	८			
	राशि गुणक	८				१४	८	२७	५					६२	राशिपिंड	६२	योगपिंड
	ग्रह गुणक						८		१०					१८	ग्रहपिंड	१८	८०

अष्टक वर्ग	राशि ग्रह	३ लग्न राहु	४	५ श	६	७	८ म०	९ के०	१० गु०	११ चं० बु०	१२ सू० शु०	१	२	योग	पिंड		
शुक्र का	शुभ रेखा	५	४	२	४	८	३	४	५	३	४	६	४	५२			
	त्रिकोण शोधन	२	१	०	०	५	०	२	१	०	१	४	०	१६			
	ऐका० शोधन	२	१	०	०	५	०	१	१	०	१	४	०	१५			
	राशि गुणक	१६	४			३५		९	५		१२	७		८८	राशिपिंड	८८	योगपिंड ११०
	ग्रह गुणक								१०		५+७			२२	ग्रहपिंड	२२	
शनि का	शुभ रेखा	४	२	३	४	४	३	५	५	१	३	४	१	३९			
	त्रिकोण शोधन	३	०	०	३	३	१	२	४	०	१	१	०	१८			
	ऐ० शोधन	०	०	०	०	३	०	१	४	०	१	०	०	९			
	राशि गुणक					२१		९	२०		१२			६२	राशिपिंड	६२	योगपिंड ११२
	ग्रह गुणक								४०		५+५			५०	ग्रहपिंड	५०	
लग्न का	शुभ रेखा	४	४	४	३	३	७	३	५	३	३	५	५	४९			
	त्रिकोण शोधन	१	१	१	०	०	४	०	२	०	०	२	२	१३			
	ऐका० शोधन	१	१	१	०	०	४	०	२	०	०	२	२	१३			
	राशि गुणक	८	४	१०			३२		१०			१४	२०	९८	राशिपिंड	९८	योगपिंड १५५
	ग्रह गुणक			५			३२		२०					५७	ग्रह पिंड	५७	

अष्टक वर्ग से विचार

१ सूर्य से—आत्मा, स्वभाव, शक्ति और पिता के दुःख सुख का विचार होता है।
२ चन्द्र से—मन, बुद्धि, प्रसन्नता और माता का विचार।
३ मंगल से—भाई, बल, गुण और भूमि का।
४ बुध से—वाणिज्य जीविका और मित्र का।
५ गुरु से—देह की पुष्टि, विद्या, पुत्र, धन सम्पत्ति का।
६ शुक्र से—विवाह, भोग, वाहन, वेश्या या अपनी पत्नी के भोग का।
७ शनि से—आयुर्दाय, दुःख, शोक, भय, हानि, जीवन का उपाय, मरण।

जन्मसमय में ग्रह जिस स्थान में हो वहाँ से गिनने पर स्थान का विचार

१ सूर्य से नवम स्थान द्वारा—पिता आदि का विचार करना।
२ चन्द्र से चतुर्थ स्थान द्वारा—माता आदि का विचार करना।
३ मंगल से तृतीय स्थान द्वारा—भाई आदि का विचार करना।
४ बुध से चतुर्थ स्थान द्वारा—पुत्र, धन आदि का विचार करना।
५ बुध से पंचम स्थान द्वारा—विद्या बुद्धि आदि का विचार करना।
६ गुरु से पंचम स्थान द्वारा—पुत्र, धन आदि का विचार करना।
७ शुक्र से सप्तम स्थान द्वारा—स्त्री आदि का विचार करना।
८ शनि से अष्टम स्थान द्वारा—आयु आदि का विचार करना।

जिस भाव का फल विचारना हो उस भाव की रेखा संख्या में उस ग्रह के अष्टक-वर्ग के योग पिंड से गुणा कर २७ का भाग देना जो शेष बचे अश्विनी को आदि लेकर उस संख्या के नक्षत्र पर जब शनि जायगा उस समय उस भाव की हानि होगी या उस भाव सम्बन्धी बातों का कष्ट होगा।

या उस नक्षत्र के त्रिकोण (१० वां या १९ वां नक्षत्र) में जब शनि जावे तब कष्ट होगा।

सूर्य के अष्टकवर्ग से विचार

(१) सूर्य जिस राशि में हो उस राशि को पितृ गृह कहते हैं। सूर्य के अष्टकवर्ग से पिता का विचार होता है।

(२) जन्म में सूर्य लग्नगत हो वह नीच या शत्रु गृही हो उसमें सूर्य की २-३ रेखा हो तो जातक रोगी हो।

परन्तु लग्नस्थ सूर्य उच्च या स्वगृही हो उस राशि में ५ या अधिक रेखा हों तो वह राजा तुल्य हो और दीर्घायु हो।

(३) यदि सूर्य केन्द्र या त्रिकोण गत हो उस राशि पर ५ रेखाएँ पड़ी हों तो जातक या उसके पिता की मृत्यु ३५ वें वर्ष में होती है।

सूर्य स्थिर राशि में ६ रेखा हो=२२ वर्ष में मृत्यु। ७ रेखा=३० वर्ष में। ८ रेखा ३६ वर्ष में मृत्यु हो।

ऐसे योगों में अग्नि जल, पर्वत या श्मशान द्वारा मृत्यु होती है।

(४) अन्य मत है कि सूर्य पंचम या नवम घर में हो सूर्यअष्टक० में उस राशि में जितनी रेखा हों उस संख्या की अवस्था में जातक के पिता की मृत्यु हो जैसे १ रेखा हो तो १ वर्ष में २ रेखा हो तो २ वर्ष में आदि।

(५) सूर्य केन्द्र में मित्रगृही हो और उसकी राशि में केवल ३, ४, ५ रेखाएँ हों तो उसके पिता को १७ वें वर्ष में अति क्लेश होता है कभी मृत्यु भी हो जाती है।

(६) सूर्य पंचम में हो उस राशि में ८ ही रेखा हों और लग्न से राहु नवम हो तो जातक के ५ वर्ष की अवस्था में ही उसके पिता की मृत्यु हो जाती है।

(७) सूर्य लग्न से तीसरे हो उस राशि में ३ या ४ रेखा हों और यदि लग्न से नवम स्थान में कोई पाप ग्रह हो तो जातक के २० वर्ष पूर्व ही उसके पिता की मृत्यु हो।

(८) सूर्य केन्द्र में हो या ९ वा १२ वीं राशि में हो और गुरु सूर्य के साथ हो, सूर्य उस सीमा के मध्य द्रेष्काण में हो और उस सूर्य की राशि में ३ से ७ तक रेखा हों तो जातक १०० योजन पृथ्वी का स्वामी होता है।

(९) सूर्य केन्द्र में हो और शनि बुध चंद्र एक साथ हों और सूर्य राशि में ५ रेखा हों तो जातक की १० वर्ष आयु के पश्चात् पिता को राज्य लक्ष्मी प्राप्त हो या बड़ा अधिकारी हो।

(१०) सूर्य राशि में रेखा शून्य हो उस राशि में जब सूर्य जाता है, उस सौर मास में कोई शुभ कार्य या मंगल कार्य विवाहादि का आरंभ करना मना है।

ये सब बातें सूर्य अष्टकवर्ग में गोचर के सूर्य की राशि की रेखा से विचारना।

सूर्य अष्टकवर्ग से पिता का विचार

जन्म समय जिस राशि में सूर्य हो उससे नवम स्थान पिता का होता है इसलिये सूर्य अष्ट० में उस राशि की अष्ट० रेखा संख्या में उस ग्रह के योगपिंड से गुणाकर २७ का भाग देना। जो शेष बचे अश्विनी से गिनकर उस नक्षत्र में जब शनि जायगा तब पिता को कष्ट होगा। या उसके त्रिकोण (१-१०-१९ वें नक्षत्र में जब शनि आयेगा तब पिता या पितृ तुल्य चाचा आदि पालन करने वाले का मरण या क्लेश होगा। या अनहोनी बात होगी।

जैसे सूर्य मीन राशि में है उसकी नवम राशि वृश्चिक है। अतः सूर्य के अष्ट० में वृश्चिक राशि में देखा ७ रेखा हैं इसमें सूर्य का योगपिंड ९३ का गुणाकर २७ का भाग दिया। ७×९३=६५१÷२७=२४$\frac{३}{७}$=शेष ३ कृतिका। इससे कृतिका या उससे त्रिकोण या १० वां उत्तरा फाल्गुनी या १९ वां उत्तराषाढ़ा नक्षत्र पर जब शनि

आयगा तब पिता को क्लेश या मरण होगा। उस समय अशुभ दशा आदि हो तो मरण, शुभ दशा हो तो क्लेश होगा।

अन्य प्रकार—सूर्य की उक्त राशि अष्ट० रेखा ×योग पिंड ÷ १२=शेष राशि में या उससे त्रिकोण में जब शनि जावे तब पिता को कष्ट या मरण होगा जैसे उक्त ७ रेखा × योगपिंड ९३=६५१ ÷ १२=५४$\frac{3}{12}$=शेष ३ राशि=मिथुन या इसके त्रिकोण की राशि तुला या कुंभ राशि में जब शनि जायगा तब पिता का मरण या कष्ट होगा।

पिता का अरिष्ट काल

(१) उक्त त्रिकोण में जब शनि जायगा उस समय यदि सूर्य से चतुर्थ स्थान में राहु या वही शनि का मंगल आ जाय तो पिता की मृत्यु हो यदि उस पर गुरु शुक्र की दृष्टि न हो।

(२) लग्न या चंद्र से नवम स्थान में शनि हो और पाप ग्रह से युक्त या दृष्ट हो तो पिता का निधन हो।

(३) लग्न से चतुर्थ भावेश अनिष्ट दशा में हो तो भी पिता का मरण होता है। अक्नुल दशा में मरण नहीं होता।

(४) लग्न से चतुर्थ भाव के स्वामी का जो नवांश हो उसकी दशा में पिता आदि का मरण हो।

पितृ सुख योग—लग्न स्थान से चतुर्थेश की दशा में अधिक सुख लाभ की संभावना रहती है।

पिता का आज्ञाकारी—सुखेश लग्न या एकादश भाव में हो या चंद्र से ११ भाव में हो या दशवें भाव में हो तो जातक पिता का आज्ञाकारी होता है।

पिता के धन का सदुपयोग—पिता के जन्म लग्न या जन्म राशि से तृतीय लग्न या राशि में जन्म हो तो जातक पिता के धन का सदुपयोग करता है या पिता के धन के आश्रय में रहे।

पिता तुल्य गुण—पिता की जन्म राशि या लग्न से दशवीं राशि या लग्न में जन्म हो तो जातक पिता के तुल्य गुणवान् होता है।

पिता से श्रेष्ठ—यदि अपने जन्म लग्न से दशम स्थान का स्वामी लग्न में हो तो पिता से श्रेष्ठ होगा।

शुभ कार्य विचार—सूर्य अष्टक वर्ग में जिस राशि में अधिक अशुभ बिन्दु हों अर्थात् शुभ रेखा न हों या अल्प रेखा हों उस राशि के मास में (जब सूर्य उस राशि में जाय) और उस राशि के सम्वत्सर में (जब उस राशि में गुरु रहे) तब विवाह आदि शुभ कार्य नहीं करना।

जिस राशि में अधिक रेखा हों उस राशि में जब सूर्य हो या उसमें गुरु रहे तो शुभ कार्य करना।

पितृहा योग—पिता के जन्म लग्न से अष्टम राशि लग्न में जन्म हो या पिता के जन्म लग्न से अष्टमेश अपने जन्म लग्न में हो तो जातक पिता की मृत्यु के बाद उस घर के सब कार्य भार को सम्हाल लेता है।

रोगी हो—सूर्य शत्रु राशि या नीच नवांश में होकर लग्न में हो और ३-४ रेखा हो तो जातक रोगी हो।

दीर्घायु या राजा—सूर्य उच्च स्वगृही आदि का लग्न में हो ५ आदि रेखा हों तो दीर्घायु या राजा हो।

पिता को लक्ष्मी एवं सिद्धि – त्रिकोण एकाधिपत्य शोधन करने पर २ रेखा युक्त केन्द्र में शनि, चन्द्र, बुध, सूर्य हो तो १० वर्ष के पश्चात् जातक के पिता को सब प्रकार से सिद्धि से युक्त राजलक्ष्मी प्राप्त हो।

पितामरण जानने का अन्य प्रकार

कुण्डली में जहाँ सूर्य है उससे नवम स्थान पिता का हुआ। इस नवम स्थान से अष्टम स्थान में जो राशि हो उसकी सूर्य अष्ट० में रेखा लेकर योग पिंड का गुणाकर १२ का भाग देना जो शेष रहे उसके त्रिकोण में जब शनि जायगा तब पिता या पिता न हो तो पिता तुल्य किसी कुटुम्बी को कष्ट होगा।

जैसे सूर्य मीन में है उससे नवम वृश्चिक हुई। इस वृश्चिक राशि से अष्टम मिथुन है सूर्य अष्टक० में इस मिथुन राशि में ५ रेखा हैं। सूर्य का योग पिंड ९३ है। ९३×५=४६५÷१२=३८$\frac{६}{१२}$=शेष ९ धनराशि पर या इसके त्रिकोण की मेष या सिंह राशि में जब गोचर में शनि जायगा तो पिता को या पिता न हो तो पितृ तुल्य कुटुम्बी को कष्ट होगा।

जातक की मृत्यु

सूर्याष्ट० में लग्न से अष्टम स्थान की रेखाओं को सूर्य योगपिंड से गुणाकर १२ का भाग दो जो शेष रहे उस मास में या उससे त्रिकोण राशि के मास में गतायु होने पर जातक की मृत्यु होती है।

जैसे कुण्डली में लग्न से अष्टम स्थान में मकर राशि है। मकर राशि में सूर्य अष्ट० की २ रेखा हैं २×९३ योग पिंड=१८६÷१२=१५$\frac{६}{१२}$=शेष ६ कन्या राशि या इसके त्रिकोण की राशि मकर या वृष में जब सूर्य होगा तब मृत्यु संभव है।

पिता की मृत्यु का समय

सूर्य केन्द्र या कोण में हो ६, ५, ७, ८ रेखा हों तो क्रमशः २२, २५, ३०, ३६ वर्षों में पिता की मृत्यु हो।

चन्द्र का अष्टकवर्गानुसार फल

चन्द्रमा के चतुर्थ स्थान से माता घर ग्राम आदि का विचार होता है।

(१) चन्द्रमा से चतुर्थ भाव की राशि की शुभ रेखाओं में चन्द्र के योगपिंड का

गुणा कर २७ का भाग देना-शेष जो नक्षत्र हो उसमें या उसके त्रिकोण के नक्षत्र में जब शनि जावे तब माता की हानि या उस त्रिकोणमें जहां दशा का शून्य भाग हो माता की हानि कहना।

जैसे चन्द्र कुम्भ में है उससे चौथे में वृष राशि है। चंद्र अष्टक० में वृष राशि में ३ रेखा है। चन्द्र का योग पिंड ३६ है। ३६×३=१०८÷२७=४$\frac{०}{२७}$=२७ शेष० नक्षत्र= रेवती। रेवती का त्रिकोण १० वां आश्लेषा, १९वां ज्येष्ठा है इन नक्षत्रों में जब शनि गोचर में जायगा तब माता की हानि या कष्ट होगा माता के अभाव में माता के तुल्य को कष्ट होगा।

(२) चन्द्रमा से चतुर्थ स्थान से अष्टम स्थान में जो राशि हो उसकी रेखा को योग पिंड से गुणा कर १२ का भाग देना जो शेष बचे उस राशि का उसके त्रिकोण में जब शनि जावे तब माता को कष्ट होता है।

जैसे चन्द्र से चतुर्थ में वृष राषि है। इस वृष राशि से अष्टम में घन राशि है। चंद्र अष्ट० में घन राशि में ७ रेखा हैं। चन्द्र का योगपिंड ३६ है ३६×७=२५२÷१२= २१$\frac{०}{१२}$=शेष ० मीन राशि आई इसके त्रिकोण में कर्क और वृश्चिक राशि है। इन राशियों में गोचर में जब शनि जायगा तब माता को कष्ट होगा।

(३) यदि उसी समय अभ्यन्तर चन्द्रमा स्थित राशि से या लग्न से चतुर्थ में मंगल या शनि गोचर में पड़ता हो या चन्द्रमा या लग्न से चतुर्थ स्थान पर मंगल व शनि की दृष्टि हो तो माता की मृत्यु होती है।

यदि जातक की माता न हो तो स्वयं जातक को इससे मृत्यु भय होता है। या देशान्तर में गमन करने से वहीं मृत्यु होती है।

(४) जन्म का चन्द्र यदि सप्तम या अष्टम या द्वादश स्थान में हो और चंद्र स्थिति राशि में चन्द्र अष्ट० में ३ या कम रेखा हों तो बाल्यावस्था में माता की मृत्यु हो या माता जीवन पर्यन्त रोगी रहे।

(५) जन्म का चन्द्र केन्द्र में हो या द्वादश स्थान में हो और चन्द्र स्थित राशि में चन्द्र अष्ट ० में ३ या कम रेखा हों तो जातक के छठे वर्ष माता की मृत्यु होती है।

(६) चन्द्रमा से ४–८ भाव में मंगल, ५-९ भाव में सूर्य हो तो माता का वियोग हो लग्न से ऐसा योग हो तो पिता का मरण कहना।

चद्र का अष्टक वर्ग फल

(१) जन्म का चंद्र लग्न में हो और चन्द्र अष्ट० में चन्द्र स्थित राशि में यदि १,२ या ३ रेखा पड़े तो जातक निर्बल और रोगी होता है कभी क्षय रोग भी हो जाता है।

(२) चन्द्र लग्न में हो और चन्द्रमा के साथ यदि २ या ३ ग्रह बैठे हों तथा उस चन्द्र स्थित राशि में २ या ३ रेखा चन्द्र अष्ट० में हों तो जातक की मृत्यु ३७ वें वर्ष में हो।

(३) जन्म का चन्द्र त्रिकोण या लाभ भाव गत क्षीण, शत्रुगृही या नीच हो और चन्द्र अष्ट० में उस राशि की २-३ रेखा हों तो चन्द्र स्थित भाव की हानि होती है अर्थात् पंचम स्थान में चन्द्र हो तो पुत्र की हानि, लाभ में हो तो लाभ की हानि आदि होती है। यदि उपरोक्त योग में चन्द्रमा क्षीण न हो और ४ या अधिक रेखा हों तो चंद्र स्थित राशि का फल अच्छा होगा। भाव फल की वृद्धि होगी।

(४) लग्न में क्षीण चन्द्र हो चन्द्र स्थित राशि में चन्द्र के अष्ट० में ३ या ३ से कम रेखा हों तो दमा की बीमारी हो।

(५) चन्द्र केन्द्र में हो चन्द्र अष्ट० में उस राशि को ८ रेखा मिली हों तो वह विद्वान्, धनी, माननीय, बली, ख्यातियुक्त नृपतुल्य होता है।

(६) चन्द्र अष्ट० की किसी राशि में सबसे अधिक रेखा हो। और किसी अन्य पुरुष का जन्म उसी राशि में हो तो उससे किसी प्रकार का सम्बन्ध करने या मित्रता करने से अति शुभदायक होता है। ऐसों के साथ व्यापार आदि करने से लाभ होता है।

(७) चन्द्रमा से अष्टम भाव का स्वामी जिस नक्षत्र में हो उसके त्रिकोण के नक्षत्र में रोग दुःख आदि होता है। जैसे चन्द्रमा कुंभ राशि में है उससे अष्टम कन्या राशि हुई। कन्या का स्वामी बुध है यह पूर्वभाद्रपद में है तो इसमें या इसके त्रिकोण के नक्षत्र पुनर्वसु और विशाखा में व्याधि दुःख आदि होंगे। इसमें शुभ काम न करना।

(८) चन्द्र से गिनने पर चतुर्थ के स्वामी या अष्टम के स्वामी का नवांश निकालो जब इस स्थान में या इससे त्रिकोण में सूर्य जावे तब माता की हानि संभव है।

इसी प्रकार पिता की मृत्यु का विचार लग्न से करना।

मंगल के अष्टकवर्ग से फल विचार

मंगल के अष्टकवर्ग से भाई, पराक्रम और धैर्य का विचार होता है मंगल जिस राशि में बैठा हो उस राशि से तीसरे स्थान से भाई का विचार होता है।

(१) इस तीसरे स्थान से एवं इस तीसरे स्थान के अष्टम स्थान से भाई के कष्ट का विचार करने को उस स्थान की रेखा से मंगल के अष्टकवर्ग योगपिंड से गुणा कर २७ का भाग देना शेष नक्षत्र या उसके त्रिकोण में गोचर में जब शनि आवे तब भाई को कष्ट होगा या योगपिंड और उक्त राशि रेखा ÷१२=शेष राशि या उसके त्रिकोण में जब शनि आवे तब भ्रातृ कष्ट होगा। जैसे वृश्चिक में मंगल है उससे तीसरे स्थान में मकर है। मंगल अष्टक० में मकर में २ रेखा है योग पिंड ५५ है। २×५५=११०÷२७=४$\frac{२}{३}$ =शेष २ भरणी नक्षत्र या उसके त्रिकोण के नक्षत्र पू० फा० या पू० षा० पर जब शनि गोचर में आयगा तब भाई को कष्ट होगा।

या भ्रातृ स्थान यहाँ मकर आया उससे अष्टम सिंह हुआ। सिंह में ५ रेखा है ५× योग पिंड ५५=२७५÷१२=२२$\frac{११}{१२}$=शेष ११ कुंभ राशि या इसके त्रिकोण की मिथुन या तुला राशि में जब शनि आवेगा तब भ्रातृ कष्ट होगा।

(२) त्रिकोण शोधन के पश्चात् जिस स्थान में अधिक रेखा हो उससे पृथ्वी, घर, स्त्री एवं परिवार की वृद्धि, भ्रातृ का उत्तम सुख प्रगट होता है जब मंगल उस राशि में जावे।

(३) मंगल अष्ट० में जिस राशि में हो उस राशि में ८ रेखा हों तो जिमीदार हो।

(४) मंगल लग्न, द्वितीय या दशम में हो और उस स्थान की ८ रेखा हों तो राजा हो किसी राज वंश का हो तो अवश्य राजा होता है।

(५) यदि मंगल उच्च या स्वगृही होकर लग्न, चतुर्थ, नवम या दशम में हो और उस राशि पर ८ रेखा हों तो वह लक्षाधीश बहुत धनाढ्य और राजा होता है।

(६) यदि मंगल केन्द्र में हो ९,५,१०, या ८ राशि का हो और मंगल की ४ रेखा से अधिक हो तो अतिधनी हो।

(७) मंगल दशम या लग्न में हो और मंगल की ८ रेखा हो तो धनी हो। यदि राजकुल का हो तो अवश्य राजा होता है। यदि मंगल उच्च का या स्वक्षेत्री हो तो महाराजा होता है।

(८) जन्म लग्न ४,५,९ या १० हो उसमें मंगल हो मंगल की ४ रेखा हो तो राजा तुल्य होता है।

(९) मंगल द्वितीयेश होकर षष्ठ स्थान में हो। जहाँ मंगल हो उस राशि की ६ रेखा हों तो शत्रु अधिक हों अल्पायु में ही जातक व्यभिचारी हो।

(१०) मंगल ६–८ या १२ घर में नीच का या अस्तंगत हो उसके साथ चन्द्रमा भी हो और जिस राशि में मंगल हो उसमें ६ रेखा हों तो उसका भाई नहीं होता।

(११) नीच का या अस्तंगत मंगल ६–८ या १२ भाव में हो, मंगल जहाँ हो उसकी ६ रेखा हों, चन्द्रमा लग्न से केन्द्र में हो, तथा मंगल अष्ट० में चन्द्र जहाँ हो उस राशि में ६ रेखा हो तो उसका भाई नहीं होता।

(१२) मंगल केन्द्र में या पंचम में हो मंगल जहाँ हो उस राशि में ४ रेखा हो तो उसका भाई नहीं होता।

(१३) मंगल लग्न से तीसरे स्थान में हो वहाँ जो राशि हो उसमें ४ या अधिक रेखा हो और मंगल पर शुभ ग्रह की दृष्टि भी हो तो कई भाई बहिन हों।

(१४) मंगल के साथ शनि हो उस राशि में ३ या अधिक रेखा हों तो जातक के भाइयों की मृत्यु होती है।

(१५) मंगल जहाँ हो या मंगल स्थिति राशि से पंचम या नवम स्थान पर शुभ ग्रह की दृष्टि हो और मंगल स्थिति राशि या उसके त्रिकोण को नवम पंचम राशि पर जितनी रेखायें हों उतनी संख्या जातक के भाई बहिनों की होगी। जैसे वृश्चिक का मंगल है इसके त्रिकोण में मीन और कर्क है। केवल कर्क राशि पर उसकी दृष्टि है और

किसी पर शुभ दृष्टि पूर्ण नहीं है। मंगल के अष्ट० में कर्क की ३ रेखा हैं तो ३ भाई हैं। यदि शुभ ग्रह की अर्द्ध पौन आदि दृष्टि हो तो उनका पूर्ण जीवन नहीं रहता।

(१६) मंगल १, ९ या १० राशि में नीच या शत्रु गृही न हो। मंगल की उस राशि में ४ या अधिक रेखा हो तो राज सुख भोगे।

(१७) मंगल यदि शनि से युक्त या दृष्ट हो मंगल स्थित राशि की ४ या अधिक रेखा हो तो कई ग्राम का अधिपति हो एवं दण्ड देने का अधिकारी होता है।

(१८) मंगल बुध से युक्त या दृष्ट होकर लग्न से किसी भाव में हो। मंगल स्थित राशि में ३ या कम रेखा हों तो आजन्म धन हीन हो।

(१९) मंगल चन्द्र से युक्त या दृष्ट होकर किसी भाव में हो मंगल स्थिति राशि में ४ या अधिक रेखा हों तो कई ग्रामों का अधिपति हो।

(२०) मंगल स्वगृही दशम या चतुर्थ में हो और मंगल स्थिति राशि में ४ या अधिक रेखा हों तो राज्य या किला या दुर्ग का अधिकारी या सेनापति होकर सुखमय जीवन व्यतीत करता है।

(३) उपरोक्त नियम २ का समय जानने का उदाहरण

मंगल अष्ट० में त्रिकोण शोधन के पश्चात् सबसे अधिक ३ रेखा मिथुन की हैं। भौम योगपिंड ५५ है। ५५×३=१६५÷२७=६ $\frac{3}{27}$=शेष ३ कृतिका नक्षत्र आया इसमें या इसके त्रिकोण के नक्षत्र उ०फा और उ०षा० में जब शनि आयगा तब घर भूमि आदि प्राप्त होगी स्त्री एवं कुटुम्ब की वृद्धि होगी।

बुध के अष्टकवर्ग का फल विचार

बुध से चौथे भाव में कुटुम्ब धन पुत्रादि एवं मामा का विचार होता है बुध से पंचम में मन्त्र विद्या, लिपि (लिखने की शक्ति) बुद्धि आदि का विचार होता है।

(१) बुध के चतुर्थ स्थान की रेखा×बुध योगपिंड÷२७=शेष नक्षत्र में या उसके त्रिकोण में जब शनि आये तो बंधु मित्रादि को कष्ट होता है जैसे बुध कुम्भ में है इससे चतुर्थ में वृष राशि है। बुध अष्ट० में वृष में ४ रेखा है योगपिंड० है। ४×०=०÷२७=० रेवती नक्षत्र आया। इसमें या इससे त्रिकोण की आश्लेषा और ज्येष्ठा में जब शनि आयगा तब बंधु मित्रादि को कष्ट होगा।

या योगपिंड×३ रेखा=०÷१२=० राशि मीन पर या उससे त्रिकोण कर्क या वृश्चिक पर जब शनि जायेगा तब मित्रादि को कष्ट होगा।

(२) इसी प्रकार बुध से पंचम स्थान की रेखा×बुध योगपिंड÷२७=शेष नक्षत्र में या उसके त्रिकोण के नक्षत्र में जब शनि गोचर में जायगा तब बुद्धि आदि सम्बन्ध के विषयों में कष्ट होगा या रेखा×योगपिंड÷१२=शेष राशि या उसके त्रिकोण में जब शनि जाये तब उपरोक्त बुद्धि सम्बन्धी विषयों का कष्ट होगा।

(३) बुध लग्न से केन्द्र या त्रिकोण में हो और उसमें ८ रेखा हों तो भाग्यशाली होता है। अपने जातीय व्यवसाय या विद्या में ख्याति पाता है।

(४) बुध उच्च या स्वगृही हो उस भाव में १, २ या ३ ही रेखा हो तो बुध स्थित भाव के फल की वृद्धि होती है।

(५) बुध अष्ट० में जिस राशि में सबसे अधिक रेखा हो उस राशि के सौर मास में विद्या आरम्भ करने से विद्या में पूर्ण सफलता हो या विद्या सम्बन्धी कार्यों के आरम्भ से उसमें सफलता हो।

(६) बुध अष्ट० में जिस राशि में कोई रेखा न हो उस राशि में गोचर में जब शनि जावे तब किसी धन बन्धु या ज्ञाति की मृत्यु हो और उस समय जो सुख भोग रहा हो उसका नाश हो।

(७) बुध जिस स्थान में हो उससे द्वितीय स्थान में यदि कोई रेखा न हो तो जातक गूँगा होता है। उक्त द्वितीय स्थान में ३ या कम रेखा हो तो यह सारहीन वक्ता होता है। ४ रेखा=साधारण वक्ता, ५–६ रेखा=उत्तम वक्ता हो अपने विषय का पूर्ण रूप से समर्थन कर सकता है। ७ रेखा=वार्तालाप में कुशल और प्रिय उच्चकोटि का वक्ता हो।

(८) बुध से द्वितीय भाव में अपग्रह की रेखा हो तो जातक कठोर एवं व्यंग बोलने वाला हो। सूर्य की रेखा हो तो बुद्धिमानी की बातें एवं विचार पूर्वक बातों का कहने वाला हो। शनि की रेखा हो–मिथ्यावादी हो उद्विग्न करने वाली बातें करे। मंगल की रेखा हो–झगड़ा पैदा करने वाला हो। गुरु की रेखा हो–तार्किक एवं युक्ति पूर्ण बहस में कुशल। शुक्र की–मनोहर भाषी, भाषण में प्रमाणों एवं कहावतों की झड़ी लगा देने वाला हो।

(९) इसी प्रकार कुण्डली में जन्म का चन्द्र नीच का हो या शत्रुगृही हो और ऐसे चन्द्र की बुध अष्टक वर्ग में यदि बुध से द्वितीय स्थान में कोई रेखा हो तो बात करने में लज्जा मानने वाला होता है। बोलने में व्यवस्था रहित होता है।

(१०) लग्न से द्वितीय स्थान में बुध की रेखा पड़ती हो और शुभ राशि हो तो जातक प्रायः आनन्द दायक बातों का बोलने वाला होता है।

(११) बुध ६–८–१२ भाव में हो उसमें ३ या कम रेखा हों, बुध पर किसी शुभ ग्रह की दृष्टि न हो तो आलसी और जुआड़ी हो।

(१२) बुध शुक्र के साथ ६–८ या १२ भाव में हो यदि बुध पर तीन या कम रेखा हों तो विद्या रहित हो।

(१३) बुध अ० वर्ग से बुध से चतुर्थ में शुभ रेखाओं से माया आदि की संख्या जानना।

गुरु के अष्टक वर्ग का फल

गुरु के स्थान से पंचम स्थान द्वारा ज्ञान, पुत्र, धर्म धनादि का विचार होता है एवं इस पंचम से अष्टम स्थान की रेखाओं से भी पूर्वोक्त रीति से जैसा सूर्य आदि में बताया है विचार करना।

(१) गुरु अष्टक० के जिस राशि में सबसे अधिक रेखा हो उस राशि गत लग्न में गर्भाधान होने से पुत्र को प्राप्ति होती है। जिस दिशा की सूचक वह राशि हो उस दिशा में खजाना, गौशाला, अस्तबल, हथसार, मोटर गैरिज भंडार आदि बनाने से उस स्थान में सब प्रकार की वृद्धि होती है। जैसे गुरु अष्टकवर्ग में धन में ७ रेखा, तुला में ६, वृश्चिक में ६ रेखा है धन–पूर्व। तुला–पश्चिम। वृश्चिक–उत्तर। यहाँ ३ दिशायें शुभ हैं इनमें विशेष रेखा है। सब में शुभ धन–पूर्व दिशा का है।

(२) गुरु अष्टक० में जिसमें सबसे कम रेखा हो उस राशि में जब गोचर का सूर्य जाता है उस मास में कार्य करने से निष्फलता होती है।

(३) लग्न से ६–८–१२ भाव में गुरु जिस राशि में हो उसकी ५ या अधिक रेखा हों तो वह दीर्घायु और धनी हो शत्रु पर विजय पावे।

(४) ४,९,१२ राशि का गुरु केन्द्र में या नवम में हो या किसी राशि में हो परन्तु नीच का या शत्रु गृही हो या अस्त न हो जिस राशि में गुरु हो उसकी ८ रेखा हो तो अपने यश से पृथ्वी का स्वामी, धनवान् और राजा तुल्य होता है उसकी बुद्धिमानी और शुभ गुणों की बहुत ख्याति होती है।

इस योग में गुरु के साथ चन्द्र भी हो और केवल ७ ही रेखा हों तो धनवान् हो स्त्री और बहु सन्तान का सुख हो। ६ रेखा–धनवान् वाहन आदि का सुख भोगने वाला संतान युक्त होता है। ५ रेखा–जयशील, शीलवान्। मतांतर ७–८ रेखा–स्त्री एवं धन से चिरकाल सुखी। ६ रेखा–धन वाहन आदि सुख। ५ रेखा–श्रेष्ठ स्वभाव वाला।

(५) गुरु से चन्द्र ६ या ८ स्थान में हो। गुरु अष्टक वर्ग में चन्द्र स्थिति राशि पर ३ या कम रेखा हों तो राजयोग रहने पर भी सदा ऋण ग्रस्त रहे।

(६) त्रिकोण में स्वक्षेत्री गुरु हो उस पर ३ या कम रेखा हों तो संतानों की मृत्यु हो।

(७) गुरु जिस राशि पर हो उसका स्वामी उच्च का हो गुरु अ० वर्ग में उच्च ग्रह पर ५ रेखा हों तो वह राजा या महाराजा होता है।

(८) लग्न से ६ या ८ घर में गुरु लग्नेश युक्त हो गुरु स्थिति राशि की ३ या कम रेखा हों तो आजन्म भाग्यहीन रहे।

(९) ६–८ या १२ घर में गुरु हो गुरु से ३ या पाचवें स्थान में गुरु अ० वर्ग में जितनी रेखायें हों उतनी संतान होगी।

(१०) लग्न से पाँचवें घर का स्वामी गुरु से युक्त या दृष्ट हो और पंचमेश स्थिति राशि में ४ या अधिक रेखा हों तो एक संतान, कुल की वृद्धि एवं ख्याति करने वाला हो।

(११) लग्न से पञ्चम घर का स्वामी जिस राशि में हो उस राशि का स्वामी यदि गुरु से युक्त या दृष्ट हो। पंचमेश स्थिति राशि पर ३ या कम रेखा हों तो १ संतान जातक के प्रति दुर्व्यवहार करने वाला हो।

(१२) लग्न से और गुरु के स्थान से पञ्चम स्थान में ३ या कम रेखा हों तो बहुत कम संतान हो।

(१३) गुरु से पञ्चम स्थान में जितनी रेखा हों उतनी संतान होना बताया गया है परन्तु नीच या शत्रु गृही ग्रह से तो फल ठीक नहीं होता।

(१४) गुरु और लग्न से नवमेश उच्च या स्वगृही होकर केन्द्र में हो उस पर ४ से अधिक रेखा हो तो दंड देने का अधिकारी हो।

(१५) गुरु अष्टक वर्ग में जब गोचर में उस राशि में शनि जावे जिसमें सबसे कम रेखा हैं तब उस समय जातक की मृत्यु होती है।

(१६) गुरु से पञ्चम स्थान का स्वामी जितने नवांश में हो उतनी संतान हों।

(१७) गुरु से पञ्चम भाव की रेखा × गुरु योग पिंड ÷ २७=शेष नक्षत्र या उसके त्रिकोण में जब शनि जावे, या रेखा + योगपिंड ÷ १२ शेष राशि या उसके त्रिकोण में जब शनि जावे तब संतान कष्ट होगा धर्म और विद्या की हानि होगी।

(१८) गुरु अ० वर्ग में गुरु से पाँचवें घर में जितनी शुभ रेखा हों उसमें से नीच या शत्रु घर में जितनी रेखा हो उनको घटाना जो शेष बचे उतनी संतान होगी।

(१९) गुरु अष्टक वर्ग में त्रिकोण शोधन के बाद बची शुभ रेखा जो हो उसमें पाप ग्रह की रेखा घटा देने से जो बचे उतनी संतान होगी।

शुक्र के अष्टक वर्ग का विचार

शुक्र स्थिति राशि से सप्तम स्थान द्वारा स्त्री का विचार होता है।

(१) इसी सप्तम स्थान एवं सप्तम से अष्टम स्थान में जो राशि हो उसकी रेखाओं द्वारा पूर्ववत् स्त्री के कष्ट का विचार होता है :

जैसे शुक्र मीन पर है उससे सप्तम स्थान कन्या राशि है। शुक्र अ० वर्ग कन्या की ४ रेखा हैं योगपिण्ड ४४ हैं। ४×४४= १७६ ÷ २७=६ $\frac{१४}{२७}$ = शेष १४ चित्रा में या इसके त्रिकोण धनिष्ठा और मृग० में जब शनि आयेगा तब स्त्री कष्ट होगा या ४×४४= १७६ ÷ १२ = १४ $\frac{८}{१२}$ = शेष ८ राशि वृश्चिक में या इसके त्रिकोण मीन और कर्क में जब शनि जायगा तब स्त्री को कष्ट होगा।

(२) शुक्र अष्ट० में जिस २ राशि में अधिक रेखा हो उस २ राशि में जब शुक्र गोचर में जायगा तब धन, स्त्री और भूमि का सुख लाभ होगा।

(३) शुक्र अ० वर्ग की जिस राशि में कम रेखायें हों उस राशि की दिशा में जातक स्त्री का शयन गृह बनावे तो स्त्री जातक के वशीभूत रहे। अन्यमत जिस राशि में अधिक रेखा पड़ती हों उस राशि की दिशा में गृह निर्माण करता है।

(४) केन्द्र या त्रिकोण गत शुक्र स्थिति राशि की ८ रेखा हों तो सेनापति या वाहनाधिपति हो ७ रेखा=धनाढ्य रत्नादि सम्पन्न या जन्म भर सुखी रहे। ५–६ रेखा दाम्पत्य जीवन सुखमय हो।

यदि शुक्र नीच का हो या अस्त या ६–८ या १२ भाव में हो तो कोई राजयोग होने पर भी राजयोग नष्ट हो जाता है।

(५) शुक्र मेष या वृश्चिक का हो शुभ ग्रह युत या दृष्ट हो ४ से अधिक रेखा हों. तो घनी बहुत वाहन युक्त होता है।

(६) शुक्र केन्द्र या त्रिकोण में हो मंगल से दृष्ट न हो शुक्र स्थिति राशि की ४ से अधिक रेखा हों तो अल्प अवस्था में विवाह हो। मंगल से दृष्ट होने में विवाह में विघ्न होता है।

(७) शुक्र १० या ११ राशि में हो मंगल से दृष्ट हो और शुक्र स्थिति राशि की ३ या अधिक रेखा हों तो उसकी स्त्री कुलटा होती है।

शनि अष्टक वर्ग फल

शनि के अष्टक वर्ग से आयु का विचार होता है जिस राशि में शनि हो उससे अष्टम स्थान मृत्यु स्थान कहलाता है।

(१) शनि अ० वर्ग में लग्न से शनि तक जितनी रेखाएँ हों उतने वर्ष में जातक को रोग या झगड़ा होता है।

शनि से लग्न तक जितनी रेखाएँ हों उतने वर्ष में मृत्यु, धनक्षय या कष्ट या विदेश गमन होता है।

लग्न से शनि तक और शनि से लग्न तक जितनी रेखा हों सबको जोड़ने से जो संख्या आये उतने वर्ष में मृत्यु का भय हो।

शनि अ० वर्ग में कुल ३९ रेखाएँ होती हैं उसमें शनि स्थिति राशि एवं लग्न स्थिति राशि की रेखाओं के जोड़ने से ठीक कष्ट प्रद वर्ष आयगा।

इसी प्रकार लग्न से शनि तक अर्थात् शनि स्थिति राशि तक जितनी रेखाएँ हो उनको ७ से गुणाकर २७ का भाग दो जो शेष रहे उस संख्या के नक्षत्र में गोचर में जब शनि आता है तब सुख एवं धन की हानि होती है।

जैसे शनि अ० वर्ग में लग्न से शनि स्थिति राशि तक ९ रेखा हैं। शनि योग पिंड ४९ है ४९×९=४४१÷२७=१६$\frac{९}{२७}$ शेष ९ श्लेषा नक्षत्र में जब गोचर का शनि जायगा तब सुख और धन की हानि होगी।

(२) शनि अ० वर्ग में जिस राशि में कोई रेखा नहीं है उस राशि में गोचर का शनि आदि से मृत्यु या धन हानि होती है।

(३) जन्म में शनि केन्द्र में हो। किसी केन्द्र स्थान में तुला राशि हो पर शनि तुला में न हो ऐसे शनि स्थिति राशि की ४ या कम रेखा हो तो अल्पायु हो।

(४) लग्न में बली शनि हो उसमें ५-६ रेखा हों तो धन की हानि होती है जन्म से ही दुःख भोगता है।

(५) शनि लग्न में हो रेखा न हो तो अल्पायु हो।

(६) चंद्र शुभ वर्ग और शनि नीच या शत्रुगृही हो ऐसे शनि स्थिति राशि में ५-६ रेखा हो तो दीर्घायु हो।

(७) शनि नीच या शत्रुगृही हो और शुभ दृष्ट हो, शनि पर ४ रेखा से अधिक हो तो दीर्घायु हो।

(८) शनि लग्न या पंचम स्थान में हो, नीच शत्रुगृही या अस्त हो और शनि पर ४ या ६ रेखा हो तो बहुत दासियाँ होती हैं। यह धनी और ऊंटों का मालिक होता है।

(९) शनि लग्न या पंचम में हो और शनि पर ७ रेखायें हों तो धनी हो। ८ रेखा हों तो ग्राम शहर आदि का अधिपति हो। ऐसे शनि पर ७-८ रेखा हों तो व्यापार में प्रवृत्ति होने से लक्षाधीश हो।

(१०) शनि मंगल युक्त हो, शनि पर ४-५ रेखा हो तो पुर ग्राम आदि का स्वामी हो और तंत्र मंत्र जानने वाला हो।

(११) शनि ३-६-११ घर में हो नवमेश या दशमेश हो तो राजा सदृश हो।

(१२) शनि चंद्र युक्त लग्न में हो शनि की चार रेखा हो तो ऋणग्रस्त हो।

(१३) यदि शनि चंद्र युक्त ४, ७ या १० स्थान में हो ४ रेखा हो तो राज-योग होता है।

(१४) शनि कहीं हो उस पर ३ या कम रेखा हो तो परदेश में मृत्यु हो।

(१५) चतुर्थेश से युक्त या दृष्ट शनि द्वितीय में हो शनि पर २, ३ रेखा हो तो तीर्थाटन करता है।

(१६) शनि दशम में दशमेश युक्त हो ३ रेखा हो तो जीवन के विशेष अंश में परदेशवासी रहता है।

(१७) शनि अ० वर्ग में जिस स्थान में एक भी रेखा न हो उस राशि में जब शनि गोचर में जावे उस समय सूर्य और चंद्र भी गोचर में वहाँ आवें तब बहुत अनिष्ट कारी होता है। इस समय दशा भी खराब हो तो मृत्यु भी संभव है।

(१८) शनि अ० वर्ग में जिस राशि में रेखा न हो उसमें सूर्य या शनि या दोनों जब जाते हैं तो रोग पीड़ा आदि का कष्ट होता है।

(१९) शनि से अष्टम राशि की रेखा × योगपिंड ÷ २७=शेष नक्षत्र, या उसके त्रिकोण में जो रेखा × योगपिंड ÷ १२= शेष राशि, पर उसके त्रिकोण में जब शनि जायगा तब मृत्यु संभव है या सुख एवं धन की हानि हो। जैसे सिंह पर शनि है उससे अष्टम मीन है जिसकी रेखा ३ है योगपिंड ४९ है। ४९×३=१४७ ÷ २७=५$\frac{१२}{२७}$ शेष १२ उ. फा. हुआ इसमें या इसके त्रिकोण का उ० षा० या कृतिका में जब शनि जाये तब मरण संभव है। या ३×४९=१४७ ÷ १२=१२$\frac{३}{१२}$=शेष ३ मिथुन या इसके त्रिकोण की राशि तुला और कुंभ में जब शनि गोचर में जायगा तब मृत्यु संभव है। इस समय छिद्रा दशा हो अर्थात जन्म कालीन नीच या शत्रुगृही बली ग्रह की अन्तर्दशा हो तो मृत्यु अवश्य होगी।

(२०) जिस राशि में रेखा न हो उसमें गोचर का शनि जाये और उस समय दुष्ट दशा भी हो तो मृत्यु हो।

(२१) अन्यमत–शनि के अ० वर्ग में लग्न से जो अष्टम भाव हो उसकी शुभ रेखा×शनि योगपिंड ÷ २७=शेष नक्षत्र या उसके त्रिकोण में जब शनि या गुरु जावे तब मृत्यु होगी।

लग्न के अष्टकवर्ग का फल

लग्न अष्टकवर्ग कुण्डली से सब भावों के फल जानने की यह रीति है :—

जिस भाव का फल विचारना हो उस भाव गत लग्न अ० वर्ग रेखा को लग्न अ० वर्ग योगपिंड से गुणा कर २७ का भाग देना। शेष नक्षत्र या उसके त्रिकोण में जब शनि जावे तब यह फल होता है।

(१) यदि उस भाव में कोई ग्रह न हो तो भाव फल साधारण क्लेश होता है।

(२) उसमें कोई शुभ ग्रह हो तो उस भाव के फल में अनिष्ट होने की सम्भावना नहीं होगी।

(३) उसमें कोई पाप ग्रह हो तो उस भाव के फल में क्लेश लाता है।

(४) उसमें कोई पाप और शुभ ग्रह हो तो भाव का फल मिश्रित होगा।

उदाहरण (१)–लग्न अष्ट० वर्ग में—लग्न में ४ रेखा हैं लग्न योगपिंड ८३ है। ८३×४=३३२ ÷ २७=१२$\frac{5}{27}$=शेष ८ पुष्य नक्षत्र, इसके त्रिकोण के नक्षत्र अनुराधा और उ०भा० लग्न में पाप ग्रह राहु है। इसलिये इन नक्षत्रों में गोचर का शनि जाने पर कष्ट की सूचना देगा।

(२) धनभाव—लग्न से दूसरे भाव में ४ रेखा हैं। इसमें कोई ग्रह नहीं है। उपरोक्त नक्षत्रों में शनि जायगा तो धन सम्बन्धो बातों में कुछ चिन्ता होगी।

(३) भ्रातृभाव - इसमें भी ४ रेखा हैं। इसमें शनि है। इससे जब गोचर में उपरोक्त नक्षत्रों में शनि जायगा तो भाई आदि को कष्ट होगा।

(४) चतुर्थ में—३ रेखा हैं कोई ग्रह नहीं है। ३ रेखा×योगपिंड ८३=२४९ ÷ २७=९$\frac{6}{27}$=शेष ६ आर्द्रा और इसका त्रिकोण नक्षत्र स्वाती, शतभिष पर जब शनि आयगा तो सुख, माता, भू सम्पत्ति आदि की कुछ चिन्ता होगी।

(५) पंचम में—३ रेखा हैं कोई ग्रह नहीं है तो उपरोक्त नक्षत्रों में शनि जाने पर पुत्र सम्बन्ध से नाम मात्र को कुछ चिंता होगी।

(६) षष्ठ में—७ रेखा हैं इसमें पाप ग्रह मंगल स्वगृही है ७×८३=५८१ ÷ २७=२१ $\frac{24}{27}$=शेष १४ चित्रा में या इसके त्रिकोण धनिष्ठा और मृग० में जब शनि जायगा तब शत्रु द्वारा कष्ट होगा। परन्तु मंगल स्वगृही होने से शत्रु पीड़ा बढ़ने नहीं देगा अर्थात् कष्ट न होगा।

(७) सप्तम में—३ रेखा हैं। इसमें पाप ग्रह केतु है तो स्त्री सम्बन्ध से पीड़ा देगा जबकि शनि उन नक्षत्रों में जायगा जिनका वर्णन चतुर्थ भाव के फल विचार में दिया है।

(८) अष्टम में पाँच रेखा हैं। योगपिंड ८३×५=४१५ ÷ २७=१५$\frac{10}{27}$=शेष १०

मघा या इसके त्रिकोण के नक्षत्र मूल और अश्विनी में जब शनि जायगा कोई अनिष्ट नहीं होगा। क्योंकि इसमें शुभग्रह गुरु बैठा है।

(९) नवम में—३ रेखा हैं चन्द्र और बुध इसमें है। इससे चतुर्थ भाव फल विचार में जिन नक्षत्रों का वर्णन है उनमें शनि जायगा तो भाग्य सम्बन्धी कष्ट नहीं होगा।

(१०) दशमभाव में ३ रेखा हैं सूर्य और शुक्र पाप और शुभग्रह मिश्रित होने से मिश्रित फल होगा। जब चतुर्थ में बताये नक्षत्रों में शनि जायगा तब व्यापार जीविका आदि सम्बन्ध से मिश्रित फल होगा।

(११) लग्न में ५ रेखा हैं। कोई ग्रह नहीं है। अष्टम भाव के अनुसार नक्षत्रों में जब शनि जायगा तो तब आय के सम्बन्ध में विशेष विघ्न बाधा नहीं होगी।

(१२) व्यय में भी ५ रेखा हैं कोई ग्रह नहीं है उपरोक्त नक्षत्रों में शनि जायगा तो खर्च के सम्बन्ध से विशेष कोई झंझट नहीं होगी।

संक्षिप्त में शनि के १२ भावों का फल

गोचर में शनि नक्षत्र	भाव	स्थूल फल विचार
पुष्य, अनुराधा, उ० भाद्र०	लग्न, द्वितीय, तृतीय	शारीरिक कष्ट, धन सम्बन्धी बातों की किंचित् चिंता, भाइयों के सम्बंध में कष्ट।
आर्द्रा, स्वाती, शतभिष	चतुर्थ, पंचम, सप्तम, नवम, दशम	सुख भू-संपत्ति मातृ सुख, संतान सम्बंध से किंचित चिंता होगी, स्त्री को कष्ट, भाग्य में साधारण व्यापार जीविका सम्बन्धी कुछ चिन्ता होगी।
चित्रा, धनिष्ठा, मृग०	षष्ठ	शत्रु द्वारा विशेष कष्ट नहीं।
मघा, मूल, अश्विनी	अष्टम, लाभ व्यय	आयु सम्बन्ध से कोई अनिष्ट नहीं होगा लाभ में विशेष बाधा नहीं होगी। और विशेष खर्च की झंझट नहीं होगी।

उपरोक्त भाव की रेखा × योग पिंड ÷ १२=शेष राशि या उसके त्रिकोण में शनि आवे तब उस समय भी उपरोक्त फल का विचार करना।

अष्टक वर्ग से भावफल विचार

(१) जिस भाव का फल विचारना हो उस भाव की राशि गत रेखा×योग-पिंड ÷ १२ शेष राशि या उसके त्रिकोण की राशि में जब शनि जाता है तब उसका अनिष्ट फल प्रगट होता है यदि उसमें कोई ग्रह नहीं है तो लेश मात्र अनिष्ट होता है। यहाँ शुभ यह हो तो अनिष्ट नहीं होता। पाप ग्रह हो तो पूर्ण अनिष्ट होता है पाप और शुभ ग्रह वहाँ हो तो मिश्रित फल होगा। इस प्रकार लग्न अष्टक वर्ग से सब भाव के फल का विचार होता है।

(२) अष्टमेश जिस राशि में हो उस राशि के त्रिकोण शोधित रेखा को अष्टम स्थान की रेखाओं से गुणाकर १२ का भाग देने से जो शेष बचे उस राशि या उसके त्रिकोण की राशि में जब गोचर का सूर्य जाता है, तब उस सौर मास में अनिष्ट होता है जैसे अष्टमेश शनि सिंह राशि का है सिंह में लग्न अ० वर्ग में त्रिकोण शोधन के पश्चात् १ रेखा है। अष्टम स्थान में मकर राशि है उसकी ५ रेखा हैं। ५×१=५÷१२=शेष ५ सिंह है। इसके त्रिकोण में धन और मेष है इन सौर मास में (गोचर का सूर्य इन राशियों में जाने पर) अनिष्टकारी होगा।

(३) शनि के स्थान से आरम्भ करके अष्टमेश जहाँ हो उस स्थान तक की रेखाओं को जोड़कर अष्टम स्थान की रेखा से गुणाकर १२ का भाग देना जो शेष राशि आवे उसमें या उसके त्रिकोण में जब गोचर का सूर्य जाता है उन सौर मासों में अरिष्ट होता है। जैसे अष्टमेश शनि सिंह राशि में है यहाँ शनि और अष्टमेश एक ही है। केवल सिंह की रेखा ४ थी। अष्टम स्थान की रेखा ५ है। ५×४=२०÷१२=शेष ८ वृश्चिक या इसके त्रिकोण की राशि मीन और कर्क। इन सौर मासों में अरिष्ट होगा।

प्रत्येक ग्रह के अष्टक वर्ग से शुभाशुभ समय भी प्रकट होता है

लग्न से उस ग्रह तक जिसका अष्टक वर्ग है और उस ग्रह से लग्न तक रेखाओं को जोड़ने से जो समय आयगा पाप ग्रह से पाप फल शुभ ग्रह से शुभ ग्रह का समय प्रकट होगा जैसे:—

(१) सूर्य अष्ट० वर्ग में लग्न मिथुन से सूर्य स्थित राशि मीन तक ३९ रेखा हैं और सूर्य की मीन राशि से मिथुन लग्न तक १७ रेखा हैं। इन वर्षों में रोगादि फल होगा।

(२) मंगल के अ० वर्ग में लग्न मिथुन से वृश्चिक के मंगल तक २० रेखा हैं और मंगल से लग्न तक २८ रेखा हैं इन वर्षों में कष्ट शस्त्र अग्निभय आदि होगा।

(३) शनि से लग्न तक शनि अ० वर्ग में ९ रेखा हैं और शनि से लग्न तक ३७ हैं इन वर्षों में बड़ा कष्ट रोग पीड़ा आदि होगा।

(४) चन्द्र अ० वर्ग में लग्न से चन्द्र तक ३९ रेखा हैं और चन्द्र से लग्न तक १५ रेखा हैं इन वर्षों में सुख होगा, भाग्य वृद्धि होगी।

(५) बुध अ० वर्ग में लग्न से बुध तक ४२ रेखा हैं बुध से लग्न तक १७ रेखा हैं इन वर्षों में सुख होगा भाग्य वृद्धि धर्म के कार्य होंगें।

(६) गुरु अ० वर्ग में लग्न से गुरु तक ४० रेखा हैं गुरु से लग्न तक २१ रेखा हैं इन वर्षों में स्वास्थ अच्छा रहेगा रोग दूर होगा सुख होगा।

(७) शुक्र अ० वर्ग में लग्न से शुक्र तक ४२ रेखा हैं शुक्र से लग्न तक १९ रेखा हैं इन वर्षों में व्यापार आदि का सुख स्त्री सुख आदि प्राप्त होंगे।

(८) लग्न अ० वर्ग में लग्न से मंगल तक २५ रेखा हैं मंगल से लग्न तक ३५ रेखा हैं इन वर्षों में शत्रु पीड़ा रोग आदि से कष्ट होगा।

(९) लग्न अ० वर्ग में लग्न में गुरु तक ३३ रेखा और गुरु से लग्न तक २५ रेखा हैं इन वर्षों में फल शुभ होगा स्वास्थ्य अच्छा रहेगा।

इन समयों में शुभ या पाप ग्रहों के योग से फल में भी प्रभाव पड़ेगा पाप ग्रह के अष्टक वर्ग में पाप ग्रह के योग से बहुत अशुभ होगा। शुभ ग्रह के अष्टक वर्ग में शुभ ग्रहों के योग से शुभता बढ़ेगी। दोनों प्रकार के ग्रह हों तो मिश्रित फल होगा।

अरिष्ट जानना

(१) अष्टमेश जिस राशि में हो उसके त्रिकोण शोधन फल से अष्टम स्थान की शुभ रेखा से गुणा कर १२ से भाग देना शेष राशि या उसके त्रिकोण के सौर मास में अरिष्ट होगा।

इसी प्रकार मातृ पितृ भाव से उससे अष्टम स्थान की गणना कर उसके अरिष्ट का समय उपरोक्त प्रकार से निकालना।

जैसे अष्टम में मकर राशि है अष्टमेश शनि सिंह राशि में है। लग्न अष्ट० वर्ग में मकर की शुभ रेखा ५ है सिंह में त्रिकोण शोधन के पश्चात १ रेखा प्राप्त हुई है ५ × १ = ÷ १२ = शेष ५ सिंह या इसके त्रिकोण को राशि धन, मेष के सूर्य में अरिष्ट होगा।

(२) शनि से लग्न के अष्टमेश तक रेखा जोड़कर अष्टम स्थान की रेखा से गुणा कर १२ का भाग देने से जो शेष राशि या उसके त्रिकोण की राशि आवे उसमें सूर्य जाने से अरिष्ट होगा।

(३) जिस जन्म लग्न में ९, १२ राशि का राहु हो उसमें या उसके त्रिकोण में जब गोचर का गुरु आवे तब अरिष्ट संभव है। या जिस राशि में राहु युक्त गुरु हो उस राशि के त्रिकोण में जब शनि गोचर में आवे तब अरिष्ट संभव है।

(४) षष्ठेश जिस नक्षत्र में हो उस राशि नक्षत्र से त्रिकोण में जब शनि जावे तब मरण संभव है।

जैसे यहाँ षष्ठेश मंगल वृश्चिक में अनुराधा नक्षत्र में है त्रिकोण में उ० भाद्र० और और पुष्य है इनमें शनि जाने पर मरण तथा अरिष्ट संभव है। यदि प्रबल दीर्घायु योग हो तो अपने समान अन्य किसी को अरिष्ट आदि हो।

(५) चन्द्रमा से या लग्न से तीसरे उपकरण में गुरु हो तो उस अ० कोण का जो स्वामी है उसके त्रिकोण में जब शनि जावे उस वर्ष विवाद, परदेश गमन, और मृत्यु तुल्य शरीर पीड़ा होती है।

(६) अष्टमेश जिस द्वादशांश में हो उसके त्रिकोण में जब राहु जावे उस समय अष्टमेश गत राशि के त्रिकोणस्थ सूर्य में मृत्यु संभव है एवं—(स्पष्ट सूर्य की कला ५ राहु की कला बनाकर ÷ १२ राशि की कला = लब्धि अंश फलादि जो आवे उसे स्पष्ट सूर्य में जोड़ने से जो आयगा उस तुल्य सूर्य स्पष्ट में मरण संभव।

जैसे सूर्य स्पष्ट ११-५-४०-४५। राहु स्पष्ट २-८-६-३२, सूर्य की कला ३०—१४०′—४५″ ५ राहु कला ४०८६′—३२″=८२३०५८४६—१४″ । ८२३०५८४६′,—१४″÷२१६००′ (१२ राशि की कला) =३८१०′—२७″
रा० ′ ″ — रा० ′ ″ रा० ′ ″
=२—३—३०—२७+सूर्य स्पष्ट पर ११—५—४०—४५=१—५—११—१२ इस स्पष्ट पर सूर्य जाने पर मृत्यु संभव है।

(७) सूर्य स्पष्ट की कला × मंगल स्पष्ट की कला=गुणन फल ÷ १२ राशि की कला २१६००=लब्धि कला की राशि आदि बनाकर सूर्य स्पष्ट में जोड़ना। उस स्पष्ट के तुल्य सूर्य आने पर या उसके त्रिकोण राशि में सूर्य आने पर क्लेश एवं क्षय होगा।

रा० ०
जैसे सूर्य स्पष्ट ११—५—४०′—४५″ की कला २०१४०′—४५″ × भौम स्पष्ट
रा ०
७—१२—२९′-४४″ की कला १३३४९′-४४″=२६८८७७६४१′—३८″ उक्त गुणन फल
′ ′ ″ रा ० ″
÷१२ राशि की कला २१६००=१२४४८—२=६—२७—२८—२+
रा ०
सूर्य ११—५-४०′—४४″=६—३—८—४७ इनका सूर्य गोचर में होने पर क्लेश आदि होगा।

(८) लग्न के द्वादशांश के त्रिकोण में जब सूर्य जावे तब मरण संभव होगा।

(९) या अष्टमेश के त्रिकोण में जब सूर्य जावे ,, ,, ।

(१०) या अष्टमेश के त्रिकोण में जब चन्द्र जाये या अष्टमेश गत नवांश के त्रिकोण में जब चन्द्र जावे उस दिन अल्प रेखा भी हो तो मृत्यु निश्चित जानो।

(११) या ६-८-१२ भावेशों के स्पष्ट के योग करने से जो आवे उसमें जब शनि जावे या उसके त्रिकोण में शनि जावे तब मृत्यु संभव है।

(१२) निधन लग्न—जन्म लग्न स्पष्ट और चन्द्र स्पष्ट के नवांश से ६५ वें नवांश की जिस राशि में लग्न या चन्द्र हो उस समय मरण संभव है। उस समय रेखा शून्य हो और दुष्ट ग्रह की दशा हो तब उस लग्न में मृत्यु संभव है या जन्म लग्न से दूसरी या सप्तम राशि के लग्न में उक्त फल हो। एक नवांश ३-″२०′ का होता है ६४ वें
रा० ० ′
नवांश में ७—३—२० अधिक हो जाते हैं। इससे इतने जोड़ने पर ६५ वां नवांश आ जाता है।

जैसे लग्न २—२०—११—५३ है=९—२३—३१ का नवांश ५ सिंह राशि आई

+७—३—२०
९—२३—३१

चन्द्र स्पष्ट १०—२—७—५५। ५–५–२७ का नवांश ११ कुंभ राशि आई

+७—३—२०
१७—५—२७
=५—५—२७

———

अध्याय ६

गोचर विचार

गो=तारा, चर=संचार=सूर्यादि ग्रहों की दैनिक गति के भ्रमण से जो ग्रहों की स्थिति प्रकट होती है उसे गोचर कहते हैं।

जन्म कुण्डली में जो ग्रह दिये हैं वे वहाँ स्थिर हैं पंचाग के अनुसार वे ग्रह वर्तमान में कहाँ-कहाँ पर हैं इस विचार को गोचर कहते हैं।

अर्थात् जन्म चन्द्र की स्थिति के विचार से वर्तमान में ग्रहों की स्थिति के सम्बन्ध से भविष्य के फल विचार को गोचर विचार कहते हैं। जन्म राशि–जन्म समय चन्द्र जिस राशि पर हो उसे ही जन्म राशि कहते हैं।

गोचर फल का विचार

गोचर का फल विचारने को यह देखना पड़ता है कि जन्म राशि से, वर्तमान में (पंचांग के अनुसार) कौन-कौन ग्रह कौन-कौन स्थान में है जैसे किसी जन्म कुण्डली में चन्द्रमा कुम्भ राशि पर है तो उसकी जन्म राशि कुम्भ कहलाई। अब पञ्चांग देखा संवत २०१८ के कार्तिक कृष्ण अमावस्या को यहाँ दिये कुण्डली अनुसार ग्रह हैं।

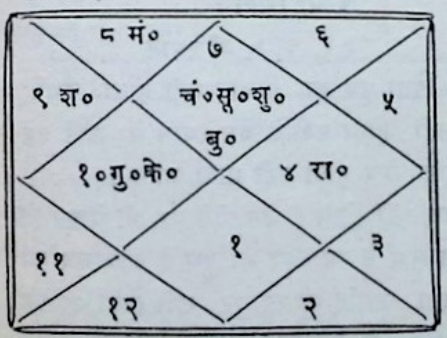

यहाँ कुम्भ ११ जहाँ दिया है वहाँ से प्रत्येक ग्रहों के स्थान देखा। वहाँ से ६ स्थान में राहु है, नवम स्थान में चन्द्र सूर्य, बुध, शुक्र है। दशम स्थान में मंगल। ग्यारहवें स्थान में शनि। बारहवें स्थान में गुरु और केतु हैं। इनकी गति के अनुसार स्थान बदलते रहते हैं। आगे दिया है कि किस स्थान में कौन ग्रह होने से क्या फल होता है उस चन्द्र से ग्रह का फल प्रकट हो जायगा कि किस ग्रह का प्रभाव इस समय अच्छा है किस का बुरा है।

कुण्डली में ग्रहों की स्थिति के अनुसार फल कहा जाता है कुण्डली में ग्रहों की स्थिति सदैव काल के लिये स्थिर कर दी जाती है परन्तु गोचर में उन ग्रहों की स्थिति बदलती रहती है। इससे कुण्डली के फल से गोचर का फल भिन्न है।

ग्रहों के शुभ स्थान

जन्म राशि से कौन ग्रह कब-कब अच्छा फल देते हैं इसका विचार नीचे दिया है—चन्द्र राशि (जन्म राशि) से इन स्थानों की गिन्ती दी है।

१ सूर्य–३, ६, १० और ११ वें घर में अच्छा फल देता है।

२ चन्द्र–१, ३, ६, ७, १०, ११ वें घर में अच्छा फल देता है।

शुक्ल पक्ष का चन्द्र=२, ५, ९ वें घर में भी अच्छा फल देता है।

३ बुध–२, ४, ६, ८, १०, ११ वें घर में अच्छा फल देता है।

४ गुरु–२, ५, ७, ९, १५ वें घर में अच्छा फल देता है।

५ शुक्र–१, २, ३, ४, ५, ८, ९, ११, १२ वें घर में अच्छा फल देता है।

इन स्थानों के अतिरिक्त इतर स्थान अशुभ हैं, जहाँ ग्रह अशुभ फल देगा।

इन शुभ स्थानों में ग्रह हो तो शुभ है परन्तु इनके वेध स्थान भी हैं जिनमें यदि ग्रह हो तो शुभत्व नाश हो जाता है। वेध स्थान नीचे दिये हैं।

वेध स्थान

ग्रह	शुभ स्थान	वेध स्थान
१ सूर्य–३, ६, १०, ११ वाँ स्थान		९, १२, ४, ५ वाँ स्थान
२ चन्द्र–१, ३, ६, ७, १०, ११ वाँ स्थान		५, ९, १२, २, ४, ८ वाँ स्थान
३ चन्द्र शुक्ल पक्ष में–२, ५, ९ वाँ स्थान		६, ४, ८ वाँ स्थान
४ बुध–२, ४, ६, ८, १०, ११ वाँ स्थान		५, ३, ९, १, ८, १२ वाँ स्थान
५ गुरु २, ५, ७, ९, ११ वाँ स्थान		१२, ४, ३, १०, ८ वाँ स्थान
६ शुक्र–१, २, ३, ४, ५, ८, ९, ११, १२ वाँ स्थान		८, ७, १, १०, ९, ५, ११, ३, ६ वाँ स्थान
७ मंगल शनि राहु ३, ६, ११		१२, ९, ५ वाँ स्थान

स्पष्टीकरण—(१) सूर्य का शनि पुत्र है पिता पुत्र का विचार नहीं होता अर्थात् सूर्य के वेध स्थान में यदि शनि हो तो अशुभ नहीं होता क्योंकि वेध स्थान में कोई ग्रह हो तो शुभत्व मिट जाता है। इससे सूर्य-शनि का वेध होना नहीं माना जाता।

(२) इसी प्रकार चन्द्र बुध का परस्पर वेध नहीं होता (वेध होने पर भी वेध नहीं मानते) अर्थात् सूर्य का शनि से और शनि का सूर्य से या चन्द्र का बुध से और बुध का चन्द्र से वेध होने पर भी वेध नहीं माना जाता अर्थात् शुभत्व दूर नहीं होता क्योंकि साधारणतः यहाँ बताये वेध स्थानों में कोई भी ग्रह हो तो वहाँ उस ग्रह का वेध होना माना जाता है जिससे शुभत्व दूषित हो जाता है अर्थात् वह स्थान शुभ नहीं माना जायगा।

उदाहरण—जैसे कोई भी जन्म राशि से यदि तीसरे स्थान में सूर्य हो तो शुभ फल होगा ऐसा माना जाता है परन्तु सूर्य के तीसरे स्थान के वेध स्थान में देखना पड़ेगा कोई ग्रह तो नहीं है तीसरे का वेध स्थान ९ है यदि जन्म राशि से ९ स्थान गिनने पर शनि है तो कोई हानि नहीं, शनि से वेध होना नहीं माना जायगा। मान लो जन्म राशि से शनि नहीं है और भी कोई ग्रह है तो वेध होना माना जायगा जिससे शुभत्व दूर हो जाता है।

मान लो जन्म राशि से ११ वें स्थान में मंगल है तो यह शुभ है। परन्तु उसके ११ वे स्थान का वेध स्थान ५ है। यदि जन्म राशि से पाँचवें स्थान में कोई भी ग्रह हो तो वेध होने से शुभत्व दूर हो जाता है अर्थात् अशुभ फल दायक होगा।

यदि शनि जन्म राशि से ६ स्थान में हो और इसके वेध स्थान जन्म राशि से ९ वे स्थान में सूर्य हो तो वेध होना नहीं माना जायगा यदि वहाँ सूर्य को छोड़कर और कोई ग्रह हो तो वेध होने से शुभत्व दूर हो जायगा अर्थात् अशुभ फल दायक होगा।

बुध यदि जन्म राशि से अष्टम स्थान में हो तो शुभ होता है परन्तु उसका वेध स्थान १ में चन्द्र हो तो वेध नहीं माना जायगा। यदि और कोई ग्रह हो तो वेध होने से शुभत्व दूर होकर अशुभ होगा।

इसी प्रकार जन्म राशि से गुरु पाँचवाँ हो तो शुभ होता है परन्तु इसके वेध स्थान ४ में कोई भी ग्रह हो तो शुभत्व नहीं रहेगा।

इस कारण गोचर में ग्रहों का स्थान फल देखते समय यह भी देख लेना चाहिये कि उनके वेध स्थान में कोई ग्रह तो नहीं है।

ग्रहों का शुभ स्थान और वेध स्थान सूचक चक्र

ग्रह	सूर्य			शनि मंगल राहु				कृष्ण चन्द्र						शुक्ल चन्द्र		
शुभ स्थान	३	६	१०	११	३	६	११	१	३	६	७	१०	११	२	९	५
वेध स्थान	९	१२	४	५	१२	९	५	५	९	१२	२	४	८	६	८	४

ग्रह	बुध						गुरु					शुक्र							
शुभ स्थान	२	४	६	८	१०	११	२	५	७	९	११	१	२	३	४	५	८	९	११	१२
वेध स्थान	५	३	९	१	८	१२	१२	४	३	१०	८	८	७	१	१०	९	५	११	३	६

विपरीत वेध

शुभ स्थान के वेध स्थान जो ग्रहों के ऊपर बताये हैं यह क्रम वेध है। अर्थात् ग्रहों के शुभ स्थानों में उनके वेध स्थान में ग्रह होने से शुभत्व दूर हो जाता है। विपरीत वेध

इसके विरुद्ध है। ग्रहों के शुभ स्थानों को छोड़कर जो इतर स्थान हैं वे अशुभ स्थान कहलाते हैं। यदि अशुभ स्थान में कोई ग्रह हो परन्तु उपे वेध स्थान में वह अंक खोजो जिसका वह वेध स्थान है उसमें यदि ग्रह हो तो वह अशुभत्व दूर हो जाता है।

जैसे सूर्य का शुभ ६ स्थान का वेध स्थान १२ है। सूर्य यदि जन्म राशि से १२ वें स्थान में हो तो शुभत्व नहीं होगा अर्थात् अशुभ होगा। यदि सूर्य जन्म राशि से अशुभ १२ वें स्थान में हो और यदि ६ स्थान में कोई ग्रह हो तो यह वाम वेध (विपरीत वेध) अर्थात् उल्टा वेध हुआ। इस प्रकार वाम वेध स्थान में कोई ग्रह होने से अशुभत्व दूर हो जाता है और वह शुभ हो जाता है जिसे सूर्य १२ के अशुभ स्थान में भी होकर वाम वेध से शुभत्व पा गया। क्रम वेध का उल्टा वाम वेध है।

यह विपरीत वेध हिमालय और विन्ध्याचल के बीच के देशों में माना जाता है। समस्त देश भर को इसके विचार को आवश्यकता नहीं है। परन्तु क्रम वेध सब स्थानों में माननीय है।

नक्षत्र अनुसार गोचर फल विचार

जन्म नक्षत्र से कोई ग्रह गोचर में जिस नक्षत्र में हो गिनकर उसका फल विचार—

१ सूर्य			२ चन्द्र			३ मंगल		
नं०	अंग	प्रभाव	नं०	अंग	प्रभाव	नं०	अंग	फल
१	पहिला मुख	नाश	१–२	मुख	बड़ा भय	१–२	मुख	मृत्यु और शोक समाचार
२ से ५	सिर	ऐश्वर्य (उन्नति)	३–६	सिर	कुशल	३–८	पैर	शत्रुता कलह
६-९	छाती	सफलता	७-८	पीठ	शत्रु पर जीत	९-११	गर्दन	सफलता
१०-१३	दाहिना हाथ	दान द्रव्य आगम	९-१०	नेत्र	धन लाभ	१२-१५	बांया हाथ	धन हानि
१४-१९	पैर	द्रव्य हानि	११-१२	छाती	मानसिक प्रसन्नता	१६-१७	सिर	लाभ
२०-२३	बायां हाथ	देह पीड़ा (बीमारी)	१६-१७	बांया हाथ	शत्रुता	१८-२१	मुख	भय की वृद्धि
२४-२५	नेत्र	लाभ	१८-२३	पैर	घर पर वास	२२-२५	दाहिना हाथ	कुशलता
२६-२७	गुह्य	देह नाश या भारी रोग	२४-२७	हाहिना हाथ	धन लाभ	२६-२७	नेत्र	यात्रा

४–बुध ५–गुरु ६–शुक्र ७ शनि ८ राहु ९ केतु

न० सं०	अङ्ग	फल	न० सं०	अंग	फल
१–३	सिर	दुःख	२–५	बाँया हाथ	दुःख
४–६	मुख	लाभ	६–८	दाहिना हाथ	यात्रा
७–१२	हाथ	लाभ	९–११	बाँया पैर	नाश
१३–१७	पेट	अचानक घटना अनर्थ	१२–१५	दाहिना पैर	लाभ
१८–१९	गुह्य	धन लाभ	१६–२०	पेट	नाना भोग
२०–२७	पैर	नाश	२१–२३	सिर	आनन्द
			२४–२५	नेत्र	कुशल
			२६–२७	पीठ	मरणभय

विचार—जिस नक्षत्र पर जन्म का चन्द्र हो उससे गोचर के ग्रह के नक्षत्र तक गिनना जो संख्या आवे उसका फल यहाँ दिया है जैसे जन्म नक्षत्र के चन्द्र से सूर्य का नक्षत्र गोचर में पाँचवां है तो वह सिर में प्रभाव करेगा जिसका फल उन्नति है। इस प्रकार किसी समय गोचर ग्रह की स्थिति पर से विचार हो सकता है। यदि उस समय अष्टक वर्ग की गणना से इसमें अधिक शुभ रेखा है तो शुभता का प्रभाव अधिक बढ़ेगा। इस प्रकार से गोचर का दैनिक फल भी निकाल सकते हैं।

गोचर फल पर विचार

जन्म लग्न, आधान लग्न फल एवं चंद्र राशि फल में बहुत कुछ समता दिखती है इससे राशि कुंडली से ही गोचर फल का विचार बताया है। जन्म राशि (जन्म चन्द्र की राशि) को प्रथम स्थान मान कर शेष १२ स्थान को १२ भाव मानकर फल विचारना पड़ता है।

चन्द्र प्रति २। दिन में बदलता रहता है। शीघ्रगामी है उसे छोड़कर शेष ग्रहों को वर्तमान कोई अच्छे पंचाङ्ग से देखकर गोचर की कई कुंडलियाँ बना लेनी चाहिये। चन्द्र छोड़ कर जब-जब कोई ग्रह बदलता है उस समय की एक-एक कुंडली प्रत्येक समय की बना लेनी चाहिये। जैसे जब सूर्य बदला उसकी एक कुंडली बना लो आगे कोई एक भी ग्रह बदले उसी समय की एक नवीन कुंडली बना लो। इस प्रकार वर्ष भर की गोचर कुंडलियाँ बन जायंगी उन कुंडलियों में समय भी लिख लो। फिर जन्म राशि से प्रत्येक ग्रहों का फल आगे दिये हुए फल के अनुसार विचार लो।

इसमें विशेष बात यह भी देखनी पड़ेगी कि जन्म काल के ग्रह से कौन से प्रकार का दृष्टि योग आदि होता है। जन्म कुंडली के स्थान से अब विशेष ग्रह कौन से स्थान में भ्रमण कर रहा है। जन्म कुंडली की ग्रह स्थिति से वर्तमान गोचर कुंडली का मिलान कर देखना होगा कि जन्म का ग्रह अब गोचर में अच्छी या बुरी कैसी स्थिति में है।

जो ग्रह जन्म पत्री में उत्तम स्थान में पड़ा हो वह गोचर में शुभ स्थान में आते ही शुभ फल देगा। जो ग्रह जन्म में विगड़ा हो वह यदि गोचर में अच्छा भी होगा तो भी शुभ फल नहीं देगा।

जन्मराशि से गोचर फल विचारते समय इस बात का ध्यान रहे कि चन्द्र उस राशि में कितने अंश कला विकला से जन्म में है। गोचर जन्म विचारते समय इस प्रकार जन्म चन्द्र के अंश से इतर ग्रहों के अंश आदि के विचार से वह ग्रह किस भाव में है और कौन-कौन ग्रहों की योग दृष्टि उस पर है पूरी परिस्थिति पर विचार कर फल का निर्णय करना पड़ेगा।

जिस समय यह जानने की इच्छा हो कि किसी राशिवाले को अमुक समय अच्छा है या बुरा है। इसके लिए उसकी जन्म कुंडली देखो उसमें जन्म लग्न के विचार से सूर्य आदि ग्रह अच्छे हैं या बुरे हैं।

आगे इसका विचार दिया है कि कोन लग्न होने से कौन-कौन ग्रह शुभ या अशुभ हो जाते हैं। ये ग्रह गोचर में जिस स्थान में जावेंगे उस स्थान का सम्बंधीफल उत्पन्न करेंगे। गोचर ग्रह जन्म के ग्रहों से जिस समय अंशात्मक या आसन्न योग करते हैं तब ही उनका ठीक फल प्रकट होता है।

मनुष्य के जन्म समय ग्रह जिस अंश पर हो जब ठीक उसी राशि और अंश पर गोचर का ग्रह भ्रमण करते हुए पहुँचता है तभी अपना शुभाशुभ फल देने में समर्थ होता है। ऐसा समझ बैठना कि ग्रहों का राश्यन्त होते ही उस राशि का शुभाशुभ फल होगा यह समझना सूक्ष्म पद्धति से अशुद्ध है चाहे वह स्थूलमान से ठीक हो। कोई ग्रह किसी राशि में जन्म होने के पिछले अंशों का फल कैसे दे सकता है जब कि उस समय उसका जन्म ही नहीं हुआ था। राशि पूरी ३०° की होती है।

मान लो किसी की वृष राशि है उसमें १८° पर शुक्र है। स्थूल मान से वृष में शुक्र है। जब शुक्र कन्या राशि में होगा तो पांचवाँ कहा जाता है। परन्तु सूक्ष्म रूप से विचार करते हैं तो वृष के १८° से मिथुन के १७° तक १ स्थान हुआ। कर्क के १७° तक दूसरा, सिंह के १७° तक तीसरा, कन्या के १७° तक चौथा ही स्थान हुआ। यहाँ शुक्र चौथे स्थान का ही फल देगा पांचवें का फल नहीं देगा। आगे तुला के १७° तक वह पांचवें स्थान का फल देगा। इस प्रकार ग्रह के अंशों के विचार से सूक्ष्म रीति से विचार कर फल कहना।

जन्म लग्नानुसार गोचर फल का विचार

जन्म कुण्डली के अनुसार मेषादिलग्न में जन्म होने से सूर्यादिग्रह क्या शुभाशुभ फल देते हैं यह जान लेना गोचर फल विचार के लिये आवश्यक है। कोई लग्न होने से कौन ग्रह शुभ कौन अशुभ है कौन ग्रह मारक होता है आदि का विचार नीचे दिया है।

(१) जन्म लग्न मेष हो तो—शनि, बुध, शुक्र अशुभ फलदायक हैं। गुरु सूर्य शुभ फलप्रद हैं। शनि गुरु का संयोग जहाँ राजकारक है वहां गुरु व्ययेश होने से, शनि

लग्नेश होने से अन्य प्रकार से पाप फल दायक अवश्य हैं। शनि का जिस समय शुक्र से सम्बन्ध होता है मारक फल करता है क्योंकि शुक्र यहाँ मारकेश है।

(२) वृष लग्न—शनि, सूर्य शुभ फल दायक हैं, गुरु शुक्र चन्द्र पाप फल देंगे। एक शनि ही राजयोग कारक है पर गुरु शुक्र चन्द्र बुध अपनी-अपनी दशाओं में अशुभ फल करेंगे।

(३) मिथुन लग्न—मंगल, गुरु और सूर्य अशुभ फल करते हैं। शुक्र शुभ फल करता है। शनि गुरु का संयोग मेष लग्न के समान ही अशुभ होता है। यदि चन्द्र पाप न हुआ तो मारक नहीं होता। बुध शुक्र का संयोग राज योग कारक है। शुक्र भी व्ययेश होने से कुछ बुरा हो जाता है।

(४) कर्क लग्न—शुक्र बुध अशुभ फल करते हैं। मंगल व गुरु शुभ फल करते हैं केवल मंगल ही राजयोग कारक है। शनि मारक फल देता है। अन्य ग्रह तो केवल कष्ट कारक ही हो सकते हैं।

(५) सिंह लग्न—बुध शुक्र अशुभ, मंगल शुभ, शुक्र गुरु का संयोग शुभ नहीं है। बुध आदि ग्रह अपनी दशा अंतर्दशा में मारक फल करते हैं।

(६) कन्या लग्न—मंगल गुरु और चन्द्र पाप फल करते हैं। शुक्र बुध का संयोग राजयोग कारक है। शुक्र ही विशेष मारक फल दायक है। मंगल आदि अपनी दशा अंतर्दशा में मारक फल देते हैं।

(७) तुला लग्न—गुरु सूर्य मंगल अशुभ हैं। शनि बुध शुभ हैं। चन्द्र बुध का संयोग राजयोग कारक है। गुरु मंगल की दशा अन्तर्दशा में मारक होगा।

(८) वृश्चिक लग्न—बुध मंगल शुक्र अशुभ। चंद्र गुरु शुभ। सूर्य चन्द्र का योग राजयोग कारक है। गुरु बुध आदि मारक फल प्रद हैं।

(९) धनु लग्न—बुध सूर्य शुभ। शुक्र अशुभ। सूर्य बुध का संयोग राजयोग कारक है शुक्र मारकेश है।

(१०) मकर—मंगल गुरु चन्द्र पाप प्रद, बुध शुक्र शुभप्रद, मंगल आदि ग्रह अपनी दशा अन्तर्दशा में मारक फलप्रद है। एक शुक्र ही राजयोग कारक है।

(११) कुम्भ—गुरु चन्द्र मंगल पापप्रद है। शुक्र शुभ प्रद है। मंगल शुक्र का संयोग राजयोग कारक है। गुरु मंगल चन्द्र अपनी दशा अन्तर्दशा में अशुभ फल देंगे।

(१२) मीन लग्न—शनि शुक्र सूर्य पाप फल। मंगल चन्द्रमा शुभ फल। मंगल गुरु का संयोग राजयोग कारक है। केवल मंगल ही मारकेश नहीं हो सकता। शनि बुध आदि पाप ग्रह भी अपनी दशा अन्तर्दशा में मारक फल देते हैं।

ये ग्रह विशेष लग्न में शुभ-अशुभ क्यों हैं अन्यत्र कारकेश आदि के वर्णन में दिये

हैं। ३-६-११ स्थान के स्वामी पाप फल दायक हैं २-७ के स्वामी मारकेश हैं ५-९ के शुभ हैं इत्यादि बातों के विचार से यहाँ ग्रहों का शुभत्व या अशुभत्व वर्णन किया है।

गोचर फल में विचारणीय बातें

(१) ग्रह जो शुभ फल देने वाले हैं या जिसमें वह अच्छा फल देता है उस घर में हो परन्तु वह नीच या शत्रु घर का या अस्त हो तो प्रभावहीन हो जाता है।

(२) यह ऐसे नीच शत्रु गृही या अस्त ग्रह गोचर में अलाभ जनक घर में हो तो अधिक रूप में बुरा फल देगा।

(३) चन्द्र राशि से गिनने पर जब १२-८ या १ घर में जावे तो पदच्युति धन हानि जीवन को भय देते हैं।

(४) सूर्य ८ में, मंगल ७वें, राहु ९वें, शुक्र छठे, गुरु तीसरे, सूर्य ५वें, शनि पहला, बुध चौथे स्थान में हो तो धन और मान की हानि करते हैं जीवन को भय देते हैं।

(५) ग्रह अनिष्ट भाव में हो परन्तु उच्च या स्वक्षेत्री हो तो गोचर में वह हानि नहीं करेगा।

(६) शुभ फल देने वाले ग्रह की या शुभ ग्रह की दृष्टि हो और पाप ग्रह की भी दृष्टि हो या शत्रु ग्रह से दृष्ट हो तो दोनों का प्रभाव जाता रहेगा।

(७) शुक्र ६-७-१० स्थान में गोचर में सिंह के समान भयानक होता है यदि इनके विपरीत वेध स्थान में कोई ग्रह न हो।

(८) जन्म राशि से १, २, ४, ५, ७, ८, ९, १२ स्थान में सूर्य शनि, मंगल, राहु—धन धान्य सुवर्ण और प्राण का नाश करते हैं।

(९) जन्म पत्री में चन्द्रमा यदि ६-८-१२ वें स्थान में पड़ा और गोचर में भ्रमण करते हुए जिस समय शनि, राहु या केतु या चन्द्र के पास पहुँचे उसी समय संकट उपस्थित होगा, रोग होगा।

(१०) सिंह राशि के चन्द्र और मंगल चतुर्थ में एकत्र हों तो बाल्यावस्था ही में जिस समय गोचर में किसी पाप ग्रह का संयोग या दृष्टि होगी उसी समय मातृ सुख में विघ्न आयगा।

(११) नवम या दशम स्थान में शनि पड़ा हो जिस समय उसका किसी गोचर के पाप ग्रह से सम्बन्ध होगा तो सूर्य पितृ का कारक होने के कारण पितृ सुख में विघ्न होगा। सूर्य के समीप जिस समय गोचर में शनि पहुँचेगा तब पिता की चिन्ता खड़ी होगी।

तुला का सूर्य नीच का होता है और तुला या मेष पर शनि होगा तब पिता का नाश होगा, या अरिष्ट होगा।

(१३) लग्न में सूर्य हो यदि गोचर में लग्न में शनि आय तो शरीर पीड़ा होगी।

(१४) लग्न में सूर्य हो यदि गोंचर में सप्तम में शनि आय तो स्त्री चिन्ता होगी।

(१५) धन में सूर्य हो यदि गोचर में धन में या अष्टम में शनि आय तो नेत्र पीड़ा, अधिक अड़चन कुटुम्ब की चिन्ता आदि होगी।

(१६) तृतीय में सूर्य हो और ३ या ९ घर में शनि पहुँचे तो कर्णपीड़ा बंधु-कलह आदि होगा।

(१७) चतुर्थ में सूर्य हो और ४ या १० घर में शनि पहुँचे तो माता पिता संबन्धी चिन्ता, उदर विकार, हृदय रोग, व्यापार चिंता आदि होगी।

(१८) पंचम में सूर्य हो और ५ या ११ में शनि पहुँचे तो संतान की चिंता हो।

(१९) षष्ठ में सूर्य हो और ६ या १२ में शनि पहुँचे तो शत्रु और ऋण चिंता पड़े। इसी प्रकार जिस स्थान में सूर्य जन्म में पड़ा हो उस स्थान पर या उससे सप्तम में शनि पहुँचे तो उस स्थान सम्बन्धी पीड़ा होगी।

(२०) इसीप्रकार नवम में गुरु बलवान् होगा तो ९, २१, ३३, ४५, ६९ वर्ष की आयु में भाग्योदय या लाभ होगा।

(२१) धन स्थान में जन्म में मंगल होगा तो २, १४, २६, ३८, ५०, ६२ वर्ष की आयु में धन से कष्ट, कुटुम्ब की चिंता ऋण चिंता आदि होगी।

(२२) चन्द्र शुभ भाव में भी पाप ग्रहों के बीच तथा पाप युक्त और पाप ग्रहों से सप्तम भाव में हो तो अशुभ फल देगा।

यदि शुभ ग्रह शुभ नवांश में या अधिपित्र नवांश में हो और गुरु से दृष्ट हो तो अशुभ भी हो तो शुभ फल देगा।

गोचर में किस स्थान से क्या-क्या विचारना

(१) प्रथम स्थान—शरीर सुख, उत्साह, प्रयास, महत्त्वाकांक्षा आदि।

(२) द्वितीय स्थान—द्रव्य संचय, सम्पत्तिकी स्थिति, कुटुम्ब, आभूषण आदि।

(३) तृतीय स्थान—बन्धु, उद्योग, पराक्रम, महत्त्वाकांक्षा, प्रयास, गुप्त शत्रु, ज्येष्ठ बन्धु का विचार।

(४) चतुर्थ स्थान—घर, जमीन, वाहन, कीर्ति, सुख, राजकीय बंधन योग, तलघरा, मृत मनुष्यों का धन।

(५) पंचम स्थान—संतति, बुद्धि, आत्म मिलन, उद्योग की दिशा, व्यापार में यश-अपयश, मातृधन।

(६) षष्ठ स्थान—रोग, मामा, मौसी, गुप्त शत्रु, सेवक, मित्र, लोक विरोध।

(७) सप्तम स्थान—विवाहित स्त्री सुख या पति सुख, मुकदमा, प्रीत, स्त्री का रूप, प्रत्यक्ष शत्रु, वैद्यक, स्थलांतर।

(८) अष्टम स्थान—कष्ट, अपमान, फौजदारी, श्वसुर आदि की स्थिति, पर-स्त्री सम्बन्ध, विवाह से धन, अकस्मात् लाभ, मृत्युपत्र से धन प्राप्ति।

(९) नवम स्थान—भाग्योदय, यश, उत्कर्ष, धर्म, समाजसेवा, सार्वजनिक कार्य, राजकीय संस्था से सम्बन्ध, लम्बी यात्रा, मुद्रण कला।

(१०) दशम स्थान—रोजगार, नौकरी, अधिकार, राजदरबार, सामाजिक सम्मान, पिता का विचार, प्रतिष्ठितता, चोरी का धन, ज्येष्ठ बन्धु की मृत्यु।

(११) एकादश स्थान – लाभ, बन्धु सुख, मित्र, नवीन कार्य की योजना, पिता का धन, माता की मृत्यु, पुत्र के शत्रु।

(१२) द्वादश स्थान– शत्रु पीड़ा, संकट, द्रव्य नाश, मनुष्य हानि, उद्योग, ऋण योग, आत्महत्या, हत्या, पूर्वार्जित सम्पत्ति, गुप्त शत्रु, जेलखाना।

जन्म नक्षत्र के चरण अनुसार गोचर में – दिन का फल

किस नक्षत्र के किस चरण में जन्म हुआ यह जान कर गोचर में देखना कि गोचर में जन्म नक्षत्र का यह चरण किस दिन पड़ता है। उस दिन के विचार से उस मास का गोचर फल इस प्रकार होगा।

(१) रविवार—उस मास में घूमा फिरी करने से व्यस्त होगा।
(२) सोमवार—उस मास में अच्छा फल हो, उत्तम भोजन की प्राप्ति हो।
(३) मंगलवार—उस मास में आलसी हो, अग्नि भय हो।
(४) बुधवार—उस मास में विद्यारुचि बढ़े परन्तु भय हो।
(५) गुरुवार—उस मास में वस्त्रादि की प्राप्ति और सुख हो।
(६) शुक्रवार—सुख।
(७) शनिवार—दुःख और सन्ताप।

ग्रहों का गोचर फल

सूर्य का गोचर फल १२ भाव का

(१) उदर रोग, शरीर पीड़ा, मानसिक व्यथा, भोजन में शीघ्रता या बिलम्ब, संबंधी मित्र एवं सज्जनों से झगड़ा। (यात्रा)। थकावट, धनकी हानि, उत्तेजना, थकावट उत्पन्न करने वाली यात्रा।

(२) दुर्जनों की संगति, नीच स्वभाव, मानसिक व्यथा, सिर एवं नेत्र में पीड़ा, कृषि एवं वाणिज्य की हानि और भय। धन हानि, दुःखी, घर से धोखा, जिद्दी।

(३) रोग से मुक्ति, सुख, आनन्द, मित्रों से सम्मान, पुत्रों से सुख और अनिष्ट लाभ, शत्रुओं का पराजय एवं लक्ष्मी तथा मान की प्राप्ति। नया स्थान प्राप्त, धन प्राप्त, सुख।

(४) मानसिक एवं शारीरिक व्यथा, घर-झगड़ा, सुख की हानि, कुत्सित भोजन व्यसन। मात्रा में असुविधाएँ, पृथ्वी के योग में विघ्न, रोग, स्त्री योग में विघ्न।

(५) आसक्ति, मन की व्यग्रता, मित्रों से असुविधा, धन की हानि, दीनता, चित्त में अस्थिरता तथा शत्रु व रोग का भय, बुरा स्वास्थ्य।

(६) आनन्द, कार्य की सिद्धि, स्वस्थता, अन्न वस्त्र की प्राप्ति, शत्रुओं का नाश, धन और मान की प्राप्ति एवं सुख, रोग दूर, दुःख और मानसिक चिंता दूर।

(७) कुटुम्ब एवं मित्रों से मत भेद, स्त्री और संतान को रोग, कार्य में असफलता उदर पीड़ा, यात्रा, थकावट प्रद यात्रा, पेट और गुदा में रोग।

(८) अपने बुरे कामों का फल, शत्रुओं से झगड़ा तथा पीड़ा, खाँसो, राजभय, अपनी स्त्री भी रुष्ट, शत्रुओं से दुर्वचन प्राप्त, अपमान, भय से त्रास, अति गर्मी से पीड़ा।

(९) कांतिक्षय, मिथ्या अपवाद, अकारण धन और पुण्य की हानि, आय की कमी, रोग तथा मानसिक अशांति, भय, अपमान, बंधु वियोग, अति निराशा।

(१० धन, स्वास्थ्य, मित्र, कुटुम्ब, राजा एवं बड़े लोगों से समागम, आनन्द, अभीष्ट सिद्धि, बड़ा कार्य सफलता पूर्वक पूर्ण।

(११) लाभ, धन, उत्तम भोजन, नवीन पद, स्वास्थ्य, बड़ों का अनुग्रह, गृह में कोई आनन्द उत्सव का सुख, धन प्राप्ति, रोग निवारण, मान।

(१२) जन्म भूमि का त्याग, कुटुम्बियों से वियोग, कार्य एवं पद की हानि, अधिक व्यय और कठिनाइयाँ, दुःख, धन हानि, मित्रों से कलह, अन्त में ज्वर।

२--चन्द्र का गोचर फल प्रत्येक भाव का

१—रोग मुक्ति, सुख और आनन्द, धन, सत्कार, उत्तम भोजन और शैय्या, स्त्री-संभोग, उपहार को प्राप्ति, भाग्योदय।

२—मानसिक असन्तोष, नेत्र रोग, चावल के अतिरिक्त अन्य पदार्थों का भोजन, धन हानि।

३—धन की प्राप्ति, वस्त्रादि का सुख, आरोग्य, शत्रुओं का पराजय, चित्त में प्रसन्नता, धैर्य, इच्छित स्त्रियों का संग, सफलता प्राप्त।

४—स्वजनों से झगड़ा, चित्त में चञ्चलता, कुक्षि पीड़ा, कार्य में हानि, भोजन और निद्रा में असुविधाएँ, जल से भय।

५—मार्ग में विघ्न, कार्य नाश, मन में अशान्ति, आसक्ति, धन या किसी प्रिय पदार्थ की हानि वायु का प्रकोप, गठिया रोग, शोक।

६—लाभ, स्वस्थता, धनागम, यश, आनन्द, स्त्रियों से वार्तालाप, अपने घर में निवास, शत्रुओं का पराजय, रोग का विनाश।

७--धन, सुख, वाहन, ख्याति, स्वास्थ्य, शान्ति, भोजन सुख एवं स्त्री द्वारा सुख।

८--रोग, अपच, शिल्लियों में पीड़ा, झगड़ा, चिन्ता, सर्प भय, खाद्य भोजन की प्राप्ति, अनहोनी बात हो।

९—राजा से भय, वस्त्रादि की हानि, पुत्रों से मत भेद, देश का त्याग, उदर रोग, व्यवस्था में हानि, बीमारी।

१०— सुख, अभीष्ट सिद्धि, कार्य में सफलता एवं स्वस्थता।

११—लाभ, सुख, कुटुम्बियों से समागम, उत्तम भोजन, द्रव्य एवं अन्न की प्राप्ति, आनन्द।

१२—शोक, मानसिक एवं शारीरिक व्यथा, मान, कार्य और द्रव्य की हानि, कुटुम्बियों की ओर से घृणा, व्यय।

टिप्पणी—२-५-९ स्थानों में चन्द्र का अशुभ फल कहा है यह क्षीण चन्द्रमा का फल है। पूर्ण चन्द्र होने से शुभ फल होता है।

३—मगल के प्रत्येक भाव का गोचर फल

१—ज्वर-व्रण, कुटुम्ब एवं स्त्री से मतभेद, दुर्जनों से कष्ट तथा भय, मन उदास, बन्धुओं से वियोग, रक्त अशुद्ध का रोग, पित्त या गर्मी से रोग।

२—बल की हानि, मानसिक अशान्ति, कार्यों में निष्फलता, कठोर वचन, दुर्जनों की संगति, राजा चोर अग्नि तथा पित्त रोग से भय, धन हानि, भय।

३—धन, खाने के पदार्थ, ऊनी वस्त्र एवं आरोग्य की प्राप्ति, शत्रु की पराजय, प्रत्येक कार्य में सफलता, सुख, स्वर्ण भूषण प्राप्ति।

४—शत्रु वृद्धि, रुपया एवं वस्तुओं की कमी, स्वजनों से विरोध, अशुभ कार्य निरत, मानसिक भय, ज्वर रुधिर तथा उदर रोग, स्थान हानि, बन्धुओं द्वारा शोक।

५—धन नाश, भोजन में अतिकाल, पाप कर्म में योग, शत्रुओं से पीड़ा, सन्तान से दुःख, ज्वर, अनुचित इच्छा, मानसिक त्रास, पुत्र या बन्धुओं से झगड़ा।

६—धन, अन्न, वस्त्र, सुवर्ण या ताम्र पत्र की प्राप्ति, ख्याति, लाभ, आनन्द, शत्रु भय हीन, शुभ विचार, उदय, रोग से छुटकारा, जीत, धन लाभ, सब कार्यों में सफलता, झगड़े का अन्त।

७—जन का नाश, भोजन वस्त्र आदि में कमी, कुटुम्बियों (स्त्री) से असन्तोष, भाई और सन्तान के क्रोध से दुःख, नेत्र एवं उदर रोग।

८—शस्त्र प्यारा, परदेश वास, कार्य की हानि, पदच्युति, रोग एवं ऋण द्वारा मान हानि, ज्वर पीड़ा, जख्मों से दूषित देह, धन और मान नष्ट।

९—अनादर, शरीर में पीड़ा, धातु क्षय से निर्बल, धन का अभाव, उष्णता, रोजगार के स्थान से हटना, धन आदि की हानि द्वारा अपमान, बल क्षय।

१०—रोग दुःख, अपौष्टिक पदार्थ का भोजन, किसी कार्य वश विदेश यात्रा, रोजगार में विघ्न, दुष्ट चेष्टा, कार्य में असफलता, अन्य मत से धन प्राप्ति।

११—उदय, आरोग्य, धन वस्त्र आदि की प्राप्ति, आनन्द, कार्य में सफलता, भूमि आदि की बढ़ती।

१२—धन का व्यय, परदेश वास, सन्तप्त, रोग (नेत्र रोग), धन की हानि, कुटुम्बियों से अनबन, अति उष्णता के रोग से पीड़ित।

४—बुध का गोचर फल प्रत्येक भाव का

१—चुगल खोर, बन्धन, धन की हानि, कुटुम्ब से विरोध, झगड़ा, कुसमय का भोजन, स्वागत विहीन, दुर्जनों की संगति।

२ – सर्वदा आनन्द, धन एवं रत्नादि की प्राप्ति, अच्छे लोगों की संगति, अन्यमत से अनादर।

३—शत्रु भय, कुटुम्बियों से झगड़ा, धन हानि, अन्य मत से मित्र प्राप्ति।

४ – धन की प्राप्ति, माता या कुटुम्ब को सुख, धन वृद्धि।

५—पीड़ा, आकस्मिक झगड़ा, संतान व स्त्री से वियोग या अनबन, मृत्यु का भय, गर्मी के कारण अंगों में शिथिलता।

६ – अन्न एवं वस्त्रादि की प्राप्ति, उत्तम पुस्तकादि के पढ़ने का सुख, सफलता।

७—पीड़ा, सुख की हानि, द्रव्य की कमी, कुटुम्ब एवं मित्रों से झगड़ा, राजभय, निस्तेज शरीर, शरीर में शिथिलता, विरोध।

८—धन लाभ, पुत्र से सुख, बुद्धि का विकास, चित्त में अशांति, भोजन में अरुचि, मिथ्या वचन, सन्तान प्राप्ति।

९—खेद, अपवाद, समस्त कार्यों में विघ्न बाधा, दूसरों को पीड़ा, कुत्सित भोजन, पित्त से पीड़ा।

१०– नये पद की प्राप्ति, वाक्य में चतुराई, शत्रु की पराजय से सुख, भोजन में असुविधा, मन में अशान्ति, अपवाद और दुर्वचन का पात्र।

११—स्वस्थता, सुख, यश, धनागम, कुटुम्बियों से मित्रता, पुष्टि।

१२—धन एवं सुख की हानि; चित्त में सन्तोष, भोजन में अरुचि, झगड़ा, कार्यों में हानि, पराभव का भय।

५ - गुरु का गोचर फल प्रत्येक भाव का

१—भय, मान हानि, राजा से भय, रोजगार में झगड़ा, मानसिक व्यथा, पदार्थों की हानि, देश का त्याग, अधिक खर्च, अन्यमत से बैर।

२—धन और सुख की प्राप्ति, ख्याति, उन्नति; शत्रुहीन तथा दानादि में रुचि, प्रभाव।

३—पीड़ा, विघ्न, कुटुम्बियों से झगड़ा, रोजगार में झंझट, स्थान से च्युति, शरीर में पीड़ा, रोग, पिता की मृत्यु।

४—मन में अशांति, धन एवं कांति की हानि, शत्रु की वृद्धि, कुटुम्बियों से असुविधा, देश का त्याग, बंधु द्वारा शोक, अपमान, पशु भय।

५ - सुख, उन्नति, धनागम, कार्य में सफलता, कुटुम्बियों से आनन्द, पद की प्राप्ति, संतान प्राप्ति, राजानुकूल से मित्रता।

६ – शोक, स्त्री, संतान और कुटुम्बियों से झगड़ा, अग्नि चोर राजा से भय, गृह में सब प्रकार की उदासीनता, शत्रु से एवं रोग से पीड़ित।

७ – राजा से मान, उत्तम भोजन, कार्य में सफलता, आरोग्य, बुद्धि में चमत्कार अनेक सुखों का योग, विवाह आदि उत्सवों में सुख, शुभ कार्य में यात्रा स्त्री एवं संतान सुख।

८—शोक, रोग, चोर अग्नि राजा से भय, क्रोध की वृद्धि, वाक्य में कठोरता, कांति की हानि, पद च्युति, शारीरिक कष्ट, त्रास जनक यात्रा से थकावट, दुःखी, धन हानि, अभाग्यवान् ।

९—धन की प्राप्ति, सुख, उत्तम भोजन, स्त्री, सहवास, पुत्र से सुख, विकार शीलता, घर की प्राप्ति, सब प्रकार की उन्नति ।

१०—हीनता, अन्न तथा धन की हानि, स्वजनों से अपवाद, निरुद्यमता, अपवाद, स्थान और जायदाद का भय, संतान भय ।

११—धन एवं प्रतिष्ठा की वृद्धि, कांति, बल, आनन्द, शत्रुओं की हानि, समस्त कार्यों में सफलता, संतान प्राप्त, नया पद, मान ।

१२—दरिद्रता का दुःख, विश्वास पात्रों से कलंक, निवास स्थान का त्याग, शुभ कार्यों में धन का व्यय, मुकदमे बाजी । द्रव्य के कारण दुःख और भय ।

६. शुक्र का प्रत्येक भाव का गोचर फल

१—सुख और धन की प्राप्ति, शत्रु का नाश हो, जातक दुराचारी हो, सब प्रकार का भोग भोगे ।

२—धन की बारम्बार प्राप्ति, स्त्री से सुख, मान की वृद्धि, शरीर में नीरोगता, वस्त्रादि की प्राप्ति, सब प्रकार से सुख ।

३—व्यवसाय में हानि, धन की कमी, रोजगार में गड़बड़ी, शत्रुओं की वृद्धि, मतांतर से प्रसन्नता, पद की प्राप्ति, तरक्की ।

४—धन की प्राप्ति, मनमानी बातों का करना, मित्र कुटुम्ब एवं स्त्री का सुख, स्त्रीसहवास ।

५—पुत्र और कुटुम्ब से प्रीति, नौकरों की वृद्धि, लाभ, अन्न एवं धन की प्राप्ति, अच्छे भोजन का सौभाग्य, प्राप्त ।

६—शत्रु की वृद्धि एवं उससे हानि, दायभागियों से झगड़ा, पुत्र तथा संतान से मनोव्यथा, विपत्ति ।

७—शोक, बड़े परिश्रम से जीविका निर्वाह, जननेन्द्रिय रोग का भय, किसी से अपमानित होने का भय, स्त्री को पीड़ा ।

८—धन की प्राप्ति, सुख की वृद्धि, दुःख की समाप्ति ।

९—उत्तम वस्त्र आदि का लाभ, इच्छित पदार्थों की प्राप्ति, स्वस्थता सुख ।

१०—पीड़ा, मानसिक व्यथा, धन की हानि, शत्रुओं से भय, निर्बलता, स्त्रियों से दुःख, कलह ।

११—धन की प्राप्ति, प्रताप, कार्य में सफलता, धन का आगमन, उत्तम भोजन की प्राप्ति, अभय ।

१२—शस्त्र एवं चोर से भय, सब कार्यों में विघ्न बाधा, मतांतर से धन तथा वस्त्रादि लाभ।

शनि का गोचर फल प्रत्येक भाव का

१—बुद्धि भ्रंश, शरीर निस्तेज, मानसिक और शारीरिक पीड़ा, रोग, कुटुम्बियों से झगड़ा, दाह क्रिया करे।

२—क्लेश, बेबात का झगड़ा, स्वजनों से बैर, धन की हानि, कार्य में सफलता, संतान हानि।

३—आरोग्य, सुख, कार्यों में सफलता, पद, धन एवं नौकरी की प्राप्ति परन्तु दुराचरण शीलता होती है।

४—शत्रु की वृद्धि, रोग, स्थान का परिवर्तन, स्त्री और कुटुम्बियों से वियोग, धन की कमी परन्तु अन्न की प्राप्ति, धन हानि।

५—अशान्ति, कार्य में सफलता, कुटुम्बियों में मुकदमेबाजी, पुत्र से वियोग, धन एवं सुख की हानि, दुष्ट स्त्रियों का संग, परेशानी, संतान हानि, मतांतर से पुत्र से सुख।

६—धन, अन्न और सुख की वृद्धि, कुटुम्ब एवं स्त्रीगण से सुख, शत्रु पर विजय, मकान बनाने का सौभाग्य।

७—दोष, मानसिक व्यथा, धन की हानि, परदेश वास, स्त्री को पीड़ा, यात्रा, भय से उद्वेग।

८—पीड़ा, द्रव्य की हानि, कार्य में निष्फलता, अव्यवस्थित जीवन एवं रोग, संतान हानि, पशु मित्र धन हानि।

९—दुःख, रोग, शत्रु की वृद्धि कमी-कमी धन की प्राप्ति। इसी प्रकार स्त्री तथा संतान से कभी सुख एवं कभी असुविधा, धन हानि, अच्छे कार्यों में बाधा, पिता बंधु की मृत्यु, लगातार शोक।

१०—दुःख मानसिक व्यथा, पाप कर्म, नौकरी एवं रोजगार में विघ्न बाधा, निर्धनता, हृदयरोग से पीड़ित, मान हानि।

११—धन की प्राप्ति, रोग से मुक्ति, किसी उच्च अधिकार और स्त्री-संतान आदि से सुख, मान प्राप्ति।

१२—क्षति, दरिद्रता, दूर यात्रा, व्यय में अधिकता एवं मानसिक व्यथा, बेकार फल हानि, कार्य करने से परेशानी।

राहु तथा केतु का गोचर फल प्रत्येक भाव का

१—हानि, रोग। २—निर्धनता, धन हानि। ३—धन लाभ, सुख। ४—बैर शोक। ५—धन हानि, शोक। ६—धन लाभ, सुख। ७—कलह, हानि। ८—पीड़ा, जीवन को भय। ९—पाप कर्म में वृद्धि। १०—बैर अन्यमत से लाभ। ११—सुख। १२—धन हानि, खर्च।

राहु केतु उसी ग्रह का फल देता है जिस घर में राहु केतु जन्म के समय था। जैसे कुण्डली में राहु वृष का है तो शुक्र का फल देगा केतु वृश्चिक राशि में होने से मंगल का फल देगा।

गोचर में अनिष्टकारी ग्रह क्या रोग करते हैं

(१) रवि—रक्तपित्त विकार, सिर एवं मुँह में पीड़ा।
(२) चन्द्र—कफ और रक्त के विकार से छाती एवं गले में रोग।
(३) मंगल—पित्त मज्जा कफ व रक्त दोष से सिर पीठ और उदर में पीड़ा।
(४) बुध—त्रिदोष विकार से हाथ-पैरों में पीड़ा।
(५) गुरु—वात कफ जनित पीड़ा, कमर एवं जांघ में रोग।
(६) शुक्र—अंडकोष में कफ रोग जनित पीड़ा।
(७) शनि—वायुविकार से जानु एवं पट्टी में पीड़ा।

स्थानवश से संक्षिप्त में गोचर फल

स्थान	शुभ ग्रह का फल	पाप ग्रह का फल
१	शरीर सुख, भाग्य वृद्धि, सुख।	१—शरीर पीड़ा, आलस्य, दुर्बुद्धि, अहंकार।
२	उत्कर्ष, कुटुम्बी सुख, अवसर पर द्रव्य-प्राप्ति, सम्पत्ति।	२—आत्म विरोध, द्रव्य हानि, असत्य भाषण, नेत्र विकार।
३	बंधु सुख, यश, विद्या में रुचि, प्रवास से लाभ।	३—बंधु संकट, यात्रा, मित्र से त्रास, क्लेश, साधारण यात्रा।
४	जायदाद का सुख, वाहन सुख, कीर्ति स्थाई कुलाभिमान का प्रतिपालन।	४—जायदाद से मामूली लाभ, वाहन से त्रास, मातृसुख में कमी।
५	बुद्धिमान्, राजदरबार में यश, संतान सुख कल्पना, कुलदीपक, द्रव्य लाभ।	५—परीक्षा में फेल, संतान चिंता, उद्योग में कमी, झूठा अभिमान।
६	विरोधी बड़े सज्जनों से त्रास, परोपकार, उत्तम कार्य में प्रवृति।	६—साहसी, रोग नाश, शत्रु को हार, मामा से स्वार्थ।
७	विवाह सुख, साझेदारी में लाभ, मुकदमा में सफलता।	७—स्त्री से त्रास, सुख हानि, यात्रा में क्लेश, मुकदमा मामले में हानि।
८	स्त्री द्वारा या मृत्युलेख से लाभ, किसी का ट्रस्टी होकर लाभ, स्त्रीनिधन प्राप्त।	८—अविचारी काम में प्रवृत्ति और उससे लाभ, विषैले जीवों से भय, विशेष पीड़ा।
९	भाग्य अनुकूल, अनेक प्रकार के सुख धर्माचरण में प्रेम, बड़ों की कृपा।	९—भाग्योदय में अड़चन, महत्वाकांक्षा में कठिनाई, परदेश में भाग्योदय।
१०	सत्कर्मी, सत्याग्रही, उद्योग व्यापार में	१०—पितृक्लेश, अहितकारी कार्य में प्रवेश,

मान, कुलकीर्ति का विस्तार, समाज में कीर्ति।

११–साम्पत्तिक भोग, प्रबल उद्योग व्यापार या नौकरी में सफलता, साहसी, मित्रों में सफलता।

१२–सत्कार्य में व्यय, परमार्थ की ओर ध्यान, शत्रु वृद्धि, अधिकार में विघ्न।

उच्च स्थिति से नीची स्थिति, समाज विरोधी कार्य।

११–अकर्तव्यों से भी लाभ उठाने वाले अधिकारियों की कृपा, बड़े भाई को अनिष्ट, बंधु कलह।

१२–द्रव्य सम्बन्धी हानि, अपमान, दुष्कीर्ति, ऋणग्रस्त स्थिति, अधिकारी प्रतिकूल, राजदंड।

संक्षिप्त गोचर फल का चक्र

स्थान	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
१	यात्रा, रोग थकावट	भाग्योदय सुख, लाभ, श्रेष्ठ अन्न प्राप्ति	रोग भय, कष्ट, वियोग	बंधनकष्ट धनहानि	भय, कष्ट, खर्च, देशत्याग	स्त्री सुख, शत्रु नाश हर्ष, सब भोग प्राप्ति	स्थान हानि, भय, कष्ट, रोगपीड़ा	हानि, रोग	रोग चिंता
२	भय दुःख धोखा धन हानि	धन हानि थोड़ा लाभ संतोष सुख	चोर भय, धन हानि, नेत्र पीड़ा, चिंता	धन लाभ सुख	धन प्राप्ति सुख	धन लाभ, सुख	धन हानि, क्लेश	धन हानि, खर्च, चिंता	विरोध हानि
३	धन प्राप्ति स्थान प्राप्ति सुख	सफलता, धन लाभ, सुख, यात्रा	धन लाभ, कार्य सफल, सुख	शत्रु भय पराक्रम	रोग पीड़ा, बाधा, अति चिंता	सुख तरक्की पराक्रम	शुभ, सुख, पद प्राप्ति धन लाभ	सुख धन लाभ	लाभ जय
४	रोग, विघ्न, व्यसन, चिंता	कुक्षि में रोग, खर्च, कलह, भय	शत्रु वृद्धि, स्थान हानि, उदर रोग, भय, मातृ कष्ट	धन वृद्धि सुख लाभ	शत्रु वृद्धि, शोक, कष्ट, धन हानि अपमान	धन लाभ, सुख, मित्र वृद्धि	शत्रु वृद्धि, पीड़ा, बध बंधन, हानि	शोक वैर विरोध कष्ट	भय कष्ट
५	दीनता, क्षोभ, शोक, विघ्न,	ज्ञान धन हानि, त्रास, पीड़ा,	कलह सुख, हर्ष,	मित्रता संतानप्राप्ति	पुत्रक्लेश	धनशोक	धन हानि		कष्ट

	बुरा स्वास्थ्य, संतान कष्ट, खर्च	वृद्धि मान यश	चिंता, झगड़ा, ज्वर, भय	बुद्धि वृद्धि	लाभ, संतान प्राप्ति	धनागम	क्षय, त्रास, भय कष्ट चिंता	कपट कुबुद्धि	हानि
६	शत्रु नाश, सुख लाभ, दुःख और चिंता दूर	शत्रु नाश, रोग दूर उत्तम सम्पत्ति	धन लाभ, सफलता शत्रुनाश सुख रोग व झगड़ा अन्त	सफलता शत्रु भय	शोक, शत्रु व रोग से पीड़ा	शत्रुवृद्धि विपत्ति	सुख वृद्धि, लाभ, शत्रु नाश	धन प्राप्ति, सुख	लाभ जय
७	यात्रा, स्त्रीपीड़ा, पेट व गुदा में रोग	धन लाभ, सुख, रोग, राजमान्यता	धन नाश, रोग, पीड़ा, कष्ट हानि, मनोमालिन्य	भय, राजमान्य, शुभ विरोध	शोक, भय, दोष, यात्रा लाभ	यात्रा भय, स्त्री को पीड़ा	हानि, विवाद, कलह, स्त्री को पीड़ा	थोड़ा अपमान शोक	शोक
८	अति पीड़ा, त्रास रोग भय, झगड़ा अपमान	रोग अनहोनी घटना, कलह, भय	शस्त्र से चोट, पीड़ा, कुसंग नष्ट	धन लाभ रोग, दुःख, धन संतान आदि कष्ट भय	धन लाभ, रोग, पीड़ा और हानि, यात्रा से थकावट	पीड़ा जीवन का हानि	संकट भय, रोग, कष्ट	भय	
९	कांति क्षय, भय अपमान निराशा, चिंता	राजभय, रोग, धर्म लाभ, कुबुद्धि	रोग, अपमान, धन हानि, द्रव्य लाभ	खेद, विघ्न, यात्रा, मित्र प्रेम	सुख, लाभ, प्रतिष्ठा	वस्त्र लाभ, लाभ, सुख	धन सुख, बाधा, शोक, कुसंग, धन हानि	पापकर्म कुबुद्धि कष्ट	अपमान कपट
१०	अभीष्ट सिद्धि, सुख	लाभ, आनंद	लाभ, वृद्धि, यश, रोग दूर	लाभ, सुख पुष्टि, धनागम	मानवृद्धि नया पद लाभ, हर्ष	धन लाभ, अभय, अधिकार प्राप्त	धन सुख मान प्राप्त लाभ, यश	सुख धन लाभ	लाभ भय
११	लाभ सुख मान नया पद	लाभ, आनंद	लाभ, वृद्धि, यश, रोग दूर	लाभ, पुष्टि, धनागम, सुख	मान वृद्धि, नया पद लाभ, हर्ष	धन लाभ, अभय अधिकार प्राप्ति	धन सुख मान यश मान प्राप्ति	सुख धन लाभ	यश धन लाभ
१२	खर्च, दुःख कलह, पीड़ा धन हानि	शोक, खर्च, हानि, कष्ट	धन हानि, अधिक खर्च, रोग भय	धन नाश, पराभव का भय	पीड़ा दुःख, भय हानि	धन प्राप्त	अनेक अनर्थ आपत्ति भय त्रास	द्रव्य हानि खर्च, पीड़ा	विरोध हानि

गोचर फल शुभाशुभ समय

१–शुक्ल पक्ष को प्रतिपदा में यदि चंद्र शुभ हो तो सारा शुक्ल पक्ष शुभ होता है।
,, ,, अनिष्ट हो तो वह पक्ष अनिष्ट का होगा।
२–कृष्ण पक्ष की ,, ,, अनिष्ट हो तो वह पूरा कृष्ण पक्ष अनिष्ट होगा।
,, ,, शुभ हो तो ,, ,, शुभ होगा।

गोचर में कौन ग्रह कब फल देते हैं

१––सूर्य और मंगल जबकि राशि में प्रवेश करते हैं तो आदि में प्रवेश करते ही फल देते हैं अर्थात् किसी राशि के १०° पर आदि में फल देते हैं।

२—गुरु शुक्र राशि के मध्य में जाने के बाद फल देते हैं मध्य के तीसरे भाग में १०° के आगे २०° तक मध्य भाग में।

३––चंद्र शनि––राशि के अन्त में जाने पर अन्तिम तीसरे भाग में फल देते है अर्थात् २० से ३०° तक अन्तिम भाग में।

४––बुध और राहु=अपने सम्पूर्ण भाग में अर्थात् सर्वदा फल देते हैं।

१—सूर्य=जब एक राशि से दूसरी राशि में जाता है उस समय से ५ दिन पूर्व ही से आगामी राशि के फल की सूचना देता है।

२—चंद्र=३ घड़ी पहिले ही आगामी राशि गत फल की सूचना देता है।
३––मंगल=८ दिन पहिले ही आगामी राशि के फल की सूचना देता है।
४—बुध=७ दिन पहिले ही आगामी राशि गत फल की सूचना देता है।
५—गुरु=२ मास पहिले ही आगामी राशि गत फल की सूचना देता है।
६—शुक्र=७ दिन पहिले ही आगामी राशि गत फल की सूचना देता है।
७—शनि=६ मास पहिले ही आगामी राशि गत फल की सूचना देता है।
८—राहु=३ मास पहिले ही आगामी राशि गत फल की सूचना देता है।

अन्यमत से समय

१—सूर्य=१ राशि पर १ मास रहता है=प्रथम के ५ दिन फल देता है।
२—चंद्र १ राशि पर २। दिन रहता है अन्त की ३ घड़ी फल देता है।
३—मंगल १ राशि पर १।। मास रहता है प्रथम ८ दिन फल देता है।
४—बुध १ राशि पर १ मास रहता है सर्वकाल फल देता है।
५—गुरु १ राशि पर १३ मास रहता है मध्य के २ मास फल देता है।
६—शुक्र १ राशि पर १ मास रहता है मध्य के ७ दिन फल देता है।
७—शनि १ राशि पर ३० मास रहता है अन्त के ६ मास फल देता है।
८—राहु केतु १ राशि पर १८ मास रहता है अन्त के २ मास फल देता है।

गोचर में नक्षत्र के विचार से ग्रहों के अंग और फल

जन्म नक्षत्र से गिनने पर २७ नक्षत्र जातक के अंग विभाग में ग्रहों के अनुसार बटे हैं वे नीचे बताये गये हैं। जन्म नक्षत्र को १ गिन कर आगे बताये क्रमानुसार अंग की गणना करना। वर्तमान नक्षत्र जिस अंग में पड़े फल विचारना।

सूर्य का गोचर में अंग विभाग और फल

जन्म नक्षत्र से नक्षत्रों का क्रम	अंग विभाग	फल
१—पहिला नक्षत्र	मुख	हानि
२—२, ३, ४ और ५ वाँ नक्षत्र	सिर	धन वृद्धि
३—६, ७, ८ और ९ वाँ नक्षत्र	छाती	सफलता
४—१०, ११, १२ और १३ वाँ नक्षत्र	दाहिना हाथ	सम्पत्ति लाभ
५—१४,१५,१६,१७,१८,१९ वाँ नक्षत्र	दोनों पैर	धन हानि
६—२०, २१, २२, २३ वाँ नक्षत्र	बायाँ हाथ	शारीरिक बीमारी
७—२४, २५ वाँ नक्षत्र	दोनों आँख	लाभ
८—२६ और २७ वाँ नक्षत्र	जननेन्द्रिय	जीवन को भय

चन्द्र का अंग विभाग के अनुसार गोचर फल

जन्म नक्षत्र से वर्तमान नक्षत्र	अंग विभाग	फल
१—पहिला और दूसरा नक्षत्र	चेहरा	अतिशय भय
२—३, ४, ५, ६ वाँ नक्षत्र	सिर	रक्षा
३—७, ८ वाँ नक्षत्र	पीठ	शत्रु दमन
४—९, १० वां नक्षत्र	दोनों आँख	सम्पत्ति लाभ
५—११, १२, १३, १४, १५ वाँ नक्षत्र	छाती	मानसिक सुख
६—१६; १७, १८ वाँ नक्षत्र	बाँया हाथ	कलह
७—१९,२०,२१,२२,२३,२४ वाँ नक्षत्र	दोनों पैर	विदेश यात्रा
८—२५, २६, २७ वाँ नक्षत्र	दाहिना हाथ	सम्पत्ति लाभ

मंगल का अंगविभाग के अनुसार गोचर फल

जन्म नक्षत्र से वर्तमान नक्षत्र तक संख्या	अंग विभाग	फल
१—पहिला दूसरा नक्षत्र	मुख	जीवन को भय
२—३, ४, ५, ६, ७, ८ वाँ नक्षत्र	दोनों पैर	कलह
३—९, १०, ११, वाँ नक्षत्र	छाती	सफलता
४—१२, १३, १४, १५ वाँ नक्षत्र	बायां हाथ	गरीबी
५—१६, १७ वाँ नक्षत्र	सिर	लाभ
६—१८, १९, २०, २१, वाँ नक्षत्र	चेहरा	अतिभय

७—२२, २३, २४, २५ वां नक्षत्र	दाहिना हाथ	सुख
८—२६, २७ वां नक्षत्र	दोनों आंखें	विदेश यात्रा

बुध गुरु शुक्र के अंग विभाग के अनुसार गोचर फल

जन्म नक्षत्र से वर्तमान नक्षत्र तक संख्या	अंग विभाग	फल
१—१, २, ३ रा नक्षत्र	सिर	दुःख या शोक
२—४, ५, ६ वां नक्षत्र	मुख	लाभ
३—७, ८, ९, १०, ११, १२ वां नक्षत्र	दोनों हाथ	कुछ अनहोनी हो
४—१३, १४, १५, १६, १७ वां नक्षत्र	पेट	द्रव्य का आना
५—१८, १९ वां नक्षत्र	जननेन्द्रिय	हानि
६—२०, २१, २२, २३, २४, २५, २७ वां ,,	दोनों पैर	कीर्तिमान

शनि राहु और केतु का अंग विभाग फल

जन्म नक्षत्र से वर्तमान नक्षत्र तक संख्या	अंग विभाग	फल
१—पहिला नक्षत्र	मुख	दुःख
२—२, ३, ४, ५ वां नक्षत्र	दाहिना हाथ	सुख
३—६, ७, ८ वां नक्षत्र	दाहिना पैर	सुख
४—९, १०, ११ वां नक्षत्र	बायां पैर	हानि
५—१२, १३, १४, १५ वां नक्षत्र	बायां हाथ	लाभ
६—१६, १७, १८, १९, २० वां नक्षत्र	पेट (कुक्षि)	स्त्री भोग
७—२१, २२, २३ वां नक्षत्र	सिर	सुख
८—२४, २५ वां नक्षत्र	दोनों नेत्र	सुख
९—२६, २७ वां नक्षत्र	पीठ	जीवन का भय

गोचर से नक्षत्र विचार

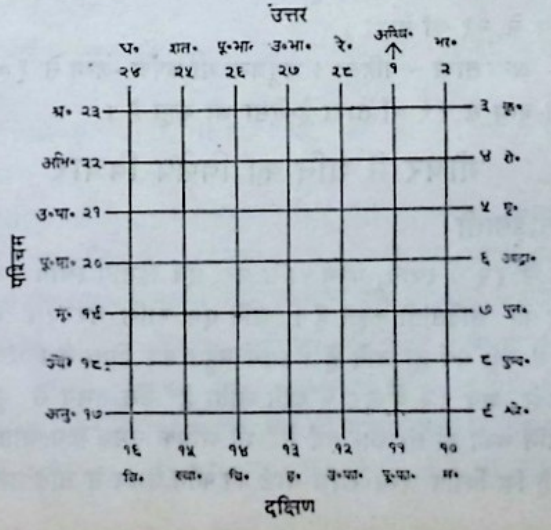

गोचर से नक्षत्र वेध फल

इस प्रकार ७ रेखाओं का चक्र बनाकर २८ नक्षत्र यहाँ बताये अनुसार लिखे जहाँ तीर का निशान दिया है वहाँ से अन्य नक्षत्र की संख्या और नाम लिखना यहाँ बताये क्रम से आरंभ करे और अभिजित सहित पूरे २८ नक्षत्र लिख ले।

१—वर्तमान सूर्य नक्षत्र जहाँ हो वहाँ लिख ले यदि जन्म नक्षत्र से सूर्य नक्षत्र का वेध हो तो जीवन को भय की शंका होती है।

२—जन्म नक्षत्र से १९ वें नक्षत्र से वेध हो तो भय और चिन्ता हो।

३—जन्म नक्षत्र से १० वें नक्षत्र से वेध हो तो धन हानि हो चिन्ता हो।

इन स्थानों में सूर्य पाप ग्रह युक्त हो तो मृत्यु का अनुमान करना।

४—यदि उपरोक्त ३ प्रकार के नक्षत्रों में से कोई दूसरे पाप ग्रहों के होने से सूर्य को छोड़कर, वेध हो तो मृत्यु हो।

५—यदि शुभ ग्रह से वेध हो तो जीवन को कोई भय न होगा। इसी प्रकार सब ग्रहों का विचार करना।

६—यदि जन्म नक्षत्र से गिनने पर १, ३, ५, ७, १०, १९, २२ वां वेध वर्तमान पाप ग्रह के नक्षत्र से हो तो जीवन को भय यदि शुभ ग्रह हो तो व्यापार में केवल हानि हो।

७—जब सूर्य संक्रमण जिस दिन हो (जब सूर्य नई राशि में प्रवेश करे) या और कोई ग्रह एक राशि से दूसरी राशि में जावे।

या जब ग्रहण हो या गह युद्ध हो या उल्कापात (अकाश से तारे गिरना) हो तो इन दिनों में १-१० और १९ वां नक्षत्र पड़े तो मृत्यु या इसी प्रकार की अनहोनी घटना हो।

उल्का—काल प्रकाशिका मत में सूर्य नक्षत्र से १० वाँ तारा (नक्षत्र) परन्तु बलभद्र मत से सूर्य नक्षत्र से २१ वाँ तारा।

अन्धतारा - अन्ध तारा—पहिला। अनुजन्म या कर्पक्ष—जन्म से १० वाँ तारा आधान या त्रिजन्म तारा-जन्म से १९ वाँ तारा हैं ऐसा भी कहा है।

गोचर में शनि का विशेष विचार

१—शनि की साढ़ेसाती

जन्म राशि से १२ वें स्थान, जन्म राशि पर, एवं द्वितीय स्थान पर जब शनि रहता है तो उसे शनि की साढ़ेसाती कहते हैं। शनि एक राशि पर २॥ वर्ष रहता है इस प्रकार ३ राशि में ७॥ वर्ष हो जाते हैं। इसमें बहुत कष्ट होता है।

जन्म राशि से जब १२ वें घर में शनि जाता है उस समय से पूरा प्रभाव डालने लगता है यदि शनि वक्री हो तो ७॥ वर्ष से भी अधिक समय लग जाता है। पंचांग से पता लग जाता है कि विशेष जन्म राशि वाले को कौन समय से साढ़े साती आरंभ होगी।

साढ़े साती में नाना प्रकार के क्लेश, दुष्टों से भय, कार्य में हानि, विदेश भ्रमण, संतान पीड़ा, सम्पत्ति नाश, पशुओं से पीड़ा और मृत्यु तक कर देता है, मनमें अशांति, रोग, स्मरण शक्ति का ह्रास आदि होता है।

जब १२ वाँ शनि हो तो—शनि की दृष्टि। जन्म राशि में--शनि का भोग। और द्वितीय स्थान में--शनि की लात कही जाती है।

जिसका दीर्घ जीवन है उसके जीवन में ३ बार साढ़े सातो आती है। पहिले फेरे में इनमें सब या कुछ बुरा फल देता है परन्तु आक्रमण बड़े वेग से होता है और नाना प्रकार से व्यथित कर देता है। दूसरे फेरे में साढ़े साती का वेग बहुत धीमा हो जाता है कभी-कभी दुःख तो अवश्य होता है परन्तु यथार्थ में उतना हानिकर नहीं होता। दूसरे फेरे में किसी को कुछ अच्छा भी फल देता है जिससे उन्नति होती है। परन्तु तीसरा फेरा अर्थात् अन्तिम साढ़े साती प्रायः मृत्यु को ही बुला लाती है कोई भाग्यवान् ही इस साढ़े साती को पाता है।

साढ़े साती सदा अनिष्ट जाती है ऐसा नहीं है। जब शनि और चंद्र इनकी युति योग, केन्द्र योग या प्रति योग हो तो उस समय साढ़े साती में विशेष त्रास होता है।

साढ़े साती का शुभाशुभ विचार

प्रत्येक राशि के साढ़े साती समय में कौन समय शुभ या अशुभ है यही बताया जाता है--

१-- मेष राशि—मीन का पहिला २॥ वर्ष अति अशुभ मान, धन, मनुष्य की हानि हो। वृष का अंतिम २॥ वर्ष शुभ है।

२--वृष--मेष का २॥ वर्ष अशुभ। वृष का २॥ वर्ष शुभ। मिथुन का शुभ धन आदि प्राप्त के लिये अनुकूल है।

३--मिथुन राशि--वृष का २॥ वर्ष शुभ, कर्क का २॥ वर्ष शुभाशुभ, सिंह का २॥ वर्ष अशुभ।

४—कर्क राशि--मिथुन का २॥ वर्ष शुभ, कर्क का २॥ वर्ष शुभाशुभ, सिंह का २॥ वर्ष अशुभ।

५—सिंह राशि--कर्क २॥ वर्ष अशुभ। सिंह २॥ वर्ष अशुभ, कन्या २॥ वर्ष शुभ।

६—कन्या राशि--सिंह का २॥ वर्ष अशुभ, कन्या का शुभ, तुला का अति शुभ। इस समय अचानक धन स्थावर मशीन लाभ व श्रेष्ठ दर्जे का शुभ फल मिले।

७--तुला राशि—कन्या का शुभ, तुला का अति श्रेष्ठ, वृश्चिक का अति अशुभ।

८—वृश्चिक राशि—तुला का श्रेष्ठ, वृश्चिक का कनिष्ठ, धन का मध्यम।

९—धन राशि—वृश्चिक का अशुभ, धन का शुभ, मकर का मध्यम।

१०—मकर राशि—धन का शुभ, मकर का मध्यम, कुंभ का उत्तम।

११—कुम्भ राशि—मकर का साधारण, कुंभ का शुभ, मीन का शुभ।

१२—मीन राशि—कुम्भ का शुभ, मीन का शुभ, मेष का अशुभ फल।

विशेष विचार—साढ़े साती का फल विचार करते समय शुभाशुभ भाव शुभाशुभ ग्रहों की दृष्टि एवं योग पर भी ध्यान देना।

अन्य मत से साढ़े साती का अनिष्ट समय

मेष राशि को	= दूसरा २॥ वर्ष	तुला राशि को	= अंत के २॥ वर्ष
वृष राशि	= पहिला २॥ वर्ष	वृश्चिक राशि	= अंत के ५ वर्ष
मिथुन राशि	= अंत के २॥ वर्ष	धन राशि	= पहिले ५ वर्ष
कर्क राशि	= दूसरा २॥ वर्ष	मकर राशि	= पहिले २॥ वर्ष
सिंह राशि	= पहिले ५ वर्ष	कुम्भ राशि	=अन्त के २॥ वर्ष
कन्या राशि	= पहिले २॥ वर्ष	मीन राशि	= अंत के २॥ वर्ष

शनि की साढ़े साती में तीनों स्थान का फल

१—व्यय में शनि—व्यय की मात्रा अधिक, अकस्मात् धन हानि, एक स्थान में शांति पूर्वक वास कठिन हो। स्वास्थ्य भी बिगड़े।

२—लग्न में शनि—शरीर की कांति एवं स्वास्थ्य में हानि, चित्त में अशांति, धन का व्यय धन हानि, कार्य में विघ्न, कार्य असफल होने से धन का खर्च।

३—धन में शनि—बन्धु वर्गों से अनायास निरर्थक झगड़ा, कुटुम्बियों को रोग या किसी को मृत्यु के कारण अधिक खर्च।

जन्म कुण्डली से साढ़े साती का विचार

१—जन्म कुण्डली में शनि ६-८-१२ भाव में होकर अशुभ ग्रह से युक्त या ६ दृष्ट हो तो अशुभ फल।

२—जन्म चंद्र यदि २ या १२ भाव में होकर मंगल, सूर्य, राहु से युक्त हो तो अशुभ फल।

३—जन्म चंद्र निर्बल हो शुभ ग्रहों से दृष्ट नहीं हो तो साढ़े साती का अशुभ फल होता है।

४—जन्म चंद्र यदि वृश्चिक या शत्रुराशि में होकर राहु केतु मंगल से युक्त व दृष्ट हो तो अशुभ है।

५—जन्म चंद्र के २ और १२ भाव में शुभ ग्रह हो या इन पर शुभ दृष्टि हो तो शुभ फल होता है।

६—जन्म चंद्र के २-१२ स्थान में कोई ग्रह न हो तो भी साधारण शुभ फल मिलेगा।

७—जन्म चन्द्र यदि गुरु शुक्र बुध से युक्त हो तो साढ़े साती का शुभ फल होगा।

८—जन्म चंद्र शनि से युक्त हो पर मंगल से दृष्ट न हो तो साढ़े साती का शुभ फल होगा।

९—जन्म चन्द्रमा तथा शनि २, ६, ८, १२ स्थान में हो व नीच के या पाप राशि के साथ हो या अस्तंगत तथा पापदृष्ट या पाप युक्त होकर ८-१२ स्थान में पड़े हो तो शनि की साढ़े साती अशुभ फल करेगी !

१० यदि जन्म में सबल चंद्र युक्त शनि (लग्न या चंद्रमा से केन्द्र या त्रिकोण में) हो या राज्येश, लाभेश, पंचमेश से सम्बन्धित हो और शुभ ग्रह से युक्त या दृष्ट हो तो सब प्रकार से सुख कारक होता है।

शनि का चरण विचार

जन्म चंद्र से शनि = १-६-११ स्थान में = स्वर्ण पाद = सब प्रकार का सुख हो
,, ,, = २-५-९ ,, = रजत पाद = अच्छा भाग्य, काम सफल
,, ,, = ३-७-१० ,, = ताम्र पाद = समफल, मध्यफल अच्छा न बुरा
,, ,, = ४-८-१२ ,, = लोह पाद = धन नाश, दुःख दरिद्र दायक।

शनि की साढ़ेसाती में शनि कब किस अंग पर है विचारना

भाव	मास	अंग	फल
व्ययस्थान	७	मस्तक	हानि
व्ययस्थान	९	नेत्र	हानि
व्ययस्थान	८	मुख	लाभ
व्ययस्थान	६	कंठ	लाभ
जन्मस्थान	१०	हृदय	लाभ
जन्मस्थान	११	उदर	लाभ
जन्मस्थान	५	नाभि	भय
जन्मस्थान	४	गुह्यांग	मृत्यु
धनस्थान	१३	घुटना	जय
धनस्थान	१२	जंघा	सौख्य
धनस्थान	५	पाद	पर्यटन

नरपति-जयचर्योक्त शनि नराकार चक्र
जन्म नक्षत्र से शनि के वर्तमान नक्षत्र तक गिनना जिस अंग पर शनि आवे उसका फल नीचे दिया है।

नक्षत्र क्रम	अंग	फल
१	मुख	हानि
४	दक्षिण भुज	जय
६	चरण	भ्रम
५	हृदय	श्री प्राप्ति
४	वाम भुज	भय
३	शीर्ष	राज्य
२	नेत्र	सौख्य
२	गुह्य	मृत्यु भय

योग २७

नारदोक्त शनि चक्र

जन्म नक्षत्र से शनि जिस नक्षत्र पर हो उस नक्षत्र तक गिन के फल का विचार करना

नक्षत्र क्रम	अवयव	फल	उदाहरण
१	ललाट	राग	जन्म नक्षत्र चित्रा हो और गोचर में
३	दुख	लाभ	शनि आश्लेषा पर हो तो चित्रा से
२	गुह्य	हानि	आश्लेषा तक गिनने से २३ संख्या

१	नेत्र	लाभ	आई तो दक्षिण पाद के ३ नक्षत्रों
५	हृदय	सौख्य	में शनि आया जिसका फल इष्ट
४	वाम हस्त	बंधन	यात्रा है।
३	वाम पाद	दुःख	
३	दक्षिण पाद	इष्ट यात्रा	
४	दक्षिण हस्त	अर्थ लाभ	

२७ नक्षत्र

शनि वाहन विचार

शनि के साढ़े साती प्रवेश समय के वाहन विचार से भी साढ़े सातो के फल का विचार होता है।

रीति—जिस दिन शनि बदले उस दिन को (तिथि + वार + नक्षत्र + स्वनाम के अक्षर) ÷ ९ = तिथिवार नक्षत्र संख्या और नाम के अक्षर की संख्या जोड़कर ९ का भाग दे दें जो शेष बचे तो वाहन जानना।

शेष	वाहन	फल	अन्य मत से
१	खर (गदहा)	हानि हो	शेष ४ महिष के स्थान में
२	अश्व (घोड़ा)	जय	स्यार तथा मेष वाहन कहने,
३	गज (हाथी)	सौख्य	जिसका फल अति लाभजनक
४	महिष (भैंसा)	मध्यम	बताया गया है।
५	सिंह	शत्रुनाश	
६	जम्बुक (स्यार)	शोक सन्ताप	
७	वायस (काक)	कलह	
८	मयूर (मोर)	लाभ	
९	हंस	सुख	

अन्य मत से वाहन विचार—जन्म नक्षत्र से गोचर में जिस दिन बदले उस दिन के नक्षत्र तक संख्या गिन कर ९ का भाग देना शेष पर से उपरोक्त वाहन के अनुसार हो फल जानना।

वाहन पर विशेष विचार

१ - साढ़े सातो जो अशुभ फल देने वाली हो उस समय वाहन भी अशुभ फल दे दे तो साढ़े सातो का विशेष अशुभ फल होगा।

२—यदि अशुभ फल दायक साढ़े साती हो प्रवेश समय वाहन शुभ फलद हो तो विशेष अनिष्ट फल नहीं होगा मध्यम फल होगा।

३—शुभ फल दायक साढ़े साती हो और शुभदायक वाहन हो तो विशेष शुभ।

४--शुभ फल दायक साढ़े साती में प्रवेश समय अशुभ फल दायक वाहन हो तो मध्यम फल होगा।

गोचर में जब शनि अपनी राशि से ४, ७ और १० स्थान में जाता है तो-मानसिक दुःख की वृद्धि करता है, जीवन को अव्यवस्थित करता है जिससे नाना प्रकार के दुःखों का सामना करना पड़ता है।

शनि चतुर्थ में-स्वास्थ्य बिगड़ता है. निवास में अवश्य ही परिवर्तन करता है।

शनि सप्तम में-परदेश वास हो यदि सप्तम में चर राशि हो तो अवश्य फल हो।

शनि दशम में-नौकरी व्यवसाय आदि में गड़बड़ी, कार्य में सफलता।

(३) अढ़ैया शनि—जन्म राशि से ४, ८ राशि में स्थित शनि अढ़ैया शनि कहलाता है यह २।। वर्ष शुभाशुभ फल करता है। शनि किसी को प्रारम्भ में, किसी को मध्य में, किसी को अन्त में अनिष्ट करता है।

गोचर में शनि का वार्षिक (एक वर्ष का) फल

शनि गुरु और राहु तीनों शीघ्रगामी नहीं है इन तीनों के फल का गोचर में बहुत प्रभाव पड़ता है।

गोचर के अनुसार सूर्य मंगल और शुक्र से मास का फल कहा जाता है तब इन बातों पर ध्यान देने की आवश्यकता है: —

१ जब राशि का गोचर फल बुरा होता है तब अन्य शुभ फलों की हानि हो जाती है अर्थात् जब गोचर का शनि अशुभ होता है तब उस वर्ष में प्रायः सभी ग्रह अशुभ फल देते हैं।

२—जिस वर्ष शनि अशुभ फलदायक होता है और गुरु का फल यदि शुभ हो तो भी उस वर्ष में विशेष अशुभ ही होता है।

३—जिस वर्ष में शनि उत्तम फल दाता हो और गुरु का अशुभ फल हो तो उस वर्ष या उस समय में प्रायः शुभ ही फल होता है।

४—जिस वर्ष या समय में शनि शुभ फलदाता हो परन्तु गुरु और राहु दोनों अशुभ फल देवें तो उस वर्ष या समय में शुभ ही फल विशेष होता है।

५—जिस वर्ष या समय में शनि शुभ फल दायक हो और गुरु राहु भी शुभ फल दायक हों तो सब प्रकार से शुभ ही शुभ होता है।

६—यदि वर्ष का फल उत्तम हो और मास का फल खराब हो तो उस वर्ष में उत्तम ही फल होगा।

७—यदि वर्ष का फल खराब हो और मास का फल उत्तम हो तो उस मास में उत्तम फल नहीं के बराबर होगा।

८—यदि वर्ष का फल उत्तम हो और मास का भी फल उत्तम हो तो उस मास में समस्त शुभ फल होंगे।

इसी प्रकार गोचर में वर्ष और मास का फल विचारना।

लग्न या रवि की साढ़ेसाती

मनुष्य को शनि की साढ़ेसाती न होते हुए भी अनेक प्रकार के दुःख भोगने का अवसर आ जाता है जिसका कारण लग्न या रवि की साढ़ेसाती है।

जिस प्रकार जन्म राशि के चन्द्र पर से व्यय स्थान जन्म स्थान और धन स्थान में शनि के जाने से साढ़ेसाती होती है उसी प्रकार लग्न और सूर्य की राशि से भी विचार होता है।

१—लग्न की साढ़ेसाती—जन्म लग्न के व्यय स्थान में जब शनि आवे तो शनि की साढ़ेसाती सदृश यह भी साढ़ेसाती मानी जाती है लग्न स्थान और धन स्थान में जब तक शनि रहेगा तब तक लग्न की साढ़ेसाती रहेगी।

२—सूर्य की साढ़ेसाती—जन्म के सूर्य के व्यय स्थान में शनि आने पर साढ़ेसाती का आरम्भ माना जाता है जो आगे सूर्य की राशि के स्थान व सूर्य के दूसरे स्थान पर शनि रहने तक साढ़ेसाती सूर्य की समझी जायगी।

१—लग्न की साढ़ेसाती में लग्न के १२-१-२ स्थान में जिस प्रकार के शुभ या अशुभ ग्रह हों तथा उन भावों पर जैसे ग्रहों का योग या दृष्टि हो उसी के अनुसार हानि लाभ सुख आरोग्य यश अपयश धन लाभ हानि आदि फल होता है।

२—रवि की साढ़ेसाती में रवि के १२-१-२ भाव में जैसे ग्रह हों या जैसे ग्रहों का योग या दृष्टि हो उसी के अनुसार उद्योग धंधा, अधिकार, मान सम्मान, सुख दुःख आदि प्राप्त होता है।

गोचर के अनुसार ग्रहों का वर्ष फल—

कोई भी जन्म राशि हो जब किसी की जन्म राशि में सूर्य प्रवेश करता है (जिस समय सूर्य की कोई संक्राति उस राशि में हो) उस दिन से दिनों की गिनती कर पंचांग देखकर तिथि मास आदि लिखकर पूरे वर्ष भर के समय का सब ग्रहों का वर्ष फल लो।

ग्रह दशा	कब से	कब तक	राशि अंश	फल
१ सूर्य की	जन्म राशि की संक्राति से	२०° तक	०–२०	=धन नाश, चिंता
२ चन्द्र की	उससे आगे	५०° तक	१–२०	=धन धर्म की प्राप्ति,
३ मंगल की	उससे आगे	२८ तक	०–२८	=रोग मृत्यु, शस्त्रादि भय
४ बुध की	उससे आगे	५६ तक	१–२६	=धन प्राप्ति
५ शनि की	उससे आगे	३६ तक	१–६	=आलस
६ गुरु की	उससे आगे	५८ तक	१–२८	=सम्पत्ति की प्राप्ति
७ राहु की	उससे आगे	४२ तक	१–१२	=बंधन
८ शुक्र की	उससे आगे	७० तक	२–१०	=अभीष्ट फल की प्राप्ति,

योग ३६० अंश १२–०

इस प्रकार गणना से जातक की फिर जन्म राशि आ जाती है।

उदाहरण—मान लो किसी की कुंभ राशि है सम्वत् २०१८ में कुम्भ राशि में सूर्य माघ कृष्ण ५ इष्ट २७-३० पर प्रवेश हुआ है। इससे १३-२-१९६२ तारीख से सूर्य दशा की गणना आरम्भ हुई। सूर्य के अंशों की गिनती करने से ठीक समय निकल आता है। उस समय पंचांग से देखकर तारीख क्या पड़ती है यहाँ नोट कर दी है। तारीख या दिन की गणना में कुछ दिन का अन्तर आ सकता है।

सूर्य दशा चक्र

ग्रह दशा	राशि अंश	सूर्य की राशि अंश से	राशि अंश तक	तारीख
सूर्य	०–२०	कुम्भ ० अंश से	कुम्भ के २०° तक	४-२-१९६२ तक
चंद्र	१–२०	कुम्भ के २०° से	मेष के १०° तक	२३-४-१९६२
मंगल	०-२८	मेष १०° से	वृष ८ तक	२२-५-१९६२
बुध	१–२६	वृष ८ से	कर्क ४ तक	२०-७-१९६२
शनि	१–६	कर्क ४ से	सिंह १० तक	२७-८-१९६२
गुरु	१–२८	सिंह १० से	तुला ८ तक	२५-१०-१९६२
राहु	१–१२	तुला ८ से	वृश्चिक २० तक	६-१२-१९६२
शुक्र	२–१०	वृश्चिक २० से	मकर ३० अंश तक	१२-२-१९६३

अरिष्टकारी गोचर फल विचार

१—राहु—यदि जन्म में राहु धन या मीन राशि में हो तो जब गोचर में गुरु इस राहु के बराबर राशि अंश में आता है तब अरिष्ट होता है। गुरु यदि उस राशि के त्रिकोण में भी जाये तो भी अरिष्ट होना संभव है।

२—राहु गुरु—यदि जन्म में राहु और गुरु साथ हों तो जब राहु की राशि से गोचर का शनि त्रिकोण में आता है तब अरिष्ट होता है।

३—षष्ठेश—षष्ठेश जिस राशि या नक्षत्र में हो उससे त्रिकोण में जब शनि आवे तब मृत्यु का भय होता है। यदि उस समय कोई मारकेश या मृत्यु का योग न हो तो जातक के किसी कुटुम्बी की मृत्यु होती है। गोचर में शनि कई बार सब राशियों और नक्षत्रों में जाता है परन्तु मृत्यु तभी सम्भव होगी जब अन्य योगों से भी उसे मृत्यु या अरिष्ट होना सम्भव हो।

४ गुरु—लग्न या चन्द्र से तीसरे द्रेष्काण में गुरु हो तो उस द्रेष्काण के स्वामी के त्रिकोण में जब गोचर में शनि जाये तब उस वर्ष में परदेश यात्रा, विवाद और मृत्यु तुल्य कष्ट होता होता है।

५—अष्टमेश—अष्टमेश जिस द्वादशांश में हो उसके त्रिकोण में जब गोचर का राहु आवे तब उस समय का अष्टमेश जिस राशि में बैठा हो उसके त्रिकोण में जब सूर्य आता है तब उस मास में मृत्यु का भय सम्भव है। जैसे मान लो कुम्भ का मंगल-अष्टमेश है यह मिथुन के द्वादशांश में है। मिथुन से त्रिकोण तुला और कुम्भ राशि हुई जब गोचर

में राहु तुला या कुम्भ में जायगा तो जातक को अरिष्ट होना सम्भव होगा। यहाँ अष्टमेश कुम्भ का है जिसकी त्रिकोण राशि मिथुन और तुला है इससे जब सूर्य मिथुन या तुला का होगा उसी मास विशेष अरिष्ट होने की संभावना है।

६—त्रिक (६-८-१२ घर)—इन तीनों भावों के स्पष्ट को जोड़कर जो राशि कला आदि प्राप्त हो उस राशि अंशादि में या उसके त्रिकोण में जब शनि आवे तब अरिष्ट होना सम्भव है।

७—अष्टमेश—अष्टमेश गत राशि के त्रिकोण में जिस समय गोचर का चन्द्र आता है उस समय अरिष्ट सम्भव है।

ग्रहों के अष्टक वर्ग से गोचर फल

जन्म कुण्डली के ग्रहों का अष्टक वर्ग निकालो जिस ग्रह की अष्टक वर्ग चक्र में जिस राशि में शुभ रेखा अधिक हैं उस राशि में वह ग्रह शुभ फल देगा अष्टक वर्ग में ८ शुभ रेखाएँ हैं।

यदि ६ रेखा हो तो ६ शुभ और २ शून्य अशुभ समझना, ७ रेखा हो तो १ कम अर्थात् $\frac{7}{8}$ ह्रास होगा $\frac{7}{8}$ फल शुभ होगा। ६ रेखा हो तो २ कम हुए अर्थात् ६ शुभ २ अशुभ होने से शेष=४ शुभ $\frac{4}{8}=\frac{1}{2}$ फल शुभ होगा। ५ रेखा होने से—३=$\frac{3}{8}$ $\frac{1}{8}$ फल। ४ रेखा—४=० फल। ३ रेखा—५ अशुभ=$-\frac{5}{8}$ अशुभ फल होगा। २ रेखा—६ अशुभ =$-\frac{6}{8}=\frac{3}{4}$ अशुभ। १ रेखा—७ अशुभ=$\frac{7}{8}$ अशुभ फल। रेखा बिलकुल न हो ८ अशुभ रेखा हो तो पूर्ण अशुभ फल होगा। इसका प्रिकार अष्टक वर्ग विषय के वर्णन में यह सब समझा दिया गया है।

२—यदि जन्मकालीन लग्न या चन्द्र से गोचर का ग्रह उपचय (३-६-१०-११ घर) में हो या मित्र ग्रह में हो या अपने उच्च या स्वक्षेत्र में हो और उस राशि में अष्टकवर्ग की ४ से अधिक शुभ रेखा हों तो शुभ फल की अधिक वृद्धि होती है।

या यह अपचय (उपचय के अतिरिक्त स्थान) में अपने नीच या शत्रुगृही हो और यदि उसमें अष्टक वर्ग की शुभ रेखा की अधिकता भी हो तो भी शुभ फल में न्यूनता आ जाती है। यदि शुभ रेखा ४ से कम हो तो अनिष्ट फल प्रबल हो जाता है।

३—गोचर का ग्रह यदि जन्म लग्न या चन्द्र से उपचय में हो और शुभ रेखा भी अधिक हो परन्तु निर्बल हो तो शुभ फल नहीं देगा अशुभता ही लायेगा।

४—कोई भी ग्रह पूरे ३० अंश में भ्रमण करता है। उस ग्रह के अष्टक वर्ग चक्र से पता लगेगा कि वह किसी विशेष राशि में किस अंश में शुभ होगा कितने में अशुभ होगा। अष्टकवर्ग में ८ शुभ रेखा होती हैं। ३० अंश÷८ रेखा=३°-४५′ का एक विभाग पड़ा (२) ७°-३०′ तक (३) ११°-१५′ तक (४) १५°-०′ तक (५) १८°-४५′, (६) २२°-३०′ तक (७) २६°-१५′ तक (८) ३०°-०′ तक।

इसका विचार पहिले अष्टकवर्ग चक्र से उदाहरण देकर समझा दिया गया है उस चक्र में ग्रहों का क्रम शनि, गुरु, मंगल, सूर्य, शुक्र, बुध, चन्द्र और लग्न के ही क्रम से

रखना बताया गया है। उदाहरण के लिए यहाँ शुक्र का अष्टक वर्ग लेते हैं। जिसमें रेखा शुभ सूचक और शून्य अशुभ सूचक बताया है।

शुक्र का अष्टकवर्ग चक्र जन्म कुण्डली के अनुसार उदाहरण स्वरूप

राशि	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	।=शुभ
ग्रह	ल.रा.	.	श.	.	.	मं.	के.	गु.	चं० बु.	सू. शु.	.	.	ग्रह ०=अशुभ
													अंश
१ शनि	।	०	०	०	।	।	।	०	०	।	।	।	३°–४५′
२ गुरु	०	०	।	।	।	।	०	०	०	०	०	।	१–३०
३ मंगल	०	।	०	।	।	०	०	।	०	।	।	०	११–१५
४ सूर्य	०	०	०	०	।	०	०	।	।	०	०	०	१५–०
५ शुक्र	।	।	०	०	।	।	।	।	०	।	।	।	१८–४५
६ बुध	।	।	०	०	।	०	।	०	०	०	।	०	२२–३०
७ चंद्रमा	।	०	०	।	।	०	।	।	।	।	।	।	२६–१५
८ लग्न	।	।	।	।	।	०	०	।	।	०	।	०	३०–०
योग	५	४	२	४	८	३	४	५	३	४	६	४	

मान लो शुक्र गोचर में धनु राशि में है यह जन्म राशि कुम्भ से ११ अर्थात् उपचय में है। यहाँ धन राशि में उपरोक्त चक्र में ४ शुभ रेखायें हैं और ४ शून्य अशुभ सूचक हैं। शुभाशुभ बराबर हो जाता है। यह आरम्भ में १ रेखा पाया है उसमें ३°–४५′ तक शुभ होगा। दूसरे-तीसरे और चौथे भाग में १५°–० तक शुभ रेखा न होने से अशुभ फल। पांचवें छठवें सातवें भाग में एक एक शुभ रेखा होने से २६°–१५′ तक शुभ होगा। अंतिम भाग में शुभ रेखा न होने से ३०° तक अशुभ होगा। इस प्रकार गोचर फल का गोचर के ग्रह की राशि से जन्म के अष्टकवर्ग चक्र से उस राशि के ग्रह की शुभता अशुभता कब तक रहेगी विचार लेना। यहाँ तुला राशि में उसे पूरी ८ रेखा मिली हैं और तुला शुक्र की मूल त्रिकोण राशि भी है। जन्म राशि से नवम (त्रिकोण) में पड़ती है। इससे जब शुक्र गोचर में तुला राशि पर आयगा तब अच्छा फल देगा। इसी प्रकार प्रत्येक ग्रह के अष्टक वर्ग चक्र से विचार लेना। अष्टक वर्ग के वर्णन में इसका और भी स्पष्ट विचार किया है।

अध्याय ७
सर्वतोभद्रचक्र

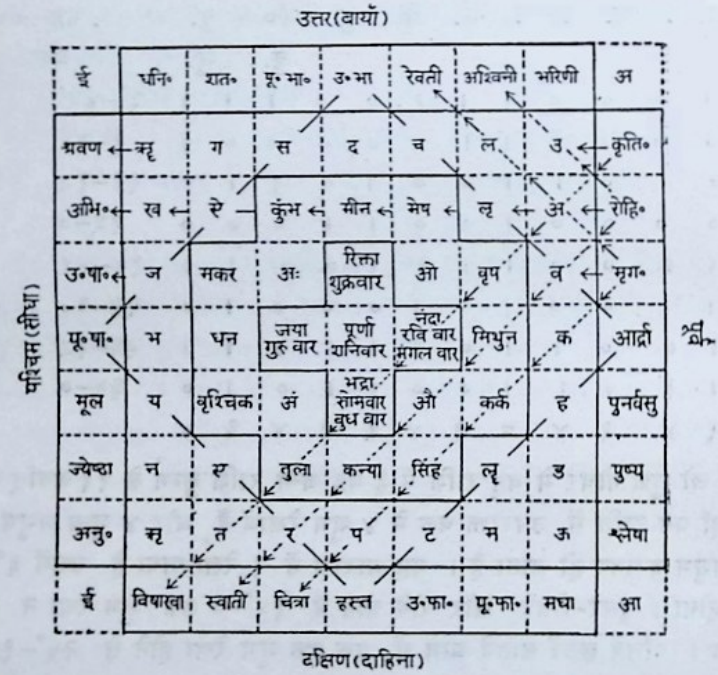
उत्तर(बायाँ)
पश्चिम(सीधा)
पूर्व
दक्षिण(दाहिना)
ई | धनि० | शत० | पू० भा० | उ० भा | रेवती | अश्विनी | भरिणी | अ
श्रवण | मृ | ग | स | द | च | ल | उ | कृति०
अभि० | ख | से | कुंभ | मीन | मेष | लृ | अ | रोहि०
उ० षा० | ज | मकर | अः | रिक्ता शुक्रवार | ओ | वृष | व | मृग०
पू० षा० | भ | धन | जया गुरु वार | पूर्णा शनिवार | नंदा रवि वार मंगल वार | मिथुन | क | आर्द्रा
मूल | य | वृश्चिक | अं | भद्रा सोमवार बुध वार | औ | कर्क | ह | पुनर्वसु
ज्येष्ठा | न | र | तुला | कन्या | सिंह | लृ | ड | पुष्य
अनु० | मृ | त | र | प | ट | म | ऊ | श्लेषा
ई | विशाखा | स्वाती | चित्रा | हस्त | उ० फा० | पू० फा० | मघा | आ

किसी नक्षत्र में ग्रह हो उसकी दृष्टि से इस चक्र में ३ वेध होते हैं एक बाईं ओर, दूसरा सामने, तीसरा दाहिनी ओर।

दो भुजाओं में चाहे दाहिना या बायां वेध हो, कोई ग्रह नक्षत्र एक राशि एक स्वर पै होगा उनका ही वेध होगा और किसी से नहीं।

उदाहरण—कृतिका में ग्रह-तिरछा अ, वृष, नंदा, भद्रा, तुला, त, विशाखा से वेध। पश्चिम छोर पर सीधा श्रवण से भी वेध।

रोहिणी में ग्रह हो–ऊपर उत्तर की ओर तिरछा अ, अश्विनी। नीचे तिरछा दक्षिण की ओर व, मिथुन, और कन्या र, स्वाती। सामने पश्चिम छोर में अभिजित्।

मृग० में ग्रह हो तो तिरछा दक्षिण को क, कर्क, सिंह प, चित्रा और उत्तर में तिरछा रेवती। सामने पश्चिम में उ० षा० इन सबसे वेध होता है।

ऊपर तीर के निशान द्वारा चक्र देखने से यह सब समझ पड़ेगा।

चंद्रा तिथि १-६-११, भद्रा तिथि २-७-१२, जया तिथि ३-८-१३, रिक्ता, ४-९-१४, पूर्णा तिथि ५-१०-१५ या अमावस।

नाम के अक्षर में जो स्वर हो वही स्वर उस वर्ण का स्वर कहलाता है। इस वेध का विचार होता है।

इस चक्र में अक्षर से, स्वर से, नक्षत्र से, राशि से, तिथि से, और गोचर में ग्रह जिस राशि या जिस नक्षत्र में हो उससे जन्म नक्षत्र के वेध का विचार होता है।

गोचर के ग्रह वर्तमान में जिस नक्षत्र और राशि में हों स्थापित कर उनका फल विचारना।

जब नक्षत्र से वेध होता है तो गड़बड़ी होती है।
जब अक्षर से वेध होता है तो हानि होती है।
जब स्वर से वेध होता है तो बीमारी होती है।
जब तिथि या राशि से वेध होता है तो बहुत बड़ी रुकावट होती है।

इनमें इकहरे वेध से लड़ाई में खतरा, २ से वेध हो तो धन हानि, ३ से वेध हो तो बाधा, ४ से वेध हो तो मृत्यु भय, लगातार ५ से वेध हो तो मृत्यु होगी।

नक्षत्र आर्द्रा, हस्त, पूर्वाषाढ़ा और उत्तर भाद्रपद में ४ केन्द्र के हैं इनसे एक दूसरे से रेखा खींचो तो चारो कोनों में ४ त्रिकोण बन जाते हैं। इन ४ कोण में कोई ग्रह कहीं जाता है तो ४ स्वर अ, आ, इ, ई, का वेध हो जाता है और पूर्णा तिथि का भी।

यहाँ चक्र में जो नक्षत्र दिये हैं और उनके समीप जो अक्षर दिये हैं ये उस नक्षत्र के होड़ा चक्र के अनुसार दिये अक्षरों से ही एक अक्षर हैं। क्योंकि यहाँ एक नक्षत्र के चारों चरणों के चार अक्षर देने का स्थान नहीं है इससे एक ही दिया है।

ऊपर बताये केन्द्र के ४ नक्षत्र हैं। आर्द्रा का अक्षर होड़ाचक्रानुसार क घ ङ छ है, हस्त का पू ष ण ठ है, पू० षा० का भू ध फ ढ़ है, उ भाद्र० का दुथ झ ञ है इनके सब अक्षर नहीं दिये परन्तु इनके चौखटे में एक नक्षत्र के पहले चरण से दूसरे के पहिले चरण से वेध होता है जैसे हस्त का दूसरे चरण का ण वेध उ षा के दूसरे चरण के अक्षर से होता है इसी प्रकार और भी समझना।

इसमें स=श, ब=व, घ=ख, थ=छ, त्र=ञ, ज=ग ये बराबर हैं। इनमें किसी एक से वेध हो तो दूसरे से भी वेध होना समझा जायेगा। शुभ ग्रह का वेध सौम्य वेध होता है।

यहाँ शतपद चक्र दिया है। जिसमें २८ नक्षत्रों के प्रत्येक चरण के एक-एक अक्षर दिये हैं। इस चक्र में २८ नक्षत्रों के ११२ अक्षर है। जिनमें से बिना मात्रा के अक्षर केवल इस सर्वतो भद्र चक्र में यहाँ दिये क्रम से ही दिये हैं जिससे उन अक्षरों के क्रम का पता चल जायगा। इसी स्पष्टीकरण को यह चक्र यहाँ दिया है—

शतपद चक्र (सर्वतोभद्र चक्र के उपयोग के लिये)

अ ३ व ४ क ५ ह ७ ड ८ म १० ट ११ प १२ र १४ त १५
इ ३ वि ४ कि ५ हि ७ डि ९ मि १० ठि ११ पि १२ रि १४ ति १६
उ ३ वु ४ कु ६ घ हु ८ ढ़ ९ मु १० टु ११ पु ष रु १५ तु १६
ङ छ ण १३ ठ
ए ३ वे ५ के ७ हे ८ डे ९ मे १० टे १२ पे १४ रे १५ ते १६
ओ ४ वो ५ को ७ हो ८ डो ९ मो ११ टो १२ पो १४ रो १५ तो १६
न १७ य १८ भ १९ ज २१ ख $\frac{२२}{१}$ ग २३ स २४ द २५ च २७ ल १
नि १७ यि १८ भि १९ जि २१ खि २२ गि २३ सि २४ दि २५ चि २७ लि २
नु १७ यु १८ भु २० धजु $\frac{२२}{१}$ खु २२ गु २३ सु २४ दु २६ थचु १ लु २
फ ढ फ झ
ने १७ ये १९ भे २१ जे $\frac{२२}{१}$ खे २२ गे २३ से २४ दे २७ चे १ ले २
नो १८ यो १९ भो २१ जो $\frac{२२}{१}$ खो २२ गो २३ सो २४ द २७ चो १ लो २

यहाँ नक्षत्रों के नाम अंकों में बनाये उनके चारों चरण के अक्षरों में एक सा अंक पड़ा है जैसे अ इ उ ए प्रत्येक में ३ अर्थात् तीसरा कृतिका नक्षत्र सूचक अंक पड़ा है। अभिजित का अंक $\frac{२२}{१}$ दिया है जिससे शतपद चक्र में पूरे २७ नक्षत्रों के चारों चरणों के अक्षर आ जाते हैं। अब इस चक्र के ऊपर के बिना मात्रा वाले अक्षर अ, व, क, ह, आदि यहाँ दिये क्रम से ही सर्वतोभद्र चक्र में दिये हैं जिसमें ६, १३, २० और २६ वाँ नक्षत्र पहिले वर्णन किये हुए केन्द्र के नक्षत्र हैं।

शतपद चक्र का पृथक् भी विचार होता है। नाम के अक्षर के अनुसार नक्षत्र के चरण होते हैं। जिस नक्षत्र के चरण में शुभ या क्रूर ग्रह आवे उससे वेध विचारते हैं।

शुभ ग्रहों के वेध से शुभ फल। पाप ग्रहों के वेध से पाप फल। शुभाशुभ ग्रहों के वेध से मिश्र फल होता है। यह सब सर्वतोभद्र चक्र के विचारने से स्पष्ट प्रकट होगा।

इस चक्र में लत्ता २ प्रकार का है।

(१) पुरोलत्ता—यह सूर्य मंगल, गुरु और शनि की लत्ता है इसमें नक्षत्र आदि की गिनती क्रम से होती हैं जैसे अश्विनी के बाद भरणी फिर कृत्तिका आदि।

(२) पृष्ठ लत्ता—यह शेष ग्रहों का लत्ता है अर्थात चंद्र बुध, शुक्र राहु केतु की यह लत्ता है। इसमें नक्षत्र आदि की गिनती विरुद्ध क्रम से होती है जैसे श्रवण के बाद उत्ता गिना तो उ० षाढ़ा फिर पूर्वाषाढ़ा फिर मूल इत्यादि।

अन्तर विचार—

१ सूर्य से गिनने पर १२ वां नक्षत्र पुरोलत्ता है अर्थात् आगे की लात

२ मंगल से गिनने पर तीसरा नक्षत्र पुरोलत्ता है अर्थात् आगे की लात (सीधी गिनती)
३ गुरु से गिनने पर छटा नक्षत्र पुरोलत्ता है अर्थात् आगे को लात (सीधी गिनती)
४ शनि से गिनने पर आठवाँ नक्षत्र पुरोलत्ता है अर्थात् आगे को लात (सीधी गिनती)
५ शुक्र से गिनने पर पाँचवां नक्षत्र पृष्ठा लत्ता है अर्थात् पीछे की लात (उल्टी गिन्ती)
६ बुध से गिनने पर सातवाँ नक्षत्र पृष्ठा लत्ता है अर्थात् पीछे की लात (उल्टी गिन्ती)
७ राहु से गिनने पर नवां नक्षत्र पृष्ठा लत्ता है अर्थात् पीछे की लात (उल्टी गिन्ती)
८ चंद्र से गिनने पर २८वाँ नक्षत्र पृष्ठा लत्ता है अर्थात् पीछे की लात (उल्टी गिन्ती)

इस प्रकार गोचर के अनुसार ग्रह के नक्षत्र से जन्म नक्षत्र तक गिनने पर उपरोक्त लत्ता तारा आ जावे तो बीमारियाँ व्यथा हो।

१—मान लो सूर्य गोचर में मूल नक्षत्र १९ वें नक्षत्र में है इससे सीधा १२ गिना तो १२ वाँ नक्षत्र कृतिका आया। यदि जन्म नक्षत्र कृतिका हो तो बीमारी होगी।

२ – मान लो शुक्र श्रवण में है शुक्र का पृष्ठ लत्ता पाँचवाँ है तो श्रवण से उल्टा गिना १ श्रवण २ उ०षा० ४ मूल, ५ ज्येष्ठा आया यदि ज्येष्ठा जन्म नक्षत्र हो तो बीमारी होगी इसी प्रकार सब ग्रहों का पुरोलत्ता या पृष्ठ लत्ता विचारे।

लत्ता फल

सूर्य लत्ता में–सब व्यापार में हानि।
राहु केतु लत्ता में–दुःख।
शुक्र लत्ता में–कलह
चन्द्र लत्ता में–बड़ी हानि।
गुरु लत्ता में–मृत्यु, बन्धुहानि, सार्वजनिक भय या अरिक्षता हो।
बुध लत्ता में–स्थान हानि या इसी प्रकार के बुरे फल।

जब २ या अधिक लत्ता साथ पड़े तो अनुपात से दुगुना या तिगुना बुरा फल सबके मेल से विचारना।

वेध का प्रकार

जब ग्रह गति में वक्री हो तो उसकी दृष्टि दाहिनी ओर रहती है।
जब ग्रह गति में सीधा हो तो उसको दृष्टि बाईं ओर रहती है।
जब ग्रह गति में मध्य हो तो उसकी दृष्टि सामने की ओर रहती है।
यह विचार मंगल आदि ५ ग्रहों का है।
राहु केतु सदा वक्री हैं उनका वेध दाहिनी ओर होगा।
सूर्य चन्द्र सदा मार्गी हैं उनका वेध बाईं ओर होगा।
गति में समता न होने से ग्रहों के यहाँ ३ प्रकार के वेध बताये गये हैं।

अशुभ वेध—कोई तिथि राशि या अंश या नक्षत्र पाप ग्रह से वेध हो तब उसे सब शुभ कार्यों में त्याग देना।

वेध में विवाह करने से सुखी नहीं होता। यात्रा में उन्नतिशील नहीं होगा। रोगी को दवा करने में अच्छा न होगा। व्यापार करने में सफलता नहीं होगी।

पाप ग्रहों के वेध में जब ग्रह वक्री हो तो बहुत बुरा फल देता है या मृत्यु देता है।

शुभ ग्रहों के वेध में जब ग्रह हो तो अच्छा फल होता है।

पाप और शुभ ग्रह जब शीघ्र गति में हों तो उस ग्रह का स्वभाव ग्रहण कर लेते हैं जिसके साथ कि वे रहते हैं।

ग्रह वेध फल

सूर्य का वेध हो तो—मनोमालिन्य हो, मन में ताप।

मंगल का वेध हो तो – धन हानि।

शनि का वेध हो तो – रोग से पीड़ित।

राहु केतु का वेध हो तो—बाधा विघ्न हो।

चन्द्र का वेध हो तो—मिश्र फल (शुभाशुभ)।

शुक्र का वेध हो तो—स्त्री भोग, अन्य मत में शत्रु वृद्धि।

बुध का वेध हो तो—ज्ञान वृद्धि।

गुरु का वेध हो तो—सदा अच्छा फल।

वेध कारक ग्रह यदि—वक्री हो–प्रभाव दुगुना हो, उच्च में–प्रभाव तिगुना हो, गति (मार्गी) साधारण फल, नीच में आधा फल।

पाप ग्रह बुरा फल देता है शुभ ग्रह अच्छा फल देता है।

परन्तु शुभ ग्रह पाप ग्रह के साथ तो अच्छा फल नहीं देता।

पाप ग्रह वेध में यदि वक्री ग्रह हो तो मृत्यु फल देता है।

गति शीघ्री हो तो बीमारी शीघ्र अच्छी होती है।

पाप ग्रह का वेध अपने जन्म दिन में हों तो मानसिक पीड़ा हो मन में शांति न मिले।

१ क्रूर ग्रह के वेध से उद्वेग या लड़ाई में खतरा।

२ क्रूर ग्रह के वेध से–हानि, धन हानि।

३ क्रूर ग्रह के वेध से–भंग या बाधा।

४ क्रूर ग्रह के वेध से–मृत्यु।

(१) सूर्य गोचर में ३ राशि वृष मिथुन कर्क (जो पूर्व में हैं) वह दिशा अन्त समझी जावेगी शेष ३ दृश्य समझी जावेंगी।

(२) स्वर अ. उ. लृ. और ओ. जो उत्तर पूर्व में हैं इन्हें पूर्व दिशा का समझना। स्वर आ. ऊ. ॠ. और औ. जो दक्षिण-पूर्व में हैं उन्हें भी पूर्व दिशा का समझना। स्वर इ ए और अं जो दक्षिण पश्चिम में है उन्हें पश्चिम का समझना। स्वर ई ॠ ऐ और अः जो पश्चिम-उत्तर में है उन्हें पश्चिम का समझना।

(३) यदि विशेष दिशा में जिसमें सूर्य (३ राशियों में) ३ मास तक ठहरता है सर्व नक्षत्र स्वर, राशि और तिथि उस दिशा की अस्त समझी जाती है।

(४) जब नक्षत्र अस्त हो वहाँ वेध हो तो बीमारी भ्रम हो।

जब व्यंजन अस्त हो वहाँ वेध हो तो – हानि।
जब स्वर अस्त हो वहाँ वेध हो तो – शोक, व्याधि।
जब राशि अस्त हो वहाँ वेध हो तो – बाध।
जब तिथि अस्त हो वहाँ वेध हो तो – भय उत्पन्न हो।
जब ये पाँचों अस्त हों तो–निश्चय मृत्यु हो।

(५) जिस दिशा की ओर जो अस्त हो–यात्रा युद्ध विवाद नया द्वार या महल अटारी बनाना या और भी इसी प्रकार के शुभ कार्य नहीं करना।

(६) जिसके नाम का आदि अक्षर अस्त हो तो उस समय वह अभाग्यवान् हो। मनुष्य जिसके नाम का अक्षर अस्त है तो कविता या प्रतिरोध, किला, युद्ध आदि में यदि सफलता चाहता है तो उस अस्त दिशा को त्याग देना।

(७) कोई नक्षत्र किसी उदय दिशा में हो और वेध हो तो बढ़ती हो।

वेध यदि व्यंजन में हो तो–लाभ हो
वेध यदि स्वर में हो तो–सुख
वेध यदि राशि में हो तो–सफलता
वेध यदि तिथि में हो तो–प्रसिद्धता
यदि पाँचों का वेध हो तो स्थान सुरक्षित रहे।

(८) जब पाप ग्रह से वेध हो और दोनों बाजू (दाहिने और बायें बाजू) व्यजन, तिथि स्वर, राशि और नक्षत्र से कोई समय वेध हो तो उसकी निश्चित मृत्यु हो। जब पाप ग्रह का वेध हो और उपग्रह भी हो तो रोग या लड़ाई में मृत्यु होती है।

यहाँ उपग्रह ८ हैं इनका विचार

सूर्य स्थान से गिनने पर इस प्रकार नाम हैं

(१) सूर्य से पाचवाँ तारा=विद्युन्मुख
(२) सूर्य से आठवाँ तारा=शूल
(३) सूर्य से १४ वाँ तारा=सन्निपात
(४) सूर्य से १८ वाँ तारा=केतु
(५) सूर्य से २१ वाँ तारा=उल्का
(६) सूर्य से २२ वाँ तारा=कम्प
(७) सूर्य से २३ वाँ तारा=वज्रक
(८) सूर्य से २४ वाँ तारा=निर्घात

जब गोचर में इनमें किसी स्थान में ये उपग्रह हों तो कोई शुभ कार्य नहीं करना। उस समय कोई कार्य करो तो बाधा होती है।

जन्म नक्षत्र से गिनने पर नक्षत्रों के नाम—

(१) जन्मभा, जन्मर्क्ष = जन्म समय जिस नक्षत्र पर चन्द्र हो।
(२) कर्म = कर्मभ, कर्मर्क्ष = नं० १ से १० वां नक्षत्र
(३) आधान — ,, १९ वां ,,
(४) विनाश, विनाशन, वैनाशिक ,, २३ वां ,,
(५) सामुद्रिक — ,, १८ वां ,,
(६) संघातिक — ,, १६ वां ,,
(७) जाति — ,, २७ वां ,,
(८) देश — ,, २७ वां ,,
(९) अभिषेक — ,, २८ वां ,,

जन्म नक्षत्र का वेध इनमें से किसी में हो तो नीचे लिखा फल होगा—

वेधफल—

नक्षत्र या तारा नाम	जन्म तारा से संख्या	पाप ग्रह वेध फल	शुभ ग्रह वेध फल	युद्ध समय पाप ग्रह वेध
१ जन्मर्क्ष	पहिला	मृत्यु	शुभ	भय
२ कर्म	१० वां	शोक, क्लेश	शुभ	असफलता
३ आधान	१९ वां	स्थान परिवर्तन बुद्धि प्रवेश	शुभ	घात खून खराबी
४ विनाश	२३ वां	बन्धु से कलह	शुभ	मृत्यु अपयश
५ सामुद्रिक	१८ वां	बुरा अनहोनी कष्ट	शुभ	भंग युक्त स्थिति
६ संघातिक	१६ वां	हानि	शुभ	
७ जाति	२६ वां	कुटुम्बनाश	शुभ	
८ देश	२७ वां	देश निकाला	शुभ	
९ अभिषेक	२८ वां	बंधन	शुभ	

इन नक्षत्रों में यात्रा विवाह आदि मंगल कार्य वर्जित हैं। उपग्रह में भी वेध हो तो मृत्यु।

बंधकारक ग्रह शुभ या अशुभ हो जिस दिन वेध हो वे शुभ या अशुभ समझे जायेंगे।

चन्द्रवेध में लगातार हो तिथि या नक्षत्र स्वर राशि और व्यंजन से किसी दिन वेध हो तो वेधकारक ग्रह जैसा शुभ या अशुभ हो उसके अनुसार वह दिन शुभ या अशुभ समझा जायेगा।

बाल युवा आदि स्वर जानना

जिस समय कोई तिथि में कोई प्रश्न हो उसका विचार करने को तिथि की भुक्त घड़ी की संख्या को पल बनाकर ५ का भाग देवें जो शेष बचे उससे स्वर समझें।

स्वर नाम—(१) बाल (२) कुमार (३) युवा (४) वृद्ध (५) मृत्यु स्वर।

फल—बाल स्वर = किंचित लाभ
कुमार स्वर = अर्द्ध लाभ
युवा स्वर = सर्व सिद्धि
वृद्ध स्वर = हानि
मृत्यु स्वर = क्षय

इनमें से जो स्वर जिसके पञ्चम स्थान में हो वह स्वर मृत्यु देने वाला होता है।

कोई उद्देश से प्रश्न पूछे तो उसके अनुसार फल कहना जैसे—

	बाल स्वर	युवास्वर	वृद्ध स्वर	मृत्यु स्वर
लाभ विषय	स्वल्प लाभ	राज लाभ	लाभ न हो	जिस प्रयोजन का
रोग विषय	चिर काल तक रोग	तत् क्षण क्लेशनाश	क्लेश बढ़े	प्रश्न हो उस
गमन विषय	हानि	साफल्य	गया न लौटे	कारण मृत्यु हो।
रण विषय	नाश	शत्रु मारने वाला	भंग	मृत्यु तथा भंग

सुदर्शन चक्र

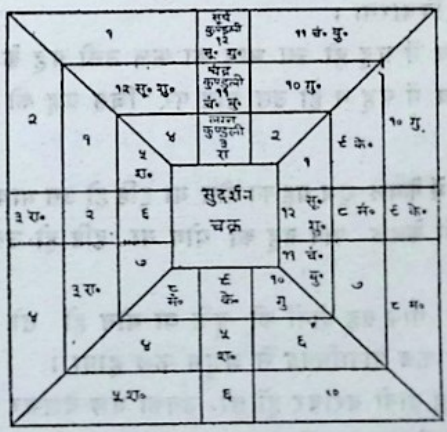

वह चक्र बहुधा गोल बनाया जाता है परन्तु सुगमता के निमित्त यहाँ चौकोर बनाया गया है। किसी प्रकार बनाओ परन्तु इसमें कुंडली के १२ स्थान अवश्य होने चाहिये। इसमें सबसे नीचे भीतर पहिले लग्न कुंडली रहती है उसके ऊपर चंद्र कुंडली पूरी रहती है और सबसे ऊपर सूर्य कुंडली रहती है जैसा यहाँ बनाया है चक्र देखने से सब समझ में आ जायगा।

लग्न कुण्डली के अनुसार लग्न को ऊपर रखकर लग्न कुण्डली यहाँ भर दी गई है। चंद्र जिस राशि पर है वह राशि ऊपर रखकर बीच में पूरी चंद्र कुण्डली भर दी गई है। सबसे ऊपर सूर्य जिस राशि में है उसे ऊपर रखकर कुण्डली रख दी गई है।

वास्तव में लग्न कुण्डली ही है जो यहाँ ३ प्रकार से एकत्र रख दी गई है जिससे कि तीनों प्रकार की कुण्डली से एक साथ किसी भाग का विचार किया जा सके।

इसमें विशेषता यही है कि लग्न चंद्र और सूर्य तीनों एक भाव में अर्थात् लग्न भाव में आ जाते हैं। इसी को इस चक्र का लग्न भाव समझकर पूरी सुदर्शन कुण्डली का विचार (करना) अर्थात् लग्न के आगे धन भाव फिर सहज भाव आदि क्रमशः मानकर उनका फल विचारना।

यदि सूर्य और चन्द्र लग्न में ही हों तो इस सुदर्शन चक्र की कुण्डली लिखने की आवश्यकता नहीं रहेगी। सूर्य और चंद्र जब पृथक्-पृथक् राशियों में लग्न से अन्य राशि में हों तब ही इस चक्र द्वारा फल विचारने की आवश्यकता होगी।

(१) उपरोक्त सुदर्शन चक्र की कुण्डली में लग्न भाव में सूर्य शुभ माना जाता है अन्य भाव में पाप समझा जाता है। पाप ग्रह की उच्च या स्वराशि में हो तो अशुभ फल नहीं देगा।

(२) जो भाव अपने स्वामी या शुभ ग्रह से युक्त दृष्ट हो उस भाव की वृद्धि होती है जिस भाव में पाप ग्रह का योग या दृष्टि हो उस भाव की हानि होती है।

इसी प्रकार ग्रहों का शुभत्व और अशुभत्व विचार कर भावों में ग्रहों के योग और दृष्टि के अनुसार फल विचारना।

(३) जिस भाव में ग्रह हो उस भाव का फल उसी ग्रह के अनुसार विचारना।

(४) जिस भाव में ग्रह न हो उस भाव पर जिस ग्रह की दृष्टि हो उसके अनुसार फल विचारना।

(५) जिस भाव में केवल शुभ ग्रह का योग या दृष्टि हो उस भाव का फल शुभ जानना। जिस भाव में केवल पाप ग्रह का योग या दृष्टि हो उस भाव का फल अशुभ जानना।

जिसमें शुभ और पाप ग्रह दोनों की दृष्टि या योग हों तो मिश्र फल होगा। इसमें भी शुभाधिक्य से शुभ फल पापाधिक्य से अशुभ फल होगा।

शुभ और पाप ग्रह दोनों बराबर हों तो उनका बल देखकर जिसका बल अधिक हो उसका फल कहना। इसी प्रकार दृष्टि के सम्बन्ध में भी विचार करना।

(६) जिस भाव में कोई ग्रह न हो और न किसी ग्रह की दृष्टि हो तो उस भाव के स्वामी के अनुसार फल विचारना।

(७) शुभत्व अशुभत्व का विशेष विचार।

स्वाभाविक शुभ ग्रह यदि सप्त वर्ग में पाप वर्ग में पड़े तो शुभत्व नष्ट हो जाता है।

स्वाभाविक पाप ग्रह यदि सप्त वर्ग में शुभ वर्ग में पड़े तो शुभप्रद हो जाता है।

(८) अपनी राशि और शुभ ग्रह के वर्ग शुभ होते हैं। पाप ग्रह, शत्रु और नीच-राशि के वर्ग अशुभ होते हैं।

(९) पाप ग्रह भी अधिक शुभ वर्ग में हो तो शुभ हो जाता है क्योंकि शुभ वर्ग में आने से उसका पापत्व नष्ट हो जाता है।

अशुभ वर्ग में शुभ ग्रह का शुभत्व नष्ट हो जाता है। इससे उसका फल कहा है।

(१०) इस प्रकार सप्त वर्ग में ग्रहों का वर्ग निकाल कर उनके शुभत्व पर विचार करना और भावों के भी वर्ग निकालकर उनका भी शुभत्व अशुभत्व पर विचार करना। पश्चात् सुदर्शन चक्र की स्थिति पर विचार कर फल विचारना।

(११) सुदर्शन चक्र में राहु केतु का भी विचार होता है इससे इनका भी सप्तवर्ग निकाल लेना चाहिये।

(१२) वर्ग में ५ या अधिक वर्ग में शुभ ग्रह हो तो शुभ। ४ शुभ का वर्ग होने से मध्यम। कम शुभ वर्ग होने से वह ग्रह पाप फलप्रद समझा जायेगा जैसा आगे उदाहरण देकर बताया है।

ग्रहों का एवं भावों का सप्त वर्ग का उदाहरण सुदर्शन चक्र विचार के लिये

ग्रह स्पष्ट		भाव			
सूर्य	११- ५-४०-४५	लग्न	२-२०-११-५३	सप्तम	८-२०-११-५३
चंद्र	१०- २- ७-५५	धन	३-१७-१७-५९	अष्टम	९-१७-१७-५९
मंगल	७-१२-२९-४४	सहज	४-१४-२४- ६	नवम	१०-१४-२४- ६
बुध	१०-२०-५६-५६	चतुर्थ	५-११-३०-१३	दसम	११-११-३०-१३
गुरु	९-१३-३४- ९	पंचम	६-१४-२४- ६	लाभ	०-१४-२४- ६
शुक्र	११-१३-३१-४८	षष्ठ	७-१७-१७-५९	व्यय	१-१७-१७-५६
शनि	४- ८-३९-४८				
राहु	२- ८- ६-३२				
केतु	८- ८- ६-३२				

ग्रहों का सप्त वर्ग

वर्ग	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
१ गृह	१२ गु.	११ श.	८ स्व.	११ श.	१० श.	१२ गु.	५ सू.	३ बु.	९ गु.
२ होरा	४ चं.	५ सू.	४ चं.	४ चं.	४ चं.	४ चं.	५ सू.	५ सू.	५ सू.
३ द्रेष्काण	१२ गु.	११ श.	१२ गु.	७ शु.	२ शु.	४ चं.	५ सू.	३ बु.	९ गु.
४ सप्तमांश	७ शु.	११ श.	४ चं.	३ बु.	७ शु.	९ गु.	६ बु.	४ चं	१० श.
५ नवमांश	५ सू.	७ शु.	७ शु.	१ मं.	२ शु.	८ मं.	३ बु.	९ गु.	३ बु.
६ द्वादशांश	२ शु.	११ श.	१२ गु.	७ शु.	३ बु.	५ सू.	८ मं.	५ सू.	११ श.
७ त्रिंशांश	६ बु.	१ मं.	१२ गु.	३ बु.	१२ गु.	१२ गु.	११ श.	११ श.	११ श.
	शुभप्रद	पाप	शुभ	शुभ	शुभ	शुभ	पाप	मध्यम	पाप

यहाँ वर्ग में चंद्र में पाप का वर्ग अधिक होने से पाप फल। इसी प्रकार शनि व केतु में भी पाप वर्ग अधिक होने से पाप फलप्रद हुआ। राहु में ४ शुभ वर्ग होने से मध्यम इतर में शुभ वर्ग अधिक होने से शुभ हुए।

भाव का सप्त वर्ग—(यहाँ ग्रह के स्थान में उस भाव की राशि और भावेश लिखना)

वर्ग	लग्न	धन	तृतीय	चतुर्थ	पंचम	षष्ठ	सप्तम	अष्टम	नवम	दशम	आय	व्यय
	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
१ गृह	३बु.	४चं.	५सू	६बु.	७शु.	८मं.	९गु	१०श.	११श.	१२गु	१मं.	२शु.
२होरा	५सू.	५सू.	४चं.	४चं	५सू.	५सू.	४चं.	५सू.	५सू.	४चं	५सू.	५सू.
३द्रे०	७सू.	८मं.	९गु.	१०श.	११श.	१२गु.	५सू.	२शु.	३बु.	४चं.	५सू.	६बु.
४सप्त०	५सू	२शु.	८मं.	२शु.	१०श.	६बु.	१मं.	८मं.	२सू.	८मं.	४चं.	१२गु.
५नव०	१०सू.	९गु.	५सू.	१मं.	१ श.	९गु.	७शु.	३बु.	११श.	७शु.	५सू.	३बु.
६द्वाद०	७शु.	१०श.	११श.	१०श.	१२गु.	२शु.	५सू.	४चं.	४चं.	४चं.	६बु.	८म.
७त्रिंशांश	९गु.	१२गु.	९गु.	६बु.	९गु.	१२गु.	३बु	१२गु.	९गु.	६बु.	९गु.	१२गु.

सुदर्शन कुण्डली चक्र के अनुसार भाव फल विचार

१—लग्न में ५ ग्रह सू० शु० चं० बु० और राहु हैं। इनमें सप्तवर्ग में शुभ वर्ग की अधिकता से शुभ है। शुक्र बुध भी शुभ वर्ग की अधिकता से शुभ हैं। चन्द्र पाप वर्ग अधिक होने से पाप और राहु मध्यम है। शुभ ग्रह की अधिकता है इससे शरीर सुख उत्तम रहेगा। शील आदि भी उत्तम रहेगा। लग्न में भी ४ शुभ वर्ग है सूर्य में भी वर्ग के अनुसार शुभता आ जाने से २ वर्ग में शुभ हुआ केवल एक शनि पाप फलप्रद है। इससे लग्न में भी शुभ वर्ग की अधिकता से शुभ गुण आदि होंगे।

२—धन भाव में केवल सूर्य और शुक्र है। वर्ग के अनुसार ये दोनों ग्रह शुभप्रद हैं इससे धनवान् होगा। धन भाव में वर्ग में ३ शुभ ग्रह हैं २ शुभपद और २ पाप फल प्रद ग्रह हैं। शुभता अधिक होने से सन्मार्ग से धन का संग्रह होगा। शुभ ग्रह गुरु की दृष्टि होने से भी धन भाव सम्बन्धी शुभ फल होगा।

३—सहज भाव-में केवल शनि है जो पाप ग्रह भी है और पाप फलप्रद है क्योंकि वर्ग में पाप का वर्ग अधिक है भाव में २ शुभ वर्ग २ पापप्रद, ३ शुभप्रद वर्ग हैं। भाव में शुभता अधिक है। इसमें स्वस्थानी मंगल की दृष्टि है जो वर्ग में शुभप्रद है। इससे इस भाव सम्बन्धी फल मध्यम रहेगा।

४—चतुर्थ भाव-केवल राहु मध्यम फलप्रद या उदासीन ग्रह है। इसमें ४ शुभ ग्रह का वर्ग है। १ स्थान में शुभप्रद मंगल है। २ स्थानों में शनि पापफल प्रद है। इस कारण साधारण सुख, मातृसुख, वाहन सुख आदि रहेगा।

५—पंचम में-केवल राहु मध्यम फलप्रद है। इस भाव में ३ शुभ वर्ग, १ स्थान

में शुभ सूर्य को २ स्थानों में शनि पापप्रद का वर्ग है। इससे इस भाव सम्बन्धी विद्या सन्तान आदि का सुख साधारण रहेगा।

६—रिपुभाव–शनि और मंगल। वर्ग में मंगल शुभप्रद है। शनि पापप्रद है। इस भाव में ५ शुभ ग्रह के वर्ग हैं। शेष सूर्य और मंगल भी शुभप्रद हैं। इसलिए शत्रु और रोगभय नाममात्र को रहेगा। शत्रु और रोग होने पर इनपर विजय होगी।

७—जाया भाव–इसमें केतु और शनि दोनों पापग्रह हैं और वर्ग में पाप फलप्रद होने से स्त्रीसुख का अभाव रहेगा। भाव में ४ शुभ ग्रह का वर्ग है। २ स्थानों में सूर्य १ में मंगल का वर्ग है जो शुभप्रद है। इससे अल्प स्त्रीसुख भी होगा।

८—मृत्यु भाव–में केवल गुरु शुभ फलप्रद है। अष्टम भाव में ४ शुभ ग्रह का वर्ग है १ वर्ग सूर्य का शुभप्रद, १ मंगल का शुभप्रद है और १ शनि का पापप्रद है। शुभ की अधिकता होने से जीवन में सफलता हो आयु पूर्णायु के लगभग हो।

९—धर्म भाव–इसमें चन्द्र बुध और मंगल ग्रह हैं। चन्द्र पाप फलप्रद है शेष बुध और मंगल शुभप्रद हैं। इस भाव में ४ शुभ ग्रह का वर्ग है २ वर्ग शनि के पापप्रद १ सूर्य का शुभप्रद है। शुभ की अधिकता होने से धर्मशील हो, यात्रा में सफलता मिले।

१०—कर्म भाव–इसमें ४ ग्रह सूर्य शुक्र मंगल केतु है। केवल केतु पाप फलप्रद है शेष ग्रह शुभप्रद हैं। भाव में भी ६ शुभ ग्रह के वर्ग हैं १ मंगल शुभप्रद है। भाव में शुभता अधिक है। इससे पितृसुख राजसम्मान आदि अच्छा रहेगा।

११–लाभ भाव में–गुरु और केतु हैं। केतु पापप्रद है। गुरु शुभप्रद है। भाव में ३ शुभ ग्रह के वर्ग हैं ३ सूर्य के १ मंगल का वर्ग है जो शुभप्रद हैं। इससे लाभ अधिक और नीति पूर्वक हो।

१२–व्यय भाव में–गुरु चन्द्र बुध हैं। यद्यपि तीनों शुभ ग्रह हैं परन्तु चन्द्र पाप फलप्रद है। भाव में ५ शुभ ग्रह का वर्ग १ सूर्य का १ मंगल का वर्ग है दोनों शुभ प्रद हैं। इससे आय से खर्च कम और शुभ कार्यों में खर्च होगा।

सुदर्शन चक्र दशा का उदाहरण

राशि लग्न ३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२
५वे १	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१
मास ०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०

सम्वत १९४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	१९५८
सूर्य राशि ११	११	११	११	११	११	११	११	११	११	११	११
अंश ५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५
कला ४०	४०	४०	४०	४०	४०	४०	४०	४०	४०	४०	४०

प्रथम वर्ष की अन्तर्दशा

राशि	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२
मास	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१
दिन	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
सम्वत	१९४६	१९४७	४७	४७	४७	४७	४७	४७	४७	४७	४७	१९४७
सूर्य राशि	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११
अंश	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५
कला	४०	४०	४०	४०	४०	४०	४०	४०	४०	४०	४०	४०

प्रथम प्रत्यंतर्दशा

राशि	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२
दिन	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२
घड़ी	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३०
सूर्य राशि	११	११	११	११	११	११	११	११	११	०	०	०
अ०	८	१०	१३	१५	१८	२०	२३	२५	२८	०	३	५
क०	१०	४०	१०	४०	१०	४०	१०	४०	१०	४०	१०	४०

लग्न कुण्डली का लग्न है उसकी दशा १ वर्ष रहेगी। इसी प्रकार प्रत्येक भाव की दशा एक-एक वर्ष रहेगी। इसी प्रकार कुण्डली के पूरे १२ भाव में पूरे १२ वर्ष दशा भोग करेगी इसके पश्चात् फिर लग्न आदि भाव की दशा आरम्भ हो जाती है अर्थात् १३ वें वर्ष फिर लग्न दशा आ जाती है। यदि किसी की आयु १२० वर्ष की हो तो इस दशा की १० आवृत्ति हो जायेंगी। १ दशा १ वर्ष रहती है इसकी अन्तर्दशा १–१ मास की होती है। १२ भाव में पूरे १ वर्ष अन्तर्दशा के हो जाते हैं और प्रत्यन्तर्दशा केवल २॥ दिन की होती है १२ भाव में पूरे ३० दिन (१ मास) हो जाते हैं। यहाँ चक्र देखने से स्पष्ट समझ में आ जायगा।

इसके पश्चात् इसी प्रकार और वर्ष मासादि जोड़कर आगे की दशा या अन्तर्दशा आदि निकाल लेनी चाहिये।

सुदर्शन चक्र व दिशा का फल विचार

१— जिस भाव व दिशा हो उस भाव का लग्न मानकर उससे तनुधन सहज आदि १२ भाव क्रम से विचार कर उससे सम्पूर्ण १२ भाव का फल विचारना।

२– दशा आरंभ कालिक लग्न से केन्द्र, कोण और ८ भाव में शुभ ग्रह हो तो वह दशा शुभ समझना।

३—जिस भाव में केवल राहु या केतु हो उस भाव की हानि।

४—जिस भाव में अधिक पाप ग्रह हों उस भाव की हानि।

५—१२,६ भाव से दूसरे स्थानों में शुभ ग्रह हो तो उस भाव का फल शुभ। यदि १२,६ भाव में शुभ ग्रह हो तो उस वर्ष आदि में रोग शत्रु आदि की वृद्धि हो।

६—यदि ३-६-११ भाव में पाप ग्रह हो तो इनका फल शुभ अन्य भाव में पाप ग्रह हो तो उस भाव की हानि होती है।

७—इसमें अष्टक वर्ग के अनुसार भी फल विचारना। दोनों प्रकार से शुभ या अशुभ आवे तो पूर्ण रूप से शुभ या अशुभ फल कहना। एक प्रकार से शुभ दूसरे प्रकार से अशुभ आवे तो उनके बल का विचार कर फल कहना जिससे फल की अधिकता हो वह फल कहना।

कोट चक्र—युद्ध या रोगादि फल जानने को

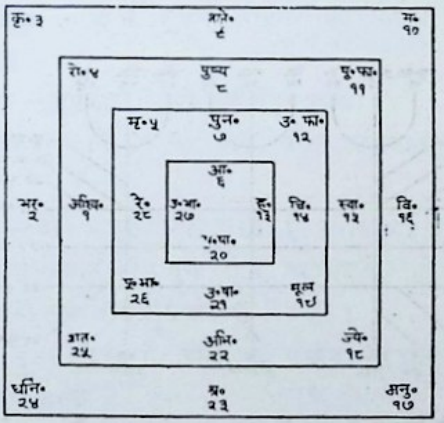

(१) जन्म नक्षत्र का स्वामी कोटेश है। (२) कचट आदि वर्ग का स्वामी जन्म नक्षत्र या नाम के अनुसार वर्गेश होता है। वर्गेश=कोटपाल है।

अ वर्ग का स्वामी=सूर्य, क वर्ग का स्वामी=मंगल, च वर्ग का स्वामी=शुक्र,

ट वर्ग का स्वामी=बुध, त वर्ग का स्वामी=गुरु, प वर्ग का स्वामी=शनि,

य र ल व का स्वामी=चंद्र, श स से क्ष तक=चन्द्र।

जैसे किसी का नाम आकार से है तो अ वर्ग हुआ जिसका स्वामी सूर्य है इससे कोटपाल सूर्य हुआ।

अ कृत्तिका नक्षत्र का पहिला चरण है मेष राशि है। मेष राशि का स्वामी मंगल है इससे कोटेश मंगल हुआ।

पंचांग में गोचर के ग्रह देखना किस-किस नक्षत्र में है। यहाँ कोट चक्र में दिये नक्षत्रों में जो ग्रह जिस नक्षत्र में हो वहाँ स्थापित करें।

युद्ध में कोट (किला) भंग होगा या रोग अच्छा होगा या नहीं आदि का विचार होता है।

फल विचार—जब कोटेश कोट के मध्य में हो तथा कोटपाल बाहर हो तो कोट को भय नहीं होता। इसके विपरीत हो तो विघ्न होता है।

दुर्ग के मध्य में सूर्य हो—जल या शोष हो।

दुर्ग के मध्य में चंद्र हो=भंग
दुर्ग के मध्य में मंगल हो =दाह
सूर्य शनि मंगल राहु केतु } दुर्ग भंग हो
सब दुर्ग के मध्य में }

दुर्ग के मध्य में बुध हो=राजा युद्ध युक्त हो गुरु बुध शुक्र चंद्र } इन्द्र से भी वह
दुर्ग के मध्य में गुरु हो=बहुत सुभिक्ष हो वे चारों दुर्ग के मध्य में } दुर्ग न गिरे
और राजा का चित्त चलायमान हो

दुर्ग के मध्य में शनि हो=भेद भंग हो

दुर्ग के मध्य में राहु केतु=राजा विष में जल जावे

सूर्य कालानल चक्र

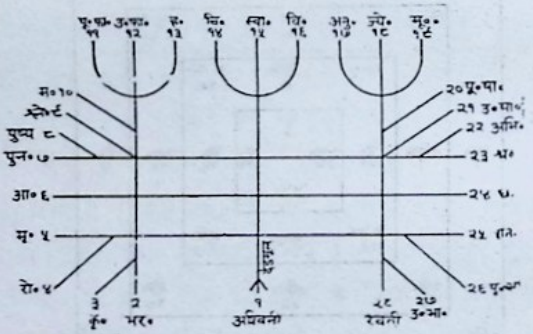

जहाँ एक अश्विनी लिखा है वह त्रिशूल का दंड मूल है। यहाँ अश्विनी मत लिखना गोचर में सूर्य जिस नक्षत्र में है वह नक्षत्र यहाँ लिखना। इस प्रकार अभिजित सहित २८ नक्षत्रों के नाम आगे क्रमानुसार लिख देना यहाँ बताये हुए बाँई ओर से क्रमशः लिखना। अपना नाम का नक्षत्र जहाँ हो वहाँ लिख देना इससे रोग विवाद, युद्ध, यात्रा आदि में इससे विचार होता है।

फल

१—नीचे (त्रिशूल वाली रेखा के नीचे) के नक्षत्रों में अपना जन्म नक्षत्र पड़े तो क्रम से १-चिन्ता २-वध ३-सब कार्यों में रुकावट हो।

२—दोनों शृंग में-रोग और भय।

३—त्रिशूल में-मृत्यु।

४—शेष नक्षत्रों मे-जय लाभ अभीष्ट सिद्धि हो।

५—जन्म राशि से ग्रहों के वेध का इस प्रकार फल होगा

सूर्य के वेध से-मन को ताप
मंगल के वेध से-द्रव्य हानि
गुरु के वेध से-धन लाभ।
शुक्र के वेध से-रत्न लाभ।

शनि के वेध से–रोग जन्य पीड़ा चन्द्र के वेध से–स्त्री लाभ।
राहु केतु के वेध से–मृत्यु बुध के वेध से–सुख।

डिंभ चक्र या सूर्य नराकार चक्र—

सूर्य जिस नक्षत्र में हो उसे सिर पर स्थापित कर वहाँ से जन्म नक्षत्र तक गिनने में जिस अंग पर जन्म नक्षत्र पड़े उससे निम्नलिखित फल का विचार करे।

नक्षत्र संख्या अंग फल

३ - सिर—श्रेष्ठ रत्न, सोना, सुन्दर वस्त्र, भाजन, राज्य सुख प्राप्त।

३—मुख—मिष्ट भोजन, शैया आदि आसनों का भोगी व बोलने वाला, हंसता मुख सदा प्रसन्न चित्त।

१—दाहिना कंधा—वंश में भूषण समान, बड़े उत्सव युक्त, अति उदार, बड़ा शूर वीर।

१—बायां कंधा—अग्रणीय, हाथी पर चढ़ने वाला।

१—दाहिनी बाँह—अपने देश को त्यागे, बड़ा अभिमानी, वीरता युक्त परदेश में रहकर।

१—बाईं बाँह—बड़ी प्रतिष्ठा प्राप्त करता है, स्थान भ्रष्ट।

१ - दाहिना हाथ-उदार, श्रेष्ठ गुण रहित, व्यापार में रत्नों की परीक्षा करने वाला।

१—बायाँ हाँथ—सच और झूठ सहित चोर हो।

५— हृदय में—स्व कुटुम्ब में राजा के समान श्रेष्ठ शील वाला, शास्त्र में प्रवीण विशाल श्रेष्ठ यशस्वी व समर्थ।

१—नाभि—दयालु, युद्ध में डरपोक, शास्त्र में प्रवीण, धर्म में वृत्ति, निरन्तर उदार अनेक कला जानने वाला, थोड़े में संतोष।

१—गुह्य—बड़ा कामी, साधु कर्मों से हीन, गीत और नृत्य में प्रेम, कलाओं को जानने वाला, बड़ा यश वाला।

२—जानु—अनेक देश में अनेक तरह का प्रचार करने वाला, कार्य में उत्साही, चञ्चल, दुर्बल देह, धूर्त, सत्यहीन, दुःखी।

३—दाहिना पैर—खेती की क्रिया में कुशल, थोड़ा कर्म करने वाला, शत्रु रहित,

३—बाँयें पैर—सेवा का काम करने वाला, अल्पायु, निर्धन।

योग २७ - मतांतर—कोई जानु में ६ नक्षत्र और पैर में केवल २ ही नक्षत्र लेते है। परन्तु बहुमत उपरोक्त ही है।

जन्म नक्षत्र अनुसार आयु विचार—

३—नक्षत्र मस्तक में–आयु १०० वर्ष। ३–नक्षत्र मुख में–आयु ८० वर्ष। २–नक्षत्र कंधों में–आयु ७७ वर्ष, २–नक्षत्र दोनों भुजा– २—नक्षत्र दोनों हाथ–५ नक्षत्र हृदय में

आयु ६८ वष। १–नक्षत्र नाभि–आयु ६८। १–नक्षत्र गुह्य–आयु ६० वर्ष। १–नक्षत्र दोनों जानु—आयु ८ वर्ष। ६—नक्षत्र दोनों पांव—आयु ६ वर्ष।

स्त्री विभाख्य चक्र—

यह विशेषकर स्त्रियों के लिए है।

सूर्य जिस नक्षत्र पर हो उससे जन्म नक्षत्र गिनने में जहाँ पड़े उसका फल।

नक्षत्र अंग फल

३— मस्तक– संताप

७— मुख —मिष्टान्न देने वाला

८— स्तन —काम का देने वाला

३— हृदय —पति को सुख देवे

३— गुह्य—कामना सदा ही पूर्ण करे

चन्द्र कालानल चक्र

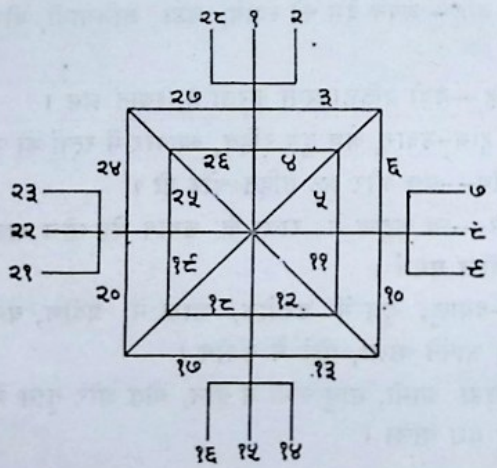

यह गोलाकार भी बनाया जाता है। इस चक्र में सबसे ऊपर जहाँ १ लिखा है वहाँ गोचर के अनुसार वर्तमान दिन नक्षत्र अर्थात् चन्द्र नक्षत्र लिखे वहाँ से यहाँ बताये क्रमानुसार सब नक्षत्र इस चक्र में बताये अनुसार लिख देवें। जिस नक्षत्र पर अन्य नक्षत्र हो वहाँ लिख देवे फिर फल विचारे।

इससे भी युद्ध के समय यात्रा आदि में फल विचारते हैं।

जन्म नक्षत्र जहाँ पड़े उसका फल

यदि त्रिशूल पर जन्म नक्षत्र पड़े मृत्यु हो।

यदि बाहर के ८ नक्षत्रों में पड़े—मध्यम फल।

यदि भीतर के ८ नक्षत्रों में पड़े—निःसंदेह जब लाभ हो आयु बढ़े आदि शुभ फल हो।

सूर्य कालानल चक्र में जो ग्रहों के वेध का फल बताया है उसी प्रकार चन्द्र-कालानल चन्द्र से भी विचारे।

ग्रहों का पुरुषाकार चक्र

प्रत्येक ग्रहों का पुरुषाकार चक्र से फल का विचार होता है उस ग्रह के नक्षत्र से जन्म नक्षत्र के फल का विचार होता है।

१—चन्द्र पुरुषाकार चक्र—३ नक्षत्र मस्तक–धन प्राप्ति। ३ नक्षत्र मुख–पूर्ण लक्ष्मी। ६ भुजा–कुशल। ३ हृदय–कल्याण। ३ पेट–मार्ग में मृत्यु। ३ गुदा–लक्ष्मी। ६ पाँव–श्रेय प्राप्त।

(गोचर में चन्द्र जहाँ हो उससे गिनकर जन्म नक्षत्र जहाँ पड़े उसके अनुसार क्रमशः फल) जन्म नक्षत्र से वर्तमान चन्द्र नक्षत्र तक गिनने से जो संख्या आवे उसके अनुसार फल–६ नक्षत्र मुख में–हानि। ६ नक्षत्र पीठ में–धन लाभ। ६ नक्षत्र हाथ में–राजा से भय। ३ नक्षत्र गुह्य में–राजाओं से मान। ३ नक्षत्र चरण में–स्थान से भ्रष्ट। ३ नक्षत्र में कण्ठ में–सब सुख प्राप्त।

२—मंगल का पुरुषाकार चक्र—गोचर में मंगल जहाँ हो उससे आरम्भ कर जन्म नक्षत्र जहाँ पड़े उसका फल—३ नक्षत्र–मस्तक–राज्य। ३ नक्षत्र–मुख–रोग। ३ नक्षत्र–नेत्र–सुख। २ नक्षत्र–कण्ठ–रोग। ४ नक्षत्र–हाथ–रोग। ५ नक्षत्र पेट–धन। ३ नक्षत्र–गुदा–भ्रमयुक्त। ४ नक्षत्र–पाँव–भ्रम युक्त।

३—बुध का पुरुषाकार चक्र (जहाँ गोचर में बुध हो उससे जन्म नक्षत्र तक संख्या अनुसार फल) ४ नक्षत्र सिर में—राज्य। ३ नक्षत्र मुख में–वांछित भोजन। ४ नक्षत्र बायाँ हाथ–कष्ट। ४ नक्षत्र दाहिना–सुख। ६ नक्षत्र हृदय-सुख। ४ नक्षत्र गुदा-रोगी। २ नक्षत्र पैर–मन में भ्रम।

४—गुरु का पुरुषाकार चक्र

जिस नक्षत्र पर गुरु गोचर में हो उससे जन्म नक्षत्र तक गिनने में जो संख्या हो उसका फल।

४ नक्षत्र सिर में— राज्य। ४ नक्षत्र कंधा में–लक्ष्मी प्राप्ति। १ नक्षत्र कंठ में–विभूति प्राप्त। ५ नक्षत्र हृदय–प्रीति लाभ। ६ नक्षत्र पांव–पीड़ा। ४ नक्षत्र बायां हाथ–मृत्यु। ३ नक्षत्र दोनों नेत्र–राजा सम सुख।

५—शुक्र का पुरुषाकार चक्र

जिस नक्षत्र पर शुक्र हो उससे जन्म नक्षत्र तक गिनने से जो संख्या आये उसका फल।

४ नक्षत्र सिर में– राज्य। ५ नक्षत्र कंठ में-धन लाभ। ५ नक्षत्र हृदय में-सुख। ३ नक्षत्र गुदा में–शत्रुभय। ५ नक्षत्र जांघ में—मिष्ट भोजन। ३ नक्षत्र दाहिना पांव में–सुख। २ नक्षत्र बायां पांव में–सुख।

६—राहु का पुरुषाकार चक्र

जिस नक्षत्र पर राहु गोचर में हो उससे गिनने पर जन्म नक्षत्र जहाँ पड़े उसका फल।

७ नक्षत्र पांव में –धन हानि। ५ नक्षत्र दाहिनी भुजा में–संताप। ३ नक्षत्र सिर में–शत्रुभय। २ नक्षत्र हृदय में–दुर्जन से स्नेह। १ नक्षत्र मुख में–दुर्जन संहार। ५ नक्षत्र बायां हाथ में–मृत्यु। १ नक्षत्र नाभि में–सर्वनाश। ३ नक्षत्र गुदा में—प्राणनाश।

७—केतु पुरुषाकार चक्र

गोचर में केतु जिस नक्षत्र में हो वहां से गिनने पर जन्म नक्षत्र जहाँ पड़े उसका फल।

५ नक्षत्र सिर में –जय। २ नक्षत्र मुख में–भय। ५ नक्षत्र कान में–भय। २ नक्षत्र हृदय में–शोक। ४ नक्षत्र हाथ–सुख। ५ नक्षत्र पांव में–सुख। ४ नक्षत्र वस्ति में– भ्रम, दुःख विकार।

८—शनि पुरुषाकार चक्र

जिस नक्षत्र पर शनि हो उससे गिनने पर जन्म नक्षत्र जहाँ पड़े उसका फल—जैसे श्रवण पर शनि है जन्म शतभिषा नक्षत्र का है तीसरा हुआ दक्षिण भुजा पर आया फल जय है—१ नक्षत्र मुख में–हानि। ४ नक्षत्र दक्षिण भुज–जय। ६ नक्षत्र चरण में भ्रम। ५ नक्षत्र हृदय में–श्रीप्राप्ति। ४ नक्षत्र वामकर में–भय। ३ नक्षत्र शीर्ष में–राज्य। २ नक्षत्र नेत्र में–सौख्य। २ नक्षत्र गुह्य में–मृत्युभय।

जन्म नक्षत्र से शनि के नक्षत्र तक गिनने में जो आवे उसका फल—१ नक्षत्र सिर में–फल रोग। ३ नक्षत्र मुख में–लाभ। २ नक्षत्र गुह्य में– हानि। २ नक्षत्र नेत्र में–लाभ। ५ नक्षत्र हृदय में–सौख्य। ४ नक्षत्र वाम हस्त में–बंधन। ३ नक्षत्र वाम पद में–दुःख, पीड़ा। ३ नक्षत्र दक्षिणपद में–इष्ट यात्रा। ४ नक्षत्र दक्षिण हस्त–अर्थ लाभ।

वक्री शनि का पुरुषाकार चक्र

यदि शनि वक्री हो तो शनि जहाँ हो वहाँ से जन्म नक्षत्र तक गिनके यहाँ विरुद्ध क्रम से गिनने से जो आये उस समय फल जानना–१ नक्षत्र सिर में–अति पीड़ा। ४ नक्षत्र दाहिने हाथ में–लक्ष्मी और यश प्राप्त। ६ नक्षत्र दोनों पैर में–निष्फलता। ४ नक्षत्र वाम हस्त में–युद्ध में शरीर में संशय। ५ नक्षत्र पेट में–द्रव्य। ३ नक्षत्र मस्तक में–राज्य सौख्य। २ नक्षत्र नेत्र में–परम सौख्य। २ नक्षत्र गुह्य में–अल्प मृत्यु।

यहाँ पहिले सिर या १ मुख, २ गुह्य, २ नेत्र, ३ मस्तक, ५ पेट, ४ बायांहाथ ६ दोनों पैर, ४ दाहिना हाथ इस प्रकार विरुद्ध क्रम से नक्षत्रों की गिनती कर जन्म नक्षत्र जहाँ पड़े उसका फल जानना।

अन्यमत से वक्री शनि का पुरुषाकार चक्र

जिस नक्षत्र पर वक्री शनि हो उस नक्षत्र से जन्म नक्षत्र तक का फल विलोम (उल्टे) क्रम से विचारना ४ नक्षत्र दाहिना हाथ फल—रोग। ६ नक्षत्र पैर— लाभ। ४ नक्षत्र

बाँया हाथ–द्रव्य लाभ । ५ नक्षत्र पैर–बन्धन । ३ नक्षत्र मस्तक–पूजा । २ नक्षत्र नेत्र–जन सौख्य । ३ नक्षत्र गुदा–अल्प मृत्यु ।

गज चक्र

यात्रा और युद्ध में जय का विचार इससे होता है । अभिजित सहित २८ नक्षत्र हाथी का चित्र बनाकर क्रमानुसार लिखना । पहिले मुख से लेकर निम्न क्रम से नक्षत्र लिखे और उसके अनुसार फल विचारे—

२ नक्षत्र मुख में	= युद्ध में विजय
२ नक्षत्र सूँड के अग्र भाग में	= युद्ध में विजय
२ नक्षत्र नेत्रों में	= युद्ध में विजय
२ नक्षत्र कर्णों में	= बली हो तब भी मृत्यु या भंग हो
२ नक्षत्र सिर में	= जीत
८ नक्षत्र पाँव में	= बली हो तब भी मृत्यु या भंग
२ नक्षत्र पूँछ में	= बली हो तब भी मृत्यु या भंग
४ नक्षत्र पीठ में	= बली हो तब भी मृत्यु या भंग
४ नक्षत्र पेट में	= युद्ध में जीत

यहाँ बताये अशुभ अङ्ग में यदि शनि हो तो युद्ध, राज्याभिषेक आदि सर्वथा वर्जित है ।

अश्व चक्र

यात्रा, युद्ध, राजतिलक आदि में इसका विचार होता है ।

घोड़े का चित्र बनाकर अभिजित सहित २८ नक्षत्र उसके मुख से लेकर नीचे बताये क्रम से लिखे फिर उसके फल का विचार करे ।

२ नक्षत्र मुख	= शत्रु हार कर वश हो जावे
२ नक्षत्र नेत्र	= शत्रु हार कर वश हो जावे
२ नक्षत्र कान	= शत्रु हार कर वश हो जावे
२ नक्षत्र सिर	= शत्रु हार कर वश में हो जावे
२ नक्षत्र पूँछ	= विभ्रम, भंग और हानि
८ नक्षत्र पाँव	= विभ्रम, भंग और हानि
५ नक्षत्र पेट	= विभ्रम, भंग और हानि
५ नक्षत्र पीठ	= विभ्रम, भंग और हानि

जिस नक्षत्र में शनि हो उसके अनुसार फल का विचार करे

यमदंष्ट्रा चक्र

यह काल चक्र सर्पाकार होता है वर्तमान दिन नक्षत्र से अर्थात् गोचर के चन्द्र नक्षत्र से लेकर जन्म नक्षत्र तक गिन कर विचार करना । जहाँ जन्म नक्षत्र पड़े उसके अनुसार फल विचारना ।

ज्वर आने पर, सर्प आदि विष युक्त जीवों के काटने पर, विवाद, विग्रह और रण में इस चक्र से शुभाशुभ का विचार होता है।

इसमें ९ नक्षत्र ऊपर, ९ नक्षत्र तिरछे, ९ नक्षत्र नीचे सर्पाकार लिखना। इसमें मध्य के अर्थात् बीच में आरम्भ के ३ नक्षत्र कालमुख हैं कोण स्थित जो चन्द्राधिष्ठित नक्षत्र होते हैं वे दोनों द्रंष्ट्रा (दाढ़) हैं।

जन्म नक्षत्र मुख या द्रंष्ट्रा में पड़े तो = मृत्यु
इनको छोड़ दूसरे स्थानों में पड़े तो = शुभ

जन्म नक्षत्र के योग से ४० घड़ी का वेध होता है।

यम द्रंष्ट्रा चक्र (वर्तमान चन्द्र नक्षत्र से आरम्भ करना)

आदि	अश्वि०	आर्द्रा०	पुन०	उ०फा०	हस्त	ज्ये०	मूल०	शत०	पू०भा०
मध्य	भरणी	मृग०	पुष्य	पू०फा०	चित्रा	अनु०	पू०षा०	धनि०	उ०भा०
अन्त	कृतिका	रोहि०	अश्ले०	मघा	स्वा०	वि०	उ०षा०	श्रवण	रेवती

त्रिनाड़ी चक्र

यह भी सर्प के आकार का होता है आर्द्रा से मृगशिर तक २७ नक्षत्र इसमें रहते हैं। प्रथम कोष्ठ में आर्द्रा, मध्य में मूल, अन्त कोष्ट में मृगशिर आ जाता है। इसमें दैनिक चन्द्र नक्षत्र, सूर्य नक्षत्र और जन्म नक्षत्र लिखा जाता है। इससे विवाद, संग्राम रोग आदि का विचार होता है।

(१) सूर्य चन्द्र और जन्म नक्षत्र एक नाड़ी (नक्षत्र) में हो तो—मृत्यु होती है। इस दिन विवाद विग्रह संग्राम आदि नहीं करना।

(२) जन्म नक्षत्र और सूर्य नक्षत्र एक नाड़ी में हो तो उस नक्षत्र में सूर्य रहने तक रोगी को पीड़ा रहे।

(३) जन्म नक्षत्र और वर्तमान चन्द्र नक्षत्र एक नाड़ी में हो तो रोगी को ८ पहर की पीड़ा रहे।

(४) जन्य नक्षत्र चंद्र और सूर्य भिन्न-भिन्न नाड़ी में हो तो निरोगता रहे।

त्रिनाड़ी चक्र

आर्द्रा	पू०फा०	उ०फा०	अनु०	ज्ये०	धनि०	शत०	भरणी	कृतिका
पुन०	मघा	हस्त	विशा०	मूल	श्रवण	पू०भा०	अश्वि०	रोहि०
पुष्य	अश्ले०	चित्रा	स्वा०	पू०षा०	उ०षा०	उ०भा०	रेवती	मृग०

अध्याय ८

आयुर्दाय विचार

सबसे पहिले जातक की आयु का विचार करना चाहिये पीछे लक्षण कहना चाहिये क्योंकि आयुहीन मनुष्य के लक्षण विचारना निरर्थक है।

आयु भेद—अल्प मध्य दीर्घायु के भेद से ३ प्रकार की आयु हैं इनमें वैसे ग्रह योग दृष्टि और उनका बल और स्थिति पर ध्यान देकर मारकेश व मारकेश की दशा आदि पर भी विचार करते हुए आयु का निर्णय करना चाहिये।

मनुष्य एवं जीवों की परम आयु

मनुष्य व हाथी की १२० वर्ष ५ दिन

घोड़ा = ३२ वर्ष	काक, गीध, उल्लू = १ हजार वर्ष
गधा व ऊँट = २५ वर्ष	बाज = ३०० वर्ष
गाय, भैंस = २४ वर्ष	कोयल, कबूतर, मोर = २० वर्ष
बकरा, भेड़ = १६ वर्ष	हंस = १४ वर्ष
कुत्ता—१२ वर्ष	बुलबुल आदि–७ वर्ष
बिल्ली—१० वर्ष	मुरगा—८ वर्ष
मृग—२५ वर्ष	सर्प–१००० वर्ष
रीछ, बानर–३०० वर्ष	कूर्म–१५०० वर्ष
बाघ—६४ वर्ष	वृश्चिक, गोह आदि—८ वर्ष
वृक्ष—५०० वर्ष	चीटी—१ वर्ष
राक्षसों की–१५० वर्ष	

इतर जीवों की परम आयु देने का प्रयोजन – जिस प्रकार गणित द्वारा लग्न कुंडली के ग्रहों पर से मनुष्य की आयु निकाली जाती है उसी प्रकार यदि अन्य जीवों आदि की भी कुंडली बनाई गई हो तो उनकी आयु निकालने को परम आयु का आधार लेकर निकालना पड़ता है। गणित से जो आयु निकले उसे जीव के परम आयु से गुणा कर १२० का भाग देने से उस जीव की स्पष्ट आयु निकल आवेगी। जैसे मनुष्य की आयु साधन की रीति से गणित करने पर ८५ वर्ष ५ मास १० दिन ५४ घ० ३० प० निकली। किसी ने अपनी गाय की कुण्डली बनवाई थी जिसके ग्रह स्पष्ट लग्न आदि के द्वारा गणित करने से उपरोक्त आयु में २४ का गुणा कर १२० वर्ष का भाग देंगे तो गाय की स्पष्ट आयु निकल आयगी $\frac{२४}{१२०}=\frac{२}{१०}=\frac{१}{५}$ यहाँ उपरोक्त आयु में ५ का भाग दिया तो १७ वर्ष १ माह २ दिन ११ घ० ६ प० आयु गाय की निकली।

गणित द्वारा आयु निकालना गणित खंड में बता चुके हैं।

आयु पर विचार—यह परमायु सत्कर्म करने वालों की है जिनकी इन्द्रियाँ काबू में रहती हैं, लाभ जनक भोजन मिलता है, देव ब्राह्मण आदि का पूजन ईश्वर भजन आदि सतकार्य में जिनका मन शान्त रहता है वह पूर्ण आयु पाता है। मानसिक रोग चिन्ता क्रोध कामवासना आदि के प्रभाव से शरीर में निर्बलता आ जाने से आयु क्षीण हो जाती है।

परन्तु सदाचार से, धर्म से, योगादि साधन से, एवं रसायन प्रयोग से मनुष्य गणितागत आयु से भी अधिक जी सकता है। इसीप्रकार अनियमित एवं अनर्थ कर्म व्यसन आदि अनियमित जीवन से आयु क्षीण भी हो जाती है।

इससे मनुष्य की जो परमायु १२० वर्ष की मानी गई है उससे न्यून अधिक आयु हो सकती है। १२० वर्ष आदि के अंक केवल गणित के निमित्त एक प्रकार इष्ट व केन्द्र माना है।

ग्रहों के कई ऐसे योग भी हैं जिनसे १२० वर्ष से अधिक आयु जातक की हो सकती है। ये योग अमित आयु के आगे दिये हैं।

यह नियम नहीं है कि १२० वर्ष की ही आयु गणित से आ सकती है परन्तु गणित द्वारा इससे भी अधिक आयु निकल सकती है। जैसे कर्क लग्न में चन्द्रमा, गुरु केन्द्र में बुध शुक्र, पाप ग्रह ३, ६, ११ भाव में से किसी में हों तो गणित से भी अधिक आयु आवेगी।

आयुर्दाय के ७ भेद

आयुर्दाय ७ प्रकार की है।

(१) बालारिष्ट—८ वर्ष तक।

(२) योगारिष्ट—२० वर्ष तक—दुष्ट ग्रह के उत्पन्न प्रभाव से।

(३) अल्पायु—३२ वर्ष तक।

(४) मध्यमायु—३२ से ६४ वर्ष तक या ४० वर्ष तक।

(५) दीर्घायु—१२० वर्ष तक।

(६) दिव्यायु—१००० वर्ष—देव आयु।

(७) अमितायु—योग्याभ्यास आदि द्वारा असंख्य आयु प्राप्त होती है अन्य मत से मध्यमायु ३२ से ७० वर्ष तक है पश्चात् दीर्घायु है।

कहा हैं कि २० वर्ष तक आयु का निश्चय करना कठिन है क्योंकि इस बीच में कोई पिता के दोष से कोई माता के दोष से कोई अपने पूर्व जन्म के कर्म जन्य अरिष्ट योग से मर जाते हैं। इससे २० वर्ष के पश्चात् आयुर्दाय का गणित करना।

इसमें भी १२ वर्ष के भीतर तो आयु का निश्चय करना कठिन है। तब तक जप होम औषधि आदि से बालक की रक्षा करना।

४ वर्ष तक—माता के पाप कर्म से मरता है।

८ वर्ष तक—पिता के पाप कर्म से मरता है।

१२ वर्ष तक—बालक अपने पाप कर्म से मरता है।

बाल अरिष्ट अल्पायु आदि के योग आगे दिये हैं अर्थात् बालक की मृत्यु ३ प्रकार से होती है।

(१) कोई माता पिता के दोष से मरते हैं।

(२) कोई पूतना आदि मातृ ग्रहों के दोष से मरते हैं।

(३) कोई अरिष्ट योग से मरते हैं।

स्थूल रूप से आयु का अनुमान

(१) राशि ध्रुवांक के अनुसार आयु

कुण्डली में जहाँ-जहाँ जिन-जिन राशियों में ग्रह हों केवल उन राशियों के ध्रुवांक को जोड़ना तो आयु प्राप्त होगी।

राशि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धन	मकर	कुम्भ	मीन
ध्रुवांक	१०	६	२०	५	८	२	२०	६	१०	१४	३	४

सग्रह राशि	३	५	८	९	१०	११	१२	योग
ध्रुवांक	२०	८	६	१०	१४	३	४	=६५ वर्ष

कुण्डली में जिन-जिन राशियों में ग्रह हैं उनके ध्रुवांक जोड़ने से स्थूल रूप से ६५ वर्ष की आयु आई।

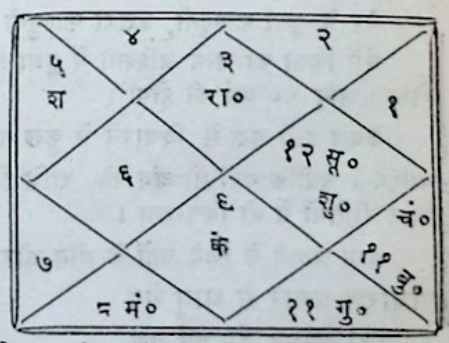

(२) केन्द्रायु योग

कुण्डली के केन्द्र स्थानों में जो अंक राशियों के हों उन सबका योग कर तिगुना करना। यदि केन्द्र में राहु या शनि हो तो उन दोनों की राशि के अंकों को जोड़ कर तिगुना करना उसे पूर्व प्राप्त गुणन फल में से घटा देना तो स्थूल रूप से आयु प्रगट होगी। इसमें राहु और शनि दोनों केन्द्र में हों तो दोनों के अंक घटाना यदि केवल एक ही हो तो एक का घटाना।

उपरोक्त कुण्डली में केन्द्र में ३, ६, ९, १२ राशियाँ हैं जिनका योग ३० हुआ × ३=९० आया। केन्द्र में केवल राहु लग्न में है ३ राशि है ३×३=९ आया इसे ९० में से घटा दिया तो ९०−९=८१ वर्ष की आयु स्थूल रूप से आई।

इसमें भी बताया गया है कि केन्द्र में जो ग्रह हों उनका भी विचार करना कि वे उच्च या नीच में हैं शत्रु या मित्र गृही हैं उन पर शुभ या पाप दृष्टि है इत्यादि बातों को भी विचारना चाहिये। जिससे आयु गणना में अन्तर आ जायगा।

अन्यमत—केन्द्र के अंकों की संख्या के योग को तिगुना कर उसमें से राहु और मंगल की संख्या घटा देने से स्थूल आयु प्रगट होती है।

नराकार चक्र द्वारा स्थूल आयु विचार

एक नराकार चक बना कर सिर पर हस्त नक्षत्र रखना आगे क्रमानुसार सर्व नक्षत्रों की स्थापना नीचे बनाये अनुसार करे। जिस भाग में जन्म नक्षत्र पड़े उसके अनुसार फल विचारना।

	फल	आयु वर्ष
सिर में—हस्त, चित्रा, स्वाती	राजा या अधिकारी हो	१००
मुख में—विशाखा, अनुराधा, ज्येष्ठा	दान प्रिय, धनी	८०
गर्दन में—मूल, पूर्वाषाढ़ा	भोग प्रिय	७०
कंधा में—उत्तराषाढ़ा, श्रवण	रंज हो	६०
हाथ में—धनिष्ठा, शतभिषा	अशुद्ध आचरण	३०
हृदय में—पूर्व भाद्रपद, उत्तर भाद्रपद रेवती, अश्विनी, भरणी	बहुत ही धनी	९०
पेट में—कृतिका	साधारण धन हो	५०
लिंग में—रोहिणी	परस्त्री से व्यभिचार	४४
घुटना में—मृगशिर, आर्द्रा, पुनर्वसु पुष्य, आश्लेषा, मघा	लड़ाई झगड़ा प्रिय	२०
पैर में—पूर्वा फाल्गुनी, उत्तरा फाल्गुनी	अल्प जीवन	१० वर्ष या १० मास

जैसे किसी का जन्म अश्विनी में हुआ तो यह नक्षत्र हृदय में पड़ता है। बहुत धन होगा। आयु ९० वर्ष की होगी।

केवल इसी चक्र से विचारने से कुछ नहीं होता और प्रकार से भी विचार करना चाहिये। क्योंकि यहाँ तो अंग की राशि निश्चित कर दी गई है। इससे अनेक भिन्न-भिन्न रीतियों से भी विचारना।

आयु जानने के लिये ग्रहों के योग और दशा जानना आवश्यक है।

साधारण प्रकार से आयु भेद

(१) अल्पायु ३२ वर्ष तक
(२) मध्यायु ७० वर्ष तक
(३) दीर्घायु ७० वर्ष के ऊपर
(४) उत्तमायु १०० वर्ष के ऊपर

१ साधारण प्रकार से आयु का ज्ञान

(१) जन्म लग्नेश सूर्य का शत्रु हो तो—अल्पायु।
(२) जन्म लग्नेश सूर्य का सम हो तो—मध्यायु।
(३) जन्म लग्नेश सूर्य का मित्र हो तो—दीर्घायु।
(१) सूर्य के मित्र ग्रह चंद्र मंगल गुरु हैं। लग्न ४, १, ८, ९, १२ होना—दीर्घायु
(२) सूर्य के शत्रु ग्रह शुक्र शनि हैं। लग्न २, ७, १०, ११ हो—अल्पायु।
(३) सूर्य के सम ग्रह बुध है। लग्न ३, ६ होना—मध्यायु।

२ चर स्थिर द्विस्वभाव के अनुसार भी आयु का विचार होता है।

आयु विचारने को ३ जोड़ियों का विचार करना।

आयु प्रकार-दीर्घायु	मध्यायु	अल्पायु
चर + चर	चर + स्थिर	चर + द्विस्वभाव
स्थिर + द्विस्वभाव	स्थिर + चर	स्थिर + स्थिर
द्विस्वभाव+स्थिर	द्विस्वभाव + द्विस्वभाव	द्विस्वभाव + चर

पहिले लग्नेश और अष्टमेश से इस प्रकार विचारना

	दीर्घायु			मध्यायु			अल्पायु		
लग्नेश	चर	स्थिर	द्विस्वभाव	चर	स्थिर	द्विस्वभाव	चर	स्थिर	द्विस्वभाव
अष्टमेश	चर	द्विस्वभाव	स्थिर	स्थिर	चर	द्विस्वभाव	द्विस्व०	स्थिर	चर

अर्थात लग्नेश और अष्टमेश दोनों चर हों या एक स्थिर दूसरा द्विस्वभाव में हों तो दीर्घायु होगी। यदि लग्नेश और अष्टमेश एक चर दूसरा स्थिर में या दोनों द्विस्वभाव में हों तो मध्यायु। यदि एक चर दूसरा द्विस्वभाव में हों या दोनों स्थिर हों तो अल्पायु होगा।

(३) इसी प्रकार शनि चन्द्र की जोड़ी या लग्न चन्द्र की जोड़ी से विचार करना जैसा कि लग्नेश और अष्टमेश से विचार किया था। एवं जन्म लग्न और होरा लग्न पर से भी विचार करना।

(१) तीनों प्रकार से एक ही आयु आवे वही आयु ग्रहण करना।

(२) जहाँ २ प्रकार से एक सो हो एक प्रकार से भिन्न हो तो २ प्रकार से अर्थात् बहुमत से जो आयु आवे उसे लेना।

(३) पूर्वोक्त तीनों प्रकार से भिन्न २ आयु आवे तो लग्न और होरा लग्न से जो आयु आवे उसे लेना।

(४) यदि लग्न या सप्तम में चन्द्र हो तो चन्द्रमा और लग्न पर से द्वितीय प्रकार की आयु लेना।

(५) यदि उक्त स्थान से भिन्न स्थान में चन्द्र बैठा हो तो शनि और चन्द्रमा से आयु का विचार करना।

यहाँ ३ प्रकार से चर आदि द्वारा विचार करने से ३ भेद हो जाते हैं।

आयु भेद	३ प्रकार से	२ प्रकार से	१ प्रकार से
दीर्घायु	१२० वर्ष	१०८	९६
मध्यायु	८०	६२	६४
अल्पायु	३२	३६	४०
खण्ड	४०	३६	३२

यहाँ होरा लग्न की आवश्यकता पड़ती है इसलिए होरा लग्न निकालने की रीति देते हैं—

होरा लग्न निकालना

इष्ट के पल बनाकर ५ का भाग देना लब्धि अंश पलादि में प्राप्त होगा। अंश को राशि बना लो।

जन्म लग्न विषम हो तो=उपरोक्त फल + जन्म का सूर्य = होरा लग्न

,, ,, सम ,, = ,, + जन्म लग्न = होरा लग्न

घ० प० वि० रा० ,, ,,

उदाहरण—इष्ट ३७.३८–३७, लग्न ५–१४–१४–४३ कन्या = सम

पल वि० ० ,, ,,

इष्ट पल २२५८–३७ ÷ ५ = लब्धि ४५ १ – ४३ – २४ =

लग्न सम होने से } = राशि – ०

लब्धि में लग्न जोड़ } १५ – १ – ४३ – २४

} = ३ – १ – ४३ – २४

+ लग्न ५ – १४ – १४ – ४३

रा ,, ,, = होरा लग्न ८ – १५ – ५८ – ७

होरा लग्न = ८–१५–५८–७

लब्धि ४५१ ÷ ३० अंश की रा० राशि बनाये १५–१ हुआ १२ राशि से अधिक होने से १२ घटाकर लिया ३ राशि १ अंश रहा।

यहाँ पर आदि के विचार से (१) लग्नेश, अष्टमेश, (२) शनि, चन्द्र और (३) जन्म लग्न और होरा लग्न से तीन प्रकार से विचारना बताया है और कितने प्रकार से एक सा आने पर क्या आयु आती है उसका विचार भी दिया है।

इसको आधार लेकर कुछ गणित कर आयु स्पष्ट करने की विधि भी है जो यहाँ देते हैं।

आयु स्पष्ट करना

यहाँ उपरोक्त ३ जोड़ियाँ दी हैं इनमें ६ योग कारक हुए तीनों प्रकार से विचारने में जिससे अधिकता आवे वे योग कारक हुए यदि तीनों से भिन्न आवे तो जन्म लग्न और होरा लग्न से प्राप्त आयु लेना यहाँ जन्म लग्न और होरा लग्न ही कारक होंगे।

योग कारक के स्पष्ट में राशि को छोड़कर केवल अंश कला विकला लेना। फिर सबका योग करना जितने योग कारक हों उस योग में उतने का भाग देना अर्थात् ४ योग कारक हों तो ४ का, २ योग कारक हो तो, २ का भाग देना। पश्चात् उसमें उस खण्ड का गुणा करना। ३ प्रकार से मिला हो तो प्रथम खंड ४० का, दो प्रकार से मिलने पर द्वितीय खण्ड ३६ का, और एक प्रकार से मिलने पर तीसरा खंड ३२ का

गुणा करना। पश्चात् ३० का भाग देने से वर्ष मास घड़ी पल आवेंगे वह गत आयु हुई इसे उस खण्ड की प्राप्त आयु में घटा देना तो स्पष्ट आयु होगी।

यहाँ ३० का भाग देने की क्रिया कुछ क्लिष्ट है इससे गुणनफल में १२ मास का गुणा करना। जो अंश आवे उसमें ३० का भाग देना तो लब्धि मास होंगे शेष दिन होंगे आगे कला विकला को घड़ी पल जानो। उदाहरण से समझ में आ जायगा।

उदाहरण

लग्नेश	अष्टमेश	शनि	चंद्र	लग्न	होरा लग्न
बुध	मंगल	मेष	तुला	कन्या	धन
मकर में	मेष				
चर	चर	चर	चर	द्वि०	द्विस्वभाव
दीर्घायु		दीर्घायु		मध्यायु	

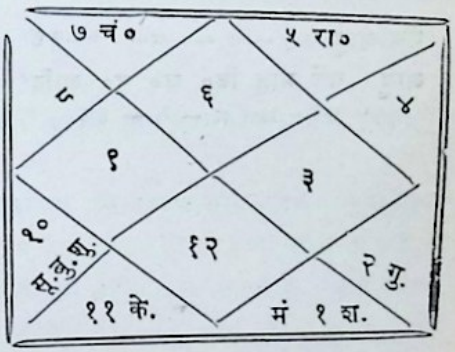

यहाँ २ प्रकार से दीर्घायु आई १०८ वर्ष। दो प्रकार से आने का गुणक ३६ है। यहाँ योग कारक लग्नेश, अष्टमेश शनि और चन्द्र ४ हैं। इनका योग कर ४ का भाग देना होगा।

		रा / /	० / /	
लग्नेश बुध	स्पष्ट	९–२१–२७–३१	२१–२७–३१	यहाँ इनकी राशि
अष्टमेश मंगल	,,	०–१९– ८–२२	१९– ८–२२	छोड़कर केवल
शनि	,,	०–२५–१३–३१	२५–१ – १	अंशादि लिया है।
चन्द्र	,,	६–२८–५९–२७	२८–५९–२७	
रीति पहली			योग ९४–३८–९८ ÷ ४	
२२–३९–४२×३६			$\frac{१}{४}$ = २२–३९–४२ (रीति दूसरी)	
= ८५१°–४९–१२ गुणन फल			यहाँ गुणनफल ८५१°४९–१२ में	
×१२			यदि ३० का भाग देना है तो :—	
१०२२१–५०–२४				

मास		मास	
३०)१०२२१°(३४०		१२)३४०(२८ वर्ष	
९०		२४	
१२२		१००	
१२०		९६	
२१ दिन		४ मास	

३०)८५१–४९–१२(२८ वर्ष
६०
२५१
२४०
११–४९–१२
×१२
१४१–५०–२४

= वर्ष – मास – दिन – घ० – पल
२८ – ४ – २१ – ५० – २४ गताय

इस प्रकार से पूर्णायु १०८ वर्ष आती है

	व०	मा०	दि०	घ०	प०
पूर्णायु	१०८	०	०	०	०
गतायु	२८	४	२१	५०	२४
शेष आयु	७९	७	८	९	३६

आयु वर्ष माह दि० घ० प० आदि
७९– ७ - ८ – ९ – ३६

३०)१४१–५०–२४(४ माह
१२०
२१–५०–२४
×३०
३०)६५५–१२–०(२१
६०
५५
३०
२५–१२
× २
५०–२४

	वर्ष	मास	दिन	घण्टा	पल
=	२८	४	२१	५०	२४

इस प्रकार ३० का भाग देने में असुविधा होती है इससे पहिली बताई रीति सरल है।

यदि तीनों भिन्न २ प्रकार से आयु आवे, तो लग्न और होरा लग्न से आई आयु लेनी पड़ेगी। एक प्रकार से आने का तीसरा गुणक ३२ का गुणा कर ३० का उपरोक्त प्रकार से भाग देने पर गतायु प्राप्त होगी। एक प्रकार से जो आयु आवे उससे घटा देने से स्पष्ट आयु प्राप्त होगी। यदि लग्न और होरा लग्न से दीर्घायु आवे तो९६ वर्ष लेना मध्यायु आवे तो ६४ वर्ष, अल्पायु आवे तो ४० वर्ष लेकर उसमें से गतायु घटा देना तब स्पष्ट आयु प्राप्त होगी।

परन्तु उपरोक्त प्रकार से प्राप्त आयु में भी घट बढ़ होती है जिसे कक्षाह्रास या कक्षा में वृद्धि कहते हैं, जिसका नियम आगे दिया है :—

पूर्व प्राप्त आयु में कक्षा ह्रास-वृद्धि करने के नियम

(१) कक्षा ह्रास—

यदि शनि योग कारक हो तो कक्षा ह्रास होता है अर्थात् दीर्घायु हो तो उसे मध्यायु मध्यायु हो तो अल्पायु जानो यदि अल्पायु हो तो उससे भी अल्पहीनायु जानना।

जैमिनी सूत्र में आयुर्दाय के सम्बन्ध में ३२–३६–४० ये तीन कक्षायें हैं। नियमानुसार ४० की प्राप्ति हो तो ३६, ३६ की प्राप्ति हो तो ३२ समझो, यदि ३२ की प्राप्ति हो तो शनि जिस राशि में बैठा हो उस राशि की दशा का आधा ३२ से घटाकर जो शेष बचे वह उसकी अल्पायु हुई।

इससे द्विगुण मध्यायु और त्रिगुणित दीर्घायु मानकर पूर्ववत् स्पष्ट आयु के मान का अनुमान करना।

शनि अपनी राशि या उच्च में हो तो कक्षा ह्रास नहीं होता।

(२) कक्षा वृद्धि

यदि लग्न या सप्तम में गुरु हो तो कक्षा वृद्धि होती है अर्थात् अल्पायु आवे तो मध्यायु समझो, मध्यायु में दीर्घायु और दीर्घायु में उससे भी अधिक दीर्घआयु होती है।

अर्थात् ३२-३६-४० इन तीनों कक्षाओं में ३२ की प्राप्ति हो तो ३६ लेना, ३६ की प्राप्ति में ४० और ४० की प्राप्ति हो तो गुरु जिस राशि में बैठा हो उस राशि की चर दशा का आधा ४० में जोड़कर उसके तुल्य लेना। अल्पायु से द्विगुणित मध्यायु और त्रिगुणित दीर्घायु मानकर आयु स्पष्ट साधन करना।

(३) कक्षा ह्रास वृद्धि के नियम

१—लग्न और सप्तम पाप ग्रह के मध्यवर्ती हो या उसके त्रिकोण (५-९ स्थान) पाप ग्रह से युक्त हो तो कक्षा ह्रास होता है।

२—इसी प्रकार अन्य कारक से भी विचारना जैसे कारक और उसके सप्तम पाप ग्रहों के मध्य में हो या उससे त्रिकोण स्थान पाप ग्रह से युक्त हो तो कक्षा ह्रास होता है।

३—पाप ग्रह होकर कारक नीच स्थान में या उच्च नीच स्थान से भिन्न स्थान में होकर पाप ग्रह युक्त हो तो भी कक्षा ह्रास होगा।

४—इसके विपरीत होने पर कक्षा वृद्धि होती है अर्थात् लग्न और उससे सप्तम तथा कारक और उससे सप्तम शुभ ग्रहों के मध्यवर्ती हों या उससे त्रिकोण स्थान शुभ ग्रह से युक्त हो, या शुभ ग्रह कारक होकर उच्च में या उच्च नीच से इतर स्थान में होकर शुभ ग्रह से युक्त हो तो कक्षा वृद्धि होती है।

५—इसी प्रकार गुरु से भी कक्षा वृद्धि का विचार करना। जैसे गुरु पाप ग्रह के मध्य हो या उससे त्रिकोण स्थान पाप ग्रह से युक्त हो तो कक्षा ह्रास होता है।

६ शुभ ग्रह के मध्य में हो या उसके त्रिकोण स्थान में शुभ ग्रह हो या उच्च स्थान में हो या उच्च नीच से भिन्न स्थान में स्थित होकर शुभ ग्रह से युक्त हो तो कक्षा वृद्धि होती है।

७—पूर्व बताये कक्षा योग में पूर्ण चन्द्र और शुक्र का योग हो तो वहाँ पर दशा में एक राशि की वृद्धि होती है किन्तु कक्षा वृद्धि नहीं होती।

८—पूर्वोक्त कक्षा ह्रास योग में शनि का योग हो तो दशा में एक राशि का ह्रास होता है।

(४) आयु विचारने को नीचे बताई तीन जोड़ियों पर भी विचार करो

(१) चन्द्र की और लग्न की द्रेष्काण की राशियाँ।

(२) लग्नेश और चन्द्र राशि पर की नवांश राशि।

(३) लग्नेश और अष्टमेश की द्वादशांश राशि।

ऊपर बताई चर स्थिर आदि के अनुसार दीर्घ मध्य अल्पायु का विचार करना।

(५) शुभ ग्रह और लग्नेश की केन्द्र आदि स्थिति के अनुसार

(१) शुभ ग्रह और लग्नेश केन्द्र में हो—दीर्घायु

(२) शुभ ग्रह और लग्नेश पणफर में हो— मध्यायु।

(३) शुभ ग्रह और लग्नेश आपोक्लिम में हो—अल्पायु।

यहाँ लग्नेश अष्टमेश में जो बली हो उससे विचारना।

अष्टमेश और पाप ग्रह इसी प्रकार हों तो इससे विरुद्ध फल जानो।

(६) नीचे बताई जोड़ियों में मैत्री निकालो

१. चन्द्र राशि का स्वामी और चन्द्र से अष्टम राशि का स्वामी।

२. लग्न से लग्नेश और अष्टमेश। ३. लग्नेश और सूर्य

ये मित्र हों तो–दीर्घ आयु। ये सम हों तो–मध्यायु। ये शत्रु हों तो–अल्पायु।

(७) लग्नेश या लग्न नवांशेश बली हो और उस स्थान से गिनने पर—

१. अच्छे स्थान में हो या अष्टमेश से गिनने पर अच्छे स्थान में हो जैसी स्थिति हो तो जातक दीर्घजीवी होगा।

चन्द्र राशि का स्वामी या चन्द्र का नवांशेश के सम्बन्ध से भी उपरोक्त फल होगा। यदि ऐसा न हो तो विरुद्ध फल होगा।

२. लग्नेश की अपेक्षा अष्टमेश अति बली हो केन्द्र में हो और यदि पाप ग्रह अष्टम और द्वादश भाव में हो तो अल्पायु होगी।

३. लग्न से अष्टम स्थान का स्वामी और सप्तम स्थान से अष्टम स्थान का स्वामी इन दोनों में जो बली हो वह केन्द्र में हो तो दीर्घायु। पणफर में हो तो मध्यायु। आपोक्लिम में हो तो अल्पायु होगी।

४. इसी प्रकार आत्म कारक का स्वामी और उससे सप्तम स्थान से अष्टम स्थान का स्वामी इन दोनों में जो बली हो वह आत्म कारक से केन्द्र में हो तो दीर्घायु, पणफर में मध्यायु, आपोक्लिम में अल्पायु होगी। लग्न विषम हो तो क्रम से, सम हो तो उत्क्रम से (उलटी गिन्ती से) अष्टमेश जानना।

यदि लग्न से तृतीय में कारक हो तो केन्द्र आदि में स्थित अष्टमेश के वश विपरीत आयुर्दाय जानना। जैसे केन्द्र में अष्टमेश हो तो अल्पायु, पणफर में मध्यायु, आपोक्लिम में दीर्घायु होती है।

(८) लग्नेश अष्टमेश आदि का चर स्थिर आदि के अनुसार ऊपर दीर्घ मध्य अल्प आयु का निर्णय बताया है। इसीप्रकार यहाँ धर्मादि स्थान स्थिति के वश दीर्घादि आयु का निर्णय करना।

(१) एक पंचम में दूसरा लाभ में – दीर्घायु।

(२) एक तृतीय में दूसरा लाभ में —मध्यायु।

(३) एक नवम में दूसरा लाभ में—अल्पायु।

(४) दोनों लाभ में—हीनायु।

इसी प्रकार लग्नहोरा लग्न आदि के वश आयु विचारना।

आयु	दीर्घायु	मध्यायु	अल्पायु	हीनायु
लग्नेश	११ भाव में	११ में	११ में	११ में
अष्टमेश	५ में	३ में	९ में	११ में

(९) अष्टमेश आदि योग कारक ग्रह

१. लग्न से त्रिकोण (१-५-९) में होने से ३ प्रकार की अल्पायु होती है। २. लग्नेश से त्रिकोण में होने से ३ प्रकार की मध्यायु और ३. लग्नेश आश्रित राशि से ३ प्रकार की दीर्घायु होती है प्रत्येक का प्रमाण १२ वर्ष का होता है जैसा यहाँ दिया है:-

	लग्न से			लग्नेश से			लग्नेश	आश्रित	राशि से
त्रिकोण	१	५	९	१	५	९	१	५	९
आयु	१२	२४	३६	४८	६०	७२	८४	९६	१०८
वर्ष	अल्पायु			मध्यायु				दीर्घायु	

जैसे लग्न से अष्टमेश आदि कोई योग कारक ग्रह लग्न में हो तो अल्पायु १२ वर्ष की, पंचम में हो तो २४ वर्ष की, नवम में हो तो ३६ वर्ष की होगी। यदि लग्नेश से प्रथम स्थान में योगकारक हो तो मध्यायु ४८ वर्ष की, वहाँ से पंचम में हो तो ६० वर्ष की नवम में हो तो ७२ वर्ष की होगी। लग्नेश स्थित राशि से प्रथम स्थान में योग कारक हो तो दीर्घायु ८४ वर्ष की, पंचम में हो तो ९६ वर्ष की, नवम में हो तो १०८ वर्ष की आयु होगी।

(१०) अन्य रीति से अल्प दीर्घ आदि आयु विचार

(१) लग्न स्पष्ट × ५ + स्पष्ट गुलिक =स्पष्ट "प्राण" (जीव)।

(२) चन्द्र स्पष्ट × ८ + गुलिक =स्पष्ट देह।

(२) स्पष्ट गुलिक × ७ + सूर्य स्पष्ट =स्पष्ट मृत्यु।

जब जीव और देह का योग मृत्यु से बड़ा हो तो—दीर्घायु।

जब जीव और देह का योग मृत्यु से कम हो तो—अल्पायु।

जीव + मृत्यु + देह = इनके योग से जो राशि आवे उसमें शनि पहुँचे तब घन का नाश हो। या योग राशि से ५, ९ भाव में या उस योग राशि में जिस राशि का नवांश हों उस राशि पर शनि जावे तब मरण होगा। भाव से त्रिकोण में शनि हो तो उस भाव का नाश हो या भावेश के कोण में गुरु के पहुँचने पर मृत्यु हो।

आयु के किस भाग में क्या होगा इसका चमत्कारिक योग

जन्म नक्षत्र, जन्म राशि और अपनी आयु लेना इस संख्याओं का योग करना। इस योग को ३ स्थान में रखकर क्रमशः ७, ८ और ६ से भाग देना जो शेष बचे उससे फल विचारना।

आदि अंत में ० शेष—दुःख
बीच में ० शेष—धनक्षय
तीनों में ० शेष—मृत्यु
तीनों में शेष अंक बचें तो—जय

उदाहरण नाम गुमाल
धनिष्टा नक्षत्र संख्या २३
राशि कुम्भ संख्या ११
आयु ७२ वर्ष ७२
योग १०६

(१) योग १०६ ÷ ७ = १५$\frac{१}{७}$ = शेष १
(२) योग १०६ ÷ ८ = १२$\frac{२}{८}$ = शेष २
(३) योग १०६ ÷ ६ = १७$\frac{४}{६}$ = शेष ४

यहाँ तीनों में शेष अंक बचा—जय
यदि (१) और (३) में ० बचता तो-दुख
केवल (२) में ० बचता तो—धनक्षय
(१) (२) (३) तीनों में ० बचता तो-मृत्यु

आयु खंड पर से दुःख सुख विचार

जीवन को ३ खंड में बाटा है इससे प्रत्येक ४ भाव का १ खंड हुआ।

पहिला खंड—१२, १, २, ३ भाव।

दूसरा खंड—४, ५, ६, ७ भाव।

तीसरा खंड—८, ९, १०, ११ भाव।

जिस खंड में शुभ ग्रह अधिक हों उस खंड में सुख होगा। जिस खंड में पाप ग्रह अधिक हों उस खंड में दुःख होगा। जहाँ मिश्रित हों वहाँ दुःख सुख मिश्रित फल होगा।

यहाँ गणित से या पूर्व रीति से प्राप्त आयु के ४ भाग करना और उसके अनुसार उस खंड में ग्रहों के अनुसार सुख दुःख का अनुमान करना। जैसे किसी की आयु ७५ वर्ष की प्रकट हुई इसके ३ भाग किये २५ वर्ष प्रत्येक खंड के आये। अब कुण्डली में उपरोक्त प्रकार से बताये तीनों खंडों के शुभाशुभ ग्रहों का विचार करो जिस खंड में शुभग्रह अधिक होंगे सुख होगा। पाप ग्रह अधिक होंगे तो दुःख होगा। यहाँ प्रथम खंड में २५ वर्ष पश्चात् द्वितीय खंड में २५ वर्ष पश्चात् तृतीय खंड में २५ वर्ष के हिसाब से आयु-खंड के अनुसार सुख दुःख का विचार करना।

इसमें जिस खंड में बहुत पाप ग्रह या नीचांशक या अस्तगंत ग्रह हो उस खंड में दुःख पदच्युत आदि होता है जिसमें शुभग्रह अधिक उच्चांशक आदि होते हैं उस खंड में सुख ऐश्वर्य आदि प्राप्त होता है।

पूर्वार्द्ध उत्तरार्द्ध ज्योतिष चक्र के अनुसार शक्ति प्राप्ति

लग्न से ६ भाव तक पूर्वार्द्ध है, ७ से १२ भाव तक पश्चिमार्द्ध है।

ज्योतिष चक्र के पूर्वार्द्ध में उच्च के तथा बलवान् ग्रह हों तो राजा के समान शक्ति और धन, जीवन के पूर्व भाग में प्राप्त हो।

यदि पश्चिमार्द्ध में उच्च और बलवान् ग्रह हों तो जीवन के अंतिम भाग में शक्ति और सफलता देते हैं।

जो पूर्वार्द्ध और पश्चिमार्द्ध दोनों में उच्च के और बलवान् ग्रह हों तो उसे जीवन भर शक्ति और उन्नति प्राप्त हो।

मृत्यु समय

कुण्डली में शनि, गुरु, सूर्य और चन्द्र का स्पष्ट जोड़ने से जो प्राप्त हो उस स्पष्ट पर जब शनि पहिले चक्कर में पहुँचे तो उस समय अल्पायु योग वाले की मृत्यु होगी।

जब दूसरा चक्कर शनि लगाकर उसी स्पष्ट पर पहुँचे तब मध्यायु वाले की मृत्यु होगी। जब तीसरी बार चक्कर लगाकर शनि उक्त स्थान पर पहुँचे तो दीर्घायु वाले की मृत्यु संभव है।

ग्रहों की दशा अंतर्दशा पर से कष्ट कर या मृत्यु संभव समय का अनुमान कर लेना चाहिये।

अरिष्ट समय

(१) जिन अरिष्टों में फल का समय नहीं दिया उनमें योग करने वाले ग्रहों में से जो बलवान् हो उसकी राशि पर जब गोचर में चन्द्रमा हो उस समय अरिष्ट होगा।

(२) अथवा अपनी राशि में या लग्न राशि में चन्द्रमा गोचर में जब जाय या बल युक्त हो तो १ वर्ष के भीतर मृत्यु हो।

अवस्था के कुछ योग

ग्रह आयु—	मंगल	बुध	सूर्य गुरु शनि राहु	चन्द्र शुक्र
	युवा	बालक	वृद्ध	अधेड़ (मध्यम)

वृद्ध युवासम हो—लग्नेश लग्न में हो या बलवान् ग्रह लग्न में हो और लाभ स्थान में मंगल हो तो बूढ़ा भी युवा के तुल्य समझा जावे (शंभु०)। लग्न में मंगल हो तो जातक वृद्ध होकर भी युवा के समान रहता है (जा०सं०)।

युवा होकर बालक समान—लग्न में बुध हो तो युवा भी बालक समझा जाता है।

न अति बूढ़ा न अति युवा—लग्न में चन्द्र शनि हो तो न अति वृद्ध, न अति युवा मालूम पड़े (शंभु०)। लग्न में चन्द्र शुक्र हो तो न अति वृद्ध न अति युवा के समान रहे (जा० सं०)।

स्वभाव से वृद्ध—जिसके २ बलवान् वृद्ध ग्रह लग्न में हों तो वह स्वभाव से ही वृद्ध रहता है और सब जनों में मान पाने योग्य रहता है (जा० सं०)।

दीर्घायु योग (७० वर्ष के ऊपर आयु)

दीर्घायु १—षष्ठेश ६ या १२ भाव में हो, व्ययेश १२, १ या ८ भाव में हो।

दीर्घायु २—लग्नेश या अष्टमेश स्वगृही होकर अपने नवांश में या अधिमित्र के नवांश में न बैठ कर मित्र के नवांश में हो। (जैमिनी)

दीर्घायु ३—शुभ ग्रहों से युक्त अष्टमेश उच्च का केन्द्र या त्रिकोण में हो।

चिरायु ४—अष्टमेश अष्टम में और लग्नेश लग्न में हो। (जैमिनी)

चिरायु ५—शुभग्रह शुभ राशि में अष्टम में होकर शुभ ग्रह से दृष्ट हो। (जैमिनी)

दीर्घायु ६—अष्टमेश अपने गृह में हो। (जैमिनी)

दीर्घायु ७—लग्नेश और अष्टमेश ६ या १२ भाव में शुभ ग्रह युक्त हो। (जैमिनी)

दीर्घायु ८—दशमेश लग्नेश और अष्टमेश केन्द्र त्रिकोण या लाभ में हो। (जैमिनी)

दीर्घायु ९—अष्टमेश केन्द्र में हो। (वृ०पा०)

दीर्घायु १०—षष्ठेश या द्वादशेश ६-१२-१ या ८ भाव में हो (वृ०पा०)

दीर्घायु ११—पंचमेश लग्नेश और अष्टमेश यदि स्वराशि या स्वनवांश में या मित्र गृही हो (वृ०पा०)।

दीर्घायु १२—लग्नेश, अष्टमेश, दशमेश और शनि ये केन्द्र त्रिकोण में हों। (इन चारों में जो बलवान् हो उसकी स्थिति से आयु निर्णय करना)।

दीर्घायु १३—लग्नेश उच्च में, चन्द्र ११ वें घर में, गुरु अष्टम भाव में हो (वृ.पा.)।

दीर्घायु धनी १४—बली लग्नेश, केन्द्र स्थित शुभ ग्रह से दृष्ट हो तो धन और सब गुणों से युक्त दीर्घायु हो (वृ०पा०)।

दीर्घायु धनी १५—लग्नेश, बुध, गुरु या शुक्र यदि केन्द्र त्रिकोण में हों तो धनी, बुद्धिमान्, राजा का प्रिय और दीर्घायु हो (वृ०पा०)।

दीर्घायु धनी १६—उदय राशि का स्वामी (लग्नेश) अति बली हो पाप ग्रह से दृष्ट न हो शुभ ग्रह से दृष्ट होकर केन्द्र में हों तो मृत्यु को भी भगा देते हैं दीर्घायु धनवान् और बहुगुणी राजलक्ष्मी युक्त करता है (फल०)।

दीर्घजीवी सुखी १७—कुण्डली में १, ४, ५, ७, ८, ९, १० घर में कोई पाप ग्रह न हो। लग्नेश और गुरु केन्द्र में हो तो अच्छे काम करने वाला, सब प्रकार का सुख भोगे और रोग रहित १०० वर्ष जीवे (फल०)

दीर्घायु १८—लग्न से पहिले ६ घर में सब हों या बाद के ६ घर में सब ग्रह हों अर्थात् राहु केतु को छोड़कर सब शुभ और पाप ग्रह लग्न से षष्ठ भाव तक हो एक योग हुआ या सप्तम से व्यय भाव तक सब शुभ और पाप ग्रह हों यह दूसरा योग हुआ (सर्वार्थ चिन्तामणि)।

दीर्घायु धनी १९—लग्न विषम राशि में हो उसमें पूर्ण चन्द्र हो और सब ग्रह भी विषम राशि में हों तो दीर्घायु और धनी हो। यह सब सम राशि में हो तो यह योग नहीं होगा (स० चि०)।

दीर्घायु, विद्या और मानयुक्त २०—गुरु लग्न में, शुक्र चतुर्थ में चन्द्र शनि युक्त हो, दशम में कोई पाप ग्रह का योग न हो तो दीर्घायु हो, ऊँची विद्या और अच्छा मान प्राप्त हो (स० चि०)।

दीर्घायु२१—लग्न मकर के उत्तरार्द्ध में हो उसमें चन्द्र हो और मंगल पूर्वार्द्ध में हो, गुरु केन्द्र में हो तो दीर्घायु हो।

लग्न के २ भाग करने से प्रत्येक को होरा कहते हैं। लग्न और चन्द्र मकर के दूसरे होरा में हो और मंगल पहिले होरा में हो जहाँ वह साधारणतः उच्च का होगा। गुरु मेष, कर्क या तुला में हो तब केन्द्र में होगा।

दीर्घायु (२२)–यदि गुरु धनु के पूर्वार्द्ध में हो और लग्न उसके उत्तरार्द्ध में हो और शुक्र व चन्द्र दोनों शनि से केन्द्र में हों तो दीर्घायु होगा (स० चि०)।

यदि गुरु धन के पहिले होरा में हो धन उसका स्वगृह और मूल त्रिकोण है। लग्न दूसरे होरा में हो शनि से केन्द्र में चन्द्र और शुक्र चाहे जहाँ हों।

दीर्घायु (२३)–बुध कन्या के पूर्वार्द्ध में हो और लग्न उत्तरार्द्ध में हो और ३-४ ग्रह उच्च के हों तो दीर्घायु (स० चि०) बुध कन्या के १५′ में परमोच्च है यह पहिले होरा में हो और लग्न दूसरे होरा में हो और ३-४ ग्रह उच्च के हों। वहाँ बुध कन्या में है तो शुक्र और सूर्य उच्च के नहीं हो सकते इस कारण दूसरे ४ ग्रह शनि गुरु मंगल और चन्द्र हैं जो उच्च के हो सकते हैं।

दीर्घायु (२४)–लग्न से ३-४-८ इन्हीं स्थानों में सब ग्रह हों (जा० लंका०)।

दीर्घायु (२५)–पापग्रह ३-६-११ भाव में हो चन्द्र ६-८ भाव में हो गुरु केन्द्र में हो तो दीर्घायु और नगर का स्वामी हो या ३००० ग्राम का स्वामी हो (स० चि०) यहाँ ६-८ भाव में चन्द्र बुरा है परन्तु केन्द्र में गुरु होने से शुभ हो जाता है।

दीर्घायु (२६)–लग्न से केन्द्र में एक भी प्रकाश करने वाला बली शुभ ग्रह हो तो सब रोग नाश कर दीर्घायु करता है (ल० चं०)।

दीर्घायु (२७)–पंचम में चन्द्र या ५-९ भाव में या दशम में गुरु हो (ल० चन्द्रि०)।

दीर्घायु २८ - वृष राशि में राहु ३ ग्रह से दृष्ट हो चौथा केतु से भी दृष्ट हो, गुरु शुक्र से भी दृष्ट हो (ल० चं०)।

दीर्घायु २९--अपने ही स्थान में स्थित ग्रह व बुध और शनि हो (ल० चं०)।

दीर्घायु ३० – सप्तम में शुक्र शुभ राशि का शुभ ग्रहों से दृष्ट व युत हो तो दीर्घायु और भाग्यशाली हो (जा० सं०)।

दीर्घायु जितेन्द्रिय ३१—लग्न से ५, ९, ८, १, ४, ७, १० भाव में से किसी में ३, ४ या ५ ग्रह हों तो स्त्री पा कर भी जितेन्द्रिय तथा दीर्घायु हो। कोई आचार्य इसे राजयोग कहते हैं (स० चिंता०)।

दीर्घायु सुखी ३२—पूर्ण चंद्र या चंद्र जो शुभ राशि या अंश में हो और बलवान गुरु से दृष्ट हो तो सब भय दूर कर उसे दीर्घ जीवन और सुख देगा (स० चि०)।

दीर्घायु निर्भय बली ३३—जन्म में सम्पूर्ण ग्रह लग्न को देखते हों तो हास्य विलास युक्त बलवान् निर्भय, शत्रु कुल नाशक, राज कुल में उत्पन्न और दीर्घायु हो। (जा० भ०)।

दीर्घायु, रोग रहित मंत्री आदि ३४—लग्न से ७, ६, ८ घर में शुभ ग्रह हों पाप ग्रह से युक्त दृष्ट न हों तो वह दीर्घायु, राजा का मंत्री, सेना का स्वामी, भूमि का स्वामी, बहुत स्त्रियों का पति, रोग रहित, भय हीन, सुन्दरता और भिन्नता युक्त, श्रेष्ठ शील वाला सदा प्रसन्न होता है। (जा० भ०)।

दीर्घायु सुखी धनी ३५—लग्नेश शुभ ग्रह युक्त, उच्च राशि का केन्द्र त्रिकोण में शुभ ग्रहों से दृष्ट हो या दशमेश से युक्त हो या अपनी राशि में हो तो दीर्घायु हो, उत्तम ऐश्वर्य, उत्तम कीर्ति धन अन्न युक्त हो (स० चि०)।

१०० वर्ष आयु निरोग सुखी ३६—लग्नेश तथा गुरु केन्द्र में हो, केन्द्र त्रिकोण और अष्टम स्थान में पाप ग्रह न हो तो १०० वर्ष जीवे, पुण्य कर्मी, निरोग और सुखी होवे (स० चि०)।

युगांत आयु लक्ष्मी युत ३७— शनि के अंशक में सूर्य मंगल गुरु नवम या दशम घर में हो बलवान् भी हो और लग्न में चंद्र राशि के अन्त्य नवांश का हो तो लक्ष्मीयुत युगांत आयु पावे (स० चिंता०)।

२ हजार वर्ष आयु ३८—नवम स्थान में बुध शुक्र शनि एक ही अंशक में होवें या एक अंशक ही में लग्न में होवें ६ या ८ में चंद्र हो तो २ हजार वर्ष की आयु हो (स० चिंता०)।

दीर्घायु ३९—शुभ ग्रह युक्त लग्नेश लग्न में हो या सप्तम में शुभ ग्रह हो तो दीर्घायु हो (शंभु हो०)।

दीर्घायु सुखी ४०—लग्नेश शुभ ग्रह हो या शुभ ग्रह लग्न में हो तो बड़ी आयु वाला क्लेश रहित और सुखी हो (जा० सं०)।

दीर्घायु ४१—लग्नेश गुरु शुक्र युक्त केन्द्र में हो व गुरु शुक्र से दृष्ट हो तो दीर्घायु हो (स० चिंता०)।

,, ४२—लग्नेश शुभ ग्रह युक्त गुरु से दृष्ट हो केन्द्रों में शुभ ग्रह हो (स० चि०)

,, ४३—लग्नेश बली हो पाप ग्रह ३-६-११ में हो शुभ ग्रह केन्द्र में हो (स० चि०)।

,, ४४—३-६-११ भाव में पाप ग्रह हो ६, ७, ८ भाव में शुभ ग्रह हो तो दीर्घायु हो। (स० चि०) (जा० पारि०)।

,, ४५— सप्तम भाव में ग्रह स्वगृही, मित्र गृही या उच्च का हो तो ग्रह की स्थिति के अनुसार दीर्घायु हो (स० चि०)।

,, ४६—लग्नेश अष्टमेश युक्त ६–१२ भाव में हो षष्ठेश १२ भाव में हो उस पर शुभ ग्रह की दृष्टि हो तो दीर्घायु (स० चि०)।

,, ४७—दशमेश स्वगृही, मित्र गृही या उच्च का हो तो उसकी स्थिति के अनुसार दीर्घायु हो (स० चि०)।

,, ४८— दशमेश, लग्नेश और अष्टमेश केन्द्र में हो (स० चि०)।

दीर्घायु ४९—उक्त ग्रह दशम में हो या उपरोक्त तीनों शनि युक्त अन्य केन्द्र में हो (स० चि०)।

,, ५०—लग्न में अष्टमेश गुरु शुक्र युक्त या दृष्ट हो या लग्नेश केन्द्र में हो (स० चि०)।

,, ५१—तीन ग्रह उच्च के हों, अष्टमेश लग्न में हो। अष्टम में कोई पाप ग्रह न हो (स० चि०)।

,, ५२—तीन ग्रह उच्च के हों, लग्नेश और अष्टमेश युक्त हों अष्टम में पाप ग्रह न हो (जा० पारि०)।

,, ५३—अष्टम भाव में ३ ग्रह उच्च के या स्वगृही मित्रगृही हों और लग्नेश बलवान् हो (जा० पारि०)।

,, ५४—सम्पूर्ण पाप तथा शुभ ग्रह पारावतादि अंशकों में केन्द्र त्रिकोण गत हों (स० चि०)।

दीर्घायु ५६—लग्नेश सूर्य का मित्र हो तो दीर्घायु हो (सं० चि०)।

,, ५७—एक भी शुभ ग्रह पूर्ण बली होकर केन्द्र में हो तो सब दोषों का क्षय और पूर्णायु करता है (मान०)।

,, ५८—लग्नेश बली होकर ११ या ३ भाव या केन्द्र में हो तो सब अरिष्ट दूर होकर निरोगी दीर्घ आयु वाला हो (मान०)।

,, ५९—आधान लग्न में शुभ ग्रह हो तो दीर्घायु धनी सुखी हो (फल दी०)।

,, ६०—तीसरे भाव में राहु हो तो चिरायु हो और उसे लक्ष धन का स्वामी और कष्टहीन करता है, परन्तु अंगहीन करता है या मामा का नाश करता है (जा० लंकार)।

,, ६१—अष्टमेश लग्न से लाभ में शुभ ग्रह युक्त हो (जा० लं०)।

,, ६२—अष्टम में शनि हो (जा० लं०)।

,, ६३—अष्टमेश शुभ ग्रह होकर शुभ ग्रह युक्त अष्टम भाव में हो (जा० लं०)।

,, ६४—लग्न अष्टम व लाभ इनके स्वामी क्रमानुसार लाभ, केन्द्र व त्रिकोण में हो वे पाप ग्रह हों चाहे शुभ ग्रह हों तो भी दीर्घायु हो (प्रा० यो०)।

,, ६५—अष्टमेश शुभ ग्रह युत या दृष्ट हो तो दीर्घा० (प्रा० यो०)।

,, ६६—अष्टमेश अष्टम में हो और शनि अकेला हो (स० चिंता०)।

,, ६७—शनि स्वगृही मित्र गृही या उच्च का हो (सर्व० चि०)।

,, ६८—१, ८ और १० भाव के स्वामी स्वगृही हों या कोण में हों (स० चि०)।

पूर्णायु ६९—कोई अरिष्ट न हो तो जो आय साधन करने से प्राप्त हुई हो वह आयु भोगे (जा० म०)।

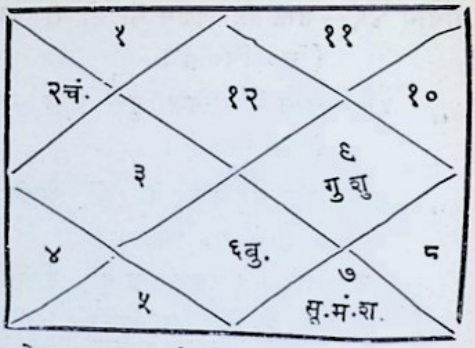

दीर्घायु ७०—बलवान् लग्नेश शुभ ग्रह युक्त या दृष्ट हो पाप दृष्टि रहित हो तो सदा भाग्यवान् और दीर्घायु हो (जा०पारि०)।

,, ७१—उच्च का कोई भी ग्रह शनि व अष्टमेश युक्त हो (जा. पा.)।

,, ७२—पाप ग्रह ६-१२ भाव में हो, लग्नेश केन्द्र में हो (जा.पा.)।

,, ७३—अष्टम में पाप ग्रह हो और दशमेश उच्च का हो (जा० पारि०)।

,, ७४—अष्टमेश जिस भाव में हो उस भाव का स्वामी जिस राशि में हो उस राशि का स्वामी और लग्नेश केन्द्र में हो (जा० पारि०)।

,, ७५—द्विस्वभाव लग्न में जन्म हो और लग्नेश से केन्द्र में २ पाप ग्रह हों (जा० पारि०)।

,, ७६—द्विस्वभाव लग्न में जन्म हो लग्नेश केन्द्र में हो या उच्च या मूल त्रिकोण का हो तो चिरायु और भाग्यशाली होवे (जा० पारि०)।

,, ७७—शनि सूर्य मंगल चर राशि के नवांश में हों, गुरु और शुक्र स्थिर राशि के नवांश में हों, शेष अर्थात् चन्द्र बुध राहु केतु द्विस्वभाव राशि में हों तो १०० वर्ष की आयु हो (जा० पारि०)।

,, ७८—उच्च का अष्टमेश शुभ ग्रह युक्त केन्द्र त्रिकोण में हो तो दीर्घायु (जा. पा.)

चिरायु ७९—लग्नेश अष्टमेश और दशमेश वक्री हो शनि का योग न हो तो चिरायु हो (जा० पारि०)।

,, ८०—अष्टमेश अष्टम में लग्नेश लग्न में हो (जा० पारि०)।

,, ८१—लग्न से द्वादशेश अपनी राशि में बलवान् हो तो चिरायु और सुखी हो (जा० पारि०)।

,, ८२—लग्नेश, अष्टमेश केन्द्र में बलवान् हो (जा० पारि०)।

आयुष्मान् निरोग ८३-गर्भाधान की लग्न राशि के अष्टम घर में दशवीं राशि हो या जन्म लग्न, बुध गुरु शुक्र से युक्त या दृष्ट हो तो आयुष्मान् और निरोग रहे (जा. पा.)।

दीर्घायु ८४—अष्टमेश मित्र गृही हो तो दीर्घायु।

,, ८५—अष्टमेश शनि युक्त हो।

,, ८६—चन्द्र की दृष्टि सूर्य पर और बुध की दृष्टि चन्द्र पर हो तो सुखी और चिरायु हो।

,, ८७—लग्न सूर्य चन्द्र बली होकर शुभ ग्रह युक्त हों।

,, ८८—गुरु शुक्र केन्द्र में चन्द्रमा लाभ में हो।

मध्यायु (३२ वर्ष से ७० वर्ष तक आयु) योग

मध्यायु १—लग्नेश निर्बल हो, गुरु केन्द्र या त्रिकोण में हो, पाप ग्रह ६, ८, १२ भाव में हो (जैमिनी०) ।

,, २—केन्द्र त्रिकोण में शुभ ग्रह हो, पाप ग्रह ६, ८ में हो शनि बली हो या लग्न केन्द्र या त्रिकोण में पाप ग्रह हो (जैमिनी०) ।

,, ३—लग्न से और कारक से बलवान् अष्टमेश कारक ही हो तो अल्पायु दीर्घायु होते हुए भी मध्यायु होती है (जैमिनी) ।

,, ४—पाप ग्रह २, ३, ४, ५, ८, ११ इन स्थानों में हो तो मध्यायु (प्रा०यो०) ।

,, ५—लग्नेश साधारण प्रकार से सूर्य के साथ हो तो मध्यायु (स० चि०) ।

,, ६—शनि बलवान् हो शुभ ग्रह केन्द्र या त्रिकोण में हो पाप ग्रह ५ या ८ घर में हो (सर्व चि०) । पाप युक्त होने पर भी बल के अनुसार कुछ अन्तर पड़ जायगा जैसे मंगल शनि युक्त मकर में हो या शनि लग्नेश शुक्र के साथ तुला में हो तो उसकी अशुभता अवश्य कम हो जायेगी । जब लग्नेश शक्ति हीन हो गुरु केन्द्र में हो या त्रिकोण में हो और पाप ग्रह दुष्ट स्थान में होने से मध्यायु हो जाती है यहाँ अच्छे और बुरे का मिश्रण हैं । बलहीन लग्नेश अल्पायु देता है । गुरु केन्द्र त्रिकोण में दीर्घायु देता है और पाप ग्रह दुष्ट स्थान में मिश्रित फल देते हैं । पाप ग्रह ६ भाव में दीर्घायु देते हैं परन्तु ८ या १२ घर में हो तो आयु घटा देते हैं ।

,, ७—जीवन का कारक शनि है वह बलहीन केन्द्र या त्रिकोण में हो और शुभ युक्त हो । पाप ग्रह ६ या ८ ग्रह में हो तो मध्यायु । पापग्रह लग्न केन्द्र या त्रिकोण में मध्य जीवन देते हैं परन्तु तुला लग्न में शनि हो तो उसकी पुर्णायु होगी (स० चिन्ता०)

,, ८—लग्नेश अष्टमेश और दशमेश इनमें २ बली हों शनि का योग न हो तो मध्यायु (जा० परि०)

,, ९—गुरु केन्द्र त्रिकोण में हो और वह बलहीन लग्नेश के साथ हो ।

,, १०—लग्न से तीसरे और छठे घर का स्वामी केन्द्र में हो ।

,, ११—गुरु या शुक्र केन्द्र में हो ।

१२—जो पुनर्वसु नक्षत्र में उत्पन्न हो वह साधारण प्रकार से मध्यायु होता है जबकि कोई बाल अरिष्ट या अल्पायु योग न हो ।

,, १३—जब कोई बालारिष्ट अल्पायु योग या पूर्ण आयु योग न हो तो मध्यायु योग समझना ।

अल्पायु योग

अल्पायु १—मेष वृश्चिक राशि का गुरु अष्टम में हो, सूर्य मंगल शनि चन्द्रमा से दृष्ट हो और शुक्र न देखता हो तो अल्पायु हो (जा० भ०) ।

,, २—गुरु ओर शुक्र दोनों लग्न में हों पाप ग्रह पंचम में हो (जा० लं०)।

,, ३—लग्नेश सूर्य युक्त होकर लग्न में क्रूर ग्रहों से युक्त या दृष्ट हो (जा० लं०)।

,, ४—सातवें घर में मंगल, आठवें शुक्र, नवम सूर्य हो (ल० चं०) अल्पायु पर धनी हो (मान०)।

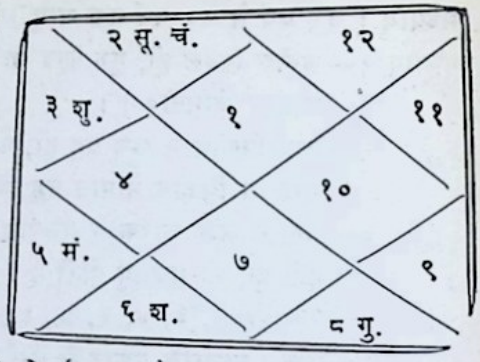

,, ५—बारहवें में चन्द्र, छठेमें पापग्रह हो तो अल्पायु और रोगी हो (ल० चं०)।

,, ६ - पाप ग्रह या लग्नेश से युक्त अष्टमेश अष्टम हो (वृ० पा०) जैसे अष्टमेश की स्थिति से आयु का विचार होता है उसी प्रकार दशमेश से भी विचारना (वृ० पा०)।

,, ७ - पाप ग्रहों के साथ अष्टमेश कहीं हो और लग्नेश अष्टम स्थान में हो (जैमि०) इसी प्रकार शनि और दशमेश से भी विचारना (जैमि०)।

,, ८—लग्नेश नीच में हो, अष्टम स्थान पाप ग्रह से युक्त हो, लग्नेश निर्बल हो (जैमि०)।

,, ९— लग्न से पंचम स्थान, अष्टमेश और अष्टम स्थान पाप ग्रह युक्त हो (जैमि०)।

,, १०–अष्टमेश पाप गृही होकर ६-८-१२ भाव में पाप ग्रह युक्त हो (जैमि०)।

,, ११–अष्टमेश पाप ग्रह युक्त ६ या १२ भाव में (जैमि०)।

,, १२–अष्टमेश लग्नेश युक्त ६ या बारह भाव में हो और निर्बल हो।

,, १३–दशमेश, लग्नेश अष्टमेश केन्द्र त्रिकोण या लाभ में हो तो दीर्घायु योग होता है परन्तु उक्त ग्रह शनि के साथ हो तो अल्पायु योग हो जाता है (जैमि०)।

,, १४–६-८-१२ भाव में पाप ग्रह हो लग्नेश निर्बल हो शुभ ग्रह युक्त या दृष्ट न हो तो अल्पायु और संतान हीन हो (जा० पारि०)।

,, १५–अष्टमेश या शनि क्रूर षष्ठ्यंश में हो पाप ग्रह युक्त हो (जा० पारि०)।

,, १६–पाप ग्रह २-१२ भाव में क्रूर षष्ठ्यंश में हो शुभ दृष्ट न हो (जा० पारि०)।

,, १७–लग्नेश नीच राशि नीच नवांशक में हो, पापग्रह छठे आठवें होवें, मांदि लग्न में हो शुभ दृष्ट न हो तो अल्पायु हो, अपने कुल का नाशक हो (स० चिं०)।

,, १८–शनि लग्न में हो किसी शुभ ग्रह की दृष्टि न हो तो अल्पायु हो और कुटुम्ब का नाशक हो (स० चिं०)।

,, १९–अष्टमेश नीच में हो अष्टम भाव में पाप ग्रह हो, लग्नेश निर्बल हो (वृ० पा०)।

अल्पायु २०–तृतीयेश और मंगल ये दोनों या अष्टमेश और शनि ये दोनों अस्त हों या पाप ग्रहों से युक्त या दृष्ट हों (वृ० पा०)।

,, २१–लग्नेश पाप ग्रह युक्त ६, ८, १२, भाव में हो तो अल्पायु या संतान हीन हो (वृ० पा०)।

,, २२–केन्द्र में पाप ग्रह हो उस पर शुभ ग्रह की दृष्टि न हो और लग्नेश निर्बल हो (वृ० पा०)।

,, २३–२, १२ भाव में पाप ग्रह हो उस पर शुभ ग्रह की दृष्टि न हो (वृ० पा०)।

,, २४–लग्नेश और अष्टमेश दोनों अस्त नीचादि स्थिति में हों और निर्बल हों (वृ० पा०)।

,, २५–दशमेश, अष्टमेश, लग्नेश इन तीनों में केवल एक बली हो तो अल्पायु हो (जा० पारि०)। इन तीनों में कोई बली न हो तो गतायु समझो।

,, २६–लग्नेश अष्टम में हो या अष्टमेश पापग्रह युक्त या दृष्ट होकर अस्तंगत या शत्रु गृही हो तो आयु रहित हो (जा० पारि०)।

,, २७–अस्तंगत व बलवान् पापग्रहों में दुःखी व अल्पायु जातक व उसकी स्त्री हो (शंभु०)।

,, २८–लग्नेश पापग्रह होकर निर्बल हो, पाप ग्रह लग्न में हो (जा० संग्र०)।

,, २९–नवम में सूर्य चन्द्रमा हो (शंभु०)।

,, ३०–लग्नेश सूर्य का शत्रु हो (स० चि०)।

,, ३१–अष्टम घर में क्रूर षष्ठ चन्द्र हो और अष्टमेश या शनि पाप युक्त या दृष्ट हो (स० चिंता०)।

,, ३२–लग्नेश बलहीन हो पाप ग्रह दृष्ट स्थान में हो और गुरु केन्द्र या त्रिकोण में हो (स० चि०)।

,, ३३–शनि ३ पाप ग्रहों से युक्त हो और शुक्र गुरु के योग से रहित हो तो आयु और पुण्य क्षीण हो (जा० सं०)।

,, ३४–अष्टमेश पाप ग्रह होकर लाभ स्थान में हो (जा० लं०)।

,, ३५–अष्टमेश पाप ग्रह होकर अष्टम में हो (जा० लं०)।

,, ३६–कुंडली में लग्न, लग्नेश, सूर्य व चन्द्र निर्बल हो पाप ग्रह से पीड़ित हो तो आयु क्षीण होती है (बा ल बोध ज्यो०)।

, ३७–अष्टमेश लग्न से सप्तम में हो।

३८–लग्नेश व्यय में हो, तृतीय भाव, तृतीयेश, अष्टम भाव या अष्टमेश पाप ग्रह से दृष्ट हो।

,, ३९–लग्न से चन्द्र ६-८-१२ भाव में हो और पाप ग्रह ८-१२ घर में हो।

,, ४०–६-८-१२ भाव में गुरु युक्त चन्द्र हो।

,, ४१–केन्द्र त्रिकोण में पाप ग्रह बलवान् हो लग्नेश बलहीन हो।

अल्पायु ४२–पाप ग्रह युक्त चतुर्थेश और पंचमेश दशम में हो।

,, ४३–अष्टमेश केतु युक्त लग्न में हो।

,, ४४–अष्टमेश सप्तमेश युक्त पंचम घर में हो राहु से दृष्ट हो।

,, ४५–कुण्डली में किसी की पूर्णायु या मध्यायु योग हो तो अल्पायु योग नष्ट हो जाता है (ज्यो० रहस्य)।

,, ४६–शुक्र गुरु दोनों घन स्थान में, पंचम में मंगल और शनि हो चन्द्रमा बलहीन हो तो अल्पायु हो। मतांतर—गुरु शुक्र लग्न में, पापग्रह युक्त मंगल पंचम में हो।

,, ४७–लग्न में लग्नेश और सूर्य चन्द्र हो किसी शुभाशुभ ग्रह से युक्त या दृष्ट हो।

,, ४८–लग्न में पाप ग्रह हो किसी राशि का चन्द्र पाप युक्त सप्तम में शुभ ग्रह की दृष्टि रहित हो।

,, ४९–लग्न से व्यय भाव में क्षीण चन्द्र हो, लग्न पापग्रह युक्त हो लग्न व अष्टम स्थान में कोई शुभ ग्रह न हो।

,, ५०–लग्न से चन्द्र ६-८ घर में पाप ग्रह से दृष्ट, शुभ ग्रह से अदृष्ट हो।

,, ५१–लग्न में क्षीण चन्द्र हो अष्टम घर व केन्द्र में पाप ग्रह हो।

,, ५२–चन्द्र ४, ७, ८ स्थान में कहीं हो पाप ग्रह उसके आगे और पीछे हो।

,, ५३–चंद्र कोई राशि में कहीं हो पर अंत नवांश में हो शुभ ग्रह की दृष्टि न हो, पाप ग्रह नवम पंचम स्थान में हो।

,, ५४–लग्न में चंद्र व सप्तम में पाप ग्रह हो।

,, ५५–लग्न में सूर्य और चंद्र हो पाप ग्रह ९-५ या ८ घर में हो शुभ ग्रह की उस पर दृष्टि न हो।

,, ५६–लग्न से बारहवें घर में शनि, नवम में सूर्य, लग्न में चंद्र, अष्टम में मंगल बलवान् हो उस पर गुरु की दृष्टि न हो।

,, ५७–क्षीण चंद्र पाप ग्रह युक्त हो १, ५, ७, ८, ९ में से किसी स्थान में शुभ ग्रह भी न हो और न शुभ ग्रह की दृष्टि हो।

,, ५८–चंद्र जिस राशि में हो उस राशि में कोई बलवान् अरिष्ट कारक ग्रह हो।

,, ५९–प्रातः व संध्या को किसी का जन्म हो उस समय जो लग्न हो उस लग्न में चंद्र हो व पाप ग्रह उस लग्न के अन्तिम नवांश में हो (प्रा० योग)

बाल अरिष्ट—जिस ग्रह की दशा में अर्थात् जन्मकाल में जो शेष दशा किसी ग्रह की हो उसके भीतर या अंत में मरे तो वह बाल अरिष्ट है।

(१) मंगल की राशि में गुरु अष्टम में हो सब पाप ग्रहों से दृष्ट हों शुभ ग्रहों की दृष्टि न हो तो अरिष्ट हो (जा०सं०)।

(२) षष्ठ स्थान में चन्द्र हो तो अरिष्ट करता है।

(३) सूय ग्रहण हो, सूर्य लग्न में हो तो शस्त्र लगकर अरिष्ट हो।

(४) पाप ग्रह शत्रु या नीच राशि में हो तो अरिष्ट करता है। धन रहित, सुख रहित बन्धन से संतप्त मरण करता है (स० चि०)।

(५) जन्म लग्न कर्क या वृश्चिक हो इसमें पाप ग्रह लग्न से सातवें भाव तक हों शुभ ग्रह सातवें घर से लग्न तक होवें तो अरिष्ट कारक है यह वज्रमुक्ति योग है (जा.भ.)।

(६) पाप ग्रह युक्त चन्द्र १, ७, ८, १२ घर में हो, केन्द्र शुभ ग्रह युक्त न हो, चन्द्र पर शुभ दृष्टि न हो तो बालारिष्ट होता है (जा० पारि०)।

(७) १२ वें भाव में सब ग्रह अरिष्ट कारक होते हैं सूर्य शुक्र चन्द्र और राहु से विशेष नेष्ट होते हैं। परन्तु इन चारों की दृष्टि अरिष्ट भंग करने वाली होती है (वृ.पा.)।

(८) किसी भी राशि में एक अंश में शनि मंगल, चन्द्रमा से केन्द्र में हो तो वह २ माता या दाई से पालित होने पर भी नहीं जीता (वृ० पा०)।

(९) चन्द्र को शनि विशेष तीसरी दृष्टि से देखें तो भयानक बाल अरिष्ट होता है (ज्यो० रहस्य०)।

(१०) लग्नेश, चन्द्र राशीश और लग्न-नवांशेश तीनों सूर्य के साथ हों।

(११) पाप ग्रह लग्न और अष्टम स्थान में हो, नीच या शत्रु गृही चन्द्र हो, गुरु केन्द्र में न हो।

(१२) मंगल लग्न में हो, सूर्य शनि एक दूसरे के साथ लग्न से सप्तम में हों।

(१३) लग्न से अष्टम में चन्द्र और सप्तम में मंगल हो, राहु नवम हो, शनि लग्न में हो तो भयानक बालारिष्ट हो।

(१४) लग्न, चन्द्र और लग्न से अष्टम स्थान पर पाप ग्रहों की दृष्टि हो (ज्यो० रह०) गुरु या शुक्र केन्द्र में हो, मंगल सूर्य शनि की दृष्टि हो तो बाल अरिष्ट नष्ट हो जाता है। (ज्यो० रह०)।

(१५) संध्या में जन्म हो, चन्द्र का होरा हो और राशि नवांश से अन्य भाग में जन्म हो (ज्यो० शा०)।

(१६) केन्द्र में चन्द्र हो और पाप ग्रह एक-एक कर के स्थित हों शुभ ग्रहों की दृष्टि न हो।

(१७) लग्न के उभय पार्श्व (२-१२ भाव में) और सप्तम के उभय पार्श्व (६-८ भाव में) यदि क्रूर ग्रह हो (ज्यो० शा०)।

(१८) १, ४, ७, ८, १० घर में क्रूर ग्रह हों, क्षीण चन्द्र लग्न में हो या चन्द्र ४, ७, ८ घर में हो और इसके पार्श्व राशियों में क्रूर ग्रह हो (ज्यो० शा०)।

(१९) क्षीण चन्द्र १, ५, ७, ८, ९, १२, स्थान में कहीं हो शुभ ग्रहों की दृष्टि न हो, लग्न में चन्द्र, ८ घर में मंगल, नवम में सूर्य, व्यय भाव में शनि हो और इनमें से किसी पर गुरु की दृष्टि न हो (ज्यो० शा०)

बाल मृत्यु

(१) लग्नेश तथा चंद्र २ पाप यहों से युक्त हो (स० चि०)। (२) जन्म समय चंद्रमा पर ग्रहण या परिवेष (मंडल) होवे तथा पाप दृष्टि हो। (३) पाप ग्रह से दृष्ट मंगल सप्तम या अष्टम स्थान में होवे। (४) पाप ग्रह ३-६ घर में शुभ ग्रह १२ वें घर में हो या चंद्रमा पाप युक्त ४-८ भाव में हो। (५) लग्न में सूर्य चंद्र व्यय स्थान में पाप ग्रह हो शुभ ग्रह की दृष्टि न हो (स० चि०)। (६) ६-८-१२ भाव में चंद्र हो, सूर्य के अतिरिक्त पाप ग्रह मंगल, शनि, राहु केतु से दृष्ट हो तो लग्न में गुरु के रहने पर भी बालक मर जाता है (जा०पारि०)। (७) गण्डान्त नक्षत्र में चंद्रमा हो पाप ग्रह युक्त या दृष्ट हो मृत्यु भाग में पाप दृष्ट हो। (जा० पारि०)। मृत्यु भाग —मेषादि क्रम से चंद्रमा के अंश इस प्रकार मृत्यु सूचक हैं।

राशि	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
चंद्र अंश ८	२५	२२	२२	२१	१	४	२३	१८	२०	२४	१०	

यहाँ अंश मृत्यु सूचक वर्ष भी बताते हैं जैसे मेष राशि का चंद्र ८° पर हो तो ८ वर्ष में मृत्यु सूचक है (जा० पारि०)।

मतान्तर—

नीचे बताये राशि के अंश में जन्म हो तो अशुभ है इनमें जन्मे बालक की मृत्यु हो जाती है। (जा.भ.)

राशि	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
अंश	८	९	२३	२२	५	१	४	२३	१८	२०	२१	१०

(८) क्षीण चंद्र लग्न में हो पाप ग्रह केन्द्र या अष्टम में हो (जा०पारि०)। (९) लग्नेश नीच राशि में हो या लग्न से अष्टम हो और शनि भी नीच में हो या सप्तम हो (जा० पारि०)। (१०) शनि सूर्य मंगल १२-८-९ भाव में हों उन पर शुभ ग्रह की दृष्टि न हो (वृ० पा०)। (११) क्षीण चंद्र लग्न में हो जिसके द्रेष्काण या सप्तम भाव में पाप ग्रह न हो (वृ० पा०)। (१२) सम्पूर्ण ग्रह अष्टम में हों तो मृत्युप्रद हैं यदि चंद्रमा हो तो विशेष कर मृत्युप्रद है (मान०)। (१३) यदि सूर्य चंद्र शनि तीनों पाप ग्रह युक्त हों तो मृत्यु हो। (जा०सं०)। (१४) सब केन्द्र भाव पाप ग्रह और चंद्रमा से युक्त हों (जा०सं०)। (१५) सप्तम और लग्न में पाप ग्रह हों चंद्रमा भी पाप युक्त हो और शुभ दृष्टि न हो (जा०सं०)। (१६) सप्तम और लग्न दोनों में ग्रहों का कर्तरी योग हो (जा० सं०)। (१७) पाप युक्त चंद्र १, ६, ८, १२ भाव में कहीं हो शुभ ग्रह की दृष्टि न हो और केन्द्र में शुभ ग्रह हो। (जा० सं०)। (१८) लग्न में चंद्र, अष्टम में मंगल, नवम में सूर्य, व्यय में शनि हों और गुरु की दृष्टि न हो (जा० सं०)। (१९) पाप युक्त क्षीण चंद्र शुभ ग्रह की दृष्टि से हीन १, ५, ७, ८, ९, १२ भाव में कहीं हो (जा० सं०)। (२०) लग्न में सूर्य और चंद्र हो शुभ ग्रह की दृष्टि न हो या बलवान् ग्रह त्रिकोण और अष्टम में हो (जा० सं०)। (२१) जो राशि संधि में उत्पन्न हुए हों

वे शीघ्र मरते हैं जबकि पाप ग्रह उनको देखते हों। राशि के ३०° होते हैं किसी एक के मान लो ३° है और आगे की राशि के आरंभ के ३° मिला कर संधि हो जाती है। इनमें अंतिम नवांश और पहला नवांश मृत्यु और भय करते हैं जब पाप ग्रह युक्त हो दृष्ट हो तो मृत्यु करते हैं। यदि अपने अच्छे कर्म से या माता पिता के शुभ कर्मों से बच जावें तो धन वाहन युक्त राजा होगा (स० चि०)। (२२) लग्न में शनि, अष्टम में चंद्र,तृतीय में गुरु हो (वृ० पारा०)। (२३) षष्ठ में पाप गृही पाप ग्रह युक्त चंद्र हो (जा० सं०)। (२४) लग्न में सब पाप ग्रह, व्यय भाव में गुरु, छठे घर में बुध हो। (२५) पाप ग्रह अष्टम भाव में शुभ ग्रह के नवांश में हो पाप ग्रह से दृष्ट हो (ल० चं०)। (२६) अष्टम में राहु केन्द्र में चंद्र हो (ल० चं०)। (२८) लग्न में क्रूर ग्रह और मंगल के घर में गुरु हो (ल० चं०)। (२९) सप्तम में या चतुर्थ में २ पाप ग्रहों के बीच चंद्रमा हो (ल० चं०)। (३०) अष्टम में पाप ग्रहों से दृष्ट शनि हो (ल० चं०)। (३१) लग्न में सूर्य, पंचम में चंद्र, अष्टम में पाप ग्रह हो (ल० चं०)। (३२) त्रिकोण केन्द्र में पाप ग्रह ६-८-१२ घर में शुभ ग्रह हो तो सूर्योदय में जन्मा बालक प्राण त्यागे (ल० चं०)। (३३) १, ६, ७, ८ भाव में शनि युक्त मंगल हो शुभ ग्रह को दृष्टि न हो (ल० चं०)।

(३४) व्यय में पाप ग्रह हो जो लग्न में आने को हो और षष्ठ में पाप ग्रह हो वह सप्तम में जाने को हो। (वृ० जा०) (३५) दूसरे आठवें भाव में पाप ग्रह वक्री हो। (वृ० जा०) (३६) क्षीण चन्द्र व्यय में हो, लग्न और अष्टम में पाप ग्रह हो किसी केन्द्र में शुभ ग्रह न हो। (वृ० जा०) (३७) पाप युक्त क्षीण चन्द्र १, ७, ८ १२ भाव में हो चन्द्र पर शुभ ग्रह की दृष्टि न हो और केन्द्र में शुभ ग्रह न हों। (वृ० जा०) (३८) लग्न में क्षीण चन्द्रमा हो अष्टम और केन्द्र में पाप ग्रह हो (वृ० जा०) (३९) पाप ग्रहों के बीच चन्द्र ४, ७ या ८ स्थान में हो। (४०) लग्न में सूर्य चन्द्र, त्रिकोण में पाप ग्रह हो वा बलवान् शुभ ग्रह से युक्त या दृष्ट न हो (वृ.जा.) (४१) भावसंधि, तिथिसंधि और राशि संधि इनमें एक दो या तीन एक साथ पड़ जावे उस समय जन्म हो (स० चि०) परन्तु शुक्रवार का दिन हो तो मृत्यु नहीं होती ऐसा नन्दीश्वर का मत है। (४२) राशि संधि में (गंडांत) में जन्म हो और ६-८-१२ भाव में पाप युक्त चन्द्र हो। (स० चि०) (४३) सूर्य सप्तम में, चन्द्रमा लग्न में पाप ग्रह युक्त हो। (जैमि०) (४४) सप्तम में शुक्र शनि और मंगल हो। (जैमि०) (४५) मंगल सप्तम या अष्टम घर में पाप ग्रह से दृष्ट हो। (जैमि०) (४६) चन्द्र सूर्य लग्न में हो सब पाप ग्रह व्यय भाव में हों जिस पर कोई शुभ दृष्टि न हो (स० चि०)। (४७) २, ६, ८, १२ भाव में पाप ग्रह हो। (वृ० पारा०) (४८) पाप ग्रहों के बीच लग्न न हो। (वृ० पा०) (४९) पाप युक्त चन्द्र १, ७, ९ भाव में हो शुभ ग्रह का योग या दृष्टि न हो। (वृ० पारा०) (५०) संध्या समय जन्म हो (अर्थात् सूर्य बिम्ब अस्त होने के १॥ घड़ी पहिले और

अस्त के बाद १॥ घड़ी यह ३ घड़ी संध्या का समय है) लग्न में चन्द्र का होरा हो और कोई भी पाप ग्रह राशि के अंतिम नवांश में हो (वृ० जा०) । (५१) लग्नेश या चन्द्र का शत्रु पाप ग्रह लग्न में हो परन्तु वह पाप ग्रह मित्र हो तो उसकी मृत्यु नहीं होगी । लग्न में शुभ ग्रह हो तो भी भय नहीं होगा (स० चि०) । (५२) लग्न निगड़ पक्षी पाश या सर्प द्रेष्काण में हो पाप ग्रह युक्त हो शुभ ग्रह या लग्नेश की दृष्टि न हो (स० चि०) ।

मिथुन का दूसरा	कर्क का तीसरा	मकर का पहिला
पक्षी	सर्प	निगड़ द्रेष्काण है ।

(५३) लग्नेश आपोक्लिम में हो, ६, ८ घर में पाप ग्रह हो जिन पर शुभ दृष्टि न हो (स० चि०) । (५४) चन्द्र दो पाप ग्रहों के बीच में १, ७, ८, १२ भाव में कहीं हो (वृ०पा०) । (५५) चतुर्थ में सूर्य हो शनि से दृष्ट हो कोई शुभ ग्रह की दृष्टि न हो (जा० भ०) । (५६) लग्न से ९ या १० भाव में मंगल सहित चन्द्र हो और पाप ग्रह से दृष्ट हो (स. चि.) । (५७) सूर्य चन्द्र व्ययस्थान में और व्ययेश लग्न में हो (स. चि.) ।

न जिये—(१) लग्न में सूर्य, पंचम घर में चन्द्र, सब पाप ग्रह अष्टम में हों (मा०) । (२) लग्न से सप्तम में शनि, अष्टम में चन्द्र हो (मान०) । (३) लग्न या अष्टम में राहु हो चन्द्र से दृष्ट हो । (४) लग्न में सूर्य पंचम में चन्द्र हो या कोई पाप ग्रह लग्न या अष्टम में हो तो बालक नहीं जिये । (५) गुरु बुध शुक्र इन तीनोंमें से कोई ग्रह नीच के राहु युक्त हों उन्हें चन्द्र न देखता हो । (६) ६, ८ घर में चन्द्र हो१२ वें घर में सूर्य मंगल हो । (७) ६ या ८ घर में केतु और केन्द्र में चन्द्र हो (मान०) ।

जीना कठिन हो

(१) लग्न से दूसरे घर में स्वगृही और क्रूर ग्रह हो ४, १० घर में भी क्रूर ग्रह हो (मान०) । (२) लग्न में स्वगृही क्रूर ग्रह हो ४ घर में भी क्रूर ग्रह हो तो जीना कठिन हो । जीता रहे तो माता को दुःख देवे मातृ पक्ष का क्षय करे । (३) क्रूर ग्रह के घर में सूर्य हो, कन्या राशि में भी क्रूर ग्रह हो क्रूर क्षेत्र में राहु हो तो जीना कठिन हो (मान०) ।

शीघ्र मरने का अरिष्ट योग

शीघ्र मरण १—शनि मंगल और सूर्य एकत्र अष्टम में या षष्ठ में हों शुभ ग्रह युक्त दृष्ट न हों (जा० पारि०) । २—सप्तम या अष्टम में चन्द्र पाप ग्रह युक्त हो शुभ ग्रह की दृष्टि न हो केन्द्र में भी शुभ ग्रह न हो (प्रा० यो०) । यदि शुभ ग्रह देखते हों तो ८ वर्ष में मृत्यु हो (जा० पारि०) । ३—चन्द्र षष्ठ या अष्टम स्थान में हो उसे पाप ग्रह देखते हों (जा० सं०) । ४—अष्टम स्थान व केन्द्र में पाप ग्रह हो लग्न में क्षीण चन्द्र हो (प्रा० यो०) । ५—अष्टम में मंगल के घर का गुरु हो उस पर सूर्य चन्द्र व शनि की दृष्टि हो केवल शुक्र न देखता हो (प्रा० यो०) । ६—६, ८, १२ स्थान में शुभ ग्रह हो त्रिकोण या केन्द्र में पाप ग्रह हो कर्क लग्न हो (प्रा० यो०) ।

कर्क लग्न न भी हो तो यह योग होता है (ल० चं०) । ७—४, ७, ८ वें स्थान में ग्रह हो व चन्द्र पाप ग्रह के बीच हो (जा० भ०) । ८—दशम में सूर्य मंगल के घर या शनि के घर में हो उसे पाप ग्रह देखते हों (प्रा० यो०) । ९—दशम या लग्न में वृश्चिक राशि हो पाप ग्रह पूर्व षटकांत में, शुभ ग्रह उत्तर षटकांत में हो यह वज्र दृष्टि योग हो जाता है । (प्रा० यो०) । १०—चतुर्थ स्थान, चन्द्र व सूर्य युक्त या दृष्ट हो शुभ ग्रह युक्त दृष्ट न हो तो जन्मते ही मरे । (प्रा० यो०) । ११—प्रातः या सायं-काल की संध्या में जन्म हो उस राशि के अन्त्य नवांश में पाप ग्रह हो । लग्न में चन्द्र का होरा हो चारों केन्द्रों में पाप ग्रह व चन्द्र हो तो शीघ्र अरिष्ट हो (प्रा० यो०) । १२—क्षीण चन्द्र व्यय भाव में हो पाप ग्रह लग्न और अष्टम में हो केन्द्र में शुभ ग्रह न हो (जा० पारि०) । १३—चंद्र ६, ८ घर में हो ४, ६, ८, १२ घर में राहु हो तो तत्काल मृत्यु हो ईश्वर पूजन आदि से १ वर्ष की आयु हो जावे (जा० सं०) । १४—जिस राशि पर केतु (शिखी) का उदय हो उसी राशि में जन्म हो जन्म के पहिले या पीछे निर्घात शब्द हो या प्रचंड वायु चले या वज्रपात हो या जन्म समय रौद्र सार्प मुहुर्त हो । (जा० भ०) । १५—त्रिकोण में पाप ग्रह ६, ८ घर में शुभ ग्रह हो लग्न में नीच का अष्टमेश हो (वृ० पा०) । १६—अष्टमेश और अष्टम भाव पाप ग्रह युक्त और व्यय भाव में पाप ग्रह हो तो जन्मते ही मरे (वृ० पा०) । १७—शनि सप्तम या लग्न में हो, जलचर राशि या वृश्चिक राशि में चन्द्र हो, शुभ ग्रह केन्द्र में हो (जा०पारि०) । १८—लग्न से चतुर्थ में राहु हो, ६, ८ घर में चन्द्र हो (मान०) । १९—लग्न से ४ या ९ घर में सूर्य, अष्टम में गुरु, १२ वें चन्द्र हो (मान०) । २०—लग्न से बारहवें राहु शनि बुध हो, गुरु लग्न या पंचम में हो (मान०) । २१—लग्न से अष्टम में राहु और केन्द्र में चन्द्र हो (मान०) । २२—लग्न में क्रूर ग्रह हो ६,८ घर में चन्द्र हो (मान०) । २३—सूर्य शनि, शनि राहु, मंगल, गुरु लग्न में या पंचम में हो(मान०) । २४—लग्न में गुरु, अष्टम में शनि और उसी घर में अन्य पाप ग्रह भी हो (मान०) । २५—गुरु वक्री होकर शनि के घर में हो, सूर्य बुध सप्तम हो तो वांछित मृत्यु पावे (मान०) । २६—मंगल व शनि लग्न में, सूर्य सप्तम में हो (प्रा० यो०) (जा०भ०) । २७—मंगल शनि चन्द्र लग्न में, सूर्य सप्तम हो (प्रा० यो०) (जा० भ०) । २८—लग्न में सूर्य चन्द्र, केन्द्र त्रिकोण में पाप ग्रह हो शुभ ग्रह की दृष्टि न हो । २९—चन्द्रमा पाप युक्त हो राहु से दृष्ट हो (प्रा० यो०) । ३०—अष्टमेश पाप युक्त ६ या १२ भाव में या अष्टमेश और लग्नेश ६ या १२ भाव में हो (जा० सं०) । ३१—लग्न से ६, ८, १२ घर में चन्द्र हो पाप ग्रहों की दृष्टि हो (वृ० पा०) । ३२—लग्न में सूर्य या चन्द्र हो त्रिकोण या अष्टम में बलवान् पाप ग्रह हो शुभ युक्त या दृष्ट न हो (जा० पारि०) । ३३—लग्न में चन्द्रमा हो, अष्टम में मंगल, बारहवें शनि और नवम सूर्य हो इनको बलवान् गुरु न देखता हो तो शीघ्र मृत्यु हो । (जा० पारि०) । गुरु किसी को देखता हो किसी का न देखता हो तो अरिष्ट मात्र हो । बलहीन गुरु देखे तो दोष नहीं मिटता । यदि गुरु

पंचम में हो और सब १, ८, १२, ९ घर में हों तो देख सवेगा तब दोष दूर हो जायगा। ३४—चन्द्र राशि के अन्त नवांशक में हो, शुभ ग्रह से दृष्ट न हो, पाप ग्रह त्रिकोण में हो (वृ० जा०)। ३५—लग्न और सप्तम में पाप ग्रह हो, चन्द्र पाप युक्त हो चन्द्र पर शुभ ग्रह की दृष्टि न हो (वृ० जा०)। ३६—चन्द्रमा लग्न में, ६,८, ११ घर में शुभ ग्रहत्रिकोण में पाप ग्रह हो (जा० भ०)। ३७–लग्न में सूर्य, सप्तम में मंगल व शनि, अन्य स्थान में चंद्र हो (जा० भ०)। ३८–क्षीण चन्द्र लग्न में, पाप ग्रह ८ घर या केन्द्र में हो, सप्तमेश पाप ग्रह युक्त हो (ल० चं०)। ३९–तृतीयेश ३, १, ५ या २ घर में हो (ल० च०)। ४०–दशम में सूर्य १, ८ या ४ राशि का पाप ग्रहों से दृष्ट हो (ल० च०)। ४१–जन्म में चन्द्र कोई भाग्य सूचक अंश में हो साथ ही केन्द्र या अष्टम में हो तो शीघ्र मृत्यु हो।

राशि	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२(फल०)
भाग्य सूचक अंश	२६	१२	१३	२५	२४	११	२६	१४	१३	२५	५	१२

इनमें से कोई बुरे योग, दिन मृत्यु, दिन रोग, विष घटी में जन्म हो तो शीघ्र मृत्यु हो

१—दिन मृत्यु—धनिष्ठा और हस्त का पहिला चरण, विशाखा और आर्द्रा का दूसरा चरण, उत्तर भाद्र० और आश्लेषा का तीसरा चरण, भरणी का चौथा चरण।

२—दिन रोग—आश्लेषा और उत्तर भाद्र० का पहिला चरण, भरणी और मूल का दूसरा चरण, उत्तर फाल० और श्रवण का तीसरा चरण, स्वाती और मृगशिर का चौथा चरण ये बुरे योग यदि दिन में पड़ें तो बुरा प्रभाव डालते हैं। यदि ये दोनों योग रात में पड़ें तो दोष दूर हो जाता है।

३ -विष घटी—पहिले बता चुके हैं (फल दी०)।

४२—सूर्य दशम में मंगल या चन्द्र के घर का हो जिस पर पाप ग्रहों की दृष्टि हो शुभ युत या दृष्ट न हो (स० चि०)। ४३—लग्नेश पाप युक्त सप्तम में हो (जा० भ०)। ४४—राहु केन्द्र में पाप युक्त हो शुभ युक्त या दृष्ट न हो (स० चि०)। ४५—शनि लग्न या त्रिकोण में हो ६-८-१२ भाव या केन्द्र में पाप ग्रह हो (स० चि०)। ४६—क्षीण चन्द्र लग्न में पाप दृष्ट हो (स० चि०)। ४७—क्षीण चन्द्र पाप युक्त १, ७,८ भाव में हो (स० चि०)। ४८—लग्न चन्द्र या सूर्य बलवान् हो परन्तु पाप ग्रह केन्द्रों में हो अष्टम या त्रिकोण में सूर्य शुक्र मंगल एक साथ हो (स० चि०)। ४९—मंगलवार को मंगल ही लग्न में हो, क्षीण चन्द्र हो लग्न व केन्द्रों से बाहर लग्नेश हो तो उसकी मृत्यु यह मंगल शीघ्र ही देता है। ऐसा ही शनि भी करता है (स० चि०)। ५०—सप्तम में मंगल और शनि हो शुभ ग्रहों से दृष्ट न हो (ज्यो० शा०)। ५१—लग्न में मंगल हो ६ या ८ में शनि हो (ज्यो० शा०)। ५२—सब पाप ग्रह ८ भाव या केन्द्र में हों (फल०)। ५३—सब पाप ग्रह १ या ८ घर में हो (फल०)। ५४—सब पाप ग्रह १ या ७ घर में हो (फल०)। ५५—पाप युक्त क्षीण चन्द्र ६,८,१२ भाव में हो

(फल०) । ५६—पाप ग्रह ७ या ८ घर में हो (फल०) । ५७—केन्द्र स्थान को कोई शुभ ग्रह न देखे (फल०) । ५८—क्षीण चन्द्र लग्न में क्रूर ग्रह सप्तम भाव के पहिले द्रेष्काण में हो (स० चि०) । ५९—लग्नेश सूर्य युक्त नीच में या अष्टम में हो तो वह शीघ्र मरे या जीता रहे तो मरे के बराबर रहे (स० चि०) । ६० – राहु सिवाय मेष और वृष राशि के लग्न में हो (स० चि०) । ६१—पाप ग्रह लग्न से २, १२ घर में या ७, ८ और १२ घर में हो (स० चि०) । ६२—गुरु के नवांश में शनि हो राहु से दृष्ट हो लग्नेश पर शुभ दृष्टि न हो (जा० पारि०) । ६३—चन्द्र कुम्भ के २० वें भाग (अंश) में हो या वृश्चिक या सिंह के २१ वें भाग (अंश) में हो (स० चि०) । ६४— अष्टमेश पाप युक्त हो ८, १२ स्थानों में भी पाप ग्रह हो (जैमि०) । ६५— केन्द्र त्रिकोण में पाप ग्रह ६, ८ में शुभ ग्रह लग्नेश और अष्टमेश नीच का हो (जैमि०) । ६६ —सप्तम में आयुध द्रेष्काण का पाप ग्रह हो और चन्द्रमा लग्न में हो (स० चि०) ।

आयुध द्रेष्काण	मेष का	मिथुन का	सिंह का	तुला का	कुम्भ का
	पहिला	दूसरा	पहिला	दूसरा	पहिला

मृत्यु समय के कुछ योग

कुछ दिनों में मरे (१) जन्म में क्षीण चन्द्रमा पाप युक्त हो उस पर राहु की दृष्टि हो तो थोड़े दिनों में मरे (जा० भ०) (स० चि०) । (२) लग्नेश, अंशेश, राशीश जिसके अस्तंगत हों (स० चि०) ।

७ दिन में मृत्यु हो (३)१, ७, १२, २ भाव में क्रूर ग्रह चतुर्थ में राहु हो (मान०) ।

७ दिन या ७ मास में मृत्यु (४) चन्द्रमा, सप्तम या नवम में शनि राहु और मंगल से युक्त हो (ल० च०) ।

७ दिन में मृत्यु (५) कृष्ण पक्ष में दिन को जन्म हो सप्तम में गुरु शुक्र हो और चन्द्र राहु व शनि की दृष्टि हो ।

८-१२ दिन में मृत्यु (६) लग्न से २-८-१२ भाव में क्रूर हो तो आठवें या १२वें दिन विष्ठा रुकने से मृत्यु हो (ल० चं०) ।

१० दिन में मृत्यु (७) लग्न या अष्टम में चन्द्र और राहु हो (ल० च०) । (८) चन्द्र से सप्तम सूर्य मंगल हो या चन्द्र से सप्तम सूर्य और लग्न में मंगल हो (स० चि०) । (९) राहु लग्न या अष्टम में हो चन्द्र से दृष्ट हो (मान०) ।

११ दिन में मृत्यु (१०) मकर या कुम्भ में गुरु अष्टम घर में हो पाप ग्रह की दृष्टि लग्न पर हो (जा० भ०) । (११) लग्न में राहु लग्न या सप्तम में सूर्य मंगल के साथ हो।

१६ दिन में मृत्यु (१२) लग्न में शनि हो पाप ग्रह से दृष्ट हो (जा० भ०) ।

८ दिन ८ मास या ८ वर्ष में मृत्यु (१३) ६-८-१२-२ घर में शनि शत्रु क्षेत्री हो (मान०) ।

२० दिन में मृत्यु (१४) चतुर्थ में राहु ६-८ घर में चन्द्र हो (मान०) ।

१ मास में मृत्यु (१५) लग्न से १२ वें घर में चन्द्र अष्टम में पाप ग्रह हो (मान०)। (१६) लग्न से नवम में सूर्य, अष्टम में शनि, ११ वें घर में शुक्र हो। (१७) लग्न से ६-८ घर में चन्द्र, सप्तम सूर्य हो तो माता-पिता का धन नाश कर एक माह तक जिये (मान.)। (१८) दशम में सूर्य या मंगल शत्रु क्षेत्री हो तो आयु १ मास (मान०)। (१९) लग्न में सूर्य, सप्तम में चन्द्र, अष्टम में पाप ग्रह हो (मान०)।

आयु १ मास-(२०) लग्न में मंगल १२ वें में गुरु, छठे घर में शुक्र हो (मान०)। (२१) लग्न में क्षीण चन्द्र क्रूर ग्रह से दृष्ट हो २ या १२ घर में मंगल हो। (२२) ६-८ घर या केन्द्र में मंगल के घर का सूर्य शनि चन्द्र युक्त हो (प्रा० यो०)। (२३) लग्नेश पाप ग्रह युक्त अष्टम में हो (प्रा० यो०)। (२४) ६-८ भाव में शुभ ग्रह पाप ग्रह से दृष्ट हो (जा० पारि०)। (२५) अन्य मत ६-८ भाव में शुभ ग्रह हो वक्री पाप ग्रह से दृष्ट हो शुभ ग्रह की दृष्टि न हो (प्रा० यो०) (जा० भ०)। (२६) लग्न या नवम में सूर्य, सप्तम में शनि, ११ वें गुरु शुक्र हो (वृ० पा०)। (२७) अष्टमेश अष्टम में और चन्द्रमा पाप युक्त हो उस पर शुभ दृष्टि न हो (वृ० पा०) (२८) सब पाप ग्रह ६-८ भाव में हों (जा० सं०)। (२९) गुरु नीच में हो या मंगल के घर का हो और संधित्रय (१) लग्न संधि (२) नक्षत्र संधि (३) दशा संधि में जन्म हो (स० चि०)। (३०) अष्टम में सूर्य मंगल शनि हो (स० चि०)। (३१) लग्न से ६ घर में शनि मंगल १२ स्थान में बुध, लग्न में चन्द्र हो। (३२) लग्न से नवम सूर्य, अष्टम शनि और ११ वें शुक्र हो (ल० चं०)। (३३) ६-८ घर में बुध गुरु या शुक्र हो जिस पर बलवान् पाप ग्रह की दृष्टि हो (वृ० आ०)। (३४) लग्नेश पाप युक्त व पराजित ग्रह युद्ध में पाप ग्रह से हारा हो (वृ० जा०) (३५) लग्न में शनि पाप ग्रह युक्त हो (ल०च०)। (३६) ६-८ घर में शुभ ग्रह बली पाप ग्रह से दृष्ट हो लग्नेश सप्तम में हो और पाप ग्रह से पराजित हो (जा० पारि०)। (३७) ६-८ घर में चन्द्र हो क्रूर ग्रहों से दृष्ट हो (ज्यो० शा०)। (३८) लग्नेश सप्तम में हो और पाप ग्रहों से युद्ध में पराजित हो (ज्यो० शा०)।

आयु २ मास—(३९) जिसके लग्न में या जन्म नक्षत्र में केतु का उदय हो उस लग्न या नक्षत्र में जन्म हो तो २ महीने में मृत्यु हो (स० चि०)। लग्न में केतु हो तो दो महीने में मृत्यु (प्रा० यो०)। केवल लग्न में केतु होने से मृत्यु नहीं होती अष्टम में सूर्य मंगल शनि हो और लग्न में केतु हो तो २ मास में मृत्यु होगी। जिसका जन्म धूम्र केतु तारे के उदय नक्षत्र में हो वह २ मास में मरता है (जा० भ०)।

२ या ६ मास में मृत्यु—(४०) आपोक्लिम (३-६-९-१२) भावों में सभी ग्रह बलहीन हों तो २ या ६ मास में मृत्यु हो (स० चि०) (वि० प्रा०)।

२-६-१२ मास आयु—(४१) लग्न से १२, २, ८, ६ स्थान में पाप ग्रह हों शुभ ग्रहों से युक्त न हों तो २, ६ या १२ मास में मृत्यु हो।

२॥ मास में मृत्यु—(४२) चन्द्र के नवांश में सप्तमस्थ मंगल हो शुभ दृष्टि रहित हो तो ७७ वें नक्षत्र २॥ मास में मृत्यु हो (जा० पारि०)।

(४३) शनि मंगल और सूर्य पञ्चम में हो (जा० पारि०)।

३ पक्ष या ३ मास में (४४) जिसका जन्म ग्रहण व परिवेश (शाड़ल) के समय हो लग्न में पाप ग्रह हो लग्नेश बलहीन हो तो ३ पक्ष या ३ मास में मृत्यु हो (स० चि०)।

३ मास में मृत्यु (४५) नवम में सूर्य, सप्तम शनि, लाभ में गुरु शुक्र हो।

(४६) षष्ठ में चन्द्र तृतीय में शनि हो लग्न में शुभ ग्रह की राशि हो।

४ मास आयु (४७) लग्नेश अष्टम में हो पाप ग्रह से दृष्ट हो (जा० भ०)।

(४८) लग्नेश लग्न में सब पाप ग्रह अदृश्यार्द्ध १ से ३ भाव तक हों (स०चि०)।

(४९) लग्नेश मंगल लग्न में हो सब पाप ग्रहों से दृष्ट हो (स० चि०)। परन्तु मंगल स्वक्षेत्री उच्च या मूल त्रि० का हो तो आयु कुछ अधिक होगी।

५ मास आयु (५०) लग्न में शनि सूर्य शुक्र हो १२ वां गुरु हो।

६ या ८ मास आयु (५१) पाप ग्रह २, १२ या ६, ८ या ८, ९ या ६, १२ भाव में हो तो ६ या ८ मास में मृत्यु हो (जा० भ०)।

८ या १२ मास आयु (५२) ६ या ८ भाव में चन्द्र पाप ग्रहों से दृष्ट हो तो शीघ्र मृत्यु होती है यदि ८ भाव को शुभ ग्रह देखे तो ६ महीने या वर्ष भर में मृत्यु हो (ल० च०)।

८ मास में मृत्यु (५३)–लग्न में मंगल, चतुर्थ में राहु, बारहवें शनि हो (मान०)।

(५४) पाप ग्रह युक्त लग्नेश जन्म राशि पति सहित सप्तम भाव में हो पाप ग्रह से दृष्ट हो (जा० सं०)।

९ मास में मृत्यु (५५) लग्न में पाप युक्त शनि हो तो ९ मास में मृत्यु हो।

१ वर्ष आयु – (५६) ६ या ८ घर में एक भी पाप ग्रह हो जिस पर पाप ग्रह की दृष्टि हो तो १ वर्ष में मृत्यु हो (जा०भ०)। (५७) लग्न में शनि हो और पाप युक्त दृष्ट न हो (जा० भ०) तो १ वर्ष आयु। पाप युक्त दृष्ट से ९ मास आयु। (५८) अष्टम में चन्द्र चौथे में राहु केन्द्र में पाप ग्रह हो (ल० चं०)। (५९) एक भी पाप ग्रह अष्टम में हो पाप ग्रहों से दृष्ट हो शत्रु क्षेत्री हो (ल० चं०)। (६०) ६ या ८ घर में मंगल सूर्य शनि हो (ल० चं०)। (६१) चंद्र से केन्द्र में पाप ग्रह हों शुभ ग्रह न हों (स० चि०)। (६२) अष्टम में सूर्य मंगल और शनि शत्रु क्षेत्री हों (मान०)। (६३) लग्न में चंद्र हो बिना शुभ योग के पाप ग्रह केन्द्र में हों (सर्व चि०)। (६४) लग्न में बलवान् सूर्य या चंद्र हो पाप ग्रह अष्टम या केन्द्र या कोण में हो (स० चि०)। (६५) सूर्य चन्द्र शुक्र लग्न में हो पाप ग्रह अष्टम में या केन्द्र कोण में हो (स० चि०)। (६६) जन्म राशि से अष्टम में सूर्य हो उस पर शुक्र की दृष्टि हो (प्रा० यो०)। (६७) शनि और मंगल लग्न में, तीसरे घर में राहु हो (मान०)। (६८) लग्न से सप्तम में शनि, बारहवें भाव में गुरु शुक्र और राहु एकत्र हो (मान०)। (६९) क्षीण चंद्र पाप युक्त १, ५, ७, ८, ९ भाव में हो शुभ ग्रह से दृष्ट न हो (प्रा० यो०)।

१। वर्ष आयु (७०) अदृश्य भाग में पाप ग्रह दृश्य भाग में शुभ ग्रह हो लग्न में राहु हो (प्रा० यो०)।

२ वर्ष आयु—(७१) चंद्र शनि युक्त हो, सूर्य चंद्र शुक्र केन्द्र में हों, शुभ ग्रहों से भी भावित क्यों न हो २ वर्ष में मृत्यु हो (मान०)। (७२) वक्री शनि मंगल के घर का होकर केन्द्र या छटे आठवें घर में हो, बली मंगल उसे देखता हो (मान०) (स० चि०)। (७३) बुध चंद्र केन्द्र में हो अस्तंगत हो उसे मंगल शनि देखते हों (जा० म०) (प्रा० यो०)। (७४) ६-८ के स्वामी केन्द्र में हों, वक्री शनि मंगल के घर का हो और बलवान् मंगल की दृष्टि हो (स० चि०)। (७५) वक्री शनि मंगल के स्थान में या केन्द्र या ६-८ घर में हो बली मंगल में दृष्टि हो (ल० चं०)।

अन्यमत— वक्री शनि मंगल के घर मेष या वृश्चिक का हो चंद्र १, ४, ७, १० या ६-८ भाव में हो बलवान् मंगल की दृष्टि हो।

३ वर्ष आयु—(७६) लग्नेश से चंद्रमा अष्टम हो कृष्ण पक्ष का जन्म हो सब पाप ग्रह उस चंद्र को देखते हों शुभ ग्रह की दृष्टि न हो तो ३ वर्ष में मृत्यु हो (स० चि०)। (७७) गुरु लग्न से १२ वें घर या केन्द्र में पाप ग्रह युक्त हो लग्नेश ३-६-९ घर में कहीं हो (जा० भ०)। (७८) कर्क लग्न में मंगल और चन्द्रमा हों केन्द्र व अष्टम भाव में कोई ग्रह न हो (जा० लं०)। (७९) गुरु अष्टम में मंगल के घर का हो और सूर्य चन्द्र मंगल शनि की दृष्टि हो शुक्र की दृष्टि न हो (स० चि०)। मेष और कन्या लग्न में ये योग संभव हैं। (८०) लग्न में शनि, सप्तम सूर्य या अष्टम में मंगल हो (स० चि०)। सूर्य और मङ्गल तीसरे घर में हो या पाप राशियों में हो जिन पर पाप दृष्टि हो तो बीमार रहे कठिनता से ३ वर्ष जिये (स० चि०)। (८२) मङ्गल का घर ६-८ भाव या कहीं केन्द्र में हो उस पर शनि की दृष्टि हो।

४ वर्ष आयु—(८३) ६-८ घर में चंद्र शुभ-और अशुभ ग्रह से दृष्ट हो (मान०) (जा० सं०)। (८४) शत्रु क्षेत्री बुध लग्न या ६ घर में हो (मान०)। (८५) शत्रु क्षेत्री बुध ६ या ८ घर में हो (मान०)। (८६) कर्क का बुध ६-८ घर में हो उस पर चंद्र की दृष्टि हो (जा० पारि०)। (८७) मङ्गल केन्द्र में अस्तंगत हो शनि युक्त या दृष्ट हो (स० चि०)। (८८) लग्न से ६ या ८ घर में बुध हो क्रूर ग्रह से दृष्ट हो (ल० चं०)। (८९) गंडांत में जन्म हो ६,८,१२ भाव में पाप युक्त चंद्र हो उसे शुभ और पाप ग्रह दोनों देखें (स.चि.)। (९०) लग्न में चन्द्र सप्तम राहु हो। (९१) १,६,८ भाव में बुध हो।

५ वर्ष आयु-(९२) लग्नेश अष्टम में अष्टमेश लग्न में हो (जा० लं०)। (९३) सूर्य चन्द्र बुध गुरु एक भाव में पड़े या चन्द्र मंगल शुक्र शनि एक भाव में पड़े या सूर्य चन्द्र मंगल शनि एक भाव में हो (जा० भ०)। (९४) सूर्य चन्द्र मंगल गुरु या चंद्र मंगल गुरु शनि या सूर्य चन्द्र मंगल शनि एक भाव में एकत्र हो (स० चि०) (जा० पारि०)। (९५) राहु लग्न में पाप ग्रह से युक्त या दृष्ट हो सब शुभ ग्रह दृश्य चक्र में हों सब पाप ग्रह अदृश्य चक्र में हों (स० चि०)।

६ वर्ष आयु–(९६) सिंह या कर्क का शुक्र ६, ८, १२ भाव में पाप दृष्ट हो शुभ दृष्ट न हो (जा० सं०)। (९७) चंद्र के नवांश में शनि हो जिस पर चंद्र की दृष्टि हो और लग्नेश पर चंद्र की दृष्टि हो (जा० पारि०)। (९८) लग्न से ६, ८ या २, १२ घर में शत्रु क्षेत्री सूर्य हो (मान०)। (९९) लग्न में सूर्य शनि, सप्तम में मंगल और क्षीण चंद्र हो (प्रा० यो०)।

६ या ८ वर्ष में मृत्यु–(१००) मंगल के क्षेत्र में गुरु हो ६, ८ घर में चंद्र हो तो छठे या आठवें वर्ष मृत्यु हो (मान०)।

७ वर्ष में मृत्यु (१०१) लग्न और सप्तम में पाप ग्रह हो लग्नेश को पाप ग्रह देखे चन्द्रमा लग्न में हो (जा० सं०)। (१०२) लग्न में पाश, पक्षी या शृंखला संज्ञक द्रेष्काण हो वह पाप ग्रह युक्त हो (जा० सं०)। (१०३) लग्न में निगड़ या अहिघर पाश द्रेष्काण क्रूर ग्रह से युक्त हों और अपने स्वामी से दृष्ट न हो। द्रेष्काण भुजग कर्क का दूसरा, मीन का तीसरा, वृश्चिक का पहिला। पाश—वृष का पहिला, मकर का पहिला दूसरा। पक्षी– तुला का दूसरा, तीसरा, सिंह और कुम्भ का पहिला। निगड़—मीन का तीसरा, वृश्चिक का पहिला, दूसरा। (१०४) सूर्य, मङ्गल, शनि लग्न में हों बलहीन हों चन्द्र या शुक्र के घर में हों गुरु की दृष्टि उन पर न हो (स०चि०)। (१०५) लग्न से सप्तम में पाप ग्रह हो (ल०चं०)। (१०६) लग्न में सूर्य शनि मङ्गल हो सप्तम में क्षीण चन्द्र हो गुरु की दृष्टि न हो (जा० भ०)। (१०७) लग्न से सप्तम भाव तक पाप ग्रह सप्तम से लग्न तक शुभ ग्रह हो लग्न में राहु हो (जा० भ०)। (१०८) ५, ११,८ राशि में राहु हो उसपर पाप ग्रह की दृष्टि हो (जा० भ०)। (१०९) लग्नेश पाप युक्त केन्द्र में हो शुभ युक्त या दृष्ट न हो और अष्टम स्थान में पाप ग्रह हो।

६–७ वर्ष में मृत्यु (११०) लग्न में सूर्य शनि मङ्गल क्षीण चन्द्र सप्तम में हो (जा.भ.)।

७–८ वर्ष में मृत्यु (१११) लग्न में सूर्य शनि मङ्गल हो वृष या तुला राशि का चन्द्र सप्तम में हो गुरु की दृष्टि न हो तो ७ या ८ वर्ष में मृत्यु हो (जा० पारि०)।

६, ८ या १२ वर्ष में मृत्यु (११२) लग्नेश लग्न में हो शुभ युक्त हो और शनि और गुरु से दृष्ट हो अष्टम में न हो। लग्न राशि संधि में हो तो ६, ८ या १२ वर्ष में मृत्यु हो। राशि संधि के अन्तिम ४ और पहिले के ४ में जन्म नहीं होना (स० चि०)।

१ वर्ष से ८ वर्ष तक मृत्यु (११३) गुरु लग्न में हो बुध और शुक्र मिथुन या तुला में हो पाप ग्रह से दृष्ट हो जो कि अष्टम स्थान में हो तो १ वर्ष से ८ वर्ष तक आयु होगी। (स० चि०)। इसमें गोचर और दशा का भी विचार कर जीवन का निश्चय करना। इस योग में पाठ यह भी है कि शुक्र मिथुन में और बुध तुला में हो। यहाँ जब शुक्र मिथुन में हो तो बुध तुला का नहीं हो सकता।

८ वर्ष आयु (११४) ६, ८ घर में शुभ ग्रह ५, ९ घर में पाप ग्रह हो और पाप ग्रहों से दृष्ट हो (जा० भ०)। ११५— ६, ८ घर में चन्द्र हो शुभ ग्रहों की दृष्टि हो (वृ० जा०)। पाप दृष्टि हो तो शीघ्र मृत्यु होगी। ११६—चन्द्र बलहीन हो पाप ग्रह

अष्टम में हो (स० चि०)। ११७—बलहीन चन्द्र ६,८,१२ घर में हो। यदि बलहीन न हो परन्तु क्रूर ग्रह युक्त और शुभ ग्रह से दृष्ट हो (स० चि०)। ११८—३,७ राशि का गुरु लग्न में बुध या शुक्र युक्त पाप ग्रह से दृष्ट या अष्टम भाव में हो (स० चि०)।

३ वर्ष आयु या ८ वर्ष आयु (११९)—लग्न में शनि, सप्तम सूर्य या अष्टम मंगल हो तो ३ वर्ष की आयु होती है परन्तु ऐसे योग में चन्द्र पर पाप दृष्टि न हो, राहु पर भी पाप दृष्टि न हो तो ८ वर्ष में मृत्यु हो (सर्व चि०)। (१२०) लग्नेश लग्न में क्रूर ग्रह युक्त, शनि से दृष्ट हो (स० चि०) यदि वहाँ गुरु हो तो यह फल नहीं होगा। (१२१) गंडांत (राशि संधि) में जन्म हो ६,८,१२ भाव में पापयुक्त चन्द्र हो उस पर शुभ ग्रह की दृष्टि हो (स० चि०)। (१२२) ६,८ घर में चन्द्र हो, मंगल के घर में गुरु हो।

९ वर्ष आयु (१२३)—लग्नेश पाप गृही हो वह चन्द्र से १२ वें घर में हो उस पर दूसरे पाप ग्रह की दृष्टि हो या चन्द्र के नवांश में हो (स० चि०)। इस योग में उच्चता और दूसरी प्रकार की अच्छी स्थिति पर भी ध्यान रखना। ग्रहों की अच्छी स्थिति से संकट होगा परन्तु मृत्यु नहीं होगी। यहाँ लग्नेश पाप ग्रह के घर में होकर लग्न में हो और चन्द्र से १२ वें घर में हो या लग्नेश किसी भी राशि में चंद्रमा के नवांश में हो। (१२४) सूर्य, शनि और शुक्र पापयुक्त हो और गुरु की दृष्टि न हो। (जा० भ०)। (१२५) लग्न में अष्टमेश हो जिस पर शनि की दृष्टि हो, चंद्र सप्तम में हो (जा० भ०)। (१२६) सूर्य चंद्र मंगल पञ्चम में हों (जा० पारि०)। (१२७) लग्नेश से क्षीण चंद्र अष्टम में हो पाप ग्रह से दृष्ट हो (स० चि०)। (१२८) सूर्य और चंद्र से शनि युक्त हो (जा० भ०)। (१२९) सूर्य चंद्र मंगल ये पञ्चम में बुध की राशि में हों (जा० भ०)। (१३०) लग्नेश पाप ग्रह चन्द्र से १२ वें भाव में पाप दृष्ट हो या ऐसे योगों में चन्द्र राशीश पापांशक में हो (स० चि०)।

१० वर्ष आयु (१३१)—शनि मकर के नवांश में हो बुध से दृष्ट हो तो उसके शत्रु अधिक हों १० वर्ष में मृत्यु हो (जा० पारि०)। (१३२) चतुर्थ में राहु ६,८ भाव या केन्द्र में चन्द्र हो। (१३३) सप्तम में राहु हो (मान०)।

१०-१२ वर्ष में मृत्यु (१३४)—राहु सप्तम हो सूर्य और चन्द्र की दृष्टि हो शुभ ग्रह की दृष्टि न हो (स० चि०)।

१०-१२ या १६ वर्ष आयु (१३५)—पाप ग्रहों से दृष्ट राहु केन्द्र में हो (ल०चं०)। राहु अन्य केन्द्र में इतना अनिष्ट नहीं करेगा जितना कि लग्न और दशम में अनिष्ट कारक है।

११ वर्ष आयु (१३६)—बुध सूर्य के साथ हो शुभ दृष्ट हो (जा० पारि०)। (१३७) शुभ दृष्ट भी बुध सूर्य चंद्र से युक्त हो (जा० सं०)। (१३८) लग्न में शनि हो बुध सूर्य चन्द्र से युक्त हो पाप ग्रह की दृष्टि हो (प्रा० यो०)। (१३९) केन्द्र भाव पाप ग्रह से युक्त हो शनि गुरु परस्पर एक दूसरे के स्थान में हों अर्थात् शनि की राशि

में गुरु और गुरु की राशि में शनि हो (जा०सं०)। (१४०) शनि के घर का गुरु अष्टम में हो पाप ग्रह से दृष्ट हो (प्रा० यो०)। (१४१) सूर्य बुध साथ हो शुभ ग्रह से दृष्ट न हो (स० चि०)। (१४२) सूर्य चन्द्रमा युक्त बुध हो पाप ग्रह से दृष्ट हो (जा. भ)।

१२ वर्ष आयु (१४३) मंगल के घर में गुरु हो गुरु के घर में मङ्गल हो (मान०)। (१४४) राहु लग्न से अष्टम में हो शुभ दृष्ट हो, शनि और सूर्य से दृष्ट हो (मान०)। (१४५) शनि के घर में सूर्य, सूर्य के घर में शनि हो (मान०)। (१४६) सिंह में चंद्र हो सूर्य शनि युक्त अष्टम में हो शुक्र से दृष्ट हो (जा. पारि.)। (१४७) शनि वृश्चिक के नवांश में हो सूर्य से दृष्ट हो तो पिता से वैर करे १२ वर्ष में मृत्यु हो (जा. पारि.)। (१४८) सप्तम में राहु हो उसे शनि और सूर्य देखते हों शुभ ग्रह की दृष्टि न हो (प्रा.यो.) (जा. भ.)। (१४९) दशम में राहु हो तो माता-पिता को पीड़ा देवे १२ वर्ष जीवे (ल. चं.)। (१५०) सप्तम में राहु सूर्य चन्द्र से दृष्ट हो शुभ ग्रह से दृष्ट न हो (स० चि.)। (१५१) चन्द्र राशीश सूर्य शनि से युक्त अष्टम में हो (स० चि०)। (१५२) लग्नेश तथा जन्म राशीश लग्न से ६,८,१२ भाव में सूर्य युक्त हो शुभ ग्रह युक्त या दृष्ट न हो (स० चि.)। (१५३) लग्न में मङ्गल अष्टम में गुरु हो।

१३ वर्ष की आयु (१५४) तुला के नवांश में शनि हो गुरु की दृष्टि हो माता-पिता का बैरी हो मृत्यु १३ वर्ष में हो (जा० पारि०)।

१४ वर्ष आयु (१५५) कन्या के नवांश में शनि हो बुध से दृष्ट हो जातक क्रोधी होकर १४ वर्ष में मरे (जा० पारि०)।

१५ वर्ष आयु (१५६) सिंह के नवांश में शनि हो राहु से दृष्ट हो तो शस्त्र से घाव लगे १५ वर्ष में मृत्यु (जा० पारि०) हो।

१६ वर्ष आयु (१५८) कर्क के नवांश में शनि हो गुरु से दृष्ट हो तो सर्प भय हो और १६ वर्ष में मृत्यु हो (जा०पारि०)। (१५८) लग्न से सप्तम में या नवम में शत्रु क्षेत्री राहु हो (मान०)। (१५९) लग्न से सप्तम में शत्रु क्षेत्री राहु हो (ल० चं०)। (१६०) चन्द्र राशीश सूर्य पाप युक्त ६-८ घर में शुभ दृष्टि रहित हो लग्नेश आपोक्लिम (३-६-९-१२ घर) में हो (स० चि०)।

१७ वर्ष आयु (१६१) ५, ८ या ११ राशि के लग्न में राहु हो गुरु युक्त या दृष्ट न हो, पाप ग्रह से दृष्ट हो (स० चि०)। (१६२) मिथुन लग्न के नवांश में शनि हो लग्नेश से दृष्ट हो वह ऐश्वर्यवान् और रण शूर हो १७ वर्ष जिये (जा० पारि०)।

१८ वर्ष आयु (१६३) लग्नेश अष्टम में अष्टमेश लग्न में हो शुभ योग रहित हो या लग्नेश अष्टमेश ६,१२ घर में पंचमेश युक्त हो (स० चि०)। (१६४) लग्नेश अष्टमेश परस्पर एक दूसरे के घर में हो जिन पर कोई शुभ योग या दृष्टि न हो या ये लग्नेश और अष्टमेश ६,१२ घर में हो गुरु युक्त न हो (स० चि०)। लग्नेश और अष्टमेश यदि अच्छी स्थिति में हो तो आयु बढ़ती है खराब स्थिति में हो तो आयु घटती है।

(१६५) लग्नेश अष्टमेश दोनों पाप ग्रह परस्पर एक दूसरे के घर में हो या १२ या ६ भाव में हो गुरु युक्त न हो (जा० पारि०)।

१६ वर्ष में मृत्यु (१६६) गुरु के नवांश में शनि हो राहु से दृष्ट हो और लग्नेश पर शुभ दृष्टि न हो तो वह जन्मते ही मरे यदि लग्नेश उच्च का हो तो १९ वर्ष आयु हो। (१६७) सूर्य अष्टम में हो चन्द्र शनि दोनों साथ किसी घर में हों। शुभ योग दृष्टि से बुरा प्रभाव घटेगा (स० चि०)।

२० वर्ष आयु (१६८) क्षीण चंद्र हो कोई क्रूर ग्रह अष्टम में हो, अष्टमेश केन्द्र में हो लग्नेश निर्बल हो (जा० लं०)। (१६९) शुभ ग्रह ३, ६, ९, १२ घर में शनि व चंद्र दोनों ६-८ घर में हो (जा० लं०)। (१७०) चन्द्रमा या राहु इन दोनों को छोड़ कर अन्य क्रूर ग्रह लग्न से २,८,१२ स्थान में हो (जा० लं०)। (१७१) सूर्य या शनि दोनों केन्द्र में हों मङ्गल लग्न में हो (जा० लं०)। (१७२) लग्न में शुभ ग्रह युक्त लग्नेश हो अष्टमेश अष्टम में हो परन्तु कोई ग्रह उसे न देखता हो (जा० लं०)। (१७३) केन्द्र में पाप ग्रह हो, चंद्र या शुभ ग्रह की दृष्टि न हो या ८ या १० भाव में चन्द्र हो (जा० पारि०)। (१७४) केन्द्र में पाप ग्रह हो, चन्द्र या दूसरे ग्रह की दृष्टि न हो और चन्द्र ६,८,१२ स्थान में हो (स० चि०)। (१७५) लग्न में मङ्गल और सूर्य हो गुरु दशम में घर राशि का हो चन्द्र ५ या ९ घर में हो। (१७६) क्षीण चन्द्र लग्नेश से अष्टम में शुभ ग्रह की दृष्टि न हो पाप ग्रहों की दृष्टि हो (जा० पारि०)। (१७७) चतुर्थ में राहु केन्द्र में चन्द्र हो (मान०)। (१७८) स्थानादि वर्गों से परिपूर्ण बली शुभ ग्रह केन्द्रों में हो और लग्न से अष्टम में कोई ग्रह न होवे (मान०)।

२१ वर्ष आयु (१७९) गुरु मित्र क्षेत्री लग्न से १० या ११ घर में, शुक्र शत्रु क्षेत्री २ या १२ घर में हो (मान०)। (१८०) षष्ठ में शुक्र हो तो २१ वर्ष में शस्त्र से मृत्यु हो (जा० सं०)। (१८१) लग्न में पाप गृही सूर्य पाप ग्रहों के मध्य में हों। (१८२) जन्म संध्या में हों लग्नेश पाप युक्त ३,६,९,१२ घर में हो और गुरु शुक्र केन्द्र में हों।

२२ वर्ष आयु (१८३) लग्न में कर्क का गुरु और सूर्य हो अष्टमेश केन्द्र में हो (जा० पारि०)। (१८४) लग्न से गुरु पापग्रह युक्त और चन्द्र दृष्ट हो, लग्न से अष्टम में अन्य ग्रह हो (जा० लं०)। (१८५) लग्नेश अष्टमेश केन्द्र में हों या अष्टम में कोई ग्रह हो और केन्द्रों में शुभ ग्रह न होवे पाप ग्रह होवे (स० चि०)। (१८६) लग्न में कीट राशि (वृश्चिक) में सूर्य गुरु हो अष्टमेश केन्द्र में हो (स० चि०)। इस योग में वृश्चिक लग्न में सूर्य दशमेश और गुरु २, ५ घर का स्वामी होता है अष्टमेश बुध होता है वह लग्न के सिवाय और किसी केन्द्र में रहना असम्भव है। जब लग्न में सूर्य है, बुध और गुरु लग्न में बलवान् हो जाते हैं इससे अधिक शुभता आ जाती है इससे इस योग में कुछ शंका होती है। (१८७) गुरु लग्न में हो राहु युक्त चन्द्र सप्तम या अष्टम में हो (स० चि०)। यहाँ चन्द्र राहु अष्टम में हों तो योग ठीक जंचता है, परन्तु

सप्तम में शंका उत्पन्न करता है। क्योंकि सप्तम में राहु है तो लग्न में केतु गुरु के साथ हुआ। गुरु चन्द्र केन्द्र में होने से गजकेशरी योग हो जाता है जो दीर्घ जीवन देता है। (१८८) लग्न में त्रिशांश पति हो (मान०)।

२४ वर्ष आयु (१८९) लग्नेश अष्टम में पाप युक्त या दृष्ट हो शुभ दृष्ट न हो, अष्टमेश द्वितीयेश और नवमेश से युक्त हो (स० चि०)। (१९०) लग्नेश अष्टम में पाप ग्रह युक्त हो अष्टमेश नवम भाव या लग्न में हो (जा० लं०)। (१९१) लग्नेश अष्टम में पाप युक्त या दृष्ट हो उस पर शुभ ग्रह की दृष्टि भी हो, अष्टमेश ९, २, १ भाव में से कहीं हो (स० चि०)।

२५ वर्ष आयु (१९२) शनि द्विस्वभाव राशि का लग्न में हो, ८, १२ भाव के स्वामी बलहीन हों (जा० लं०)। (१९३) लग्नेश दो पाप ग्रहों के बीच शुभ ग्रह रहित हो और पिता के जन्म लग्न में जन्म हो (स० चि०)।

२६-२७ वर्ष आयु (१९४) लग्न में शनि शत्रुक्षेत्री हो शुभ ग्रह आपोक्लिम (३, ६, ९, १२) में हों (जा० पारि०)। शनि का कट्टर शत्रु मंगल और सूर्य है। चन्द्र भी शत्रु है परन्तु उतना कट्टर शत्रु नहीं है। क्योंकि चन्द्र का शनि सम है।

२७ वर्ष आ० (१९५) लग्नेश और अष्टमेश अष्टम में पाप युक्त हो शुभ युक्त न हों (स० चि०)। (१९६) गुरु स्व स्थानी या स्व द्रेष्काण में हो (जा० लं०)।

२७ या ३० वर्ष आ० (१९७) लग्नेश और अष्टमेश के बीच चन्द्र हो और गुरु १२ वें हों (स० चि०)। यहाँ चंद्र के एक ओर लग्नेश दूसरी ओर अष्टमेश होना।

२८ वर्ष आ० (१९८) अष्टमेश पाप ग्रह हो अष्टमेश पर गुरु की दृष्टि हो जन्म राशि अष्टम में हो जो पाप ग्रहों से दृष्ट हो (जा० पारि०)। (१९९) अष्टमेश पाप ग्रह हो पाप ग्रह से दृष्ट हो या लग्नेश अष्टम में हो अष्टमेश पर गुरु की दृष्टि हो (स० चि०)। (२००) पाप ग्रह १, ७, ८ भाव में, शुभ ग्रह केन्द्र के बाहर हों (स० चि०)। (२०१) लग्न से या चन्द्र से अष्टम भाव का स्वामी केन्द्र में या व्यय भाव में हो (जा० लं०)। (२०२) पाप ग्रह १, २, ८ भाव में, शुभ ग्रह पण फर और आपोक्लिम में हों अर्थात केन्द्र के बाहर हों (स० चि०)।

२९ वर्ष आयु (२०३) चंद्रमा का शनि से स्थान या दृष्टि से सम्बन्ध होकर अष्टम में हो सूर्य भी अष्टम में हो (जा० पारि०)।

३० वर्ष आयु (२०४) लग्न से १२ वें भाव में बुध युक्त चंद्र हो अष्टमेश किसी केन्द्र में निर्बल शुभ ग्रहों से युक्त या दृष्ट हो (स० चि०)। (२०५) लग्नेश व अष्टमेश दोनों बलहीन होकर केन्द्र में हों (जा० लं०)। (२०६) सब शुभ ग्रह शुभ ग्रहों के नवांश में हो (जा० लं०)। (२०७) केन्द्र में कोई शुभ ग्रह न हो अष्टम में कोई एक ग्रह हो (जा० लं०)। (२०८) बल युक्त शुभ ग्रह केन्द्र में हों अष्टम में कोई ग्रह न हो (जा० भ०)। (२०९) बुध बली होकर केन्द्र में हों अष्टम में ग्रह न हो (जा० लं०)। (२१०) गुरु यदि सूर्य चन्द्र से और चन्द्र शनि मंगल से दृष्ट हो शुक्र से दृष्ट न हो अष्टम में

मंगल का घर हो (ल०चं०)। (२११) केन्द्र में शुभ ग्रह हो अष्टम में कोई भी ग्रह न हो व शुभ ग्रह की दृष्टि हो (प्रा० यो०)। (२१२) स्थान आदि बल से परिपूर्ण बली शुभ ग्रह चारों केन्द्र में हो अष्टम में कोई ग्रह न हो। केन्द्र गत ग्रह पर शुभ दृष्टि हो (मान०)।

३१ वर्ष आयु (२१३) सूर्य लग्न में २ पाप ग्रहों के बीच हो (जा० लं०)।

३० या ४२ वर्ष आयु (२१५) अष्टमेश केन्द्र में हो लग्नेश बलहीन हो (वृ० पा)। (२१६) लग्नेश और अष्टमेश में से कोई अष्टम में हो दूसरा बलहीन हो (स० चि०)। (२१७) लग्न में बली पाप ग्रह हो शुभ ग्रह पणफर और आपोक्लिम में हो, अष्टमेश के नवांश में शनि हो (स० चि०)। (२१८) पाप ग्रह एक दूसरे के घर में हो लग्नेश पर पाप दृष्टि हो निर्बल चन्द्र १२ वें भाव में हो (स० चि०)। (२१९) पाप ग्रह एक दूसरे के राशि गत होकर लग्न में हो और चन्द्रमा १२ वाँ हो (स० चि०)। (२२०) चंद्र और लग्नेश आपोक्लिम में हो और अष्टमेश पापयुक्त और बलहीन हो (स० चि०)।

२२ और ३२ वर्ष आयु (२२१) लग्नेश और अष्टमेश के बीच चन्द्र हो। गुरु लग्न से १२ वे हो तो २२ और ३२ वर्ष के भीतर मृत्यु हो (स० चि०)।

३२ वर्ष आयु (२२२) लग्नेश और चन्द्रमा आपोक्लिम में हो, चन्द्रमा निर्बल हो क्रूर ग्रहों से दृष्ट हो (जा० ल०)। (२२३) लग्न निर्बल हो और पाप युक्त हो, क्षीण चंद्र पाप युक्त हो अष्टमेश केन्द्र या अष्टम में हो (जा० पारि०)। (२२४) हीन बली ग्रह पाप युक्त लग्न में हो, क्षीण चन्द्र सूर्य युक्त हो, अष्टमेश केन्द्र में, पाप ग्रह अष्टम भाव में हो (स० चि०)। (२२५) लग्नेश और अष्टमेश केन्द्र में हो कोई ग्रह अष्टम में हो और शुभ ग्रह केन्द्र में न हो (स० चि०)। (२२६) सूर्य चन्द्र युक्त केन्द्र में हो, अष्टमेश केन्द्र में हो, पाप ग्रह अष्टम में हो, लग्न में कोई ग्रह न हो (स० चि०)। (२२७) अष्टमेश लग्न में हो लग्नेश बलहीन हो (स० चि०)।

३३ वर्ष आयु (२२८) चन्द्रमा, मंगल की राशि का लग्न में हो पाप ग्रहों से दृष्ट हो शुभ ग्रह केन्द्र में हो (स० चि०)। मङ्गल की राशि लग्न में हो उसमें चन्द्रमा हो। अन्य मत है कि पाप ग्रह और शुभ ग्रह केन्द्र के बाहर हो। (२२९) चन्द्रमा और अष्टमेश पाप युक्त होकर केन्द्र या कोण में हो दशम भाव स्थित पाप ग्रह की दृष्टि हो (स० चि०)। (२३०) शनि और चन्द्र लग्न में हो मङ्गल कुम्भ का हो (स० चि०)।

३६ वर्ष आयु २३१—गुरु और शुक्र केन्द्र में हों लग्नेश पाप युक्त होकर आपोक्लिम में हो संध्या का जन्म हो (स० चि०)। २३२—बलहीन सूर्य दो पाप ग्रहों के बीच शत्रु राशि में होकर लग्न में हो शुभ ग्रह से दृष्ट न हो (स० चि०)। २३३—लग्न में चन्द्र और मङ्गल हो। केन्द्र और अष्टम में शुभ ग्रह न हो लग्न में मान्दि हो (स० चि०)।

३७ वर्ष आयु २३४—षष्ठ भाव में बुध हो (जा०सं०)। २३५—लग्न में सूर्य २ पाप ग्रहों के बीच हो लग्न से अष्टम में मिथुन का गुरु हो (स० चि०)। २३६—मिथुन से लग्नेश हो, गुरु चतुर्थ में पाप ग्रहों के बीच हो (स० चि०)।

४० वर्ष आयु २३७—बली बुध केन्द्र में हो लग्न से अष्टम स्थान शुभ ग्रह से दृष्ट हो (जा० लं०)। २३८—अष्टमेश लग्न में हो अष्टम स्थान में कोई शुभ ग्रह न हो (जा० लं०)। २३९—८ और १२ भाव में क्रूर ग्रह मध्य में क्रूर ग्रह और शुभ ग्रह दोनों हो तो राजयोग होता है आयु ४० वर्ष (ल० च०)। २४०—बली शुभ ग्रह केन्द्र में हो अष्टम में कोई ग्रह न हो तो ३० वर्ष आयु होती है शुभ ग्रह देखते हों तो ४० वर्ष की आयु हो (जा० भ०)। २४१—गुरु त्रिकोण में एवं स्वगृही हो (मान०)।

४२ वर्ष आयु २४२—अष्टमेश लग्न में हो मङ्गल भी लग्न में हो या ८, १२ घर में स्थिर राशि में हो (स० चि०)।

४४ वर्ष आयु २४३—लग्न चर राशि में हो गुरु केन्द्र में शनि दशम में हो (स० चि०)। २४४—सूर्य और शनि मकर राशि में लग्न से ३ या ६ घर में हो अष्टमेश केन्द्र में हो (जा० लं०)। २४५—उच्च का मङ्गल लग्न में, गुरु सप्तम, शनि दशम में हो तो धनवान व शास्त्री हो। आयु ४४ वर्ष हो (स० चि०)। २४६—लग्नेश पाप युक्त अष्टम में हो शुभ ग्रह केन्द्र में न हो (स० चि०)।

४५ वर्ष आयु २४७—लग्नेश पाप युक्त अष्टम भाव में, अष्टमेश पाप युक्त छटे भाव में हो दोनों बलवान् हों, शुभ दृष्टि रहित हों (स० चि०)। २४८—चन्द्र राशि का स्वामी लग्न से अष्टम में पाप युक्त हो और लग्नेश पाप युक्त षष्ठ में हो दोनों बलहीन हों शुभ दृष्टि रहित हों (स० चि०)।

आयु ४८ वर्ष २४९—मकर लग्न में मङ्गल हो, दशम में तुला में शनि और गुरु हो तो वह धनी और कई विद्या का ज्ञाता हो ४८ वर्ष आयु पावे (स० चि.)। २५०—मेष लग्न में पूर्ण चद्र हो शुभ ग्रह से दृष्ट हो तो वह स्वामी या राजा हो ऐसे चन्द्र पर यदि पाप दृष्टि हो तो ४८ वर्ष आयु हो (स० चि.)।

आयु ५० वर्ष २५१—लग्न से ४ या १० घर में बुध हो १, ८, १२ घर में चन्द्र हो और गुरु शुक्र एक साथ हों।

५२ वर्ष आयु २५२—लग्न में शनि दूसरे ग्रहों से युक्त हो और चन्द्र ८ या १२ घर में हो तो वेदान्ती और धार्मिक होगा आयु ५२ वर्ष की होगी (स० चि.)। २५३—द्विस्वभाव लग्न में शनि हो चन्द्र ८ या १२ घर में हो।

५५ वर्ष आयु २५४—कर्क या सूर्य लग्न में हो, पाप युक्त चन्द्र दशम में हो गुरु केन्द्र में हो (जा. लं.)।

५७ वर्ष आयु २५५—लग्नेश धन में गुरु युक्त हो, अष्टम में राहु या केतु हो (स० चि.)। २५६—धन का गुरु लग्न में, अष्टम में मङ्गल राहु हो (स० चि.)।

५८ वर्ष आयु २५७—अष्टमेश सप्तम में चन्द्रमा पाप युक्त ६, ८ भाव में हो (स० चि.)। २५८—लग्नेश युक्त चन्द्र ६, ८, १२ भाव में हो लग्नेश शनि के नवांश में हो (जा.लं.)। २५९—लग्न से ३, ५, ९, ११ भाव में कहीं गुरु शत्रुक्षेत्री हो(मान.)।

६० वर्ष आयु २६०—लग्न में गुरु और तृतीयेश हो किसी केन्द्र में कुंभ राशि हो जिसमें पाप ग्रह हो वह ब्रह्म ज्ञानी, योगी और सुखी होकर ६० वर्ष आयु पावे (स० चि.)। २६१—लग्नेश बारहवें हों अष्टमेश लग्न में हो अष्टम में पाप ग्रह हो तो वह नीच हो अपमान से अपने कुटुम्ब के आश्रित रहे आयु ६० वर्ष हो (स० चि.)। २६२—दशम में शुक्र हो बुध गुरु और चन्द्र से दृष्ट हो गुरु पञ्चम में हो वह धनी होकर राजा होगा आयु ६० वर्ष होगा (सर्व चि.)। २६३—लग्न में शनि, चौथे चन्द्र, सप्तम मङ्गल, दशम सूर्य हो बुध गुरु शुक्र में से कोई केन्द्र में हो तो वह स्वामी युक्त राजा हो आयु ६० वर्ष हो (स० चि०)।

६० वर्ष आयु २६४—लग्न में शुक्र, केन्द्र में बुध शनि, और ३, ११ भाव में शेष ग्रह हों वह स्वामी होकर ६० वर्ष जिये [स० चि०]। २६५—लग्न से चतुर्थ में कोई ग्रह हो, गुरु और शुक्र केन्द्रों में हों या लग्न में हों तो अच्छा स्वभाव हो आयु ६० वर्ष हो [स० चि०]। २६६—बुध गुरु शुक्र ये शुभ ग्रह केन्द्र में हों चन्द्रमा उच्च का हो लग्नेश बली होकर लग्न में हो [जा० लं०]। २६७—चंद्र स्वस्थान या लग्न में हो सप्तम में शुभ ग्रह हो [जा० लं०]। २६८—वृष का चन्द्र लग्न में हो और शुभ ग्रह स्वस्थानी हों [जा० लं०]। २६९—पाप ग्रह युक्त लग्नेश त्रिक में हो शुभ ग्रह अष्टम स्थान छोड़कर और कहीं हों [जा० लं]। २७०—लग्नेश व जन्म राशीश दोनों सूर्य से युक्त लग्न से अष्टम स्थान में हों और गुरु केन्द्र में न हो [जा० लं०]।

६४ वर्ष आयु २७१—दिन में जन्म हो चन्द्र से अष्टम भाव में पाप ग्रह हो तो मध्यायु ६४ वर्ष की हो [जा० लं०]।

६५ वर्ष आयु २७२—चन्द्रमा कर्क का लग्न में हो, नीच का शनि सप्तम सूर्य हो तो श्रेष्ठ ज्ञानी हो, ६५ वर्ष आयु हो [स० चि०]। २७३—शनि नीच का होकर केन्द्र या कोण में हो या सूर्य शुभ ग्रह युत केन्द्र में हो तो वह समझदार अगुवा हो आयु ६५ वर्ष हो [स० चि०]।

६६ वर्ष आ० २७४—लग्नेश और चन्द्र राशीश अष्टम में हों अष्टमेश केन्द्र में हो वह मान और धन युक्त मनुष्यों का नेता हो, आयु ६६ वर्ष की हो [स० चि०]। २७५—लग्न में गुरु सूर्य और बुध हों, चंद्र १२ वें हो, शनि मीन का हो तो धनी, शास्त्र में निपुण होकर ६६ वर्ष जिये [स० चि०]। २७६—लग्न में उच्च का चंद्र हो शनि नीच का हो रवि सप्तम हो तो धनवान् होकर ६६ वर्ष जिये [स० चि०]।

६० या ६६ वर्ष आयु २७७—लग्नेश तथा तत्काल होरेश अष्टम में हो तो कीर्ति और धनयुक्त राजा हो, आयु ६६ वर्ष हो। नंदोक्त मत से ६० वर्ष आयु हो [स०चि०]।

६८ वर्ष आयु २७८—सूर्य और चन्द्र दशम में, शनि लग्न में, गुरु चतुर्थ में हो तो राजा हो ६८ वर्ष आयु हो [स० चि०]।

७० वर्ष आयु २७९—मङ्गल पंचम में, शनि नीच का, सूर्य सप्तम हो [स० चि०]। २८०—केवल गुरु लग्नेश से केन्द्र में हो [स० चि०]। २८१—गुरु केन्द्र

में हो, चन्द्र लग्न में हो या अपने अंश में हो या मीन या कर्क राशि का हो अष्टम घर खाली हो [स० चि०]। २८२—बहुत बली शुभ ग्रह केन्द्र में हो अष्टम में कोई शुभ ग्रह न हो उस पर लग्नेश की दृष्टि हो [स० चि०]। २८३—लग्न या चन्द्र दोनों क्रूर ग्रहों के योग या दृष्टि से रहित हों, लग्न में गुरु हो, केन्द्र में शुभग्रह हो अष्टम भाव में कोई ग्रह न हो [जा० लं०]। २८४—लग्न में सूर्य अपने शत्रु या मङ्गल युक्त हो, गुरु बलहीन हो चन्द्रमा लग्न से १२ वें या ५ वें स्थान में हो। २८५—लग्न में गुरु और ३, ६, ११ घर में पाप ग्रह हो लग्नवर्ती गुरु पर पाप ग्रह की दृष्टि न हो। शुभ ग्रह केन्द्र में हों अष्टम में कोई ग्रह न हो [जा० भ०]। २८६—नीच का शनि केन्द्र या त्रिकोण में, शुभ ग्रह केन्द्र में या सूर्य और बुध केन्द्र में हो तो ज्ञानी, धर्म पीड़ित होकर ७० वर्ष जिये [स० चि०]। २८७—लग्न में गुरु नवम घर में चन्द्र हो उस पर पाप ग्रहों की दृष्टि न हो, सब ग्रह केन्द्र में हों अष्टम में कोई ग्रह न हो [मान०]। २८८—यदि केन्द्र में सूर्य मङ्गल और शनि व षष्ठेश हो और ८ या १२ भाव में गुरु और चन्द्र न हो वह विद्वान् मानी ज्ञानी योग्य तत्पर होकर ७० वर्ष जियेगा [स०च०]।

७० वर्ष से ऊपर दीर्घायु २८९ – शुभाशुभ सभी ग्रह लग्न से ६ भाव तक हों या सप्तम से व्यय तक होवें तो दीर्घायु ७० से ऊपर हो। यदि अन्य प्रकार हों तो विपरीत फल [स० चि०]।

७२ वर्ष आयु २९०—शुभ ग्रह लग्न या चन्द्र से केन्द्र में हों लग्न से दशवें स्थान में स्थित क्रूर ग्रहों से युक्त या दृष्ट न हों [जा० ल०]।

७३ वर्ष आयु २९१—चन्द्र शुभ ग्रहों के षडवर्ग में हो, सब शुभ ग्रह बली हों लग्नेश को क्रूर ग्रह देखते हों [जा० ल०]।

८४ वर्ष की आयु २९२ – सब शुभ ग्रह बलवान् होकर लग्न से पहिले घर में हों और सब पाप ग्रह आगे के ६ घरों में होकर बलवान् हों तो अच्छा स्वभाव उन्नतिशील और आनन्द मय होकर ८० वर्ष जियेगा (स० चि०)। २९३—चन्द्र गुरु युक्त केन्द्र में हो शुभ ग्रह से दृष्ट हो और दूसरे ग्रह अपने स्वभाव को छोड़ कर दूसरे घरों में हों [स० चि०]। २९४—शुभ ग्रह अपने मूल त्रिकोण में हों गुरु उच्च का लग्न में हो लग्नेश पूर्ण बली हो [जा० लं०]। २९५—लग्न से ५ या ९ घर में शुभ ग्रह हों, कर्क लग्न में गुरु हो [जा० लं०]। २९६—लग्न से पाँचवें स्थान में या केन्द्र में क्रूर ग्रहों के नवांश में सम्पूर्ण ग्रह हों (जा० लं०)। २९७—सब ग्रह पाँचवें स्थान में हों (जा० लं०)। २९८—शुभ ग्रह अपने मूल त्रिकोण या उच्च में हों (जा० भ०)।

८५ वर्ष आयु २९९—गुरु लग्न में हो केन्द्र में सूर्य मंगल शनि तीनों गुरु के नवांश में हों लग्न से अष्टम स्थान छोड़ कर अन्य स्थान में शेष सब ग्रह हों (जा० लं०)।

८६ वर्ष आयु —३००–शुभ ग्रह केन्द्र में हों पाप ग्रह ८, ६ घर में न हों, चन्द्र ६ घर में हो [स० चि०]। ३०१—गुरु चन्द्रमा युक्त केन्द्र में शुभ दृष्ट हो सभी ग्रह दशम भाव से ऊपर ११-१२ भाव में हों (स० चि०)।

८७ वर्ष आयु–३०२–बुध लग्न में, चन्द्र कोण में, शनि नवम में हो (स०चि०) । बुध लग्न में होने से दिग्बल प्राप्त होता है ।

१०० वर्ष आयु–३०३–लग्नेश से केन्द्र में गुरु हो पाप ग्रह केन्द्र या कोण में न हो वह सुखी होकर १०० वर्ष जिये [स० चि०] । पाप ग्रह केन्द्र या कोण में बुरे होते हैं परन्तु मङ्गल और सूर्य दशम में, शनि सप्तम में अच्छे होते हैं राजयोग उत्पन्न करते हैं । ३०४—सूर्य और मङ्गल लग्न में हो या अष्टम में हो गुरु केन्द्र में हो तो यह धनी और मनुष्यों का स्वामी होकर १०० वर्ष जिये [स० चि०] । ३०५—तुला लग्न में जन्म हो व्यय में सूर्य हो [वृ०पा० । ३०६—पूर्ण चन्द्र लग्न में हो शुभ ग्रह शुभ राशि के नवांश में होकर लग्न से २ या १२ घर में हों तो सदा लक्ष्मी युक्त रहे आयु १०० वर्ष हो [जा० लं०] । ३०७–पंचम में चन्द्र, त्रिकोण में गुरु, दशम में मङ्गल हो [मान०] । ३०८—उच्च कर्क का गुरु लग्न में हो उच्च का शुक्र केन्द्र में हो [मान०] । ३०९–१,६,८ भाव में चन्द्र न हो क्रूर ग्रह स्वक्षेत्री हों, दशम में २ बली ग्रह हों [मान०] । ३१०–शुक्र और गुरु दोनों केन्द्र में हों [जा० लं०] । ३११–१ या ९ घर में शनि ९ या १२ घर में चंद्र हो। ३१२–९ या १२ राशि लग्न में हो केन्द्र में शुक्र या गुरु हो । लग्न से केन्द्र या ५,९ स्थानों में क्रूर ग्रह न हो ८ या ९ दोनों भावों को शुभ ग्रह देखते हों [जा० लं०] । ३१३ – मीन का शुक्र लग्न में, गुरु केन्द्र में हो, लग्न से अष्टम भाव में चन्द्र शुभ ग्रहों से दृष्ट हो [जा० लं०] । ३१४—लग्नेश अष्टम में, चन्द्रमा दशम में हो, गुरु बली हो लग्न से नवम स्थान में सब ग्रह हों [जा० लं०] । ३१५—कर्क राशि में ३, ६, ११ घर में गुरु व चन्द्र दोनों हों केन्द्र में शुभ ग्रह युक्त शुक्र व बुध हो [जा० लं०] । ३१६—लग्न में शुक्र चन्द्र हो, नवम पंचम में गुरु, सप्तम में बुध हो [मान०] । ३१७—लग्न से दशम या पंचम में गुरु, बुध, चन्द्र और शुक्र हो तो धन से परिपूर्ण वेद में पारंगत हो, आयु १०० वर्ष हो [मान०] । ३१८–लग्न में धन राशि का नवाँ नवांश हो, केन्द्र में शुभ ग्रह किसी राशि के पहिले नवांश में हो [जा०लं०] । ३१९–लग्न में मीन राशि अंत्यांश होवे और केन्द्र में ४ ग्रह हों [स० चि०] । ३२०—चन्द्रमा लग्न में कर्कांश या मीन व कर्क का होवे उसके साथ कोई ग्रह न हों केन्द्र में ४ ग्रह हों [स० चि०] । ३२१—सिंह लग्न से ४ ग्रह त्रिकोण में होवें [स० चि०] ।

१०० वर्ष से अधिक आयु ३२२—यहाँ वहाँ ३ ग्रह ५, ९, ८ भाव या केन्द्र में हों या यदि ५ ग्रह केन्द्र में हों तो वह धनी, सत आचरण वाला होकर १०० वर्ष से अधिक जिये [स० चि०] । ३२३—लग्न में मङ्गल मिथुन के पूर्वार्द्ध में हो, दूसरे आधे में गुरु हो, बुध और शुक्र केन्द्र में हों । अर्थात् मंगल गुरु बुध शुक्र केन्द्र में हों तो १०० वर्ष से अधिक आयु हो सुखी और धनवान् हो [स० चि०] । ३२४—कन्या का उत्तरार्द्ध लग्न हो पूर्वार्द्ध में बुध हो या ३ ग्रह उच्च में हों [स० चि०] ।

१०८ वर्ष आयु ३२५—मीन का अन्तिम नवांश लग्न में हो और ४ ग्रह केन्द्र में हों (मीन का अन्तिम नवांश बड़ा बलवान् होता है धन देता है) । ३२६—लग्न

सिंह हो और ४ ग्रह ५ या ६ घर में हों [स० चि०]। ३२७—वृष लग्न हो, गुरु कर्क में हो, ३ ग्रह उच्च के हों [स० चि०]। ३२८—मंगल मकर में हो गुरु कर्क में हो दूसरे सब ग्रह केन्द्र में हों [स० चि०]। गुरु कर्क में मंगल मकर में उच्च का होता है।

१२० वर्ष आयु परमायु ३२६—लग्न से व चन्द्र से आठवें स्थान में कोई ग्रह न हो और शुक्र व गुरु ये दोनों बली हों तो पूर्णायु पावे [जा० लं०]। ३३०—लग्न मकर का परार्द्ध १५° से ऊपर होवे उसके पूर्वार्द्ध १५° के भीतर मंगल लग्न में हो और चन्द्रमा गुरु युक्त केन्द्र में हो [स० चि०]। ३३१—मंगल मिथुन लग्न के पूर्वार्द्ध में हो, लग्न मिथुन का उत्तरार्द्ध हो। या धन के पूर्वार्द्ध में गुरु उत्तरार्द्ध में लग्न हो, केन्द्र में शनि शुक्र चन्द्र सहित हो तो परमायु हो। ३३२—बुध लग्न के अन्त्य नवांश में हो, लग्न में शनि, केन्द्र में गुरु व शुक्र हो, पाप ग्रह ३,६,११ भाव में हों तो परमायु हो [स० चि०]। ३३३—मीन नवांशक लग्न में हो, वृष का चन्द्र होरा आदि ५ वर्ग में अपने वर्ग का हो अन्य सभी ग्रह उच्च के हों [स० चि०]। ३३४—केन्द्र में सब शुभ ग्रह हों लग्नेश बलवान् हो या गुरु से दृष्ट हो [वृ० पा०]। ३३५—लग्नेश केन्द्र में गुरु शुक्र से युक्त दृष्ट हो तो पूर्णायु हो [वृ०पा०]। ३३६—लग्नेश अष्टमेश सहित ३ ग्रह उच्च में हों आठवाँ भाव पाप ग्रहों से रहित हो तो पूर्णायु हो [वृ० पा०]।

परमायु या पूर्णायु ३३७—लग्नेश बली हो, अष्टम भाव में ३ ग्रह स्वगृही, मित्र क्षेत्री या उच्च के हों [वृ०पा०]। ३३८—अष्टमेश या शनि अपने उच्च या राशिस्थ किसी ग्रह से युक्त हो [वृ० पा०]। ३३६—शुभ ग्रह केन्द्र त्रिकोण में हो पाप ग्रह ३,६,११ में हों लग्नेश बली हो [वृ० पा०]। ३४०—६, ७, ८ भाव में शुभ ग्रह ३, ११ में पाप ग्रह हों। ३४१—लग्नेश केन्द्र में हो, अष्टमेश सूर्य का मित्र हो पाप ग्रह ६,१२ भाव में हो [वृ० पा०]। ३४२—अष्टम में पाप ग्रह हो, दशमेश उच्च का हो। ३४३—द्विस्वभाव लग्न हो, लग्नेश केन्द्र में या कोण में उच्च या स्वक्षेत्री हो [वृ० पा०]। ३४४—द्विस्वभाव लग्न हो बली लग्नेश से २ पाप ग्रह केन्द्र में हों तो पूर्णायु पावे [वृ० पा०]। ३४५—लग्न में धन राशि का दूसरा होरा हो सब ग्रह अपने २ उच्च में हों बुध २४ अंश पर वृष राशि में हो [जा० लं०]। २४६—चन्द्रमा लग्न से ११ वें घर में, गुरु शुक्र केन्द्र में हों [जा० लं०]। ३४७—लग्न से ३,६,११ स्थानों में सब क्रूर ग्रह शुभ के नवांश में हो शुभ ग्रहों से युद्ध में जीते गये हों [जा० लं०]। इस योग में लग्नेश व मंगल दोनों अष्टम में हों तो पूर्णायु नहीं होगी। ३४८—लग्नेश व गुरु केन्द्र में हों ५,९,८ व केन्द्र में क्रूर ग्रह न हो [जा० लं०]। ३४६—पाप ग्रह लग्न से ९ या ५ घर में हों शुभ ग्रह गुरु की राशि या नवांश में हों [जा० लं०]। ३५० – सब ग्रह लग्न से ९ स्थान में हों [जा० लं०]। ३५१—सब क्रूर ग्रह क्रूर राशियों में शुभ ग्रह सब शुभ राशियों में हों लग्नेश बली हो [जा० लं०]। ३५२—अष्टमेश अष्टम में हो। अष्टमेश

से केन्द्र या त्रिकोण में कोई शुभ ग्रह हो [ज्यो० र०]। ३५३—लग्न से अष्टमेश ६,८,१२ भाव में हो जहाँ अष्टमेश हो उस घर का स्वामी अष्टम में हो [ज्यो० र०]। ३५४—लग्नेश केन्द्र में गुरु या शुक्र से युक्त या दृष्ट हो। ३५५—लग्न से शनि ६,८,११ घर में हो लग्नेश, अष्टमेश दशमेश केन्द्र या त्रिकोण में हो। ३५६—चंद्र उच्च का मित्र गृही मूल त्रिकोण में हो उस पर गुरु या शुक्र की दृष्टि हो। ३५७—गुरु शुक्र केन्द्र में, शनि लग्न से ५,६,८,११ घर में हो। २५८—शनि लग्नेश या अष्टमेश होकर एक या अधिक शुभ ग्रहों से युक्त हो। ३५९—शनि अष्टमेश के साथ हो या अष्टमेश की शनि पर दृष्टि हो।

१२० वर्ष से ऊपर आयु ३६०—कर्क लग्न में गुरु-चंद्र हों बुध, शुक्र केन्द्र में हो ३,६,११ भाव में अन्य ग्रह सूर्य मंगल शनि हो तो गणितागत आयु से भी अधिक आयु मिले [स० चि०]।

८०० वर्ष आयु ३६१—सूर्य लग्न में मंगल युक्त या सूर्य मंगल अष्टम में, गुरु केन्द्र में हो तो लक्ष्मी का गुणी होकर ८०० वर्ष जीये [स० चि०]।

१००० वर्ष आयु ३६२—कुंभ लग्न में सूर्य हो, २,१२ घर में गुरु हो तो रसायन एवं योग क्रिया द्वारा १००० वर्ष जीवे और वह ऊँचे दर्जे का योगी हो [स० चि०]। ३६३—सिंह लग्न में गुरु हो, शुक्र बारहवां या कर्क में और बुध दूसरे में या कन्या में हो पाप ग्रह ३,६,११ घर में हों तो १००० वर्ष जीवे। मतांतर-बुध के स्थान में चन्द्र दिया है। [स० चि०]।

१० गुणी आयु ३६४—लग्न कुंभ हो, गुरु मीन का, शुक्र व्यय में और सूर्य लग्न में हो तो रसायन सेवन आदि से गणितागत आयु से दशगुणी आयु पावे [स० चि०]।

२००० वर्ष आयु ३६५—लग्न में शनि, चतुर्थ में सूर्य और मंगल हों, शेष ग्रह दूसरे में हों, राहु बारहवें हो [स० चि०]। शनि लग्न में बहुधा बालारिष्ट करता है परन्तु जब बच जाता है तो दीर्घायु करता है। यहाँ कुछ शंका हो जाती है कि शेष ग्रह चन्द्र बुध गुरु शुक्र केतु दूसरे में होना कहा है जब सूर्य चतुर्थ में हो तो बुध दूसरे में होना कठिन है राहु बारहवें में है तो केतु ६ में होगा। इस प्रकार शेष ३ ही ग्रह दूसरे में रहेंगे। सम्भव है कि बहुत प्राचीन काल में बुध सूर्य से इतने अन्तर पर रहा हो। ३६६—मेष लग्न हो उच्च का सूर्य शुभ ग्रह युक्त हो, गुरु दशम में हो, मंगल सप्तम, पूर्ण चन्द्र १२ वाँ हो तो रसायन शास्त्र की सहायता से २००० वर्ष तक जीवे [स.चि.]। ३६७—गुरु और बुध कोण में, मंगल वृष का लग्न में हो चन्द्र गौपुरांश में हो[स०चि०]। ३६८—शुक्ल पक्ष में दिन का जन्म हो गुरु केन्द्र में या कर्क या लग्न में हो, सप्तम मंगल हो, चौथा सूर्य हो [स० चि०]।

१०००० वर्ष आयु ३६९—लग्न दिन का हो, शुक्ल पक्ष हो गुरु केन्द्र में हो और

कर्क लग्न हो मंगल सप्तम हो, शनि चतुर्थ में हो [स० चि०]। ३७०—जब गुरु शनि मंगल और शुक्र एक दूसरे से कोण या केन्द्र में हों [स० चि०]।

(१) ये सब चाहे लग्न से या चन्द्र से केन्द्र में हों ये सब किसी भी केन्द्र या चारों केन्द्रों में हों यह एक योग हुआ। (२) दूसरा योग एक दूसरे से त्रिकोण में हों।

एक अयुत वर्ष आयु ३७१—गुरु शनि शुक्र का अन्योन्य केन्द्र स्थित सम्बन्ध हो या त्रिकोण में हो तो एक अयुत वर्ष जीवे (स० चि०)।

६०००० वर्ष आयु ३७२—लग्न सिंह हो शुभ ग्रह चारों केन्द्रों में हों पाप ग्रह ३-६ और १२ भाव में हो [स० चि०]।

६ अयुत वर्ष आयु ३७३—चारों केन्द्रों में शुभ ग्रह हों पाप ग्रह ३,६,११ भाव में हों लग्न सिंह हो [स० चि०]।

अनगिन्तो वर्ष आयु ३७४—मेष के अन्तांश लग्न में गुरु या शुक्र हो, चन्द्रमा वृष के मध्य नवांश में हो मंगल सिंहासनांश में हो तो मंत्र बल से असंख्य वर्ष जीवे [जा०पारि०]। ३७४—मेष के अन्तांश लग्न में गुरु या शुक्र हो, चन्द्रमा वृष का या धन के मध्यांश में होवे मंगल सिंहासनांश में हो [स० चिंता०]। अन्य—गुरु या शुक्र मेष के अंत में लग्न में हो, चन्द्र वृष का या धन के पूर्वार्द्ध में हो मंगल सिंह के नवांश में हो। ३७५—लग्न में बुध कन्या के अंत नवांश में हो, सप्तम में गुरु गोपुरांश में हो या शनि मृद्वांश में हो [स० चि०] षष्ठ्यंश का १९ वां अंश मृद्वांश है।

युगों तक आयु ३७६—सब शुभ या पाप ग्रह इकट्ठे केन्द्र या त्रिकोण में हों तो वह तुरंत मरे। यदि बच जावे तो मन्त्र सिद्धि से कई युग तक जीवे [सर्व चि०] ७ ग्रहों के एकत्र होने का योग २। दिन से अधिक नहीं होता। ३७७—गुरु केन्द्र में, शनि ११वें, सूर्य दूसरे, चन्द्र सप्तम, मंगल नवम हो तो मन्त्रों से कई हजार युगों तक जीवे। ३७८—गुरु केन्द्र में गोपुरांश में हो, शुक्र कोण में पारावतांश में हो, लग्न कर्क हो तो युगों तक जीवे [स० चि०]। ३७९—सूर्य गुरु मङ्गल ये शनि के नवांश में हों या नवम भाव में या उसके नवांश में बलवान् हों लग्न में चन्द्रमा हो तो लक्ष्मी युक्त युगांत आयु पावे [जा०पारि०]। ३८०—गुरु केन्द्र में शनि लाभ में सूर्य धन स्थान में केतु सप्तम में, मङ्गल नवम में हो तो मन्त्र बल से युगांत आयु पावे [स० चि०]। ३८१—केन्द्र में शुक्र गोपुरांश में, गुरु त्रिकोण में पारावतांश में हो, लग्न कर्क हो तो युगांत आयु हो [स० चि०]। ३८२—मकर लग्न में मङ्गल से लेकर सूर्य तक ग्रह हों तीसरे में गुरु हो दिन का जन्म हो [स० चि०]।

दिव्य आयु ३८३—सब शुभ ग्रह केन्द्र त्रिकोण में हों सब पाप ग्रह ३, ६, ११ भाव में हों अष्टम भाव में शुभ ग्रह की राशि हो [बृ० पा०]।

अमित आयु ३८४—कर्क लग्न व कर्काशक होवे गुरु केन्द्र में, मंगल सप्तम में हो विशेष कर शुक्र सिंहासनांश में हो तो रसायन आदि से अमित आयु हो [स० चि०]।

असंख्य आयु ३८५—शुक्र देवलोकांशक में, मंगल केन्द्र में, गुरु सिंहासनांश में केन्द्र गत हो तो असंख्य आयु पावे [स० चि०]। ३८६—उत्तमांश गत बुध केन्द्र में, शुक्र पारावतांश में गुरु स्वर्ग लोकांश में हो तो असंख्य आयु पावे [स० चि०]।

आयु बढ़ावे ३८७—शुक्र उत्तमांश होकर केन्द्र में हो। शनि पारावतांश में हो और गुरु स्वर्गलोकांश में होकर केन्द्र में हो तो औषधियों द्वारा अपनी आयु बढ़ावे [स० चि०]।

अमित आयु ३८८—कर्क लग्न हो उसमें चन्द्र और गुरु हों, बुध शुक्र केन्द्र में हों, ३, ६, ११ भाव में सूर्य मंगल शनि राहु पाप ग्रह हों तो अमित आयु हो [वृ० पा०]।

मुनि योग ३८९—यदि गुरु चन्द्र आदि पाप ग्रह शनि तक परमोच्च में हों तो उसे ज्ञान प्राप्त होकर मुनि के बराबर हो या विद्या के कारण उसका मान हो [स०चि०]। जब सब ग्रह उच्च में होंगे तो बुध उच्च का नहीं हो सकता जब बुध उच्च में हो तो सूर्य शुक्र उच्च में नही हो सकते। ३९०—शनि देवलोकांश में, मंगल पारावतांश में और लग्न में सूर्य सिंहासनांश में हो तो वह मुनि तुल्य होगा [वृ० पा०]। ३९१—मेष लग्न हो, सूर्य मकर में या दशम में हो, गुरु कर्क में चतुर्थ स्थान में हो ३, ६, ११ में पाप ग्रह हों तो बड़ा मुनि होगा [स० चि०]। ३९२—चन्द्रमा क्षीण न हो मित्र गृही या उच्च का होकर लग्न या लाभ स्थान में हो, नवमेश बलवान् होकर सूर्य के साथ हो तो वह बड़ी आयु वाला मुनि होगा। ३९३—कर्क से मकर तक सब ग्रह गुरु चन्द्रादि होवें इस बीच में जिनके उच्च हैं वे उच्च राशियों में होवें तो वह मुनि तुल्य होगा [स० चि०]। ३९४—सूर्य बुध युक्त स्थिर राशि में, चन्द्रमा वृष का, शुक्र मिथुन का गुरु कर्क का लग्न में, शनि तुला का हो तो मुनि तुल्य हो [स० चि०]।

३९५ –चन्द्रमा देव लोकांश में, मंगल पारावतांश में, लग्न में सूर्य सिंहासनांश में हो [स० चि०]।

देव तुल्य ३९६—लग्न से लेकर क्रम से शनि सूर्य चन्द्र मङ्गल होवें वैशेषिकांशों में भी होवें तो देव तुल्य हो [जा०पारि०]। ३९५—त्रिकोण में पाप ग्रह न हो केन्द्रों में शुभ ग्रह न हो अष्टम भाव में भी पाप ग्रह न होवे तो मनुष्य देवता के तुल्य हो [स० चि०]। ३९६—शुक्र देवलोकांश में हो, मङ्गल केन्द्र में हो, गुरु सिंहासनांश में हो तो देव तुल्य होगा [स० चि०]।

ऋषि योग ३९७—सूर्य बुध सिंह में हों, चन्द्र वृष में, शुक्र मिथुन में, शनि तुला में, कर्क लग्न में गुरु हो [स० चि०]।

इन्द्रपद पावे ३९८—वृष लग्न में शुक्र हो, गुरु केन्द्र में हो और दूसरे ग्रह ३,६,१०,११, भाव में हों वह रसायन और मन्त्र बल से इन्द्र पदवी को प्राप्त करे [स० चि०]। ३९९—चन्द्रमा वृष का विशेषतः लग्न में बुध गुरु शुक्र से युक्त हो, शेष ग्रह घन भाव में हों [स० चि०]। ४००—गुरु स्वगृही लग्न या दशम भाव में हो, मिथुन का शुक्र केन्द्र में हो तो रसायन आदि प्रयोगों से बहुत वर्ष जिये और इन्द्र

पद पावे [स० चि०] । ४०१—गुरु स्वगृही लग्न में हो, मिथुन में कोई ग्रह न हो शुक्र केन्द्र में हो तो वह रसायन शास्त्र की सहायता से कई वर्ष जीवे इन्द्र लोक पावे [स० चि०]। गुरु केन्द्र में कन्या में होने से नीच का होता है मीन में हो तो अच्छा है [स० चि०]।

ब्रह्म पद पावे ४०२—कर्क लग्न हो, धनु के नवांश में हो, गुरु कर्क का हो ३-४ ग्रह केन्द्र में हों तो ब्रह्मपद पावे [जा०पारि०]। ४०३—लग्न वर्गोत्तम हो और वृष हो, ३,११ भाव में शुक्र हो और गोपुरांश में हो तो ब्रह्मपद पावे [स० चि०]। ४०४—कुंभ लग्न में गुरु हो, बुध गोपुरांश में पञ्चम भाव में हो तो ब्रह्मपद पावे [स० चि०]। ४०५—लग्न कर्क हो, शनि तुला का, गुरु मकर का, चन्द्र वृष का हो तो योग साधन और मन्त्र सिद्धि से ब्रह्मपद पावे [स० चि०]।

परमपद प्राप्ति ४०६—धनु लग्न में मेष का नवांश हो, शुक्र लग्न में हो, गुरु सप्तम हो, चन्द्र कन्या का हो तो वह परम पद पावे [स० चि०]। ४०७ जन्म में, धनु राशि में मेष का नवांश हो अर्थात् ८-१-२० लग्न हो उसमें गुरु हो, सप्तम भाव में शुक्र हो कन्या राशि में चन्द्र हो तो वह परम पद पावे अर्थात् मोक्ष पावे [जा० पारि०]। ४०८—३,११ भाव में शुक्र गोपुरादि शुभांशक में हो, वृष लग्न वर्गोत्तम हो, धनु लग्न में मेषांश का हो [स० चि०]। ४०९—लग्न में गुरु कुंभ का हो, पंचम बुध गोपुरादि अंशक में हो तो ब्रह्मपद पावे [स० चि०]।

योगज आयु पर विचार

यहाँ जो योगज आयुर्दाय कहा है वह शुभ कर्म करने वाले यशस्वी व पथ्य भोजन करने वाले एवं शुभाचरण वाले मनुष्यों को कहा है। धर्मिष्ट मनुष्यों का ही ग्रहों का बलाबल विचार कर आयु के योग पर विचारना।

गणित से जो आयु बताई है यदि हानि कारक ग्रह दशा कुंडली में हो तो वह आयु संभव नहीं होतो। वह आयु तब संभव होगी जब हानिकारक ग्रहों को दशा को शांत करने वाली स्थिति हो।

सर्व ग्रह अरिष्ट भंग योग

१—गुरु बलवान् होकर लग्न में हो तो सब आपत्तियों को दूर करता है। [स० चि०]। २—केन्द्र में बुध गुरु या शुक्र बलवान् हों पाप ग्रहों से युक्त या दृष्ट न हों [स० चि०]। ३—चन्द्र शत्रु राशि में भी हो यदि वह शुक्र या बुध के साथ और शुभ द्रेष्काण में हो ता सब आपत्तियाँ दूर होंगी। [स० चि०]। ४—चन्द्र यदि ६ या ८ भाव में हो, यदि चान्द्र मास के शुक्ल पक्ष में रात का जन्म हो, चन्द्रमा पर शुभ दृष्टि हो या यदि कृष्ण पक्ष में दिन का जन्म हो और चन्द्रमा पर पाप दृष्टि न हो तो सब अरिष्ट से रक्षा होगी [स० चि०]। ५—पूर्ण चन्द्र हो शुभ ग्रह के अंशक में शुभ राशि में और शुभ ग्रह से दृष्ट हो तो अरिष्ट का नाश हो [स० चि०]। ६—गुरु तेज प्रका-

शवान हो और केन्द्र में हो तो सब आपत्तियों से रक्षा करेगा [स० चिं०]। ७—गुरु बुध शुक्र चन्द्र यदि शुभ नवांश में हों तो अरिष्ट दूर हो [स० चिं०, । ये सौम्य गृह या सौम्य नवांश या सौम्य द्रेष्काण में हों [मान०]। ८—जन्म लग्नेश शुभ ग्रह केन्द्र में शुभ दृष्ट हो [स० चिं०]। ९—राहु लग्न से ३, ६, ११ घर में पाप रहित हो शुभ ग्रह से दृष्ट हो। १०—पूर्ण चन्द्र शुभ ग्रह युक्त व दृष्ट हो पाप युक्त न हो [स० चिं०]। ११ - पूर्ण चन्द्र पर सब पाप या शुभ ग्रहों की दृष्टि हो। १२—लग्न में शुभ राशि हो जिसमें शुभ ग्रह हो या शुभ ग्रह की दृष्टि हो और शुभ ग्रह बलवान् हो पाप ग्रह निर्बल हों [स० चिं०]। १३ —राहु मेष वृष का कर्क लग्न में हो [जा० पारि०]। १४—चन्द्रमा बलहीन हो परन्तु शुभ वर्ग में हो और उस पर शुभ दृष्टि हो। १५—पूर्ण चन्द्र शुभ ग्रहों से दृष्ट होकर उच्च का या स्वगृही हो या मित्र के वर्ग में या स्व वर्ग में हो शत्रु दृष्टि से रहित और पाप योग दृष्टि रहित हो तो कठिन अरिष्ट भी दूर हो [स०चिं०]। १६—चन्द्र राशि लग्न में शुभ दृष्ट होवे तथा चन्द्र पर शुक्र की दृष्टि हो चन्द्र उच्च में हो [स० चिं०]। १७—चन्द्रमा पाप राशि में हो उस राशि के स्वामी की दृष्टि हो शुभ ग्रह के अंशादि में हो [स० चिं०]। १८ —चन्द्र से ६, ७, ८ स्थानों में शुभ ग्रह हो।

अरिष्ट भंग

१९—अष्टमेश चन्द्रमा शुभ ग्रहों के द्रेष्काण में हो तो सदा रक्षा करता है क्लेश होकर भी बच जाता है [स० चि.]। २०—लग्नेश अति बली हो शुभ ग्रहों से युत या दृष्ट होकर केन्द्र में हो पाप दृष्टि रहित हो तो भाग्यवान् दीर्घायु हो, अरिष्ट दूर हों [स० चि.]। २१—लग्नेश शुभ या पाप ग्रह हो परन्तु उसे अपने अंशक सहित शुभ ग्रह देखते हों [स० चि.]। २२—लग्नेश बलवान् होकर केन्द्र या त्रिकोण में हो, केन्द्र गत शुभ ग्रहों से दृष्ट हो पाप ग्रहों से दृष्ट न हो तो अरिष्ट दूर होकर दीर्घायु हो लक्ष्मी युक्त रहे [जा. पारि.]। २३ —पापग्रह बलहीन हों शुभ ग्रह पूर्ण बली हों, लग्न में शुभ ग्रहों की राशि हो और लग्न को शुभ ग्रह देखते हों [जा. भ.]। २४—पाप ग्रह शुभ राशि में हों, शुभ ग्रह भी शुभ राशि में बैठकर उन पाप ग्रहों को देखते हों [जा. भ.]। २५—सम्पूर्ण ग्रह ३, ५, ७, ८, ११ राशियों में हों [जा. भ.]। २६—३,६,११ भाव में केतु मकर कुम्भ मीन राशि का हो [जा. भ.]। २७—३,६, ११ भाव में उच्च राशि का सूर्य हो पाप ग्रह से ग्रसित न हो [जा. भ.]। २८—३,६, ११ भाव में से किसी एक राशि में सब ग्रह हों [जा० भ०]। २९—चतुर्थ में गुरु धन या मीन राशि में हो उस पर बलवान् चंद्र की दृष्टि हो [जा० भ०]। ३०—वक्री शुभ ग्रह लग्न या केन्द्र में हो शुभ ग्रहों से दृष्ट हो [ल० चं०]। ३१—समस्त ग्रह शीर्षोदय ५, ६, ७, ८, ११, ३ राशियों में शुभ ग्रह के अंशक में होवें [स० चिं०] ३२—पाप ग्रहों पर शुभ ग्रहों की दृष्टि हो और शुभ वर्ग में हों [स० चिं०]।

३३—शनि तुला कुम्भ या मकर में हो या १,३,८ भाव में हो [ल० चं०]।
,, ,, ,, ,, १,३,६ ,, [मान०]।
३४—चन्द्रमा ६, ८ भाव में हो किसी ग्रह को दृष्टि न हो [वृ०जा०]। ३५—चन्द्रमा ६,८ भाव में हो व बुध गुरु शुक्र के नवांश में हो [जा०शा०]। ३६—गुरु या शुक्र १, ४, १०, ५, ९ या ११ भाव में हो [मान०]। ३७—एक भी उच्च का ग्रह केन्द्र में हो [मान०]। ३८—लग्न में बुध हो तो हजार दोष दूर करता है शुक्र हो तो १० हजार और गुरु हो तो १ लक्ष दोष शांत करता है [मान०]। ३९—स्वक्षेत्री या उच्च का गुरु केन्द्र त्रिकोण में हो [मान०]।

४०—लग्नेश बली होकर ३,११ या केन्द्र में हो [मान०]। ४१—अष्टम घर में चन्द्र हो बुध गुरु शुक्र के द्रेष्काण में हो [मान०]। ४२—छठे घर में चन्द्र शुभ ग्रह के द्रेष्काण में हो शुभ ग्रह बली हो [मान०]। ४३—पूर्ण बली चन्द्र दो सौम्य ग्रहों के बीच हो [मान०]। ४४—तत्काल युद्ध में जीतने वाले शुभ ग्रह पर शुभ ग्रह की दृष्टि हो [मान०]। ४५—जन्म लग्न से ३,६,११, १२ भाव में केतु हो [मान०]। ४६—बुध गुरु शुक्र त्रिकोण में हों [मान०]। ४७—षष्ठ में राहु समस्त ग्रहों से दृष्ट हो [जा० सं०]। ४८—चन्द्र से ६, ८ स्थानों में शुभ ग्रह हों पाप ग्रह न हों चन्द्र शुभ ग्रह से युक्त हो शुभ ग्रह के द्रेष्काण में हो [प्रा० यो०]। ४९—पूर्ण चन्द्र शुभ ग्रह युक्त १२ वें स्थान में हो [प्रा० यो०]। ५०—चन्द्रमा शुभ ग्रह की राशि का हो उस पर लग्नेश की दृष्टि हो अन्य ग्रह की दृष्टि न हो [प्रा० यो०]। ५१—चन्द्र से गुरु दशम, बुध शुक्र द्वादश, पाप ग्रह एकादश घर में व लग्नेश तृतीय, चतुर्थ या दशम में हो, या एकादश स्थान में हो, चन्द्र शुभ ग्रह युक्त या दृष्ट हो [जा० भरण]। ५२—जन्म राशीश बलिष्ट हो शुभ ग्रह से दृष्ट हो [प्रा० यो०]। ५३—रात्रि का जन्म हो चन्द्र पूर्ण हो वृष या कर्क राशि का (उच्च या स्वगृही) या वृष कर्क के नवांश में हो शुभ ग्रह की दृष्टि हो [जा०भ०]। ५४—त्रिपुष्कर योग पूर्ण हो [जा०भ०]।

त्रिपुष्कर योग	तिथि	वार	नक्षत्र
	२	शनिवार	विशाखा या
	७	मंगलवार	उत्तरा फाल्गुनी या
	१२	रविवार	पूर्व भाद्रपद, पुनर्वसु, कृतिका, उत्तराषाढ़ा

जब तिथि वार नक्षत्र उपरोक्त हो तब यह योग होता है।

५५—पुष्य नक्षत्र के दूसरे या तीसरे चरण, रोहिणी के दूसरे चरण में चंद्र शुभ ग्रह से युक्त या दृष्ट हो [मान०]। ५६—केन्द्र में कर्क या मेष का चन्द्र हो उस पर शुभ ग्रह की दृष्टि हो यदि चन्द्र क्षीण भी हो तो अरिष्ट भंग हो [जा०भ०]। ५७—क्षीण चन्द्र सप्तम में हो शुभ ग्रह लग्न में हो केन्द्र में दो-दो ग्रह हों [जा०भ०]। ४८—पूर्ण चन्द्र हो और लग्न में गुरु हो [प्रा० यो०]। ५९—पाप ग्रह शुभ ग्रह के

षड वर्ग में हो शुभ ग्रह से दृष्ट हो [मान०]। ६०--सूर्य उपचय स्थान में हो पाप युक्त न हो [मान०]।

अरिष्ट भंग योग

६१—सर्व ग्रह उपचय स्थान में हों (मान०)। ६२—लग्न से या चन्द्र से २ ग्रह, ३ ग्रह या बहुत ग्रह एक राशि छोड़ कर एक ठिकाने हों (मान०)। ६३—गुरु स्वक्षेत्री का चतुर्थ में हो उस पर पूर्ण चन्द्र की दृष्टि हो (मान०)। ६४—लग्न, धन या द्वादश स्थान में ३-३ ग्रह हों (मान०)। ६५—शुक्लपक्ष में जन्म हो लग्न पर शुभ ग्रह की दृष्टि हो या कृष्ण पक्ष में जन्म हो लग्न पर पाप ग्रह की दृष्टि हो तो सब अरिष्ट नाश हो जाते हैं (वृ० पा०)। ६६—पाप ग्रह शुभ ग्रहों के बीच हों या केन्द्र त्रिकोण में शुभ ग्रह हों तो सब अरिष्ट नाश हो (वृ० पा०)। ६७--मंगल यदि गुरु से युक्त या दृष्ट हो (वृ० पा०)। ६८--लग्नेश लग्न में हो सब ग्रहों को उस पर दृष्टि हो (जा० भ०)। ६९--दशा के आरम्भ समय में कोई ग्रह अधिमित्र के घर में हो और शुभ ग्रह या मित्र ग्रह की दृष्टि हो तो अरिष्ट दूर हो (श्रीधर)। ७०–जन्म समय आकाश निर्मल हो ग्रह स्वस्थ हो मेघ नील वर्ण वाले साफ हों मंद-मंद पवन चलता हो शुभ मुहूर्त हो ऐसे समय जन्म हो तो सब अरिष्ट भंग हो (जा० भ०)। ७१--जन्म समय तारा उदय हो तथा मारीच आदि सप्त ऋषियों का उदय हो (स० चि०)। ७२--जन्म सायं या प्रातः संध्या में हो या वैधृति व्यतीपात योग में या भद्रा में या गंडांत काल में जन्म हो और सब ग्रह दृश्य भाग लग्न से लेकर सातवें भाव तक हों तो सब अरिष्ट भंग हो (जा० भ०)। ७३--चन्द्र, चन्द्र स्थान का स्वामी, और लग्नेश ये तीनों अच्छे स्थान में हों शुभ ग्रह से युक्त या दृष्ट हों और अधिक गुण (उच्चादि) में हों वह समय जातक को अति शुभ और लाभदायक है (फल०)। ७४--गुरु पूर्ण बली हो पूर्ण किरण से प्रकाशित हो यदि वह लग्न में हो तो कई अरिष्ट जो दूसरे प्रकार से दूर करना कठिन है वह सब दूर कर सकता है (फल०)। ७५--पूर्ण चन्द्र यदि केन्द्र त्रिकोण या ग्यारहवें भाव में हो साथ ही सूर्य चन्द्र या गुरु की राशि या नवांश में हो तो सब दोषों को पूर्ण रूप से दूर कर सकता है (फल०)। ७६- चन्द्रमा लग्न से ६, ८, १२ भाव में भी हो परन्तु शुभ दृष्ट हो (ज्यो० र०) ७७--केन्द्र या आपोक्लिम या पणफर में सब ग्रह हों और शुभ ग्रह के नवांश में हों (जा० भ०)। ७८--३,६,११ भाव में मंगल शनि राहु एकत्र या दो या एक हो हों (ज्यों० र०)।

रिष्टकर और रिष्टभंगकर विचार

अरिष्ट करने वाले ग्रह को रिष्टकर और अरिष्ट भंग करने वाले ग्रह को रिष्टभंगकर ग्रह कहते हैं।

अल्पायु योग आदि जो पहिले बता चुके हैं वे सब अरिष्ट कारक योग हैं अंत में अरिष्ट भंग योग ऊपर बताया गया है।

पहिले देख लेना चाहिये कि अरिष्ट तो नहीं है, इसमें गणितागत आयु लागू होगी या नहीं। कई ग्रह अरिष्ट कारक हों तो उनमें जो बली हो वही रिष्टकर ग्रह होगा। इसी प्रकार रिष्ट भंग करने वाले योगों में जो ग्रह बली हो वह लेना फिर रिष्टकर और रिष्ट-भंगकर ग्रहों के बलावल पर विचार कर देखना कि कौन बली है। रिष्टभंगकर ग्रह बली होंगे तो अरिष्ट नहीं होगा।

इसका विचार गणित खंड में दिया है जिससे प्रगट होगा कि शुभत्व कितना है और अशुभत्व कितना है।

यहाँ स्थूल रूप से उसका विचार बताया जाता है रिष्टेश और भंगेश दोनों प्रकार के ग्रहों में देखो '

(१) ग्रह शुभ है या पाप (२) उसका प्रभाव सब 'मिलाकर अच्छा है या बुरा (३) उसकी स्थिति क्या है। उच्च राशि, मूल त्रिकोण, स्वगृही, मित्र क्षेत्री, शत्रु क्षेत्री, नीच अस्तंगत आदि में कैसा है।

फिर वर्गों में एक दूसरे का बल घटाकर अंतर निकालना। रिष्ट बड़ा हो तो रिष्ट होगा यदि भंगेश्वर बड़ा हो तो रिष्टकर का बुरा प्रभाव निकल जायगा। यदि दोनों बराबर हों या बहुत अधिक अंतर न हो तो रिष्ट नहीं होगा।

इसके लिए ग्रहों का राशि होरा द्रेष्काण आदि वर्ग ऊपर बताये प्रकार से अच्छा या बुरा प्रभाव है।

अर्थात् स्वामी की स्थिति उच्च मूल त्रिकोण स्वक्षेत्र अधिमित्र, मित्र, सम, शत्रु, अधिशत्रु के घर का है बलवान् या निर्बल है, ग्रह की युद्ध में स्थिति, अस्तंगत नीच आदि के कारण स्थिति। इन परिस्थितियों को अच्छी प्रकार तौलना चाहिये। फिर उनकी अच्छी या बुरी स्थिति पर से विचारना कि रिष्ट होगा या नहीं होगा।

साधारण प्रकार से उनकी वर्ग में अच्छी और बुरी स्थिति को इस प्रकार नम्बर देना।

१--मित्र अधिमित्र मूल त्रिकोण आदि अच्छे घर का--१ नम्बर

२--शत्रु अधिशत्रु आदि बुरे घर का--१ नम्बर

३--शुभ और पाप ग्रह को अच्छा या बुरा--१-१ नम्बर

४--उच्च और युद्ध जय को अच्छा--४ नम्बर

५--नीच अस्तंगत युद्ध में हारा--४ नम्बर

६--समत्व को कुछ नहीं गिना गया।

कल्पित उदाहरण--मानलो शनि अरिष्ट कर और मंगल अरिष्ट हर है--

वर्ग	मंगल	शनि		मंगल अरिष्ट हर		अच्छा	बुरा	शनि अरिष्टकर		
१ गृह	८ स्व०	५ शत्र	गृह	स्व०		१	०	सूर्य	०	१
२ होरा	४ मित्र	५ शत्रु		मंगल		०	१	शत्रु	०	१
	नीच		होरा	नीच		०	४	सूर्य	०	१

वर्ग	मंगल	शनि		मं० अ० हर	अच्छा	बुरा	शनि अ० कर		
३ द्रेष्काण	१२ मित्र	५ शत्रु		चन्द्र	१	०	शत्रु	०	१
			द्रेष्का०	मित्र	१	०	सूर्य	०	१
४ सप्तांश	४ मित्र नीच	६ मित्र		गुरु	१	०	शत्रु	०	१
५ नवमांश	७ सम	३ मित्र	सप्तां०	नीच	०	४	बुध	१	०
६ द्वादशांश	१२ मित्र	८ शत्रु		चन्द्र	१	०	मित्र	१	०
७ त्रिंशांश	१२ मित्र	११ स्व०	नवां	सम	०	०	बुध	१	०
				शुक्र	१	०	मित्र	१	०
			द्वाद०	मित्र	१	०	मंगल	०	१
				गुरु	१	०	शत्रु	०	१
			त्रिशां०	मित्र	१	०	शनि	०	१
				गुरु	१	०	स्व०	१	०
				योग	१०	९		५	९
				शेष	+१		शेष	−४	

यहाँ रिष्ट हर मंगल का हित १०−९ अहित=शेष + १ हित रिष्ट कर शनि का हित ५−९ अहित = शेष −४ अहित + १ हित −४ अहित= −३ अहित = अरिष्ट अधिक होने से अरिष्ट होगा।

———

अध्याय ९

मारक स्थान

मारक स्थान—लग्न से तृतीय और अष्टम स्थान ये दोनों आयुर्दाय के स्थान हैं। इन दोनों के व्यय स्थान अर्थात् द्वितीय और सप्तम स्थान मारक स्थान हुए। इनमें सप्तम से द्वितीय स्थान अति प्रबल है मारक का अर्थ यह है कि मार डालने वाला या अरिष्ट उत्पन्न करने वाला स्थान। इन स्थानों के स्वामी या इनसे सम्बन्ध रखने वाले ग्रह अरिष्ट उत्पन्न करते हैं। इन ग्रहों की दशा में अरिष्ट या मृत्यु होती है। इन सब में जो प्रबल ग्रह हो वही मारकेश होगा।

मारकेश—२ और ७ मारक स्थान हैं। इनके स्वामी साधारण प्रकार से मारकेश ग्रह कहलाते हैं।

मारक ग्रह—२ और ७ स्थान में स्थित पाप ग्रह तथा द्वितीयेश और सप्तमेश के साथ रहने वाला पाप ग्रह भी मारक ग्रह है।

मारकेश विचार

१—साधारणतः २ और सात भाव के स्वामी मारक हैं। २—ग्रह जो २, ७ भाव में हैं या इन भावों पर जिनकी दृष्टि है। ३—सूर्य चन्द्र को छोड़कर मारक स्थान के स्वामी होने से सब ग्रह मारक होते हैं। ४—६,८,१२ स्थान के स्वामी और राहु-केतु भी मारक स्थान में पड़ने से मारक होते हैं। ५—उपरोक्त प्रकार से मारकेश प्रकट न हो तो व्ययेश से युक्त शुभ ग्रह या ३,८ भाव के स्वामी या षष्ठेश मारक होता है। ६—आत्म कारक या लग्न से तृतीयेश, षष्ठेश, अष्टमेश और द्वादशेश में जो बली हो वह मारक होता है। ७—शुभ ग्रह ३,६ भाव के स्वामी हों व स्वोच्च मूल त्रिकोण में हों और इनका शुभ ग्रहों से सम्बन्ध हो तो मारक नहीं होते। ८—शुभ ग्रह गुरु शुक्र केन्द्रेश होने से दोष युक्त होते हैं। ये यदि मारक स्थान में हों विशेष कर द्वितीय स्थान में या इन स्थानों के स्वामी हों तो प्रबल मारक होते हैं। ९—द्वितीयेश, सप्तमेश या अष्टमेश मारकेश होते हैं परन्तु शनि और केतु महा मारक हैं। यदि षष्ठ स्थान में बहुत पाप ग्रह हैं तो षष्ठेश भी मुख्य मारक होता है। १० शनि, मांदि, राहु, गुलिक और अष्टमेश जहाँ हों उनके राशि का नवांश स्वामी भी मारक होता है। ११—विपत्ति और प्रत्यरि तारा (जन्म नक्षत्र से तीसरे और पाँचवें नक्षत्र के स्वामी) तथा वध तारा (जन्म नक्षत्र से ७ वाँ तारा) इनके स्वामी भी मारक होते हैं। जैसे धनिष्ठा नक्षत्र का जन्म है तो उससे तीसरा पूर्व भाद्रपद और पाँचवाँ रेवती, सातवाँ भरणी नक्षत्र हुए। जन्म नक्षत्र का जो चरण हो उससे ४-४ चरण का एक नक्षत्र जानना। जैसे धनिष्ठा के तीसरे चरण का जन्म है तो पूर्वभाद्र पद का तीसरा चरण कुम्भ राशि आया जिसका स्वामी शनि है, रेवती की मीन का स्वामी गुरु और भरणी की मेष का स्वामी मंगल हुआ ये भी मारक हुए।

मारकेश पर विचार—सबसे पहिले यह देखना कि कुण्डली में अल्प, मध्य या पूर्णायु में क्या है। ग्रह की दशा निकाल कर यह जान लेना चाहिये कि अल्पादि आयु अनुमान से किस ग्रह की दशा में पूर्ण होगी। उस ग्रह की अन्तर्दशा आदि निकाल कर कौन ग्रह मारक हो सकता है इसका विचार करना चाहिये।

मारकेश अपनी अन्तर्दशा में मृत्यु का अरिष्ट करता है मारक ग्रह अपनी दशा में मारक प्रभाव नहीं करते। विदशा, सूक्ष्म दशा, प्राणदशा ग्रहों की इनमें कौन मारक है यह निश्चय करना चाहिये। बली क्रूर ग्रहों से सम्बन्ध होने से उनकी दशा में मारक ग्रह प्रभाव करते हैं।

इस सम्बन्ध में मारकेश या मारक ग्रह का कब प्रभाव होगा, निम्न बातों पर विचार करना :—

१—जब २ या ७ भाव के स्वामी की महा दशा हो उसके अन्तर में किसी दूसरे मारक ग्रह की अन्तर्दशा हो। २—२, ७ भाव के स्वामी में से किसी मारकेश की महा-दशा हो और उसके अन्दर अष्टमेश की अन्तर्दशा हो। ३—अष्टमेश शुभ ग्रह की

अन्तर्दशा हो उसका त्रिकोण के स्वामियों से कोई सम्बन्ध न हो। ४—इधर मारकेश के अन्दर अष्टमेश की दशा हो। ५—मारकेश को महादशा के भीतर ऐसे अष्टमेश की दशा हो जो शुभ तो हो परन्तु त्रिकोण के अशुभ गृह स्वामियों से सम्बन्ध न हो। ६—किसी मारकेश की महादशा के भीतर केन्द्रवर्ती शुभ ग्रह का अन्तर आवे। ७—मारकेश की महादशा के भीतर केन्द्र स्वामियों की अन्तर्दशा हो जो शुभ ग्रह हों। (केन्द्रेश शुभ ग्रह अच्छे नहीं होते)। ८—किसी मारकेश को महादशा के भीतर द्वादशेश की अन्तर्दशा हो जो शुभ ग्रह न हो। ९—मारकेश की महादशा के भीतर ऐसे द्वादशेश की अन्तर्दशा हो जो शुभ ग्रह हो ५, ९, १, ४, १० भाव के स्वामियों से संबन्ध न रखता हो। १०—मारकेश की महादशा के भीतर त्रिषडाय स्थान के स्वामियों की अन्तर्दशा हो। ११—व्ययेश को महादशा में धनेश की अन्तर्दशा या धनेश के भीतर व्ययेश को अन्तर्दशा हो। १२—वे ग्रह जो धनेश और व्ययेश के साथ हों। १३—अष्टमेश की महादशा में षष्ठेश का अन्तर या षष्ठेश के भीतर अष्टमेश का अन्तर। १४—व्यय भाव में जो ग्रह हों कभी-कभी उनके अन्तर में। १५—मारकेश की महादशा में मारक स्थान में स्थित क्रूर ग्रह की अन्तर्दशा में। १६—पाप ग्रह में पाप ग्रह का अन्तर। १७—शनि पाप ग्रहों से युक्त हो तो सबको दबाकर मृत्यु कारक होता है। १८—जब चन्द्र दुष्ट स्थान में पड़े तो उसकी अन्तर्दशा में। १९—२, ७, १२, ८, ६ या ३ भाव के स्वामियों की अंतर्दशा में। २०—बारहवें या १०वें स्थान में केतु हो उस पर पाप ग्रह की दृष्टि हो तो उसकी अन्तर्दशा में। यदि शुभग्रह देखते हों तो मारक नहीं होता है। २१—षष्ठेश की दशा भी मारक होती है।

इन सब पर विचार करना चाहिये इन सबमें जो बलवान् होता है उसको दशा अन्तर्दशा में मृत्यु होती है वही मारक ग्रह कहलायेगा।

ऊपर जो विचार बताया है उसमें कुछ बातें ऊपर बताये के अनुकूल हों कुछ प्रतिकूल हों अर्थात् सब बातें पूरी न हों तो शुभाशुभ से मिश्रा फल होता है मरण तो नहीं होता मरण तुल्य कष्ट होता है।

बहुत से ग्रह बलवान् होकर मारकेश हों तो उनकी दशा में रोग कष्ट आदि होता है। बलवान् मारक ग्रह की दशा में मृत्यु या मृत्यु के तुल्य महारोग, भय, शोक, चोर अग्नि भय आदि कष्ट होता है।

लग्न के अनुसार शुभा-शुभ व मारक विचार

अन्तर्दशा में त्रिकोण के स्वामी शुभ होते हैं। त्रिषडाय (३,६,११ भाव) के स्वामी साहचर्य वश शुभा-शुभ होते हैं। केन्द्रेश—सम। केन्द्रेश पाप ग्रह शुभ, शुभ ग्रह—अशुभ होते हैं।

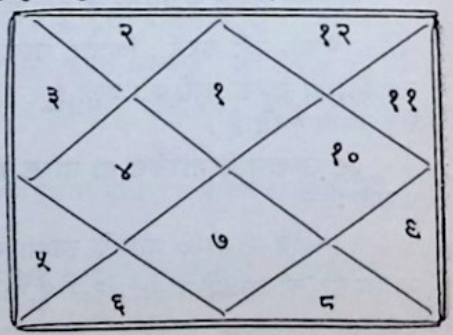

उदाहरण—

(१) जन्म मेष लग्न—मंगल अष्टमेश होने पर भी लग्नेश होने के कारण अशुभ फल नहीं देगा। शुभ फल दायक ग्रह का सहायक होगा अर्थात् शुभ कारक ग्रह की दशा में अपनी अंतर्दशा में शुभ फल को बढ़ावेगा। पाप ग्रह की दशा में पाप फल को घटायेगा।

२, ७ भाव का स्वामी होने से शुक्र, ३, ६ का स्वामी होने से बुध और ११ स्थान का स्वामी होने से शनि ये तीनों पाप फल दायक होंगे ५,९ भाव के स्वामी होने से सूर्य और गुरु शुभदायक होंगे। गुरु द्वादशेश होने पर त्रिकोण नवम भाव का स्वामी होने से भी शुभ है। पर द्वादशेश होने से शनि आदि पापी के संयोग होने से साहचर्य वश पाप फल ही देगा।

शनि केन्द्रेश होने से शुभत्व नाश होने पर भी लाभेश होने के कारण पाप हुआ। चन्द्र केन्द्रेश होने से सम हुआ, यहाँ शुक्र २,७ का स्वामी होने से प्रबल मारक हुआ। मारकेश से सम्बन्ध होने पर बुध और शनि भी मारक हो सकेंगे।

(२) वृष लग्न—८, ११ भाव का स्वामी होने से गुरु, षष्ठेश होने से शुक्र, तृतीयेश होने से चन्द्र यहाँ पाप फलदायक हुए। त्रिकोणेश होने से शनि, त्रिकोणेश बुध शुभ हैं। मंगल सप्तमेश और व्ययेश होने से, गुरु अष्टमेश और लाभेश होने से, शुक्र षष्ठेश होने से पाप फल प्रद होंगे। सूर्य पाप ग्रह केन्द्रेश होने से शुभ है।

इस प्रकार गुरु शुक्र चन्द्र पाप फल प्रद, शनि, सूय शुभ, बुध अल्प शुभ प्रद है। क्योंकि वह दूसरे स्थान का भी स्वामी है। शनि राजयोग कारक है। यहाँ गुरु शुक्र मंगल ये मारक होते हैं।

(३) मिथुन लग्न—मंगल (६,११ का स्वामी) गुरु (७,१० का स्वामी), सूर्य (तृतीयेश) ये पाप फल प्रद हैं। शुक्र (पंचमेश व्ययेश) शुभप्रद है। शनि (अष्टमेश-नवमेश) योग कारक होकर भी गुरु के योग से पूर्ण योग फल नहीं होता। चन्द्रमा (द्वितीयेश) मुख्य मारक होकर भी नहीं मारता। मंगल गुरु सूर्य मारक हो सकते हैं।

(४) कर्कलग्न—शुक्र (लाभेश, चतुर्थेश), बुध (तृतीयेश, व्ययेश) पाप फल प्रद हैं। चन्द्र (लग्नेश), मंगल (पंचमेश, दशमेश), गुरु (षष्ठेश, नवमेश) शुभ हैं। मंगल विशेष योग कारक है। शनि (सप्तमेश, अष्टमेश) मारक है। सूर्य (द्वतीयेश) साहचर्य से फल देता हैं।

(५) सिंह लग्न—बुध (द्वितीयेश, लाभेश), शुक्र (तृतीयेश, दशमेश), शनि (षष्ठेश, सप्तमेश), ये पाप फल प्रद हैं। मंगल (चतुर्थेश, नवमेश), गुरु, (अष्टमेश, पंचमेश), सूर्य लग्नेश शुभ प्रद हैं। किन्तु गुरु और शुक्र के सम्बन्ध मात्र से ही शुभ फल नहीं होता। शनि (षष्ठेश सप्तमेश) मारक है। चन्द्र (व्ययेश) साहचर्य से फल प्रद होगा।

(६) कन्या लग्न—मंगल (तृतीयेश, अष्टमेश), गुरु (चतुर्थेश, सप्तमेश), चन्द्र (लाभेश) पाप फल प्रद है। शुक्र (द्वितीयेश, नवमेश), बुध (लग्नेश, दशमेश),

ये शुभ हैं और योग कारक हैं। शुक्र मारकेश होने पर भी नवमेश होने के कारण नहीं मारता। सूर्य (व्ययेश) साहचर्य से फलप्रद है यहाँ मंगल और गुरु मारक होंगे।

(७) तुला लग्न—गुरु (तृतीयेश, षष्ठेश), सूर्य (लाभेश), मंगल (द्वितीयेश, सप्तमेश) पाप फल प्रद हैं। शनि (चतुर्थेश, पंचमेश), बुध (नवमेश, व्ययेश) शुभ हैं। चन्द्रमा (दशमेश) है यहाँ चन्द्रमा और बुध ये राजयोग कारक हैं। मंगल मारक है। सूर्य गुरु भी मारक लक्षण वाले हैं। शुक्र (लग्नेश और अष्टमेश दोनों होने से सम है।

(८) वृश्चिक लग्न—बुध (अष्टमेश, लाभेश), शुक्र (सप्तमेश व्ययेश) शनि (तृतीयेश, चतुर्थेश) पाप फल प्रद है। गुरु (द्वितीयेश पंचमेश) चन्द्र (नवमेश) शुभ हैं। सूर्य (दशमेश) और चन्द्र ये राजयोग कारक हैं मंगल षष्ठेश लग्नेश का सम है। गुरु मारकेश होने पर भी त्रिकोणेश होने के कारण नहीं मारता। शुक्र, बुध, शनि, पापी ग्रह मारक लक्षण वाले ग्रह होते हैं।

(९) धनु लग्न—शुक्र (षष्ठेश, लाभेश) पाप प्रद है। सूर्य (नवमेश) मंगल (पंचमेश, व्ययेश) शुभ हैं। बुध सप्तमेश दशमेश है यहाँ सूर्य और बुध योग कारक हैं। चन्द्र अष्टमेश है। शनि (द्वितीयेश, तृतीयेश) मुख्य मारक और पाप ग्रह हैं। शुक्र भी पापी होने के कारण मारक लक्षण युक्त है। गुरु (चतुर्थेश और लग्नेश) सम है।

(१०) मकर लग्न—मंगल (चतुर्थेश लाभेश) गुरु (तृतीयेश व्ययेश) चन्द्र (सप्तमेश) पाप फल प्रद हैं। शनि द्वितीयेश लग्नेश मारक होने पर भी स्वयं नहीं मारता। मंगल गुरु चन्द्र मारक होते हैं। शुक्र सुयोग कारक है। सूर्य अष्टमेश है।

(११) कुम्भ लग्न—गुरु (द्वितीयेश लाभेश), चन्द्र षष्ठेश, मंगल (तृतीयेश दशमेश) पाप फल प्रद हैं। शुक्र (चतुर्थेश नवमेश) शुभ हैं। शनि (व्ययेश, लग्नेश), सम। सूर्य सप्तम होने से मारक है यहाँ गुरु सूर्य मंगल मारक होंगे। बुध (अष्टमेश पंचमेश) मध्यम फल प्रद है।

(१२) मीन लग्न—शनि (दशमेश, लाभेश), शुक्र (तृतीयेश, अष्टमेश), बुध (चतुर्थेश, सप्तमेश) सूर्य (षष्ठेश) पापप्रद हैं। मंगल (द्वितीयेश, नवमेश), चन्द्र (पंचमेश) शुभ है। गुरु (दशमेश, लग्नेश) और मंगल राजयोग कारक है। मंगल मारकेश होकर भी नहीं मारता। बुध और शनि यहाँ मारक हैं।

इस प्रकार मारक ग्रहों का विचार होता है। सूर्य चन्द्र को छोड़कर सब ग्रह मारकेश होने पर मारक होते हैं। मारक ग्रह बहुधा अपनी दशा में नहीं मारता। पाप फलप्रद ग्रह की अंतर्दशा में मारता है शुभ प्रद ग्रह की दशा में नहीं मारता।

अन्य रीति से मारकेश विचार—

मांदि ग्रह से भी मारकेश निकाला जाता है।

दिन सूर्योदय से घटी	इतवार २६ वाँ	सोमवार २२	मङ्गल १८	बुध १४	गुरु १०	शुक्र ६	शनि २ (दूसरा)

जिस लग्न में मांदि ग्रह है वही मारकेश समझना। वहाँ २-३ ग्रह हों तो उनमें जो बलवान् होगा वही मारकेश होगा। वहाँ कोई ग्रह न हो तो मांदि लग्न का स्वामी ही मारकेश होगा।

इष्ट दिन को कितनी घड़ी पर मांदि है ऊपर दिया है मान लो मङ्गलवार के दिन किसी का जन्म १५-५१ पर हुआ उस समय रा० ११-५° का दिनमान २६-५४ था।

मङ्गलवार को १८ वीं घड़ी पर मांदि है जैसा ऊपर चक्र में बताया है १८ वीं घड़ी इष्ट पर उस दिन का लग्न निकाला कर्क मांदि लग्न आई। कुण्डली में कर्क में कोई ग्रह नहीं था इससे कर्क का स्वामी चन्द्र ही मारकेश हुआ।

इसको गणित से इस प्रकार भी निकालते हैं—(दिनमान × उपरोक्त मांदि ध्रुवांक) = ३० मांदि इष्ट। इस पर से लग्न निकाल लो।

यहाँ दिनमान घ०२९प०५४ × मङ्गलवार का ध्रुवांक १८=(५७७-४८) ÷ ३० = घ०१८ प०३५ वि०३६ मांदि इष्ट आया। इस पर से लग्न निकाला तो कर्क के १ अंश आया। कर्क मांदि लग्न आया। यहाँ कर्क का स्वामी चन्द्रमा मांदि ग्रह मारक हुआ। चन्द्रमा मारकेश नहीं होता इससे मारक ग्रह का विचार ग्रह परिस्थितियों पर से करना होगा।

मारक ग्रह निश्चित करना

शनि मांदि गुलिक, राहु और अष्टमेश जहां हो उनकी राशि का नवांश स्वामी जातक को मारक होता है जबकि इनमें से किसी खराब ग्रह की दशा हो और शनि उससे अष्टम में आवे।

उदाहरण—लग्न कुण्डली

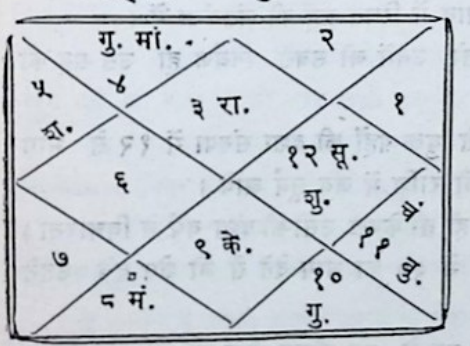

नवांश कुण्डली

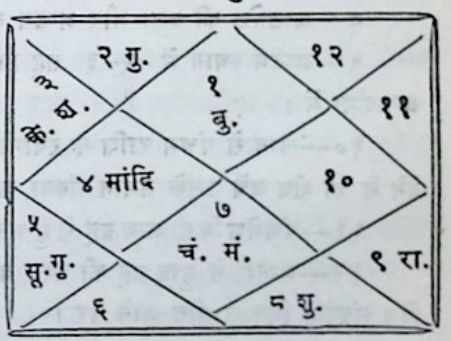

लग्न से अष्टमेश शनि है। चन्द्रमा से अष्टमेश बुध है जो लग्नेश भी है और त्रिकोण में है। यहाँ अष्टमेश स्वतः शनि ही है। बुध है।

नवांश में यह शनि ३ भाव में है जिसका स्वामी

गुलिक	५	,,	,,	,,	सूर्य हैं	सूर्य चन्द्र को छोड़कर
मांदि	४	,,	,,	,,	चन्द्र	यहाँ बुध और गुरु ही
राहु	९	,,	,,	,,	गुरु	मारक हुए।

इन दोनों में गुरु निर्बल है। लग्न कुण्डली में नीच का है और नवांश कुण्डली में अपने शत्रु शुक्र के घर में है। जिसकी दृष्टि भी है इससे गुरु मारकेश हो सकता है। लग्न कुण्डली में भी यह गुरु शुभ ग्रह केन्द्रेश होने से और अष्टम में होने से खराब है इसके सन्मुख मांदि और गुलिक भी है।

नवांश कुण्डली में मांदि कर्क का है इससे शनि जब गोचर में कर्क का होगा या कर्क से अष्टम में अर्थात् कुम्भ में होगा तब मृत्यु संभव है जबकि गुरु की अन्तर्दशा या प्रत्यन्तर दशा हो।

मृत्यु समय

१—जन्म काल में बलहीन लग्न हो तो लग्नेश अष्टमेश की दशा कष्ट देने वाली होती है और दशा के अन्त में सुख होता है। परन्तु लग्नेश बली हो तो अष्टमेश की दशा में मृत्यु होती है।

२—अष्टमेश बली हो तो लग्नेश की दशा में मृत्यु होती है।

३—शनि लग्न या अष्टम में हो तो उसकी दशा अन्तर्दशा में मृत्यु होती है।

४—लग्नेश और अष्टमेश जिस ग्रह से युत हो वह निर्बल हो तो उसकी दशा अन्तर्दशा में मृत्यु हो।

५—लग्नेश अष्टम में या पाप ग्रहों से युक्त अष्टमेश अस्त हो या शत्रु गृह में हो तो मृत्यु हो।

६—अष्टमेश ६,८,१२ भाव में कहीं हो तो उसकी अंतर्दशा में।

७—शनि जिस स्थान में हो उस स्थान के स्वामी की दशा और अष्टमेश की अन्तर्दशा में।

८—अष्टमेश की दशा और अष्टम स्थान में स्थित ग्रह की अंतर्दशा में।

९—अष्टम स्थान में २-३ ग्रह हों तो उनमें जो सबसे निर्बल हो उस ग्रह की अन्तर्दशा में।

१०—लग्न से पंचम राशि के स्वामी से युक्त ग्रहों की दशा संख्या में १२ से भाग देने से जो शेष बचे उसके समान संख्या वाली राशि में जब सूर्य आवे।

११—पंचमेश किसी अन्य ग्रह से युक्त न हो तो केवल उसी की दशा वर्ष से विचारना।

१२—लग्नेश से युक्त ग्रह की दशा वर्ष में ३० का भाग देने से जो शेष बचे उतने दिन संक्रांति दिन से बीत जाने पर।

१३—लग्नेश अष्टमेश दोनों किसी भी ग्रह से युत होकर केन्द्र या कोण में स्थित हो तो अष्टम स्थान में स्थित ग्रह की दशा में निश्चय मृत्यु होगी।

१४—लग्नेश अष्टमेश दोनों ६,१२ घर में होकर राहु या केतु के साथ हो तो लग्नेश या अष्टमेश से युक्त ग्रह की दशा में मृत्यु होगी। अन्य मत लग्नेश किसमें शेष उपरोक्त।

१५—यदि दोनों के साथ कोई भी ग्रह न हों तो उनसे युक्त राशि स्वामी की दशा में।

१६—पूर्वोक्त ग्रहों की दशा में राहु की अन्तर्दशा आने पर मुख्य मारक होता है।

१७—नक्षत्र आयुर्दाय साधन से जो वर्ष प्रमाण आयु निकलती है ठीक उसी समय किसी का मरण हो जाय ऐसा नियम नहीं है उसके आगे-पीछे भी प्रबल मारकेश की दशा अंतर्दशा प्राप्त होने पर मृत्यु होती है।

१८—२,७ भाव के स्वामी की दशा अंतर्दशा में व मारक स्थान में जो पाप ग्रह हो या मारकेश ग्रह के साथ जो पाप ग्रह हो उसकी दशा अंतर्दशा में संभव रहने पर गणितागत आयु की समाप्ति समय आने पर मरण होता है।

१९—इसके असंभव होने पर अर्थात् मारक स्थान में कोई भी पाप फल दायक ग्रह न होवे और मारकेश के साथ भी कोई ग्रह न हो तो उस परिस्थिति में लग्न से व्ययेश ग्रह की दशा में मारकेश की अंतर्दशा आने पर मरण होगा।

२०—मारक स्थान २,७ के स्वामी और मारक स्थान में रहनेवाला या मारकेश के साथ रहनेवाला और त्रिषडाय आदि स्थान के स्वामी ग्रह इस प्रकार ३ मुख्य मारक हैं।

इनमें द्वितीयेश सबसे प्रबल है उससे न्यून सप्तमेश है, उससे न्यून द्वितीय स्थान में रहनेवाला ग्रह, उससे न्यून द्वितीयेश के साथ रहनेवाला ग्रह, उससे न्यून सप्तम में रहनेवाला ग्रह, उससे न्यून सप्तमेश के साथ रहनेवाला पापी ग्रह मारक होता है इनमें जो प्रबल मारकेश हो उसमें से किसी एक की दशा में और दूसरे की अंतर्दशा आने पर संभव रहने पर मरण होगा।

२१—इन मारक सम्बन्धी ग्रहों के असंभव होने पर द्वादशेश की दशा में मारकेश का अंतर आने पर मरण होगा।

२२—उपरोक्त मारकेशों की दशा न आने पर व्ययेश के सम्बन्ध रखने वाले शुभ ग्रहों की दशा में भी और कभी अष्टमेश की दशा में भी मरण होता है।

२३—यदि मारकेश सम्बन्धी शुभ और अष्टमेश की दशा न हो तो केवल मारकेश के सम्बन्ध बिना ही पाप फल देने वाले ग्रहों की दशा में मरण होता है।

मारकेशों में व्ययेश निर्बल है उसके सम्बन्ध से भी शुभ ग्रहों में मारकत्व आ जाता है तब मुख्य मारकेशों से सम्बन्ध रखने वाले ग्रहों में भी क्यों नहीं मारकत्व आयगा।

२४—३,६ आदि अशुभ स्थान के स्वामी होने से यदि पाप कारक शनि का मारक ग्रहों से सम्बन्ध हो तो अन्य सब मारक को हटाकर अकेला शनि ही कारक होता है। शनि तो बिना मारक के सम्बन्ध के ही साधारण प्रकार से मारक होता है तब मारकेश से सम्बन्ध होने से प्रबल मारक होगा ही। त्रिषडाय आदि का स्वामी होने से पाप कारक होकर शनि मारक हो जाता है।

२५—यदि क्रूर ग्रह की महादशा में क्रूर ग्रह का ही अन्तर हो चाहे शत्रु ग्रहों से या मित्र ग्रहों से योग हो तो जातक की मृत्यु हो जाती है।

२६—मंगल की दशा में शनि की अंतर्दशा हो तो चिर जीवी भी मृत्यु को प्राप्त हो।

२७—क्रूर राशि में पाप ग्रह ६ या ८ घर में हो और शुक्र या सूर्य की उस पर दृष्टि हो तो उस क्रूर ग्रह की दशा में मृत्यु होगी।

२८—जन्म लग्नेश का शत्रु ग्रह लग्नेश की दशा के अन्तर में जब आता है तब अकस्मात् मृत्यु होती है ऐसा सत्याचार्य का मत है।

२९—मारक ग्रह अपने सम्बन्ध होने पर भी शुभग्रह (त्रिकोणेश आदि) की अंतर्दशा में नहीं मारता किन्तु विना सम्बन्ध के भी पाप ग्रह की अंतर्दशा में मरण होता है।

३९—अल्पायु वाले को—विपत्ति (तृतीय) तारा में मृत्यु भय।

मध्यायु वाले को—प्रत्यरि (पांचवीं) तारा में मृत्यु या लग्नेश के शत्रु की दशा में।

दीर्घायु वाले को—वध (सातवां) तारा में मृत्यु या अष्टमेश की दशा में।

३१—लग्न द्रेष्काण से २२ वां द्रेष्काण जो हो उस राशि का स्वामी तथा विनाश नक्षत्र (जन्म नक्षत्र से २३ वां) का स्वामी तथा ३, ५, ७, ताराओं के स्वामी और चन्द्रमा जिस राशि में हों उससे द्वितीय और द्वादश स्थान के स्वामी यदि दोनों पापी हों तो ये सब भी मारक होते हैं।

३२—मारकेश की दशा में ६, ८, १२ भाव के स्वामी में से किसी किसी की अंतर्दशा हो तो विशेष कर मरण संभव है।

३३—राहु या केतु यदि लग्न से ७, ८, १२ भाव में या मारकेश से ७ भाव में या मारकेश से युक्त हों तो वह मारक होता है।

३४—मकर और वृश्चिक लग्न वालों को राहु मारक होता है।

३५—६,८,१२ भाव में राहु हो तो उसकी दशा काल में कष्ट होता है, यदि उस पर शुभ ग्रह की दृष्टि या योग हो तो कष्ट नहीं होता।

३६—दशमेश, अष्टमेश, लग्नेश और शनि के मध्य में राहु युक्त और बल रहित जो ग्रह हो उसकी अन्तर्दशा में मरण या उसके साथी या दर्शी ग्रह की अंतर्दशा में मरण हो।

३७—दशमेश बली हो तो लग्नेश की दशा में मृत्यु हो।

३८—शीर्षोदय राशि में चर आदि राशियों में क्रम से धनेश की, लग्नेश की और राहु की दशा में मृत्यु हो, अर्थात् जब शीर्षोदय राशि चर हो तो धनेश की, स्थिर हो तो लग्नेश की द्विस्वभाव राशि हो तो राहु की दशा में मृत्यु होगी।

यदि पृष्ठोदय राशि हो तो क्रम से चरादि राशि में उसके द्रेष्काणेश व उसके देखने वाले ग्रह तथा उसमें युक्त की दशा में मृत्यु होगी।

शीर्षोदय राशि ३, ५, ६, ७, ९, ११।

पृष्ठोदय राशि २, ४, १, ९, १० का अन्त।

३९—अल्पायु योग हो और अश्विनी नक्षत्र में उत्पन्न हुआ हो (केतु दशा में) तो उससे तीसरी दशा सूर्य की होती है उसमें मरण होगा। इसी प्रकार जन्म नक्षत्र से

तीसरे नक्षत्र की दशा विंशोत्तरी के अनुसार विचार लेना जैसे धनिष्ठा नक्षत्र में जन्म हो तो तीसरा नक्षत्र पूर्वा भाद्रपद हुआ इसमें गुरु की दशा आती है।

मध्यायु—लग्नेश के शत्रु की दशा में मृत्यु होगी मान लो लग्नेश बुध है तो उसके शत्रु चन्द्र की दशा में मृत्यु होगी।

दीर्घायु—अष्टमेश की दशा में मृत्यु हो। मान लो मिथुन लग्न है अष्टम में मकर हुआ उसका स्वामी शनि अष्टमेश की दशा में मृत्यु होगी।

४०—लग्न से अष्टम स्थान में लग्नेश, दशमेश व शनि इन तीनों में जो निर्बल हो उस ग्रह की दशा में मृत्यु हो।

४१—मंगल की दशा—पंचमी में मृत्यु होती है या पाँचवीं दशा में
गुरु की दशा—षष्ठी में मृत्यु होती है या छठवीं दशा में
शनि की दशा—चतुर्थी में मृत्यु होती है या चौथी दशा में
राहु की दशा—सप्तमी में मृत्यु होती है या सातवीं दशा में

जैसे किसी का जन्म भरणी नक्षत्र में हो तो शुक्र की विंशोत्तरी दशा हुई इससे छठवीं गुरु की दशा आने पर मारक होगी (१ शुक्र, २ सूर्य, ३ चन्द्र, ४ मंगल, ५ राहु, ६ गुरु की) इस दशा में प्रयत्न से बचना। कोई जन्मदशा हो उससे यदि चौथी शनि की पड़ जाय या राहु की सातवीं या मंगल की पांचवीं दशा पड़ जाय या छठवीं गुरु की दशा पड़ जाय तब मारक होती है।

४२ - तीसरे छठें या आठवें के स्वामी की दशा कठिन होती है जब उन पर पाप ग्रह की दृष्टि हो तब मरण होता है। जब ये नीच में, अस्त, शत्रु गृही, ग्रह युद्ध में पराजित हो और पाप ग्रह की भी दृष्टि हो तब और भी अधिक बुरे हैं। ३,६,८ घर के स्वामी यदि क्रूर अंश में हों तो भी अपनी दशा में मरण करते हैं।

४३ – लग्नेश पाप युक्त और अस्त हो या नीच में या शत्रुगृही हो तो जब गोचर में वही स्वामी दुष्ट स्थान (६,८,१२) में या लग्न में जावे या किसी प्रकार इनसे सम्बन्धित हो तब मरण होता है।

४४—लग्नेश छठे हो तो जिस राशि में बैठा हो उस राशि के समान वर्षों में मृत्यु करता है। द्रेष्काण स्वामी छठे बैठा हो तो उतने महीनों में मृत्यु करता है। नवांश स्वामी छठे बैठा हो तो उतने दिनों में मृत्यु करता है।

४५—लग्नेश सूर्य से अस्त हो और अष्टमेश से दृष्ट हो तो जिस राशि में लग्नेश बैठा हो उस राशि के समान वर्षों में रिष्ट करता है।

४६—लग्नेश शत्रु राशि में हो तो राशि के अंक समान वर्षों में मृत्यु करता है।

४७—होरेश सूर्य हो और सूर्य से युक्त अष्टम में हो शुक्र की दृष्टि हो तो राशि के समान वर्षों में मृत्यु करता है।

४८—लग्नेश अष्टम हो उस पर सूर्य और शुक्र की दृष्टि हो तो राशि के समान वर्षों में मृत्यु हो।

४९—लग्नेश सप्तम स्थान में पाप ग्रह के युद्ध में पराजित हुआ हो तो जिस राशि में हो उसे तिगुना करने से जो अंक आवे उतने महीने या वर्ष में मृत्यु हो।

५०—राशि मेष वृष मिथुन कर्क सिंह कन्या तुला वृश्चिक धन मकर कुम्भ मीन
अंश २० २५ २२ २२ २१ १ ४ २३ १८ २० १५ १० वां

चन्द्र के अंश तुल्य भाग में जन्म होने से उतने वर्षों में मृत्यु होगी जैसे कन्या के पहिले अंश में जन्म हो तो १ वर्ष में मृत्यु, वृष के २५ वें अंश में जन्म हो तो २५ वर्ष में मृत्यु (स० चिं०)।

अन्य मत मेष वृष मिथुन कर्क सिंह कन्या तुला वृश्चिक धन मकर कुम्भ मीन
वर्ष ८ ९ २४ १२ १ ४ २ ३ २० २८ २१ १०

मेषादि चन्द्र से उतने वर्षों में मृत्यु होगी जैसे वृष के चन्द्र में ९ वर्ष में मिथुन के चन्द्र में २४ वर्ष में इत्यादि (ल० चं०)।

५१—अष्टमेश की दशा या अंतर्दशा में मृत्यु होती है या ऐसे ग्रह की दशा या अन्तर्दशा में जो इससे युक्त या दृष्ट हो साधारणतः मृत्यु होती है। इसके अनुसार पिता-माता भाई-बहिन स्त्री-पुत्र आदि का मरण का योग भी जान सकते हो। जैसे—

यदि नवमेश की दशा हो उसमें अष्टमेश युक्त या दृष्ट हो तो—पिता की मृत्यु।
यदि पंचमेश की दशा हो उसमें अष्टमेश युक्त या दृष्ट हो तो—संतान की मृत्यु।
यदि चतुर्थेश की दशा हो उसमें अष्टमेश युक्त या दृष्ट हो तो—माता की मृत्यु।
यदि तृतीयेश की दशा हो उसमें अष्टमेश युक्त या दृष्ट हो तो—भाई-बहिन की मृत्यु
यदि सप्तमेश की दशा हो उसमें अष्टमेश युक्त या दृष्ट हो तो—स्त्री की मृत्यु इत्यादि।

इसमें ग्रह का बल और उस काल का कारक का बल आदि विचार कर निर्णय करना कि मृत्यु होगी या कोई भयानक घटना होगी आदि (स० चिं०)।

५२—लग्न सूर्य और मांदि के स्पष्ट अंक जोडने से प्राप्त राशि जो हो उसका स्वामी जिस भाव में हो उस राशि में या उसके त्रिकोण में जब गुरु आये तब मृत्यु होगी (फल०)।

५३—मांदि से शनि के अंक घटाने से प्राप्ति राशि हो और जो उसका नवांश हो उस नवांश के त्रिकोण में जब शनि आवे तब मृत्यु होगी (जा० पारि०)।

५४—जब धूम से गिनने पर ५ उपग्रहों के अंक जोड़ने से प्राप्त राशि के विशेष द्रेष्काण में जब शनि आवे तब मृत्यु होगी (जा० पारि०)।

५५—लग्न और मांदि के अंकों का जोड़ करने से जो राशि प्राप्त हो उसका नवांश निकालो तो सूर्य जब इस विशेष राशि या विशेष नवांश में जावे उतने समय में मृत्यु होगी (फल०)।

५६—लग्न मांदि और चन्द्र के अंक जोड़ने से प्राप्ति राशि उदय राशि होगी उस राशि में जब चन्द्र जायगा तब बीमारी होगी (फल०)।

५७—मांदि के अंक से नवांश, द्वादशांश और द्रेष्काण निकालो जब उस नवांश में गुरु, द्वादशांश में शनि और द्रेष्काण के त्रिकोण में जो राशि है उसमें सूर्य जावे तब मृत्यु होगी (फल०)।

५८—मांदि और शनि के अंक में ९ का गुणा करो और गुणनफल को जोड़ो उसकी राशि निकाल कर नवांश निकालो इसमें जब शनि जायगा तब मृत्यु होगी। (फ०

५९—लग्नेश में से यम कंटक के अंक घटाना इसकी राशि का नवांश निकालो जब उस राशि के नवांश में गुरु जाये तब मृत्यु होगी (जा० भ०) (जा० पारि०)।

६०—षष्ठेश, द्वादशेश और अष्टमेश के अंकों का योग कर राशि निकालो इस) राशि या इसके त्रिकोण में जब शनि जावे तब मृत्यु सम्भव है (फल०)।

६१—उदय द्रेष्काण के स्वामी युक्त जो राशि है उस राशि या उसके त्रिकोण में जब शनि जायगा तब मृत्यु सम्भव है (फल०)।

६२—अष्टम घर के द्रेष्काण स्वामी के घर में या उसके त्रिकोण में जब शनि जावे तब मृत्यु सम्भव है (फल०)।

६३—लग्न से और चन्द्र से गिनने पर अष्टम घर और २२ वां द्रेष्काण निकालकर देखो और यह भी देखो कि चन्द्र या मांदि बलहीन नवांश में है क्या। जब इनमें से किसी घर के त्रिकोण में शनि आयगा तब मृत्यु सम्भव है।

६४—अष्टमेश की राशि से लग्नेश के नवांश की राशि कितनी चली गई है अर्थात् दोनों का अन्तर क्या है निकालो उसमें शनि आयगा तब मृत्यु सम्भव है।

६५—जन्म समय चन्द्र द्रेष्काण के पहिले भाग में या खर द्रेष्काण के स्वामी की राशि में (खर द्रेष्काण=२२ वां द्रेष्काण) या उसके त्रिकोण स्थित में या लग्न राशि या अष्टम घर या बारहवें घर में जब गोचर का चन्द्र जावे तब मृत्यु सम्भव है।

६६—अष्टमेश की राशि में, जिस नक्षत्र में सूर्य हो वहाँ और अष्टमेश जिस नक्षत्र में हो, इन स्थानों में गोचर में जब सूर्य और चन्द्र जावे तब मृत्यु होगी।

६७—गुलिक जहाँ है वह राशि या जिस राशि में पैदा हुआ हो तो उसके त्रिकोण की राशि। दिन में जन्म हो तो उससे सातवीं राशि में जब शनि जावे तब मृत्यु सम्भव है (फल०)।

६८—गुरु और राहु के अंक जोड़ने से जो राशि प्राप्त हो उस राशि में या उसके त्रिकोण में जब गुरु जावे तब मृत्यु संभव है।

६९—लग्न से अष्टम घर के द्रेष्काण के स्वामी जहाँ हों उस घर में शनि आवे तब मृत्यु संभव है।

७०—उपरोक्त द्रेष्काण का स्वामी जिस घर में है उसका स्वामी जहाँ है उसकी राशि या नवांश में जब शनि आवे।

७१—जो शनि की राशि का अंक जन्म में हो उसमें शनि जावे या उसके त्रिकोण में जावे तब मृत्यु संभव है।

७२—अष्टमेश जहाँ हो उसकी राशि और अंश में शनि जावे तो भी उपरोक्त फल है।

७३—रात्रि का जन्म है और लग्न उस राशि का है जिसमें चन्द्र है तो मांदि की जो राशि और अंश है उसमें शनि जावे तब मृत्यु हो।

७४—दिन का जन्म हो और लग्न वह राशि हो जिसमें सूर्य हो तो मांदि जहाँ है उससे सातवां, पांचवां या नवां घर में जो राशि और अंश है उसमें जब शनि जावे तब मृत्यु संभव है।

७५—अष्टम घर से मांदि कितना आगे चला गया है अंतर निकालो, जो राशि अंतर की आवे उस पर शनि जाने पर मृत्यु संभव है।

७६—जन्म समय जहाँ शुक्र हो उससे ६, ७ या १२ स्थान गिनने में जो आवे वहाँ सूर्य जाने पर मृत्यु योग संभव है।

७७—जन्म समय (१) अष्टमेश, (२) द्वादशेश, (३) षष्ठेश, (४) अष्टम घर का द्रेष्काण स्वामी, २२ वां द्रेष्काण और (५) मांदि जिस स्थान में हों गोचर में जब शनि, गुरु सूर्य और चंद्र इन स्थानों जावे तब मृत्यु संभव है।

या उपरोक्त ५ ग्रहों के नवांश में या उसके त्रिकोण में जब वे ग्रह जावें तब मृत्यु होगी।

७८—(१) अष्टमेश, (२) गुलिक, (३) शनि या, (४) लग्न से गिनने पर २२ वें द्रेष्काण (खर द्रेष्काण) का स्वामी इनकी राशि और नवांश में या उसके त्रिकोण में जब गोचर का शनि जावे तब मृत्यु संभव है।

७९—उदित द्रेष्काण का स्वामी, अष्टमेश व २२ वां द्रेष्काण का स्वामी की राशि या अंश में जब गोचर का गुरु जावे तब मृत्यु संभव है (फल०)।

८०—(१) राशि जिसका द्वादशांश उदय हो रहा है (२) नवांश राशि जिसमें अष्टमेश हो (३) नवांश राशि जिसमें लग्नेश हो या इनके त्रिकोण में जब गोचर का गुरु जावे मृत्यु संभव है।

८१—जिसमें अष्टमेश या सूर्य हो उस राशि और नवांश में जब चन्द्र जावे तो मृत्यु संभव है (फल०)।

८२—उदित राशि के अंश से यम कंटक के अंक घटाना। शनि के अंक से चन्द्र का अङ्क घटाना। इन दोनों अंतरों में से प्रत्येक की राशि और नवांश जो प्रगट हो उसमें या उसके त्रिकोण में गुरु जावे तब जातक की मृत्यु होगी (फल०)।

८३—लग्न से छठे या आठवें भाव में चंद्र हो और पाप दृष्टि हो तो तत्काल मृत्यु होती है इस पर शुभ दृष्टि हो तो ८ वर्ष में और पाप दृष्टि भी हो तो ४ वर्ष में मृत्यु हो। यदि पाप ग्रह अधिक और शुभ ग्रह कम देखता हो तो अनुपात से मृत्यु समय निकाल लेना (जा० सं०)।

८४—१, ५, ९ भाव में से एक में भी दुर्बल पाप ग्रह हो और शुभ ग्रह से युक्त न हो तो उसकी दशा के अन्त्य में मृत्यु होगी (जा० पारि०)।

८५—राशि संधि में स्थित ग्रह की दशा रोग देने वाली होती है (जा० पारि०)।

८६—३० वें अंश को अति क्रमण करने वाले ग्रहों की दशा में मरण हो (जा० पारि०)।

८७—६, ८ घर में स्थित शत्रु ग्रह से दृष्ट पाप राशि में पाप ग्रह हो तो अपनी अंतर्दशा में विजित ग्रह की दशा में मरण होगा (जा० पारि०)।

८८—जो ग्रह नीच में हो उस ग्रह की तीसरी दशा मृत्यु प्रद है।

जो ग्रह शत्रुगृही हो उस ग्रह की ५ वीं दशा मृत्यु प्रद है।

जो ग्रह सूर्य के साथ अस्त हो उस ग्रह की ८ वीं दशा मृत्युप्रद है।

ये दशाएँ पाप ग्रह सम्बन्धी हों तो निश्चय मरण हो (जा० पारि०)।

८९—छिद्र ग्रह ७ हैं (१) अष्टमेश, (२) अष्टम स्थित ग्रह, (३) अष्टम को देखने वाला ग्रह, (४) खरेश्वर (खर द्रेष्काण जन्म लग्न का २२ वाँ द्रेष्काण है या आठवें भाग का लग्न तुल्य द्रेष्काण खर द्रेष्काण कहलाता है। इसका स्वामी खरेश्वर हुआ।) अष्टमेश युक्त ग्रह, (६) चतुःषष्ठि (६४) अंश का स्वामी (जन्म काल में जो चन्द्रमा का नवांश हो उसका ६४ वाँ अंश) (७) अष्टमेश का अति शत्रु, इन सातों में जो बली हो उसकी दशा में मृत्यु होगी। उस भाव के व्ययस्थ या उस भाव के व्ययेश इन दोनों में बलवान् ग्रह की दशा में मृत्यु होती है।

लग्न में यदि द्वितीय द्रेष्काण है तो अष्टम का द्वितीय द्रेष्काण खर कहलाया। खरेश्वर मारक ग्रह होता है। चन्द्र जिस नवांश पर हो उससे ६४ वां नवांश खर होता है (जा० पारि०)।

९०—गुलिक स्पष्ट के उदित नवांश में गुरु के आने पर, उसके द्वादशांश में शनि के आने पर, द्रेष्काण कोण घर में सूर्य आने पर, लग्न चन्द्र गुलिक युक्त राशि अंश गत सूर्य में मृत्यु हो (जा० पारि०)।

९१—लग्न स्पष्ट और गुलिक का योग करने पर जो राशि आवे उसमें जिस राशि का नवांश हो उस राशि की संख्या बराबर मास में मृत्यु जानना। जैसे योग राशि में वृष का नवांश हो तो २ मास कन्या का नवांश हो तो ६ मास आदि।

इसी प्रकार गुलिक और चन्द्रमा के योग से योग तुल्य राशि में जब चन्द्रमा आवे तब मरण हो।

एवं लग्न गुलिक और चंद्र के योग वाले राशि का मरण समय का लग्न जानना (जा० पारि०)।

९२—गुरु स्पष्ट को ९ से गुणा करो उसमें ९ गुणित शनि और गुलिक जोड़ो। फिर उसमें शनि और गुलिक ९ गुणित जोड़कर उस समस्त योग को गुरु में जोड़ो। उस योग राशि के नवांश राशि में गोचर का गुरु जाने पर मृत्यु होगी। (जा० पारि०)।

९३—९ से गुणित स्पष्ट सूर्य में शनि और गुलिक को ९ से गुणा कर जोड़ो फिर उसमें ९ गुणित गुलिक जोड़ो। उस योग राशि में जिसका नवांश हो उस राशि में जब गोचर का सूर्य जायगा तब मृत्यु होगी। इससे मरण का मास ज्ञात होता है।

९४—चंद्र स्पष्ट को ९ से गुणा करें शनि और गुलिक को ९ से गुणा करें एकत्र जोड़ कर फिर ९ से गुणा किये, गुलिक को जोड़ने से जो राशि हो उसके नवांश में चन्द्र हो तब मृत्यु होगी (जा० पारि०)।

९५—दिन का जन्म हो तो सूर्य स्पष्ट और शनि के योग से जो नक्षत्र हो वहीं मरण की प्रथम दशा होगी। अर्थात् उस नक्षत्र में जो विंशोत्तरी ग्रह की दशा आवे उस दशा में मृत्यु हो। यदि रात्रि का जन्म हो तो चन्द्र और राहु के योग से जो नक्षत्र मिले उसकी प्रथम दशा मरण की होगी। राशि से नक्षत्र का ज्ञान कर लेना (जा० पारि०)।

९६—लग्नेश व जन्म राशीश अस्तंगत होकर ६,८,१२ भाव में जिस राशि में हो उस राशि की संख्या तुल्य वर्षों में मरण हो—जैसे मेष राशि=१ वर्ष, मकर=१० वर्ष आदि (जा० सं०)।

९७—ग्रह जो लग्न द्रेष्काण का स्वामी हो या चन्द्र द्रेष्काण का स्वामी हो और ६,८,१२ घर में हो तो द्रेष्काण की राशि सूचक महीनों में बाल मृत्यु हो (फल०)।

९८—ग्रह जो चन्द्र नवांश का स्वामी या लग्न नवांश का स्वामी ६,८,१२ घर में हो तो उस स्वामी की राशि सूचक दिनों में मृत्यु होगी (फल०)।

९९—मंद अंश. मांद्य अंश, राहु, खरांशेश, अष्टमेश और इनके नवांशेश जो ग्रह उनमें निर्बल ग्रह की दशा में मृत्यु होती है (स० चि०)।

१००—लग्नेश षष्ट स्थान में जिस राशि में हो उस राशि की जो संख्या हो उतने वर्ष में अरिष्ट हो (प्रा० यो०)।

१०१—लग्न का द्रेष्काण या नवांश का स्वामी षष्ठ स्थान में जिस राशि में हो उस राशि की जो संख्या हो उतने वर्ष में अरिष्ट हो (प्रा० यो०)।

१०२—लग्नेश अस्तंगत हो, अष्टमेश लग्न को देखता हो तो जिस राशि में वह हो उस राशि की संख्या समान वर्ष में अरिष्ट हो (प्रा० यो०)।

१०३—कितने वर्ष में अरिष्ट होगा १—लग्न में राहु व केन्द्र में चन्द्र हो शीघ्र। २—शनि के घर सूर्य, सूर्य के घर शनि हो शीघ्र। ३—लग्न में शनि व षष्ठ में चन्द्र हो १० दिन में। ४—बुध षष्ठ या अष्टम में हो ४ वर्ष में। ५—क्रूर ग्रह का लग्न हो लग्नेश अस्तंगत हो ८ वर्ष में। ६—मंगल के घर गुरु, गुरु के घर मंगल हो १० वर्ष में। ७—लग्न से सप्तम में राहु हो तो १० वर्ष में। ८—अष्टम में राहु चन्द्र से दृष्ट हो तो १० वर्ष में। ९—लग्न से १० भाव में राहु हो तो १६ वर्ष में (प्रा० यो०)।

१०४—जिन अरिष्टों में मरण का समय नहीं दिया उन अरिष्टकारक योगों में जो अधिक बलवान् हो वह बलवान् ग्रह जन्म कुंडली में जिस राशि में हो उस राशि में जब चन्द्र प्रवेश करता है तब मृत्यु होती है। या जन्म कुंडली में जिस राशि में चन्द्र

हो उसी राशि पर जब चन्द्र फिर आता है तब मृत्यु होगी। या १ वर्ष के भीतर उन अरिष्ट योगों के स्थानों में जाकर जब चन्द्र बलवान् हो और पाप दृष्ट हो तब मृत्यु होती है।

यहाँ मृत्यु समय जानने के अनेक योग दिये हैं जिससे कई प्रकार से समय का विचार हो सके एक से अधिक प्रकार से विचार में जो निर्णय हो और ग्रहों का बलाबल विचार कर अल्प, मध्य, पूर्ण आयु के अनुसार इन योगों का विचार करना। यदि आयु शेष है तो मृत्यु तुल्य कष्ट होगा। आयु पूर्ण होने पर मृत्यु की संभावना है। इसलिए पहिले आयु का कई प्रकार से विचार कर लेना आवश्यक है। इसमें अरिष्ट भंग योग पर भी विचार कर लेना चाहिये।

मृत्यु सुख पूर्वक होगी या कष्ट पूर्वक विचार

सुख पूर्वक—(१) जन्म समय जिस नवांश में गुलिक हो उसके सातवें राशि में यदि बलवान् शुभ ग्रह हो तो निश्चय सुख पूर्वक मृत्यु होगी। (२) यदि जन्म समय १२ वां घर या उसका स्वामी घर में या उस नवांश में हो जो शुभ ग्रह का स्थान हो या शुभ ग्रह युक्त हो तो सुख पूर्वक मृत्यु हो मृत्यु समय कोई कष्ट न होगा। (३) अष्टम में उच्च का सूर्य हो। (४) अष्टम भाव में शुभ ग्रह का विशेष सम्बन्ध होने से।

कष्ट पूर्वक - (१) अष्टम भाव में पाप ग्रहों का सम्बन्ध हो तो मृत्यु कष्ट कर हो। (२) अष्टम में उच्च के सूर्य के अतिरिक्त अन्य राशि का सूर्य हो तो दुःख पूर्वक और कष्ट प्रद होता है। (३) जन्म समय १२ वां घर या उसका स्वामी उस घर में या नवांश में हो जो पाप ग्रह का स्थान हो या पाप ग्रह युक्त हो तो कष्ट पूर्वक मरण होगा।

अष्टम में बुध हो तो- कष्ट युक्त दूर मरण होता है वृथा शत्रुओं वाला और बड़ी गर्दन वाला होता है (जा० सं०)।

मरण समय मोह का समय—(१) लग्न के जितने नवांश उदित होने को शेष रहे हों उतने ही काल तक मरण समय मोह होवे, अर्थात् बेहोशी रहेगी। (२) शुभ ग्रह लग्न में हो तो मोह का समय दुगुना होगा। (३) शुभ ग्रह स्वक्षेत्री, उच्च राशि या अपने नवांश में होकर लग्न में हो तो मोह काल तिगुना होगा।

अन्य मत—लग्न के शेष (भोग्य) नवांश पर से अनुपात से जितनी घड़ी समय मिले सो यदि नवांश पति की दृष्टि उस पर हो तो उतना काल मोह होगा। यदि उस लग्न नवांश पर पाप ग्रहों की दृष्टि हो तो गणितागत काल से दूना और शुभ ग्रहों की दृष्टि में तिगुना काल मोह ग्रस्त रहेगा (जा० पारि०)।

मरण समय होश—अष्टम का कोई सम्बन्ध बुध से हो तो मरण समय होश रहे।

मृत्यु तक काम काज चलता रहे—अष्टम का कोई सम्बन्ध शुक्र से हो तो उसके काम-काज समय के अन्त तक अच्छे प्रकार चलता रहे।

सरल शांति पूर्वक मृत्यु—अष्टम का कोई सम्बन्ध गुरु से हो तो सरल और शांति पूर्वक मृत्यु हो।

ज्ञान पूर्वक मरण—लग्न व कारक ग्रह से तृतीय स्थान गुरु शुक्र इन दोनों से युक्त या दृष्ट हो।

अज्ञान पूर्वक मरण—तृतीय भाव गुरु शुक्र को छोड़कर अन्य किसी ग्रह से युक्त या दृष्ट हो तो अज्ञान पूर्वक मरण हो।

देश परदेश मार्ग आदि में मृत्यु होगी इसका विचार

स्वदेश में मृत्यु—अष्टम घर में स्थिर राशि हो। (२) लग्न या अष्टम में स्थिर राशि हो। (३) अष्टम भाव में स्थिर राशि या नवांश हो तो अपने घर में मृत्यु। (४) अष्टमेश स्थिर राशि या नवांश में हो तो अपने घर में मृत्यु। (५) शनि स्थिर राशि या नवांश में हो तो अपने घर में मृत्यु। (६) राशि का स्वामी ६, ८, १२ भाव में हो तो उस ग्रह की दशा में स्वदेश में मृत्यु हो। (७) अष्टम की राशि या उसका मारक शनि स्थिर राशि में हो तो स्वदेश में मरण हो। (८) अष्टम में स्थिर राशि और अष्टमेश भी स्थिर राशि में हो। (९) तृतीय भाव में स्थिर राशि हो।

विदेश में मरण—(१) लग्न या अष्टम में राशि हो तो परदेश में मरण। (२) अष्टम घर में चर हो उसका स्वामी चर राशि में हो और जब शनि चर राशि या नवांश में हो तो विदेश में मरण। (३) अष्टम की राशि और उसका मारक शनि ये चर राशि में हों तो दूसरे देश में मरण। (४) तृतीय भाव में चर राशि हो।

दूसरे देश में मरण—अष्टमेश नवम भाव में हो।

मार्ग में मरण—(१) लग्न या अष्टम में द्विस्वभाव राशि हो। (२) अष्टम भाव द्विस्वभाव राशि या वर्ग में हो। (३) अष्टमेश पाप ग्रह होकर सप्तम में हो तो मार्ग में निःसन्देह मरण। (४) तृतीय भाव में द्विस्वभाव राशि हो। (५) अष्टम भाव और अष्टमेश भी द्विस्वभाव राशि में हो। (६) मंगल नवम भाव में हो तो मार्ग में मरण।

अकस्मात् घर में मरण—(१) अष्टमेश पाप ग्रह होकर लग्न में हो तो अपने घर में ही अकस्मात् मरण हो।

यहाँ शनि जीवन मृत्यु का कारक है, अष्टम घर आयु का घर है इससे अष्टम भाव या अष्टमेश की राशि या नवांश से और शनि से भी विचार करना चाहिए।

मरण समय स्वजनों से हीन या युक्त

(१) अष्टमेश पाप ग्रह होकर लग्न में हो और लग्नेश से दृष्ट हो और पाप ग्रह से भी दृष्ट हो तो मरण समय स्वजनों से रहित होगा। (२) अष्टम में स्थिर राशि का नवांश हो तो स्वजनों से युक्त देश में ही मरण होगा।

किस विकार से मरण होगा

(१) जन्म समम अष्टम में जो ग्रह हों उनमें जो बलवान् हो उसी ग्रह के विकार

से मृत्यु हो। यदि एक ही ग्रह अष्टम भाव में हो यदि वह बलवान् हो तो उसके ही विकार से मृत्यु होगी।

(२) अष्टम स्थान में कोई ग्रह न हो परन्तु कई ग्रहों की दृष्टि हो तो उनमें द्रष्टा बली ग्रह के विकार से मृत्यु।

(३) यदि अष्टम स्थान में कोई ग्रह न हों और न किन्हीं ग्रहों की दृष्टि हो तो अष्टमेश जिस किसी राशि में हो उस राशि के द्रेष्काण के विचार से मृत्यु होगी।

कितनों का मत है कि नवांश से भी विचारना।

(४) जब कहे हुए योग में से कोई योग न हो और अष्टम स्थान भी किसी ग्रह से युक्त दृष्ट न हो तो लग्न से २८ वें द्रेष्काण स्वामी और अष्टमेश इनमें जो बली हो उसके कहे हुए वात पित्त आदि दोष से व पहिले बताये हुए अग्नि जल शस्त्र आदि से मरण कहना। २२ वां द्रेष्काण लग्न से अष्टम राशि में होता है।

(५) लग्नेश व चन्द्र राशि का शत्रु ग्रह लग्न में शुभ ग्रह भी होवे तो भी ग्रह अपनी धातु के अनुसार धातु दोष से मृत्यु करता है।

कौन ग्रह किस विकार से मरण करता है

जो ग्रह बलवान् होकर अष्टम भाव को देखता हो या अष्टम भाव में कोई ग्रह हो इनमें जो बलवान् हो उसके विकार से मृत्यु होती है।

सूर्य–पित्त रोग से।	गुरु–कफ से।
चन्द्र–वात कफ से।	शुक्र–वात कफ से।
मंगल–पित्त से।	शनि–वात से।
बुध–वातपित्त कफ या त्रिदोष ज्वर से	राहु केतु–वात या भूत ज्वर से।

शरीर में रोग कहाँ होगा

लग्न से अष्टम स्थान में जो राशि हो वह काल पुरुष का जो अंग सूचक हो। जातक के उसी अंग पर वातादिविकार होकर मृत्यु होती है या लग्न से अष्टम का स्वामी लग्न में हो तो वह राशि जिस अंग में हो उस कालांग में दीन हो।

मृत्यु का कारण

स्वजनों से मरण—(१) सूर्य चन्द्र कन्या राशि के हों और पाप ग्रहों से दृष्ट हों तो अपने ही मनुष्यों के हाथ मृत्यु हो। (२) पंचम और अष्टम भाव पाप ग्रहों से युक्त हो तो बंधुजनों के वश से मृत्यु हो।

स्त्री के निमित्त मरण या स्त्री द्वारा मरण—(१) लग्न में शनि सूर्य सप्तम में मंगल चन्द्रमा हो द्वितीय भाव में शुक्र हो तो स्त्री के कारण मरण (जा० भ०)। (२) मीन लग्न में सूर्य हो सप्तम भाव में पाप युक्त चन्द्र हो और मेष राशि में शुक्र हो तो वह स्त्री के दोष से अपने घर में मरता है (वृ० जा०)। (३) सप्तम में चन्द्र मंगल शनि हो तो पर स्त्री के कारण मरण हो (जा० स०)।

स्त्री द्वारा मरण—(१) मीन लग्न में पाप युक्त सूर्य चन्द्र हो और अष्टम में पाप ग्रह हो तो स्त्री के द्वारा मरण हो (जा० पारि०)।

स्त्री सहित जातक की मृत्यु—लग्नेश, सप्तमेश, अष्टमेश एक साथ हो तो स्त्री सहित जातक की मृत्यु हो या लग्नेश, सप्तमेश, अष्टमेश का जिस किसी राशि में मरण कर्ता योग हो तो स्त्री सहित मरण हो। (जा० सं०)।

पुत्र सहित मरण – लग्नेश, पंचमेश, अष्टमेश के स्वामी का जिस किसी राशि में मरण कर्ता योग हो तो पुत्र सहित मरण हो (जा० भ०)।

शरीर में कीड़ा पड़ने या घाव से मृत्यु—(१) शनि दूसरा, चन्द्र चौथा, मंगल दशम हो (वृ० जा०)।

कृमि, घाव, गुदा रोग, भगंदर, बवासीर, शस्त्र अग्नि से मरण–(१) अष्टम में क्षीण चन्द्रमा और शनि हो, बली मंगल की दृष्टि हो (जा० भ०)। (२) अष्टम में शनि हा, क्षीण चन्द्र पर बली मंगल की दृष्टि हो (जा० सं०) (वृ० जा०)।

गुदा रोग, नेत्र पीड़ा या शस्त्र से मृत्यु—क्षीण चन्द्र अष्टम हो उस पर बलवान् शनि की दृष्टि हो (जा० पारि०)।

विष्ठा से मृत्यु—(१) तुला का मंगल, मेष का शनि, मकर या कुम्भ का चन्द्र हो तो विष्ठा से मृत्यु हो (वृ० जा०)। (२) क्षीण चन्द्र दशम, सूर्य सप्तम, मंगल चतुर्थ में हो तो विष्ठा से मृत्यु हो (वृ० जा०)। (३) तुला का मंगल, वृष में सूर्य शनि के गृह में चन्द्र हो तो विष्ठा में मृत्यु हो (जा० पारि०) (४) मंगल तुला में, शनि कर्क राशि में, चन्द्र मकर कुंभ में हो तो वह विष्ठा मूत्र के स्थान में मरता है (जा० भ०)।

विष से मरण – (१) दशम भाव का नवांशेश शनि युक्त हो दुःस्थान में हो तो विष खाकर मरे (जा० पारि०)। (२) अष्टमेश उस नक्षत्र के उन अंशों में हो जो विष घटिका से युक्त हों और पापग्रह से युक्त हो तो विष के निमित्त दोष से मरे (जा० सं०)। (३) दशमेश लग्नेश शनि युक्त दुष्ट स्थान में हो तो विष खाने से मृत्यु ह (स० चि०)। (४) जब द्वितीयेश और षष्ठेश शनि युक्त हों या दुष्ट स्थान में हों तो विष से मृत्यु हो (स०चि०)। (५) लग्न नवांशेश, दसम नवांशेश शनि के साथ यात्रिक में धनेश षष्ठेश शनि के साथ त्रिक में हों। (६) छठे या आठवें बुध युक्त चन्द्र हो तो विष से मृत्यु हो (लं० चं०)।

क्रूर जीव व विष या अग्नि शस्त्र से मरण—(१) विष घटिकाओं में जन्म हो तो क्रूर जीव के विष, अग्नि, शस्त्र इनसे मरण हो (जा० सं०)।

(विष) विष घटी में जन्म हो और लग्न से अष्टम स्थान पाप युक्त हो (जा० पा०)।

शस्त्र से या विष के विषाद से मरण या अपने हाथ और नेत्रों से हीन हुए देह के कारण मरण—लग्न में चंद्रमा और में अष्टम में निर्बल सूर्य और लग्न से २ और ४ भाव में पाप ग्रह हो तो अपने हाथ और नेत्रों से हीन हुए देह को कारण या शस्त्र से या विष के विषाद कर कष्ट से मरण (जा० सं०)।

विष या जल से मृत्यु--सूर्य पाप युक्त केन्द्र या नवम भाव में हो तो विष या जल से मृत्यु हो।

विशाल पीड़ा अग्नि या अगाध जल से मरण--(१) दशम भाव का नवांश पति मंगल राहु शनि से युक्त दुःस्थान में हो (जा० पारि०)। (२) क्षीण चन्द्र अष्टम में हो मंगल राहु या शनि के साथ हो तो जल अग्नि पिशाच आदि के दोष से मरण हो।

अग्नि के धुँवा में बंद होने या काष्ठ के भीतर कूटे जाने से-(१) क्षीण चंद्र दशम, मंगल नवम, शनि लग्न में और सूर्य पंचम हो तो अग्नि के धुँआ में बन्द होने से व काष्ट के भीतर कूटे जाने से मरण हो (वृ० जा०)। (२) क्षीण चंद्र, मंगल शनि ये अष्टम, दशम, नवम लग्न या पंचम में हों तो अनेक प्रकार से धूमादि बंधन से मरता है (जा० भ०)।

नदी व समुद्र में मरण--यदि चंद्र शनि ६,८ या १२ भाव में या चतुर्थ में हों और अष्टम में अष्टमेश दो पाप ग्रहों के बीच हो तो नदी या समुद्र में निश्चय मरण हो (जा० सं०)।

जलाशय द्वारा मृत्यु-(१) लग्न में द्विस्वभाव राशि में सूर्य चन्द्र हो तो जल में डूबकर मरे (वृ० जा०)। (२) कन्या राशि में सूर्य चन्द्र दोनों हों और पाप ग्रह से दृष्ट हों तो जल में डूबने से मृत्यु हो (जा० सं०)। (३) कर्क राशि पर शनि और मकर पर चंद्र हो तो जल से मरण हो (जा० सं०)। (४) लग्न में द्विस्वभाव राशि में सूर्य चंद्र दोनों हों और पाप ग्रहों से युक्त या दृष्ट हों तो जल के बीच मरण हो (जा० सं०)। (५) चतुर्थेश जिस राशि में हो उसका राशीश चतुर्थेश युक्त या दृष्ट हो तो जलाशय द्वारा मृत्यु हो। (६) सूर्य लग्न में हो चंद्रमा सप्तम हो दोनों को ही पाप ग्रह देखते हों तो जल में डूबने से या कलह से मृत्यु हो (जा० पारि०)। (७) सूर्य चंद्र लग्न में हो सभी ग्रह जहाँ कहीं द्विस्वभाव राशियों में हों पाप ग्रहों से दृष्ट हों तो अगम जल में या सींग वाले जानवरों के मारने से मृत्यु हो (जा० पारि०)।

कुआ में गिरकर मृत्यु--शनि चतुर्थ, चंद्र सप्तम, मंगल दशम भाव में हो तो कुंआ में गिरने से मृत्यु हो (वृ० जा०)।

जल यंत्र कारणों से मरण--चन्द्र १, ८, या १२ भाव में हो तो जल यंत्र कारणों से मरण हो (जा० सं०)।

अग्नि शस्त्र या राजकोप से मरण (१) चतुर्थ मंगल, सप्तम सूर्य, दशम शनि हो तो शस्त्र अग्नि या राज कोप से मृत्यु हो (जा०सं०) (वृ जा०)। (२) चतुर्थ या सप्तम में मंगल और दशम में शनि हो और अष्टम में कोई ग्रह हो तो राजकोप से उत्पन्न मरण या अपने शस्त्र दोष से मरण (जा०सं०)। (३) केन्द्र में २ पाप ग्रह हों एक दूसरे पर दृष्टि करते हों तो राजा का कोप, विष, शस्त्र या अग्नि से मरण हो (फल दी०)।

राजकोप से मृत्यु (१) मंगल और सूर्य परस्पर राशि में हों अष्टमेश से केन्द्र में हों तो अवसर आने पर राजा के कोप से शूल आदि श्रेष्ठ आयुध से मरण हो (जा० पारि०)। (२) मंगल शनि दोनों परस्पर राशि या नवांश में हों और केन्द्र में अष्टमेश हो तो राजा के कोप से शूल आदि शस्त्रों से मरण हो (जा०सं०)। अन्यमत—अष्टमेश से ये केन्द्र में हों शेष पूर्वोक्त। (३) तीसरा स्थान सूर्य युक्त या दृष्ट हो और बलवान् हो तो राजा के कारण मृत्यु हो। (४) सूर्य नीच राशि में हो या ६,८ घर में पाप दृष्ट हो तो राज पीड़ा से मरण एवं पिता का मरण एवं धन नाश भी हो (स० चि०)।

चोर द्वारा मृत्यु (१) चतुर्थेश छठे स्थान में राहु युक्त हो तो चोर द्वारा मृत्यु हो (जा०सं०)। (२) यदि लग्नेश अष्टमेश छठे स्थान में शनि, राहु या केतु युक्त हो तो उसकी दशा या अंतर्दशा में चोरों से मारा जावे (स० चि०)। (३) ६ और ८ के स्वामी राहु के साथ हों और शनि केतु के साथ हो तो मंत्र या चोर के हाथ से मरण हो (स० चि०)। षष्ठेश, अष्टमेश, राहु केतु या शनि की दशा अंतर्दशा में यह होगा। (४) लग्नेश, बुध, गुरु, शुक्र व चंद्र नीच के अस्तंगत, पराजित, पापाक्रान्त, वक्री, अनुवक्री आगे वक्री होने वाला हो और ६,८,१२ घर में हो तो चोर दुःख, पीड़ा, दरिद्र, रोग, वस्त्रहीन, शत्रु पीड़ा व भ्रमण आदि अपनी दशा में करेंगे (प्रा०यो०)।

शत्रुओं के बीच मरण -(१) ६,८,९ इन तीनों भाव में पाप ग्रह हो तो शत्रुओं के मध्य निश्चय मरण हो (जा० सं०)।

शत्रुओं के दोष से मरण —पाप ग्रह दशम में और चतुर्थ में हो, क्षीण चन्द्र ६ या ८ भाव में हो तो यात्रा के समय शत्रु के दोष से मरण हो (जा० पारि०)।

विष या शस्त्र से व रक्त प्रकोप से मरण —द्वितीय में मंगल हो (जा० लं०)।

तलवार से कटे —(१) मकर पर मंगल और कर्क पर शनि हो तो चोर विधि से तलवार से कट जाता है (जा० सं०)। (२) लग्न में शनि और मंगल हो सूर्य सप्तम हो तो तलवार से मृत्यु (जा० सं०)। (३) चतुर्थ में पाप ग्रह और गुरु दशम में हो तो तलवार के प्रहार से मृत्यु (जा० सं०)। (४) चन्द्र शनि एक साथ या अलग-अलग वृष या तुला राशि में हों तो २८ वें वर्ष में तलवार द्वारा मृत्यु।

वज्र से मृत्यु—(१) मिथुन, मीन, धनु, कुम्भ इन राशियों में पाप ग्रह हो तो बुरे आचरण से वज्र द्वारा मृत्यु हो (जा० सं०) (शंभु०)। अर्थात् शरीर पर बिजली गिरने से मृत्यु हो।

भीत से या वज्र से मृत्यु —(२) १,५,८,९ इन भावों में क्रम से सूर्य, शनि, मंगल, चंद्र हों तो बिजली गिरने या शिर पर से गिरने या भीत गिरने से मृत्यु हो (जा०सं०)। लग्न से अष्टम या त्रिकोण में सूर्य, शनि, चन्द्र, मङ्गल हो तो शूल से, वज्र से या दीवाल गिरने से मृत्यु हो (जा० पारि०)।

बिजली, विष, सर्प या व्याघ्र से मृत्यु—लग्न से ६ व ८ घर में बुध व चन्द्र हो तो बिजली से या विष, सर्प से या बाघ से मरे (प्रा० यो०)।

पर्वत से गिर कर या वज्र से या दीवाल में दबकर मृत्यु—लग्न में सूर्य, पंचम मंगल, अष्टम शनि, नवम चन्द्र हो तो पर्वत के शिखर से गिरने या दीवाल से दबकर या बिजली से मृत्यु हो (वृ० जा०)।

वृक्ष से या वज्र से मृत्यु —लग्न में सूर्य, पंचम शनि, अष्टम चन्द्र, नवम मंगल हो (जा० पारि०)।

पहाड़ से गिरने से मृत्यु—दशम और चतुर्थ में क्रम से सूर्य और मंगल हो तो पर्वत शिखा से गिरने से मृत्यु हो (जा० सं०)।

वृक्ष, वज्र, पर्वत शिखर, घन, हलाग्र के प्रकार से —लग्न में शनि सूर्य के आश्रित हो ५ ८ भाव में मंगल, ६ भाव में चन्द्र हो (जा० सं०)।

पत्थर की चोट से मृत्यु —जन्म से दशम सूर्य चतुर्थ मङ्गल हो तो पत्थर की चोट से मृत्यु हो (वृ० जा०)।

पत्थर काष्ठ चोपाये या वृक्ष से गिर कर या जल में डूबकर—शनि, राहु छठे भाव में हो तो उसका मामा अपुत्र हो और काष्ट व पत्थर की चोट से या चोपाये से या वृक्ष से गिर कर या जल में डूब कर मृत्यु (शंभु०)।

किला कोट पहाड़ या जंगल में मृत्यु—दशम, सप्तम, चतुर्थ में क्षीण चन्द्र, शनि, मङ्गल क्रम से हों तो किले कोट या पहाड़ या जंगल में मरे (जा० सं०)।

यात्रा काल में गिर जाने से व शस्त्र दोष से मृत्यु—चतुर्थ और दशम में पाप ग्रह और त्रिक में क्षीण चन्द्र हो तो यात्रा में गिर जाने से व शस्त्र दोष से मरे (जा०सं०)।

आकस्मिक घटना रेल आदि में कई व्यक्तियों के साथ मृत्यु —(१) लग्नेश, अष्टमेश एक साथ तथा अन्य ग्रहों के साथ भी हो या अष्टमेश एक से अधिक ग्रहों के साथ हो या अष्टम में कई ग्रह हों तो आकस्मिक घटना रेल, जहाज, खान, भूकम्प आदि से कई व्यक्तियों के साथ मृत्यु हो। (२) अष्टम में कोई पाप ग्रह हो यह पाप ग्रह मङ्गल के नवांश में हों और क्रूर षष्ठ्यंश में हों तो संघ मरण (भीड़ में कई लोगों के साथ मरण) (स० चि०)। (३) सब शुभ ग्रह नीच, शत्रु गृही, अस्त, ग्रह युद्ध में पराजित पाप नवांश में और पाप युक्त हों तो वह कई मनुष्यों के साथ मरे (स० चि०)। (४) जब शनि राहु और सूर्य अष्टमेश से दृष्ट होकर क्रूर अंश में हो और अस्त हों तो दूसरों के साथ मरे (स० चि०)। ये पाप ग्रह सूर्य, मंगल, शनि लेना। संघ में अर्थात् कई आदमियों के साथ या लड़ाई में या आग, पानी, भूडोल आदि से कई लोगों के साथ मृत्यु होगी।

जलने से शास्त्राघात बंधन आदि से मृत्यु—क्षीण चन्द्र दशम, मंगल नवम, शनि लग्न में, सूर्य पंचम हो, तो धैर्य से प्राण त्यागे अग्नि से जलना, रस्सो से बंधना, लकड़ी से मारना, शस्त्र की चोट आदि से मृत्यु हो (प्रा० यो०)।

डंडे की मार से मरण—(१) चतुर्थ या दशम में क्षीण चंद्र मंगल युक्त हो और शनि से दृष्ट हो तो डंडे या लाठी की मार से मृत्यु हो (जा०सं०)। (२) चतुर्थ या अष्टम

में क्षीण चंद्र हो सप्तम में शनि, द्वितीय में मंगल हो तो काष्ठ प्रहार से मृत्यु हो (जा.सं.)। (३) लग्न में शनि, चतुर्थ में सूर्य, अष्टम में क्षीण चंद्र, दशम में मंगल हो तो लाठी की चोट से मृत्यु (जा०सं०) (वृ०जा०)। (४) दशम में मंगल, चतुर्थ में सूर्य, क्षीण चद्रमा शनि से दृष्ट हो (जा०भ०)। (५) दशम मंगल चतुर्थ सूर्य हो उस पर शनि की दृष्टि हो (वृ०जा०)।

काष्ठ के ढेर में दबकर मरे—शनि अष्टम, क्षीण चंद्रमा दशम, सूर्य चतुर्थ हो तो काष्ठ की ढेर में दबकर मरे (जा०पारि०)।

कैद में मरे (१) सप्तम में सूर्य राहु केतु से युक्त हो और अष्टम में शुक्र हो लग्न में पाप ग्रह हो तो बंधन से मरण हो (जा०सं०)। (२) चन्द्र या लग्न से नवम पंचम भाव में पाप ग्रह हो और अष्टम में मंगल हो तो उद्वेग व बंधन आदि से मरण हो (जा० सं०)। (३) पाप ग्रह नवम या पञ्चम में हो शुभ ग्रह युक्त व दृष्ट न हों तो कैद में मरे (जा०सं०) (वृ०जा०)। (४) जन्म लग्न से अष्टम स्थान में पाश किंवा सर्प व निगड़ द्रेष्काण हो तो कैद में मरे (वृ०जा०)। (५) चन्द्रमा अष्टम में हो और लग्न में पाश आदि द्रेष्काण हो (जा०सं०)। (६) पञ्चम या नवम में पाप ग्रह हो एक पञ्चम एक नवम भाव में हो तो बंधन से मृत्यु या किले में या हवालात में मृत्यु हो (जा० भ०)। (७) जन्म में चन्द्र आश्रित राशि से ५-९ स्थान में पाप ग्रह हों या पाप दृष्टि हो तथा जन्म लग्न से ८ भाव का (लग्न से २२वां) द्रेष्काण यदि सर्प निगड़ या पाश हो तो बंधन में मरे (जा०पारि०)। (८) लग्न से ४, १० भाव में या ५, ९ भाव में पाप ग्रह हो और लग्न में अष्टमेश और मंगल हो तो बंधन में मृत्यु हो (जा०पारि०)।

बंधन आदि या सर्प से मृत्यु—(१) अष्टम भाव में पाश फांसी, या निगड़ (बेड़ी) या सर्प द्रेष्काण हो उसमें पाप ग्रह बैठा हो तो उस द्रेष्काण के समान बंधन से या सर्प द्रेष्काण हो ता सर्प काटने से मरता है (जा० भ०)। (२) जन्म में चन्द्रमा नवम या अष्टम में पाप ग्रह से युक्त या दृष्ट हो तो बंधन से, सर्प से या फांसी से मृत्यु हो (जा० भ०)। (३) लग्न से पंचम या नवम राशि पाप युक्त या दृष्ट हो, लग्न से २२ वां द्रेष्काण सर्प निगड़ या पाश हो तो सर्प, बंधन या फांसी लगाकर मृत्यु हो।

फांसी से मृत्यु—(१) दशमेश लग्नेश राहु व केतु से युक्त दुष्ट स्थान में हो तो फांसी से मरण हो (स० चि०)। (२) यदि २ और ६ के स्वामी राहु या केतु युक्त हों पर दुष्ट स्थान में हों तो फांसी पर टंग कर मरे (स० चि०)। (३) जिस द्रेष्काण में अष्टमेश पाश में हो तो फांसी से मरण हो (४) अष्टमेश जिस द्रेष्काण में है वह शनि राहु केतु से युक्त हो (५) या शनि इस प्रकार हो तो फांसी से मरण हो (स० चि०)। अर्थात शनि कोई द्रेष्काण में हो यदि इसका द्रेष्काण स्वामी शनि मांदि और राहु से युक्त हो (स० चि०)। (६) चतुर्थ में मंगल व सूर्य, दशम में शनि हो या सूर्य चंद्र मंगल शनि ये १, ६, ७ इन स्थानों में हों तो फांसी लगकर मरे (प्रा० यो०)। (७) दशम भाव का नवांशेश राहु केतु युक्त हो (जा० पारि०)।

शूली से मरण—(१) चतुर्थ में सूर्य, द्वितीय में चंद्र हो (जा० सं०)। (२) १०, ४, १ और ८ भाव में शुभ ग्रह हो पाप ग्रह से दृष्ट हो तो शूल पात से मृत्यु हो (जा० पा०)। (३) क्षीण चंद्र त्रिकोण या लाभ में पाप युक्त हो तो शूली से मृत्यु हो।

फांसी से, अग्नि से, गिरने से मृत्यु—(१) जन्म में शुभ ग्रह के बीच अष्टम भाव में चंद्र हो तो गिरने से, फांसी से व अग्नि से मृत्यु हो (जा० भ०)। (२) चंद्र पाप ग्रह के बीच शनि को राशि में हो तो फाँसी से व आग में गिरने से मृत्यु हो (वृ० जा०)।

शूली से या पर्वत से गिरने से मृत्यु—(१) चतुर्थ में मंगल, दशम में सूर्य या शनि हो तो शूली या पर्वत से गिरने से मृत्यु हो।

दुर्मरण विष बंधन आदि या गिरने से—(१) चंद्रमा ६,८,१२ में कहीं हो लग्नेश से दृष्ट हो और शनि राहु केतु से युक्त हो तो उसका दुर्मरण हो अर्थात् ऊँचे से गिरने बंधन आदि व विषूचिका से मरण हो (१) शनि नीच शत्रु मूढ़ अंशक में पाप युक्त दृष्ट हो क्रूर षष्ठ्यंश में होवे तो दुर्मरण हो (स० चि०)।

गला घुटकर मरे—(१) अष्टम स्थान में गुरु नीच का हो तो गला घुटकर मरे (स० चि०)। (२) अष्टमेश निर्बल हो, लग्न में पाप ग्रह की दृष्टि हो तो गले में भोजन रुकने के रोग से मृत्यु हो (जा० पा०)।

आत्महत्या—(१) ४, ५, ९, १० भाव में पाप ग्रह हो, लग्न में अष्टमेश मंगल के साथ हो तो आत्महत्या से मृत्यु हो। (२) जन्म लग्नेश पाप ग्रह हो या पाप ग्रह के बीच हो और लग्न से सप्तम घर में पाप ग्रह हो तो आत्मघात से मरे (मान०)। (३) क्रूर लग्न में जन्म हो, लग्नेश क्रूर हो तो शरीर कष्ट से आत्मघात करे (मान०)।

अपघात—(१) सूर्य या चंद्र मंगल की राशि में हो शनि से पीड़ित हो।

या सूर्य या चन्द्र शनि की राशि में हो मंगल से पीड़ित हो।

या शनि मंगल केन्द्र से अशुभ दृष्टि करते हों तो अपघात होने का भय रहे (दा० यो०)। (२) जिसकी कुंडली में लग्न या सूर्य चन्द्र पाप ग्रहों से पीड़ित हों, पाप ग्रह केन्द्र में या बलवान् हों और सूर्य चन्द्र या लग्न का शुभ ग्रहों से सम्बन्ध न हो उसे अपघात का भय रहता है ऐसी कुंडली में जिस प्रमाण से अशुभ योग हों उसी प्रमाण से आकस्मिक रीति से मृत्यु होती है।

पहिले अपघात कौन-सा होगा इसका विचार करना। अपघात उत्पन्न करने वाला मुख्य ग्रह मंगल है।

जिसके लग्न में १, ५, ४, ९, १० राशि के चंद्र के अति पास मंगल हो किंवा चंद्रमा इनमें से किसी राशि से ४, ६, ८ घर में मंगल युक्त हो, या उपरोक्त राशि में १, ४, ६, ८, १० घर में कहीं अकेला मंलग हो। उसे पाप ग्रह को अनिष्ट स्थिति प्राप्त होकर मंगल उपरोक्त स्थान में आवे तब अपघात होने का भय होगा।

(३) कौन ग्रह किस प्रकार अपघात करते हैं:—

मंगल—विस्फोट होना, कंपन, लंगड़ाना, घाव होना, मोच हो जाना आदि से।

शनि—गिरना, चिपट जाना, अंग पर जड़ पदार्थ गिरना, आदि से।

अचानक मृत्यु—(१) अष्टम स्थान में बहुत पाप ग्रह मंगल की राशि या नवांश में हो क्रूर षष्ठयंश में हो तो तत्काल मरण हो (अकस्मात् मृत्यु)। (२) समस्त शुभ ग्रह नीच अस्त अत्रु गृही या युद्ध में पराजित तथा पापांशकों में पाप ग्रहों से युक्त हों।

(३) शनि राहु सूर्य अष्टमेश से दृष्ट हों सभी क्रूरांशकों में अस्तगंत हों तो अकस्मात् मृत्यु हो (स० चि०)। (४) चंद्र दुष्ट स्थान में, शनि मांदि और राहु युक्त हो और लग्नेश की दृष्टि हो तो अकस्मात् मृत्यु हो (स० चि०)।

अचानक मृत्यु—(५) षष्ठ स्थान में राहु व चंद्र हो तो अकस्मात् मरण हो (प्रा० यो०)। (६) षष्ठ स्थान में मंगल का सम्बन्ध किसी प्रकार हो तो आकस्मिक घटना या चीर फाड़ (आपरेशन) से शरीर कष्ट हो। (७) चतुर्थ में शनि और दशम में मंगल हो तो उसकी अपमृत्यु हो संदेह नहीं (जा० सं०)।

अप मृत्यु—(१) शत्रु स्थान में चन्द्र, बुध, या गुरु होवे (शंभु०)। (२) चंद्रमा यदि शनि गुलिक राहु से युक्त होकर ६,८,१२ भाव में हो लग्नेश से दृष्ट हो तो अपमृत्यु हो (जा० पा०)।

युद्ध में मरण—(१) षष्ठेश अष्टमेश या मंगल तृतीयेश से युक्त होकर शनि मांदि और राहु से भी युक्त हों, क्रूरांश में हों तो युद्ध में मरे (स० चि०)। (२) शनि का द्रेष्काण मंगल के घर या अंश में हो और मंगल की दृष्टि हो (स० चि०)।

युद्ध में या शस्त्र से मरण—(३) अष्टम और लग्न के स्वामी बलहीन हों मंगल षष्ठेश युक्त हो तो युद्ध में मरण हो विशेषकर शस्त्र से मरण हो (जा०पा०)। (४) अष्टमेश व लग्नेश दोनों बलहीन होकर ६ या ८ घर में हो तो युद्ध में मरण हो (जा० लं०)। (५) लग्नेश अष्टमेश पाप ग्रह युक्त बल सहित षष्ठ घर में हों। जब ये ग्रह अष्टम में बलहीन हों और केवल षष्ठ में शक्तिहीन रीति से हो तो खतरा होगा पर बच जायगा (स० चि०)। (६) अष्टमेश और लग्नेश बल रहित हों तथा मंगल और षष्ठेश से युक्त हों तो रण में मरण विशेषतः शस्त्र से (स० चि०)।

द्वंद्व युद्ध में मरण—(१) द्वितीय स्थान में निर्बल शुभ ग्रह हो (जा० पा०)। (२) सूर्य मंगल की परस्पर दृष्टि हो और एक दूसरे के घर में हों या एक दूसरे के नवांश में हों (स० चि०)।

यहाँ एक दूसरे के घर में होने से परस्पर दृष्टि नहीं हो सकती परस्पर दृष्टि लग्न में मेष का सूर्य सप्तम में शनि होने से होती है।

युद्ध भय या स्फोटित (माता) का भय—लग्नेश और षष्ठेश मंगल के साथ हों तो लड़ाई का भय या स्फोटित (माता-चेचक) का भय हो जिससे मृत्यु हो (स० चि०)।

शस्त्र या अग्नि से मृत्यु—(१) पाप ग्रहों की राशि में चंद्र होकर पाप ग्रहों के मध्य में हो तो अग्नि या शस्त्र से मरण हो (जा० सं०)।

(२) चंद्र मेष या वृश्चिक राशि में हो। चंद्र से बारहवें स्थान में पोप ग्रह हो तो शस्त्र या अग्नि से मृत्यु (प्रा० यो०)। (३) मंगल के गृह में चंद्र पाप ग्रहों के बीच हो (वृ० जा०)। (४) चंद्र १, ८ राशि में या १०, ११ राशि में हो। (४) चंद्रमा में मंगल या शनि के घर में पाप दृष्ट हो या पाप ग्रह के बीच कन्या राशि में या चतुर्थ भाव में हो तो शस्त्र या अग्नि से मृत्यु हो (जा० पारि०)।

शस्त्र अग्नि व गिरने से मृत्यु—१—शनि की राशि में चंद्र पाप ग्रह के नवांश में हो तो अग्नि शस्त्र और ऊंचे से गिरने से मृत्यु हो (जा० सं०)। २—सूर्य ग्रहण का जन्म हो लग्न में सूर्य अष्टम में मंगल हो तो शस्त्र से या गिरने से मृत्यु हो (स० चि०)।

शस्त्र से मृत्यु १—चतुर्थेश छठे स्थान केन्द्र युक्त हो (जा० सं०)। २—लग्न या अष्टम में सूर्य हो (प्रा० यो०)। ३—लग्न या अष्टम में मंगल हो (प्रा० यो०)।

अग्नि में गिर कर मरे १—चंद्र मकर या कुम्भ राशि में पापग्रहों के बीच हो (प्रा० यो०)। २—नवमेश नवम में, सूर्य मंगल भी नवम में हो (जा० म०)।

कुल नाशक, अग्नि से मृत्यु ३—लग्नेश पाप युक्त केन्द्र में हो या व्यय में हो या अष्टम भाव में हो तो दुष्ट स्वभाव चरित्र वाला कुल नाश कर्ता हो, अग्नि में जल कर मरे (स० चि०)।

हाथी या सिंह से मरण—१—सूर्य से युक्त चंद्र ६, ८ घर में हो तो वह हाथी दोष से या सिंह निमित्त से मरण हो (मान०)।

हाथी से मरण—चतुर्थ में सूर्य और मंगल और दशम में शनि हो तो गज से निसंदेह मृत्यु हो (जा० सं०)।

सिंह या राजा से मरण—सूर्य युक्तचंद्र ६ या ८ घर में हो तो उसकी मृत्यु राजा या सिंह से हो (ल० चं०)।

सिंह मृग सर्प से या कुआं में या घर गिरने से—अष्टमेश जलराशि (४, ७, ८, १०, ११, १२, राशि) में होकर ४, ६ या १२ भाव में हो तो सिंह मृग सर्प से या कूप में या घर गिरने आदि से मरण हो (जा० स०)।

बाघ सर्प, शस्त्र या अग्नि से मृत्यु—अष्टमेश पापग्रह हो और पाप ग्रह से युक्त या दृष्ट हो तो शस्त्र अग्नि, सर्प या व्याघ्र से मृत्यु हो (फल०)।

सर्प द्वारा मृत्यु—१—वृष का या तुला का सूर्य नवम हो और चंद्र युक्त या दृष्ट हो। २—राहु अष्टम भाव में पाप दृष्ट हो (जा० पारि०)। ३—पंचमेश पंचम में राहु युक्त हो और शुभ दृष्ट न हो (स० चि०)। राहु सर्प बताता है इसमें शुभ योग या दृष्टि होने से इस भय को दूर करता है जैसे पंचमेश उच्च या अपने अंश का हो। ४—शत्रु क्षेत्री या भौम क्षेत्री चंद्र ६ या ८ घर में हो (जा० सं०)। ५—शत्रु गृही सूर्य नवम भाव में चंद्र से युक्त या दृष्ट हो तो सर्प से मरण हो (जा० सं०)।

घोड़े से मृत्यु—दशम मंगल और गुरु हो सप्तम में सूर्य हो तो घोड़े से मृत्यु हो (जा० सं०)।

पक्षी से व घोड़े की लात से मृत्यु—सप्तम में मंगल, सूर्य हो। शनि अष्टम, चंद्र चतुर्थ हो तो वह पक्षी या घोड़े की लात से मरे (जा० भ०)।

पक्षी द्वारा मृत्यु—१– सप्तम में सूर्य मंगल युक्त हो, शनि अष्टम में हो, चतुर्थ में क्षीण चंद्र हो तो पक्षी द्वारा मरण हो (जा० सं०) (वृ० जा०)। २—सप्तम में सूर्य मंगल शनि युक्त व अष्टम में क्षीण चंद्र हो (प्रा० यो०)।

पशु से मृत्यु—१–कर्क या सिंह का चन्द्र ७ या ८ भाव में राहु युक्त हो तो पशु से मरण हो (जा० सं०)।

जल जीवों से मरण—१–चन्द्र ६ या ८ घर में हो, शत्रु क्षेत्री बुध पर सूर्य की दृष्टि हो या सूर्य युक्त हो तो जल जीवों से मरण हो (जा० सं०)।

गाय बैल के सींग से या शूल से मरण—१–सूर्य दशम हो, मंगल चतुर्थ हो शुभ ग्रह से युक्त न हो बुध लग्न में हो तो गाय बैल के सींग से या शूल से मरण हो (जा० पारि०)।

सवारी से मृत्यु—१–दशम में सूर्य, चतुर्थ में मंगल हो तो सवारी से मृत्यु हो (वृ० जा०)। २—चतुर्थेश छठे स्थान में शनि युक्त (ज० सं०)। ३—दशम सूर्य, चतुर्थ मंगल, चन्द्रमा द्वितीय हो तो हाथी घोड़ा आदि सवारी से गिर कर मरे (जा०पा०) ४, ६, ८ घर के स्वामी चतुर्थेश के साथ हों तो वाहन से मृत्यु हो (स० चि०)। वाहन में पालकी, मोटर, साइकिल, हाथी, घोड़े आदि सब प्रकार को सवारी सामिल है। ५—मंगल चन्द्र सूर्य के साथ दशम में हो तो परदेश में या वाहन आदि से मृत्यु हो (जा० भ०)।

यन्त्र, गाड़ी रेल आदि से मरण—मंगल सप्तम व शनि चन्द्र सूर्य लग्न में हो तो यंत्र से, गाड़ी से, रेल से इंजिन या दो गाड़ी को संधि में पड़कर मृत्यु हो (प्रा० यो०)।

यंत्र की पीड़ा से मरण –(१) सप्तम में मंगल दशम में बुध हो या सप्तम चतुर्थ भाव में हों तो यंत्र की पीड़ा से मरण हो (जा० सं०)। (२) सप्तम में मंगल, और लग्न में शनि सूर्य चंद्र हो तो यंत्र से मिल जाने से मरण जैसे इंजिन कोल्हू आदि यंत्र से हो (वृ० जा०)। (३) क्षीण चंद्रमा शनि सूर्य लग्न में हो और मंगल सप्तम हो तो यंत्र से दबकर मरे (जा० भ०)।

व्रण व अग्नि से मृत्यु—लग्न में शनि, षष्ट में सूर्य, सप्तम में बुध, दशम में चन्द्र हो और नवम में मंगल हो तो व्रण या अग्नि से मृत्यु हो (जा० सं०)।

घर गिरने से—अष्टमेश चतुर्थ हो तो घर गिरने से मृत्यु हो (ज्यो० रह०)।

स्वाभाविक मृत्यु—अष्टमेश अष्टम हो तो स्वाभाविक मृत्यु हो (जा० सं०)।

घाव (व्रण) आदि से मृत्यु—(१) शनि धन भाव में हो, चन्द्रमा चतुर्थ में हो और मङ्गल दशम में हो तो व्रण (घाव) आदि से मृत्यु (जा० पा०)।

नरक या तप्त तेल में पड़कर मरे—मंगल सप्तम, शनि मेष का, चन्द्र मकर या कुंभ का हो तो नरक में पड़कर मरे या तप्त तेल में पड़कर मरे (प्रा० यो०)।

पागल पन या पिशाच पीड़ा से मृत्यु—क्षीण चन्द्र राहु मंगल या शनि युक्त होकर त्रिक स्थान में हो तो पागल पन या पिशाच पीड़ा से मृत्यु हो (स० चि०)।

हाथ कटने से मृत्यु—(१) नवम में शनि, तीसरे में गुरु हो तो जातक के हाथ पैर काटे जावें (जा० पा०)। (२) ८ वें शनि और १२ वें गुरु हो तो भी वही फल है (जा० पा०)। (३) राहु शनि और बुध दशम भाव में हो तो हाथ से रहित हो (जा० पारि०)।

हाथ पैर कटने से मृत्यु—(१) अष्टम में अत्यन्त क्षीण चंद्र, दशम में मंगल, लग्न में शनि व चतुर्थ में सूर्य हो तो हाथ पैर कटने से मृत्यु हो (प्रा० यो०)। ३) शनि लग्न में, राहु सप्तम, क्षीण चन्द्र सप्तम, और शुक्र कन्या में हो (जा० पारि०)।

पंगु होकर मृत्यु—शनि चन्द्र कर्क में हो शुभ दृष्ट न हों तो पंगु होकर मरे।

सिर कटने से मृत्यु—(१) षष्ठेश शुक्र के साथ और शनि या सूर्य राहु के साथ पाप नवांश में हों तो सिर कटने से मृत्यु हो। (२) राहु कर्क में, चन्द्र सिंह में हो या राहु केतु एक साथ अष्टम में हों तो सिर कटने से मृत्यु। (३) अष्टमेश शुक्र से दृष्ट हो, सूर्य व शनि राहु से युक्त हो व क्रूर षष्ठयंश युक्त हो तो सिर कटे (जा० पा०)।

पेट्र भेदित हो—(१) यदि लग्नवर्ती शनि शुभ ग्रहों की दृष्टि से रहित हो और कृष्ण पक्ष का चन्द्र राहु और सूर्य से युक्त हो तो नाभि के नीचे पेट्र शस्त्र से भेदित हो (जा० पा०)।

पेट विदीर्ण—मंगल की राशि या मंगल का नवांश युक्त लग्न में सूर्य हो और कृष्ण पक्ष का चन्द्रमा सूर्य की राशि में राहु बुध से युक्त हो तो पेट विदीर्ण हो (जा० पा०)।

दुःख रोग से मृत्यु—धनभाव में स्थित ग्रह शत्रु ग्रह युक्त हो या शत्रु ग्रह की राशि में हो तो दुःख रोग से मृत्यु हो (जा० सं०)।

जलोदर रोग से मृत्यु—(१) चन्द्र नवम हों, द्वितीय में कर्क का शनि हो तो जलोदर रोग से मरण हो (जा० सं०)। (२) शनि कर्क राशि का, चन्द्र मकर राशि का हो (वृ० जा०)।

शूल रोग से मरण—(१) चतुर्थ में मंगल और सूर्य, दशम में शनि हो (वृ० जा०)। (२) क्षीण चन्द्र युक्त पाप ग्रह नवम पंचम में और लाभ में हों। (३) चतुर्थ में मंगल व सूर्य हो, शनि, क्षीण चन्द्र से युक्त हो, पाप ग्रह त्रिकोण और लग्न में हो (जा०सं०)। (४) चतुर्थ में मंगल हो तो वात शूल रोग से मरे (जा० सं०)। (५) पाप युक्त क्षीण चन्द्र नवम पंचम और लग्न में हो तो शूल से मरे (वृ० जा०)। (६) क्षीण चन्द्र और

शनि दशम या चतुर्थ में हो (जा० भ०)। या सूर्य मंगल दशम या चतुर्थ में हो (जा० भ०)।

अजीर्ण से मृत्यु—(षष्ठेश अष्टमेश गुरु से युक्त हो तो अजीर्ण से मृत्यु हो (स० चि०)। (२) लग्नेश या अष्टमेश गुरु से युक्त हो। (३) लग्नेश और गुरु षष्ठ भाव में हो। (४) लग्नेश चतुर्थेश और गुरु से युक्त एक साथ (५) लग्नेश द्वितीयेश चतुर्थेश एक साथ। (६) अष्टम में २,४ और ८ भाव के स्वामी एकत्र हों (स० चि०)। ७—सप्तमेश चतुर्थेश या द्वितीयेश साथ हो (जा० पा०)।

रुधिर विकार या शेष रोग से मृत्यु—(१) कन्या का चन्द्र पाप ग्रहों के बीच हो तो रुधिर विकार या शोथ रोग से मृत्यु (वृ० जा०)।

क्षय रोग से मृत्यु (१) चन्द्रमा या गुरु जलचर राशि में होकर अष्टम में हो उस पर पाप ग्रह की दृष्टि हो तो क्षय रोग हो (जा० पा०)। (२) मङ्गल शनि षष्ठ में हो सूर्य राहु से दृष्ट हो, लग्नेश अष्टम में हो तो क्षय से मृत्यु। (३) शुक्र अष्टम में पाप दृष्ट हो तो प्रमेह वात या क्षय से मृत्यु (जा० पा०)।

मृगी से मृत्यु—(१) चन्द्र मंगल या शनि राहु के साथ अष्टम हो चन्द्रमा निर्बल हो तो मृगी रोग से मृत्यु हो (जा० पा०)। (२) क्षीण चन्द्रमा अष्टम हो तो मृगी से मृत्यु हो।

भूख से पीड़ित होकर—(१) लग्नेश मृत्यु अंश (६४ वें नवांश) में हो या सूर्य के साथ अस्त हो या छठे भाव में हो तो भूख से पीड़ित होकर अपने बंधुओं से रहित जगह में अर्थात् अकेला मृत्यु पावे (जा० पा०)।

अन्न से मृत्यु—(२) मंगल चतुर्थ में हो, शनि व चन्द्र अष्टम हो तो अन्न से मृत्यु (जा० पारि०)।

चारपाई आदि से गिरने से मृत्यु—चन्द्रमा लग्न में हो, निर्बल सूर्य अष्टम में हो, लग्न से १२ वें गुरु हो, चतुर्थ में पाप ग्रह हो चारपाई आदि से गिरने से मृत्यु हो (जा० पा०)।

मसूरिका रोग या पित्त रोग से मरण—राहु अष्टम हो पाप ग्रह से दृष्ट हो तो मसूरिका रोग या पित्त रोग आदि से मरण हो (जा० पा०)।

माता (चेचक) के कोप से मृत्यु—लग्नेश केतु युक्त पाप ग्रहों के बीच हो और लग्नेश से अष्टम में पाप ग्रह हों तो माता के कोप से मृत्यु (जा० पारि०)।

पित्त रोग से मरण—अष्टम में निर्बल सूर्य या निर्बल मंगल हो धन भाव में पाप ग्रह हों तो पित्त रोग से मरे (जा० पा०)।

त्रिदोष व्याधि (सन्निपात) से मृत्यु—(१) क्रूर ग्रह की राशि, १, ८, १०, ११ राशि में क्रूर ग्रह मंगल शनि राहु केतु से युक्त सूर्य चंद्र तीसरे भाव में हो तो त्रिदोष से मृत्यु। (२) मंगल या शनि की राशि में चन्द्र हो या कन्या राशि में हो और दो

दो पाप ग्रहों के मध्य हों शुभ ग्रह की दृष्टि न हो तो ज्वर अग्नि सन्निपात इन दोषों से मरे (जा० सं०)।

भगंदर या कुष्ट से मृत्यु—(१) ६ या १० भाव में मंगल और २ या ८ भाव में चन्द्र हो तो भगंदर या कुष्ट से मृत्यु हो (जा० सं०)।

भगंदर या कृमि से मरण—(२) क्षीण चन्द्रमा बलिष्ट हो उस पर मंगल की दृष्टि हो तो अर्श, भगंदर या कृमि रोग होकर मरे (प्रा० यो०)।

चतुर्थिका से मृत्यु (चौथिया ज्वर)—(१) अष्टम में राहु या केतु हो तो चतुर्थिका से मृत्यु हो (स० चि०)। (२) अष्टमेश राहु या केतु युक्त होकर अष्टम में क्रूर षष्यंश में हो तो उसे चौथिया ज्वर हो जिससे मृत्यु हो (स० चि०)। अष्टमेश उच्च का हो अच्छी योग दृष्टि हो तो साधारण पीड़ा होगी।

अनेक रोग से मृत्यु—जन्म में क्षीण चन्द्रमा मंगल और शनि अष्टम में या लग्न चतुर्थ या दशम में हो तो अनेक रोगों से मरे (जा० भ०)।

सामूहिक बीमारी से मृत्यु—लग्नेश अष्टमेश के साथ हो और भी बहुत ग्रहों से युक्त हो तो जिस समय बहुत लोगों की मृत्यु हो उसी समय मृत्यु हो जैसे हैजा प्लेग आदि में होता है (जा० पारि०)।

क्रोध से उत्पन्न हुआ मरण—केन्द्र में लग्नेश दो पाप ग्रहों के बीच हो और अष्टम में कोई पाप ग्रह हो तो स्व क्रोध से उत्पन्न हुआ मरण हो (जा० स०)।

लोभ से मरण—लग्न में सूर्य, पंचम में मंगल, अष्टम में शनि और नवम में चन्द्र हो तो लोभ से मृत्यु हो (जा० स०)।

कलह से मृत्यु—चन्द्रमा लग्न में हो दशम में मंगल हो तो कलह से मृत्यु हो (जा० पारि०)।

कलह से या जल में डूबने से मृत्यु—सूर्य लग्न में और चन्द्रमा सप्तम हो दोनों को पाप ग्रह देखते हों तो कलह से या जल में डूब कर मरे (जा० पारि०)।

षड़यन्त्र से तीर्थ में मृत्यु—दशम भाव में व चतुर्थ में पाप ग्रह हो, क्षीण चन्द्र ६ या ८ भाव में हो तो षड़यन्त्र से तीर्थ में मृत्यु।

थके हुए अंग से मरण—क्षीण चन्द्र शनि सूर्य मंगल क्रम से १०,१,५,९ भाव में हो तो चलने में थके अंग से मरण (जा० स०)।

दुर्मार्ग से रोग जनित मरण - अष्टम में केतु हो, अष्टमेश केन्द्र में हो और पाप ग्रह द्वादश भाव में हो लग्न निर्बल हो तो दुर्मार्ग में रोग जनित मरण हो (जा० सं०)।

यात्रा में शत्रु के दोष से मरण—पाप ग्रह दशम और चतुर्थ में, क्षीण चन्द्र ६,८ भाव में हो तो यात्रा समय में शत्रु के दोष से मृत्यु (जा० पारि०)।

बुरे मार्ग के दोष से मरण—लग्न से अष्टम में पाप ग्रह हो, अष्टमेश बारहवें हों या केन्द्र में हो लग्नेश हीन बली ग्रह से युक्त हो तो खराब रास्ते के दोष से मृत्यु (जा० पारि०)।

कारक ग्रह या लग्न के तृतीय स्थान से मरण निमित्त

(तृतीय यह प्रबल आयु तथा मृत्यु स्थान भी है ।)

लग्न या कारक से तृतीय स्थान यदि—

बली सूर्य युक्त या दृष्ट हो तो – राजा के हेतु मरण ।

चन्द्र का योग दृष्टि – क्षय रोग से मरण ।

मंगल का योग दृष्टि व्रण शस्त्र या अग्नि से मरण ।

शनि और राहु का योग दृष्टि—विष, जल या अग्नि से या गड्ढे में या ऊँचे से गिर कर या बन्धन से या फाँसी लगकर मरण (वृ० पा०) ।

अन्यमत–शनि गुलिक का योग दृष्टि –सर्प, जल रोग, बन्धन आदि से (जैमिनि) ।

चन्द्र और शनि का योग दृष्टि –कीड़े पड़ने या कुष्ट आदि रोग से (वृ० पा०) ।

अन्यमत चन्द्र गुलिक का योग दृष्टि—सुपारी के मद और अन्न ग्रास आदि से (जैमिनि) ।

गुरु का योग दृष्टि – शोथ आदि रोग से, अरुचि रोग से ।

शुक्र का योग दृष्टि - प्रमेह रोग से ।

बुध का योग दृष्टि - ज्वर से ।

बहुत ग्रहों का योग दृष्टि - बहुत रोग से ।

चन्द्र का योग दृष्टि –तो निश्चय करके उसी ग्रह के योग से मरण ।

चन्द्र का योग दृष्टि न हो—तो तृतीय स्थान में जो ग्रह युत या दृष्ट हो उसके रोग से ।

केतु का योग दृष्टि—विशूचिका रोग, जल रोग आदि से (जैमिनि) ।

यदि पाप ग्रह से युत या दृष्ट हो तो—बहुत कष्ट से ।

शुभ ग्रह से युत दृष्ट हो तो –अल्प कष्ट से ।

यदि शुभ और पाप दोनों से युत दृष्ट हो तो –मध्यम कष्ट से (जैमिनि) ।

अष्टम भाव में भिन्न ग्रह होने से मृत्यु का कारण

लग्न से अष्टम में सूर्य—अग्नि से मृत्यु (वृ० पा०) । सूर्य बली पाप ग्रह युक्त या दृष्ट हो तो उसे यमदूत होकर नाश करता है (जा० सं०) । सूर्य–अन्तर्दाह या अग्नि से मृत्यु । स्वक्षेत्र या उच्च का सौख्य देता है अन्य राशि का दुःख देता है । शत्रु क्षेत्री हो तो सर्प काटने से मरे । शुभ राशि का हो तो–तीर्थ में मरे (प्रा० यो०) ।

लग्न से अष्टम में चन्द्र – जल से (वृ० पा०) ।

,, ,, चन्द्र—मरण करता है । क्षीण चन्द्र बाल अवस्था में मृत्यु, त्रिदोष ज्वर करता है (जा० सं०) । जल से । पाप ग्रह की राशि हो तो श्वास त्रिदोष ज्वर सूजन से मृत्यु हो (प्रा० यो०) ।

,, ,, मंगल—शस्त्र से (वृ० पा०) । शस्त्र, अग्नि, कुष्ठ व शस्त्र क्रिया से, स्त्री को पीड़ा (जा० सं०) (प्रा० यो०) ।

लग्न से अष्टम में बुध—ज्वर से (वृ० पा०) सुख पूर्वक निमल तीर्थ में मृत्यु। जंघा और पेट में शूल रोग की पीड़ा। पाप युक्त बुध-मृत्यु करता है (जा० सं०)। ज्वर, ताप शूल होकर तीर्थ में मरण (प्रा० यो०)।

,, ,, गुरु—ज्वर से। शुभ राशि का, स्वगृही-ज्ञान से सुन्दर तीर्थ में मरण। अन्य राशि का श्रम से मरण (जा० सं०)। रोग का ज्ञान नहीं होता पर चैतन्य होकर मरता है (प्रा०यो०)।

,, ,, शुक्र—क्षुधा से (वृ० पा०)। पाप से व्याकुल होकर तीर्थ में मरे (प्रा० यो०)। पिता के कुल को पवित्र करता है तीर्थ में मरता है (जा० सं०)।

,, ,, शनि—पाप से (वृ० पा०)। विदेश में या नीच के समीप मृत्यु। हृदय रोग, खांसी, विसूचिका आदि नाना प्रकार के रोग से (जा० सं०)। भूख लगकर परदेश में मरे अपने कुल व मामा के कुल का नाश करे क्षुधा तृषा से पीड़ित होकर या शत्रु से, विष खाकर, सर्प डसकर या अग्नि में जलकर मरे। शनि क्रूर ग्रह युक्त हो तो चोर से मरे (प्रा० यो०)।

,, ,, राहु—दुष्ट चोरी की निंदा से मरण, कष्ट यातना से मरण (जा.सं)।

,, ,, राहु केतु—नाना प्रकार की वेदना से मरे (प्रा० यो०)।

अष्टम में अधिक ग्रह हों तो उनमें जो बली हो उसके योग से मरण।

अष्टम में शुभ ग्रह—तीर्थ में मरण (वृ० पा०)। शुभ कर्म से मरण (प्रा०यो०)।

,, ,, पाप ग्रह—अन्यत्र मरण (वृ० पा०)। बड़े कष्ट से मरे (प्रा० यो०)।

,, ,, ग्रह बलवान् हो—शुभ कर्म के हेतु मरण।

,, ,, निर्बल—अशुभ कर्म हेतु मरण।

अष्टम भाव को जो बलवान् ग्रह देखता हो उसके धातु दोष से मरण।

सूर्य देखे तो – अग्नि से	गुरु देखे तो – कफ से
चन्द्र ,, – जल से	शुक्र देखे तो – क्षुधा से
मंगल ,, – शस्त्र से	शनि देखे तो – तृषा से रोगोत्पन्न होने से
बुध ,, – ज्वर से	

यदि अष्टम भाव को कोई बली ग्रह न देखता हो और अष्टम में कोई ग्रह न हो तो आठवें भाव में जो द्रेष्काण हो उसके स्वामी के धातु से मरण हो (जा० पारि०)।

गुलिक से मरण विचार

मरण समय जिस राशि में गुलिक हो उससे सातवें राशि में यदि

बलवान् ग्रह हों-		सुख से मृत्यु
मंगल हो	--	समर में मृत्यु
शनि ,,	—	चोर, सर्प या दानव से
सूर्य ,,	--	राज दण्ड से
क्षीण चन्द्र	--	जल से मृत्यु (जा० पारि)।

ग्रहों को १२ प्रकार की स्थिति के अनुसार यवनाचार्य मत से अष्टम में ग्रहों से मरण विचार —

१. अष्टम सूर्य का फल

१–स्वोच्च–भक्ति पूर्वक अग्नि में प्रवेश से मरण। २–उच्च नवांश में–जन लज्जा से। ३–शुभ वर्ग में–प्रमाद से। ४–नीच राशि में–दावाग्नि से। ५–नीच नवांश–दंभ से। ६–क्रूर षड्वर्ग–जलने से। ७–मित्र राशि–विष भोजन से। ८–मित्र नवांश–बंधन से। ९–वर्गोत्तम–लोह से। १०–शत्रुराशि–रक्त प्रकोप से। ११–शत्रु नवांश–क्षय कास रोग से। १२–स्वराशि में–आतप (धूप) से मरण।

२. अष्टम चन्द्र का फल

१–स्वोच्च में–जल प्रवेश से। २–उच्च नवांश में–हाथ के प्रहार से। ३–शुभ षड्वर्ग–तलवार के प्रहार से। ४–नीच राशि में–स्त्री के हाथ से। ५–नीच नवांश में–पित्त कफ से। ६–क्रूर षड्वर्ग में–सन्निपात से उत्पन्न रोग से। ७–मित्र राशि–पेट के रोग से। ८–मित्र नवांश–गुदा रोग से। ९–वर्गोत्तम में–पशुओं के प्रहार से। १०–शत्रु राशि में गुप्त रोग से। ११–शत्रु नवांश में शृंग प्रहार से। १२–स्वराशि में–क्षय रोग से।

३. अष्टम में मंगल का फल

१–स्वोच्च–संग्राम से। २–उच्च नवांश–गौ के ग्रहण से। ३–शुभ वर्ग–अपने हाथ से। ४–नीच राशि–अपने शत्रु से। ५–नीच नवांश–ब्राह्मण के पार्श्व से। ६–क्रूर षड्वर्ग–पत्थर के प्रहार से। ७–मित्र राशि–कष्ट प्रहार से। ८–मित्र नवांश–कूप में गिरने से। ९–वर्गोत्तम–भीत के गिरने से। १०–शत्रु राशि–गुप्त रोग से। ११–शत्रु नवांश–विष भक्षण से। १२—स्वराशि में–चोर के प्रहार से मरण।

४ अष्टम में बुध का फल

१–स्वोच्च–ज्वर प्रकोप। २–उच्च नवांश–कफ विकार। ३–शुभ षड़वर्ग–वातरोग से। ४–नीच राशि–व्रण से। ५–नीच नवांश–महारोग से। ६–क्रूर षड़वर्ग–प्रियजन के वियोग से। ७–मित्र राशि में–मुख रोग से। ८–मित्र नवांश में–नेत्र रोग से। ९–वर्गोत्तम–वात रोग से। १०–शत्रुराशि–बन्धन से। ११–शत्रु नवांश–पेठ के रोग से। १२–स्वराशि–पाँव के घाव से।

५ अष्टम में गुरु का फल

१–स्वोच्च में–अनेक शूल रोग से। २–उच्च नवांश–शूल रोग से। ३–शुभ षड्वर्ग में–कर्ण रोग से। ४–नीच राशि में–स्वजन से। ५—नीच नवांश–विशूचिका से। ६–क्रूर षड्वर्ग–अतिसार से। ७–मित्र राशि–अपने पुरुष के मरने से। ८–मित्र नवांश–रक्त दोष से। ९–वर्गोत्तम–घोड़े से। १०–शत्रु राशि–अपने स्वामी से। ११–शत्रु नवांश–राज कोप से। १२–स्वराशि–बहु भक्षण करने से।

६ अष्टम में शुक्र का फल

१–स्वोच्च में–तृष्णा से। २–उच्च नवांश–मुख रोग से। ३–शुभ षड्वर्ग–दन्त रोग से। ४–नीच राशि–त्रिदोष सन्निपात से। ५–नीच नवांश–विशूचिका से। ६–क्रूर षड्वर्ग में–वनचारी जीव से। ७–मित्र राशि में–सर्प से। ८–मित्र नवांश में–विषभक्षण से। ९–वर्गोत्तम–लत्ता (मकड़ी फनक जाने) से। १०–शत्रु राशि–विष कण्ठ से। ११–शत्रु नवांश–रति भोग प्रकोप से। १२–स्वराशि–बहुत दुःख से।

७ अष्टम शनि का फल

१–स्वोच्च में–भूख से। २–उच्च नवांश–लंघन से। ३–शुभ षड्वर्ग–अन्न त्यागने से। ४–नीच राशि–बन्धुवर्ग से। ५–नीच नवांश–शत्रु के हाथ से। ६–क्रूर षड्वर्ग–क्षय रोग से। ७–मित्र राशि में–महादद्रु रोग से। ८–मित्र नवांश में–चातक पक्षियों द्वारा। ९–वर्गोत्तम–व्रण के प्रकोप से। १०–शत्रु राशि–घोड़े के पैर की चोट से। ११–शत्रु नवांश–हाथी से। १२–स्वराशि–गधे से।

अष्टम भाव या अष्टमेश की राशि या नवांश द्वारा मरण निमित्त का ज्ञान

अष्टम में या अष्टमेश की राशि या नवांश का फल

१—मेष राशि या नवांश—ज्वर विष, पेट की अग्नि से व पित्त प्रकोप से मरण जिस ग्रह से युक्त या दृष्ट हो उस ग्रह की धातु दोष से मरण।

२—वृष राशि या नवांश—त्रिदोष, शोक, पर शस्त्र व दाह आदि से मरण। ग्रह से हीन हो तो उपरोक्त फल। ग्रह युक्त हो तो उस ग्रह के समान दोष से मरण।

३—मिथुन राशि या नवांश—श्वास, कास व शूल आदि से मरण।

४—कर्क राशि या नवांश—मंदाग्नि से व अरुचि से मरण।

५—सिंह राशि या नवांश – विस्फोट (फोड़ा) व शस्त्र प्रहार, व ज्वर आदि से मरण।

६—कन्या राशि या नवांश—जठराग्नि व गुह्यरोग व कलह या पातक आदि से मरण।

७—तुला राशि या नवांश—बुद्धि के दोष से व ज्वर या सन्निपात दोष से मृत्यु।

८—वृश्चिक राशि या नवांश–पांडु रोग, संग्रहणी रोग व ग्रह आदि दोष से मृत्यु।

९—धनु राशि या नवांश—वृक्ष जल शस्त्र काष्ठ किसी से मृत्यु।

१०–मकर राशि या नवांश—स्थूलान्न की अरुचि से व बुद्धि भ्रांति से मरण। यदि पाप युक्त हो तो व्याघ्र व सर्प आदि जीवों से मृत्यु।

११–कुंभ राशि या नवांश—व्याघ्र से व शस्त्र व सर्प आदि से, श्वास, ज्वर, क्षय, से मृत्यु।

१२–मीन राशि या नवांश—मार्ग में प्राप्त हुआ पुरुष, सर्प आदि से या जल मध्य में जल जीवों से व मेघ प्रकोप से पीड़ित होकर मरण (जा० सं०)।

लग्नेश जिस नवांश में हो उस राशि के कोप से मृत्यु

१– मेष राशि के नवांश में– ताप ज्वर या अग्नि से।

२—वृष राशि के नवांश में—विकार या शूल रोग से।

३—मिथुन राशि के नवांश में—सिर की पीड़ा से।

४—कर्क राशि के नवांश में—बात और उन्माद से।

५—सिंह राशि के नवांश में—विस्फोट से।

६—कन्या राशि के नवांश में—जठराग्नि से।

७—तुला राशि के नवांश में—शोक से, चतुष्पाद या ज्वर से।

८—वृश्चिक राशि के नवांश में—पत्थर और शस्त्रादि से।

९—धनु राशि के नवांश में—वायु से।

१०–मकर राशि के नवांश में—व्याघ्रादि से

११–कुंभ राशि के नवांश में—व्याघ्र या स्त्री से।

१२–मीन राशि के नवांश में ज्वर से, अतिसार से (जा० पा०)।

लग्न से २२ द्रेष्काण जो हो उसका स्वामी व अष्टम भावेश अपने गुणों से मरण सूचित करता है।

अष्टम में कोई ग्रह न हो या किसी की दृष्टि न हो तो नीचे बताये अनुसार द्रेष्काण का फल विचारना। लग्न से २२ द्रेष्काण के स्वामी के हेतु मरण कहा गया है।

(१) मेष १ द्रेष्काण—शुभ ग्रह उसे न देखते हों, पाप ग्रह देखते हों } ताप तिल्ली रोग, विष या पित्त रोग से व बिच्छू सर्प आदि से मरण।

,, २ द्रेष्काण—जल जीवों से जल से व वन के बीच मृत्यु।

,, ३ द्रेष्काण—कुँआ तालाब बावली आदि में गिरने से।

(२) वृष का १ ,, —गधे, घोड़े या ऊँटों से मृत्यु।

,, २ द्रे०—पित्त, प्रकोप, अग्नि व चोर से या भेड़, बकरी द्वारा मरण।

,, ३ द्रे०—सवारी आदि या ऊंचे से गिर कर व संग्राम में मरण।

(३) मिथुन १ द्रे०—वात विकार, श्वास विकार, खांसी व दुष्ट रोग से मरण।

,, २ द्रे०—भैंसा, बैलों के द्वारा, त्रिदोष से या गिरने से मरण।

,, ३ द्रे०—हाथी वाहन आदि से, पहाड़ गिरने से, या जङ्गल में मृत्यु।

(४) कर्क १ द्रे०—जो पीने लायक नहीं उसके पीने से, कांटा के लगने से, स्वप्न के देखने से, कंठ रोग मंदाग्नि या अस्त्रशस्त्र द्वारा।

,, २ द्रे०—विष आदि दोष से या अतिसार से, दण्ड आदि या मुष्टि प्रहार से।

,, ३ द्रे०—बड़े श्रम से, ताप तिल्ली गुल्म रोग से, अतिसार व जीर्ण रोग से या प्रमेह, मूर्छा आदि रोग से।

(५) सिंह १ द्रे०—विष से या जल के रोग से या बहुत खाने से या पशु आदि से।

,, २ द्रे०—वात रोग या जल से, जल जीव या हृदय रोग से।

,, ३ द्रे०—गुदा के रोग, विष तथा शस्त्र से।

(६) कन्या १ द्रे०—बात रोग या सिर के रोग से, चोर अग्नि व पक्षी से।

,, २ द्रे०—किला कोट या पर्वत से गिरने से, सर्प तथा दाढ़ वाले जीव या घोडों से या तृष्णा से।

,, ३ द्रे०—गधे, ऊंट, शस्त्र, या जल में गिरने से, स्त्री के निमित्त से, शाप या स्त्री कृत अन्नपान से मरण।

(७) तुला १ द्रे०—गिरने से, स्त्री से व पशुओं से।

,, २ द्रे०—पेट के रोग से मरण।

,, ३ द्रे०—सर्प से या जल से, तुम्बी आदि ऊपर गिरने से।

(८) वृश्चिक १ द्रेष्काण—विष अजीर्ण या शस्त्र से या स्त्रीकृत अन्नपान से।

,, २ द्रे०—बोझ के श्रम से, कटि या वस्ति के रोग से या कुत्ता आदि से।

,, ३ द्रे०—जांघ की हड्डी टूटने से, लोह की कील या काष्ठ से, मृग हाथी ऊँट आदि के प्रहार से।

(९) धन १ द्रे०—गुदा के रोग से या वात विकार से।

,, २ द्रे०—दाह रोग से, विष से, बाण से, अग्नि से।

,, ३ द्रे०—जल से व जल जीव धारियों से, या पेट के रोग से।

(१०) मकर १ द्रे०—शेर, सुअर व बैल से या राजाओं द्वारा।

,, २ द्रे०—घोड़े की लात या सर्प से व जल जीवों से।

,, ३ द्रे०—चोर, अग्नि, शस्त्र व ज्वर से।

(११) कुम्भ १ द्रे०—स्त्री से, पुत्र से, उदर व्याधि से, जलचारी जीव, स्त्री विष से मरण हो।

,, २ द्रे०—गुह्यरोग विष व पर्वत से गिरने से, गुदा के रोग से।

,, ३ द्रे०—मुख रोग या चौपाये से।

(१२) मीन १ द्रे०—संग्रहणी, प्रमेह, गुल्म रोग व स्त्री से।

(१२) मीन २ द्रे०–जलोदर आदि रोग से, हाथी से या ग्रह से, जल में स्नान आदि करने से।

,, ३ द्रे०–बुरे लोगों से, जल से या अर्श रोग से या मूत्रकृच्छ्र से मरण हो।

मरण स्थान का योग

द्वारिका में १—अष्टमेश नवम में हो गुरु शुक्र बुध या चन्द्र इनमें से किसी से दृष्ट हो तो उस शुद्ध बुद्धि वाले का मरण द्वारिका में हो। २—अष्टमेश व अष्टम भाव का द्रेष्काण पति होकर बुध शुक्र नवम भाव में हो तो द्वारिका तीर्थ में मरण हो।

प्रयाग में १–अष्टमेश व अष्टम भाव का द्रेष्काण पति होकर चन्द्र नवम भाव में हो तो प्रयाग में मरण हो।

काशी में १—अष्टमेश व अष्टम भाव का द्रेष्काण पति होकर चन्द्र नवम भाव में हो तो काशी में मरण हो। २—नवमेश शुक्र होकर अष्टम में हो तो काशी में मरण हो। ३—नवमेश शुभ ग्रह होकर अष्टम में हो और शुभ ग्रह युक्त या दृष्ट हो तो काशी में मरण हो।

तीर्थ में १—अष्टमेश शुभ ग्रह हो और अष्टम भाव शुभ ग्रह से दृष्ट हो तो तीर्थ में मरण हो। २—नवमेश नवम में हो और शुभ ग्रहों से दृष्ट हो तो तीर्थ में मरण हो। ३—नवमेश नवम को देखे और लग्नेश लग्न और अष्टमेश अष्टम को देखे तो शुभतीर्थ में मरण हो। ४—अष्टमेश अपनी राशि में हो या लग्नेश के साथ या गुरु या शुक्र के साथ हो तो अच्छे तीर्थ में मरण हो। ५—अष्टमभाव शुभ ग्रह से युक्त और दृष्ट हो या अष्टमेश से युक्त हो तो अच्छे तीर्थ में मरण हो। ६—अष्टम भाव शुभ ग्रह युक्त या दृष्ट हो और नवमेश शुभ ग्रह हो। ७—अष्टमेश शुभ ग्रह होकर केन्द्र में हो तो तीर्थ जावे वहाँ हरि-कीर्तन में मुक्ति होवे।

गंगाजल के समीप—जन्मराशि से वर्जित होकर ३ ग्रह एक राशि में हों तो हजार पापों को त्याग कर गंगाजल के समीप मरण हो।

शिवालय में—बुध व्ययभाव में हो तो शिवालय में मृत्यु हो।

श्रेष्ठ भूमि मंदिर या वाटिका में—द्वादश भाव में सूर्य मंगल दोनों हों और सप्तम में राहु चंद्रमा हों, गुरु केन्द्र में हो तो श्रेष्ठ भूमि व देव मंदिर या वाटिका में मरण हो।

शुभ स्थान—तृतीय स्थान में शुभ ग्रह का योग या दृष्टि हो तो शुभ स्थान तीर्थ आदि में मरण हो।

अशुभ स्थान—तृतीय स्थान में पाप ग्रहों का योग या दृष्टि हो तो अशुभ स्थान मगध आदि में मरण हो।

मध्य स्थान या स्वगृह में—तृतीय स्थान में शुभ और पाप दोनों प्रकार के ग्रहों का योग दृष्टि हो तो मध्य स्थान अर्थात् अपने ही घर में मृत्यु हो।

विष्ठा के मध्य—दशम में क्षीण चंद्र और मंगल की राशि में सूर्य हो चंद्रमा शनि की राशि में हो तो विष्ठा के मध्य मरण हो।

शुभ विधि से अपने घर में—नवमेश गुरु होकर अष्टम में हो तो शुभ विधि से अपने घर में मरण हो, अष्टमेश व अष्टम भाव द्रेष्काण पति गुरु होकर नवम में हो तो अपनी भूमि में मरण हो।

परदेश में मरण—अष्टमेश व अष्टम भाव का द्रेष्काण पति मंगल होकर नवम में हो तो परदेश में मरण हो।

जल के समीप मरण—चतुर्थेश लग्नेश के साथ चतुर्थ में हो दशमेश से दृष्ट हो तो कुंआ आदि जलाशय के समीप मृत्यु हो।

मरण भूमि ज्ञान

जन्म लग्न में जो नवांश हो उसका स्वामी जिस राशि में हो उस राशि की जो भूमि हो उस भूमि में मरण होगा। जैसे :—(१) मेष–बकरी या भेड़ों का स्थान। (२) वृष–गाय बैल आदि ढोरों का स्थान। (३) मिथुन–घर का स्थान। (४) कर्क–कूप आदि के समीप। (५) सिंह–वन का स्थान। (६) कन्या–कुंआ के समीप। (७) तुला–बाजार या दूकान के समीप। (८) वृश्चिक–छिद्र की जगह। (९) धनु–घोड़े का स्थान। (१०) मकर–जल के समीप। (११) कुंभ–घर का स्थान। (१२) मीन–जल के समीप।

(१) जिन मरने के योगों में जलादि से मरना कहा है उनकी मृत्यु जलादि में ही होगी। उनका यहाँ बताये राशि वश से मरण भूमि नहीं कहना।

(२) ग्रह लग्न नवांश पति की और लग्न नवांशेश जिसके नवांश में हो उसकी जो भूमि कही है उससे मृत्यु जानना। जहाँ बहुत प्रकार से भूमि का होना प्रगट हो वहाँ उनमें बलीग्रह से मरण भूमि का निर्णय करना।

(३) लग्न नवांशेश जिस राशि में हो वहाँ और किसी ग्रह का साथ नवांशेश से हो तो उस योग करने वाले ग्रह की योनि भेद में जो भूमि बताई गई है उस भूमि में मृत्यु हो।

(४) जिस ग्रह की दो राशियां हों तो उसकी जो मूल त्रिकोण राशि हो, उसे लेना और उसके अनुसार भूमि कहना जैसे :—

सूर्य का मूल त्रिकोण–सिंह राशि है जिसकी भूमि–वन है।
चंद्र का मूल त्रिकोण कर्क राशि है जिसकी भूमि–जल समीप है।
मंगल का मूल त्रिकोण–मेष है–भूमि भेड़ बकरी का स्थान।
बुध का मूल त्रिकोण–कन्या भूमि–कूप या जल समीप।
गुरु का मूल त्रिकोण–धनु, भूमि–घोड़े का स्थान।
शुक्र का मूल त्रिकोण–तुला, भूमि–दूकान आदि का स्थान।
शनि का मूल त्रिकोण–कुंभ, भूमि–घर का स्थान।

अन्यमत से ऐसी परिस्थिति में ग्रहों की जो भूमि गुणधर्म में कही है वह लेना अर्थात् मंगल–अग्नि स्थान। बुध–बिहार। गुरु–भंडार स्थान। शुक्र–शयन स्थान। शनि–ऊषर भूमि।

(५) अष्टम भाव का नवांश (लग्न से ६४वां नवांश) जिस राशि का हो उस राशि से भी मरण की भूमि का विचार करना।

मरण की दिशा

दिन के जन्म में रात्रि बली राशि या रात्रि के जन्म में दिन बली राशि लग्न में हो तो लग्न गत नवांश पति, उसमें स्थित ग्रह, और उसके देखने वाले ग्रहों में जिसका स्थान बल अधिक हो उसकी दिशा में जातक की मृत्यु हो (जा० पारि०)।

मृत्यु के पश्चात् शव संस्कार

अष्टम स्थान में जो तत्कालिक द्रेष्काण होता है वही लग्न से २०वां द्रेष्काण होता है वह द्रेष्काण यदि :—अग्नि द्रेष्काण (पाप द्रेष्काण) हो—तो प्रेत का अग्नि संस्कार (दाह) हो।

जल द्रेष्काण (शुभ द्रेष्काण) हो—जल में बहाया जाय।

मिश्र द्रेष्काण (शुभ और पाप दोनों) हो कहीं ऊसर भूमि में सूखेगा।

सर्प द्रेष्काण हो तो –शरीर को कुत्ते, कौवे, चील, स्यार आदि खावें। बाद गति न हो।

सर्प द्रेष्काण—कर्क का पहिला, वृश्चिक का दूसरा, मीन का तीसरा (वृ० जा०)।

सर्प द्रेष्काण अन्यमत से—कर्क का २, ३, वृश्चिक का १, २ मीन का १ (वृ.पा.)।

यदि सौम्य द्रेष्काण हो तो मिट्टी में गड़ाया जावे।

यदि जलचर द्रेष्काण हो तो—जल में बहाया जावे।

शव का दाह न हो—लग्नेश जल राशि के नवांश में होकर जल राशि में हो और चन्द्र शुक्र से दृष्ट हो और पाप ग्रह ८,१२ घर में हो तो उस शव का दाह संस्कार नहीं होगा।

मरने के बाद दुर्गति—द्वादश भाव शनि राहु या केतु से युक्त हो फिर अष्टमेश से युक्त हो या षष्ठेश से दृष्ट हो तो मरने के बाद दुर्गति हो।

मृत्यु के पश्चात् गति

(१) जिसका ६, ७, ८ भाव ग्रह रहित हो तो तत्काल में जो ६ और ८ स्थान में जिस का द्रेष्काण हो उसमें जो बली हो उसके अनुसार पूर्व बताई हुई प्रत्येक पश्चात् गति द्रेष्काण के अनुसार होगी। ६, ७, ८ भाव में कई ग्रह हों सभी जगह ग्रह हों तो उनमें से जो बलवान् हो उसके अनुसार गति मिलेगी।

मोक्ष

(१) गुरु कर्क का ६,८ या केन्द्र में हो।

(२) मीन का गुरु लग्न में हो और शुभ ग्रह के अंश में हो शेष ग्रह निर्बल हों (वृ० जा०)।

(३) १२ वें भाव में शुभ ग्रह हो व्ययेश शुभ ग्रह से युक्त दृष्ट हो (वृ० पा०)।

(४) गुरु धनु लग्न में मेष के अंश में हो, शुक्र सप्तम हो और बली चंद्र कन्या राशि में हो (जा० पारि०)।

(५) व्यय में केतु हो तो मुक्ति लाभ हो (स० चिंतामणि)।

(६) दशम में मीन राशि का बुध या मंगल हो (स० चि०)।

(७) दशम में मीन राशि हो शुभ ग्रह युक्त या मंगल युक्त हो (स० चि०)।

(८) कहे हुए निर्वाण योग न हों उसके अष्टम भाव का द्रेष्काण पति बली होकर ६,७ या केन्द्र में हो तो मोक्ष हो (जा० सं०)।

(९) गुरु स्वगृही ६-८ या केन्द्र में हो (प्रा० यो०)।

मोक्ष कहाँ होगा

मोक्ष द्रेष्काण पति यदि :—

सूर्य हो—नर्मदा नदी के पूर्व तट या शोण के या यमुना के दक्षिण तट में।

चंद्र हो—शोण के उत्तर या अयोध्या, सरस्वती व वेत्रवती में मरण हो।

मंगल हो—कृष्णा, गोदावरी, नर्मदा तीर्थ, फल्गुतीर्थ या गंगा तट में।

बुध हो—गंगा, कौशिकी, गंभीरा व वासिष्ठी नदी को प्राप्त होकर मरण।

गुरु हो—सिंधु, मथुरापुरी, विपाशा नदी को प्राप्त होकर मरण।

उच्च का केन्द्री गुरु—काशी, ऐरावती, गंगा व रामपुरी को प्राप्त होकर मरण।

मोक्ष स्थान

मोक्षमार्गी पति उच्च का शुक्र हो—शतद्रु, चन्द्रभागा, इरावती, गंगा व देविका। मोक्षमार्गी पति उच्च का शनि हो—प्रभास क्षेत्र, कुरुक्षेत्र, बटेश्वर, सरस्वती व दृषद्वती में मरण (जा० सं०)।

मृत्यु के पश्चात् प्राणी किस लोक को जायगा

(१) लग्न से ६,७,८ स्थान में कहीं गुरु हो तो—देव लोक को जायगा।

लग्न से ६,७,८ स्थान में शुक्र चंद्र हो तो—चंद्र लोक (पितृ लोक)।

लग्न से ६,७,८ स्थान में सूर्य मंगल हो तो—भूलोक या तिर्यग्योनि (कीटादि)।

लग्न से ६,७,८ स्थान में बुध शनि हो तो—अधो लोक (नरक) में जायगा।

(२) ६,७,८ भाव में कोई ग्रह न हो तो ६,८ भाव के द्रेष्काण पति में जो बलवान् हो उस ग्रह के लोक में जायगा।

(३) या मरण काल के लग्न में उपरोक्त ग्रह से लोक विचारना या उनमें बली द्रेष्काण पति से लोक विचारना।

(४) इनमें भी ग्रह की उच्च नीच या मध्यम की स्थिति के अनुसार गति की श्रेणी का विचार होता है। जैसे—

उक्तग्रह उच्च में हो या द्रेष्काणेश पर शुभ दृष्टि हो तो—देव लोक आदि में श्रेष्ठ श्रेणी मिलेगी।

उक्तग्रह नीच में हो—देवलोक आदि में नीच श्रेणी मिलेगी।
नीच उच्च के मध्य में—देवलोक आदि में मध्यम श्रेणी मिलेगी (स० चि०)।

(५) राशि चन्द्र के अनुसार ३ लोक का स्थान निर्णय—
१,२,३,४ ये ४ राशि भूचक्र है—ये मरण काल में हों तो—भूर्लोक जाता है।
५,६,७,८ ये राशि भुवश्चक्र है—ये मरण काल में हों तो—भुवर्लोक जाता है।
९,१०,११,१२ ये राशि स्वश्चक्र है—ये मरण काल में हों तो—स्वर्ग लोक जाता है (जा० पारि०)।

(६) व्यय भाव का ग्रह, या व्ययेश या व्यय भाव के नवांश से भी विचारना कि मृतक कौन लोक को जायगा। ये ग्रह यदि—

सूर्य चंद्र हो—कैलास में। शुक्र हो—स्वर्ग में। मंगल हो—पृथ्वी में। बुध हो—वैकुण्ठ में। शनि—यम स्थान में। गुरु—ब्रह्म लोक में। राहु—दूसरे द्वीपों में। केतु—नरक में जायगा (फल दी०)।

(७) शीर्षोदय पृष्ठोदय राशि के अनुसार विचार—शीर्षोदय राशि हो तो—स्वर्ग में जावे। पृष्ठोदय राशि हो तो—नरक में जावे (फल०)।

मृत्यु के पश्चात् स्वर्ग नरक प्राप्ति के योग

स्वर्ग प्राप्ति—(१) बारहवें भाव में उच्च का शुभ ग्रह हो शुभ ग्रहों से दृष्ट हो और देव लोकादि अच्छे अंशक में हो तो मृत्यु के बाद स्वर्ग प्राप्त हो। (२) यदि दशमेश देवांश में हो या १२ वें घर पर शुभ दृष्टि हो तो स्वर्ग प्राप्त हो (स० चि)। (३) अन्य मत—दशमेश गुरु व्यय भाव में शुभ ग्रह से दृष्ट हो (स० चि०)। (४) व्ययेश उच्च में या मित्र गृही या शुभ के वर्ग में हो या शुभ ग्रह युक्त हो तो मृत्यु के पश्चात् स्वर्ग प्राप्त हो (फल०)। (५) शुभ ग्रह उच्च राशि का १२ वें भाव में हो उसे पाप और शुभ ग्रह देखते हों और शुभ वर्ग में भी हो तो मृत्यु के बाद स्वर्ग मिले (जा० पारि०)। (६) गुरु दशमेश होकर १२ वें भाव में हो शुभ ग्रहों से युक्त दृष्ट हो तो मृत्यु के पश्चात् ऊपरपद (देवपद) प्राप्त हो (जा० पारि०)। (७) बली गुरु कर्क लग्न में धनु के नवांश में हो और ३–४ ग्रह केन्द्र में हों तो मृत्यु के बाद ब्रह्मपद पाता है (जा० पारि०)।

नरक प्राप्ति—(१) बारहवें घर का स्वामी पाप षष्ठ्यंश में हो पाप ग्रह की दृष्टि हो। (२) राहु, गुलिक और अष्टमेश से युक्त होकर यदि १२ वें भाव में हो षष्ठेश से दृष्ट हो तो मृत्यु के बाद नरक मिले (जा०पारि०)। (३) सूर्य मंगल के साथ राहु १२ वें भाव में हो या द्वादशेश सूर्य के साथ हो (वृ० पा०)। (४) व्ययेश पाप ग्रह के अंश में, क्रूर अंश में या पाप ग्रह युक्त दृष्ट हो। (५) व्यय में राहु और मांदि अष्टमेश युक्त हो या षष्ठेश से दृष्ट हो। (६) व्यय भाव राहु और केतु या अष्टमेश से युक्त या षष्ठेश से दृष्ट हो तो मृत्यु पश्चात् नरक में जावे (स० चि०)।

जातक किस लोक से आया है

(१) सूर्य चंद्र दोनों में जो बली हो वह जिस द्रेष्काण में पड़े उसका स्वामी यदि गुरु हो—देवलोक से आया है।

यदि चंद्र शुक्र हो—पितृ लोक से (चंद्र लोक से)।

यदि सूर्य मंगल हो—पशुलोक, मर्त्य लोग या तिर्यक् लोक से।

यदि शनि बुध हो—नरक से।

यदि ग्रह उच्च के हों तो—पूर्व बताये लोक में उच्च स्थिति रहो।

यदि ये ग्रह नीच के हों तो—पूर्व बताये लोक में नीच स्थिति रही।

यदि ये ग्रह मध्य के हों तो—पूर्व बताये लोक में साधारण स्थिति रही (वृ० पारा०)।

पूर्व जन्म और भविष्य जन्म का हाल जानना

पूर्व जन्म का—नवमेश से पूर्व जन्म का हाल प्रगट होता है।

भविष्य का—पंचमेश से भविष्य का हाल प्रगट होता है।

इन ग्रहों से जाति, देश, स्थान और दिशा आदि से पूर्व जन्म या भविष्य जन्म का विचार करना।

उपरोक्त ग्रह उच्च का हो—वह देश देवताओं का होगा।

उपरोक्त नीच या शत्रुगृही हो—विदेश।

उपरोक्त स्वगृही, मित्र गृही या समगृही हो—वह देश भारत वर्ष होगा।

ग्रह के अनुसार देश विचार

गुरु—आर्यावर्त जो पूर्व से पश्चिम समुद्र तक, उत्तर में हिमालय, दक्षिण में विंध्याचल।

शुक्र, चंद्र—पवित्र नदियों के जल के समीप का देश।

बुध—पुण्य स्थल।

शनि—निंद्य स्थान जो विदेशियों (म्लेच्छों) के कब्जे में हो।

सुर्य—पहाड़ और जंगल देश।

मंगल—विहार देश (फल दी०)।

गत जन्म में क्या था अगले जन्म में क्या होगा विचार

पहिले बता चुके हैं कि नवमेश से पूर्व जन्म का हाल और पंचमेश से भविष्य जन्म का हाल जाना जा सकता है। उनसे यहाँ विचारना कि क्या था और अब क्या होगा।

वृक्ष लता आदि—पंचम और नवम के स्वामी स्थिर राशि या अंश में हों और पृष्ठोदय अधोमुख राशि भी हो तो वृक्ष लता आदि गत या भविष्य जन्म की योनि कहना।

पशु जन्म—यदि ९ और ५ के स्वामी शीर्षोदय राशि में हों और ऊर्ध्वमुख राशि में हो जिसमें चर राशि या अंश हो तो जन्म जानवरों के प्रकार का समझना।

मनुष्य जन्म—यदि ९ या ५ के स्वामी लग्नेश के उच्च या स्वक्षेत्री में हों तो मनुष्य जन्म जानना।

पशु योनि—यदि उपरोक्त राशि का ग्रह लग्नेश का सम हो तो पशु योनि का जन्म समझना।

पक्षी जन्म—यदि राशि शत्रुगृही या नीच में हो तो पक्षी का जन्म था या होगा। ९ या ५ भाव के स्वामी का द्रेष्काण विचार कर, द्रेष्काण के स्वरूप पर भी विचार कर कहना (फल०)।

स्वस्थान में जन्म—यदि उपरोक्त दोनों ग्रह एक घर में हों तो अपने ही स्थान में जन्म हुआ था या होगा।

स्वजाति में जन्म—यदि वे बराबर बल के हों तो जन्म उसी जाति में हुआ था या होगा।

रंग गुण—रंग और गुण ९ या ५ भाव के स्वामियों के अनुसार विचारना संज्ञा अध्याय में जो गुण धर्म आदि कहा है उस पर पूर्ण विचार कर फल कहना (फल०)।

पताकी अरिष्ट विचार

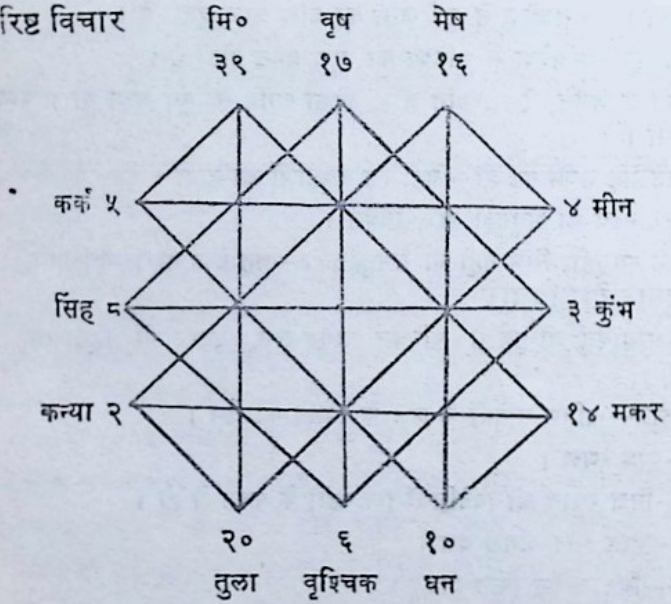

यहाँ पताकी चक्र में राशि स्थिर हैं और यहाँ जो अंक दिये हैं वे अरिष्ट समय सूचक हैं। इस चक्र में कुंडली के अनुसार जिस राशि पर जो ग्रह हो और जहाँ लग्न हो लिख दिया जाता है। फिर दंडाधिपति ग्रह का निर्णय कर वैसा लिख दिया जाता है। यदि लग्न से दंडाधिपति ग्रह का वेध हो तो पता की अरिष्ट होता है और अरिष्ट का समय जानने को वेध राशियों के योग से प्रकट होता है।

वेध विचार—इस चक्र में सरल रेखा द्वारा ३ राशियों का सम्बन्ध बनाया है और उन्हीं ३ राशियों का वेध होता है।

यहाँ मेष और मिथुन राशि किसी वेध स्थान में नहीं है। इस कारण कर्क का वेध स्थान मिथुन नहीं होगा। परन्तु मिथुन का वेध स्थान कर्क होगा। इसी प्रकार सिंह का

वृष के साथ। कन्या का मेष के साथ। और तुला का मिथुन के साथ वेध नहीं होगा। केवल नीचे बनाये चक्र के अनुसार ही राशियों का वेध होगा।

राशि	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
वेध-	६	८	४	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
राशियाँ	९	५	७	९	८	७	६	५	१०	६	५	४
	१२	११	१०	१२	११	१०	१२	११	४	९	८	७

मेष – वेध कन्या+धन+मीन योग
२ १० ४ १६

वृष – वेध वृश्चिक+सिंह+कुंभ
६ ८ ३ १७

मिथुन–वेध कर्क+तुला+मकर
५ २० १४ ३९

इस प्रकार यहाँ मेष वृष मिथुन
१६ १७ ३९

बताया है। शेष राशियों के चक्रानुसार अंक ही रहेंगे अर्थात् कर्क सिंह कन्या तुला
५ ८ २ २०

वृश्चिक धन मकर, कुम्भ और मीन।
६ १० १४ ३ ४

पताकी वेध विचार के लिये पहिले यमार्द्ध निकाल कर फिर दंडाधिपति निकालना पड़ता है। जो ग्रह दंडाधिपति हो उस पर ऐसा लिख देना पड़ता है। फिर लग्न से दंडाधिपति का वेध होता है या नहीं उपरोक्त चक्र से देखना पड़ता है। वेध होने से पताकी अरिष्ट कहलाता है और वह अरिष्ट कब होगा, उनके वेध कारक राशियों के अंक या जोड़ करने से पता लग जाता है।

यमार्द्ध जानना

यमार्द्ध रात और दिन का पृथक्-पृथक् होता है। दिन-रात में १६ यमार्द्ध होते हैं दिन में ८ और रात्रि में ८।

दिन का यमार्द्ध जानने को जो दिन है उससे छटवां-छटवां आगे का ग्रह गिनते जाने से ८ यमार्द्ध निकल आते हैं जैसे इतवार को यमार्द्ध जानना है :—

(१) इतवार का पहिला यमार्द्ध हुआ। जो दिन हो उसका ही पहिला यमार्द्ध होता है (२) इतवार से छटवां शुक्र, (३) शुक्र से छटवां बुध, (४) बुध से छटवां चन्द्र (५) चंद्र से छटवां शनि, (६) शनि से छटवां गुरु (७) गुरु से छटवां मङ्गल और (८) मङ्गल से छटवां सूर्य का यमार्द्ध होगा। दिनों के क्रम से यह गिनना चाहिये। इसी प्रकार किसी भी दिन का यमार्द्ध गिनकर निकाल लो।

रात्रि का यमार्द्ध पांचवां होता है। (१) जैसे शनि का पहिला यमार्द्ध शनि ही होगा (२) दूसरा शनि से पांचवां बुध, (३) बुध से पांचवां सूर्य, (४) सूर्य से पांचवां गुरु, (५) गुरु से पांचवां चंद्र, (६) चंद्र से पांचवां शुक्र, (७) शुक्र से पांचवां मंगल, (८) मंगल से पांचवां शनि, ये रात्रि के यमार्द्ध हुए।

गणित से जो यमार्द्ध निकले उससे दंडाधिपति जितना हो चन्द्र से देख लेना। दिन में सूर्य, राहु, बुध चंद्र ये ४ क्रम से दंडाधिपति होते हैं रात्रि में सूर्य शुक्र बुध चंद्र क्रम से दंडपति होते हैं। नीचे जिसका स्पष्ट चक्र दिया है :—

दिन का यमार्द्ध चक्र १

यमार्द्ध खंड

दिन	१	२	३	४	५	६	७	८
रवि.	रवि.	शु.	बु.	चं.	श.	गु.	मं.	र.
सोम.	चं.	श.	गु.	मं.	र.	शु.	बु.	चं.
मंगल.	मं.	र.	शु.	बु.	सो.	श.	गु.	मं.
बुध.	बु.	चं.	श.	गु.	मं.	र.	शु	बु.
गुरु.	गु.	मं.	र.	शु.	बु.	चं.	श.	गु.
शुक्र.	शु.	बु.	चं.	श.	गु.	मं.	र.	शु.
शनि.	श.	गु.	मं.	र.	शु.	बु.	चं.	श.

रात्रि का यमार्द्ध चक्र २

यमार्द्ध खंड

दिन	१	२	३	४	५	६	७	८
रवि.	र.	गु.	चं.	शु.	मं.	श.	बु.	र.
चंद्र.	चं.	शु.	मं.	श.	बु.	र.	गु.	चं.
मं.	मं.	श.	बु.	र.	गु.	चं.	शु.	मं.
बुध.	बु.	र.	गु	चं.	शु.	मं.	श.	बु.
गुरु.	गु.	चं.	शु.	मं.	श.	बु.	र.	गु.
शुक्र.	शु.	मं.	श.	बु	र.	गु.	चं.	शु.
शनि.	श.	बु.	र.	गु.	चं.	शु	मं.	श.

दिन का दंड स्वामी चक्र ३

दंडपति	रवि	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	शनि.
दंड							
१	रवि	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.
२	रा.	र.	र.	चं.	चं.	मं.	मं.
३	बु.	रा.	रा.	र.	र.	रा.	रा.
४	चं.	बु.	बु.	रा.	रा.	रा.	रा.

रात्रि का दंड स्वामी चक्र ४

दंडपति	रवि	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	शनि.
दंड							
१	रवि	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.
२	शु.	श.	र.	चं.	मं.	बु.	गु.
३	बु.	गु.	शु.	श.	र.	चं	मं.
४	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	र.

यमार्द्ध और दंडपति जानना

रात्रि का जन्म हो तो रात्रिमान को, दिन का जन्म है तो दिनमान को ८ से भाग दो तो एक यमार्द्ध का समय निकलेगा। फिर जन्म इष्ट में देखो कितने यमार्द्ध गत हो गये और कौन-सा वर्तमान है। जन्म दिन से इतने यमार्द्ध गिनकर इष्ट काल में कौन यमार्द्ध होगा चक्र नं० १ से देख लो।

यदि रात्रि का जन्म है तो इष्ट से दिन मान घटाकर शेष रात्रि के इष्ट में रात्रि का कौन-सा यमार्द्ध है निकालो यहां रात्रिमान के अष्टमांश का एक यमार्द्ध होगा।

दंडपति निकालना—एक यमार्द्ध को घटीपल ४ का भाग देना तो एक दंड का समय निकलेगा। उससे देखो अंतिम यमार्द्ध में कौन-सा दंडपति आता है।

उदाहरण—जन्मवार मंगलवार दिनमान ३३-४०। इष्ट २४-५६-६५ दिन का जन्म दिनमान ३३ – ४० ÷ ८=४ घ० १२॥ प०। अब इष्ट २१-५६-५५ में एक एक यमार्द्ध का समय ४-१२॥ घटाओ कितने बार घटता है ५ बार घटकर छटे यमार्द्ध का शेष २-५४-३६ बचा। मंगलवार छठा यमार्द्ध शनि आया अब दंडपति निकालना है।

१ यमार्द्ध ४-१२॥ ÷ ४८=१ घ० ३ प० ७॥ दि०। शेष छटे यमार्द्ध का २-३४-३६ का उसमें १-३-७॥ कई बार घटाया तो केवल २ बार घटा तीसरे का शेष ०-४८-११ बचा। इससे प्रगट हुआ कि छटे यमार्द्ध शनि का तीसरा दंडपति राहु आया।

यदि रात्रि का जन्म है मान लो इष्ट ४५-१५ है।

(६०-०) – दिनमान ३३-४०=रात्रिमान=३६-२०÷८=३ घं० १७॥ प० रात्रि यमार्द्ध इष्ट ४५-१५ – दिनमान ३३-४० शेष रात्रि=११-३५ | शेष रात्रि ११-३५ में एक रात्रि यमार्द्ध कई बार घटाया तो केवल ३ बार घटा शेष १-४२॥ बचा वह चौथे यमार्द्ध का है इससे प्रगट हुआ कि मंगलवार के चौथे यमार्द्ध रात्रि यमार्द्ध के अनुसार रात्रि को सूर्य के यमार्द्ध में जन्म हुआ।

दंडपति निकालने को रात्रि का १ यमार्द्ध ३ घ.-१७॥ प.÷४=०घ.-४६प.-२२॥वि. का एक दंड हुआ। अब छठवा शेष १-४२॥ यमार्द्ध में कितने दंड हुए निकालना है। १-४२॥ में एक दंड=०-४६-२२॥ कई बार घटाया तो केवल २ बार घटा तो पूरे दंड का ०-घ० ३-प० ४५ वि० केवल बचा इससे सूर्य का रात्रि का तीसरा दंड-पति चक्र के अनुसार बुध आया।

लग्न कुंडली

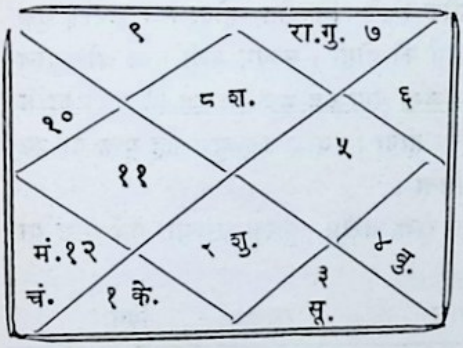

जन्म मंगलवार इष्ट २४ घ०-५६ प०-५६ वि० दिन मान ३३-४० मंगल के दिन में शनि के यमार्द्ध में जन्म हुआ जिसका तीसरा दंडाधिपति राहु है।

यहाँ कुंडली के अनुसार देखा लग्न का वेध दंड पति से नहीं होता। परन्तु १२ राशि में स्थित चन्द्र से

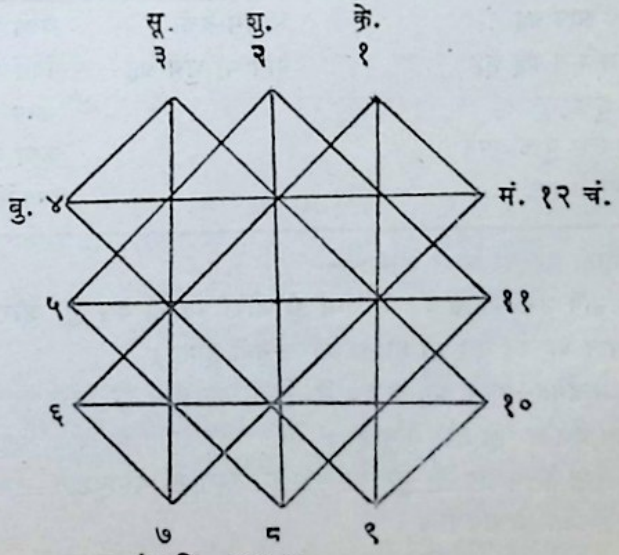

रा.गु. दंडपति लग्न श.

जहाँ मंगल भी है पाप युक्त चन्द्र से दण्डपति का वेध होता है। दंड पति राहु पाप ग्रह शुभ युक्त है। ७–६–१२ का वेध है। यहाँ २०+४=२४ मास में (वेध कारक
२०+२+ ४
ग्रह युक्त राशियों का योग हुआ) २४ मास में इसकी मृत्यु हुई।

मान लो दंडाधिपति सिंह राशि में है तो ८ लग्न का ८-५-११ राशि से वेध होता है। वृश्चिक+सिंह+कुंभ योग तो १७ वर्ष माह या दिन में ग्रह परिस्थिति के
६ + ८+३ = १७
अनुसार अरिष्ट योग या ६+८=१४ या ६+३=९ इस प्रकार ९, १४ या १७ वर्ष मास या दिन में अरिष्ट होगा। यह अरिष्ट इतने दिनों, मास, या १ वर्ष में होगा इसका विचार आगे दिया है।

सबल पाप ग्रह अरिष्ट कारी होने से उपर्युक्त अंक दिन की संख्या बताता है। मध्यम होने से मास और दुर्बल होने से वर्ष की संख्या बताता है।

परन्तु शुभ ग्रह अनिष्ट कारी होने से ठीक इसके विपरीत होता है। अर्थात् शुभ ग्रह वली और अनिष्टकारी हो तो वह संख्या वर्ष की होगो। मध्यम वली मास और क्षीण वली में हो तो उतने दिन में अरिष्ट जानना। लग्न पाप ग्रह युक्त या दृष्ट हो या लग्न में शत्रु गृही पाप ग्रह हो तो उतने दिन में अरिष्ट होगा। यदि लग्न शुभ ग्रह युक्त या दृष्ट या लग्न से दृष्ट हो तो उतने वर्ष में अरिष्ट समझना।

यहाँ स्पष्ट समझ में आ जायगा कि उपरोक्त अरिष्ट सूचक संख्या वर्ष मास या दिन की है।

वर्ष	मास	दिन
निर्बल पाप ग्रह हो	मध्यम वली	वली पाप ग्रह
निर्बल शुभ ग्रह हो	पाप या शुभ ग्रह	निर्बल शुभ ग्रह
लग्न शुभ ग्रह		लग्न पाप ग्रह युक्त
लग्न शुभ युक्त अपने		लग्न पाप ग्रह दृष्ट
स्वामी से दृष्ट		लग्न में शत्रु गृही पाप ग्रह

इन बातों पर भी ध्यान देना :—

(१) यदि शुभ ग्रह के दंड में जन्म हो और पताकी वेध हो और लग्न यदि लग्न से किसी पाप ग्रह का वेध भी हो तो अरिष्ट नहीं होगा।

(२) अन्यमत–अशुभ ग्रह के दंड में किसी का जन्म हो और पताकी वेध हो और शुभ ग्रह का वेध न हो तो मृत्यु हो। ऐसी परिस्थिति में शुभ ग्रह का वेध होने से विशेषकर लग्न के स्थान में गुरु या शुक्र के रहने से देवानुष्ठान तथा उत्तम औषधि प्रयोग द्वारा रक्षा हो सकेगी।

(३) लग्नेश तथा दंडाधिपति एक ही ग्रह हो तो पताकी अरिष्ट नहीं होता।

(४) बुध का दंड हो और लग्न बुध से वेध करे तो अरिष्ट अवश्य हो यहाँ जो वर्ष मास या दिन सूचक अंक है इसके समीप ही अर्थात् कुछ आगे या कुछ बाद ग्रह परिस्थिति के अनुसार मृत्यु हो सकती है।

———

अध्याय १०

नीरोगता

(१) लग्नेश या षष्ठेश गुरु युक्त होवे तो निरोग हो (स० चि०)। (२) अष्टम में शुभ ग्रह की दृष्टि हो तो स्वास्थ्य ठीक रहे (स० चि०)। (३) लग्न में सब शुभ ग्रह हों तो निरोग हो (ल० चं०)। (४) सूर्य पर गुरु या चन्द्र की शुभ दृष्टि हो (बाल बो०)। (५) षष्ट स्थान में गुरु का कोई सम्बन्ध हो तो रोग से शीघ्र छुटकारा हो। (६) ३,६,११ भाव में शनि, मङ्गल, राहु एक साथ या पृथक् २ हो तो छुटकारा हो। (७) लग्नेश केन्द्र त्रिकोण में हो तो देह सुख कारक हो (वृ०पा०)। (८) दुर्बल लग्नेश केन्द्र त्रिकोण में हो तो व्याधि रहित हो (जा० पारि०)। परन्तु कुछ रोग भी रहे। परन्तु लग्नेश दुर्बल होने से क्रोधी हो (जा० पारि०)। (९) षष्ठेश या षष्ठस्थ (षष्ठ स्थान में) षष्ठदर्शी (षष्ठ को देखने वाले) कोई-कोई ग्रह शुभ ग्रहों और केन्द्र कोण या लाभ में कहीं भी बलयुक्त हों तो छोटे-छोटे रोगों का नाश करता है (जा० पारि०)। (१०) षष्ठेश से युक्त शुक्र, गुरु युक्त हो तो विख्यात और स्वस्थ देह वाला हो परन्तु शत्रु का भय बना रहे (जा० सं०)। (११) सूर्य चतुर्थ स्थान में पाप दृष्ट हो तो शरीर गरम रहे तथा श्रेष्ठ लोग पित्त धातु पृथक् रहने से निरोग और सुखी भी हों। (१२) लग्नेश व अष्टमेश इनका शुभ योग हो तो आरोग्यता हो (प्रा.यो.)।

रोगी

(१) द्वितीय स्थान में पाप ग्रह हो तो रोगी हो (जा० सं०)। (२) लग्नेश दुष्ट स्थान (त्रिक या मारक) के स्वामी से युक्त हो या दुष्ट स्थानेश लग्न में हो तो शीघ्र रोगी हो। (२) लग्नेश बलहीन हो तो उपरोक्त फल (स० चि०) (४) अष्टमेश ६,८,१२ भाव में हो। (५) सूर्य चन्द्र तीसरे भाव में या क्रूर राशि में हो या क्रूर ग्रहों से दृष्ट हो तो वह रोग युक्त रहे (स० चि०)। (६) लग्न में पाप ग्रह हो लग्नेश निर्बल हो तो नाना प्रकार से रोगी होकर चिंता युक्त रहे (प्रा० यो०) (जा० पारि०)। (७) छटे स्थान में सौम्य ग्रह हों तो बड़ा रोगी हो (मान०)। (८) शनि ५,९ भाव में पाप दृष्ट हो तो अनेक रोग से पीड़ित रहे (शंभु०)। (९) क्रूर ग्रह से युक्त या दृष्ट शनि ५,९,१२, भाव में हो तो रोगी हो (जा० लं०)। (१०) ४ ग्रह नीच शत्रुगृही

या क्रूरांश में हों तो रोगी रहे (स० चि०)। (११) निर्बल लग्नेश केन्द्र या त्रिकोण में हो तो शरीर कुछ रोगी रहे (जा० पारि०)। (१२) लग्न से छटे स्थान में क्रूर ग्रह युक्त चन्द्र हो तो रोगी हो। (१३) क्रूर ग्रहों के योग या दृष्टि से पीड़ित चन्द्र लग्न में हो तो रोगी हो। (१४) क्रूर ग्रह केन्द्र में हो और शुभ ग्रहों की दृष्टि न हो तो रोगी हो। (१५) केन्द्र में स्थित क्रूर ग्रह शुक्र गृही हो परन्तु गुरु, शुक्र, मंगल इन ग्रहों की दृष्टि न हो तो रोगी हो (जा० लं०)। (१६) अष्टम भाव में पाप ग्रह हो तो बहुत रोग हो (जा० पारि०)। (१७) लग्नेश व अष्टमेश का पाप योग हो तो बहुत दुःख हो (प्रा० यो०)। (१८) छठे भाव में मंगल से युक्त शनि हो जिस पर सूर्य और राहु की दृष्टि हो लग्नेश निर्बल हो तो दीर्घ रोगी हो (स० चि०)। (१९) लग्न में शनि राहु हो बुध से भी दृष्ट हो तो निश्चय रोगी रहे (शंभु)। (२०) क्षीण चन्द्र बारहवें हो पाप ग्रह से दृष्ट हो तो दुःख हो। आठवें में शनि भी बड़ा क्लेश देता है (ल० चं०)। (२१) सूर्य चन्द्रमा अन्योन्य राशि नवांशकों में हों तो शरीर क्लेश रहे। (२२) छठे घर में शुक्र का कोई सम्बन्ध हो तो आहार विहार की असावधानी से रोग उत्पन्न हो। (२३) लग्नेश पाप युक्त ६,८,१२ में हो तो क्लेश कारक है (वृ० पा०)। (२४) लग्नेश अस्त, शत्रु गृही या नीच हो तो रोग कारक है (वृ० पा०)। (२५) धनभाव में मंगल और शनि हो तो सब रोगों को उत्पन्न करे (जा० पारि०)। (२६) ३ या ६ स्थान में शुक्र हो तो रोग शोक और भयदायक है (जा० पारि०)। यदि वही शुक्र सूर्य के आगे हो तो शुभ है (जा० पारि०)। (२७) लग्नेश षष्ठेश के साथ दुष्ट स्थान में हो या लग्न में हो। (२८) षष्ठ भाव और षष्ठेश दोनों पाप युक्त होवे और शनि राहु से युक्त हो तो आजन्म रोगी रहे (वृ० पा०)। (२९) रवि व शनि षष्ठ भाव में एकत्र हों या एक ६ में दूसरा १२ घर में हो या दोनों का केन्द्र योग हो तो शरीर प्रकृति का बहुत हानिकारक है। (३०) सूर्य १,६ या ८ स्थान में हो तो हानिकारक है। (३१) सूर्य में शनि से पीड़ित होकर ५,९,६,७,८, ४ इन स्थानों में हो तो दीर्घकाल तक रोग रहे (बा० बो०)। (३२) लग्नेश और अष्टमेश बलवान् होकर केन्द्र त्रिकोण में हो तो उक्त ग्रह की दशा में रोग और अपवाद हो (जा० पारि०)। (३३) अष्टमेश अष्टम हो तो उसकी दशा अन्तर्दशा में रोग हो (जा० पारि०)। (३४) अष्टम भाव में पाप ग्रह हो तो जो रोग हो वह मृत्यु को प्राप्त हो यदि बन्धन प्राप्त हुआ हो तो बन्धन से छूट जाय (जा० सं०)। (३५) चतुर्थेश सूर्य मङ्गल युक्त होकर क्रूर अंश में हो शुभ दृष्टि न हो और यदि आरोह को छोड़कर और कोई हो अर्थात् अवरोह हो तो सदा रोगी रहे (स० चि०)। (३६) चतुर्थ में पाप युक्त मंगल या सूर्य नीच या शत्रु अंश में हो या चतुर्थेश क्रूर अंश में हो तो बहुत रोगी रहते हुए यात्रा करता रहे (स०चि०) (३७) लग्नेश मंगल और बुध ये ४ या १२ भाव में हो तो कई प्रकार के रोग हों (स० चि०)। (३८) ६,८ भाव या केन्द्र में वक्री शनि हो उस पर मंगल की दृष्टि हो तो ३ वर्ष में रोग हो (जा० भ०)। (३९) छठे भाव में गुरु हो तो दीर्घव्याधि हो

(जा० स०) । (४०) लग्नेश मंगल या बुध हो किसी स्थान में हो उसपर शत्रु ग्रह की दृष्टि हो तो रोग हो (प्रा० यो०) । (४१) नवम भाव पाप युक्त हो तो रोग से पीड़ित व्रण सहित वाम पाद हो । यदि शुभ ग्रह भी हो तो क्रूर फल नहीं होता (शंभु०) । (४) ६,८ या १२ स्थान में जो ग्रह या छठे भाव का स्वामी और वह ग्रह जो इनसे युक्त हो इनसे पृथक्-पृथक् विचारना जहाँ २,३ या अधिक रोग होने के योग हों तब विशेष रोग कहना (फल०) । रोग उत्पन्न होने का योग—(४३) लग्न या चन्द्र से २,४,८,१२ घर में शनि राहु सूर्य मंगल ये पाप ग्रह क्रमानुसार हों । (४४) लग्न या चन्द्र के सप्तम में, अष्टम में या व्यय स्थान में सब पाप ग्रह हों । या (४५) लग्न या चन्द्र पाप ग्रह युक्त हो और शेष पाप ग्रह उक्त स्थानों में हों । (४६) ३ या ११ स्थान में कोई पाप ग्रह हो शेष ८ या १२ स्थान में हों । (४७) चन्द्र के पास कुछ पाप ग्रह हों शेष पाप ग्रह लग्न में हों । (४८) चन्द्र के ८,१२ स्थान और लग्न के ८,१२ स्थान में सब पाप ग्रह हों । (४९) लग्न, व्यय, धन इन तीनों स्थानों में या ६,७,८ इन स्थानों में सब पाप ग्रह हों यह लग्न और चन्द्र दोनों प्रकार से विचार कर देखना । (५०) लग्न या चन्द्र के १० स्थान से लग्न तक या चन्द्र तक सब पाप ग्रह हों । (५१) लग्न या चन्द्र के चतुर्थ स्थान में एक या कई पाप ग्रह हों । (५२) सप्तम में मंगल और शनि हो तो अपने २ धातु जन्य रोग उत्पन्न करते हैं ।

किस ग्रह के दोष से रोग होगा—(१) लग्न, लग्नेश और लग्न का नवांश इन तीनों में जो बली हो उस ग्रह की पीड़ा होगी (प्रा० यो०) ।

(२) रोग कारक ग्रहों में जो बली हो उसकी धातु वात पित्त कफ आदि से रोग हो ।

(३) कौन ग्रह क्या रोग प्रगट करते हैं यह संज्ञा अध्याय में दिया है उससे भी विचारना ।

रोग कहां होगा—(१) अष्टम में जो राशि कालांग में कही है उस अङ्ग में वात पित्त आदि ग्रहजनित विकार से रोग होगा ।

(२) बहुत ग्रह बलवान् होकर अष्टम को देखते हों तो सभी ग्रहों की धातु से बहुत रोग एक साथ हो (वृ० जा०) ।

(३) छठे भावस्थ राशि के कालांग में रोग होगा ।

राशि–मेष	२	३	४	५	६	७	८
अङ्ग –शिर	मुख	कंठ	कान	नाक	गुप्तांक	हाथ	बाल (बाजू)

राशि	९	१०	११	१२	(स० चि०)
अङ्ग	नेत्र	पैर	घुटने	पैर कुक्षि	

कौन ग्रह कहाँ पर क्या रोग करता है

(१) सूर्य—शरीर के हृदय का भाग, मस्तक या मुख के पास दुःख, रक्त का बहाव,

नेत्र पीड़ा, दृष्टि दोष, जीवन शक्ति की स्थिति, हृदय रोग, उष्ण वात, ज्वर, पित्त, मूर्छा चक्कर पीठ या पैरों में दर्द या व्यंग।

(२) चन्द्र—सर्व साधारण शरीर का व्यापार अच्छी प्रकार न चलने वाला और उससे उत्पन्न विकार दर्शाता है।

पेट में विकार, जलोदर, सर्दी या ज्वर, हृदय का विकार, स्त्रियों के रोग, प्रदर, आर्तव दोष, अपस्मार सहनशक्ति।

(३) मंगल—दाह जन्य विकार, क्षत, व्रण, शस्त्र प्रयोग, इनसे उत्पन्न होने वाला विकार या दुःख।

रक्त की क्षीणता, माता का रोग, खाज, सूजन, ज्वर, प्लेग, नेत्र के रोग, गुह्य रोग, घाव; चीड़ फाड़ आदि।

(४) बुध—सब प्रकार का मानसिक विकार, मज्जा तन्तु का विकार, मस्तिष्क सम्बन्धी विकार, ग्रीवा या गले का रोग, गंड माला, मज्जा तन्तु की गड़बड़ी, वाणी का दोष, सिर का घूमना, मानसिक व्यथा आदि।

(५) गुरु—मोटे होने, बाढ़, रक्त संचार इनमें विकार उत्पन्न करता है यकृत् का रोग, शरीर में रक्त संचय, दंत रोग, प्रति बंधक रोग, फोड़े आदि।

(६) शुक्र—नाक, मूत्रेन्द्रिय में, विष से उत्पन्न रोग, गर्मी, बाधी, वीर्य दोष, प्रमेह, मधुरमेह आदि रोग।

(७) शनि—इन्द्रियों के व्यापार में जरा भी गड़बड़ी हुई तो रोग उत्पन्न करता है, अर्धांग वायु, खाँसी, क्षय रोग, शीत, दमा, संधिवात, वात रोग, बद्ध कोष्ठ, अपच, दाढ़ की पीड़ा आदि दीर्घ कालीन रोग।

शरीर की नीरोगता—जानने को लग्न में बहुत अंश से उदय होने वाली राशि और कुंडली में चन्द्र व सूर्य की स्थिति पर अवलंबित है।

जीवन शक्ति प्रद राशियाँ—जीवन शक्ति देने वाली राशियाँ।

उत्तम जीवन शक्ति प्रद—१, ५, ७, ९ ये लग्न, इन लग्नों में जन्म हों तो।

साधारण शक्ति प्रद—२, ३, ६, ८, ११

अल्प शक्ति प्रद—४, १०, १२

आनुवंशिक रोग न हों शरीर अच्छा हो—कुंडली में सूर्य बलवान् हो, पाप ग्रह से पीड़ित न हो।

आनुवंशिक रोग—यदि सूर्य निर्बल या पाप ग्रहों से पीड़ित हो तो शरीर में आनुवंशिक रोग रहता है।

राशि अनुसार सूर्य पीड़ित हो तो प्रभाव

(१) चर राशि में रवि पीड़ित हो तो—अशुभ योग घटाता है—मस्तक विकार मूत्रपिंड का विकार, त्वचा के रोग हों।

(२) स्थिर राशि में रवि पीड़ित हो तो—हृदय विकार, रक्ताभिसरण सम्बन्धी रोग, कंठ विकार।

(३) द्विस्वभाव राशि में रवि पीड़ित और अशुभ दृष्टि योग पड़े तो—फुफ्फुस सम्बन्धी रोग मज्जा तंतु का विकार हो।

ग्रह प्रभाव से विविध रोग

ज्वर गंड रोग—लग्न में षष्ठेश और अष्टमेश दोनों—सूर्य के साथ।

गठिया या शस्त्राघात—लग्न में षष्ठेश और अष्टमेश दोनों—मंगल के साथ।

पित्त रोग—लग्न में षष्ठेश और अष्टमेश दोनों—बुध के साथ।

रोग नाश—लग्न में षष्ठेश और अष्टमेश दोनों—गुरु के साथ।

स्त्री द्वारा रोग—लग्न में षष्ठेश और अष्टमेश दोनों—शुक्र के साथ।

वायु कोप—लग्न में षष्ठेश और अष्टमेश दोनों—शनि के साथ।

हिंसक जीव से अपघात—लग्न में षष्ठेश और अष्टमेश दोनों—राहु के साथ।

नाभि में व्रण—लग्न में षष्ठेश और अष्टमेश दोनों—केतु के साथ।

जलज गंड या वक्र—लग्न में षष्ठेश और अष्टमेश दोनों—चंद्र के साथ।

पितृ स्थान (दशम) आदि से भी ग्रहों की स्थिति से पिता आदि के भी इसी प्रकार रोग विचारना (वृ०पा०)।

लग्नेश भिन्न ग्रह युक्त चिह्न में होने से रोगः—

(१) लग्नेश सूर्य युक्त चिह्न में—ताप गंड रोग।

(२) लग्नेश चंद्र युक्त चिह्न में—जल विकार से उत्पन्न गंड रोग।

(३) लग्नेश मंगल युक्त चिह्न में—हथियार का घाव जिसके पुराने पड़ने से गांठ पड़ जाती है।

(४) लग्नेश बुध युक्त चिह्न में—पित्त से उत्पन्न रोग।

(५) लग्नेश गुरु युक्त चिह्न में—आम के विकार से उत्पन्न रोग।

(६) लग्नेश शुक्र युक्त चिह्न में—क्षय रोग हो।

(७) लग्नेश शनि युक्त चिह्न में—चोर या किसी नीच जाति से किया हुआ रोग।

(८) लग्नेश राहु केतु युक्त चिह्न में—चोर या किसी नीच जाति से किया हुआ रोग (जा० लं०)।

विचार यहाँ बताये अरिष्ट या दुःख का प्रमाण कम या अधिक होगा या नहीं होगा जन्मस्थ ग्रह के भाव राशि ग्रह दृष्टि या युति के शुभाशुभ स्थिति का विचार एवं गोचर ग्रह उनके शुभाशुभ युति दृष्टि पर अवलंबित है। शुभ योग दृष्टि से दुःख या रोग हो अपने बल एवं स्थिति के अनुसार घटा देता है या नहीं होने देता। पाप योग दृष्टि से रोग या दुःख बढ़ जाता है। गोचर में उसके शुभ या पाप योग दृष्टि से घटने बढ़ने के समय का अनुमान होता है।

इसी प्रकार लग्नेश षष्ठेश भिन्न-भिन्न ग्रहों से युक्त होने का फल है।

(१) लग्नेश षष्ठेश—सूर्य युक्त—ज्वर का भय ।
(२) लग्नेश षष्ठेश—चंद्र युक्त—जल में डूबने का भय ।
(३) लग्नेश षष्ठेश—मंगल युक्त – युद्ध या स्फोटक समूह से भय ।
(४) लग्नेश षष्ठेश—बुध युक्त—पित्त के प्रमाद से भय ।
(५) लग्नेश षष्ठेश—गुरु युक्त—व्याधि रहित ।
(६) लग्नेश षष्ठेश—शुक्र युक्त—स्त्री मरण हो ।
(७) लग्नेश षष्ठेश—शनि युक्त—अधो वायु का रोग ।
(८) लग्नेश षष्ठेश—राहु केतु युक्त—सर्प की पीड़ा या चोर आदि का भय ।
(९) लग्नेश षष्ठेश—त्रिकोण में राहु केतु युक्त—निगल रोग (जा० पारि०) ।

द्वादश भाव के अनुसार शरीर की पीड़ा का स्थान

प्रथम भाव—मुख, दांत, दाढ़, गला, जीव, मस्तक ।
द्वितीय भाव—दाहिना नेत्र ।
तृतीय भाव—दाहिना कान, गर्दन, हाथ ।
चतुर्थ भाव—पेट कंधा ।
पंचम भाव—कमर के ऊपर का भाग, जंघा ।
षष्ठ भाव—गुप्तस्थान, दाहिना पाँव ।
सप्तम भाव—पेट का मध्य भाग, नाभि ।
अष्टम भाव—गुप्त स्थान बांया पाँव ।
नवम भाव—कमर के ऊपर का भाग ।
दशम भाव—कमर के ऊपर का भाग ।
लाभ भाव—बायाँ हाथ, कान, गर्दन ।
व्यय भाव बाइँ आँख, पैर का तलवा ।

(१) इन भावों में यदि पाप ग्रह हो या पाप ग्रह की युति प्रतियुति योग और दृष्टि हो तो शरीर के उन्हीं भागों में अपनी कुण्डली के अनुसार रोग या पीड़ा होगी ।

(२) गोचर में पाप ग्रह २,६,८,१२ घर में हों या ग्रहों का इन स्थानों से योगदृष्टि के द्वारा सम्बन्ध हो तो उन ग्रहों की दशा या अन्तर्दशा में रोग निश्चय होगा ।

(३) कुण्डली में चंद्र ४-७-१२ या ४,८-१२ में गोचर में हो तो रोगी को लाभ होने की आशा नहीं रहती ।

(४) कुंडली में लग्न-वैद्य । चतुर्थ भाव-औषधि । षष्ट भाव-रोग । दशम भाव—रोग साध्य होगा या असाध्य इसका ज्ञान होता है ।

(५) जब कुंडली में अनिष्ट कारक योग हो वह ग्रह जितने अंश में हो उतने अंश का हो और जब गोचर के पाप ग्रह से दृष्टि या दोष द्वारा सम्बन्ध स्थापित करे तब रोग होना सम्भव है ।

नक्षत्र अनुसार रोग की पीड़ा

इन नक्षत्रों में रोग हो तो कितने दिन तक उस रोग की पीड़ा रहेगी यहां बताया है।

१ अश्विनी में रोग हो—१,९ या २५ दिन पीड़ा।
२ भरणी में रोग हो—११ या २१ दिन या १ मास या मृत्यु।
३ कृतिका में रोग हो—९,१० या २१ दिन।
४ रोहिणी में रोग हो—३,७,९ या १० दिन।
५ मृग० में रोग हो – ३,५ या ९ दिन।
६ आर्द्रा० में रोग हो—१० दिन या १ मास या मृत्यु।
७ पुनर्वसु में रोग हो—७ या ९ दिन या मृत्यु।
८ पुष्य में रोग हो—७ दिन या मृत्यु।
९ आश्लेषा में रोग हो—९,२० या ३० दिन या मृत्यु।
१० मघा में रोग हो—२०,३० या ४५ दिन या मृत्यु।
११ पूर्वा फा० में रोग हो—८,१५ या ३० दिन या १ वर्ष या मृत्यु।
१२ उत्त० फा० में रोग हो—७,१५ या २७ दिन।
१३ हस्त में रोग हो—७,८,९ या १५ दिन या मृत्यु।
१४ चित्रा में रोग हो—८,११ या १५ दिन।
१५ स्वाती में रोग हो—१,२,३,४,५ या १० मास या मृत्यु।
१६ विशाखा में रोग हो—८,१५,२० या ३० दिन।
१७ अनुराधा में रोग हो—१० या २८ दिन।
१८ ज्येष्ठा में रोग हो—१५,२१ या ३० दिन या मृत्यु।
१९ मूल में रोग हो—९,१५ या २० दिन।
२० पू० षा० में रोग हो—१५,२० दिन या २,३,६ मास या मृत्यु।
२१ उ० षा० में रोग हो—२० रात्रि, १ या १॥ मास।
२२ श्रवण में रोग हो—१०,११,२५ या ६ दिन।
२३ धनिष्ठा में रोग हो—१३ रात्रि या १० रात्रि, पक्ष या मास।
२४ शत० में रोग हो—१० या १२ दिन।
२५ पूर्व भा० में रोग हो—१० रात्रि, २ या ३ मास या मृत्यु।
२६ उ० भाद्र में रोग हो—७ या १० दिन १॥ मास या पक्ष।
२७ रेवती में रोग हो - १० या २८ दिन।

ये नीचे बताये योग हों तो रोग बढ़ेगा।

वार—	नक्षत्र	दिन	नक्षत्र	तिथि
इतवार	अनुराधा भरणी	इतवार	मघा	१२
सोमवार	आर्द्रा, उ० षा०	सोम०	विशाखा	११
मंगल०	मघा, शत०	मंगल	आर्द्रा	५

वार—	नक्षत्र	दिन	नक्षत्र	तिथि
बुध	अश्विनी, विशाखा	बुध	उ० षाढ़ा०	३
गुरु	मृग०, ज्येष्ठा	गुरु	शत०	६
शुक्र	आश्लेषा, श्रवण	शुक्र	अश्विनी	८
शनिवार	हस्त, पूर्व भाद्र०	शनिवार	पू० षाढ़ा	९

इस प्रकार वार नक्षत्र और तिथि का योग हो। या यहाँ बताये दिन को उक्त नक्षत्र पड़े ऐसे योग में रोग उत्पन्न हो तो अच्छे लक्षण नहीं हैं रोग अवश्य बढ़ेगा।

जन्म नक्षत्र, जन्म राशि और अष्टम चन्द्र इन योगों में रोग उत्पन्न हो तो अपमृत्यु या मृत्यु हो।

जन्म कुण्डली में पाप ग्रह कब मृत्यु सूचित करते हैं और बीमारी कौन प्रकार की होगी इन बातों को समझ लेना चाहिये।

जन्म के पाप ग्रह आयु का या रोग का या शरीर विकार का बोध करते हैं। प्रत्येक वर्ष इस स्थिति से जान लेना चाहिए कि कौन बीमारी कब होगी और कब अच्छी होगी। जन्म काल निग्रह से जान लेना चाहिए क्या विकार करेंगे। इसके विषय में पहिले बता चुके हैं।

ज्वर—(१) लग्नेश और षष्ठेश सूर्य युक्त हो तो ज्वर का भय हो (स० चि०)।

(२) षष्ठ या अष्टम में सूर्य हो (फल०)।

(३) अष्टम में चंद्रमा राहु या केतु युक्त हो तो चौथिया ज्वर हो।

(४) अष्टमेश चंद्र या राहु या केतु युक्त हो तो चौथिया ज्वर हो।

(५) यदि क्रूर षष्ठवंश में उपरोक्त ग्रह हों तो भी चौथिया ज्वर हो (स० चि०)।

(६) जन्म में मंगल और अष्टम में सूर्य हो तो दाह या ज्वर हो।

(७) जन्म में लग्न या चंद्र के पास सूर्य या मंगल १-५-९ राशि या अग्नि राशि में हो तो उसकी प्रकृति उष्ण रहे सदा ज्वर की बाधा रहे।

(८) तुला राशि का सूर्य की दशा में या क्षीण चंद्र की दशा में, या केन्द्र की दशा में बुध की अन्तर्दशा हो। या शनि की दशा में बुध की अंतर्दशा हो तो भयंकर ज्वर हो।

(९) षष्ठ में मंगल और षष्ठेश अष्टम में हो तो ६ या १२ वर्ष में ज्वर हो (पू०पा)।

सन्निपात शीतदोष—(१) द्वितीय भाव में चंद्र हो तो शीत सम्बन्धी रोग और सन्निपात हो (शंभु०)।

(२) दूसरे में राहु चंद्र से युत हो तो निश्चय शीत दोष तथा सन्निपात हो (शंभु.)।

त्रिदोष—(१) गुरु बुध शुक्र अष्टम में हो तो २१ वर्ष में त्रिदोष हो (स्वा० सं०)।

बहुतपसीना—(१) चन्द्रमा द्वितीय या अष्टम हो तो बहुत पसीने वाला हो (जा.पारि.)

दुर्गंध देह—दशम में मंगल बुध से युक्त हो तो दुर्गंध देह हो (जा० पारि०)।

दाह—तनुभाव में मंगल और चतुर्थ में सूर्य हो तो दाह रोग हो।

उष्णता से पीड़ा—यदि पाप युक्त मंगल द्वितीयेश के साथ हो तो अति उष्णता से पीड़ित हो (स० चि०)।

पित्त विकार--(१) १ और ६ के स्वामी बुध युक्त हों तो पित्त रोग हो (स० चि०)।

(२) षष्ठ स्थान में बुध हो तो पित्त विकार हो (ज्यो० शा०)।

(३) सूर्य षष्ठ स्थान में पाप दृष्ट हो (जा० पारि०)।

(४) निर्बल सूर्य अष्टम में हो मंगल निर्बल हो, पाप ग्रह द्वितीय भाव में हो (जा० पारि०)।

(५) सूर्य षष्ठ में पाप ग्रह युक्त हो जिस पर पाप दृष्टि हो।

अग्नि दग्ध या पित्त रोग--(६) लग्न में सूर्य या मंगल में कोई लग्नेश होकर बैठा हो वह पित्त से पीड़ित हो तथा अग्नि से दग्ध हो (शंभु०)।

(७) षष्ठेश शुक्र शनि मंगल से पूर्ण दृष्ट हो तो पित्त रोग हो पूर्ण या पाप दृष्टि के अनुसार विचारना (शंभु०)।

वात विकार--(१) गुरु लग्न में हो और शनि सप्तम में हो तो वात विकार हो (जा० सं०)।

(२) द्वितीय भाव में शनि हो पाप दृष्टि हो (स० चि०)।

(३) शनि तीसरे भाव में गुलिक युक्त हो और शुभ दृष्ट न हो।

(४) तृतीय जहाँ है उसका स्वामी अष्टम में हो।

(५) छठे स्थान में चन्द्र क्रूर दृष्ट क्रूर नवांश गत हो।

(६) शनि तीसरे भाव में षष्ठ्यंश में शुभ दृष्टि रहित हो।

(७) १ और ६ के स्वामी शनि युक्त हों (स० चि०)।

(८) ७,९ या ५ भाव में मंगल हो शनि लग्न में हो।

(९) क्षीण चन्द्र और शनि बारहवें बैठे हों तो बात रोग हो (जा० भ०)।

(१०) लग्न पाप युक्त हो लग्नेश भी पाप ग्रह युक्त हो तो अति दृढ़ कष्ठ और बात से पीड़ित रहे (जा० सं०)।

(१०) शनि की महादशा में केतु का अन्तर हो तो बात पित्त रोग हो नीच जाति से झगड़ा व परदेश गमन हो।

(११) छठे स्थान में बुध क्रूर दृष्ट क्रूरांश गत हो तो श्लेष्म तथा बात रोग से पीड़ित रहे (सर्व चि०)।

(१२) ७,९ या १ भाव में मंगल शनि व चन्द्र हो तो वात रोग हो (जा० भ०)।

(१३) ५,९,७ भाव में कहीं मंगल हो। या लग्न में सूर्य और क्षीण चन्द्र तथा शनि व्यय में हो तो वायु रोग की अधिकता रहे (शंभु०)।

(१४) लग्नेश लग्न में, शनि षष्ठ हो तो ४९ वर्ष में बात रोग हो (बृ० पा०)।

(१५) गुरु और द्वितीयेश निर्बल हो तो बात व्याधि हो (जा० पारि०)।

(१६) शनि पाप युक्त द्वितीयेश युक्त भी हो।

बात पीड़ा--(१७) लग्न में पाप युक्त चंद्रमा पाप दृष्ट हो। (शंभु०) (१८) कर्क के

सूर्य पर शनि की दृष्टि हो। वात रोग शनि के दोष से उत्पन्न होता है विशेष पर ४-१० राशि के शनि के दोष से (१९) चतुर्थ में शनि हो तो वात पीड़ा (शंभु०)।

वात रक्त—(१) दशम में मंगल हो उस पर शनि की दृष्टि हो तो वात रोग हो।

स्नायु रोग—(१) ६ या ८ स्थान में शनि हो तो स्नायु रोग हो (फल०)।

श्लेष्म—(१) यदि बुध षष्ठ में पाप ग्रहों से दृष्ट और क्रूर नवांश में हो तो कफ रोग हो (स० चि०) (२) बुध से युक्त मंगल षष्ठ स्थान में क्रूरांशक में हो उस पर शुक्र और चंद्र की दृष्टि हो तो कफ रोग हो (जा० पारि०)।

वात कफ—(१) बुध सप्तम हो तो वात-कफ रोग हो (जा० पारि०) (२) लग्न में चंद्र व शनि एकत्र हो या अन्यत्र चंद्र पर शनि की पूर्ण दृष्टि हो तो वात कफ अर्थात् खांसी दमा आदि हो।

क्षय रोग—(१) बुध और मंगल षष्ठ में हों इन पर चंद्र और शुक्र की दृष्टि हो और बुध नवांश में हो तो क्षय रोग हों। ग्रह की धातु के अनुसार या नवांशेश के अनुसार रोग होता है। गुरु की दृष्टि हो तो बुरा प्रभाव दूर हो जाता है (स० चि०)।

(२) यदि गुरु षष्ठ या अष्टम भाव में हो तो क्षय रोग हो (फल०)।

(३) चंद्रमा पाप ग्रहों के मध्य में हो और शनि सप्तम हो तो क्षय और गुल्म रोग हो। श्वास, प्लीहा गुल्म रोग आदि हो (जा० सं०)।

(४) क्षीण चंद्र किसी जल राशि में पाप ग्रहों के साथ हो तो क्षय रोग या जल से सम्बंध रखने वाले रोग हों (फल०)।

(५) बुध और मंगल साथ अष्टम स्थान में हों, चंद्र और शुक्र से दृष्ट हों और कोई बुरे अंश में हो तो क्षय हो (स० चि०)।

(६) यदि शनि और मंगल षष्ठ भाव में हो सूर्य और राहु से दृष्ट हो और शुक्र युक्त दृष्ट न हो तो क्षय और कास रोग से पीड़ित रहे (स० चि०)।

(७) बुध और मंगल षष्ट में क्रूर नवांशक में हो और शुक्र और चंद्र से दृष्ट हों तो क्षय हो (स० चि०)।

(८) शनि और गुमिक दोनों छटे घर में सूर्य मंगल और राहु से दृष्ट हों शुभ ग्रहों से युक्त दृष्ट न हों तो क्षय, श्वास कास आदि रोग हो (स० चि०)।

(९) चंद्रमा शनि युक्त हो मंगल से दृष्ट हो और चंद्र पर परिवेष भी हो तो क्षय हो (वृ० जा०)।

(१०) चंद्रमा मंगल युक्त हो लग्नेश से दृष्ट हो तो क्षय रोगी हो और उल्टी बुद्धि वाला हो (शंभु०)।

(११) सूर्य ११ भाव में शनि ५ भाव में, और पाप ग्रह अष्टम में हो तो क्षय रोग हो (शंभु०)।

(१२) लग्न में या ४, ८ भाव में सूर्य हो और दशम में शनि मंगल हो तो क्षय हो (शंभु०)।

(१३) चंद्र यदि सूर्य मंडल में अमावस्या के संधि में हो शनि से युक्त हो उस पर मंगल की दृष्टि हो तो क्षय रोग हो और बुरा बोलने वाला हो (प्रा० यो०)।

(१४) षष्ठ भाव में राहु, केन्द्र में शनि, अष्टम में लग्नेश हो तो २६ वर्ष में क्षय हो (वृ० पा०)।

(१५) चंद्रमा पाप ग्रहों के बीच हो और सूर्य मकर का हो या शनि सप्तम हो, तो क्षय, श्वास, प्लीहा विद्रधि रोग हो (शंभु०)।

(१६) लग्न में सूर्य मंगल से दृष्ट हो तो क्षय, दमा, प्लीहा या कोई गुदा का रोग हो (स० चि०)

(१७) चंद्रमा शनि युक्त हो सप्तम में २ पाप ग्रहों के बीच हो तो राजयक्ष्मा, दमा, पीलिया आदि रोग हो।

(१८) सूर्य चंद्र परस्पर एक दूसरे की राशि में या परस्पर अंश में हो तो क्षय और शोष रोग हो (शंभु)।

(१९) या सूर्य चंद्र एक ही राशि में हों तो भी उपरोक्त फल (शंभु०)।

शोष (सूखा, रोग—(१) सूर्य और चन्द्र सिंह या कर्क राशि में हों तो सूखा हो (जा० पारि०)।

(२) सूर्य चन्द्र परस्पर एक दूसरे के नवांश में हों (वृ० जा०)।

(३) चन्द्रमा पाप ग्रहों के मध्य हो शनि सप्तम हो (जा० पारि०)।

हृदय रोग—(१) वृष, कर्क, का चन्द्र पाप एवं शत्रु क्षयु होवे।

(२) या चन्द्रमा मंगल अस्तंगत, पाप युक्त और शुद्ध हीन हो तो हृदय में शूल रहे।

(३) उपरोक्त चन्द्रमा मंगल सप्तम स्थान में हों तो भी उपरोक्त फल हो।

(४) चतुर्थ (हृदय स्थान) में षष्ठेश सूर्य बली हो क्रूर ग्रह से युक्त हो तो हृदय रोग हो (जा० लं०)।

(५) शनि व गुरु षष्ठेश होकर लग्न से चतुर्थ में क्रूर ग्रह युक्त हों तो हृदय रोग हो (जा० लं०)।

(६) वही शनि व गुरु क्रूर ग्रहों से पीड़ित अर्थात् दृष्ट हों तो हृदय रोग और देह कंप भी हो।

(७) चतुर्थ में मंगल शनि व गुरु हों क्रूर ग्रहों से दृष्ट हों तो हृदय रोग हो और हृदय क्लेश कारक घाव हो (जा० लं०)।

(८) पंचम में पाप ग्रह हो और पंचमेश दो पाप ग्रहों के बीच हो पाप ग्रह से दृष्ट हो तो हृदय रोग हो (स० चि०)।

(९) षष्ठेश सूर्य के नवांश में हो तो हृदय रोग हो (जा० सं०)।

(१०) चतुर्थ भाव में पाप ग्रह हो चतुर्थेश पाप युक्त पाप मध्य में हो तो हृदय रोग हो (स० चि०)।

(११) चतुर्थ भावेश जिसके नवांशक में हो उसका स्वामी क्रूर षष्ठयंश में हो क्रूर ग्रह से दृष्ट हो तो हृदय में शूल आदि रोग हो (स० चि०)।

(१२) चतुर्थेश व्यय भाव में व्यय भावेश युक्त हो या नीच, शत्रु गृही, अस्तंगत होवे तो हृदय में रोग हो (स० चि०)।

(१३) राहु चतुर्थ में हो और लग्नेश पाप दृष्ट और बलहीन हो तो हृदय शूल रोग हो (जा० पारि०)।

(१४) लग्नेश शत्रु गृह में व नीच राशि में हो, मंगल चौथे घर में हो, शनि यदि पाप ग्रहों से दृष्ट हो तो शूल रोग हो (जा० पारि०)।

(१५) सूर्य चंद्रमा और मंगल शत्रु गृही हों तो शूल रोग हो (जा० पारि०)।

(१६) चतुर्थ और पंचम भाव में पाप ग्रह हो पाप षष्ठयंश से युक्त हो शुभ ग्रह का योग दृष्टि न हो तो हृदय रोग हो (जा० पारि०)।

(१७) जन्म राशि में शनि मंगल राहु या केतु हो तो शरीर में पीड़ा, हृदय रोग, स्त्री को कष्ट बंधु सुख में विघ्न हो।

शूल—(१) सप्तम में सूर्य मंगल शनि हो तो भगंदर बवासीर वायु और शूल रोग हो (शंभु०)।

(२) जब तीसरे भाव में ३ दुष्ट ग्रह हों तो दृढ़ शूल रोग हो (जा० सं०)।

(३) छटे आठवें भाव में मंगल या शनि, तीसरे चौथे पाप पीड़ित सूर्य हो और चंद्रमा सूर्य की राशि में हो तो शरीर में शूल रोग हो (शंभु०)।

(४) षष्ठ में चंद्र मंगल और सूर्य तीनों हों तो शूल रोग बिसर्प रोग हो (स०चि०)।

(५) षष्ठ भाव में सूर्य चंद्रमा साथ हों तो सर्प शूल हो (स० चि०)।

जलोदर—(१) सूर्य चंद्र लाभ भाव में, राहु लग्न में हो तो २१ वर्ष में जलोदर रोग हो (जा० सं०)।

(२) शनि कर्क का, चंद्रमा मकर का (जा० पारि०)।

गुल्म—(१) शनि सप्तम भाव में हो तो गुल्म रोग हो (जा० सं०)।

(२) व्ययेश षष्ठ भाव में और षष्ठेश व्ययभाव में हो तो २९-३० वर्ष में गुल्म हो (वृ० पा०)।

(३) शनि के गृह में क्षीण चंद्र पाप युक्त ६ या ८ भाव में हो तो वायु कुपित होकर गुल्म रोग हो (जा० पारि०)।

(४) छठे स्थान में शनि हो तो विशेष कर गुल्म रोग हो (स० चि०)।

(५) षष्ठ में शनि पाप दृष्ट होकर क्रूर नवांश में हो तो गुल्म हो (स० चि०)।

(६) लग्नेश और षष्ठेश चंद्र युक्त हो तो जल से गंड गुल्मादि रोग हो (स० चि०)।

(७) कर्क कुम्भ वृश्चिकांश का राहु या केतु युक्त हो तो गुल्म (पेट में गोले का रोग) हो (स० चि०)।

(८) राहु पंचम हो तो वात गुल्म या कृमि का रोग हो। शनि से भी ऐसा ही फल कहना (शंभु०)।

(९) मंगल लग्न में हो षष्ठेश निर्बल हो तो गुल्म और अजीर्ण रोग हो या मुख रोग हो (स० चि०)।

(१०) षष्ठेश का नवांशेश सूर्य या मंगल हो तो ग्रह अनुसार उपरोक्त फल (स०चि०)।

प्लीहा—(१) शनि चंद्र के साथ ६,८ घर में हो तो प्लीहा आदि रोग हो (फल०)।

(२) चंद्रमा पंचम भाव में हो तो प्लीहा रोग हो (शंभु०)।

(३) चंद्र षष्ठेश होकर क्रूर ग्रहों से दृष्ट हो शुभ ग्रहों की दृष्टि न हो तो प्लीहा (ताप तिल्ली) रोग हो (जा० लं०)।

(४) सप्तमेश या लग्नेश होकर चंद्र क्रूर ग्रहों से दृष्ट हो (जा० लं०)।

(५) शनि लग्नेश होकर क्रूर ग्रहों से दृष्ट योग द्वारा पीड़ित हो तो प्लीहा हो और सुख हीन हो (जा० लं०)।

(६) लग्नेश होकर शनि लग्न में हो और पाप युक्त या दृष्ट हो तो सुख हीन हो और प्लीहा रोग वाला हो (जा० लं०)।

(७) चंद्रमा शनि और मंगल के बीच हो और सूर्य मकर का हो तो उसे प्लोहा, गुल्म, विद्रधि या श्वास रोग हो (वृ० जा०)।

विद्रधि–(१) छठे स्थान में गुरु होकर क्रूर दृष्ट, क्रूरांशक गत हो तो विद्रधि हो (किसी अंग में गुमड़ा आदि रोग) (स० चि०)।

उदर रोग–(१) चन्द्रमा या शुक्र ६ या ८ भाव में हो।

(२) जन्म स्थान में चंद्रमा अष्टम में शनि हो उसे पेट के रोग हों मंदाग्नि हो तथा देह से हीन हो (ल० चं०)।

(३) सिंह लग्न में चन्द्र पाप युक्त या दृष्ट हो तो पेट का रोग हो।

(४) मंगल पञ्चम में हो तो पेट का रोग हो (फल०)।

(५) तीसरे स्थान में क्रूर ग्रह हो या गुरु तीसरे स्थान में क्रूर ग्रह युक्त हो तो मंदाग्नि रोग से पीड़ित रहे।

(६) चन्द्रमा पाप युक्त पापांशक में चतुर्थ भाव में हो तो पेट में पीड़ा और कफ से फेफड़े में रोग हो (शंभु)।

(७) लग्न में षष्ठेश और लग्नेश वक्री ग्रह की राशि में हों इन पर शनि की दृष्टि हो।

शुक्र शनि से ८ या ६ भाव में पाप ग्रह हो तथा अष्टमेश और षष्ठेश सप्तम भाव में हो तो पेट बढ़ने का रोग हो (शंभु)।

(८) छठे स्थान में शनि का कोई सम्बन्ध हो तो उदर विकार से कष्ट हो।

(९) शुक्र सहित चन्द्र छठे घर में हो तो मंदाग्नि रोग से युक्त हीनांग हो (मान०)।

(१०) लग्न पाप ग्रह से युक्त हो या राहु से युक्त हो शनि अष्टम हो तो कुक्षि या पेट के रोग से पीड़ित हो (जा० पारि०)।

(११) १, २, ८, १२ भाव में क्रूर ग्रह हों तो ८-१२ वर्ष में दस्त बंद होने से पीड़ा हो (मान०)।

(१२) अष्टम घर में शनि, लग्न में चन्द्र हो तो उदर रोग, मंदाग्नि या किसी अंश से हीन हो (मान०)।

अतिसार—(१) शुक्र सातवें घर में हो तो मूलातिसार रोग हो (जा० पारि०)।

(२) लग्न में पाप राशि हो वहाँ शुक्र और चंद्र हो तो अतिसार, सिर में रोग अपने व स्त्री के शरीर में कृमि रोग व अग्नि भय हो।

पांडु रोग—(१) चन्द्रमा मंगल के साथ षष्ठ भाव में हो तो वायु विकार से पांडु रोग हो (जा० पारि०)।

पीनस—(१) व्यय भाव में पाप ग्रह हो, चंद्र छठे, शनि आठवें भाव में हो लग्नेश पाप ग्रह के नवांश में हो तो पीनस रोग हो (जा० पारि०)।

(२) शनि मंगल सूर्य ये अशुभ स्थान में एकत्र हों तो नासिका रोग हो अनेक व्याधि व शत्रु भय हो।

आमवात—(१) क्रूर लग्न में जन्म हो और लग्नेश क्रूर ग्रहों से युक्त हो तो आमवात रोग से कष्ट हो (ल० चं०)।

नाभि में रोग—षष्ठेश तृतीय में हो नाभि में दृढ़ रोग से दुःख हो सम्पूर्ण गाँव को दुःख देवे (जा० लं०)।

माता (चेचक)—(१) मंगल लग्न में हो उसे शनि व सूर्य देखते हों ता शीतला हो (जा० पारि०)।

श्वेत कुष्ठ—(१) शुक्र शनि दोनों मंगल की राशि में हों चंद्र व्यय में हो, मंगल तीसरे भाव में हो तो श्वेत कुष्ठ हो।

(२) षष्ठ में मीन या मेष के नवांश में स्थित चंद्र पाप ग्रहों से दृष्ट हो तो श्वेत कुष्ठादि हो (जा० सं०)।

(३) गुरु शनि दोनों अष्टम में हों चन्द्रमा षष्ट में हो, बुध शुक्र नवम में हों तो चित्र देह हो (जा० सं०)।

(४) चन्द्र लग्न में, सूर्य सप्तम, और शनि मंगल दूसरे या बारहवें हों तो श्वेत कुष्ट हो (वृ० जा०)।

(५) लग्नेश अष्टम भाव में पाप युक्त या दृष्ट हो तो श्वेत कुष्ट, मंदाग्नि, दाद खुजली आदि हो (शंभु)।

(६) लग्नेश और बुध ये दोनों या मंगल और चन्द्र ये दोनों राहु या केतु से युक्त होकर कहीं हों तो श्वेत कुष्ट साजन आदि रोग हो (जा० लं०)।

(७) चन्द्रमा मेष या वृष राशि में मंगल, शनि युक्त हो तो श्वेत कुष्ठ व रोगी हो (जा० लं०)।

(८) नीच में व चर राशि में शुक्र में चन्द्र का योग पाप युक्त हो तो पांडु कुष्ठ हो (शंभु०)।

रक्त कुष्ठ—(१) सूर्य कहीं भी मंगल या शनि युक्त हो तो रक्त कुष्ट, कृष्ण कुष्ट (देह में लाल या काले चिट्टे पड़े) हो (जा० लं०)।

(२) शुक्र गुरु चंद्र या शनि ये चारों मीन या कर्क या वृश्चिक राशि में हों तो रक्त कुष्ठ हो शरीर सुख रहित हो (जा० लं०)।

(३) शनि के साथ चंद्र षष्ठ भाव में हो तो ४५ वर्ष में रक्त कुष्ठ हो (वृ० पा०)।

कुष्ठ—(१) नवम पंचम भाव में २,४,१०,८, राशि हो और पाप ग्रह युक्त या दृष्ट हो तो कुष्ठ हो (जा० सं०)।

(२) चन्द्र, बुध और लग्नेश मङ्गल के साथ तीनों ग्रह हों तो कोढ़ हो।

(३) चन्द्र ५,१०,४,१२ राशि के नवांश में हो और शनि और मंगल से युक्त या दृष्ट हो तो कोढ़ हो (स० चि०)।

(४) चन्द्रमा १,१०,४,१२ राशि के नवांश में शनि मंगल से युक्त या दृष्ट हो तो कुष्ठ हो (शंभु०) यदि शुभ ग्रह की दृष्टि हो तो कुष्ट न हो कर अंड वृद्धि, व्रण, बवासीर, भगन्दर आदि हो।

(५) चन्द्रमा पाप ग्रह के बीच के नवांश में हो तो कुष्ट हो (शंभु०)।

(६) सप्तम में बुध तथा शनि हो।

(७) चन्द्र के घर का बुध हो तो कुष्ठ या क्षय रोग हो (मान०)।

(८) लग्न में मंगल, अष्टम में सूर्य, चतुर्थ में शनि हो तो कुष्ठ हो (मान०)।

(९) मंगल या बुध लग्नेश होकर चन्द्र राहु या शनि से युक्त हो तो कुष्ट हो (वृ० पा०)।

(१०) धन राशि में और धन नवांशक में या पाँचवें नवांश में चन्द्र हो शनि या मंगल से युक्त या दृष्ट हो तो कुष्ठ हो।

(११) ८,४,१० राशि त्रिकोण या लग्न में हो और पाप ग्रह से वह राशि दृष्ट हो तो कोढ़ हो (प्रा० यो०)।

(१२) चन्द्रमा मंगल शनि और शुक्र जल राशियों में पाप पीड़ित हो तो लूता संज्ञक कुष्ट हो (शंभु०)।

(१३) चतुर्थ में चन्द्र सहित राहु मंगल दोनों हों तो २५ वर्ष में मंडल कुष्ठ होवे (जा० सं०)।

(१४) ४,८,१२ राशि क्रूर ग्रह युक्त हो तो अवलताकार कुष्ट हो शरीर में मकड़ी के समान फतकता हुआ क्लेश कारक कुष्ट हो (जा० लं०)।

(१५) चन्द्रमा मंगल युक्त हो तो कुष्ट, भगन्दर, बवासीर, खुजली आदि रोगों से पीड़ित रहे (शंभु०)।

(१६) शनि या मंगल से युक्त चन्द्र ४,१२,१० राशि के नवांश में हो शुभ योग दृष्टि न हो तो कुष्ठ हो (जा० पारि०)।

(१७) पाप ग्रह नीच के हों उन पर पाप ग्रह की दृष्टि हो या वे पाप ग्रह के नवांश में होकर पंचम घर में हों तो कोढ़ रक्तपित्त आदि रोग हो (प्रा० यो०)।

(१८) २,४,८,१० राशि में कोई राशि त्रिकोण में और लग्न में भी हो या पंचम नवम से एक स्थान में और लग्न में हो वह राशि पाप युक्त या दृष्ट हो तो कुष्ठी हो (वृ० जा०)।

(१९) षष्ठ भाव में गुरु हो गुरु की राशि में चन्द्र हो तो १९ या २२ वर्ष में कुष्ठ हो (वृ० पा०)।

(२०) चंद्र, बुध, लग्नेश, राहु या केतु के छठे घर में हो तो कमल कुष्ठ हो।

(२१) लग्नेश को छोड़कर उक्त ग्रह लग्न में हों तो कुष्ट हो (स० चि०)।

इसी प्रकार इतरजनों का विचार—भाव कारक और भावेश से भी इसी प्रकार मित्र आदि भावों में हो तो स्थिर से उत्पन्न कुष्ट ग्रह के उक्त स्थान में अवश्य होगा (स० चि०)।

श्वेत कुष्ठ—चन्द्रमा लग्नेश न हो और लग्न में राहु युक्त हो।

कृष्ण कुष्ठ—चन्द्रमा लग्नेश न हो और लग्न में शनि युक्त हो।

रक्त कुष्ठ—चन्द्रमा लग्नेश न हो और लग्न में मंगल युक्त हो। (वृ० पा०)

कुष्ठ - लग्नेश को छोड़कर अन्य पाप ग्रह लग्न में हों।

नील कुष्ठ—लग्नेश को छोड़कर अन्य शनि ग्रह लग्न में हों।

रक्त कुष्ठ—लग्नेश को छोड़कर अन्य सूर्य ग्रह लग्न में हों। (जा० पारि०)

स्वेत कुष्ठ—लग्नेश को छोड़कर अन्य मंगल ग्रह लग्न में हों।

विचार—उपरोक्त योगों में चन्द्र पर शुभ ग्रहों की दृष्टि हो तो कुष्ठ न होगा किन्तु खाज, दाद, खुजली आदि चर्म रोग होंगे।

दद्रु—(१) सप्तम में सूर्य बुध चन्द्र हो शेष ग्रह चतुर्थ में हो तो दद्रु (दाद) रोग हो (जा० सं०)।

(२) चन्द्रमा स्निग्ध राशि का सप्तम में हो, चौथे नवांशक स्थित शनि से दृष्ट हो तो दाद रोग से पीड़ित रहे (शंभु०)।

(३) जलचर राशि स्थित चन्द्र लग्न से दूसरे स्थान में हो या शनि युक्त हो या लग्न में सूर्य हो तो दाद रोग हो (जलचर, कर्क, मकर पराद्धं और मीन राशि) (जा० लं०)।

खजुली—(१) मीन या मेष के नवांश में चन्द्र शुभ ग्रह से दृष्ट हो (जा० सं०)।

(२) जलचर राशि में चन्द्र पाप युक्त हो शनि से दृष्ट हो (शंभु०)।

(३) तृतीय भाव में मंगल शनि बली हों तो खजुली आदि हो (जा० पारि०)।

रक्त रोग—(१) चन्द्र बुध और लग्नेश सूर्य युक्त हो तो रक्त का रोग हो (स० चि०)।

(२) मंगल १,१२,६,७ भाव में शनि युक्त सूर्य से दृष्ट या अस्तंगत, शत्रु गृही हो तो रुधिर का रोग हो (स० चि०)।

(३) छठे स्थान में मंगल या शनि हो। मंगल हो तो रक्तविकार से शनि हो तो अन्य विकार से रोग हो (शंभु०)।

(४) सप्तम में पाप युक्त सूर्य हो तो रुधिर विकार एवं वातोदर से पीड़ा हो (शंभु)।

(५) लग्न में शनि, मंगल, राहु और सूर्य हो तो उसे रक्त दोष हो और संताप हो (ल० चं०)।

(६) चन्द्रमा ६ या ८ भाव में हो मंगल से दृष्ट हो लग्न में शनि हो तो रक्त रोग हो (जा० पारि०)।

(७) षष्ठेश ८ या ४ राशि के नवांश में हो शनि से दृष्ट हो तो रुधिर और पवन विकार से पीड़ित हो (जा० सं०)।

(८) राहु, मंगल, सूर्य से युक्त शनि हो शुभ दृष्टि न हो तो रुधिर ताप करने वाला हो (जा० सं०)।

रक्त पित्त—(१) मंगल सप्तम में हो तो रक्तपित्त रोग हो (जा० पारि०)।

(२) छटे स्थान में मंगल, षष्ठेश पाप युक्त या दृष्ट हो तो रक्तपित्त पीड़ा हो (स० चि०)।

(३) छठे स्थान में मंगल क्रूर नवांश में पाप दृष्ट हो तो रक्तपित्त व्याधि हो (स० चि०)।

(४) चन्द्र के क्षेत्र में मंगल हो तो रक्त के निमित्त से हीनांग और नाना प्रकार की व्याधि युक्त हो (मान०)।

व्रण या चिह्न—(१) पाप ग्रह अष्टम हो तो व्रण युक्त या चोट लगने के दाग या किसी प्रकार का चिह्न उसके गुह्यस्थान में होवे तथा बांई कमर में घाव व लांछन हो (शंभु०)।

शरीर में घाव—(२) लग्नेश और अष्टमेश दोनों शनि, राहु या केतु से युक्त हो तो उनमें जो बलवान् हो उसकी दशा में शरीर में घाव होवे (जा० लं०)।

(३) चतुर्थ में मंगल हो तो व्रण पीड़ित या अग्नि से दग्ध हो (शंभु)।

(४) पंचम मंगल हो तो अग्नि व शस्त्र से पीड़ा हो संतान बराबर मरती रहे मनुष्य दुखित हो (शंभु)।

(५) लाभ में राहु शनि हो तो तद् भावोक्त अंग में काष्ट या पत्थर की चोट हो या मनुष्य व्यथा युक्त रहे (शंभु०)।

(६) शनि युक्त चंद्र १-२ या ३ राशि में हो तो पक्षियों से स्थूल घाव हो (जा०सं०)।

(७) षष्ठेश मंगल युक्त हो तो रुधिर और शस्त्र से संतप्त देह पत्थर तथा पृथ्वी और पवन इनके प्रहार से युक्त करता है। भूख से संतप्त, देशाटन करने में राजदर्शन से युक्त हो। (जा० सं०)।

(८) लग्नेश, षष्ठेश, और चंद्र एक साथ हो मगल भी साथ हो तो चेचक, घाव, फोड़ा या युद्ध में शारीरिक क्लेश हो।

(९) षष्ठ में पाप ग्रह युक्त या दृष्ट हो तो व्रणादि तो शारीरिक या मानसिक कष्ट, शत्रु भय, मिथ्या अपवाद हो।

(१० छठे स्थान में मंगल या सूर्य हो तो शस्त्र से चोट, व्रण या प्रमेह या अग्नि विष से उत्पन्न पीड़ा हो या हड्डी टूटने से पीड़ा हो। या रुधिर से उत्पन्न अति पीड़ा या स्त्री के जंघा में या दाहिने पैर में चिह्न हो (शंभु०)।

(११) बुध के स्थान में सूर्य हो उस पर गुरु की दृष्टि हो तो शस्त्र की चोट से शरीर विदीर्ण हो।

(१२) लग्नेश मंगल के साथ त्रिक में हो तो शस्त्र से घाव या व्रण या गठिया वात हो।

(१३) लग्नेश बुध के घर में हो बुध से युक्त या दृष्ट हो तो गुह्य स्थान में व्रण हो (जा० पारि०)।

घाव—(१४) व्यय में शुक्र युक्त राहु हो तो अति घाव हो (जा० सं०)।

(१५) लग्न में मंगल हो सूर्य शनि से दृष्ट हो तो शस्त्र की चोट लगे (स० चि०)।

(१६) कर्क लग्न में मंगल हो तो शस्त्र से चोट लगे (जो० वर्ग०)।

(१७) तीसरे भाव में शनि हो क्रूर दृष्ट हो तो बाहु में चिह्न या शस्त्राघात हो। या छोटे भाई को पित्त से उत्पन्न गंड माला हो (शंभु०)।

(१८) मंगल अष्टम में पाप ग्रह से दृष्ट हो, केतु २ या ८ भाव में हो तो व्रण या घाव हो (जा० पारि०)।

(१९) सूर्य व मंगल दशम में हो तो पीठ की हड्डी के समीप या जांघ की जड़ में शस्त्र की चोट का अग्निदाह से व्रण या दाग हो (शंभु)।

(२०) चतुर्थ भाव पाप युक्त हो तो तीखी चोट कंधा या कुक्षि या हृदय में लगे।

(२१) सूर्य मंगल चतुर्थ में दशमेश से युक्त या दृष्ट हो या चतुर्थेश से युक्त या दृष्ट हो तो पत्थर की चोट लगे।

(२२) चतुर्थेश शत्रु शनि से युक्त मंगल से दृष्ट हो शुभ दृष्टि न हो तो पत्थरों से पीड़ित हो (स० चि०)।

(२३) चतुर्थेश सूर्य या शनि से युक्त मंगल से दृष्ट हो शुभ दृष्टि न हो तो पत्थर की चोट लगे।

(२४) सप्तमेश शनि हो, चतुर्थ में मंगल और शनि हो दशमेश से युक्त या दृष्ट हो तो पत्थर की चोट से मारा जावे या चट्टान से चोट लगे (स० चि०)।

(२५) शुक्र की राशि का गुरु तीसरे भाव में हो कोई पाप ग्रह वक्री हो तो ११ वर्ष में पत्थर का प्रहार होवे (जा० सं०)।

(२६) व्यय भाव में मंगल हो तो दाहिने और बायें भाग संबधी कमर में घाव हो, बायें नेत्र और बायें कर्ण में रोग हो खोटे कर्म से व्रण आदि भय हो। स्त्री की अधिक अंगता होवे (जा० सं०)।

(२७) द्वितीय स्थान में पाप ग्रह हो तो मुख नेत्र या दक्षिण कंधे में या कर्ण में व्रण घाव या और कोई प्रहार हो (जा० सं०)।

(२८) षष्ठेश क्रूर ग्रह होकर लग्न या अष्टम में हो तो शरीर में विस्फोट (व्रण) आदि का चिह्न हो (स० चि०)।

(२९) ऐसा ही दशम स्थान में पाप युक्त षष्ठेश हो पाप ग्रह से युक्त या दृष्ट हो तो अंत में व्रण हो (स० चि०)।

व्रण इतर लोगों को—(३०) ऐसा ही विचार मित्र आदि सभी भाव से करना अर्थात् पिता आदि के लिये उसका घर उसका स्वामी और उसका कारक देखो। फिर यहाँ दिये हुए योग का विचार करो। भावेश भाव कारक ग्रह के दृष्टि योग से तथा बलाबल के अनुसार मित्र आदिकों को भी व्रण कहना।

व्रण—(३१) छटे स्थान में सूर्य हो, षष्ठेश पाप युक्त या दृष्ट हो तो नाभि स्थान में पित्त विकार से व्रण हो (स० चि०)।

(३२) चन्द्र लग्न में हो सूर्य मंगल दोनों सप्तम में हो तो फोड़ा आदि से कष्ट हो (जा० सं०)।

(३३) गुरु अशुभ ग्रह की राशि में हो शुक्र शुभ ग्रह की राशि में हो तो ७ वर्ष में व्रण हो (जा० सं०)।

(३४) व्यय में सूर्य हो तो राज पुत्र और चोरों से धन हरण हो उसके चरण में चिन्ह हो लाठी का प्रहार से चोट हो (जा० सं०)।

(३५) दशम में राहु या शनि हो तो वायु दोष से पीड़ित रहे ऐसे योग में माता-पिता आदि के पूर्वोक्त स्थान में श्याम रंग का चिह्न (लाखन) होगा।

माता पिता का वह एक ही पुत्र हो यदि दूसरे भाई भी हों तो वह अपुत्र या मृत पुत्र, रोग से पीड़ित, पत्थर काष्ठ की चोट से, जल में डूबने से, वृक्ष से गिरने से या चौपाये से पीड़ा युक्त चोट हो (शंभु)।

(३६) षष्ठेश ६,२ या ८ भाव में हो तो शरीर में व्रण हो (वृ० पा०)।

षष्ठ भाव में जो राशि हो उसके आश्रित अंग में व्रण हो इसी प्रकार पिता आदि (दशम स्थानादि) के स्वामी षष्ठेश युक्त ६,८ भाव में हों तो पिता आदि सम्बन्धियों के व्रण कहना (वृ० पा०)।

(३७) लग्नेश मंगल की या बुध की राशि में किसी भाव में हो बुध से दृष्ट हो तो मुख में व्रण हो (वृ० पा०)।

(३८) षष्ठेश राहु या केतु युक्त लग्न में हो तो शरीर में व्रण हो (जा० पारि०)।

(३९) वृश्चिक लग्न में मंगल गुरु शुक्र से अदृष्ट हो तो फुंसी घाव युक्त होवे (शंभु०)।

(४०) चतुर्थ भाव में शनि, मंगल के नवांश का हो और केतु युक्त हो तो उपरोक्त फल हो (शंभु०)।

व्रण--(४१) शनि मंगल के साथ ६,७,१२ भाव में कहीं हो तो भी उपरोक्त फल हो (शंभु०)।

(४२) षष्ठेश सूर्य पाप युक्त नवम भाव में हो, छठे शुभ ग्रह और शनि मंगल गुरु हो तो वह पापी हो, कृष्ण रंग के विरूप व्रण हों। ऐसे ही विकृत पैर भी होवें (शंभु०)।

(४३) ६ या ८ घर में मंगल या केतु हो तो व्रण हो (फल०)।

(४४) ६ या ८ घर में राहु और मंगल की दृष्टि हो तो पीठ का फोड़ा (द्वार बन्द) हो (फल०)।

(४५) षष्ठेश पाप युक्त लग्न या अष्टम में हो तो व्रण हो (जा० सं०)।

(४६) षष्ठेश बुध से युक्त या दृष्ट हो तो गिरने या लोह प्रहार से अंग विदीर्ण हो, जीते हुए शत्रुवाला हो (जा० सं०)।

(४७) षष्ठेश शनि युक्त हो तो पवन, पत्थर या चौपायों से चोट पहुँचे (जा० सं०)।

(४८) षष्ठेश चन्द्रमा मंगल युक्त हो तो शस्त्र प्रहार तथा अग्नि रोग या अग्नि दाह से संतप्त देह हो (जा० सं०)।

(४९) राहु या शुक्र की दृष्टि हो तो जिस राशि में राहु हो उस राशि के अंग में व्रण हो (जा० पारि०)।

व्रण के स्थान--(१) षष्ठेश पाप युक्त या दृष्ट होकर लग्न से अष्टम में हो तो षष्ठेश के अनुसार यहाँ बताये स्थान में व्रण होगा (जा० लं०)।

(२) या ६,८ भाव में षष्ठेश से युक्त जो ग्रह हो (जा० पारि०)।

(३) या ६ भाव में जो ग्रह हो वे इन स्थानों में व्रण करते हैं :--

सूर्य--सिर में घाव	गुरु--नाभि या कटि में व्रण
चंद्र--मुख में व्रण	शुक्र--नेत्र पर व्रण
मंगल--कंठ में व्रण	शनि--पांव में व्रण
बुध--हृदय में व्रण	राहु केतु--ओठों में या पेट में या पीठ में व्रण।

(४) षष्ठेश या उसका कारक १,१० या ८ भाव में हो तो भी उपरोक्त स्थान में व्रण करते हैं (प्रा० यो०)।

व्रण अच्छे हों—इन उपरोक्त रोगों में शुभ ग्रह की दृष्टि हो तो व्रण अच्छे हो जाते हैं।

रोग बढ़े—यदि उन पर पाप ग्रहों की दृष्टि हो तो अच्छा न होकर उनमें विकार होता है।

कीड़े पड़ें – यदि शनि की दृष्टि हो तो व्रण में कीड़े पड़ें।

काटना या चीरना पड़े–यदि मंगल की दृष्टि हो तो व्रण आपरेशन करना पड़े (प्रा०यो०)। वा लग्नेश षष्ठ स्थान में हो कर यदि :—

सूर्य से युक्त हो – जानवर से व्रण।

चंद्र युक्त हो –जलचर के योग से व्रण।

मंगल युक्त हो – शस्त्र लग कर व्रण।

बुध युक्त हो –पित्त रोग से।

गुरु युक्त हो –जीभ का रोग हो।

शुक्र युक्त हो –पांडु रोग हो।

शनि युक्त हो—चोरों के उपद्रव से व्रण।

राहु केतु युक्त हो – महामारी का उपद्रव।

इनमें शुभ योग हो तो आरोग्य होता है। पाप योग से दुःख बढ़ता है (प्रा० यो०)।

सिर में घाव (१) लग्न में लग्नेश और मंगल बुरे ग्रह से युक्त या दृष्ट हो तो सिर में घाव या फोड़ा पत्थर या तलवार से हो।

(२) लग्न में लग्नेश और शनि हो, पाप ग्रह से युक्त या दृष्ट हों तो सिर में चोट गिरने से, चट्टान अग्नि या शस्त्र से हो।

(३) पाप ग्रह कोई या सब लग्न में हो तो सिर में बड़ा कटने का निशान या कुरूपता का चिन्ह हो।

(४) यदि ये पाप ग्रह बुरी स्थिति में हैं और लग्नेश निर्बल हो तो ये चोट के निशान बड़े भारी होंगे जिससे स्थाई चोट या कुरूपता हो।

(५) यदि लग्नेश अच्छे साथी युक्त, उच्च में या शुभ ग्रह युक्त या दृष्ट हो तो चोट साधारण एवं अल्प होगी नाम मात्र को सिर में चोट का चिन्ह होगा।

ग्रहों का बलाबल और अच्छा बुरा प्रभाव विचार कर फल कहना (स० चिं०)।

माता-पिता आदि के भी व्रण विचार—उपरोक्त योगों में जिस प्रकार जातक को व्रण होना बताया है उसी प्रकार माता-पिता पुत्र आदि को उनके भाव को लग्न भाव मानकर विचारने से उनके व्रण का भी फल प्रगट होगा। जैसे—

(४५) षष्ठेश पाप युक्त लग्न या अष्टम में हो तो शरीर में घाव हो। चतुर्थ भाव से छठे का स्वामी पाप युक्त होकर चतुर्थ या चतुर्थ से अष्टम में हो - माता की देह में व्रण।

दशम भाव से छठे का स्वामी पाप युक्त होकर दशम या दशम से अष्टम में हो—पिता को व्रण।

पंचम भाव से छठे का स्वामी पाप युक्त होकर पंचम या पंचम से अष्टम में हो — पुत्र को व्रण।

सप्तम भाव से छठे का स्वामी पाप युक्त होकर सप्तम या सप्तम से अष्टम में हो— स्त्री को व्रण।

तीसरे भाव से छठे का स्वामी पाप युक्त होकर तीसरे या तीसरे से अष्टम में हो— भाई को व्रण।

इत्यादि प्रकार से सबके सम्बंध में इस योग का विचार उपरोक्त प्रकार से कर सकते हैं।

गंड माला—(१) ६,८ भाव में मंगल शनि साथ हों उस पर शुभ दृष्टि न हो तो गंड माला फोड़ा आदि रोग हो (शंभु)।

मूत्र रोग – सप्तम में शनि व राहु हो तो मूत्र रोग हो।

मूत्र कृच्छ्र—(१) षष्ठ में जल राशि हो उसमें चन्द्र हो।

(२) या षष्ठेश जल राशि में हो और उस पर बुध की दृष्टि हो (स० चि०)।

(३) सप्तम में मंगल पाप युक्त या दृष्ट हो तो मूत्र कृच्छ्र रोग हो और पुरुषत्व से हीन हो (शंभु०)।

(४) षष्ठेश पाप युक्त नवम में हो या षष्ठेश व्ययेश युक्त कहीं हो पर शनि दृष्ट हो तो मूत्रकृच्छ्र रोग हो (ज्यो० शा०)।

(५) ७,६ या ८ स्थान में बहुत पाप ग्रह क्रूरांशक में हों तो मूत्रकृच्छ्र रोग हो (स० चि०)।

(६) चन्द्रमा जलचर राशि में हो उसका स्वामी षष्ठ स्थान में हो उस पर जलचर राशि गत ग्रह की दृष्टि हो तो मूत्रकृच्छ्र हो (जा० पारि०)।

प्रमेह—(१) पंचम स्थान में सूर्य शनि शुक्र से युक्त हो या सूर्य लग्न में, मंगल सप्तम या दशम मंगल शुक्र से युक्त या दृष्ट हो तो प्रमेह रोग हो (शंभु०)।

(२) अष्टमेश अपने नवांश में होकर राहु के साथ अष्टम भाव से त्रिकोण में हो तो १८ या २२ वर्ष में प्रमेह आदि रोग या गठिया रोग हो (वृ० पा०)

वीर्य विकार—लग्न में गुरु, सप्तम मंगल हो तो वीर्य विकार हो (जा० भ०)।

उपदंश—(१) षष्ठ स्थान में शुक्र हो तो उपदंश रोग हो। (ज्यो० शा०)।

(२) चंद्र बुध और लग्नेश सूर्य युक्त राहु के साथ हो तो उपदंश हो यदि उपरोक्त तीनों ग्रह सूर्य के नवांश में हों तो भी वही फल हो (स० चि०)।

इन्द्रिय रोग—अष्टम में कई पाप ग्रह हों तो गुप्तांग में कई विकार हों (स० चि०)।

(२) षष्ठेश बुध युक्त लग्न में हो तो शिश्न में रोग हो (स० चि०)।

(३) चन्द्र ४,८ या ११ राशि के नवांश में शनि युक्त हो तो भोग इन्द्रिय में रोग हो (स० चि०)।

(४) छठे भाव में मंगल लग्नेश युक्त हो तो घाव से शिश्न में रोग हो (जा० पारि०)

(५) शुक्र ७ या ८ घर में हो तो गुप्तांग में रोग हो (फल०)

(६) षष्ठेश शनि युक्त लग्न में हो तो किसी कठिन रोग से गुप्तेन्द्रिय में चीरफाड़ हो।

शिश्न कटे—(१) षष्ठेश शनि युक्त लग्न में हो और शुभ ग्रह की दृष्टि न हो तो शिश्न काटा जावे (स० चि०)।

(२) षष्ठेश बुध युक्त तथा राहु युक्त लग्न में हो तो आप ही अपना लिंग कटा देवे (स० चि०)।

(३) यदि षष्ठेश मंगल सहित हो उस पर शुभ दृष्टि न हो तो किसी रोग से लिंग छेदन हो अर्थात् काटा जावे या लिंग का रोग हो (स० चि०)।

(४) सूर्य युक्त राशि लग्न में हो उस पर शुक्र या चन्द्र की दृष्टि हो और सूर्य ग्रहण लगता हो तो लिंग काटा जावे और वह अपयशी हो (जा० लं०)।

नपुंसक—(१) दशम में या अष्टम में शनि युक्त शुक्र हो शुभ दृष्टि रहित हो या शनि ६,१२ भाव में नीच का हो तो नपुंसक हो।

(२) विषम राशि में स्थित सूर्य, सम राशि में स्थित चंद्र हो परस्पर एक दूसरे पर दृष्टि हो।

(३) विषम राशि में शनि, सम राशि में बुध हो, परस्पर दृष्टि हो।

(४) विषम राशि में मंगल, सम राशि में सूर्य हो परस्पर दृष्टि हो।

(५) विषम राशि में लग्न व चन्द्र दोनों हों और सम राशि में स्थित मंगल से दृष्ट हो।

(६) विषम राशि में स्थित चन्द्र व बुध ये दोनों विषम राशि स्थित मंगल से दृष्ट हों।

(७) लग्न, शुक्र व चन्द्र ये तीनों पुरुष ग्रह राशि व नवांश में हों तो नपुंसक हो।

(८) पाप ग्रह सप्तम स्थान में हों उन पर शुभ दृष्टि न हो तो नपुंसक हो।

(९) षष्ठेश और बुध राहु के साथ लग्नेश के सम्बन्धी हों तो नपुंसक हो।

(१०) सप्तम में गुरु के साथ राहु हो तो नपुंसक हो।

(११) शुक्र से ६ या ८ स्थान में शनि हो तो नपुंसक नहीं होता किन्तु नपुंसक के समान होता है।

अन्यमत—शुक्र से ६ या १२ स्थान में शनि हो तो उपरोक्त फल हो।

इन्द्रिय सुख—यदि अष्टम भाव शुभ ग्रह युत या दृष्ट हो तो भोग इन्द्रिय के लिए बड़ा सुख होगा।

विचार—फल कहते समय उस बात के कारक का भी विचार करना चाहिये। मान लो अष्टम में बुध और गुरु ये दो शुभ ग्रह हैं तो भोग इन्द्रिय स्वस्थ होगी परन्तु मान लो शुक्र मंगल और शनि सप्तम में है या चतुर्थ में है तो भोग इन्द्रिय रोगी होगी और उसका आचरण भी खराब होगा।

गुप्त रोग—(१) षष्ठेश वृश्चिक या कर्क के नवांश में हो मंगल से दृष्ट हो तो अंग गुप्त रोग से पीड़ित रहे (जा० सं०)।

(२) चन्द्र वृश्चिक या कर्क नवांश में पाप युक्त हो तो गुप्त रोग हो (वृ० जा०)।

(३) गुरु लग्न से व्यय स्थान में हो तो ऐसा रोग हो जिसे वैद्य भी न जान सके (जा० लं०)।

प्रगट रोग—(१) शुक्र मंगल सप्तम हो उस पर पाप ग्रह की दृष्टि हो तो शरीर में बाहर से रोग प्रगट रहेगा (वृ० जा०)।

अंड वृद्धि—(१) अष्टम में मंगल युक्त शुक्र हो तो वायु विकार से अंडकोष की वृद्धि हो।

(३) मंगल की राशि में स्थित शुक्र व चन्द्र ये दोनों गुरु से दृष्ट हों तो वीर्य व रक्त इन दोनों के मिश्रित विकार से अतिशय अंडकोष की वृद्धि हो (जा० लं०)।

(४) राहु लग्न में, गुलिक त्रिकोण में, मंगल और मांदि केन्द्र में हों तो बड़े अंडकोष हों।

(५) अष्टमेश का नवांश स्वामी राहु के साथ हो तो अंडवृद्धि हो (स० चि०)।

(६) तृतीय स्थान में शनि मंगल राहु हो षष्ठेश से दृष्ट हो (जा० पारि०)।

(७) लग्न में राहु मंगल या शनि के साथ हो (जा० पारि०)।

(८) लग्नेश राहु या गुलिक के साथ अष्टम में हो तो बड़े अंड कोष हों (जा०पारि०)।

(९) लग्नेश राहु या दूसरे पाप ग्रह युक्त अष्टम में हो तो अंड वृद्धि हो।

यदि ग्रह बलवान् हो तो बुरा रोग हो, अशक्त हो तो साधारण रोग हो। अष्टम भाव गुप्तांग सूचक है।

(१०) लग्नेश के नवांश स्वामी के साथ राहु आदि और मंगल हो तो अंड वृद्धि हो।

यदि तीनों ग्रह साथ हों तो उपरोक्त फल होगा यदि उनमें एक ही ग्रह हो तो कम फल होगा।

(११) मंगल राहु या राहु शनि के योग से अंड वृद्धि हो (जा० पारि०)।

वृषण रोग—(१) मीन लग्न में सूर्य हो मंगल से दृष्ट हो। या शुक्र युक्त वृश्चिक लग्न में जन्म हो तो वृषण रोग हो।

(२) लग्न में मंगल हो तो नाभि में गुल्म तथा वृषण (फोते) में रोग हो (जा० पारि०)।

गुदा रोग—(१) अष्टम भाव में पाप ग्रह व बारहवें स्थान में चंद्र हो तो गुदा में रोग होकर अरिष्ट हो (प्रा० यो०)।

(२) लग्नेश १,८,३,६ इनमें से किसी राशि में हो शत्रु ग्रह से दृष्ट हो तो गुदा में रोग हो (जा० लं०)।

(३) पाप युक्त चंद्र कर्क या कर्कांश में हो तो गुदा में रोग हो (शंभु०)।

(४) अष्टमेश सप्तम में, षष्ठेश अष्टम में हो तो गुदा से रक्त बहने का राग हो (फल०)।

(५) लग्नेश मंगल बुध चौथे या बारहवें भाव में एक साथ हो।

(६) या इन ग्रहों की दृष्टि चौथे या बारहवें भाव पर हो तो गुदा में रोग हो (स० चि०)।

(७) चंद्रमा शुक्र ६ या ८ भाव में हो तो मंदाग्नि और गुदा में रोग हो (शंभु०)।

(८) सप्तम भाव शनि से युक्त या दृष्ट हो तो गुदा रोग, गुल्म तथा प्रमेह रोग हो (जा० सं०)।

(९) पाप युक्त चंद्र अष्टमेश की राशि में हो अष्टमेश पर राहु की दृष्टि हो तो बवासीर हो (जा० पारि०)।

(१०) अष्टम भाव ३ या ४ पापग्रहों से युक्त हो तो भी उपरोक्त फल हो। शुभ ग्रहों के योग होने से यह रोग नहीं होता (जा० पारि०)।

(११) कर्क राशि पर सूर्य हो उस पर शनि की दृष्टि हो तो मूल व्याधि (बवासीर रोग) हो।

(१२) वृश्चिक राशि का स्वामित्व गुह्य भाग पर है इस राशि में मंगल या राहु हो तो मूल व्याधि हो।

(१३) कर्क का चंद्र १, २, ६; ८ स्थान में कहीं हो तो रक्त पित्त या मूल व्याधि रोग हो। चंद्र दशा में मंगल का अंतर आने पर यह रोग होगा।

(१४) अष्टमेश क्रूर ग्रह होकर सप्तम में शुभ दृष्टि रहित हो तो उसे अर्श (बवासीर) हो (शंभु)।

(१५) सप्तम में वृश्चिक का शनि, नवम में मंगल हो और दिन का जन्म हो तो अर्श हो।

(१६) शनि बारहवें भाव में लग्नेश तथा मंगल से युक्त दृष्ट हो।

(१७) वृश्चिक या मंगल चतुर्थ भाव में हो गुरु की दृष्टि न हो।

(१८) लग्न में शनि, सप्तम में मंगल हो तो भी अर्श हो (शंभु)।

(१९) लग्नेश मंगल और बुध एकत्र होकर अशुभ भाव में हों या वे छठे भाव को देखते हों तो गुदा रोग बवासीर आदि हो (जा० पारि०)।

(२०) लग्नेश पाप ग्रह से युक्त या दृष्ट होकर पीड़ित हो तो गुह्य विकार होना संभव है।

संग्रहणी—(१) धन भाव में राहु या सूर्य हो तो संग्रहणी रोग हो (शंभु०)।

(२) धन भाव में राहु या शनि हो तो संग्रहणी रोग हो (शंभु०)।

(३) छठे भाव में शुक्र हो तो अतिसार रोग हो (स० चि०)।

आसन में रोग—मंगल बुध की राशि में हो।

मृगी—(१) ६ या ८ भाव में शनि मंगल युक्त हो तथा जन्म में सूर्य चन्द्र पर परिवेश (सौडल) हो, लग्न त्रिकोण में गुरु न हो तो मृगी रोग हो (शंभु०)।

(२) ६ या ८ भाव में शनि और मंगल हो (स० चि०)।

(३) पाप ग्रह ६ या ८ या १२ भाव में हो गुरु परिधि वाला हो केन्द्र में न हो तो मृगी हो (स० चि०)।

(४) लग्न में राहु और ६ भाव में चन्द्र हो तो मृगी हो (ल० चे०)।

(५) मंगल शनि युक्त हो और चन्द्र पर मंगल की दृष्टि हो तो मृगी हो (पू० जा०)।

(६) ६ या १२ स्थान में चंद्र के साथ शनि या मंगल में से कोई हो। इनमें से दूसरा ६ या १२ स्थान में उसके सन्मुख हो।

(७) शनि मंगल और सूर्य अष्टम स्थान में आवें तो अपस्मार (मृगी) और नाना प्रकार की व्याधि उत्पन्न करते हैं।

८ - चंद्र बुध पाप दृष्ट केन्द्र में हों पंचम या अष्टम भाव में पाप ग्रह हो तो यह सत्यपद नाम का योग होता है इसमें मृगी रोग हो। (शंभु०)।

९—शुक्र लग्न में और चंद्र छठे भाव में हो तो मृगी आदि रोग हो (जा० सं०)।

१०—अष्टम भाव में चन्द्रमा राहु युक्त या बलहीन हो तो मृगी हो (स०चि०)।

११—सब पाप ग्रह ८ भाव में हों, चंद्र शुक्र केन्द्र में हों तो अपस्मार हो और संतप्त रहे (स० चि०)।

उन्माद—१—मंगल युक्त चन्द्र छटे भाव में तो भ्रांति (चित्त भ्रम), श्वेत पांडु आदि रोग हो (स० चि०)।

२—लग्न में सूर्य, सप्तम में मंगल हो तो पागल हो (जा० पारि०)।

३—लग्न में शनि, सप्तम या त्रिकोण में मंगल हो (जा० पारि०)।

४—लग्नेश और षष्ठेश बुध युक्त हो तो मन के रोग से पीड़ित रहे (स०चि०)।

५—पंचम स्थान में पंचमेश पाप ग्रह हो या अस्तंगत या वक्री हो तो उस की बुद्धि भ्रम कर पागल पन हो (प्रा०यो०)।

६—लग्न में गुरु सप्तम में मंगल हो तो विक्षिप्त हो।

७—शनि लग्न में हो, मंगल सप्तम या पंचम या नवम में हो तो उन्मादी या स्खलित वाणीवाला हो (स० चि०)।

८—सूर्य ३,६,१२ घर में हो और यदि मंगल या चन्द्र ५ या ९ घर में हो तो वह पागल, मूर्ख या अस्थिर पन का हो।

९—सूर्य और चन्द्र लग्न या ५ या ९ घर में कहीं हों गुरु ३ भाव में या किसी केन्द्र में हो और जन्म समय शनि सबसे बलवान् हो तो वह पागल हो (स० चि०)।

१०—क्षीण चन्द्र और शनि बारह में हों तो पागल हो (वृ० जा०)।

११ - चन्द्रमा पाप युक्त एवं राहु युक्त बारहवें हो या सपाप चन्द्र ८,९ या १२ घर में हो तो उन्मादी एवं कलह प्रिय हो (स० चि०)।

१२ – सूर्य और चन्द्र १, ३, ९ भाव में कहीं साथ हों गुरु केन्द्र या ३ भाव में हो, शनि या मंगल के होरा में दिन का जन्म हो तो बावला, अद्भुत ढंग का हो (शंभु०)।

१३ - लग्न में गुरु सप्तम शनि हो तो बावला और पातकी हो (शंभु०)।

१४—लग्न में शनि राहु ग्रस्त हो और नवम या पंचम में पाप ग्रह शनि मंगल हो तो पागल हो (प्रा० यो०)।

१५ – लग्न में शनि, बारहवें सूर्य और त्रिकोण में चन्द्र मंगल हो तो उन्माद बुद्धि का जड़ मूर्ख या चञ्चल बुद्धि वाला हो।

१६—लग्न या त्रिकोण में सूर्य चन्द्रमा या शनि गुरु केन्द्र में हों तो उन्माद हो (स० चि०)।

१७—जन्म समय में शनि या मंगलवार हो बुध केन्द्र में चन्द्रमा शुभांश रहित हो तो उन्माद बुद्धि भ्रम संयुक्त रहे (स० चि०)।

१८—शुक्र कर्क लग्न में हो तो उन्माद हो।

१९—तृतीय या नवम स्थान में शनि हो।

सनकी १—शनि लग्न में, मंगल सप्तम और शनि नीच में हो तो सनकी होवे (स० चि०)।

२—शनि मंगल युक्त लग्न से ६ या ७ भाव में हो (स० चि०)।

३—गुरु बलहीन हो पाप ग्रह २ या १० भाव में हो शुभ युक्त या दृष्ट न हो तो सनकी होगा। गुरु नीच, अस्त, दृष्ट षष्ठेश आदि में होने से बलहीन हो (स० चि०)।

४ – बुध और चन्द्र केन्द्र में हों तो वह सनकी और दुःखी होगा (स० चि०)।

प्रमाद (सनक आदि)—

द्वितीयेश पाप युक्त शनि युक्त—अतिवात रोग की पीड़ा से प्रमाद हो।

द्वितीयेश पाप युक्त सूर्य युक्त – राजा के कोप भय से प्रमाद हो।

द्वितीयेश पाप युक्त मंगल युक्त-अति उष्णता से पीड़ित होकर प्रमाद हो (स०चि०)

मूर्ख १—शनि चन्द्र सूर्य केन्द्र में हों तो दूसरे का द्रव्य खाने वाला मूर्ख हो (स० चि०)।

२—शनि सूर्य व मंगल ये तीनों चन्द्र को देखें तो वह शीतल स्वभाव वाला अर्थात् मूर्ख हो (जा० लं०)।

३ –दशमेश बारहवें भाव में हो, बारहवें भाव का स्वामी द्वितीय भाव में हो और पाप ग्रह तीसरे भाव में हों तो वह मूर्ख होगा। दूसरों के भरोसे रहेगा (स० चि)।

४ – ३ ग्रह नीच या शत्रु गृही या क्रूरांश में हों तो मूर्ख और जिद्दी हो (स० चि०)।

पिशाच बाधा १—चन्द्र लग्न में हो राहु से ग्रस्त हो (ग्रहण का समय हो) और ५,९ भाव में पाप ग्रह शनि मंगल हो तो उस पर पिशाच लगा रहे (वृ० जा०)।

२—राहु केतु सप्तम हो तो पिशाच रोग हो (जा० पारि०)।

३--शनि सप्तम में हो, शुभ ग्रह लग्न में हों और चन्द्र कहीं हो पाप ग्रह से दृष्ट हो तो भूतप्रेत पिचाश आदि देखने से रोग हो (जा० पारि०)।

४--गुरु लग्न में या ४,१० भाव में हो गुलिक केन्द्र में हो तो देव के कोप से रोग हो (जा० पारि०)।

अभिचार १--लग्न पर मंगल की दृष्टि हो, षष्ठेश १० या ७ भाव में हो तो अभिचार (जादू टोने आदि) से रोग हो (जा० पारि०)।

२--चर राशि लग्न में हो उस पर षष्ठेश की दृष्टि हो या मंगल लाभ में हो या धर्म भाव में स्थिर राशि हो, सप्तम में द्विस्वभाव राशि हो तो शत्रु के किये अभिचार (प्रयोग) से रोग होग (जा० पारि०)।

सिर में पीड़ा १--लग्न या लग्न के होरा में पाप ग्रह हो तो सिर में पीड़ा हो।

वह होरा पूर्वदल में हो तो सिर के बायें भाग में हो।

वह होरा उत्तर दल में हो तो सिर के दक्षिण भाग में हो (शंभु०)।

शिर रोग २ - यदि १ या ६ का स्वामी राहु या केतु युक्त हो तो सिर दर्द, सिर में चक्कर आना, पाँव रोग, चोट या अग्नि भय हो (स० चि०)।

३--षष्ठेश बल रहित लग्न में हो या लग्न में मंगल हो तो शिर में पीड़ा, मुख रोग या गुल्म रोग या ग्रंथि व्रण हो (स० चि०)।

(षष्ठेश जिसके नवांश में हो उस की धातु अनुसार ग्रहोक्त अंग में रोग हो।)

गंजा १ -धन भाव में पाप ग्रह हो या व्यय भाव में पाप राशि पाप दृष्ट हो तो खल्वाट हो (शंभु०)।

२--चन्द्रमा ४,५,६,८,९ राशि का लग्न में मंगल से दृष्ट हो तो खल्वाट (गंजा) हो (शंभु०)।

३--लग्न में पाप ग्रह की राशि १,८,५,१०,११ या २,९ राशि लग्न में हो उस पर पाप ग्रह की दृष्टि हो तो गंजा सिर हो (वृ० जा०)।

४--लग्न में २ या ९ राशि पाप ग्रह युक्त हो तो चंदुवा (गंजा) हो (जा० लं)।

गर्दन का रोग १--तीसरे घर में नीच का ग्रह हो, छठे में अस्त ग्रह हो इन दोनों पर पाप दृष्टि हो तो गर्दन में रोग का भय हो।

२--तृतीयेश बुध के साथ हो तो गर्दन का रोग हो।

३--तृतीय भाव में पाप ग्रह हो गर्दन या रोग हो यदि वह मांदि के साथ हो तो रोग कठिन हो।

४-- तृतीयेश राहु या केतु युक्त होकर बुध के साथ हो।

४--राहु केतु जिस घर में हों उसका स्वामी तृतीयेश और बुध के साथ हो तो गर्दन में रोग हो (स० चि०)।

५--तीसरे भाव में मंगल पाप ग्रह से दृष्ट हो तो गले में पित्त से रोग हो और भुजा में घाव से चिन्हित हो (जा० सं०)।

६--तृतीय भाव में शत्रु ग्रह युक्त पाप ग्रह हो तो गले में वात प्रकोप हो, भुजा में व्यथा और जुआड़ी हो। ग्रहों के बलाबल विचार कर कहे (जा० सं०)।

७--राहु और द्वितीयेश दोनों तृतीयेश से युक्त हो तो गला में कष्ट हो (जा. पारि.)

८--तीसरे भाव में नीच का ग्रह शत्रु गृही या अस्त ग्रह हो पाप ग्रह से दृष्ट हो तो विष प्रयोग से या विष खाने से गले में रोग हो इस के अभाव में धन का नाश हो (जा० पारि०)।

रमणीक कंठ--तृतीय घर बली हो या गुरु और बुध से युक्त या दृष्ट हो या तीसरे भाव के केन्द्र में गुरु या बुध हो तो रमणीक कंठ स्वर हो (जा० पारि०)।

मुख रोग १—द्वितीय भाव में शुभ या पाप ग्रह शत्रुगृही या शत्रु ग्रह युक्त हो तो मुख रोग हो (शंभु०)।

२—द्वितीय भाव में मंगल हो तो सूर्य से दृष्ट हो तो मुँह में स्पर्श रोग हो।

(जा०पारि०)

३—१, २, ७ या ८ भाव में सूर्य या मंगल हो इन्हीं दोनों में से एक दूसरे को देखते हों तो मुख में आज्य स्पर्श रोग, अग्नि भय, मसूरिका रोग हो (जा० पारि०)।

४—गुरु या शुक्र दोनों में से कोई षष्ठेश होकर लग्न में हो और क्रूर ग्रहों से दृष्ट हो तो मुख में सूजन हो (जा० लं०)।

५—बुध, राहु या केतु के साथ द्वितीयेश छठे घर में हो या जहाँ राहु है उस राशि का स्वामी द्वितीयेश के साथ हो तो तालु, जबड़ा या मुख में रोग हो। राहु जहाँ है उसके स्वामी की दशा में जब उनमें से किसी ग्रह की अंतर्दशा हो तब रोग होगा।

(स० चि०)

दुर्मुख १—धन स्थान (मुख स्थान) में पाप ग्रह हो तो दुर्मुख हो।

२—धन भाव गत पाप ग्रह को पाप ग्रह की दृष्टि हो तो क्रोधान्वित मुखवाला हो।

(जा० पारि०)

सुन्दर मुख १—धन भाव में शुभ ग्रह यदि उच्चादि वर्ग में हो तो सुन्दर मुख हो।

(जा० पारि०)

२—धनेश उच्च में या अपने मित्र के वर्ग में हो शुभ ग्रह से दृष्ट हो तो सुमुख होगा।

३—धनेश केन्द्र में हो तो हंस मुख सौंदर्य युक्त हो (जा० पारि०)।

दंत रोग १—द्वितीयेश राहु युक्त छठे भाव में हो या राहु जिस राशि में हो उसके स्वामी से युक्त हो तो उसकी दशा अंतर्दशा में दांतों का रोग हो दांत गिर जावें। द्वितीयेश, षष्ठेश या राहु की दशा अंतर्दशा में हो।

२—षष्ठेश द्वितीयेश से युक्त जिस भाव में हो उसका स्वामी जिसके नवांश में हो वह षष्ठेश से युक्त होवे तो दांत रोग हो या दांत गिर जावें (स० चि०)।

३—द्वितीय भाव में राहु हो तो दांत रोग हो (जा० सं०)।

४—राहु या केतु द्वितीय भाव में हो तो बड़े दांतवाला हो या दंत रोगी हो (शंभु.)।

५—चन्द्रमा पाप ग्रहों की राशि में हो सूर्य मंगल की दृष्टि हो तो दांतों को हरने वाला हो (जा० सं०)।

६—पाप ग्रह सप्तम भाव में हो शुभ दृष्टि न हो तो बुरे दाँत वाला या ओठों में घाव हो (जा० सं०)।

७—राहु या केतु षष्ठ भाव में हो तो दांतों में या ओठों में रोग हो (प्रा० यो०)।

८—१, २ या ९ लग्न में जन्म हो उस पर पाप ग्रह की दृष्टि हो तो दांत का विकार हो (जा० पारि०)।

९ - द्वितीयेश राहु युक्त दुष्ट स्थान में हो या राहु से युक्त जो स्थान है उसके स्वामी से युक्त हो तो उनकी दशा अंतर्दशा में दंत रोग हो। बुध की अंतर्दशा में जीभ रोग हो (जा० पारि०)।

१०—सूर्य शनि द्वितीय भाव में हो तो श्रवण शक्ति व दांतों का हरण हो (जा० सं०)।

११—लग्न में सिंह का चन्द्र हो पाप ग्रहों से दृष्ट हो तो दांत रोग शोथ रोग या मस्तक रोग हो।

१२—शनि, सूर्य, चंद्र सप्तम हो शुभ ग्रह युत या दृष्ट न हो तो दंत नाश हो (जा० भ०)।

१३—लग्न से सप्तम में सूर्य, चन्द्र, मंगल या शनि हो उस पर शुभ ग्रह की दृष्टि न हो तो दंत रोग हो। (प्रा० यो०)।

१४—पंचम शनि, लाभ में सूर्य, तृतीय घर में चन्द्र हो तो दंत रोग हो (प्रा० यो०)

१५—पाप ग्रह मेष वृष राशि का लग्न में पाप दृष्ट हो तो दंत विकृत हों (शंभु)।

१६—कर्क, कुम्भ, वृश्चिकांश का चंद्रमा राहु केतु युक्त चतुर्थ में हो और पाप युक्त हो तो दांत और कंठ रोग हो (रु० चि०)।

दंत और मुख रोग का विचार अन्य प्रकार से

उप पद से, सप्तमेश से द्वितीय में राहु हो—बड़े दाँत वाला हो।

उप पद से, सप्तमेश से द्वितीय में केतु हो—अस्फुट वक्ता (रुक कर बोले)।

उप पद से, सप्तमेश से द्वितीय में शनि हो – कुरूप।

उप पद से सप्तमेश जो हो उससे द्वितीय में राहु हो—मूक।

उप पद से सप्तमेश जो हो उससे द्वितीय में पापग्रह हो—बिना दाँत, अधिक या बड़े दाँत वाला।

उप पद से सप्तमेश जो हो उससे द्वितीय में केतु हो—वात व्याधि, अस्फुट वक्ता।

उप पद से सप्तमेश जो हो उससे द्वितीय में अन्य ग्रह हो–मिला हुआ फल (जैमिनि०)।

दांत सहित जन्म—शनि और मंगल किसी भी राशि में बुध के नवांश में हो तो बालक दांत सहित जन्मे (जा० पारि०)।

वाणी विचार (शुभ वाणी) १—धन भाव वाणी का भी बोधक है द्वितीयेश शुभ ग्रह होकर उच्च का या मित्र स्थानी या केन्द्र में हो या शुभ घर में हो तो मिष्ट वाणी युक्त वह कुटुम्बियों की सहायता करेगा।

२—द्वितीयेश शुभ ग्रह युक्त हो या दृष्ट हो, द्वितीय भाव में शुभ ग्रह हो तो मधुर वाणी हो (स० चि०)।

३—द्वादशेश लग्न में हो तो मधुर भाषी हो (जा० लं०)।

४—द्वितीय भाव में बलवान् गुरु या बुध हो तो अच्छा बोलने वाला और अच्छा मुख हो (जा० सं०)।

५—द्वितीय भाव शुभ ग्रह से युक्त या दृष्ट हो तो सुन्दर वाणी हो और धन सुख हो (जा० सं०)।

६—लग्न व द्वितीय भाव में गुरु हो तो मीठे वचन बोलने वाला प्यारी व सत्य वाणी बोलने वाला हो (शंभु)।

७—लग्न या द्वितीय में बुध हो तो भी वही फल हो (शंभु०)।

८—द्वितीयेश स्वक्षेत्री, मूल त्रिकोण, मित्रगृही, स्वक्षेत्री हो या शुभ ग्रहों से दृष्ट हो तो वाचाल और उपाख्यान कर्ता हो (ज्या० शा०)।

९—धन भाव में शुभ ग्रह का वर्ग हो तो वाक्य सिद्धि हो (जा० पारि०)।

१०—द्वितीयेश शुभ ग्रह युक्त त्रिकोण में या केन्द्र में या शुभ स्थान में हो तो वाचाल हो (जा० पारि०)।

११—द्वितीयेश जिसके नवांश में हो उसका स्वामी शुभ हो अपने उच्च में हो या शुभ ग्रह से दृष्ट हो या पारावतांश में हो तो वाचाल और चतुर हो (जा० पारि०)।

१२—शनि मकर राशि में हो तो वह थोड़े प्रयोजन के लिए बहुत बोलने वाला हो (जा० लं०)।

१३—मंगल बुध या चन्द्र ये बली ग्रह से दृष्ट हों तो शीघ्र बोलने वाला या शीघ्र जवाब देने वाला हो (जा० लं०)।

१४—राहु केतु घोर ग्रह हैं इनके साथ द्वितीयेश हो तो सभा में पराजय न हो।

वाणी विचार १५—द्वितीयेश केन्द्र में पारावतांशक और परमोच्चांशक हो। गुरु या शुक्र सिंहासनांश हो व वर्गोत्तम में हो बुध से युक्त हो तो वाचाल (बहुत बोलने वाला) हो।

१६—द्वितीयेश गुरु युक्त हो या पारावतांश में हो उसका स्वामी शुक्र या बुध से युक्त हो या पारावतांश में हो तथा द्वितीयेश उच्च या मित्र राशि में हो तो वाचाल हो (स० चि०)।

१७—धनेश पर कोई पाप ग्रह का प्रभाव न हो या बुरे घर में न हो केवल शुभ ग्रह देखते हों तो आम सभा में बड़ी ढिठाई से बोलेगा।

वाणी दोष १—चन्द्र शनि युक्त हो और मंगल की दृष्टि हो तो कठोर वचन बोलने वाला हो (वृ० जा०)।

२—गुरु तथा धनेश द्वादश या छठे भाव में हो जब चन्द्रमा शनि का योग हो।

३—द्वितीयेश यदि नीच का हो ३, ६, ७, १२ स्थान में चन्द्र या गुरु किसी एक से युक्त हो तो वाणी विफल हो (ज्यो० शा०)।

४—धन भाव में चंद्र और शनि हो तो हकला के बोले (ज्यो० शा०)।

५—बुध यदि धन स्थान में निर्बल तथा पाप दृष्ट हो तो हकलाकर बोले (स० चि०)।

६—द्वितीयेश शक्ति हीन शुभ ग्रह हो जिस पर पाप दृष्टि हो तो वह बोलने में हकलावे।

७—द्वितीयेश निर्बल होकर क्रूर अंश में हो और क्रूर ग्रह होवे द्वितीयेश पर कोई शुभ दृष्टि न हो पाप दृष्टि हो तो हकला कर बोले।

८—धन भाव में पाप युक्त शुक्र दूसरे द्रेष्काण में हो तो गूँगा हो। यदि तीसरे द्रेष्काण में हो तो हकलावे (शंभु०)।

९—शनि युक्त चंद्र पाप गृही हो और सूर्य मंगल से दृष्ट हो तो वाणी को हरने वाला है (जा० सं०)।

गूंगा १—बुध ४,८,१२ राशियों में कहीं हो, सूर्य चौथे भाव में हो चन्द्रमा से दृष्ट हो। षष्ठेश पाप ग्रह से दृष्ट हो तो वह गूंगे स्वर वाला हो (शंभु०)।

२—शुक्ल पक्ष का चन्द्रमा लग्न में मंगल युक्त हो तो गूंगा हो।

३—बुध ६ या १२ राशि का शनि से पूर्ण दृष्ट हो तो गद्गद वाणी वाला हो। (शंभु०)।

४—चतुर्थ भाव में चर राशि हो और उसका स्वामी और मंगल ६,१२ भाव में हो तो गूंगा हो (वृ० पा०)।

५—द्वितीयेश गुरु से युक्त अष्टम में हो तो गूंगा हो यदि स्वस्थानी या उच्च का हो तो दोष नहीं करता (जा० पारि०)।

६—यदि षष्ठेश बुध हो तो जिह्वा नष्ट हो (शंभु०)।

७—चन्द्रमा वृष राशि में हो पाप ग्रह सब ऋक्ष सन्धि में हो तो गूंगा हो (जा० पारि०)।

(ऋक्ष सन्धि-कर्क, वृश्चिक, मीन के अन्त में)

८—पंचमेश या गुरु मित्र में हो तो गूंगा हो (जा० लं०)।

इसी प्रकार मित्र आदि जनों का उनके भाव से गूंगा होने का योग आदि का विचार करना जैसे—

दशमेश, गुरु या पंचमेश युक्त त्रिक में हो तो—पिता गूंगा।

तृतीयेश गुरु या पंचमेश युक्त त्रिक में हो तो—भाई गूंगा।

चतुर्थेश, गुरु या पंचमेश युक्त त्रिक में हो तो—माता गूंगी।
सप्तमेश, गुरु या पंचमेश युक्त त्रिक में हो तो—स्त्री गूंगी।

इसी प्रकार और भी लोगों का विचार करना। इसी प्रकार प्रत्येक योग से भी विचारना। उनके भाव को लग्न मान कर योग का विचार करना।

९—यदि द्वितीयेश गुरु के साथ ८ या १२ स्थान में हो तो गूंगा हो (स० चि)। यहाँ यह शंका होती है कि ८ स्थान में गुरु और द्वितीयेश होने से द्वितीय स्थान पर पूर्ण दृष्टि पड़ती है तो इसका वाणी पर कितना बुरा प्रभाव पड़ेगा विचारणीय है। गुरु यह वाणी का स्वामी है अष्टम स्थान में पड़ने से उसका प्रभाव कम हो जाता है।

१०—यदि उपरोक्त योग में चन्द्र पर शुभ ग्रह की दृष्टि हो तो बहुत दिनों में बालक बोलने लगेगा (जा० पारि०)।

जिह्वा रोग १—द्वितीयेश और लग्नेश बलहीन क्रूरांशक गत हो तो जिह्वा वायु पीड़ित हो।

२—द्वितीयेश निर्बल पाप दृष्ट हो तो जीभ अस्थिर अर्थात् चलायमान हो (स० चि०)।

सुन्दर नेत्र १—नेत्र २ और १२ भाव से विचारना। दूसरा भाव दाहिना नेत्र है। १२वाँ भाव बाँया नेत्र है। नेत्र का कारक सूर्य है।

२ - बारहवें भाव का स्वामी शुभ युक्त होकर शुभ नवांश या शुभ षशष्ठ्यं में हो और शुभ ग्रह से युक्त या दृष्ट हो तो नेत्र अच्छे होंगे (स० चि०)।

३—१-२ स्थान में बलवान् गुरु चन्द्र हो क्रूर ग्रहों की दृष्टि न हो तो नेत्र सुन्दर हों (ज्यो० शा०)।

४—द्वितीयेश शुभ ग्रह युक्त या दृष्ट हो तो नेत्र पूर्ण व बली होंगे (स० चि०)।

५—द्वितीयेश दुष्ट स्थान में नहीं हो और द्वितीय स्थान में शुक्र हो तो सुन्दर नेत्र हों (स० चि०)।

६—लग्नेश लग्न में हो तो सुन्दर नेत्र हो ज्ञानी मंत्री या राजा हो सम्पदा युक्त हो (जा० लं०)।

७—लग्नेश गुरु व शुक्र युक्त केन्द्र में हो।

८—लग्नेश उच्च में व मित्र क्षेत्री, शुभ ग्रह क्षेत्री होकर शुभ ग्रह से दृष्ट हो।

९—बली सूर्य दशम में हो तो नेत्र सुन्दर हो (जा० सं०)।

१०—धनेश शुभ ग्रहों से युक्त या दृष्ट हो या शुभांश में हो तो सुन्दर नेत्र हो (जा० पारि०)।

११—नेत्र स्थान में शुभ ग्रह हो द्वितीयेश शुभ ग्रह युक्त हो या कारक शुभ ग्रह युक्त हो लग्नेश से भी युक्त दृष्टि हो तो बड़ी दृष्टि वाला हो (स० चि०)।

१२—द्वितीयेश पर पाप ग्रह का प्रभाव न हो केन्द्र में हो और शुक्र (नेत्र स्वामी)

लाभ स्थान या केन्द्र में हो पाप ग्रहों की दृष्टि न हो तो नेत्र निरोग रहे नेत्र चौड़े हों (ज्यो० शा०)।

नेत्र दोष १—दूसरे या बारहवें चन्द्र हो तो नेत्रों में दोष हो (शंभु०)।

२—शुक्र पंचमेश और षष्टेश के साथ लग्न में हो तो राजा के कोप से नेत्र विकार हो (जा० पारि०)।

३—बलवान् होकर शनि मंगल सूर्य चन्द्र ये त्रिक और द्वितीय में हों तो बात प्रकोप से नेत्र रोगी हो (जा० सं०)।

४—लग्नेश बहुत पाप ग्रह युक्त हो और शनि से दृष्ट हो तो नेत्र रोग हो।

५—द्वितीयेश शनि मंगल से युक्त तथा गुलिक से भी युक्त हो तो नेत्र रोग हो।

६—द्वितीय स्थान में बहुत पापग्रह हों और शनि से दृष्ट हो तो नेत्र रोग हो।

७—द्वितीयेश जिसके अंशक में है यह पाप युक्त और पाप ग्रह की राशि में हो।

८—द्वितीयेश सूर्य या मंगल हो और गुलिक पर सूर्य की दृष्टि हो तो गर्मी से या पित्त कफ के प्रमादों से नेत्र रोग हो।

९—द्वितीयेश दृष्ट स्थान में शुभ युक्त हो तो बिना प्रमाद के नेत्र रोग हो (स० चि०)

इसी प्रकार इतर जनों के नेत्र का विचार उनके सम्बन्धी भावों से करना जैसे पंचम स्थान को लग्न मान कर पुत्र का, सप्तम स्थान से स्त्री का इत्यादि।

१०—धन भाव में पाप ग्रह हो द्वितीयेश पर शुभ दृष्टि हो तो निमीलित अक्षि हो (आधे खुले नेत्र) या नेत्र जिसकी आधी दृष्टि हो अर्थात् मिकरा हो।

११—द्वितीयेश मंगल या सूर्य युक्त या दृष्ट हो तो नेत्र के कोने लाल रंग के होंगे (स० चि०)।

११—ग्रहण कालीन सूर्य लग्न में हो और पाप ग्रह ९,५ भाव में हो तो नेत्र दूर करने वाला योग है (जा० सं०)।

१२—लग्नेश मंगल या बुध स्वक्षेत्री कहीं हो। उस मंगल को बुध या बुध को मंगल देखता हो तो नेत्र रोग हो (प्रा० यो०)।

१३—लग्नेश मंगल या बुध के स्थान में हो और मंगल या बुध की दृष्टि हो किसी भाव में हो तो नेत्र रोग हो (जा० लं०)।

१४—द्वितीयेश पाप ग्रह होकर दृष्ट स्थान में हो तो विना कोई प्रगट कारण के नेत्र रोग हो (स० चि०)।

नेत्र दोष १५—द्वितीयेश और नेत्र कारक पाप युक्त या दृष्ट हो तो दूषित दृष्टि हो (स० चि०)।

१६—लग्न से द्वादश भाव में मीन का सूर्य हो तो दक्षिण नेत्र में पीड़ा हो। यदि चन्द्र हो तो वाम नेत्र में पीड़ा हो।

१७—लग्न में सिंह का शनि व शुक्र हो या दोनों द्वादश भाव में हो तो नेत्र पीड़ा हो (जा० सं०)।

१८ - द्वितीयेश निर्बल होकर धन स्थान में हो, लग्न व धन स्थान का स्वामी ६,८,१२ भाव में हो तो नेत्र रोग हो परन्तु शुभ ग्रह के योग से थोड़ा सौख्य हो (प्रा० यो०)।

१९ सप्तम में क्षीण चन्द्र हो तो नेत्र विकार हो या दरिद्री हो (प्रा० यो०)।

२०—यदि मंगल बारहवें हों तो बांया नेत्र दूषित हो।

यदि शनि बारहवें हों तो दाहिना नेत्र दूषित हो (जा० लं०)।

२१ – नवम में चन्द्र और सूर्य हो तो नेत्र रोगी हो और धनी हो (जा० पारि०)।

२२—पाप ग्रह युक्त चन्द्र लग्न में हो तो नेत्र की हानि हो (जा० भ०)।

२३—द्वादश भाव शुभ ग्रह युक्त हो, द्वादशेश केन्द्र या त्रिकोण में हो इसमें यदि पाप ग्रह का योग हो तो नेत्र का विकार हो, द्रव्य की हानि, कृपण, कर्जदार, पर स्त्री से व्यसन, देश-देश फिरे (प्रा० यो०)।

२४—मेष लग्न में सूर्य हो तो नेत्र में रोग हो (जा० पारि०) या नेत्र में फुली या लाल नेत्र वाला हो (ज्यो० शा०)।

२५—कर्क लग्न में सूर्य हो तो नेत्र में फुली हो या छोटो आंख वाला हो (ज्यो० शा०)।

२६ - द्वितीय भाव में चन्द्र हो जिस पर शनि की दृष्टि हो तो दोष पूर्ण नेत्र हो, आंख में फुली हो (ज्यो० रह०)।

२७—द्वितीय भाव या द्वितीयेश मंगल, शनि या गुलिक से युक्त हो तो नेत्र रोग हो (स० चि०)।

२८—द्वितीयेश की राशि का नवांश स्वामी पाप ग्रह युक्त हो चतुर्थ भाव में दूसरा पाप ग्रह हो तो नेत्र रोग हो (स० चि०)।

२९—द्वितीयेश सूर्य मंगल या केतु के साथ हो और शनि व गुलिक की दृष्टि हो तो उष्णता से बहुत नेत्र पीड़ा हो या पीलिया या और कोई शारीरिक रोग हो (स० चि०)।

नेत्र रोग ३०--द्वितीय भाव या द्वितीयेश पाप युक्त या पाप दृष्ट हो, सूर्य निर्बल हो पाप योग दृष्टि हो तो पाप ग्रहों के बलानुसार नेत्र पीड़ा हो। शुभ ग्रह बली हो तो अच्छाई करेंगे (स० चि०)।

३१--लग्नेश व अष्टमेश षष्ठ में हो तो दाहिने नेत्र में रोग हो। अकेला शुक्र लग्नेश होकर ६ या ८ भाव में हो तो दाहिने नेत्र में रोग हो (जा० लं०)।

३२--लग्न व अष्टम स्थान में शुक्र हो क्रूर ग्रहों से दृष्ट हो तो आंसू गिरने के कारण नेत्र में पीड़ा हो (जा० लं०)।

३३--क्रूर ग्रह से युक्त या दृष्ट सूर्य लग्न से ५,९ या १२ भाव में हो तो नेत्रों से विकल हो (जा० लं०)।

३४--सूर्य या चन्द्र व्यय भाव में हो शनि ५ या ९ भाव में सूर्य राशि या नवांश में नीच का हो या शत्रु अंश में हो और सप्तम या अष्टम घर में हो तो नेत्र पीड़ा और दाँत का दर्द हो (सर्व चि०)।

३५--व्यय या धन भाव चन्द्र और सूर्य से युक्त या दृष्ट हो तो नेत्र रोग हो (फल०)।

३६--सूर्य चन्द्र बुध शनि बारहवें घर में या मीन राशि में हों और मध्य स्थान में मंगल हो तो हीन दृष्टि हो (मान०)।

३७--सिंह लग्न में सूर्य मंगल हो उस पर शुभ और अशुभ दोनों ग्रहों की दृष्टि हो तो कातर नेत्र (बुदबुदाकार) हों (शंभु०)।

३८--सूर्य चन्द्रमा वक्र ग्रह को राशि में या ६,१२ भाव में हो तो टेढ़ी दृष्टि हो (शंभु०)।

३९--कारक और भावेश दो शुभ ग्रह हों उन पर पाप ग्रहों की दृष्टि न हो शुभ दृष्टि न हो क्रूर दृष्टि हो (स० चि०]।

४०--सूर्य नवम पचम में हो पाप ग्रह से दृष्ट हो उसके नेत्र मंद रहें पुष्ट न हो अर्थात् मंद दृष्टि रहे (वृ० जा०)।

४१--धन व्यय भाव में शुक्र या मंगल हो वहाँ चन्द्र भी हो तो नेत्र दोष कारक हों (शंभु०)।

४२--क्षीण चन्द्र कर्क में हो उस पर शनि की दृष्टि हो या दशवें सातवें स्थित पाप ग्रह की दृष्टि हो शुक्र की दृष्टि न हो तो छोटे नेत्र वाला या अल्प दृष्टि वाला हो (जा० लं०)।

४३--सूर्य के आगे मंगल गया हो तो उसके नेत्र कांति रहित हों अर्थात् माड़े से छाये रहते हैं (जा० लं०)।

४४--षष्ठेश वक्री ग्रह के साथ हो तो नेत्र रोग हो (शंभु०)।

४५--लग्न में शनि से दृष्ट, मंगल व गुरु अथवा शुक्र बुध चन्द्र सहित हो तो उष्णता से या शोक या काम विकार हो या शस्त्र से नेत्र रोग हो (शंभु)।

४६--धन या व्यय स्थान में चन्द्र मंगल हो तो नेत्र दोष हो।

४७--व्यय भाव में शुक्र हो तो नेत्र पीड़ा हो (जा० सं०)।

रतौंध १--शुक्र चन्द्रमा युक्त द्वितीयेश लग्न में हो तो रात्र्यंध हो (जा० पारि०)।

यदि द्वितीयेश उच्च ग्रह और शुभ ग्रह से दृष्ट हो तो यह रोग न हो अर्थात् नेत्र अच्छे रहें (जा० पारि०)।

२--सिंह लग्न में सूर्य हो तो रतोंध का रोग हो (जा० पारि०)।

३--चन्द्र सहित शुक्र ६,८,१२ भाव में हो तो रात्रि में अंधा हो (जा० सं०)।

४--शुक्र चन्द्र और द्वितीयेश तीनों एकत्र हों तो निशांध हो (जा० पारि०)।

५--जन्म में सूर्य और बुध त्रिक स्थानों मे हो तो रात्र्यंध हो (शंभु०)।

६--हीन बली सूर्य वक्री ग्रह की राशि में हो। या मंगल में आक्रांत कर्क राशि में चन्द्र हो या धन के अंत्य नवांश में हो तो अंधा योग है सूर्य की दृष्टि हो तो रात्रि अंध, शनि की दृष्टि हो तो दिवा अंध होता है (शंभु०)।

जन्म से अंधा १—सूर्य और शुक्र दोनों युक्त होकर लग्नेश त्रिक में हों तो जन्म से अंधा हो।

इसी प्रकार इतर जनों का विचार करना जैसे

दशमेश सूर्य शुक्र युक्त दशम भाव से त्रिक में हो–पिता जन्मांध।

तृतीयेश सूर्य शुक्र युक्त तीसरे भाव से त्रिक में हो–भाई जन्मांध।

चतुर्थेश सूर्य शुक्र युक्त चतुर्थ भाव से त्रिक में हो–माता जन्मांध।

पंचमेश सूर्य शुक्र युक्त पाचवें भाव से त्रिक में हो–पुत्र जन्मांध।

सप्तमेश सूर्य शुक्र युक्त सातवें भाव से त्रिक में हा–स्त्री जन्मांध (जा० लं०)।

२ –एक और २ स्थान के स्वामी किसी स्थान में चन्द्र के साथ ६, ८, १२ भाव में हों या १,२,७ स्थान में चन्द्र सूर्य स्थित हों, शनि और मंगल से दृष्ट हों।

३—२ स्थान में शनि और ६ स्थान में लग्नेश हो और व्यय स्थान स्थित तीन ग्रहों से दृष्ट हो या इनके साथ स्थित हो (ज्यो० शा०)।

४ द्वितीयेश सूर्य शुक्र और लग्नेश युक्त हो तो जन्मांध हो तथा ६,८,१२ भाव में हा तो भी उपरोक्त फल (स० चि०)।

५—लग्नेश के साथ सूर्य हो और द्वितीयेश दुष्ट स्थान में हो तो जन्मांध हो (स० चि०)।

६—सिंह लग्न में जन्म हो उसमें शनि हो तो नेत्रहीन हो यदि शुक्र हो तो जन्मांध हो (मान०)।

७ –सूर्य शुक्र से युक्त लग्नेश हो तो जन्म से अंधा हो (जा० लं०)।

अंधा १–सिंह लग्न में सूर्य चन्द्र हो उन्हें शनि मंगल देखे तो अंधा हो (जा०पारि०)

२--सूर्य मंगल शनि चन्द्र २,६,८,१२ भाव में हों तो अपने बली ग्रह के धातु दोष से अंधा हो (शंभु०)।

३--सूर्य लग्न में, चन्द्र द्वादश भाव में शुभ दृष्टि रहित हो अंधा हो (जैमिनि)।

४--पंचम चतुर्थ में पाप ग्रह हो विशेषतः चन्द्रमा ८,१२ भाव में हो तो अंधा हो। इन पर पाप दृष्टि हो तो अंधा हो शुभ दृष्टि होने से दोष नहीं है (स० चि०)।

५—पाप ग्रह ४ या ५ घर में हो और चन्द्र ६,८,१२ भाव में हो तो अंधापन हो कोई शुभ दृष्टि न हो और पाप दृष्टि हो तो निश्चय अंधापन हो (स० चि०)।

६—लग्न में सूर्य राहु ग्रह न हो और ५,९ भाव में पाप ग्रह शनि मंगल हो तो अंधा हो (वृ० जा०)।

७—लग्न से चतुर्थ में शनि क्रूर ग्रहों से दृष्ट हो तो अंधा हो (जा० लं०)।

८—लग्न से दूसरे घर में सूर्य हो तो अंधा हो (मान०)।

९—सूर्य चन्द्रमा तीसरे भाव या केन्द्र में हो, मंगल केन्द्र में हो या पाप राशि में पाप ग्रह से दृष्ट हो। ६,८,१२ भाव में शुभ ग्रह, सूर्य दशम में हो तो अंधा हो (शंभु)।

१०—सूर्य मंगल व शनि ये ८,६,२; या १२ स्थान में क्रम से हो तो अंधा हो (बृ० जा०)।

११—सूर्य नवम पञ्चम स्थान में हो पाप ग्रह की दृष्टि हो (बृ० जा०)।

१२—लग्न में चन्द्र ग्रहण युक्त हो तो आंख का गढा नष्ट हो (जा० लं०)।

१३—सूर्य व चन्द्र बारहवें व छठे स्थान में हो तो नेत्र नष्ट हो (जा० लं०)।

१४—सूर्य और चन्द्र दोनों बारहवें भाव में दृष्टि रहित हों तो दोनों आंख से अंधा हो (जा० पारि०)।

१५—पाप ग्रह ६,८ भाव में हो तो अंधा हो। छठे भाव में पाप ग्रह बाई आँख और आठवें में हो तो दाहिनी आंख से अंधा हो (जा० पारि०)।

१६—मंगल द्वितीयेश होकर सूर्य, चन्द्रमा से ८वें भाव में हो और शनि ६ या १२ वें भाव में हो तो अंधा हो (जा० पारि०)।

१७—चन्द्र ६,८,१२ भाव में हो।

१८—चन्द्रमा छठे, सूर्य आठवें, शनि बारहवें, मंगल दूसरे भाव में हो तो निश्चय अंधा हो (जा० पारि०)।

१९—लग्नेश युक्त द्वितीयेश ६,८,१२ भाव में हो।

२०—१,२,७,९ और ५ के स्वामी ६,८,१२ भाव में हो और शुक्र लग्न से संबंध रखता हो तो नेत्रहीन हो (जा० पारि०)।

२१—१,२, ६, ८, १२ भाव में चन्द्र मंगल शनि हो तो शरीर में वात रोग हो और अंधा हो (जा० भ०)।

२२—लग्न में गुरु सप्तम शनि हो तो वात से पीड़ित हो अंत में अंधा हो (जा० भ०)।

२३—द्वितीय भाव में या द्वितीयेश पाप ग्रह दृष्ट युक्त हो तो नेत्र नष्ट होंगे (सु० चि०)।

ग्रहों के योग प्रभाव से भिन्न-भिन्न प्रकार से ग्रहों के गुण धर्म के अनुसार रोगादि से नेत्र नष्ट हों। जैसे मान लो दूसरे भाव में मंगल पाप युक्त या दृष्ट है तो अग्नि, पित्त गर्मी या अचानक घटना से या अस्त्र-शस्त्र द्वारा पीड़ित होकर नेत्र नष्ट हों यदि शनि हो तो वात रोग से पीड़ित होकर नेत्र नष्ट हो इत्यादि प्रकार से विचार लेना।

२३—धनेश या व्ययेश या शुक्र व लग्नेश-से युक्त होकर त्रिक में हो तो अंधा हो (जा० लं०)।

२४—द्वितीय भाव में शुक्र युक्त चन्द्र हो तो अंधा हो (जा० लं०)।

२५—सूर्य या चन्द्र मिल कर कर्क या सिंह में हो और मंगल और शनि की दृष्टि हो तो दृष्टि नाश हो (स० चि०)।

यदि शुभ अशुभ दोनों ग्रह की दृष्टि हो तो दूषित नेत्र हों। यदि केवल शुभ युक्त या दृष्ट हो तो कोई हानि नहीं होगी। परन्तु बाद में नेत्रों को हानि पहुँचेगी (स० चि०)

२६—व्ययेश पाप युक्त अशुभ षष्ठांश गत पाप ग्रह से सम्बन्धी हो तो नेत्र नाश हो (स० चि०)।

२७—लग्न से पञ्चम के पद में स्थित राहु पर गुरु की दृष्टि हो तो नेत्र नाश हो (जैमिनि)।

२८—लग्न में क्रूर राशि और लग्नेश क्रूर ग्रह की राशि में हो (जा० लं०)।

२९—सूर्य चन्द्र दोनों क्रूरग्रह के मध्य में हो जैसे लग्न में सूर्य या चन्द्र हो व्यय में मंगल, द्वितीय भाव में शनि हो ये अंशों में समीप हों जैसे सूर्य चन्द्र यदि १०-१२ अंश में हो तो शनि १५ अंश में मंगल ८ अंश में हों तब कहेंगे कि क्रूर ग्रहों के मध्य में है।

३०—सूर्य या चन्द्र से सातवें स्थान में मंगल पृष्ठोदय राशि में हो।

उपरोक्त तीनों योगों में कोई हो तों वह नेत्र से अंधा दुष्ट कर्म कर्ता, पराये घर में रहने वाला या पर स्त्री गामी और शरीर का पतला होता है।

इन तीनों योगों में चन्द्र बली हो तो अच्छे विचार वाला हो (जा० ले०)।

३१—तुला लग्न में सूर्य हो तो अंधत्व और दरिद्र हो (ज्यो० शा०)।

३२—लग्न में सिंह का शुक्र व शनि हो तो नेत्र हानि हो (जा० सं०)।

३३—दशम या छटे भाव के स्वामी लग्न में, शुक्र और धनेश से युक्त हो तो राजा के कोप से नेत्र उखाड़े जावें (स० चि०)।

३४—उपरोक्त योग में १० और ६ भाव के स्वामी नीचांशक से या पाप युक्त हो तो भी वही फल (स० चि०)।

३५—१० और ६ भाव के स्वामी जिन ग्रहों के नवांश में यदि दृष्ट स्थान में लग्नेश से युक्त हो तथा शुक्र और २,१२ भावेशों से युक्त होकर द्वादश स्थान में हो शुभ ग्रह की दृष्टि न हो तो नेत्र में प्रमाद हो (स० चि०)।

३६—लग्नेश, षष्ठेश की राशि के नवांश स्वामी के साथ हो दशमेश, दुष्ट स्थान में हो, द्वितीयेश १२ वें भाव में शुभ दृष्ट रहित हो तो नेत्र हानि हो (स० चि०)।

३७—यदि १०,६,२ भाव के स्वामी लग्न में हो या वे नीच नवांश में पाप युक्त हों तो राजा से उसकी आँख नष्ट हो (स० चि०)।

द्वितीयेश और दशमेश का योग अच्छा है परन्तु जब वे षष्ठेश के साथ रहते हैं तो नेत्र का भय होता है। यदि वे स्वामी पापयुक्त होकर नीच नवांश में हो तो भी नेत्र को भय होता है। अब आँख निकालने का दण्ड नहीं होता परन्तु किसी अधिकारी वर्ग के व्यौहार से नेत्र हानि हो सकती है।

३८—शत्रुक्षेत्री चन्द्र ३ पाप ग्रह युक्त हो शुभ दृष्टि हीन हो तो नेत्र नाश हो (जा० सं०)।

३९—नवमेश यदि शुभ ग्रह है तो जातक अदृष्टि हो (ज्यो० शा०)।

काना १—सूर्य चन्द्रमा में से एक छठे दूसरा व्यय स्थान में हो शुभ दृष्टि रहित हो एक आँख से काना हो उसकी स्त्री भी कानी हो (स० चि०)।

२—पंचम भाव में यदि अस्त का मंगल या शुक्र हो तो काना हो (जा० सं०)।

३—धन भाव में पाप युक्त शुक्र हो तो काना हो या भेद दृष्टि हो (शंभु०)।

४—सूर्य लग्न या सप्तम भाव में हो शनि से दृष्ट हो या शनि सूर्य के साथ हो तो दाहिनी आँख नष्ट हो।

५—यदि लग्नस्थ या सप्तमस्थ सूर्य, राहु और मंगल से युक्त हो तो बाईं आँख नष्ट हो।

६—सूर्य और चन्द्रमा बारहवें हों, ६,८,१२ भाव में पाप ग्रह हों तो षष्ट स्थायी ग्रह वाम नेत्र का नाश करे और अष्टमस्थ ग्रह दक्षिण नेत्र का नाश करे (जा० पारि०)।

७—सूर्य व्यय में हो तो दाहिनी आँख से, चन्द्र व्यय में हो तो बाईं आँख से काना हो (जा० पारि०)।

८—व्यय में मंगल हो तो बाम नेत्र से, शनि हो तो दक्षिण नेत्र से काना हो (स० चि०)।

९—जन्म लग्न मीन राशि के होरा में सूर्य हो तो दाहिने नेत्र से काना हो चन्द्रमा मीन राशि के होरा में हो तो बामनेत्र से काना (कान०)।

१०—चन्द्रमा शुक्र सहित व्यय भाव में हो या सप्तम में हो तो वाम नेत्र से हीन हो (स० चि०)।

११—लग्न में मंगल या चंद्र हो गुरु या शुक्र से दृष्ट हो तो काना हो (जा. लं.)

१२—लग्न से सप्तम स्थान स्थित मंगल को सिंह राशि में स्थित चन्द्र देखे या कर्क राशि में स्थित सूर्य देखे और नवमेश १,८,५,१० इन राशियों में कहीं हो तो काना हो (जा० लं०)।

१३—व्यय में मंगल हो तो वाम नेत्र और वाम कर्ण में रोग हो, खोटे कर्म से व्रणादि हो, कमर में घाव तथा स्त्री की अधिक अंगता हो (जा० सं०)।

नेत्र में चिन्ह १—षष्ठेश या चंद्र क्रूर ग्रह युक्त होकर अदृश्यार्द्ध में हो तो नेत्र में कोई विशेष चिन्ह हो (जा० लं०)।

२—सूर्य के आगे बुध गया हो तो नेत्र में चिन्ह हो (जा० लं०)।

३—चन्द्रमा और मंगल दोनों एक ही नवांश में हों तो नेत्र में कोई छोटा सा चिन्ह हो (जा० लं०)।

ये योग कारक ग्रहों के बल के अनुसार भी विचारना। सातवें स्थान के भोग्यांश से लेकर लग्न के भुक्तांश तक ६ भाव को अदृश्यार्द्ध कहते हैं।

वधिर १--सप्तम में शनि मंगल, लग्न में राहु, बुध हो तो दोनों कान से बहिरा हो, अतिसार की पीड़ा, हाथ पैर में पसीना आना या शीत रोग हो (शंभु०)।

२--पाप ग्रह ९,११,३ और ५ भाव में हो शुभ ग्रह की दृष्टि न हो तो उनमें जो बलवान् हो उसके धातु के विचार से बहिरा हो (वृ० जा०)।

३--शनि सूर्य व चन्द्र ये ३,५,९,११ भाव में हों शुभ ग्रह युत दृष्ट न हो तो बहिरा हो या कर्ण रोगी हो (जा० भ०)।

४--षष्ठेश शुक्र लग्न में हो चन्द्रमा एवं पाप ग्रह की उस पर दृष्टि हो तो दाहिना कान विरूप या वधिर हो [शंभु०]।

५--चन्द्रमा और पाप ग्रह ऋक्ष सन्धि में हो शुभ ग्रह की दृष्टि न हो तो जड़ (वधिर) हो (जा० पा०)।

६--द्वितीय किंवा द्वादश भाव में शुक्र या मंगल हो या १,२,४ लग्न में चन्द्र हो तो कर्ण रोग, वधिरत्व, पंगुपना आदि विचारना।

७--सूर्य मंगल चन्द्र में से कोई ४,६,८,१२ स्थानों में से किसी स्थान में हो और शत्रु ग्रहों से दृष्ट हो तो वधिर हो (ज्यो० शा०)।

८--पाप ग्रह ३,५,११ भाव में हो शुभ ग्रह की दृष्टि न हो तो कर्ण नाश हो (जा० सं०)।

९--मंगल शुक्र २ व १२ भाव में हो तो कर्ण का हरण हो (जा० सं०)।

१०--बुध छठा हो शुक्र दशन हो रात्रि का जन्म हो तो बांये कान से बड़े ऊँचे स्वर से सुनेगा (शंभु०)।

कर्ण रोग १--२ या १२ भाव में शुक्र या मंगल हो तो कर्ण पीड़ा हो या आँख के गढे में विकार हो (शंभु०)।

२--तीसरे घर में मंगल हो प्रेत पुरीशांश में हो तो कान का रोग हो (षष्ठ्यंश का १२ वां अंश प्रेत पुरोशांश है वह बुरा है (स० चि०)।

३--तृतीयेश क्रूर आदि षष्ठ्यंश में हो तो कर्ण रोग हो (जा० पारि०)।

४--तीसरा और ग्यारहवां भाव गुरु शनि और मंगल से युक्त या दृष्ट हो तो कर्ण पीड़ा हो (फल)।

५--तृतीय भाव में मंगल से युक्त गुलिक हो (जा० पारि०)।

६--तृतीय भाव पाप युक्त या दृष्ट हो तो कर्ण रोग हो (जा० पारि०)।

७--तृतीयेश जिसकी राशि में हो वह भी जिसके अंश में हो वह केन्द्र में पाप युक्त या दृष्ट हो तो कान का रोग हो।

८--मंगल तीसरे नवांश में हो तो कर्ण रोग हो (स० चि०)।

९--तृतीयेश और मंगल दोनों लग्न में हों तो कर्ण रोग हो (जा० पारि०)।

१०--द्वितीयेश लग्नेश के साथ हो और गुलिक मांदि आदि भी साथ हों तो कान का रोग हो (स० चि०)।

११—तृतीय भाव का स्वामी जहाँ हो उस भाव का स्वामी यदि अष्टम में हो तो कर्ण रोग हो। जैसे मिथुन लग्न में तृतीयेश सूर्य यदि दशम भाव में मीन का है जिसका स्वामी गुरु यदि अष्टम में हो तो कर्ण पीड़ा हो (स० चि०)।

कर्ण हीन—नवम भाव में नीच का शुक्र राहु युक्त हो तो कान से रहित हो (स० चि०)।

कान कटे १—लग्न में द्वितीयेश शनि या मंगल युक्त हो तो कान कटे।

२—षष्ठेश और धनेश लग्न में हो, शनि मंगल कर्म भाव में हो तो कान फटे या कटे (स० चि०)।

इतरजनों का विचार—ऐसा ही विचार पितृ आदि का उनके भाव को लग्न मान कर करना। भावेश और उन-उन भाव के कारक ग्रहों के साथ युक्त होने से पितृ आदि का पूर्ण विच्छेद हुआ होगा ऐसा विचारना।

हीनांग १—सूर्य से सप्तम में मंगल, दशम में चन्द्र और द्वितीय में शनि हो तो वह हीन शरीर का होगा (जा० सं०)।

२—५,९ भाव में पाप दृष्ट मंगल हो तो अंगहीन हो (शंभु०)।

३—शनि दूसरे में, बुध सप्तम, चन्द्र दशम, में हो तो उसके अंग कुरूप हों। यदि इस योग में, योग पैदा करने वाले ग्रह, ग्रह-युद्ध में हरा दिये जावें (पराजित हों) नीच शत्रु, या नीचांशक में हो तो शारीरिक अवयव की हानि निश्चयपूर्वक हो (स० चि०)।

४—शनि चतुर्थ, मंगल सप्तम, चंद्र दशम हो तो कोई अंग की हानि या अंग में कुरूपता हो (स० चि०)।

५—शनि सप्तम में हो या राहु मंगल के साथ निर्बल होकर ९ भाव में हो तो अंगहीन हो (जा० पा०)।

६—लग्न से चन्द्रमा १० में, मंगल सप्तम, सूर्य दूसरे में हो तो अंगहीन हो (जा० पारि०)।

७—द्वादश भाव में चन्द्र हो तो अंगहीन हो लोगों का घात करने वाला हो (प्रा० यो०)।

हड्डी टूटे १—लग्नेश सहित द्वितीयेश दुष्ट स्थान में हो तो हड्डी टूटे (स० चि०)।

२—राहु नवम में हो तो कोई हड्डी टूटे, नख कुरूप हो (शंभु०)।

३—तीसरे भाव में शनि युक्त मंगल हो तो अस्थिभंग दुष्ट करना और विकार हो। तीसरे भाव में शुभ राशि हो तो उपरोक्त फल न हो।

लंगड़ा १—जन्म लग्न में मीन राशि पर चन्द्र हो उस पर मंगल की दृष्टि हो तो लंगड़ा हो (जा० पारि०)।

२—शनि और चन्द्र दोनों १,४,८,१०,१२ राशियों में से किसी में हो क्रूर ग्रह युक्त होकर लग्न से नवम स्थान में हो तो लंगड़ा हो।

३— लग्न से ८ और ९ इन दोनों स्थान के स्वामी पाप युक्त होकर क्रूर ग्रह से चतुर्थ स्थान में हों तो पंगु हो।

४ — लग्न से छठे स्थान में शनि मंगल से युक्त राहु हो।

५—या मंगल शनि युक्त सूर्य में छठे स्थान में हो तो पंगु हो।

६—लग्न से बारहवें स्थान में शनि व षष्ठेश क्रूर ग्रहों से दृष्ट हो तो पंगु हो (जा० लं०)।

७—कर्क का चन्द्र शनि युक्त हो शुभ ग्रह की दृष्टि न हो तो पंगु हो (जा० सं०)।

पैर कटे १—दशम में राहु शनि बुध हो तो पैर कटे (जा० लं०)।

२—मंगल लग्न में हो या मंगल के नवांश में लग्न हो और क्षीण चन्द्रमा के साथ हो तो पद छेदन हो (स० चि०)।

३ — सूर्य यदि शुक्र गुरु से दृष्ट हो, शनि मंगल से या राहु से युक्त हो तो पैर कटे (स० चि०)।

पैर का रोग १—शनि लग्न से ६ या ८ भाव में हो तो पैर में रोग हो (जा०लं०)

२—षष्ठ स्थान में शनि शुक्र दोनों हों तो पाँव में रोग हो (जा० लं०)।

३—व्यय भाव और धन भाव से भी नेत्रों सदृश पैर का विचार करना व्यय भाव से बायां, धन भाव से दाहिना पैर विचारना। जब व्ययेश बुरा हो बुरा योग दृष्टि हो नीच, शत्रु गृही, क्रूर अंश या क्रूर वर्ग में हो बांये पैर में रोग हो। इसी प्रकार धन भाव में हो तो बांये पैर में रोग हो।

हाथ कटे १—शनि गुरु सहित नवम या तृतीय स्थान में हो, सूर्य अष्टम या द्वादश स्थान में हो तो हाथ कटे।

२—चन्द्र ७ या ८ घर में हो मंगल या गुरु से युक्त हो।

३—नवम में शनि, तीसरे में गुरु हो।

४—शनि अष्टम, और गुरु द्वादश में हो।

५—दशम भाव में राहु शनि और बुध हो।

६—षष्ठेश जब शुक्र और सूर्य युक्त हो या शनि राहु युक्त क्रूर षष्ठवंश में हो (स० चि०)।

७—शनि सूर्य की राशि में और मंगल गुरु की राशि में हो शुभ ग्रह से युक्त न हो तो भुजदंड का छेदन हो (जा० सं०)।

८—शनि, मंगल या सूर्य की राशि में पाप युक्त हो तो भुजदण्ड का खण्ड हो (जा० सं०)।

हस्त पीड़ा १—लग्न से ६ या ८ घर में सूर्य चन्द्र शनि तीनों हो तो हाथ में पीड़ा हो (जा० लं०)।

लूला—छठे स्थान में सूर्य मंगल शनि हो।

कुनखी हाथ पर चोट—तीसरे घर में राहु शनि युक्त हो तो कुनखी हो या दाहिने हाथ पर लकड़ी की चोट या वायु से पीड़ा हो (शंभु०)।

हाथ पैर कटे १—कृष्ण पक्ष का चन्द्रमा सप्तम में हो तो हाथ कटाये (स० चि०)।

२—शनि युक्त शुक्र छठे भाव में हो और शत्रु ग्रह की दृष्टि हो तो एक भुजा और एक पाँव का खण्डन हो (जा० सं०)।

३—बुध मंगल बलवान् हो छटे भाव में हो तो वह चोर हो और इस काम में उसके हाथ पैर काटे जावें (शंभु)।

४—कर्क में शनि, मकर में मंगल हो वह चोरी के प्रसंग में दण्ड से हाथ पैर काटे जावें (शंभु०)।

५—राहु सूर्य मंगल चन्द्र अष्टम में हो तो सब हाथ पाँव से खंडित हो (जा०सं०)।

६—लग्न या छठे घर में बुध और मंगल हो तो चोर हो, हाथ पैर नष्ट हो (मान०)।

हाथ पैर दुगने—बुध लग्न से त्रिकोण में हो और सब ग्रह जहाँ कहीं निर्बल हों तो २ मुँह ४ पैर ४ हाथ वाला हो (जा० पारि०)।

विना हाथ पैर सिर १—पंचम नवम और लग्न का द्रेष्काण पाप ग्रह युक्त हो तो जातक क्रम से विना हाथ, पैर, सिर का होवे (जा० पारि०)।

विना सिर—लग्न के द्रेष्काण में मंगल हो, शनि सूर्य और चन्द्र उसे देखते हों तो विना सिर वाला हो (जा० पारि०)।

हस्तहीन—यही योग पंचम में हो तो हस्तहीन हो (जा० पारि०)।

सिर कटे १—क्रूर षष्ठवंश में शनि लग्न में हो सप्तम भाव राहु से युक्त हो दशम में शुक्र हो ऐसा योग हो तो सिर कटे।

२—क्षीण चन्द्र हो, राहु से दृष्ट शनि हो तो सिर कटे (स० चि०)

३—राहु शनि की राशि में हो और चन्द्रमा सूर्य की राशि में हो तो फरसा से सिर का घात हो (जा० सं०)।

४—राहु कर्क राशि पर चन्द्रमा सिंह राशि पर हो तो सिर कटे (जा० सं०)।

५—अष्टम में सूर्य चंद्र दोनों हों तो सिर कटे या अपने अङ्ग को काटने वाला हो (जा० सं०)।

पेट फटे—कृष्ण पक्ष का चंद्र राहु बुध से युक्त हो सूर्य से भी अस्त हो (स० चि०)।

कुक्षि छेदन—शनि लग्न में, शुभ दृष्टि रहित, राहु सूर्य से युक्त क्षीण चंद्रमा होवे तो कुक्षि फटे (स० चि०)।

जंघा कृश १—दशम में पाप ग्रह हो तो जंघा या घुटना कृश अर्थात् कमजोर हों (स० चि०)।

अँगुली जुड़ी १—लग्न में पाप युक्त चन्द्र हो तो पैर की अँगुलीयाँ वाम पद का कोई भाग जुड़ा हो या बाँये हाथ में ऐसा हो (शंभु०)।

अंग विकल १—सूर्य से दूसरे स्थान में शनि, दशम में चन्द्र, सप्तम मंगल हो तो अंग विकल हो (स० चि०)।

२—दशम में चन्द्रमा, सप्तम में वुध, दूसरे में शनि हो तो शरीर विकलांग (अंग कला रहित) हो (स० चि०)।

३—केतु या राहु लग्न में हो लग्नेश दुष्ट स्थान में हो तो उसकी दशा में जब उसके ६ स्थान के स्वामी की अन्तर्दशा हो तो अंग में विकलता हो (जा० पारि०)।

४—पाप ग्रह शुभ ग्रह के नवांश में होकर षष्ठ भाव में हो और पाप ग्रह से दृष्ट हो तो उसकी मृत्यु हो या उसे विकल शरीर वाला करे (जा० सं०)।

५—व्ययेश बली होकर क्रूर या नीच अंश में हो तो शरीर में विकलता या कुरूपता हो (स० चि०)।

६—व्यय में बहुत पाप ग्रह होवें, व्ययेश शनि, राहु या मांदि से युक्त हो तो शरीर में विकलता हो (स० चि०)।

७—गुरु शनि के साथ हो, अर्द्ध चंद्र दशम में हों, सप्तम में मंगल हो तो विकल हो (जा० पारि०)।

८—केन्द्र में क्रूर ग्रह या सूर्य चंद्र हों।

कुब्ज १—चन्द्रमा पहिले या पिछले नवांश में तीसरे भाव में हो, शनि चौथा हो, लग्नेश शत्रु गृही हो, मंगल क्षीण चन्द्रमा के साथ हो तो कुब्ज (कुबड़ा) हो (शंभु०)।

२—चन्द्रमा अपनी राशि का होकर लग्न में हो उस पर शनि और मंगल की दृष्टि हो तो कुबड़ा हो (जा० पारि०)।

वामन १—चन्द्रमा राशि के पहिले या पिछले नवांश में हो शनि चतुर्थ दृष्टि से देखे, शुभ यहों की दृष्टि न हो और लग्नेश अल्पराशि में हो तो उसका वामन (छोटा) शरीर हो (शंभु०)।

२—पृष्ठोदय राशियों में स्थित चन्द्र को लग्न से चतुर्थ में स्थित शनि देखता हो और लग्नेश मेष राशि में हो तो शरीर वामन हो (पृष्ठोदय राशि–मेष वृष कर्क, धन, मकर) (जा० लं०)।

३—मकर का अन्त्य का (९ रा–२७-० से ३०-०) लग्न हो उसे शनि चन्द्र और सूर्य देखते हों तो वामन हो (जा० पारि०)।

ऊँचा शरीर १—मंगल वुध ये दोनों परस्पर सातवीं दृष्टि से देखते हों अर्थात् मंगल को वुध, वुध को मंगल सप्तम दृष्टि से देखता हो तो लम्बी देह वाला हो (जा० लं०)।

पतला शरीर १—क्रूर ग्रह केन्द्र में हो तो विकट अर्थात् पतले शरीर का हो।

२—एक ही राशि में सूर्य चन्द्र केन्द्र में हों तो पतले शरीर का हो।

३—लग्न में शुक्र हो, शनि से दृष्ट हो तो कटि के नीचे का भाग पतला हो।

४—चतुर्थ में शुक्र हो और गुरु युक्त होकर शनि या मंगल या वुध कहीं हो तो कटि के नीचे का अंश व वाहु व पैर पतले हों (जा० लं०)।

दुबला १—सूर्य चन्द्रमा एक दूसरे के घर या नवांश में हों तो शरीर में दुबलापन हो (स० चि०)।

२—जन्म राशि का स्वामी, लग्नेश के साथ लग्न से त्रिक स्थान में हो तो दुर्बल हो (जा० लं०)।

३—दूसरे में सूर्य शनि हो, दशम चन्द्र, सप्तम मंगल हो तो वह हीन देह का हो (जा० भ०)

४—मेष का चन्द्र शनि युक्त हो बारहवां सूर्य हो लग्न में वक्री ग्रह न हो, मंगल केन्द्र में न हो तो शरीर कृश हो (शंभु०)।

५—लग्नेश गुरु हो और अष्टम में शनि हो तो बहुत दुबला पतला हो जीवन कष्ट में बीते।

६—शनि राशि स्थान में हो तो दुबला हो।

देह में दुर्गन्ध १—शुक्र शनि की राशि में हो तो देह से दुर्गन्ध आवे।

२—षष्ठेश मिथुन कन्या या मकर राशि में हो तो देह में दुर्गन्ध हो।

३—केन्द्र में बुध युक्त शुक्र मिथुन या कन्या राशि में हो।

४—शुक्र व शनि दोनों अपने त्रिंशांश में हों या हद्दा में हों तो देह से दुर्गन्ध आवे।

५—मेष लग्न में चन्द्र हो तो मुख से दुर्गन्ध आवे। ग्रहों की दीप्तादि अवस्था का भी विचार कर फल कहना (जा० लं०)।

६—शुक्र पाप राशि पाप हद्दा में या चन्द्र क्षेत्र में हो चन्द्रमा मेष का हो षष्ठेश बुध लग्न में हो तो उसके मुख से दुर्गन्ध आवे (शंभु०)।

भय विचार अरिष्ट

भय विचार—अष्टम घर भय का द्योतक है और लग्न शारीरिक बनावट का आधार है, षष्ठ घर कर्ज, रोग और शत्रु का है। इस कारण सब भय इन घरों से और इनके स्वामियों से प्रगट होते हैं।

अनेक भय—लग्न में क्रूर ग्रह हो लग्नेश बल रहित होकर उसके पीछे कहीं हो तो अनेक भयों से युक्त हो। देह या मन की व्यथा से युक्त हो [जा० लं०]।

विष भय १—यदि दूसरा भाव पाप ग्रह युक्त या दृष्ट हो या दूसरा भाव क्रूरांश में हो या उसका स्वामी पाप युक्त या पाप दृष्ट हो तो विषैली औषधियों से धोखा दिया जायगा [स० चि०]।

२—तीसरे भाव में कोई ग्रह नीच, शत्रु गृही, अस्तंगत, पाप दृष्ट हो तो विष प्रयोग से या विष भक्षण से विष का प्रभाव हो इसके अभाव में धन का नाश हो [जा. पारि.]

३—राहु से युक्त लग्नेश हो तो निश्चय ठगैतो से विष का भय हो [जा० पारि०]।

सर्व भय १—राहु सर्प बताता है। जिस राशि में राहु है उसके स्वामी के सहित तृतीयेश लग्न में राहु युक्त हो तो सर्प भय हो [स० चि०]।

२—द्वितीयेश जहाँ हो उसका स्वामी लग्न में राहु युक्त हो तो सर्प का भय हो [स० चि०]।

३—तृतीय स्थान में राहु गुलिक से युक्त या दृष्ट हो तो सर्प का भय हो [स० चि.]

४—तीसरे भाव में शुक्र हो राहु से दृष्ट हो उसमें यदि शनि की भी दृष्टि हो तो सहोदर भगिनी दुर्विष से मरे और सर्प का भी भय हो [जा० सं०]।

५—तीसरे भाव में शुक्र हो शनि से दृष्ट हो तो सर्प भय हो [शंभु०]।

इन योगों में बलवान् शुभ ग्रह युक्त या दृष्ट हो तो काटने से अच्छा हो जायगा।

६—अष्टम में चन्द्र और मंगल शत्रु गृही हो तो सर्प भय।

७—लग्नेश षष्ठेश राहु या केतु युक्त हो तो सर्प की पीड़ा, चोटादि भय हो [जा० पारि०]।

श्वान भय १—धन स्थान में पाप युक्त या पाप दृष्ट शनि हो तो कुत्ता काटने का भय हो [स० चि०]।

२—द्वितीयेश शनि युक्त या दृष्ट हो तो कुत्ता काटने का भय हो [स० चि०]।

३—शनि मंगल युक्त हो तो कुत्ते से भय हो [स० चि०]

४—षष्ठेश मंगल युक्त हो तो कुते से भय [स० चि०]।

५—लाभ में शनि, राहु, बुध हो तो कुत्ते के काटने की व्यथा हो [शंभु०]।

६—लग्नेश और षष्ठेश दोनों ६ भाव में हों तो १० और १९ वर्ष में कुत्ते का भय हो [वृ० पा०]।

कीट भय १—चन्द्रमा त्रिकोण में सूर्य युक्त हो तो विषैले कीड़े के काटने का भय हो [स० चि०]।

हाथी भय १—षष्ठेश गुरु से युक्त हो तो हाथी का भय हो।

२—शनि गुरु युक्त हो तो हाथी का भय हो [स० चि०]।

चौपाया भय १—तृतीयेश युक्त गुरु लग्न में हो तो चौपाया (पशु) से भय हो।

२—शनि षष्ठेश हो और राहु या केतु युक्त हो तो पशु से भय हो [स० चि०]।

३—तृतीयेश और गुरु लग्न में राहु से युक्त हों या राहु जिस राशि में हो उसके स्वामी से युक्त हों तो गाय बैल आदि पशु से भय हो [जा० पारि०]।

शृंगी पशु भय १—षष्ठेश शनि सूर्य युक्त हो तो सींग वाले पशु से भय हो [स. चि.]

अश्व भय १—षष्ठेश चन्द्र से युक्त हो तो घोड़ा से भय हो [स० चि०]।

मृग से भय १—षष्ठेश, शनि राहु या केतु युक्त हो तो मृग से भय हो [स० चि०]।

२—अष्टमेश षष्ट में और द्वादशेश लग्न में हो और चन्द्र षष्ठेश के साथ हो तो ८ वर्ष में मृग से भय हो [वृ० पा०]।

वाहन भय १—अष्टमेश लग्नेश चतुर्थेश से युक्त हो तो वाहन से मृत्यु हो (स. चि.)।

२—मंगल युक्त चन्द्र केन्द्र या अष्टम में हो या क्षीण चन्द्र चौथे हो और अष्टम भाव में भी कोई ग्रह हो तो वाहन से भय हो [स० चि०]।

वृक्ष भय—चन्द्रमा सप्तम में हो और तीसरे में मंगल हो तो १८ वर्ष में वृक्ष से गिरे [जा० सं०]।

पक्षी से भय व अग्नि भय १—६-८ भाव में राहु हो उससे ८ वें शनि हो तो १-२ वर्ष में अग्नि से भय हो तथा तीसरे वर्ष में पक्षी से भय हो [वृ० पा०]।

विचार—इन सब योगों में योगकर्ता ग्रह अपने उच्च का या स्वगृही न हो तब उक्त फल होगा। ग्रह में उच्चादि अच्छी स्थिति होनेपर एवं शुभ ग्रह से सम्बन्ध होनेपर उनके फल में ग्रह बल के अनुसार कमी हो जायगी।

जल में डूबे १—चतुर्थेश जिसकी राशि में है वह चतुर्थेश से युक्त या दृष्ट हो तो कुआं नदी आदि में गिरे।

२ - निर्बल लग्नेश चतुर्थ में हो, नीच के सूर्य से या पाप ग्रह से युक्त तथा जलचराधिप ग्रह से युक्त हो चतुर्थेश बलहीन हो तो जल में डूबे (स० चि०)।

३ चतुर्थ में कोई नीच का ग्रह पाप युक्त हो, छटे भाव में पाप युक्त नीच का ग्रह हो और ये जल राशि में हो चतुर्थेश बल हीन हो तो तालाब कुआं आदि जलाशय में गिरे।

४ - निर्बल लग्नेश चतुर्थ में हो या वह पाप युक्त होकर अपने नीच में हो और सूर्य युक्त हो बलहीन चतुर्थेश जल राशि में हो तो जल में डूबे।

५ - सप्तमेश लग्नेश युक्त चतुर्थ में हो और दशमेश से दृष्ट हो तो कुआं तालाब नदी आदि में गिरे।

६—चतुर्थेश का नवांश स्वामी सप्तमेश या चतुर्थेश युक्त या दृष्ट हो तो भी उपरोक्त फल हो (स० चि०)।

७—कन्या राशि में सूर्य चन्द्र दोनों हों और पाप ग्रह से दृष्ट हों तो जल में डूबने से मरण हो (जा० सं०)।

८—कर्क पर शनि और मकर पर चंद्र हो तो उपरोक्त फल (जा० सं०)।

९—चतुरस्थ ग्रह नीच राशि में या अस्त हो तो कूप तालाव आदि में गिरे (जा. पा.)

१०—चतुर्थेश नीच का, अस्त, चतुर्थ भाव में शत्रुगृही जल राशि का हो चतुर्थेश हीन बल हो तो कुआं के किनारे जल समूह में गिरे (स० चि०)।

११ - तृतीयेश गुरु युक्त लग्न में हो और जल राशि का लग्न हो तो जल से भय हो [स० चि०]।

१२ - धन भाव में चन्द्र हो तो जल से भय हो [शंभु०]।

१३—लग्नेश और षष्ठेश चन्द्र के साथ हो तो जल से भय हो [स० चि०]।

१४—व्यय में चन्द्रमा से युक्त शनि व राहु या केतु हो तो जल से पीड़ा हो [जा० सं०]।

१५— शनि मंगल राहु से युक्त हो या शनि चतुर्थ भाव में हो तो जल से भय हो [स० चि०]।

१६– लग्न में चन्द्र पाप राशि का पाप ग्रह युक्त या दृष्ट हो तो जल से भय हो [शंभु]।

१७--जलचर लग्न हो तो जल में डूबने का भय हो [जा० पारि०]।

१८--चतुर्थ में शनि राहु हो तो बाँध व जल से व ऊपर से गिरने से व अपने शरीर से मृत्यु [जा० सं०]।

१९--यदि शनि अष्टम में क्षीण चन्द्र युक्त हो तो पिशाच पीड़ा हो और पानी में बहने का भय हो।

२०--६ या ८ भाव में सूर्य हो और उससे १२वें चन्द्र हो तो ५ और ९ वर्ष में जल भय हो [बृ० पा०]।

अग्नि भय या विष आदि भय १--लाभ में मंगल सूर्य हो तो वह अग्नि विष या अस्त्र चोट से युक्त या पीड़ित हो। [शंभु०]।

२--मंगल नवम हो तो अग्नि व विष से पीड़ित हो [शंभु०]।

३--व्यय में सूर्य व मंगल हो तो अग्नि पीड़ा हो।

४—गुरु षष्ठ भाव में, शनि अष्टम हो, सूर्य कर्क में हो जिस पर मंगल की दृष्टि हो तो अग्नि भय हो [जा० सं०]।

५—लग्न में पाप ग्रह पाप राशि का पाप ग्रह से दृष्ट हो तो अग्नि से दग्ध हो [शंभु०]

६—लग्न द्रेष्काण के विभाग में सिर स्थान में राहु मंगल या शनि होवे तो सिर स्थान में अग्नि, शस्त्र व काष्ट से भय हो [शंभु०]।

७--१,७,८,२ भाव में सूर्य से युक्त द्वितीयेश हो मंगल से दृष्ट हो या पापग्रह मंगल उपरोक्त राशि में होकर सूर्य से दृष्ट हो तो विष्फोट (व्रण) या अग्नि का भय हो [स० चि०]।

८--तीसरे भाव में सूर्य या मंगल हो तो हड्डी टूटे, विष का भय, अग्नि दाह आदि का भय हो।

यदि शुभ यह की दृष्टि हो उस स्थान के चर्म में भिन्नता कर देता है (शंभु०)।

९--पञ्चम मंगल हो तो अग्नि व शस्त्र की पीड़ा हो संतान बराबर मरती रहे, मनुष्य दुःखित रहे [शंभु०]।

१०—नवमेश षष्ठ में हो, षष्ठेश से दृष्ट हो, और षष्ठेश के साथ शनि व मंगल हो तो चोर व अग्नि से पीड़ित रहे (स० चि०)।

११--१ और ६ के स्वामी राहु या केन्द्र युक्त हो तो सिर दर्द भय, सिर में चक्कर आने की शिकायत या चोर अग्नि या दांत रोग का भय हो [स० चि०]।

१२—लग्नेश शनि से युक्त या दृष्ट हो तो अग्नि शस्त्र या गिरने से सिर में व्रण हो (स० चि०)।

पत्थर की चोट शस्त्र आदि से पीड़ित १--नवम में सूर्य चन्द्र हो तो काष्ट से पत्थर से तथा शस्त्र से पीड़ा हो [शंभु०)।

२—चतुर्थेश सूर्य और शनि युक्त हो मंगल से दृष्ट हो, शुभ दृष्ट न हो तो पत्थर से चोट लगने का योग है [स० चि०]।

३—लग्नेश मंगल लग्न में पाप युक्त या दृष्ट हो तो पत्थर की चोट या खंड आदि से सिर में व्रण हो (स० चि०)।

४—व्यय भाव बुध से युक्त हो तो शत्रु से व पत्थर काष्ट, लोह, शृंग वाले जीव या पवन आदि से बांधा हो [जा० सं०]।

चोर ठग या राज भय १—लग्नेश शनि से युक्त या दृष्ट हो तो निश्चय ठग चोर व राजा से भय हो।

२ - लग्न में राहु शनि मंगल युक्त हो।

३— लग्नेश अष्टम में राहु या केतु युक्त हो।

४— लग्न में राहु त्रिकोण में गुलिक और अष्टम में मंगल केतु युक्त हो।

५—लग्नेश जिस राशि के जिस अंश में हो उसका स्वामी यदि राहु केतु मंगल शनि युक्त हो या इसमें वृहज्जीव हो या अष्टमेश स्थित राश्यंशेश राहु युक्त हो तो ठग चोर या राजा से भय हो।

(वृहज्जीव-शनि मंगल युत राहु को कहते हैं) [स० चि०]।

६—द्वितीयेश के साथ पाप युक्त सूर्य हो तो राजा के कोप का भय हो [स०चि०]।

७—लग्नेश पाप युक्त हो लग्न में राहु हो तो ठग चोरों से भय हो।

८—लग्न में पाप ग्रह गुलिक त्रिकोण में हो या लग्न व लग्नेश गुलिक युक्त हो तो ठग और चोरों से भय हो (स० चि०)।

चोर दुःख—लग्नेश, बुध, गुरु, शुक्र व चन्द्र यदि नीच के, अस्तंगत, पराजित, पापाक्रांत, वक्री, अनुवक्री, आगे वक्री होने वाला हो और त्रिक में हो तो चोर दुःख, पीड़ा, दरिद्र, रोग, भ्रमण, शत्रु भय, वस्त्रहीन आदि अपनी दशा में करें।

चोर और प्रेत भय १—लग्न में बुध केतु हो पाप दृष्टि हो तो चोर और प्रेत आत्माओं से भय हो (स० चि०)।

पिशाच पीड़ा १—राहु और शनि ये पिशाच के सूचक हैं जिस पर पिशाच हो वह उदास बलहीन, भयानक स्वप्न से पीड़ित, लगातार मानसिक भय, उत्तेजना, अजीर्ण कभी-कभी दस्त और चक्कर आते हैं।

२—लग्न में शनि राहु हो तो पिशाच की पीड़ा हो (स० चि०)।

३—द्वितीय में शनि व राहु हो तो भूत पिशाच आदि कृत रोग हो (जा० सं)।

४—षष्ठ में राहु केतु पाप दृष्ट होकर क्रूर नवांश में हो तो पिशाच पीड़ा हो (स० चि०)।

५—चन्द्र लग्न में हो और राहु ग्रस्त हो (ग्रहण का समय हो) और त्रिकोण में पाप ग्रह शनि मंगल हो तो उस पर पिशाच की बाधा लगी रहे (वृ० जा०)।

६—अष्टम में निर्बल चन्द्र, शनि सहित होवे तो पिशाच और जल से उत्पन्न पीड़ा हो।

७—क्षीण चन्द्र अष्टम में मंगल, राहु या शनि में से किसी से युक्त हो तो भी उपरोक्त फल हो (स० चि०)।

८—उपरोक्त प्रकार से क्षीण चन्द्र दुष्ट स्थान में हो तो पिशाच की पीड़ा हो और मृत्यु हो (स० चि०)।

अर्थात् क्षीण चन्द्र मंगल राहु या शनि युक्त होकर ६-८-१२ स्थान में हो तो पिशाच पीड़ा या पागलपन से मृत्यु हो।

९—क्षीण चन्द्र अष्टम में राहु युक्त हो और दूसरा भाव पाप युक्त हो तो पिशाच पीड़ा से मरे (स० चि०)।

अध्याय ११

राजयोग

राज योग का अर्थ—राज्य कुल में या दूसरे कुल में जन्मा मनुष्य राज्य करे अर्थात् अधिकार प्राप्त करे या राज्य का कारवार करे अति द्रव्यवान् हो।

राजा का अर्थ—मुखिया या अधिकारी, कई मनुष्यों के ऊपर जिसका राजा के समान अधिकार प्राप्त हो, शक्ति धन बल आदि जिसके पास हो।

राज योग का अभिप्राय—राज योग का यह अभिप्राय नहीं है कि वह अवश्य ही राजा हो जायगा। परन्तु राज योग का अर्थ यह है कि जिसके जन्म काल में राज योग पड़ा है वह भाग्यवान् होता है।

जो भाग्य भाव फल कहे हैं वह सब ऐश्वर्य आदि का निश्चय राज्य योग से होता है। उन योगों के कारण जन्म की सफलता होती है ऐसे योग राज योग में बतलाये हैं।

राज योग कारक ग्रहों का जैसा बल हो उसी योग्यतानुसार अधिकार या सरकारी अधिकार या राज घराने में नौकर या व्यापारी होगा।

किसी दरिद्र के घर में जन्मे किसी बालक को राज योग हो तो उसका आशय यह नहीं है कि वह राजा ही होगा परन्तु वह भाग्यवान होगा खाने पीने से तंग न रहेगा अपने कुल में श्रेष्ठ होगा। राजा का अर्थ यहाँ अधिकारी लेना चाहिये। राजा तो अब होते ही नहीं परन्तु राज्य के बड़े-बड़े अधिकारी होते हैं।

यवनाचार्य का मत है कि किसी गरीब के घर में किसी सन्तान को राजयोग हो तो उसे अरिष्ट होगा नहीं जीवेगा। यदि बच गया तो राजा के समान अधिकारी होगा।

यवन एवं इतर आचार्यों ने कई राजयोग कहे हैं जिनमें राजा के समान अधिकार और शक्ति मिलती हैं। वह केवल उन्हीं लोगों को मिलती है जो राज घराने के हैं। परन्तु यदि ऐसा राजयोग पाप ग्रहों का ऐसे लोगों को प्राप्त हो जो राज घराने के नहीं हैं, उनकी मृत्यु होती है।

जीवशर्मा का कहना है कि पाप ग्रह उच्चवर्ती होने से राजा नहीं होता किन्तु धनवान् होता है।

राज योग कई प्रकार के हैं। राजयोग कारकांश और जन्म लग्न दोनों से विचारना, एक आत्मकारक और पुत्र कारक से दूसरा लग्नेश और पंचमेश से। इन दोनों के परस्पर सम्बन्ध और बल के अनुसार ही पूर्ण आधा या चतुर्थांश फल होता है।

१ उच्च के ग्रह का फल

१ ग्रह उच्च का—कदर्य।

२ ग्रह उच्च का—बड़ा उत्कट काम करता है।

३ ग्रह उच्च का—राजा के समान।

३ ग्रह उच्च का—राजपुत्र राजा हो अन्य मंत्री हो (शंभु०)।

३ पाप ग्रह उच्च के—क्रूर बुद्धि राजा।

३ शुभ ग्रह उच्च के—सत बुद्धि राजा।

मिश्र ग्रह से— मिश्र स्वभाव वाला हो (वृ० जा०)।

३ ग्रह उच्च, स्वक्षेत्रीय मूल त्रिकोण के—राज्य कुल में उत्पन्न राजा, अन्य कुल में उत्पन्न मंत्री हो (जा० भ०)।

४ ग्रह उच्च के—राजा हाथियों युक्त पुल बाँधने में समर्थ बड़ी कीर्ति (जा. भ.)।

४ ग्रह उच्च के और कुंभ नवांश में शुक्र हो—पृथ्वी का राजा (स० चि०)।

पाप नवांश या क्रूर नवांश में न हो तब राजा होता है।

४ ग्रह उच्च के हों कुम्भ लग्न में शनि हो तो पृथ्वी का राजा हो (जा० पारि०)।

४ से अधिक ग्रह उच्च के हों तो दिव्य पुरुष हो (शंभु०)।

५ ग्रह उच्च के—सार्व भौम राजा (जा० भ०)।

५ ग्रह उच्च के गुरु लग्न में हो—समस्त जन समुदाय का राजा (जा० पारि०)।

६ ग्रह उच्च के—सब राजाओं का सम्राट् (जा० पारि०)।

६ ग्रह चन्द्र सहित उच्च के हों वृष लग्न में चन्द्र हो—राजा हो (स० चि)।

समस्त ग्रह उच्च के—निश्चय राजा (शंभु०)।

२—३२ प्रकार के राजयोग

१—शनि, मंगल, सूर्य गुरु में चारों उच्च के हों तो—४ भेद हुए।

२—३ ग्रह उच्च के हो और इनमें से १ ग्रह लग्न में हों तो—१२ भेद होंगे।

३—कर्क में चन्द्र और मंगल सूर्य शनि गुरु में से २ ग्रह उच्च के हों तो—१२ भेद होंगे।

४—इन्हीं में से १ ग्रह उच्च राशि में लग्न गत हो तो—४ भेद होंगे।

सब ३२ प्रकार के योग हुए :

उदाहरण १—मेष का सूर्य, कर्क का गुरु, तुला का शनि, मकर का मंगल इनके १,४,७,१० से ४ भेद हुए।

(१)

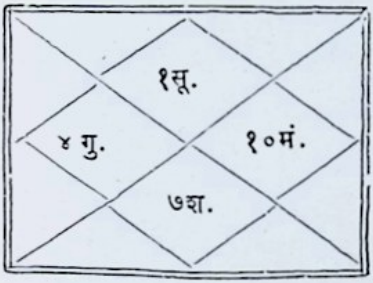

(२)

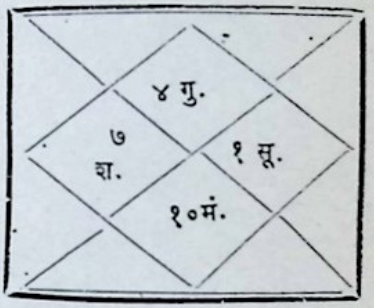

(३)

(४)

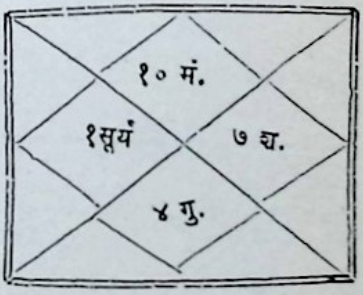

२—जब ३ ग्रह उच्च के हों इनमें से एक ग्रह लग्न में हो तो लग्न भेद से १२ प्रकार के हुए।

अ – लग्न में सूर्य, तुला का शनि, कर्क का गुरु—लग्न १,४,७ से ३ भेद हुए :

(१)

(२)

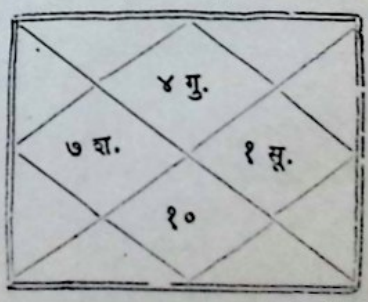

(३)

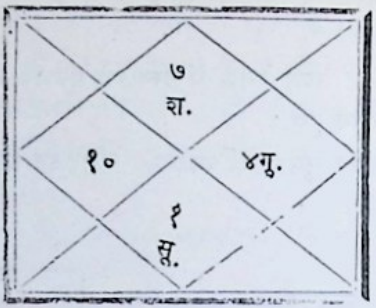

ब—मेष लग्न में सूर्य, कर्क का गुरु, मकर का मंगल-लग्न १,४,७ से ३ भेद हुए

(४)

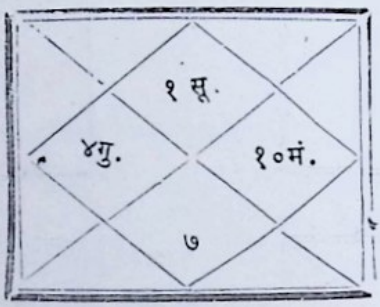

(५)

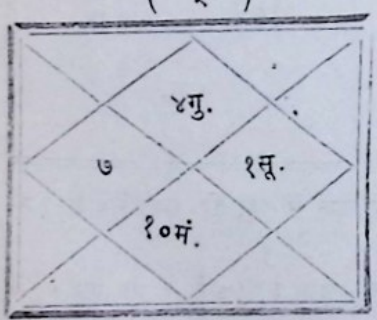

(६)

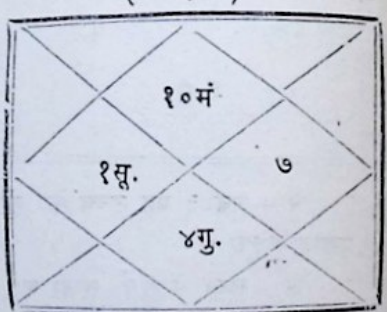

क--मेष लग्न में सूर्य, तुला में शनि, मकर का मंगल--१,७,१० लग्न से ३ भेद।

(७)

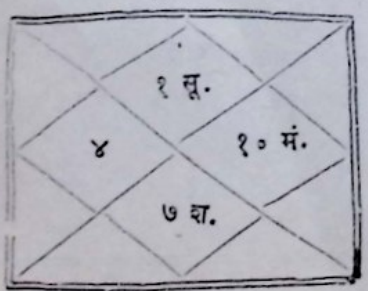

(८)

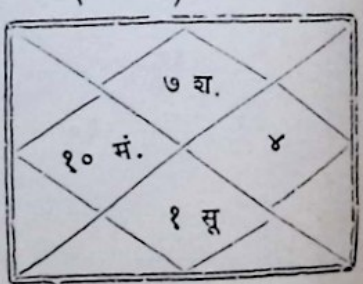

(९)

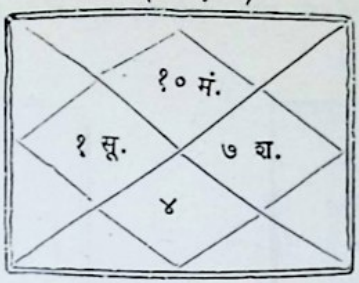

स--कर्क में गुरु, तुला में शनि, मकर का मंगल--४,७,१० लग्न से ३ भेद।

(१०)

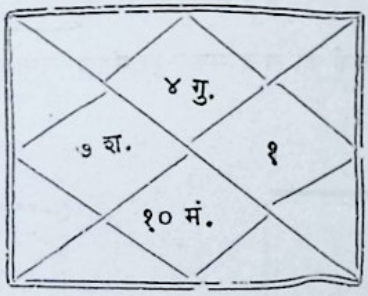

(११)

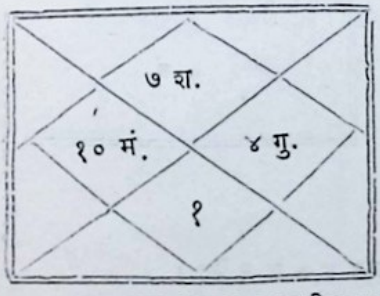

(१२)

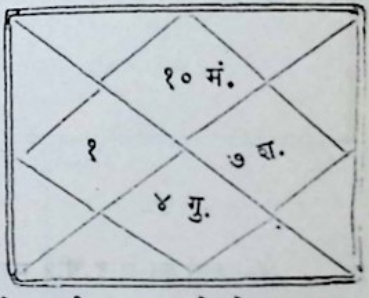

३--अब २ ग्रह स्वगृही उच्चगत केन्द्र में हों और कर्क का चन्द्र हो तो १२ राज योग। मेष में सूर्य, १ कर्क में चन्द्र गुरु, लग्न १,४ से २ भेद।

(१)

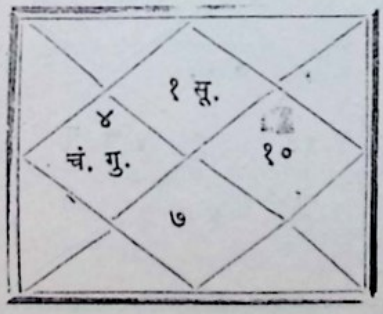

(२)

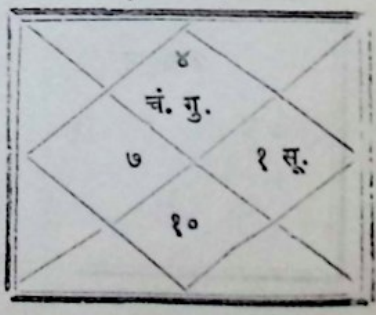

२—मेष का सूर्य, कर्क का चन्द्र, तुला का शनि लग्न १,७ से २ भेद।

(३)

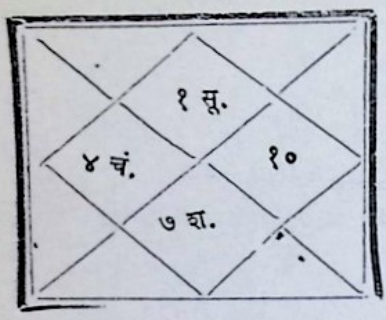

(४)

३—मेष का सूर्य, कर्क का चन्द्र मकर का मंगल, लग्न १,१० से २ भेद।

(५)

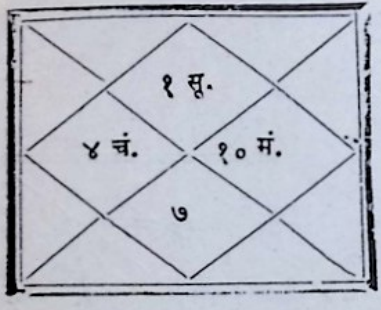

(६)

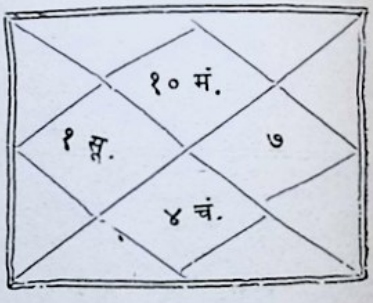

४—कर्क का चन्द्र और गुरु, तुला का शनि लग्न ४,७ से २ भेद।

(७)

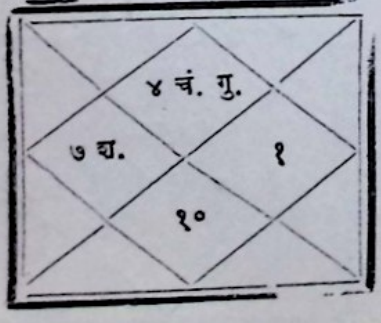

(८)

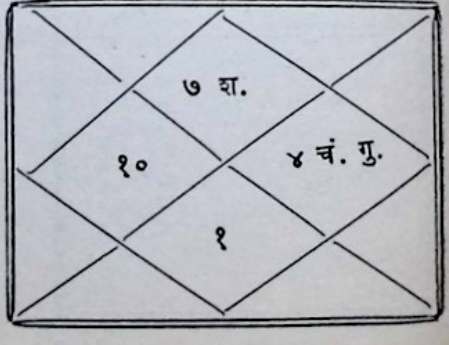

५--कर्क का चन्द्र गुरु, मकर का मंगल लग्न ४,७ से २ भेद।

(९)

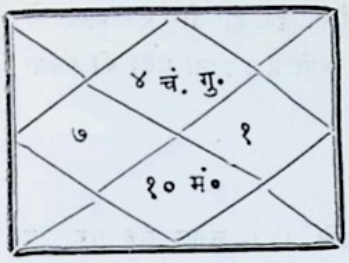

(१०)

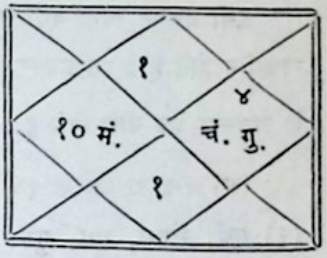

६, तुला का शनि, मकर का मंगल कर्क का गुरु, लग्न ७,१० से २ भेद।

११

१२

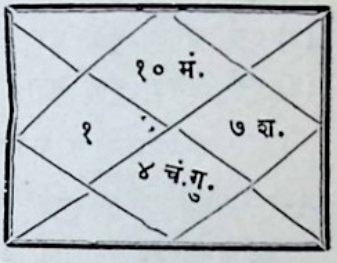

४—लग्न १, चंद्र सूर्य लग्न (गुरु चंद्र) लग्न शनि चंद्र लग्न मंगल चंद्र

४ १ ४ ४ ७ ७ ४ १० १० ४

१

२

३

४

३—जन्म लग्न वर्गोत्तम हो (जो लग्न हो वही नवांश में भी हो) और चन्द्र को छोड़कर ४,५ या ६ ग्रह देखें तो २२ प्रकार के राजयोग होते हैं।

इसी प्रकार चन्द्र वर्गोत्तम हो और ४ आदि ग्रहों से दृष्ट हो तो २२ प्रकार के राजयोग होते हैं। इस प्रकार ४४ प्रकार के राजयोग हो जाते हैं। द्रष्टा ग्रहों की संख्या के अनुसार भेद नीचे दिये हैं :—

(अ) ४ द्रष्टा ग्रह के १५ भेद

(१) सूर्य, मंगल, बुध, गुरु (६) सूर्य मंगल शुक्र शनि (११) मंगल बुध गुरु शुक्र
(२) सूर्य, मंगल, बुध, शुक्र (७) सूर्य बुध गुरु शुक्र (१२) मंगल बुध गुरु शनि
(३) सूर्य, मंगल, बुध, शनि (८) सूर्य बुध गुरु शनि (१३) मंगल बुध शुक्र शनि
(४) सूर्य, मंगल, गुरु, शुक्र (९) सूर्य बुध शुक्र शनि (१४) मंगल गुरु शुक्र शनि
(५) सूर्य, मंगल, गुरु, शनि (१०) सूर्य गुरु शुक्र शनि (१५) बुध गुरु शुक्र शनि

ब—५ द्रष्टा ग्रह के ६ भेद

१–सूर्य मंगल बुध गुरु शुक्र २–सूर्य मंगल बुध शुक्र शनि ५–सूर्य बुध गुरु शुक्र शनि
२–सूर्य मंगल बुध गुरु शनि ३–सूर्य मंगल गुरु शुक्र शनि ८–मंगल, बुध गुरु शुक्र शनि

क—६ द्रष्टा ग्रह का १ भेद

१—सूर्य, मंगल, बुध, गुरु, शुक्र, शनि।

इस प्रकार १५+६+१=२२ भेद हुए।

इसका उदाहरण आगे दिया है।

१

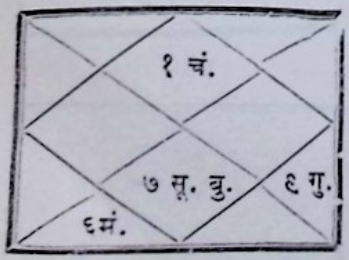

२

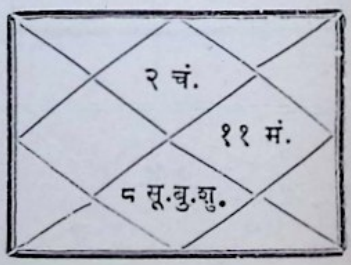

३

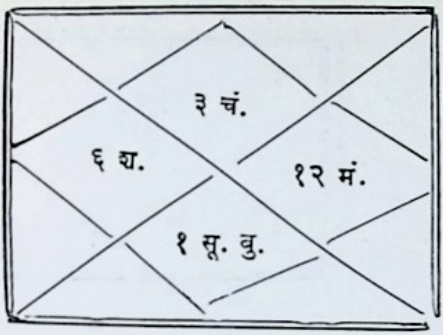
३ चं.
६ श.
१२ मं.
१ सू. बु.

४

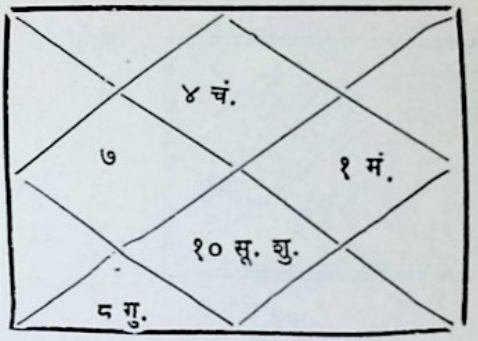
४ चं.
७
१ मं.
१० सू. शु.
८ गु.

५

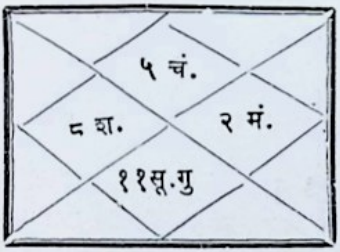
५ चं.
८ श.
२ मं.
११सू.गु

६

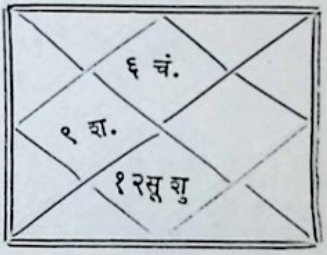
६ चं.
९ श.
१२सू शु

७

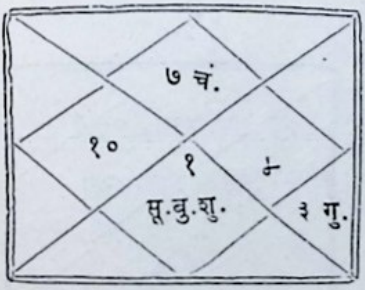
७ चं.
१०
१
सू.बु.शु.
३ गु.

८

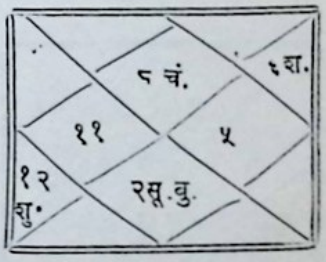
८ चं.
९ श.
११
५
१२
शु.
२सू.बु.

९

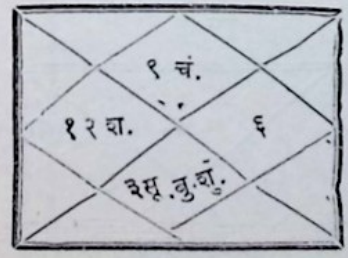
९ चं.
१२ श.
६
३सू.बु.शु.

१०

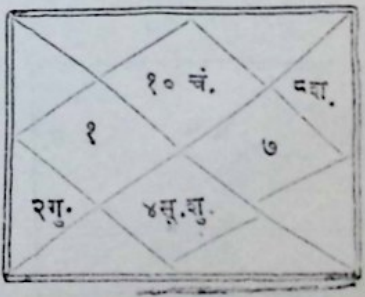
१० चं.
८ श.
१
७
२गु.
४सू.शु.

११

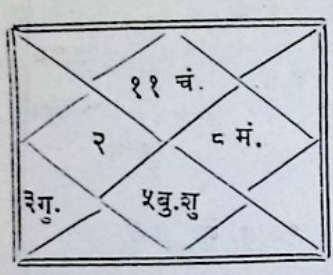

१२

१३

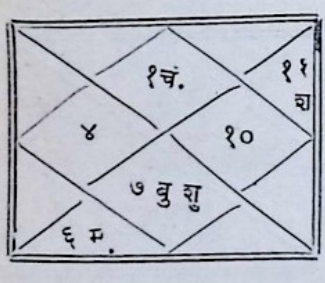

१४

१५

१६

१७

१८

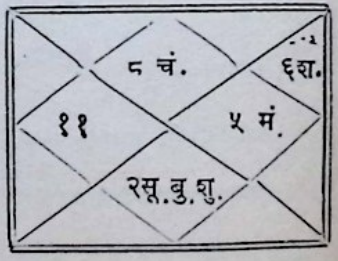

१९

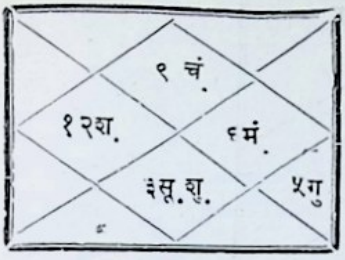

२०

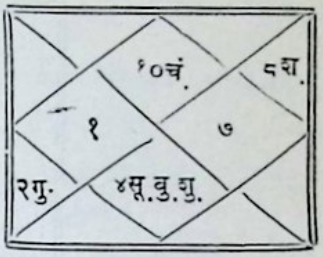

२१

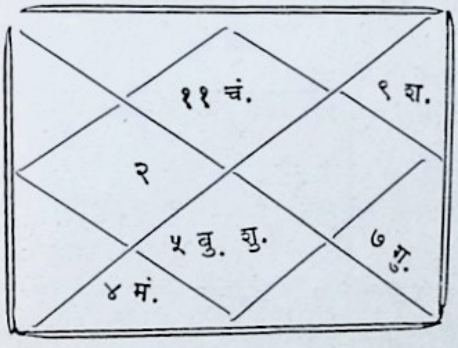

२२

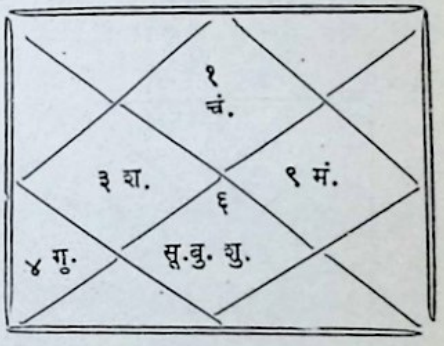

जब चन्द्रमा लग्न में न हो और लग्न को न देखता हो और ४,५ या ६ ग्रह लग्न को देखते हों तो इसी प्रकार के और २२ योग (राजयोग) होते हैं।

४--शनि	सूर्य	चन्द्र	बुध	गुरु	मंगल	और सूर्य चन्द्र में से	लग्न ३ भेद
अ--कुंभ	मेष	वृष	मिथुन	सिंह	वृश्चिक	एक ग्रह लग्न में हो	११,१,२

१

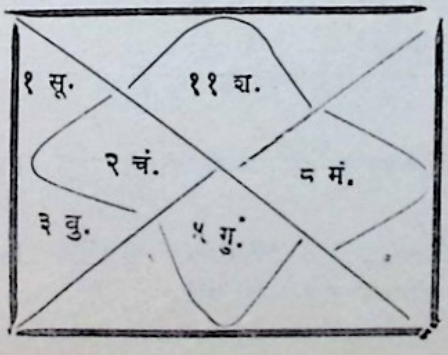

२

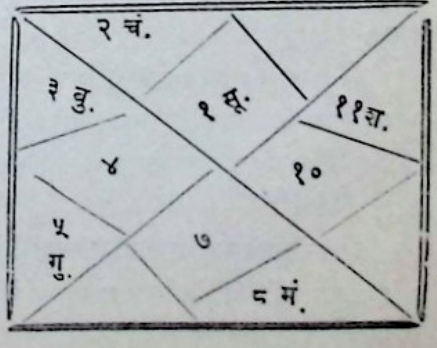

३

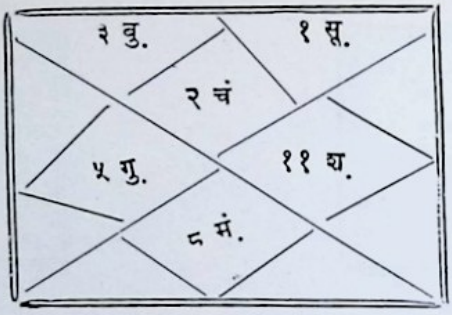

व—शनि चन्द्र उच्च | सूर्य बुध कन्या में | शुक्र तुला | मंगल मेष | गुरु कर्क | लग्न २,७ से २ भेद राजयोगके

४

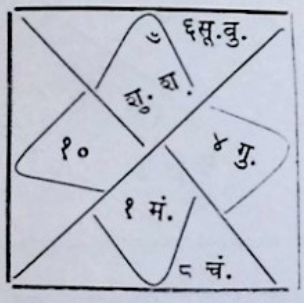

५

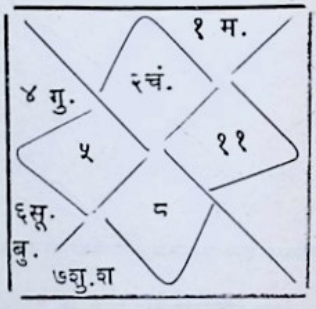

इस प्रकार के ५ राजयोग हुए।

उच्चादि ग्रह से राजयोग १—एक भी ग्रह उच्च का मित्र ग्रह से दृष्ट हो तो राजा हो, बहुत धन एवं मित्र मण्डली से युक्त और अच्छी ख्याति हो (स० चि०)।

२—पाप ग्रह उच्च का हो तो पाप बुद्धि राजा हो, जीव शर्म के मत से वह राजा नहीं होता धनवान् होता है (वृ जा.)।

३—यदि एक या दो ग्रह अपने उच्च या मूल त्रिकोण में हों तो धनवान् हो (जा० सं०)।

४—एक ग्रह उच्च का हो और अन्य सब ग्रह स्वगृही या मित्र गृही हों तो उसका भाग्य राजा के समान हो (जा० पारि०)।

५—अकेला ग्रह परमोच्च में हो और मित्र ग्रह से युक्त या दृष्ट हो तो राजा हो (फल दीप०)।

६—नीच स्थित ग्रह, उच्च नवांश में हो तो राजा के समान भाग्य हो (जैमिनि) यदि उच्च राशि में होकर नीच नवांश में हो तो लाभ कारक नहीं होते।

७—कोई ग्रह नीच में हो उसके उच्च राशि का स्वामी या वह जिस राशि में बैठा हो उसका स्वामी लग्न से केन्द्र में हो तो वह धार्मिक चक्रवर्ती राजा हो (स० चि०)।

८—जन्म में नीच ग्रह पड़ा हो उस राशि का स्वामी उच्च राशि का स्वामी हो और केन्द्र या त्रिकोण में हो तो धर्मवान् चक्रवर्ती राजा हो (ल० चं०)।

९—जन्म समय गुरु नीच में और नीच राशि का स्वामी या ग्रह के उच्च राशि का स्वामी चन्द्र से लग्न से केन्द्र में हो तो चक्रवर्ती राजा हो (फल०)।

१० जो ग्रह नीच में हो परन्तु उस राशि से दृष्ट हो तो प्रसिद्ध और पृथ्वी पति बना देता है (फल०)।

११--अकेला ग्रह नीच का हो और उसकी किरणें तेज हों और गति में वक्री हो वह ६,८,१२ घर छोड़कर और कहीं शुभ स्थान में हो तो राजा के तुल्य हो, यदि २-३ ऐसे ग्रह हों तो राजा हो। यदि ऐसे कोई ग्रह न हों और शुभ राशि या अंश में हो तो राज चिह्न सूचक जैसे मुकुट छत्र चौरी आदि से परिपूर्ण हो (फल०)।

१२—जन्म में केन्द्रवर्ती ग्रह नीच राशि में हो, उस राशि का स्वामी जो ग्रह है यदि उसका उच्च राशि का स्वामी केन्द्र में हो तो राज कुल का उत्पन्न राजा होता है (जा० भ०)।

१३--नीच ग्रह जिस घर में हो उस राशि का स्वामी या ग्रह जो उसी स्थान में उच्च का हो यदि चन्द्र से केन्द्र में हो तो नीच भंग राज योग होता है। वह रानी और राजा का आदरपात्र होता है (स० चि०)।

१४--नीच गत का अंश स्वामी ग्रह केन्द्र त्रिकोण में होवे लग्न में चर राशि हो लग्नेश चर राशि चरांशक में हो तो राजा हो (स० चि०)।

१५--६,८,१२ भाव के स्वामी भी नीच में होकर लग्न को देखते हों तो राजयोग होता है (वृ० पा०)।

१६--३,६,८,११ भाव में नीच का ग्रह हो लग्न का देखता हो तो राजयोग होता है (वृ० पा०)।

१७--जब २, ३ या ४ ग्रह नीच में होकर शुभ षष्ठांश में हों और सूर्य उच्च नवांश में हो तो राजा के बराबर हो (स० चि०)।

१८--एक भी शुभ ग्रह केन्द्र में उच्च का होकर बैठा हो जिस पर बलवान् सूर्य की दृष्टि हो और पंचम भाव में गुरु हो तो वह मनुष्यों का नायक हो (जा० भ०)।

अन्यमत--उच्च का एक भी शुभ ग्रह तथा केन्द्र में बली सूर्य पर पंचम स्वामी गुरु की दृष्टि हो तो नायक हो।

१९--शुभ ग्रह उच्च के केन्द्र में हों तो राज लक्ष्मी का स्वामी, यदि पाप ग्रह उच्च के केन्द्र में हों तो कन्या के घर में राजा हो (ल० चं०)।

२०--२-३ ग्रह उच्च में हों चंद्र कर्क राशि का हो और लग्न पूर्ण बली हो तो सर्वत्र पूज्य राजा हो (जा० पारि०)।

२१--मूल त्रिकोण या मित्र राशि में या वक्री ग्रह किसी भाव में शेष ग्रह उच्च राशि में हों परन्तु नीचांशक में न हों तो राजा के तुल्य हो (स० चि०)।

२२—उच्च या मूल त्रिकोण के ३-४ ग्रह बलवान् हों तो राजवंशी राजा हो हो अन्य धनवान् हो। ग्रह यदि बलहीन हों तो राजा नहीं होता धनवान् होता है (वृ० जा०)।

२३—तीन या अधिक ग्रह उच्च या स्वगृही हों तो प्रसिद्ध राजा हो (फल०)।

२४ - ४ या ५ ग्रह स्वोच्च या मूल त्रिकोण में हों तो हीन कुल का भी राजा हो (वृ० पा०)।

२५—५ या अधिक ग्रह उच्च या मूल त्रिकोण में हों तो अन्य वंशी भी राजा हो परन्तु ग्रह बलहीन हों तो राजा के तुल्य हो (वृ० जा०)।

२६ - ५ या अधिक ग्रह उच्च के या स्वगृही केन्द्र में हों तो चक्रवर्ती राजा हो [वृ० पा०]।

२७—तीन या अधिक ग्रह उच्च स्वगृही या मूल त्रिकोण में हों तो राजवंशी राजा हो अन्य राज कारबार में श्रेष्ठ अधिकारी हो [प्रा० यो०]।

२८—नवम भाव में सब शुभ या अशुभ ग्रह उच्च में हों और शुभग्रह से दृष्ट हों तो शत्रु को जीतने वाला सुन्दर कांति वाला राजा हो [जा० सं०]।

२९—वृष लग्न हो उच्च स्वगृही या मूल त्रिकोण में हो परन्तु नीच नवांश में न हो तो राजा हो [स० चि०]।

३०—उच्च या स्वक्षेत्री ३-४ ग्रह केन्द्र में हों अस्त न हों या और कोई दुर्योग न हो तो राज कुल में उत्पन्न मनुष्य राजा हो फल०]।

३१—३ या अधिक ग्रह स्वक्षेत्री या मूल त्रिकोण में हों तो राजवंश में उत्पन्न राजा हो (जैमिनि)।

३२—३ ग्रह स्वगृही हों तो मंत्री हो [मान०]।

३३—सभी ग्रह स्वक्षेत्री हों तो राजा के तुल्य हो [स० चि०]।

३४ वृष लग्न में चन्द्र हो और ७ ग्रह स्वगृही हों तो राजा के बराबर हो [स० चि०]

३५—उच्च के ग्रह राजयोग करते हैं परन्तु वे नीचांशक क्रूर आदि षष्ठांश में न हों। उच्च के ग्रह पाप नवांश और पाप षष्ठांश में हों तो राजशक्ति को नष्ट कर नीचा

करते हैं साधारण फल देते हैं। इसी से राशि की अपेक्षा अंश अधिक बलवान् है। इसी से बलवान् ग्रह शुभ षष्ठ्यंश में अधिक राजयोग करते हैं।

३६--ज्योतिष चक्र के पुर्वार्द्ध में उच्च के एवं बलवान् ग्रह हों तो जीवन के पूर्व भाग में राजा के समान शक्ति और धन देते हैं। यदि पश्चिमार्द्ध में हों तो जीवन के अन्तिम भाग में शक्ति और सफलता देते हैं। यदि दोनों भाग में हो तो जीवन भर शक्ति और उन्नति देते हैं।

लग्न से ७ भाव तक पूर्वार्द्ध पश्चात् शेष पश्चिमार्द्ध है या जीवन को ३ भाग में बांटो तो जिस खंड में अधिक उच्च के बलवान् ग्रह या शुभ ग्रह हों वहाँ शक्ति और सफलता मिले पाप ग्रह एवं बलहीन ग्रहों से दुःख शोक हानि मिले।

(१) खंड--१२,१,२,३ भाव, (२) खंड-४,५,६,७ भाव, (३) खंड-८,९,१०,११ भाव समझना।

३७—लग्न या अन्य भाव से क्रम से ही जिसके सब ग्रह हों इस एकावली योग में महाराजा होता है (ल० चं०)।

३८—लग्न से २,३,४,५,६ और १० इन्हीं घरों में सब ग्रह हों तो छोटे कुल का भी राजा हो (मान०)।

३९—दशम भाव से तीसरे भाव तक सब शुभ ग्रह हों तो राजा के समान हो (स० चिं०)।

४०—१२,११,१,२,३,१० इन भावों में शुभ ग्रह हों तो राजा के समान हो (जा० पारि०)।

४१—५,६,८,९,१२ स्थान में शुभ और ग्रह हों तो वह राजाओं में पूज्य हो पर दुष्ट हो (ल० चं०)।

४२—५,६,९,१२ घर में शुभ और पाप ग्रह हों तो राज मान्य, शत्रुका नाशक हो परन्तु साथ में झगड़े भी बहुत लगे रहें (मान०)।

४३—१,५,६,७,११ राशि में सब ग्रह हों तो राजा हो (जा० पारि०)।

४४—१,२,७,१२ राशियों में सब ग्रह हों तो भूमण्डल का स्वामी हो [जा०पारि०]

४५—२,३,५,६,९,११,१२ राशि में सब ग्रह हों तो सेना हाथी युक्त राजा हो [जा० पारि०]।

४६--१,२,३,१०,११,१२ राशियों में सब ग्रह हों तो हाथी आदि से युक्त विख्यात राजा हो [मान०]।

४७—२,९,१२ राशि में सब ग्रह केन्द्र में हों तो राजा हो [जा० पारि०]।

४८—१,२,३,४,५,७,९ भाव में सब ग्रह हों इन प्रत्येक भाव में ग्रह हो तो धार्मिक हो [ज्ञा० पारि०]।

४९—१,२,४,५,७,९,१०,११ घर में गुरु शुक्र स्वगृही या उच्च में हों तो धन युक्त राज्यमान्य हो (जैमिनि)।

५०—चन्द्र से ३,६,१०,११ घर में सब ग्रह हों तो धन वाहन युक्त राज्यमान्य हो (जा० भ०)।

५१—लग्न या चन्द्र वर्गोत्तम हो, चन्द्र को छोड़कर ४,७,१० स्थान में सब ग्रह हों तो राजा हो (जा० पारि०)।

५२—१,३,५,९ भाव में कहीं भी ४ ग्रह एकत्र हों यदि वह दासी पुत्र भी हो तो भी राजा के समान हो (मान०)।

५३—१,२,३,५,९,११ भाव में कहीं पाप या शुभ ४ ग्रह हों तो राजयोग हो (जैमिनि)।

५४—३,४,५ भाव में सब ग्रह हों तो बहुत धन हो और देश का स्वामी हो (जा० पारि०)।

५५ ४,५,९ भाव में सब ग्रह हों उसके पहिले हुए बालक मर जायें पीछे के जियें, दूसरी स्त्री से युक्त हो और जातक, विख्यात दानी दीर्घायु राजा हो (मान०)।

५६—२,६,८,१२ भाव में सब ग्रह हों तो सिंहासन प्राप्त हो (ल० चं०)।

५७—१,५,७,९ भाव में सब ग्रह हों यह हंस योग है अपने वंश का पालन कर्ता हो (ल० चं०)।

५८—राशि चक्र में ६ घर ग्रह रहित हों तो वह राजा हो या राजा के समान हो अंत में स्वर्ग जाता है।

केन्द्र त्रिकोण आदि के योग

५९—एक भी ग्रह जो अस्तंगत न हो स्वराशि या मित्र राशि में हो षड़वर्ग शुद्धि हो और केन्द्र त्रिकोण में हो तो चक्रवर्ती राजा हो (शंभु)।

६०—पूर्वोक्त रीति से २ ग्रह षड़ वर्ग में शुद्धि होकर बैठे हों तो उस राजा का आधिपत्य द्वीपान्तरों में पृथ्वी तक होता है (जा० भ०) शंभु।

६१—३ ग्रह उच्च और मूल त्रिकोण के अधिकार से हीन होकर षड़वर्ग में शुद्ध होकर बैठे हों तो वह राजा का मंत्री हो (जा० भ०)।

६२—पूर्वोक्त रीति से ४ ग्रह हों तो राजा होता है (जा० भ०)।

६३—यदि ५, ६ ग्रह षड़वर्ग में शुद्ध बैठे हों वह सार्वभौम राजा हो (जा० भ०)

६४ – त्रिकोण लक्ष्मी का स्थान है, केन्द्र विष्णु का स्थान है इन दोनों स्वामियों के सम्बन्ध होने से चक्रवर्ती राजा हो (म० परा०)।

६५ – चारों केन्द्र में शुभ ग्रह हों और पाप ग्रह ६ या १२ भाव में हो तो संसार में विख्यात ध्वजा और छत्र से शोभित राजा होता है (ल० चं०)।

६६ केन्द्र गत ग्रह पाप राशियों में होवे या सौम्य राशियों में पाप ग्रह होवे तो वह शवर और चोरों का राजा होता है और धनवान् होता है (वृ० जा०)।

६७ – शुभ ग्रह सम्बन्धी राशि बलवान् होकर केन्द्र में हो और पाप ग्रह पाप राशियों में हो तो भी उपरोक्त फल हो (जा० सं०)।

६८ – जिसका एक भी ग्रह पंचम नवांश में हो वह भी राजा होता है (जा० भ०)।

६९ – जन्म में कोई एक ग्रह पंचवर्गी शुद्ध हो तो राजा हो (शंभु०)।

७० – सब शुभ ग्रह केन्द्र त्रिकोण में हों पाप ग्रह ३, ६, ११ में हों तो राजा हो (वृ० पा०)।

७१ – एक भी पूर्ण बली ग्रह केन्द्र त्रिकोण में हो तो दीर्घायु निरोग हो सब दोष दूर हों (मान०)।

७२ – सब शुभ ग्रह शुभ क्षेत्र में होकर केन्द्र में हों तो सदा शुभ कर्म करने वाला हो (मान०)।

७३ – शुभ ग्रह की राशि में बलिष्ट ग्रह केन्द्र में हों इसी प्रकार पाप ग्रह की राशि के पाप ग्रह बलवान् हों तो वह फाज का स्वामी, पुलिस कप्तान या जेल का ओहदेदार या चोर आदि का स्वामी होकर बड़ी सम्पत्ति वाला हो (प्रा० यो०)।

७४ – उदय को प्राप्त स्वोच्च का ग्रह केन्द्र में हो तो राजा के समान प्रतापी हो (जा० लं०)।

७५ – केन्द्र में शुभ ग्रह और अष्टम में पाप ग्रह हो तो सर्व सिद्धि प्राप्त हो राजाओं में मान हो (जा० लं०)।

७६ – केन्द्र या त्रिकोण के स्वामियों का योग एक ही भाव में हो तो राजयोग होता है। या वे परस्पर एक दूसरे से सम्बन्ध स्थापित करते हों या वे परस्पर स्थान में हो तो राजयोग होता है परन्तु ३,११ या ६,८,१२ भाव के भावेश से इनका सम्बन्ध न हो। यदि इनके भावेश केन्द्र में हों तो हानि नहीं है (ज्यो० रह०)।

७७ – चारों केन्द्र में शुभ और पाप ग्रह दोनों हों तो राज्य और धन देते हैं (ल० चं०)।

गुरु

७८—उच्च का गुरु हो मेष लग्न में बुध हो तो राजा हो (जा० पारि०)।

७९—उच्च का गुरु, केन्द्र में हो, दशम में शुक्र हो तो चक्रवर्ती राजा हो जिसका सिक्का चले (शंभु०)।

८०—उच्चराशि में या स्वगृही गुरु शुक्र केन्द्र या त्रिकोण में हों तो राज कुल का राजा हो अन्य कुल में उत्पन्न मंत्री हो (जा० भ०।

८१—गुरु, शुक्र, बुध या चन्द्र में से एक भी उच्च का हो पर द्वितीय भाव में हो तो राजयोग होता है (वृ० जा०)।

८२—उच्च का गुरु केन्द्र या त्रिकोण में हो चन्द्र बुध शुक्र इनसे युक्त या दृष्ट हो तो शत्रु को जीतने वाला चक्रवर्ती राजा हो (जा० सं०)।

८३—उच्च का गुरु लग्न में हो, मेष का सूर्य हो और शनि बुध शुक्र ग्यारहवें भाव में हों तो वह बलवान् राजा होता है [जा० भ०]।

८४—उच्च का गुरु शुक्र सूर्य हो चन्द्र भी उच्च राशि गत शनि से दृष्ट हो तो राजा हो [जा० भ०]।

८५—गुरु शुक्र या बुध इनमें एक भी उच्च में हो और अन्य शुभ ग्रह केन्द्र में हों तो निश्चय राजा हो [वृ० पा०]।

८६—नीच का गुरु लग्न या अष्टम में हो और नवमेश पारावतांश में हो तो राजाओं का राजा कुबेर सम होवे [स० चि०]।

८७—लग्न में नीच का गुरु हो अष्टम भाव पाप ग्रह युक्त हो और उस अष्टम भाव के नवांश से युक्त हो तो राजाधिराज हो जैसे मकर लग्न में तृतीय नवांश में गुरु हो, अष्टम भाव में तृतीय नवांश गत सूर्य हो तो वह राजयोग होगा [जा० पारि०]।

८८—गुरु नीचांश में न हो, चन्द्रमा उत्तरांश में हो, सूर्य शुभ षष्ठयंश में हो तो राजा के तुल्य हो [स० चि०]।

८९—गुरु नीच नवांश में न हो, बली शनि उत्तम वर्ग में हो, सूर्य शुभ ग्रह से दृष्ट हो या शुभ ग्रह के नवांश में हो तो राजा का प्रिय या राजा के समान हो [जा० पारि०]।

९०—कर्क का गुरु लग्न में हो मेष का मंगल हो तो बलवान् राजा हो या कलेक्टर इंजीनियर आदि हो [वृ० जा०]।

९१—कर्क का गुरु चन्द्र केन्द्र में हो तो वह काश्मीर का राजा हो [जा० भ०]।

९२--कर्क का गुरु लग्न में हो तो वह मकान बावली नगर आदि बनाने वाला होता है [जा० भ०]।

९३--कर्क लग्न में गुरु और चन्द्र हो शुक्र बली होकर केन्द्र में हो शेष सब ग्रह ११,३,६ भाव में हों तो धनवान् दीर्घायु चक्रवर्ती राजा हो [मान०]।

९४--कर्क लग्न में गुरु हो या मेष का मंगल हों तो इन दोनों योगों में शत्रुओं को जीतने वाला राजनीति शास्त्र में निपुण राजा हो [जा० भ०]।

९५--कर्क का गुरु लग्न में हो, सप्तम शुक्र, चतुर्थ शनि, दशम मंगल हो तो राजा हो [जा० भ०]।

९६--कर्क का गुरु हो, तुला में शनि चन्द्र, मेष का सूर्य लग्न में हो तो बड़ा राजा हो [शंभु०]।

९७--कर्क का चन्द्र गुरु हो शुक्र मीन लग्न में, सूर्य मंगल मेष में हो तो इन्द्र समान राजा हो [जा० भ०]।

९८--कर्क लग्न में गुरु, लाभ में वृष का चन्द्र शुक्र बुध तीनों हों, मेष का सूर्य दशम हो तो पराक्रमी राजा हो [वृ० जा०]।

९९--कर्क का गुरु लग्न में, लाभ में बुध, शुक्र मेष का दशम हो [मान०]।

१००--कर्क का गुरु, मीन या मिथुन में चन्द्र, कुंभ में शुक्र। अन्यमत कर्क का गुरु मीन का चन्द्र, कुम्भ में शुक्र हो तो हाथियों से युक्त राजा हो [शंभु०]।

१०१--कर्क में गुरु, मेष या मीन में चन्द्र, कुम्भ में शुक्र हो तो वाहन युक्त समृद्ध भोगी राजा हो [जा० भ०]।

१०२--कर्क में गुरु चन्द्र हों, उच्च में जाने वाला सूर्य त्रिकोण में हो तो रत्नों से परिपूर्ण भूमि का राजा हो (जा० पारि०)।

१०३--कर्क में गुरु चन्द्र या मेष में सूर्य मंगल, या वृष में चन्द्र शुक्र या मकर में शनि मंगल या कन्या में राहु बुध, या तुला में शनि शुक्र हो, या मीन में गुरु शुक्र या मिथुन में राहु बुध हो इन योगों में राजा या धनी हो (जैमिनि)।

१०४--कर्क का गुरु हो, मीन का सूर्य त्रिकोण में हो, या मेष का चन्द्र त्रिकोण में हो तो पृथ्वी को रक्त से परिपूर्ण करें अर्थात् बड़ा योद्धा हो (मान०) सूर्य या चन्द्र यहाँ उच्चाभिलाषी अर्थात् उच्च की ओर जाने वाला हो यहाँ मीन का सूर्य या मेष या चन्द्र उच्चाभिलाषी है।

अन्य--केन्द्र में गुरु, मीन का सूर्य लग्न से त्रिकोण में हो या चन्द्रमा लग्न में हो तो रक्त पूर्ण पृथ्वी का पालक हो (मान०)।

१०५--केन्द्र में गुरु हो तो अनेक कुयोगों को दूर करता है (मान०) केन्द्र में गुरु भी न हो, लग्न में शुक्र बुध न हो, दशम में मंगल भी न हो तो जातक कुछ न कर सकेगा।

अकेला गुरु केन्द्र या त्रिकोण में हो या लग्न में या लाभ में हो तो सब कार्य करने में समर्थ हो और दीर्घ जीवी हो (मान०)।

१०६—कोई बली शुभ ग्रह केन्द्र में हो शुभ ग्रह से दृष्ट हो तो सब दुःख दूर कर सकेगा (ल० चं०)।

१०७—चंद्र सहित गुरु केन्द्र में हो, शुक्र से दृष्ट हो और कोई ग्रह नीच का न हो तो यशस्वी राजा हो (शंभु०)।

१०८—बली होकर गुरु शुक्र या लग्नेश केन्द्र में होकर दीर्घायु और राज वल्लभ होता है (मान०)।

१०९—गुरु बुध शुक्र इनमें से एक भी ग्रह केन्द्र में हो तो दीर्घायु गुणवान् और राजप्रिय हो (जैमिनि)।

११०—बली गुरु केन्द्र में हो तो सुवर्ण वस्त्र सम्पत्ति युक्त सुखी सत्कर्मी हो (जा० सं०)।

१११—गुरु शुक्र चंद्र केन्द्र में हों तो अनेक सुख और धन की वृद्धि हो सब कार्य साध्य हो (मान०)।

११२—चारों केन्द्र में गुरु बुध शुक्र और शनि से युक्त राहु हो तो लक्ष्मी आरोग्य, पुत्र, मान, आदि प्राप्त हों (मान०)।

अन्यमत—गुरु, बुध, शुक्र, शनि चारों ग्रह सहित राहु हो तो उपरोक्त फल (ल०चं०)

११३—तीनों केन्द्रों में शुक्र बुध गुरु हो और दशम में मंगल हो तो कुल दीपक हो (मान०)।

केन्द्र में गुरु लग्न में बुध या शुक्र, दशम में मंगल हो तो कुल दीपक हो।

११४—गुरु केन्द्र त्रिकोण या उच्च में, चंद्र बुध, शुक्र से युक्त या दृष्ट हो तो सार्वभौम राजा हो (मान०)।

११५—गुरु बुध शुक्र केन्द्र और त्रिकोण में हो तो वह धर्म अर्थ विद्या कीर्ति युक्त शांत सुशील राजा हो (जा० सं०)।

११६—गुरु शुक्र या नवमेश केन्द्र कोण या लाभ में हों तो अनेक वाहन युक्त मंडल का राजा हो (जा० पारि०)।

११७—गुरु शुक्र या चतुर्थेश केन्द्र या लाभ में हो तो वाहनों का स्वामी और राजा हो (ल० चं०)।

११८—गुरु शुक्र बुध केन्द्र त्रिकोण में हो ३, ६, ११ भाव में बुध शनि हो, सप्तम में पूर्ण बली चंद्र हो तो राजा के समान हो (मान०) (जा० सं०)।

११९—गुरु सूर्य बुध शनि त्रिकोण में, मंगल दशम में हो तो राज योग होता है (मान०)।

१२०—त्रिकोण में गुरु सूर्य, लग्न में शनि चंद्र, दशम मंगल हो तो राज योग होता है [ल० चं०]।

१२१—गुरु स्वक्षेत्री हो तो बन में भी मित्र मिले [जैमिनि]।

१२२—गुरु बुध शनि तीनों स्वक्षेत्री हों तो दीर्घायु हो अपने-अपने पद में धन सम्पादन करने वाला हो [ल० चं०]।

१२३—गुरु शुक्र मंगल वर्गोत्तम में हों और पाप ग्रह केन्द्र में हो तो राजा हो [जा० पा०]।

१२४—वर्गोत्तम या पुष्करांश में गुरु मंगल चंद्र साथ हों तो राजा हो [जा०पा०]।

१२६—गुरु लाभेश हो और चंद्र से केन्द्र में धनेश नवमेश लाभेश में से कोई एक हो तो राजा हो [जा० पा०]।

१२७—गुरु पर मंगल की दृष्टि हो और मंगल पर गुरु की दृष्टि हो तो देव पूजित परोपकारी मंत्री हो [जैमिनि]।

१२८—बुध गुरु युक्त या दृष्ट हो तो उसकी आज्ञा राजा लोग मानें [स० चिं०]। गुरु विद्या का कारक है और बुध ज्ञान का कारक है। दोनों का योग प्रभावशाली होता है परन्तु भिन्न-भिन्न राशियों में भिन्न-भिन्न फल देगा जैसे मकर में जहाँ गुरु नीच का है या मीन में जहाँ बुध नीच का है या कर्क का गुरु जो उच्च का है या कन्या का बुध जो उच्च का है।

१२९—लग्न में गुरु हो, बुध कोई केन्द्र में हो दोनों पर नवमेश और लाभेश की दृष्टि हो तो राजा के समान हो [स० चिं०]।

१३०—लग्न में गुरु, केन्द्र में बुध हो नवमेश से दृष्ट हो तो राजा के बराबर धनी हो [जा० पा०]।

१३१—लग्न में गुरु, दशम या पंचम में चन्द्र हो तो राजमान्य, महा बुद्धिमान्, और तेजस्वी हो [मान०]।

१३२—लग्न या पंचम में गुरु हो, द्वादश में चन्द्र हो तो राजमान्य विशाल बुद्धि, तेजस्वी, जितेन्द्रिय हो [जा० सं०]।

१३३—लग्न या पञ्चम में गुरु हो दशम में चन्द्र हो तो इन्द्रियजित् बुद्धिमान् राजा हो [जा० सं०]।

१३४—मकर राशि छोड़कर और कोई राशि में लग्न में गुरु हो तो मतवाले हाथी युक्त राजा हो [जा० भ०]।

१३५—गुरु, बुध, या शुक्र चन्द्र के साथ लग्न में हो तो राज लक्षण से युक्त हो।

१३६—लग्न में गुरु और व्यय में शनि हो बीच में सब ग्रह हों तो कुटुम्ब और बलयुक्त राजा होता है [मान०]।

१३७—लग्न में गुरु, तीसरे चन्द्र, नवम बुध, लाभ में शुक्र, मकर का शनि हो तो चक्रवर्ती राजा हो [जा० भ०]।

१३८—लग्न में गुरु, द्वितीय बुध मंगल, चतुर्थ में शुक्र सूर्य दोनों हों दशम में चन्द्र, लाभ, में शनि हो तो राजपुत्र राजा हो अन्य धनी हो [जा० सं०]।

१३९—लग्न में मकर राशि छोड़कर और किसी राशि में गुरु हो और शुक्र पर गुरु की दृष्टि हो तो राज घरों में उत्पन्न जातक हाथियों से युक्त राजा हो [फल]।

१४०—लग्न में गुरु बुध या शुक्र में से कोई हो शनि सप्तम हो सूर्य दशम हो तो भोग वाले का जन्म जानो [जा० सं०]।

अन्यमत—गुरु, बुध शुक्र, की राशियाँ लग्न में हों सप्तम शनि दशम सूर्य हो तो धन हीन मनुष्य को भोगवान् बनाता है (वृ० जा०)।

१४१—दूसरे भाव में गुरु शुक्र युक्त हो तो शत्रु को जीतने वाला भूपति हो [जा० पारि०]।

१४२—द्वितीय भाव में गुरु बुध शुक्र हो सप्तम में शनि चन्द्र मंगल हो तो बड़ा राजा हो शत्रु का नाश करता हो (जा० भ०]।

१४३—सूर्य से दूसरे भाव में गुरु बुध शुक्र हो अस्त न हो और शत्रु ग्रह की दृष्टि न हो तो उस राजा के सामने शत्रु की फौज भाग जाती है [शंभु०]।

१४४—तीसरे भाव में गुरु, अष्टम में शुक्र हो बीच में व अन्त में और २ ग्रह हों तो निश्चय राजा हो।

अन्यमत—तीसरे में गुरु अष्टम में शुक्र हो शेष ग्रह बीच में हों तो निश्चय राजा हो [जैमिनि]।

१४५ तीसरे गुरु लाभ में चन्द्र हो तो कुल दीपक प्रसिद्ध राजा हो [मान०, ।

१४६—लग्न से तृतीय भाव में गुरु हो या चन्द्र सूर्य से पञ्चम नवम में हो तो राजा हो।

१४७—मंगल से ३,५,९ भाव में गुरु सूर्य चन्द्र हो तो अनेक सम्पदा और वाहन युक्त राजमान्य हो [जा० भ०]।

अन्यमत—३,५,९ भाव में गुरु सूर्य चन्द्र वली हों तो अनेक सम्पदा और वाहन युक्त राजा हो।

अन्यमत—३,५,९ भाव में शुक्र सूर्य चन्द्र हो तो उपरोक्त फल [शंभु०]।

१४८—चतुर्थ भाव प गुरु शुक्र बलवान् हो तो राजा हो [जा० भ०]।

१४९—चतुर्थ में गुरु चन्द्र शुक्र, पञ्चम मंगल शनि हो, कन्या लग्न में बुध हो तो गुणवान् राजा हो [जा० सं०]।

१५०—चतुर्थ में गुरु, लग्न में शनि, दशम में सूर्य चन्द्र, लाभ में मंगल बुध शुक्र हो तो राजपुत्र राजा हो अन्य धनी हो [वृ० जा०]।

अन्यमत—शनि मकर लग्न में हो [प्रा० यो०]।

१५१—चतुर्थ में गुरु शुक्र मंगल चन्द्र ये चारों सूर्य चन्द्र से युक्त हों तो राजा हो (मान०)।

मतांतर—चतुर्थ में गुरु शुक्र मंगल चन्द्र ये सूर्य शनि इनसे युक्त हों [ल० चं०]।

१५२—चतुर्थ में गुरु हो, लग्न में मेष का सूर्य, दशम में मंगल हो तो संसार का स्वामी हो [ल० चं०]।

१५३—चतुर्थ में गुरु, लग्न में चन्द्र, दशम शुक्र हो और शनि अपने उच्च या स्वक्षेत्री हो तो राजा के तुल्य हो [स० चि०]।

१५४—चतुर्थ में गुरु, लग्न में उच्च का सूर्य, दूसरे में चन्द्र. तोसरे में शुक्र और राहु, बारहवें बुध हो, लाभ या छठे घर में शनि हो तो चक्रवर्ती राजा हो [मान०]।

१५५—चतुर्थ में उदय गुरु हो, वृष में शुक्र हो और ग्रह नीच शत्रु नवांश से रहित, शत्रु हीन, प्रकाश वान कांति वाले हों तो देव तुल्य बलवान् क्रोध रहित हो [जा० म०]।

१५६—पञ्चम में गुरु और दशम में चन्द्र हो तो बड़ा बुद्धिमान्, तपस्वी, जितेन्द्रिय राजा हो [मान०]।

१५७—लग्न से पञ्चम में गुरु नवम में चन्द्र तृतीय में सूर्य हो तो कुबेर समान राजा हो [जा० सं]।

१५८—गुरु पञ्चम भाव में हो चन्द्र उससे केन्द्र में हो और यदि लग्न स्थिर राशि में हो और दशम हो तो राजा ही [स० चि०]।

१५९—पञ्चम भाव में गुरु शुक्र हो अस्त न हो, सूर्य से रहित मकर में मंगल हो, नवम में शनि हो तो प्रतापी राजा हो [शंभु०]।

१६०—लग्न से पंचम या नवम गुरु व सूर्य हो अष्टम में मंगल हो तो धनवान् राजा हो [ल० चं०]।

१६१—छठे भाव में गुरु हो, कर्क में सूर्य चन्द्र हो, बुध उच्च का हो लग्न में कोई ग्रह वक्री हो तो राजाधिराज हो जा० भ०]।

१६२—छटे भाव में गुरु लग्न में चन्द्र हो तो विख्यात कुल दीपक हो [मान०]।

१६३—गुरु सप्तम हो साथ में त्रिकोणेश भी हो और लग्नेश को दृष्टि हो तो राजा के तुल्य हो [स० चि०]।

१६४—सप्तम गुरु, लग्न में मेष का बुध, चतुर्थ चन्द्र, दशम शुक्र हो तो कीर्तिमान् राजा हो [शंभु]।

१६५—सप्तम गुरु, लग्न में वृष का चन्द्र, चतुर्थ में सूर्य, दशम में शनि हो तो बड़ी सेना युक्त राजा हो [जा० भ०]।

१६६—सप्तम में गुरु, लग्न में कन्या का बुध, तीसरे सूर्य मंगल, छठे शनि, चतुर्थ शुक्र हो तो महाराजा हो उसे सब मस्तक नवावें [शंभु]।

१६७—सप्तम में गुरु चन्द्र हो, लग्न में कन्या का बुध हो, पंचम शनि मंगल, दशम शुक्र हो तो राजा हो [वृ० जा०]।

१६८—सप्तम गुरु, लग्न में मंगल शनि, चतुर्थ चन्द्र, नवम शुक्र, दशम सूर्य, लाभ में बुध हो तो राज वंशी राजा हो अन्य धनी हो [वृ० जा०]।

१६९--सप्तम में गुरु, लग्न में बुध, चतुर्थ में पूर्ण चन्द्र कर्क का, दशम में शुक्र हो तो पृथ्वी का राजा हो [जा० पारि०]।

१७०—गुरु अष्टम में हो और शनि दशम में हो तो ३० वर्ष में राज्य धन प्राप्त करे [जा० सं०]।

१७१—गुरु नवम स्थान में हो तो मंत्री या राजा तुल्य हो [शंभु]।

१७२—गुरु नवम में हो सूर्य से दृष्ट हो तो उपरोक्त फल [जा० स०]।

१७३—बली गुरु व शुक्र नवम में हो, बली बुध लग्न में हो कोई ग्रह चतुर्थ में हो शेष ग्रह ९,२,३,६,१०,११ भाव में से किसी में हो तो राजपुत्र धर्मात्मा राजा हो अन्य धनी हों [वृ० जा०]।

१७४—चेष्टाबली गुरु बुध शुक्र नवम में हो मित्र ग्रहों से युक्त या दृष्ट हो तो प्रतापी राजा हो [जैमिनि]।

अन्यमत–नवम में चेष्टाबली गुरु बुध शुक्र चन्द्र मित्र ग्रहों से युक्त या दृष्ट हो तो प्रतापी राजा हो।

अन्यमत – नवम में गुरु बुध शुक्र चन्द्र प्रकाशित किरणों वाले हों अस्त न हों, मित्र ग्रहों से युक्त या दृष्ट हो तो बड़ा राजा हो जनता देव तुल्य पूजे [फल०]।

१७५–नवम में गुरु, पंचम में बुध, कर्क में चन्द्र हो तो राजयोग होता है (जैमिनि)।

अन्यमत—नवम में कोई शुभ ग्रह हो पंचम में बुध, कर्क में चन्द्र हो तो राजयोग होता है (मान०)।

१७६—नवम या चतुर्थ में गुरु शुक्र और नवमेश हो तो राजा, सेनापति या धनी हो (जा० सं०)।

१७७—दशम में गुरु शुक्र बुध चन्द्र चारों हो तो उसके सर्व कार्य सिद्ध हों राज मान्य हो, राजाओं में पूज्य हो (मान०)।

१७८—दशम में गुरु स्वगृही हो या बुध या शुक्र स्वगृही हो और पूर्ण चन्द्र भी हो तो कुलानुमान राजा हो (शंभु०)।

१७९—दशम में गुरु, धन भाव में शुक्र, छठे राहु हो तो पराक्रमी राजा हो (मान०)।

१८०—दशम और लग्न में गुरु शुक्र हो या लाभ में बुध शुक्र दोनों हों और मेष का सूर्य हो तो राजा हो (जा० सं०)।

१८१—दशम में गुरु या शुक्र हो कन्या लग्न में बुध, सप्तम में चन्द्र पंचम में मंगल हो तो राजा हो या रानी का कामदार हो (प्रा० यो०)।

१८२—दशम या लाभ में गुरु चन्द्र शनि, लग्न में बुध, तृतीय मंगल, चतुर्थ सूर्य शुक्र हो तो साहूकार या राजा के घर का कार्यवाही हो (प्रा० यो०)।

१८३—व्यय में गुरु, तृतीय में चन्द्र, षष्ट में शुक्र, लाभ में बुध हो लग्न में मकर का शनि हो तो एक छत्र राज्य भोगे (शंभु०)।

१८४—अन्यमत—व्यय में गुरु, तृतीय में चन्द्र, छठे मंगल, नवम बुध हो मकर का शनि लग्न में हो तो विख्यात गुण वाला राजा हो (वृ० जा०)।

१८५—व्यय में गुरु, तृतीयेश होकर शनि लाभ में हो सूर्य लाभ में हो, गुरु लग्नेश होकर बारहवें हों तो भूमि फल राजा हो (जा० पारि०)।

१८६—बारहवें गुरु, उच्च का सूर्य लग्न में, दूसरे चन्द्र, तीसरे शुक्र, चतुर्थ में राहु, लाभ में बुध, षष्ट में शनि हो तो राज कुल में उत्पन्न राज समूह में सम्राट पद को पाता है (जा० सं०)।

१८७—बारहवें गुरु, ग्यारहवें शनि व सूर्य या तृतीयेश हो लग्न से ग्यारहवें लग्नेश हो या गुरु से लग्नेश बारहवें हो तो राजाओं का राजा हो [स० चि०]।

१८८—मेष का गुरु, सातवें चन्द्र, चतुर्थ या दशम में शुक्र हो तो प्रतापी कीर्तिमान् राजा हो [जा० भ०]।

१८९—मेष का गुरु और सूर्य लग्न में हो दशम में मंगल हो और नवम में शुक्र बुध चन्द्र हो तो बड़ा राजा हो [शंभु०]।

१९०—मेष में गुरु शुक्र शनि हो, लगभग पूर्ण होकर चन्द्र उच्च का हो सूर्य पर मंगल की दृष्टि हो, मेष राशि उदय हो रही हो तो बहुत सेना युक्त राजा हो [फल०]।

१९१—मेष का गुरु, धन भाव में चन्द्र बुध, दशम में राहु शुक्र हो तो राज योग होता है [मान०]।

१९२—सिंह में गुरु और ७, ४, ९, १० राशि में सब ग्रह हों तो देश का भोगी राजा हो [जा० सं०]।

अन्यमत—सिंह में गुरु और ७, ८, ९, १० राशि में सब ग्रह हों तो देश का भोगी राजा हो [मान०]।

१९३—सिंह का गुरु, कन्या का शुक्र, मिथुन का शनि और चतुर्थ में स्वक्षेत्री मंगल हो तो राजा हो [ल० चं०]।

१९४—सिंह का गुरु, कन्या में शनि चन्द्र, कुंभ में राहु, मकर का मंगल हो तो विश्व का पालन करता हो [मान०]।

१९५—वृष में गुरु चन्द्र हो और बली लग्नेश त्रिकोण में हो यदि शनि मंगल से दृष्ट न हो तो राजा हो [जा० पा०]।

१९६—वृष लग्न में गुरु चंद्र हो, शनि, सूर्य, बुध मंगल शुक्र ये १, २, ६ व १२ स्थान में हों तो राजा हो या धनवान् हो [प्रा० यो०]।

१९७—वृष में गुरु मिथुन में चन्द्र, मकर का मंगल, सिंह का शनि कन्या में बुध सूर्य, तुला में शुक्र हो तो महाराजा होता है ८ या १२ वर्ष जीता रहे तो विश्व का पालक सार्वभौम राजा होता है [ल० चं०]।

१९८—मिथुन का गुरु, तुला का शनि, लग्न में वृष का चन्द्र हो मीन राशि में सूर्य मंगल बुध शुक्र हो तो राजपुत्र राजा हो अन्य धनी हो (वृ० जा०)।

१९९—वृश्चिक का गुरु, कुम्भ का शनि, सिंह का सूर्य हो, वृष का चन्द्र लग्न में हों तो अवश्य राजा हो या वकील, मजिस्ट्रेट या व्यापारी हो [वृ० जा०]।

२००—धनु राशि में गुरु चन्द्र हो, लग्न में बुध या शुक्र उच्च का हो मकर का मङ्गल हो तो इन्द्र के समान धरती का स्वामी हो। इसमें १२ और ६ लग्न से २ भेद हो जाते हैं [जा० भ०]।

२०१—धनु राशि में गुरु, लग्न में मेष का सूर्य, सप्तम में शनि चन्द्र हों तो राजा हो [वृ० जा०]।

२०२—धनु राशि में गुरु, लग्न में मेष का सूर्य चन्द्र हो, मकर का मंगल कुम्भ का शनि हो तो राजवंशी राजा हो [वृ० जा०]।

२०३—अन्य मत से धनु का गुरु, लग्न में सिंह का सूर्य, मेष का चन्द्र, मकर का मंगल, कुम्भ का शनि हो तो राजाओं का राजा हो [शंभु०]।

२०४—धनु राशि में गुरु, लग्न में मेष का चन्द्र, मङ्गल उच्च का शनि कुम्भ का हो, सूर्य अर्द्धोदय स्थिति में हो तो राजपुत्र राजा हो [जा० सं०]।

२०५—धनु के ३ अंश पर गुरु हो, कुम्भ के १५° पर शनि हो, कर्क के १०° पर चन्द्र हो तो राजा हो। इसी योग में चन्द्रमा सिंह का हो तो भी राजा हो [शंभु०]।

२०६—धनु में गुरु, कर्क में बुध हो दोनों सूर्य और मंगल से दृष्ट हो तो राजा हो [जा० भ०]।

२०७—धनु का गुरु नवम भाव में पंचमेश या शुक्र से युक्त हो तो राजा हो [वृ० पा०]।

२०८—धनु का गुरु तुला में शुक्र व सूर्य हो, लग्न में मकर का शनि, मीन का चन्द्र, मिथुन का मंगल, कन्या का बुध हो तो कीर्तिमान् राजा हो या राज घराने में न्यायाधीश डाक्टर आदि हो धर्मशील व उदार हो [प्रा० यो०]।

२०९—धनु का गुरु या चन्द्र, मकर या मंगल, अपने उच्च में शुक्र या बुध हो, मीन लग्न हो तो राजयोग होता है [प्रा० यो०]।

२१०—धन का गुरु, चन्द्र या शुक्र हो, कन्या लग्न हो, मकर का शनि और मंगल हो तो राजकुल के वाहन का स्वामी हो या कामदार दुकानदार आदि हो [प्रा०यो०]।

२११—धन का गुरु चन्द्र शुक्र युक्त हो, लग्न में उच्च का बुध हो मकर में शनि मंगल हो तो सेवा वाहन युक्त राजा हो [जा० भ०]।

२१२—धन का गुरु सप्तम, व उच्च का सूर्य लग्न में हो या मंगल चन्द्र के साथ उच्च का हो या शनि चन्द्रयुक्त उच्च का हो तो पराक्रमी राजा हो [प्रा०यो०]।

२१३—११ राशि में गुरु, मेष में सूर्य, मकर में मंगल हो तो राजा हो [जा.पारि.]।

२१४—मकर में गुरु, कुंभ में सूर्य, मीन में मंगल, धन में शुक्र हो तो ३० वर्ष में सब काम करने में समर्थ हो [ल. चं.]।

२१५—मीन में गुरु शुक्र और चन्द्र तीनों हों तो राजा हो अनेक पुत्र हों [मान.]।

२१६—मीन लग्न में गुरु शुक्र हो, मेष का सूर्य मकर का मंगल हो तो छत्रधारी राजा हो [मान.]।

२१७—मीन में गुरु, धन भाव में शुक्र और मंगल हो, कुम्भ में बुध या सूर्य के साथ नीच का चन्द्र हो तो विभवयुक्त राजा हो दान भोग में सामान्य विख्यात हो [मान.]।

२१८—मीन में गुरु, धन भाव में शुक्र मंगल, तुला में बुध हो और शनि चन्द्र नीच स्थिति में हों तो राजयोग होता है। धन रहित राजा हो, दाता, योगी, पूज्य और मंडल भर का नायक हो [ल. चं.]।

२१९—मीन में गुरु चन्द्र शुक्र हों, लग्न में उच्च का बुध हो, वक्री शनि मकर का हो तो राजा हो [जैमिनि]।

२२०—मीन में गुरु चन्द्र, मिथुन में शुक्र, लग्न में कन्या का बुध, मकर का मंगल शनि हों तो शत्रुओं का नाशक बड़ा राजा हो [जा. भ.]।

२२१—लग्न लाभ या दशम में गुरु, शनि, मंगल हों, चन्द्र से केन्द्र में लाभेश, नवमेश, द्वितीयेश में से कोई हो और यदि गुरु २, ५ या ११ भाव का स्वामी हो तो वह समाज का स्वामी हो [फल०]।

शुक्र के योग (गुरु के योग छोड़कर)

२२२—उच्च में शुक्र बुध हो तो राजाधिराज हो [जा० सं०]

२२३—केन्द्र में शुक्र बुध हो तो वह वाहन, सेवक, रत्न, बगीचा आदि से परिपूर्ण समुद्र तट का रहने वाला सत्यवादी राजा होता है [जा० सं०]।

२२४—केन्द्र में शुक्र हो तो सुन्दर दीर्घायु सब में समर्थ धन सुवर्ण वाहन से पूर्ण हो [मान०]।

२२५—अकेला शुक्र केन्द्र, लाभ, जन्म राशि में, तीसरे स्थान में या त्रिकोण में हो तो विद्या और विज्ञान से युक्त विख्यात कीर्ति, दानी, मानी, शूरवीर, अश्वविद्या जानने वाला, हाथियों से सेवित राजा हो [मान०]।

२२६—शुक्र बुध सूर्य अपने नवांश में होकर चन्द्र से ३,६,८, घर में हों, सूर्य मूल त्रिकोण या उच्च में हो तो अन्य कुल का भी राजा हो [जा० पारि०]।

२२७—लग्न या दशम में शुक्र बुध हो तो बहुत धनवान् हो [प्रा० यो०]।

२२८—दूसरे भाव में शुक्र युक्त बली लग्नेश हो वह उसका नीच या शत्रु घर न हो तो राजा हो [फल०]।

२२९—२, ३, ४ भाव में कहीं शुक्र हो और ६-१० भाव में सब ग्रह हों तो राजयोग होता है। तुच्छ कुल का भी राजा हो [जा० सं०]।

२३०—द्वितीय भाव में शुक्र हो शत्रु या नीच घर में न हो, लग्नेश बली हो तो राजा हो (जा० पारि०)।

२३१—३,११ घर में परस्पर दृष्ट शुक्र चन्द्र हो या कहीं पर परस्पर दृष्ट हो तो राजयोग होता है (बृ० पा०)।

परस्पर दृष्टि तृतीय एकादश में, यदि एक स्थिर में दूसरा चर में हो तो राशि दृष्टि वश परस्पर दृष्टि होती है जैसे एक वृष में दूसरा कर्क में।

२३२—चतुर्थ में शुक्र, तीसरे में सूर्य, २ या ५ में बुध हो पर कोई नीच के ग्रह न हों जो १० या १२ भाव में न बैठे हों तो समुद्र पर्यन्त भूमि का पालन करता राजा होता है (मान०)।

अन्यमत—४ घर में शुक्र, ३ में सूर्य, २ या ५ घर में बुध हो पर नीच दो शत्रु गृही ग्रह न हों तो उपरोक्त फल हो (जा० सं०)।

२३३—चतुर्थ में स्वगृही शुक्र, नवम में चन्द्र शेष ग्रह सूर्य मंगल बुध गुरु शनि ३,१,११ भाव में यथा सम्भव हों तो राजवंशी राजा हो अन्य धनी हो। इसमें कुम्भ और कर्क लग्न से २ भेद हो जाते हैं (वृ० जा०)।

२३४—चतुर्थ में शुक्र बुध हो, तीसरे सूर्य शेष ग्रह पंचम में हों पर शत्रुगृही न हों तो एक छत्रधारी राजा हो (जा० भ०)।

२३५—चतुर्थ में शुक्र, दशम में मंगल सूर्य शनि युक्त हो तो राजा हो (मान०)।

२३६—चतुर्थ में शुक्र और सूर्य हो तो राजयोग होता है [फल०]।

२३७—अष्टम में शुक्र, लग्न में मकर का शनि, सप्तम सूर्य चन्द्र, लाभ में मंगल हो तो राजवंशी राजा हो [जा० भ०]।

२३८—अष्टम में शुक्र, लग्न में शनि और चंद्र हो तो मानी, बहुत मित्रों वाला, अभिमानी, स्त्री में रत राजा हो [मान०]।

२३९—अष्टम में शुक्र, नवम में सूर्य, पंचम मंगल, छठे राहु हो तो कुल का पालक हो [ल० चं०]।

२४०—नवम शुक्र, दशम पूर्ण चन्द्र, लाभ में शेष ग्रह हों तो राजवंशी राजा हो [शंभु०]।

२४१—दशम में मित्रांश में शुक्र सूर्य चन्द्र बुध हो, शत्रु गृही, अस्त या नीच में न हो तो हाथी आदि युक्त राजा हो [जा० पारि०]।

२४२—दशम में स्वगृही शुक्र या मंगल हो शुभ ग्रहों से दृष्ट हो तो राजा हो [शंभु०]।

२४३—लाभ या व्यय में शुक्र हो, धनु लग्न में बली सूर्य हो, दशम में चन्द्र और मंगल हो तो इन्द्र के समान राजा हो। यह योग पूष के महीने में होना सम्भव है [जा० पारि०]।

२४४—बली शुक्र ११ या १२ भाव में हो तो राजा हो [जा० पारि०]।

२४५—व्यय में मीन का शुक्र बुध हो लग्न में सूर्य, द्वितीय में चन्द्र, तीसरे में राहु हों तो राज योग होता है [मान०]।

२४६—वृष का शुक्र, तुला का चन्द्र हो शेष ग्रह क्रम से १,११,९ राशियों में हों तो साहूकार या जज हो (प्रा० यो०)।

२४७--वृष में शुक्र उदय हो और ग्रह नीच, शत्रुगृही या अस्तंगत न हों बलवान् हों शत्रुयुक्त न हों तो बलवान् देव तुल्य क्रोध रहित राजा हो [जा० भ०]।

२४८--कन्या का शुक्र राहु मंगल शनि हो तो कुवेर से भी अधिक धन मिले [मान०]।

२४९--कन्या राशि में शुक्र बुध हो, मकर लग्न हो, शुक्र नीच का हो बुध नीच भंग और राजयोगकारी है उसके बल से शुभ फल देगा [ज्यो० शा०]।

२५०--तुला में शुक्र, मकर लग्न में शनि, सिंह का सूर्य, मिथुन में बुध, मेष का मंगल, कर्क में चन्द्र हो तो समुद्र तक पृथ्वी का राजा हो (वृ० जा०)।

२५१--तुला का शुक्र हो, कर्क लग्न हो, मीन का चन्द्र हो शेष ग्रह ५,४ या २ राशियों में हों तो राज कार्यवाही या साहूकार हो (प्रा० यो०)।

२५२--तुला का शुक्र हो, सूर्य स्वगृही हो, मिथुन में शनि हो तो राजयोग होता है (मान०)।

२५३--मीन पर शुक्र, व्यय में बुध, लग्न में सूर्य, धनभाव में चन्द्र, तीसरे में राहु हो तो राजयोग होता है (जा० सं०)।

२५४--मीन पर शुक्र, व्यय में बुध, लग्न में सूर्य, धन में राहु और तीसरे भाव में मंगल हो तो राजयोग होता है (ल० चं०)।

२५५--मीन का शुक्र केन्द्र में हो तो विद्या कला तथा गुणों से सुशोभित, भोगों से पूर्ण अपने देश रियासत शहर या ग्राम आदि में दौरा करने से श्रान्त, सम्पूर्ण मंडल भर में जिसका शासन हो ऐसा होता है (मान०)।

२५६--लग्न में मीन का शुक्र प्रकाशवान् हो तो विद्या कला अनेक भोगों से युक्त देशकी अधिकता और पुरजनों में विराजमान हो (जा० सं०)।

२५७-लग्न में मीन राशि में मीन नवांश में शुक्र हो तो राजा हो (जा० पारि०)।

२५८ --त्रिक भाव को छोड़ कर अन्य भाव में शुक्र लग्नेश युक्त हो तो राज पूज्य हो इच्छित फल प्राप्त करे (जा० लं०)।

२५९--१,२,७,१२ राशि में शुक्र हो तो राजाओं से मान पाने वाला कला कौतुक का ज्ञाता हो आयु २३ वर्ष (मान०)।

२६०--१,७,१२ राशि में शुक्र हो तो राज मान्य कला कौशल युक्त हो ३ पुत्र हों २२ वर्ष में भोग को प्राप्त करता है (जा० सं०)।

२६१--शुक्र कर्क का हो, लग्नगत क्रूर ग्रह हो गुरु से दृष्ट हो तो देव ब्राह्मणों का भक्त हो, महल, बावली, नगर बनाने वाला राजा हो (शंभु०)।

२६२--शुक्र अश्विनी, कृतिका, पुष्य, रेवती इन नक्षत्रों में हो तो राजा हो (जा० भ०)।

२६३--शुक्र अश्विनी नक्षत्र में लग्न में हो और सभी ग्रह उसे देखते हों तो राजा हो राज कुल में अग्रज शत्रु संहारक बहुत स्त्रियों से विलास करने वाला हो (जा० सं०)।

२६४--अश्विनी में शुक्र हो तो राजा होता है (जा० भ०)।

२६५--अश्विनी नक्षत्र में शुक्र लग्न में हो या अधिक ग्रहों की दृष्टि हो तो शत्रु नाशक राजा हो (फल०)।

बुध से राजयोग (गुरु और शुक्र का फल छोड़कर)

२६६—केन्द्र में बुध हो और चन्द्र जिसकी राशि या नवांश में हो वह केन्द्र कोण या लाभ में हो तो राजाओं का राजा हो (स० चि०)।

२६७—बुध गुरु की दृष्टि हो और पूर्ण बली लग्नेश केन्द्र में हो तो वह राजा हो जिसकी आज्ञा सब मानें (स० चि०)।

२६८—बुध को गुरु देखता हो तो वह राज कुल में उत्पन्न राजा विचित्र सम्पत्ति युक्त हो (शंभु०)।

२६९—बुध सूर्य एक भाव में हों तो बुधादित्य योग होता है वह धर्मात्मा पंडित धनवान्, बहु पुत्रवान्, भृत्यों सहित जितेन्द्रिय हो (जैमिनि)।

२७० - बुध सूर्य के साथ अस्त होकर भी यदि स्वगृही या मूल त्रिकोण में हो तो प्रत्येक विद्या का जानने वाला हो (जा० पारि०)।

२७१—लग्न में बुध, नवम पंचम में शुभ ग्रह, शेष ग्रह उपचय में हो तो बड़ा साहूकार जज आदि हो (प्रा० यो०)।

२७२—दूसरे भाव में बुध मंगल हो तो राज योग होता है (फल०)।

२७३—चतुर्थ भाव में बुध और सूर्य हो, दशम में शनि चन्द्र, लग्न में मंगल हो तो राजा हो (जा० पारि०)।

२७४—दशस में बुध सूर्य, षष्ठ में मंगल राहु हो तो राजा हो (जा० सं०)।

२७५—लाभ में बुध, मेष में सूर्य, कर्क लग्न में चन्द्र हो तो डाक्टर हो (प्रा० यो०)।

२७६—बुध मिथुन के २१ अंश में हो, कुंभ के अंत्यांश अर्थात् कुंभ कुंभांशक (वर्गोत्तम) में चन्द्रमा हो या त्रिकोण में १२-१ राशि का मंगल हो तो राज वंशी राजा हो (शंभु)।

२७७—मिथुन के २१ वें अंश में बुध हो, त्रिकोण में चन्द्र कुंभ राशि के अष्टम नवांश में हो, मेष के ७ वें अंश में मंगल हो तो राजा हो (जा० भ०)।

२७८—कन्या राशि में बुध चन्द्र युक्त हो तो मगध देश का राजा हो (जा० भ०)।

२७९—कन्या में बुध हो, सिंह में सूर्य हो परन्तु शुक्र के नवांश में न हो तो नीच कुल का भी राजा हो। भाद्र मास में इस योग की संभावना रहती है (जा० पारि०)।

२८०—बुध, चन्द्र मंगल शनि क्रमशः ६, १२, ४, ९, १० राशि में हों तो राजा हो (जा० पारि०)।

चंद्र का राजयोग (उपरोक्त योग छोड़कर)

२८१—पूर्ण चन्द्र अकेला प्रधान बल से युक्त हो तो शत्रुओं का दमन कर्ता राजा हो (जा० पारि०)।

२८२—चन्द्र उच्च में हो तो सहस्रपति हो, यदि नीच में या अन्य राशि में हो तो अनुपात से फल जानना।

२८३—षड़ वर्ग में शुभ ग्रह उच्च के समान फल देते हैं (जा० सं०)।

२८४—चन्द्र वर्गोत्तम नवांश में हो या लग्न में वर्गोत्तम नवांश उदय हो रहा हो, चन्द्र को छोड़ कर और किसी ग्रह से दृष्ट हो तो नीच कुल का राजा हो (फल०)।

२८५—चन्द्र वर्गोत्तम होकर वली ग्रह से दृष्ट हो लग्न में कोई पाप ग्रह न हो तो सुन्दर शरीर हो और राजाधिराज हो (फल०)।

२८६—वर्गोत्तम चन्द्र पुष्य, अश्विनी या कृतिका में हो तो धरती का राजा हो (शंभु०)।

२८७—पूर्ण चन्द्र वर्गोत्तम हो तो शक्ति मान राजा हो बहुत वाहन युक्त कीर्तिमान् हो (फल०)।

२८८ – पूर्ण चन्द्र वर्गोत्तम नवांश में हो और उस पर ३ या अधिक ग्रहों की दृष्टि हो तो राजा हो (वृ० पा०)।

२८९—वली चन्द्र केन्द्र त्रिकोण में हो तो दोनों कुल को आनन्द देनेवाला पृथ्वी का राजा होता है। सर्व विघ्न नाश होते हैं (जा० सं०)।

२९०—केन्द्र या त्रिकोण में वली चन्द्र हो उस पर गुरु की दृष्टि हो तो धन शक्ति और प्रभाव में राजा के बराबर हो। पूर्ण चन्द्र हो, शुक्र के गृह या अंश में हो कोई पाप दृष्टि या योग न हो और गुरु या शुक्र से दृष्ट हो या उच्च में हो तो चन्द्र बलवान् होता है (जैमिनि)।

२९१—चन्द्र का नवांशेश लग्न से केन्द्र या कोण में हो या बुध से केन्द्र में हो तो राजा के बराबर हो राजा द्वारा मान प्राप्त करे (स० चि०)।

२९२—पूर्ण वली चन्द्र लग्न से अतिरिक्त ४,७,१० भाव में हो तो विक्रम, सेना, वाहन युक्त राजा हो (शंभु०)।

२९३—पूर्ण वली चन्द्र केन्द्र में हो उस पर गुरु शुक्र की दृष्टि हो तो राजा हो (जा० पारि०)।

२९४—पूर्ण वली चन्द्र लग्न को छोड़कर केन्द्र में उच्च का हो तो राजा हो (जा० भ०)।

२९५—जन्म राशि या लग्नेश वक्री होकर केन्द्र में हो तो नीच कुल में भी उत्पन्न हुआ, उदार पवित्र आचरण करने वाला राजा हो (जैमिनि)।

२९६—केन्द्र में चंद्रमा त्रिकोण में सूर्य हो तो दास कुल में भी उत्पन्न हुआ राजा हो (मान०)।

२९७—केन्द्र में चन्द्र हो तो रूपवती स्त्री मिले धन सुवर्ण रत्न युक्त चन्दन लगाने वाला हो (मान०)।

२९८—पूर्ण चन्द्र सूर्य के नवांश में हो शुभ ग्रह केन्द्र में पाप रहित हो तो कई हाथी युक्त राजा हो (फल०)।

२९९—त्रिकोण या लाभ में चन्द्र हो तो दोनों कुलों को आनन्द दायक, अंधकार नाश करने में दीपक के समान हो (मान०)।

३००—४,१०,११ भाव में चन्द्र शनि युक्त हो तो राज कुल में उत्पन्न होने वाला राजा हो। अन्य राजा के सदृश धनी हो (जा० पारि०)।

३०१—६,७,८ भाव में चन्द्र हो उसे सूर्य को छोड़कर सब ग्रह देखते हों तो दीर्घायु राजा हो (मान०)।

३०२—६,७,८ भाव में चन्द्र हो वृश्चिक राशि में न हो और सब ग्रहों से दृष्ट हो तो दीर्घायु राजा हो (ल० चं०)।

३०३—६,८ भाव में चन्द्र हो सूर्य को छोड़कर सब ग्रह देखते हों तो दीर्घायु राजा हो (जा० सं०)।

३०४—चन्द्रमा सूर्य से युक्त हो उच्चादि वर्ग में हो सप्तम भाव में हो शुभाशुभ ग्रह से दृष्ट हो तो अति चञ्चल राजा हो या राजा के समान हो (जा० पारि०)।

३०५—उपचय में चन्द्र हो और सब ग्रह अपने-अपने घर या नवांश में या केन्द्र में हों और पाप ग्रह निर्बल होकर कहीं भी बैठे हों तो विशेष कर सेना से युक्त इन्द्र के समान राजा हो (मान०)।

३०६—चन्द्र उपचय में हो तो इन्द्र के समान राजा हो (जैमिनि)।

३०७—उपचय में स्वगृही या स्वनवांश का चन्द्र हो शुभ ग्रह केन्द्र में हो पाप ग्रह निर्बल हों तो इन्द्र के समान बली राजा हो (जा० सं०)।

३०८—लग्न में चन्द्र हो लग्नेश नवम-दशम में हो तो राजा हो (जा० पारि०)।

३०९—लग्न में पूर्ण चन्द्र हो, ३ शुभ ग्रहों से दृष्ट हो तो शत्रु गृही या नीच के वर्ग में न हो परन्तु अपने वर्ग में होने से बली हो तो शत्रुओं को दमन करता राजा हो (फल०)।

३१०—लग्न में जल राशि या अंश में चन्द्र हो या अपने वर्ग में हो तो प्रजा की भलाई करने वाला राजा हो (फल०)।

३११—धन भाव में चन्द्रमा नवमेश युक्त हो और समस्त ग्रह लग्न से ६ भाव तक हों तो राजा हो (स० चिं०)।

३१२—चतुर्थ में चन्द्र, छठे मङ्गल, अष्टम शनि हो तो राजा के दर्शन करने वाला हो (जा० सं०)।

३१३—२ या ३ भाव में चन्द्र मंगल युक्त हो और राहु पंचम हो तो राजा के बराबर हो (स० चिं०)।

३१४—सप्तम में चन्द्र सूर्य युक्त हो, मकर में बली मंगल, ९ या १० भाव में शनि हो तो चञ्चल चित्त वाला राजा हो (जा० पारि०)।

३१५—नवम में चन्द्र हो, लग्नेश उपचय में हो शुभ ग्रह बलवान् होकर केन्द्र में शुभ वर्ग में हो तो राजा हो (जा० पारि०)।

३१६—नवम में पूर्ण चन्द्र युत शनि व मंगल हो या दोनों हों तो राजा हो (शंभु)

३१७—नवम में पूर्ण चंद्र सूर्य मंगल युत बल युक्त हो शुभ दृष्ट हो तो राजा या मंत्री हो (जा० भ०)।

३१८—पूर्ण चन्द्र नवम में उच्च का या मित्र गृही हो लग्न से २ या १० स्थान में शनि और मंगल हों तो राजा हो (जा० पा०)।

३१९—नवम में सूर्य और चन्द्र दोनों हों राहु बारहवें हो तो राजा के समीप रहने वाला हो (जा० सं०)।

३२०—दशम भाव में चन्द्र हो व्यय भाव में कोई शुभ ग्रह हों और क्रूर ग्रह की राशि का चन्द्र हो तो राज्य प्राप्ति हो (मान०)।

३२१—दशम में चन्द्र हो नवम में भी शुभ ग्रह हो पंचम में भी शुभ ग्रह हो तो राज योग होता है (ल० चं०)।

३२२—दशम में पूर्ण चन्द्र हो शुभ ग्रहों से युक्त व दृष्ट हो तो राजा हो (जा०पा०)।

३२३—प्रकाशित चन्द्र पर उच्च या स्वगृही ग्रह की दृष्टि हो पूर्ण चन्द्र लग्न को छोड़कर केन्द्र में हों तो नीच कुल का भी वाहन युक्त राजा हो (जा० भ०)।

३२४—पूर्ण चन्द्र को गुरु, बुध, शुक्र तीनों देखते हों तो राज कुल में उत्पन्न हुआ राजा हो (जा० भ०)।

३२५—चन्द्रमा लग्नेश के अतिरिक्त ग्रह से युक्त हो और बुध गुरु शुक्र से दृष्ट हो तो राजा हो (जा० पा०)।

३२६—चन्द्र पर नवमेश की दृष्टि हो और सब ग्रह लग्न से ६ भाव तक हों चन्द्र भी इसी के भीतर हो तो राजा हो (स० चि०)।

ग्रह नीच का हो तो राज योग में अन्तर पड़ेगा।

३२७—चन्द्र पर उच्चगत लग्नेश की दृष्टि हो तो वह हाथी घोड़े सेनाओं से परिपूर्ण अनेक शत्रुओं को जीतने वाला राजा हो (जा० पा०)।

३२८—चन्द्र पर सूर्य बुध की दृष्टि हो और सूर्य पर चन्द्र की दृष्टि हो तो पृथ्वी पति राजा हो (मान०)।

३२९—चन्द्र पर बुध की दृष्टि हो और सूर्य पर चन्द्र की दृष्टि हो या उसके मित्र ग्रह की दृष्टि हो ता राजा हो (जैमिनि)।

३३०—चन्द्र जिस राशि में हो उसका स्वामी उसे देखे या उसके मित्र ग्रह देखें तो राजा हो (जैमिनि)।

३३१—लग्न चन्द्रमा समस्त ग्रहों से दृष्ट हो तो राज्य देने वाले होते हैं (शंभु०)।

३३२—चन्द्र सब ग्रहों से दृष्ट हो तो राज कुल में उत्पन्न राजा हो। अन्य कुल का भी कुल में श्रेष्ठ धन अन्न नीतियुक्त हो (शंभु०)।

३३३—वृष के चन्द्र पर गुरु और शुक्र की दृष्टि हो तो राजा हो (जा० भ०)।

३३४—वृष लग्न में चन्द्र हो उसे अन्य ६ ग्रह देखें तो राजा हो (जा० पा०)।

३३५—रात्रि का जन्म हो दशम भाव में कर्क का चंद्र हो शुभ ग्रह अस्त नीच शत्रु गृही न हों और ३, ६, ११ घर में हों या परमोच्च के हों या सब केन्द्र में हों तो राजाधिराज हो (फल०)।

३३६—पड़ वर्ग शुद्धि चन्द्रमा कर्क का पुनर्वसु नक्षत्र पर हो या उच्च पंचम नवम में हो तो समुद्र तक धरती का राजा हो (जा० भ०)।

३३७—कर्क का चन्द्र सिंह का सूर्य हो दोनों गुरु से दृष्ट हों तो राजा हो (शंभु०)।

३३८—कर्क का चन्द्र हो, लग्न में सूर्य, शनि कुम्भ में हो शुक्र से दृष्ट हो तो राजा हो (जा० भ०)।

३३९—कर्क का चन्द्र हो लग्न में मकर का मंगल हो तो राजा हो (जा० पा०)।

३४०—कर्क का चन्द्र हो शुभ ग्रह युत या दृष्ट हो और सभी ग्रह शीर्षोदय राशि ३, ५, ६, ७, ८, ११ में हों तो राजा हो (जा० पा०)।

३४१—कर्क का चन्द्र मीन का सूर्य हो तो राजा हो (जा० पा०)।

३४२—कर्क का चन्द्र हो सब शुभ ग्रह पंचम में या नवम में हों तो राजयोग होता है (जा० सं०)।

३४३—कन्या लग्न में चन्द्र हो सिंह में सूर्य, मकर में मंगल, कुम्भ में शनि हो तो बड़ा तेजस्वी राजा हो (शंभु०)।

३४४—मीन लग्न में चन्द्र हो, सिंह का सूर्य, मकर का मंगल, कुम्भ का शनि हो तो तेजस्वी राजा हो (जा० भ०)।

३४५—मेष का चंद्र हो, सिंह का सूर्य लग्न में, कुम्भ का शनि, मकर में मंगल, धन का गुरु हो तो राजाओं का राजा हो (जा० भ०)।

३४६—धनु के पूर्वार्द्ध में चन्द्र और सूर्य हो, लग्न में बली शनि हो, मकर में मंगल हो तो महाराजा हो जिसे दूसरे प्रणाम करें (ल० चं०)।

३४७—धनु में सूर्य चन्द्र, मकर लग्न में मंगल या शनि हो या कुंभ लग्न में शनि हो तो (ये २ राजयोग हुए) मुंसिफ वकील बड़ा साहूकार आदि हो (प्रा० यो०)।

३४८—मकर लग्न में चन्द्र मंगल हो, सूर्य धन का हो तो राजा हो (वृ० जा०)।

३४९—मीन में पूर्ण चन्द्र हो मित्र ग्रहों से दृष्ट हो तो महत्वपूर्ण राजा हो (फल०) या सर्व ग्रहों की दृष्टि हो तो भी उपरोक्त फल हो (जा० भ०)।

३५०—मीन में पूर्ण बली चन्द्र मकर का मंगल कुम्भ का शनि हो तो राजा हो (जा० पारि०)।

३५१—पूर्ण चन्द्र गुरु के घर में हो शनि और मंगल १०,५ या १ भाव में हो तो राजा हो (जा० पारि०)।

३५२--बलवान् चन्द्र शुभ राशि में हो तो राजा हो (शंभु०)।

३५३—जलचर राशि का चन्द्र हो, लग्न में सूर्य, कुम्भ में शनि हो शुक्र से दृष्ट हो तो राजा हो (शंभु)।

३५४—मेष सिंह लग्न में चन्द्र सूर्य हों तो साधारण मजिस्ट्रेट आदि हो (प्रा०यो०)।

३५५--चन्द्रमा अधिमित्र के घर हो शुक्र की दृष्टि हो तो धनयुक्त राजा हो (फल०)।

३५६--चन्द्र अधिमित्र के अंश में हो और गुरु से दृष्ट हो तो पृथ्वी भर का राजा हो (फल०)।

चन्द्रमा स्वनवांश में हो गुरु से दृष्ट हो तो भी उपरोक्त फल हो (जा० भ०)।

३५७--रात्रि का जन्म हो चन्द्र मित्र नवांश में हो शुक्र से दृष्ट हो।

दिन का जन्म हो चन्द्रमा स्वनवांश या अधिमित्र नवांश में हो गुरु से दृष्ट हो तो राजा हो (जैमिनि)।

सूर्य से राज योग (उपरोक्त योग के अतिरिक्त)

३५८—उच्चाभिलाषी सूर्य त्रिकोण में हो तो नीच कुल का भी धन पूर्ण राजा हो (ल० चं०)।

३५९--सूर्य शनि उच्च में हों तो सब का स्वामी हो (जा० सं०)।

३६०--सूर्य अपने स्वअंश में और अपने स्वक्षेत्र में हो तो घोड़ा, हाथी युक्त राजा हो (फल०)।

३६१--सूर्य अपने अधिमित्र के घर में बैठा हो और चन्द्र से दृष्ट हो तो वह चोरों के समूह में श्रेष्ठ शील वाला निरन्तर उदार राजा होता है (जा० भ०)।

सूर्य अधिमित्र के अंश में हो चन्द्र से दृष्ट हो तो भी उपरोक्त फल हो (शंभु०)।

३६२--बली सूर्य पर पंचम स्थित गुरु की दृष्टि हो और एक भी उच्च का शुभग्रह केन्द्र में हो तो राजा हो (जैमिनी०)।

३६३--बलवान् सूर्य केन्द्र या त्रिकोण में हो तो सब दोषों को दूर कर बड़ी आयु वाला रोग भय से रहित करता है (जा० सं०)।

३६४--मेष का सूर्य चन्द्र युक्त हो तो राजा हो (जा० भ०)।

३६५—स्वगृही सूर्य नवम में हो तो भाई नहीं जीता जिये तो राजा तुल्य हो (ल० चं०)।

३६६--दशम में सूर्य और मंगल, सप्तम में शनि ये अच्छे हैं यद्यपि पाप ग्रह केन्द्र कोण में बुरे होते हैं परन्तु वे अच्छे हैं।

दशम में सूर्य मंगल हो, दशमेश केन्द्र में हो तो कड़ी आज्ञा देने वाला हाकिम हो (स० चिं०)।

३६७--५,३,१,७,४ राशि में से किसी में सूर्य हो मकर लग्न में शनि हो तो यशस्वी राजा हो (शंभु०)।

मङ्गल के राजयोग--(उपरोक्त योगों के अतिरिक्त)।

३६८--मंगल अनुराधा नक्षत्र या अश्विनी नक्षत्र में या अपने ऊँच मकर में या वर्गोत्तम नवांश में हो तो राजवंशी राजा हो अन्य वंशी धनी या मंत्री हो (जा०म०)।

३६९--मंगल उच्च का बली हो, सूर्य, चन्द्र या गुरु से युक्त हो तो समस्त भूमण्डल का पालक राजा हो (जा० पारि०)।

३७०--बली मंगल केन्द्र में हो सूर्य चन्द्र तथा गुरु से दृष्ट हो तो राजा हो (जैमिनि०)।

३७१--१, ५, ९, लग्न में मंगल हो मित्र ग्रहों से दृष्ट हो तो राजा हो मान पाये (फल०)।

३७२--सिंह में मंगल, मिथुन में राहु हो तो राजा पिता के सम्पूर्ण द्रव्य को प्राप्त हो हाथी घोड़ों का पालन करता राजा हो (मान०)।

३७३--मंगल दशम हो तो राजयोग होता है (जा० सं०)।

३७४--६, ११ भाव में मंगल और शनि हो, १, ७, १० भाव में बली शुभ ग्रह हो तो गुणवान् राजा हो (जा० पारि०)।

३७५--चतुर्थ भाव में मंगल युक्त चतुर्थेश हो या बली चतुर्थेश लाभ में हो, यदि मंगल की राशि में चतुर्थेश हो तो राज्य धन, सुख, वाहन, रत्न आदि प्राप्त हो (स० चिं०)।

शनि के योग (उपरोक्त के अतिरिक्त)

३७६--शनि उच्च का या स्वगृही केन्द्र में हो तो राजातुल्य हो (मान०)।

३७७--लग्न में शनि उच्च या स्वराशि का हो तो राजा के समान देश, पुर का स्वामी होता है। (जा० सं०)।

उक्त लक्षण हीन शनि हो तो दरिद्री, दुःख शत्रु से पीड़ित निंदित होता है अर्थात् शेष राशियों का शनि लग्न में हो तो अच्छा नहीं होता।

३७८--शनि उच्च या मूल त्रिकोण का केन्द्र या कोण में हो और दशमेश से दृष्ट हो तो राजा के तुल्य हो (स० चिं०)।

३७९--शनि उच्च या मूल त्रिकोण का केन्द्र या कोण में हो और लाभेश से दृष्ट हो तो राजा सम धनी हो (जा० पारि०)।

३८०--लाभ में शनि हो नवमेश से दृष्ट हो, दशम में राहु हो, लग्नेश नीच गत या नीच ग्रह युक्त न हो तो राजा के तुल्य हो (जा० पारि०)।

३८१--१,७,९,१०,११, १२ राशि के लग्न में शनि हो तो सुन्दर शरीर वाला राजा विद्वान् और पुर या ग्राम या मुखिया हो (जा० पारि०)।

३८२--७,९, १२ राशि के लग्न में शनि हो तो राजा कुल का राजा हो (ल० चं०)।

३८३--लग्न से दशम में बली शनि हो तो धनवान् बुद्धिमान्, शूरवीर राजा का मंत्री दण्ड देने वाला या नेता हो (मान०)

३८४--शनि दशमेश युक्त हो तो क्रूर आज्ञा देने वाला हाकिम हो (स० चि०)।

३८५--शनि दशमेश और अष्टमेश युक्त होकर केन्द्र या क्रूर अंश में हो तो कठोर आज्ञा देने वाला हो (स० चि०)।

३८६--दशमेश जिसके नवांश में हो वह शनि से सम्बन्धी हो षष्ठेश का भी सम्बन्धी हो तो उसके बहुत दास हों (स० चि०)।

३८७--दशम में शुभ ग्रह की दृष्टि हो या दशमेश शनि युक्त हो तो भी उपरोक्त फल हो (स० चि०)।

३८८--दशमेश का नवांशेश शनि युक्त हो या किसी केन्द्र में हो तो दास दासियों पर हुकूमत करे (स. चि.)।

३८९--शनि या राहु दशम में हो नवमेश से दृष्ट हो, लग्नेश नीच ग्रह के साथ हो तो राजा के बराबर हो (स. चि.)।

टिप्पणी--३८० और ३८९ में लग्नेश के विषय में एक मत कहता है नीच ग्रह युक्त न हो दूसरा मत कहता है नीच ग्रह युक्त हो इससे नीच ग्रह युक्त न हो ऐसा पाठ ठीक है।

राहु के योग (उपरोक्त के अतिरिक्त)

३९०--उच्च का राहु हो तो हाथी घोड़ा नौकर चाकर जमीन आदि युक्त बड़ा पंडित हो अपने कुल में उच्च हो (मान.)।

३९१--लग्न में उच्च का राहु हो तो कुल दीपक हो (जा. सं.)।

३९२--राहु या केतु दशम या अष्टम में हो नवमेश नीच राशि में हो तो क्रूर आज्ञा वाला हाकिम हो (स. चि.)।

३९३--राहु दशम में मांदि युक्त हो या मांदि दशम में हो राहु केतु अष्टम हो और नवमेश नीच में हो तो क्रूर आज्ञा देने वाला हो (स. चि.)।

३९४--२,४,५,६ राशि में राहु हो वह बहुत लक्ष्मी सम्पन्न राजाधिराज हो (मान.)।

३९५--२,४,६,१० राशि में राहु हो वह बहुत लक्ष्मीवान् या राज्य का स्वामी, पृथ्वी नौका वाहन युक्त बुद्धिमान् कुल दीपक हो (जैमिनि)।

३९६--१,३,६ राशि का राहु केन्द्र त्रिकोण या ६,८,१२ भाव में हो वह कामी, शूर, बलवान्, भोगी, हाथी घोड़े छत्र वाला बहु पुत्र वाला हो (जा. सं.)।

३९७--सप्तम घर में मेष या कन्या राशि हो केन्द्र या त्रिकोण या ८,१२ घर में राहु हो तो बड़ा कामी शूर बलवान् योगी, हाथी घोड़े छत्र युक्त हो अनेक पुत्र हों (मान०)।

३९८—अन्य मत है कि राजयोग के विचार में राहु केतु का कोई विचार नहीं करना (ज्यो० रह०)।

लग्नेश के राजयोग (उपरोक्त के अतिरिक्त)

३९९—लग्नेश केन्द्र या नवम भाव में वर्गोत्तम नवांश में हो, नवमेश अपने उच्च का या स्वक्षेत्री हो और इसी प्रकार अंश प्राप्त करे तो राजा हो। स्वर्ण के वाहन में हाथी पर बैठे चमर डुले (फल०)।

४००—लग्नेश बली होकर केन्द्र में हो तो राजयोग करता है वह मित्र ग्रह से दृष्ट हो तो नीच वंश में उत्पन्न भी राजा हो, राजा से पुजने वाला हो (जा० पारि०)।

४०१—लग्नेश केन्द्र में हो शत्रु गृही या अस्त न हो, अन्य ग्रह से युत न हो तो सार्वभौम राजा हो (जा० पारि०)।

४०२—लग्नेश और जन्म राशीश बली होकर केन्द्र में हो तो नीच कुल में भी उत्पन्न, उदार पवित्र राजा हो (जा० भ०)।

४०३—लग्नेश बली होकर लग्न में, केन्द्र त्रिकोण या लाभ में हो तो राजा हो उत्तम शील वैभव युक्त हाथी और वाहनयुक्त, नीच कुल में भी हो तो विभूति युक्त हो (मान०)।

४०४—लग्नेश या कारक पंचमेश युक्त केन्द्र त्रिकोण में हो तो वह राजा का मित्र होता है (वृ० पा०)।

४०५—लग्नेश केन्द्र में हो दशमेश केन्द्र चतुर्थ में हो नवमेश लाभ में हो तो दीर्घ जीवी राजा हो (जा० पारि०)।

४०६—लग्नेश मित्र गृही केन्द्र में मित्र ग्रह से दृष्ट हो तो शत्रुओं को नाश करने वाला शुभ प्रताप को करता है (जा० सं०)।

४०७—लग्नेश की दृष्टि लग्न पर हो लग्न में सिंह राशि हो तो सम्राट हो।

४०८—लग्नेश लग्न में, द्वितीयेश धन भाव में, चतुर्थेश चतुर्थ में हो या नवमेश भी लग्न में हो तो हाथी या गद्दी प्राप्त हो (जा० लं)।

४०९—लग्नेश स्वगृही या उच्च का होकर लग्न को देखता हो और ३,६,८ घर में अपने-अपने नीच के ग्रह हों तो राजा हो (वृ० पा०)।

४१०—लग्नेश स्वगृही या उच्च का होकर लग्न को देखता हो ६,८,१२ के भावेश नीच, शत्रु गृही या अस्त हों तो राजयोग होता है (वृ० पा०)।

४११—लग्नेश उच्च का हो, नीच या शत्रु नवांश में न हो और केन्द्र में कोई ग्रह न हो तो राजा हो (जा० पारि०)।

४१२—लग्नेश और धनेश धन भाव में हो तो करोड़ पति हो [जैमिनि] अन्यमत—लग्नेश या धनेश धन भाव में हो तो करोड़पति हो।

४१३—लग्नेश पंचमेश नवमेश युक्त १,४,१० भाव में हो तो राजवंशी राजा हो (मध्य परा०)।

४१४—लग्नेश मित्र ग्रह युक्त या मित्र गृही होकर ३,७ भाव में आ पड़े तो सब भूमंडल का शत्रु रहित राजा हो (मान०)।

४१५—लग्नेश पंचम में हो पंचमेश लग्न में हो आत्म कारक और पुत्र कारक दोनों लग्न या पंचम में हों (कारकांश या उससे पंचम में हो) अपने उच्च राशि या नवांश में तथा शुभ ग्रह से दृष्ट हो तो यह महाराज योग होता है इसमें विख्यात और सुखी होता है (वृ० पा०)।

४१६—लग्नेश स्वक्षेत्री होकर दशम में हो तो उसे राज मंडल में सेवित करता है राजा लोग सेवा करें। सेना युक्त देवताओं में इन्द्र के समान हो (जा० सं०)।

४१७—१,४,१० के भावेश दशम में हों, दशमेश यदि लग्न का सम्बन्धी हो तो सिंहासन का स्वामी हो (जा० पारि०)।

४१८—१,४,९ के भावेश अस्त न हों दशम में हों, दशमेश लग्न में हो तो राजकीय शक्ति प्राप्त हो जिससे सिंहासन मिले (स० चि०)।

४१९—१,४,९ के भावेश दशम में हों दशमेश लग्न में हो व लग्न को देखता हो तो सिंहासन मिले (जा० पारि०)।

४२०—लग्नेश और दशमेश यदि परस्पर स्थान में हों या दोनों एक ही साथ लग्न या दशम में हों तो दोनों प्रकार से राजयोग होता है जगत प्रसिद्ध और विजयी हो। लग्नेश या जिस भावेश से सम्बन्ध हो उसी प्रकार फल होगा (म० प०)।

४२१—लग्नेश, चतुर्थेश, पञ्चमेश, दशमेश किसी भी भाव में हो परन्तु इनमें से कोई नवमेश के साथ हो तो राजयुक्त बहुत वाहनों से युक्त हो अपने प्रताप से समस्त पृथ्वी व्याप्त करता है (म० प०)।

४२२—१,४,६,७,९,१२ भाव के स्वामी सुखेश युक्त हो तो असंख्य देशों को प्राप्त करे (जा० पारि०)।

४२३—लग्नेश चतुर्थेश युक्त दृष्ट हो तो धन वाहन का स्वामी हो (जा० पारि०)।

४२४—१,४,९ के भावेश वाहन का कारक एक साथ हो तो सिंहासन मिले (प्रा० यो०)।

४२५—लग्नेश चन्द्र से उपचय में हो शुभ ग्रह युक्त या शुभग्रह के नवांश में हो तो इन्द्र के समान राजा हो (जा० पारि०)।

४२६—लग्नेश शुभग्रह से दृष्ट हो और पापग्रह ३,६,११ भाव में हो तो पूजनीय तेजस्वी राजा हो (जा० पारि०)।

४२७—लग्नेश बली होकर पूर्ण चंद्र से दृष्ट हो तो वह शत्रुओं को जीतने वाला राजा होता है (शंभु०)।

४२८— लग्नेश शुभग्रह हो शुभग्रह से युक्त दृष्ट हो या शुभांशक में हो तो दूसरों को आज्ञा देने वाला हाकिम होता है (स० चि०)।

४२९—लग्नेश से ३,६ या ११ घर में पापग्रह हो तो राजयोग प्राप्त हो (फल०)।

४३०—लग्नेश या कारक से २,४,५ भाव शुभग्रह युत हो तो राजा हो (बृ० पा०)।

४३१ - लग्नेश या कारक में ३,६ भाव में पापग्रह हो तो राजा हो (वृ० पा०)। शुभ पाप मिश्रित हो तो धनवान् हो (वृ० पा०)।

४३२—लग्नेश चर राशि चर नवांश में हो, लग्न चर राशि हो, नवमेश भी चर राशि में हो तो राजयोग हो वह परदेश में जाकर राजा हो (स० चि०)।

४३३—लग्नेश की राशि का नवांशेश जिस घर में हो उस राशि का नवांश स्वामी यदि शक्तिशाली होकर स्वोच्च या विशेषिक अंश में हो और द्वितीयेश हो जावे तो यह राजा हो। गुण में गुरु के समान हो (स० चि०)।

मान लो वृष लग्न है तो लग्नेश शुक्र हुआ लग्न कुण्डली में यह अष्टम में धनु का है जिसका स्वामी गुरु है। अब नवांश कुण्डली में देखा तो यह अष्टमेश गुरु लग्न में मेष का है तो यह गुरु मंगल के घर में है यहाँ बताया है यदि यह मंगल उच्च आदि में होकर दूसरे स्थान का स्वामी हो जावे तो उक्त फल होगा।

द्वितीयेश से राजयोग (उपरोक्त के अतिरिक्त)

४३४—द्वितीयेश बली होकर केन्द्र में हो, चतुर्थेश लग्न या चतुर्थ में हो, उच्च का शुभग्रह नवम में हो तो राजगद्दी पर बैठे (स० चि०)।

४३५—केन्द्र में द्वितीयेश सहित शुभग्रह हो या उच्च का ग्रह धन स्थान में हो और नवम स्थान शुभ दृष्ट हो तो सिंहासन प्राप्त हो (स० चि०)।

४३६—द्वितीयेश केन्द्र में हो, लग्न व केन्द्र में शुभग्रह हो, नवम में उच्च का ग्रह हो तो सिंहासन प्राप्त हो (जा० पारि०)।

४३७—द्वितीयेश उच्च का केन्द्र में हो, लग्न में बली सौम्य ग्रह हों नवम में भी शुभग्रह हो तो सिंहासन प्राप्त हो (स० चि०)।

४३८—द्वितीयेश अपने उच्च या मूल त्रिकोण का लाभ या त्रिकोण में हो लग्नेश बली हो जिस राशि में द्वितीयेश है उसका स्वामी केन्द्र में हो तो राजा हो (स० चि०)।

४३९—द्वितीयेश तीसरे भाव में शुभग्रह की राशि में या अपने उच्च में हो, शुभ ग्रह तथा पुरुष ग्रह सूर्य मंगल गुरु से दृष्ट हो तो राजा हो (स० चि०)।

चतुर्थेश के राजयोग (उपरोक्त के अतिरिक्त)

४४०—चतुर्थेश और दशमेश उच्च में हों या स्वगृही या मित्रगृही हों तो उसके कई राजयोग होते हैं (ज्यो० रह०)।

४४१—चतुर्थेश चतुर्थ में हो शुभग्रह से युक्त या दृष्ट हो नवमेश युक्त हो तो साधारण राजा या बड़ा धनी हो। राजद्वारसे अधिकार प्राप्त हो (प्रा० यो०)।

४४२--चतुर्थेश लग्न में हो गुरु से दृष्ट हो तो राजाओं का पूज्य हो (जा० लं०)।

४४३—चतुर्थेश ग्रह, चतुर्थ भावगत ग्रह, नवमेश और नवम भावगत ग्रह चारों बली हों तो दीर्घायु, सुखी, तेजस्वी, चतुरंग सवारी, विपुल लक्ष्मी और राजचिह्न से अंकित राजा हो (जा० पारि०)।

४४४--बली चतुर्थेश मंगल की राशि (१,८) में हो तो राज्य, धन, सुख, मणि, वाहन आदि प्राप्त हो (स. चि.)।

४४५--चतुर्थेश, चतुर्थ या लाभ में हो व उन स्थानों में मंगल की राशि हो तो राज्य प्राप्त हो (जा. पारि.)।

४४६--चतुर्थेश शुभग्रह युक्त दशम में हो तो चामर छत्र से युक्त राजा हो (जा. पारि.)।

४४७--चतुर्थेश दशम में, दशमेश चतुर्थ में हो उस पर पञ्चमेश या नवमेश की दृष्टि हो तो राजा हो (वृ. पा.)।

४४८--चतुर्थेश या दशमेश यदि पंचमेश या नवमेश से युक्त हो तो राजा हो (वृ. पा.)।

४४९--चतुर्थेश, पंचमेश और दशमेश एक स्थान में हो, नवमेश से दृष्ट हो तो अन्य कुल में भी जन्मा राजा हो (म. प.)।

४५०--चतुर्थेश और दशमस्थ ग्रह बली हो नवमेश से युक्त या दृष्ट हो या परस्पर ग्रह में हों तो दोनों योग सिंहासन प्राप्त कराने वाले हैं (जा. पारि.)।

पंचमेश के राज योग (उपरोक्त के अतिरिक्त)

४५१—पंचमेश नवम में हो नवमेश पंचम में हो दोनों की परस्पर दृष्टि हो तो बड़ा राज्य का भागी हो (म० प०)।

४५२—पंचमेश नवमेश को परस्पर दृष्टि हो या दोनों कहीं भी एक स्थान में हों या परस्पर सप्तम स्थान में हों तो राजा हो (वृ० पा०)।

४५३—पंचमेश यदि लग्नेश या नवमेश युक्त १, ४, १० भाव में हो तो राजा हो (वृ० पा०)।

षष्ठेश के योग (पूर्वोक्त के अतिरिक्त)

४५४—६, ९, ११ और १२ के भावेश एक दूसरे के घर में हों तो अच्छा राज योग होता है (स० चि०)।

४५५—षष्ठेश दशम में, दशमेश शनि युक्त हो या केन्द्र त्रिकोण में हो तो बहुत दास दासी हों (स० चि०)।

नवमेश के योग (उपरोक्त के अतिरिक्त)

४५६—लग्न, नवम या दशम भाव से नवमेश और दशमेश युक्त हो और अन्यान्य राशि (परस्पर एक दूसरे की राशि में) स्थित हो या परस्पर केन्द्र में हो या परस्पर दृष्टि हो द्वितीयेश के सम्बन्धी हों तो वह धनी हो (जा० पा०)।

४५७—नवमेश और दशमेश का परिवर्तन हो (एक दूसरे की राशि में हों) और दुष्ट राशियों का भी परिवर्तन हो तो राज योग होता है (ज्यो० शा०)।

३, ६, ८, ११, १२ भाव ये दुष्ट स्थान हैं ग्रहों के द्विस्थानाधिपत्य होने से इन दुष्ट स्थानों के भी स्वामी हो जांय तो राजयोग होता है परन्तु परस्पर परिवर्तन न हो तो द्विस्थानाधिपत्य दोष से राज योग नष्ट हो जाता है।

४५८—नवमेश केन्द्र में होकर उच्च के अंश में हो और कोई दो और ग्रह उच्च में हों तो उसके अधिकार में कई वाहन और देश रहें राजा हो (स० चि०)।

४५९—नवमेश, दशमेश यदि दशम में हो तो राजयोग होता है (ज्यो० शा०)।

४६०—नवमेश जहां हो उसका नवांशेश, पांचवें या चौथे भाव में हो तो राजा हो (जा० पा०)।

४६१—नवमेश लग्न में हो गुरु से दृष्ट हो तो राजा हो (जा० सं०)।

४६२—नवमेश द्वितीय भाव में हो और अपने ग्रह को देखता हो तो सर्व सम्पदा से युक्त पृथ्वीपति होता है (जा० सं०)।

४६३—नवमेश और आत्मकारक दोनों १, ५, ७ भाव में शुभ ग्रह से युक्त दृष्ट हो तो राजयोग होता है (वृ० पा०)।

दशमेश के योग

४६४—दशमेश नवम में नवमेश दशम में हो तो राजा हो अपने जनों से मान पावे (फल०)।

४६५—दशमेश केन्द्र त्रिकोण या धन भाव में हो तो राज सिंहासन में बैठने वाला विख्यात कीर्ति हाथियों से परिपूर्ण हो (जा० सं०)

४६६—दशमेश केन्द्र में हो शुभ ग्रहों से युक्त दृष्ट हो शुभ षष्ठ्यंश में होवे तो वह सौम्य आज्ञा देने वाला अधिकारी हो (स० चि०)।

४६७—केन्द्र में दशमेश शुभ युक्त या दृष्ट हो और क्रूर षष्ठ्यांश में हो तो कठोर आज्ञा देने वाला हो (स० चि०)।

४६८—दशमेश शुभ हो शुभ युक्त या दृष्ट होकर शुभ नवांश में हो तो दूसरों को हुक्म देने वाला हो (स० चि०)।

४६९—दशमेश अष्टम में उच्च स्व राशि व मित्र नवांश का या पारावतांश में होवे तो राज योग होता है (स० चि०)।

४७०—दशमेश उच्च या मित्र नवांश में होकर नवम घर में हो और पारावतांश में हो तो राजाओं के बीच मुखिया हो (स० चि०)।

४७१—दशमेश उच्च का होकर लग्न को देखता हो तो राज योग होता है (वृ० पा०)।

४७२—दशमेश पापयुक्त हो और लग्न से ६ भाव तक क्रम से ग्रह हों तो राजेश्वर हो (स० चि०)।

४७३—दशमेश से पहिले ६ घर में सब ग्रह हों ये लग्न से ६ घर में हों तो राजाओं का राजा हो (स० चि०) अर्थात् लग्न से ६ घर के भीतर दशमेश कहीं हो और उससे ६ घर के भीतर से ग्रह हो तब यह योग होगा। लग्न में दशमेश हो और सब ग्रह उससे ६ घर के भीतर हों तभी यह बनता है।

लाभेश के योग

४७४—लाभेश लाभ में हो पाप ग्रह से अदृष्ट हो या आत्म कारक केवल शुभ ग्रह से युक्त हो तो राजा से धन प्राप्त हो (वृ. पा.)।

४७५—लाभेश की दृष्टि लाभ पर हो दशम भाव में पाप ग्रह का योग दृष्टि न हो तो राजमंत्री हो (वृ. पा.)।

लग्न के योग

४७६—लग्न उत्तमांश में हो और चन्द्र को छोड़कर अन्य ४ या अधिक ग्रहों से दृष्ट हो तो राजा हो (वृ. पा.)।

४७७—लग्न पर सब ग्रहों की दृष्टि हो जो सब प्रकार शुद्ध हों तो बड़े-बड़े राजा कोश रत्नों की भेंट करे, निर्भय हो, राजाओं का मुकुटमणि हो (मान.)।

४७८—लग्न को सब बली ग्रह देखते हों तो भय रहित दीर्घायु सुखी धनयुक्त राजा हो (वृ. पा.)।

४७९—जन्म लग्न, होरा लग्न और घटी लग्न इन तीनों पर किसी एक ग्रह की दृष्टि हो तो राजा हो।

घटी लग्न—(इष्ट घटी+जन्म लग्न) ÷ १२ = शेष पंच ग्रह घटी लग्न है (वृ.पा.)।

४८०—इन तीनों उपरोक्त लग्न और सप्तम भाव पर, राशि, नवांश और द्रेष्काण के वश एक ग्रह की दृष्टि से भी राजयोग होता है (जैमिनि.)। उनमें एक भी न्यून हो तो राजयोग न्यून होता है। इन तीनों को लग्न की नवांश कुण्डली और द्रेष्काण कुण्डली से भी विचारना। इन तीनों लग्न को उच्च स्थित एक भी ग्रह देखें तो राजयोग होता है। इन तीनों में से किसी दो को भी उच्च स्थित ग्रह देखे तो राजयोग होता है। राशि, नवांश और द्रेष्काण इन तीनों को या राशि और नवांश के वश या राशि और द्रेष्काण को एक ग्रह देखे तो राजयोग होता है।

४८१—जन्म लग्न, होरा लग्न, घटी लग्न इन तीनों में उच्चस्थ ग्रह हो। या लग्न, द्रेष्काण और लग्न का नवांश इन तीनों में उच्चस्थ ग्रह हो तो अवश्य राजयोग होता है (वृ. पा.)।

४८२—लग्न के नवांश राशि के केन्द्र में नीच स्थित ग्रह लग्न को देखे तो भी राजयोग होता है (वृ० पा०)।

४८३—लग्न के नवांश राशि के केन्द्र में शुभ ग्रह हो तो सर्वाधिकार सम्पन्न राजा हो (वृ० पा०)।

४८४--नीच नवांश को छोड़कर ३ आदि ग्रह स्वनवांश में हों उनमें से एक भी लग्न में हो तो राजा हो (जा० पारि०)।

४८५--जन्म लग्न में ३ शुभ ग्रह हों तो नम्रता युक्त राजा हो (जा० भ०)।

४८६--२,४,१०,११ के भावेश लग्न को देखते हों पद से सप्तम स्थान पर शुक्र की दृष्टि हो पद में शुभ ग्रह हो तो राजयोग होता है (वृ० पा०)।

४८७--लग्न के होरादि षड़वर्ग किसी एक भी ग्रह से युक्त या दृष्ठ हों तो भी राजयोग होता है। योग दृष्टि के अनुसार पूर्ण आधा या उससे कम फल का विचार करना (वृ० पा०)।

४८८--लग्न या चतुर्थ भाव अपने स्वामी या अपने मित्र से दृष्ट हो तो अवश्य सम्पत्ति वाला हो (जैमिनि०)।

४८९--लग्न में क्रूर ग्रह, व्यय भाव में शुभ ग्रह द्वितीय में पाप ग्रह हो तो राजा हो (जा० सं०)। पृथ्वी का स्वामी होता है राजा नहीं होता (मान०)।

४९०--लग्न में क्रूर ग्रह व्यय में शुभ ग्रह द्वितीय में शुभ ग्रह हो तो राजयोग होता है। इसमें राजा नहीं होता दाता और दरिद्री होता है (ल० चं०)।

४९१--१,२ भाव में शुभ ग्रह, ३ घर में पाप ग्रह, ४ भाव में शुभ ग्रह हो तो राजा हो या राजा के तुल्य हो (वृ० पा०)।

४९२--लग्न में शुभ ग्रह अष्टम में क्रूर ग्रह हो तो ध्वज योग होता है जातक श्रेष्ठ हो (ल० चं०)।

४९३--जन्म ऊषा काल का हो या अभिजित काल या गोधूलि या महानिशा में हो तो ग्वाल पुत्र भी राजा हो (जैमिनि)।

४९४--मध्याह्न या अर्द्ध रात्रि के बाद २॥ घड़ी शुभ समय होता है उसमें जन्म लेने वाला राजा होता है (वृ० पा०)।

४९५--पाप ग्रह लग्न में हो गुरु से दृष्ट हो तो राजा हो (जा० भ०)।

४९६--लग्न में चर राशि हो लग्नेश चर राशि चर नवांशक में हो तो प्रभाव शाली राजा हो (स० चि०)।

४९७--लग्न दशम या लाभ ही के सन्मुख सम्पूर्ण ग्रह हों तो कारक योग होता है इसमें नीच कुल का भी राज्य प्राप्त करे (ल. पं.)।

अन्य भाव के योग

४९८--लग्न से ६,८ स्थान में शुभ ग्रह हो पाप ग्रहों से युक्त दृष्ट न हो तो वह मंत्री या सेनापति या राजा होता है (जैमिनि)।

४९९--६,७,८ भाव में शुभ ग्रह हो पाप ग्रह से युक्त दृष्ट न हो तो छत्र वाला राजा, दंड करने वाला, दीर्घायु, निर्भय, निरोग बहुत स्त्रियों का पति होता है (शंभु)।

५००--लग्न से अष्टम और व्यय में क्रूर ग्रह हो और बीच में शुभ अशुभ ग्रह हों तो वह राजयोग है महाराजा हो (मान.)।

४० वर्ष जीता है राजयोग है (लं. चं.)।

५०१--८,१२ भाव में क्रूर ग्रह हो दशम में एक क्रूर ग्रह एक शुभ ग्रह हो तो महाराजा हो (जा. सं.)।

५०२--पाप ग्रह ६,१० भाव में, शुभ ग्रह ९,११ भाव में हो तो राजा हो (जा. पा.)

५०३--नवम भाव में सब शुभ ग्रह हों तो राज्यदाता हैं (जा. सं.)।

५०४--नवम में सब शुभ ग्रह हों शुभ ग्रह से दृष्ट हों तो शत्रुओं को जीतने वाला राजा हो।

५०५--नवम भाव में बुध छोड़कर ६,७ ग्रह हों तो राजा हो (जा. सं.)।

५०६—दशम स्थान में शुभ ग्रह स्वराशि में हो और शुभ दृष्ट हो तो अपने कुल में राजा या श्रेष्ठ अति उदार हो (शंभु)

५०७—लाभ में ३ सौम्य ग्रह हों तो बड़ा राजा हो ३ पाप ग्रह हों तो दुःखी, दरिद्री शोक युक्त हो।

५०८—दशम और लाभ में शुभ ग्रह हो पाप ग्रह की राशि में चन्द्र हो तो राज-योग होता है (जा. सं.)।

५०९—उपचय में सब शुभ ग्रह हों पाप ग्रह लग्न या दशम में हो तो सम्पूर्ण शत्रुओं को जीतने वाला क्रूर स्वभाव का राजा हो (जा. पारि.)।

अन्य योग

५१०— सभी ग्रह चन्द्र के होरा में हों तो यशस्वी हो (जा. पारि.)।

५११--एक भी ग्रह स्वगृही या वर्गोत्तम हो और बलवान् मित्र ग्रह से दृष्ट हो तो राजा हो (जैमिनि)।

५१२--२,३ ग्रह दिग्बल से पूर्ण हो तो राजवंशी राजा हो और विजयी हो (फल.)।

५१३--यदि शनि छोड़कर ४,५ ग्रह दिग्बल पूर्ण हों तो साधारण कुल में भी उत्पन्न हुआ मनुष्य राजा हो (फल)।

५१४—यदि ५ आदि ग्रह स्वनवांश में हों तो वित्तवान् राजा हो (जा. पारि.)।

५१५—त्रिपुष्कर में उत्पन्न हुआ मनुष्य राजा होता है (शंभु)।

त्रिपुष्कर योग—दिन-रविवार, मंगलवार, शनिवार, (मुहूर्त चिंता०) तिथि-भद्रा २,७,१२, नक्षत्र-विशाखा, कृतिका, पुनर्वसु, उत्तराफाल्गुनी, उत्तराषाढ़ा, पूर्व भाद्रपद।

५१६—जन्मकाल में उत्तर में वशिष्ठ और पश्चिम में शुक्र, गुरु पूर्व, अगस्त दक्षिण में हो तो ऐसे समय उत्पन्न जातक धरती का स्वामी समुद्र तक राजा हो (शंभु)।

कारक से राजयोग विचार

५१७--कारकांश और जन्म लग्न इन दोनों से राजयोग विचारना चाहिये। एक तो आत्म कारक और पुत्र कारक से, दूसरा लग्नेश और पंचमेश से। इन दोनों के

परस्पर सम्बन्ध और बल के अनुसार ही राज योग का आधा या चतुर्थेश आदि फल समझना।

५१८–आत्म कारक शुभ राशि या शुभ नवांश में हो तो धनवान् होता है (वृ. पा.)।

५१९––कारकांश से केन्द्र में शुभ ग्रह हो तो राजा होता है (वृ. पा.)।

५२०––आत्म कारक से चतुर्थ में शुक्र और चन्द्र दोनों हो तो नगाड़ा आदि बाजे चामर आदि राज चिह्न होते हैं (जैमिनि)।

५२१––आत्म कारक से २,४,५ भाव के राश्यादि तुल्य शुभ ग्रह के राश्यादि हों तो राजा हो (जैमिनि)।

५२२––आत्म कारक से ३,६ इन दोनों भावों के तुल्य दो पाप ग्रह के राश्यादि हों तो राजा हो (जैमिनि)।

५२३––आत्म कारक से, पद से, या लग्न से, ३,६ भाव में सब पाप ग्रह हों तो सेनापति हो (वृ. पा.)।

५२४––आत्म कारक अपनी राशि या उच्च में होकर केन्द्र त्रिकोण में नवमेश से युक्त या दृष्ट हो तो निश्चय राजमंत्री हो (वृ. पा.)।

५२५––आत्म कारक जन्म राशीश होकर शुभ ग्रह के साथ लग्न में हो तो वह वृद्धावस्था में मंत्री हो (वृ. पा.)।

५२६––जन्म लग्न से दशमेश यदि आत्म कारक राशीश या पंचमेश तथा आत्म कारक से युक्त हो तो राजमंत्री हो (वृ. पा.)।

५२७––यदि आत्म कारक, आमात्य कारक से युक्त हो तो भी राजमंत्री हो (वृ. पा.)।

५२८––आत्म कारक बली, शुभ ग्रह से युक्त होकर अपने गृह या उच्च में हो तो मंत्री हो (वृ. पा.)।

५२९––आत्म कारक यदि १,५,९ भाव में हो तो भी राजमंत्री हो (वृ. पा.)।

५३०––आत्म कारक से केन्द्र या त्रिकोण में अमात्य कारक हो तो भी राजा का कृपा पात्र होकर सुखी होकर राजमंत्री हो (वृ. पा.)।

५३१––आत्म कारक नवम में हो या नवम भाव का पद लग्न में हो तो वह निश्चय राजा का सम्बन्धी होता है (वृ० पा०)।

५३२––आत्म कारक से चतुर्थ भाव में शुक्र और चन्द्र हो तो राजचिन्हों से युक्त राजा के बराबर सुख भोगने वाला हो (वृ० पा०)।

५३३––पुत्रादि कारक वश से पुत्रादि का राजयोग विचारना अर्थात् पुत्रादि कारकों में राजयोग बली हो तो पुत्रादि को भी राजयोग बली होता है।

५३४––कारकांश या उससे पञ्चम भाव या लग्न या लग्न पद में शुक्र हो उसपर गुरु की या चन्द्र की योगदृष्टि हो तो राजा का सम्बन्धी हो (वृ० पा०)।

५३५--शुभ ग्रह से युक्त कारक यदि ५,७,१० या ९ भाव में हो तो उसे राजा के आश्रय से धन लाभ हो (वृ. पा.)।

५३६--लग्न का पद और सप्तम भाव का पद परस्पर केन्द्र में हो या ३,११ में या ५,९ में हो तो निश्चय राजा हो सुखी हो (वृ. पा.)।

५३७--लग्न पद या चन्द्र के साथ उच्च का ग्रह हो उसमें गुरु या शुक्र का योग या किसी उच्चस्थ ग्रह का योग हो तो निश्चय राजा हो (वृ. पा.)।

५३८--या पद में चन्द्रमा हो और उससे दूसरे स्थान में गुरु हो तो भी राजयोग होता है (वृ. पा.)।

५३९--पद में शुभ ग्रह और चन्द्रमा हो, द्वितीय स्थान में गुरु हो उनपर उच्च ग्रह की दृष्टि हो तो निश्चय राजा होता है (वृ. पा.)।

५४०--जैसे आत्मकारक से २,४,५ भाव का विचार बताया है उसी प्रकार लग्नेश और सप्तमेश से भी विचारना अर्थात् लग्नेश सप्तमेश से २,४,५ इन भावों के तुल्य शुभ ग्रह हो तो राजा होता है (जैमिनि)।

५४१--यदि लग्नेश सप्तमेश २,४,५ इन भावों में शुभ और पाप ग्रह दोनों मिले हों तो राजा के समान हो (जैमिनि)।

५४२--लग्नेश और सप्तमेश में ३,६ दोनों भावों के तुल्य २ पाप ग्रहों के राश्या द हों तो राजा हो (जेमिनि)।

राजयोग के फल का विचार

ग्रहों के स्थान और इष्टि का विचार कर राजयोग का फल विचारना। पहिले जन्म काल का ग्रह स्पष्ट भाव स्पष्ट करना। इसमें शुभ और अशुभ भाव विचार कर केन्द्र कोण आदि संज्ञा का विचार कर ग्रहों के बल और स्थिति के अनुसार राजयोग के फल का विचार करना।

इसके पहिले आयुर्दाय का निश्चय कर फिर फल का समय निकालना।

राजयोग का कितना फल होगा

यह राजयोग कारक ग्रहों के बल आदि पर विचार कर निर्णय करना। यदि ये उच्च के हों तो पूर्ण फल, मूल त्रिकोण में पौन फल, स्वक्षेत्री में आधा फल, मित्र क्षेत्री में चौथाई फल होगा। शत्रु क्षेत्र में अष्टांश, शुभ फल होगा।

वे ही ग्रह यदि अस्त व नीच में हों तो सम्पूर्ण अशुभ होगा। शत्रु क्षेत्री में पौन अशुभ, मित्र क्षेत्री में आधा, स्वक्षेत्री में चतुर्थांश, अशुभ होगा। मूल त्रिकोण में नाम मात्र को अशुभ होगा परन्तु उच्च में कोई ग्रह अशुभ फल नहीं देगा।

फल समय

योग कारक ग्रहों में जो सबसे बली हो उसकी दशा अंतर्दशा में पूर्व बताये योगों के फल होंगे।

राजयोग करने वाले ग्रहों में जो दशम या लग्न में हो उसकी अंतर्दशा में राज्य लाभ होगा।

जब इन दोनों स्थानों में ग्रह हों तो जो उनमें से बली हो उसकी अंतर्दशा में लग्न फल होगा। और दशम में बहुत ग्रह हों तो उनमें से जो सबसे बली हो उसकी अंतर्दशा में फल होगा। इन दोनों भाव में जब कोई ग्रह न हो तो सब ग्रहों में जो बली हो उसकी दशा में राजयोग होगा। या जन्म काल में जो बलवान् ग्रह हो उसकी दशा में अधिकार प्राप्त हो।

छिद्रा दशा

परन्तु बलवान् ग्रह से होने वाले राज्य लाभ को भी छिद्रा दशा नष्ट कर देती है।

जन्म कालिक शत्रु व नीचगत बलवान् ग्रह की अंतर्दशा छिद्रा दशा कहलाती हैं।

इनमें भी राज्य योग कारक ग्रहों में से कोई नीच व शत्रु क्षेत्री या निर्बल ग्रह हो तो वह योग भंग कर देगा अन्य कुछ हानि नहीं करेगा।

जन्म में शत्रु क्षेत्री या नीच के ग्रह अपनी दशा में यदि राजा हो तब भी राज्य भ्रष्ट कर देता है। साहूकार को भिखारी बना देता है।

राज भंग योग

जिन योगों के होने में पूर्व बताये राजयोग भंग हो जाते हैं वे नीचे दिये हैं।

गुरु का

१—गुरु नीच तथा अस्त का हो, लग्न में कुंभ राशि हो, ३ ग्रह नींच के हों, एक ग्रह धन भाव में हो, दशम भाव में अशुभ ग्रह हो तो सैकड़ों राजयोग नष्ट करता है (जा० भ०)।

२—गुरु परम नीच अंश में हो तो राजयोग में भी उत्पन्न जातक अति दरिद्री हो (शंभु०)।

३—गुरु अस्त हो और ३ ग्रह नीच के हों, और जन्म लग्न कुंभ हो तो राजयोग नष्ट हो (जा० भ०)।

४—गुरु अस्त हो, एक भी ग्रह उच्च में न हो दशम में पाप ग्रह हो तो राजयोग नष्ट हो (शंभु०)।

५—लग्न में मकर का गुरु परम नीचगत हो तो राजयोग में भी उत्पन्न दरिद्री हो (शंभु०)।

शुक्र का

६—शुक्र नीच या सिंह के नवांश में हो तो राजयोग नष्ट हो।

७—शुक्र परम नीच अंश में हो तो राजयोग नष्ट होकर पतन हो (जा. भ.)।

८—शुक्र अस्त हो, या नीचगत हो, सब ग्रह केन्द्र में हों और शुभ ग्रह ६,८,१२ भाव में हों तो सब राजयोग भंग हों (शंभु.)।

९--शुक्र नीच का होने से राजयोग नष्ट होता है (स. चि.) ।

चन्द्र का

१०--चन्द्र अस्त हो ४ ग्रह नीच या शत्रु क्षेत्री हों, केन्द्र शून्य हो या उसमें शुभ ग्रह न हों तो राजयोग नष्ट हो (जा. सं.) ।

११--चन्द्रमा परम नीच अंश का हो या चन्द्र परम नीच हो तो राजयोग नष्ट हो ।

१२--चन्द्रमा तुला के १० अंश पर हो तो हजारों योगों को भंग करता है ।

१३--नीच का हो तो भाग्य नष्ट करता है ।

१४--चन्द्रमा या लग्न को एक भी ग्रह न देखे तो राजयोग नष्ट हो (शंभु.) ।

१५ - क्षीण चन्द्र को पाप ग्रह देखते हों और शुभ ग्रह नहीं देखते हों और सूर्य स्व नवांश में हो तो पहिले राज्य प्राप्त हो पश्चात् राजयोग नष्ट होकर दुःखी हो, आशा नष्ट हो (जा. भ.) ।

१६ — बलहीन चन्द्र चरराशि के अन्त भाग में, स्थिर राशि के आदि में, द्विस्वभाव राशि के मध्य में हो और कोई भी ग्रह लग्न में न हो तो राजयोग भंग हो (जा. पारि.)

इतर ग्रहों के योग

१७ — मंगल सूर्य शनि ३,६,११ स्थानों में हों, शुभ ग्रह केन्द्र में न हो या अस्तंगत हो, या शुभ ग्रह सप्तम हो राहु लग्न में हो चन्द्र की दृष्टि उस राहु पर हो तो राजयोग नष्ट हो (जा. भ.) ।

मतांतर -- सूर्य मंगल शनि १,६,११ भाव में हों शेष पूर्वोक्त ।

१८ — सूर्य उच्च का नीच नवांश में हो तो राजयोग नष्ट हो । इस योग में पाप दृष्ट सूर्य लग्न में हो तो निश्चय राजभंग हो (स. चि.) ।

१९ — सूर्य परम नीच का हो तो हजार राजयोग नष्ट हों (स. चि०) ।

२०--लग्न में राहु हो चन्द्र से दृष्ट हो तो राजयोग भंग हो ।

२१--५ ग्रह नीच के हों या अस्त हों तो राजयोग भंग हो ।

२२--सब पाप ग्रह केन्द्र में हों नीच या शत्रु के घर के हों और सौम्य ग्रहों को उन पर दृष्टि न हो शुभ ग्रह ६,८,१२ भाव में हों तो राजयोग नष्ट हो (जा. भ.)

२३--इसी प्रकार नीच शत्रु राशि और पाप षष्ठ्यंश वाले ग्रह राजयोग नष्ट करते हैं (जा. पारि.) ।

२४--९,१०,११ स्थानों के स्वामी नीच के हों तो सब राजयोग नष्ट हों ।

२५--उच्च के ग्रह नीचांशक में हों तो राजयोग नष्ट हो ।

२६--सब पाप ग्रह नीच के केन्द्र में हों ।

२७--सब पाप ग्रह ३,६,११ स्थानों में हों ।

२८--सौम्य ग्रह ६,८,१२ घरों में हों ।

२९--सौम्य ग्रह अस्तंगत हों या केन्द्र में न हों तो राजयोग नष्ट हो ।

३०—घरों केन्द्रों में शुभ ग्रह न हों या केन्द्र में जो ग्रह हों वे अस्त व नीच में हों या शत्रु गृही हों (जा. भ.)।

३१—चारों केन्द्र शून्य हों शुभ ग्रह अस्त हों या नीच में हों या ४ ग्रह शत्रु क्षेत्री हों तो राज योग भंग हो (जा. सं.)।

३२—चारों केन्द्रों में पाप ग्रह हों और द्वितीय में भी पाप ग्रह हों तो वह अति दरिद्री वंश वाले को भय प्रद है (जा. सं.)।

३३—राजयोग कारक ग्रह नीच शत्रुक्षेत्री या अस्त हो या नीच या शत्रुक्षेत्री ग्रह से दृष्ट हो तो राजयोग भंग हो (जा पारि.)।

३४—दशम भाव में नीच का ग्रह हो तो राजयोग भंग हो।

३५—शत्रु राशि में सब ग्रह हों चाहे नवांश में या वर्गोत्तम में हों तो राजयोग नष्ट हो (शंभु.)।

३६—बहुत ग्रह नीच में हों तो राजयोग नष्ट हो (शंमु.)।

३७—लग्न में एक भी ग्रह नीच का हो और दशम में पाप ग्रह हो तो राजयोग नष्ट हो।

३८—यदि ४,५ या ६ ग्रह एक स्थान में हों तो राजयोग नष्ट हो पर भिक्षुक हो।

३९—जितने राजयोग नाशक योग हैं, जितने रेका (दरिद्र) योग हैं, जितने प्रेष्य (दूसरे की नौकरी) योग और केमद्रुमयोग हैं ये चारों प्रकार के योग शुभ नाशक हैं (जा. पारि.)।

४०—जन्म में उल्कापात हो या व्यतीपात योग हो या धरती कम्पायमान हो, फट जावे या जन्म समय पूछल तारा का उदय हो तो राजयोग में भी उत्पन्न हुआ दरिद्री होता है (शंभु.)।

अध्याय १२

नाभस आदि योग

योग—जन्म कुंडली में जो ग्रह हैं उनका अधिकार एक-एक दूसरे ग्रह से दृष्टि आदि द्वारा सम्बन्ध एवं ग्रहों की स्थिति के अनुसार ग्रहों का जो विशेष योग बनता है यहाँ उनके नाम दिये हैं और उनका फल बताया है। नाभस आदि अनेक इस प्रकार के योग आगे दिये हैं।

योग के फल का समय

इन योगों का फल उस ग्रह की दशा में होता है। दशा आरम्भ काल में ग्रह स्पष्ट

यवनाचार्य ने ऐसे १८०० भेद कहे हैं कोई आचार्य पृथक असंख्य भेद बतलाते हैं।

१. आकृति योग के २० भेद

१. गदायोग--केन्द्र के पास मिले किसी दो भाव में सब ग्रह हों तो गदायोग होता है। इसके ४ भेद हैं।

(१) लग्न और चतुर्थ में सब ग्रह. (२) चतुथ और सप्तम में सब ग्रह, (३) सप्तम और दशम में सब ग्रह, (४) दशम और लग्न में सब ग्रह। यवनमत से इन चारों भेदों के पृथक-पृथक नाम भी दिये हैं।

(१) लग्न और चतुर्थ में सब ग्रह=गदा। (२) चतुर्थ और सप्तम में सब ग्रह=शंख। (३) सप्तम और दशम में सब ग्रह=वभ्रुक। (४) दशम और लग्न में सब ग्रह=ध्वज।

(१)

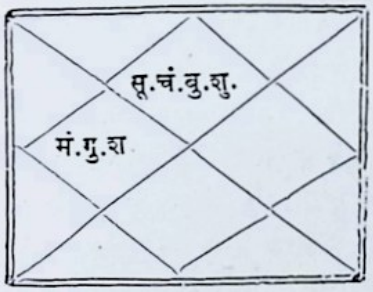

(२)

(३)

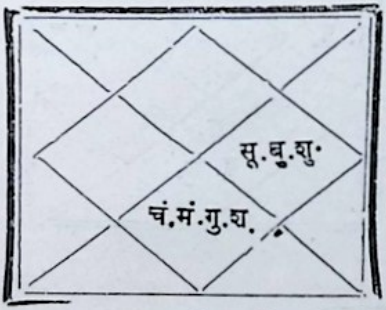

(४)

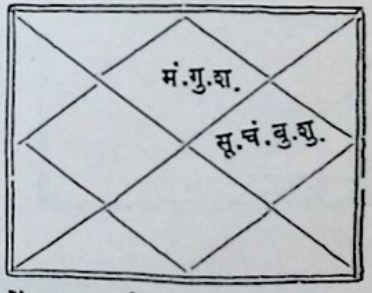

२. शकट योग--केन्द्र के लग्न और सप्तम भाव में सब ग्रह हों।

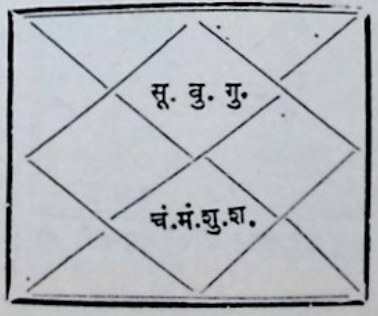

३. विहंग योग--चतुर्थ और दशम में सब ग्रह हों।

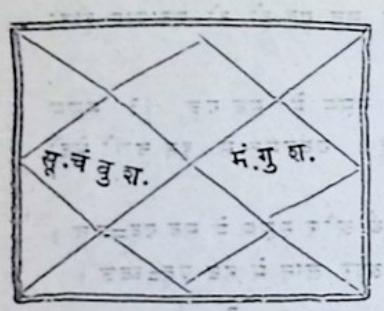

४. शृंगाटक योग--लग्न, पञ्चम और नवम में सब ग्रह हों।

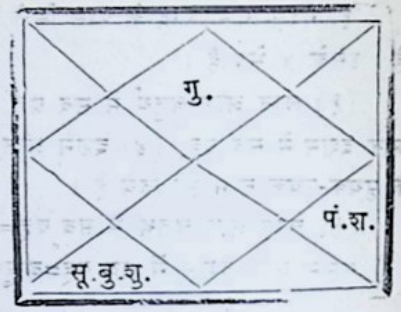

५. हल योग—लग्न छोड़कर परस्पर त्रिकोण में सब ग्रह हों।

इसके ३ भेद हैं (१) २,६,१० स्थान में सब ग्रह।
(२) ३,७,११ स्थान में सब ग्रह।
(३) ४,८,१२ स्थान में सब ग्रह।

शृंगाटक के १,५,९ स्थान छोड़कर अन्य त्रिकोण में सब ग्रह।

हल योग के उदाहरण:—

(१)

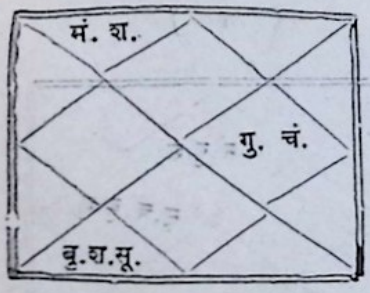

(२)

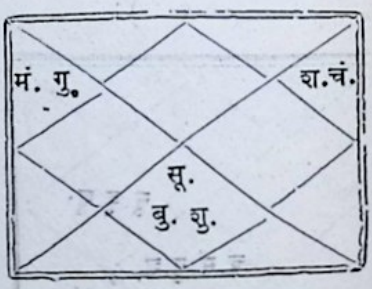

(३)

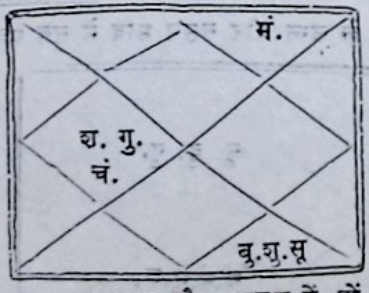

६. वज्र योग—सब शुभ ग्रह लग्न और सप्तम में हों। या सब पाप ग्रह चतुर्थ और दशम में हों।

१

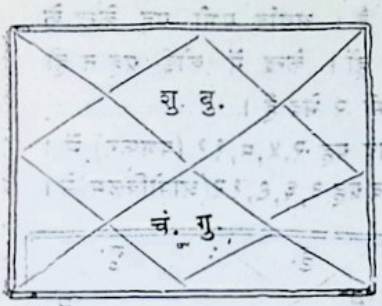

२

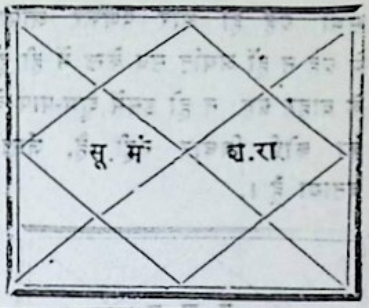

मतांतर—

कुछ विद्वानों का कहना है कि १,७ भाव में शुभ ग्रह और ४,१० भाव में पाप ग्रह हों तो वज्र योग होता है। परन्तु सूर्य से चौथे स्थान अन्तर पर बुध शुक्र आना असंभव है। सब ग्रह केन्द्र में होने से तो कमल योग होता है। यहाँ पाप और शुभ ग्रह का पृथक करण हो गया है।

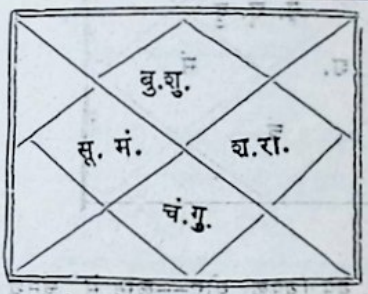

चारों केन्द्र में इस प्रकार पाप-शुभ ग्रह के अनुसार ग्रह आना असंभव है इससे उपरोक्त हल योग पृथक-पृथक दो प्रकार से बताये हैं।

७. यव योग—यह वज्र योग का उल्टा है अर्थात् सब पाप ग्रह लग्न और सप्तम में हो या सब शुभ ग्रह चतुर्थ और दशम में हों।

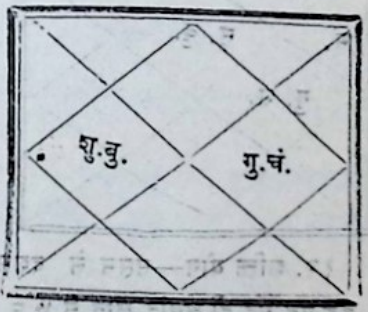

मतांतर—

यहाँ भी विद्वानों का कहना है कि १,७ भाव में पापग्रह और ४,१० भाव में शुभ ग्रह हों तो वज्र योग होता है। यहाँ भी उपरोक्त विचार होता है कि सूर्य से शुक्र बुध चौथेभाव में नहीं जा सकते इस प्रकार तो कमल योग होता है। परन्तु शुभ और पापग्रहों के विचार से यहाँ भी दो उपरोक्त प्रकार से योग बताये है।

८. कमल योग--चारों केन्द्र में शुभ-पाप सभी ग्रह हों और पणफर आपोक्लिम में ग्रह न हों अर्थात् सब केन्द्र में ही हों केन्द्र के बाहर ग्रह न हो इसमें शुभ-पाप के क्रम का कोई विचार नहीं है, जैसा यहाँ बताया है।

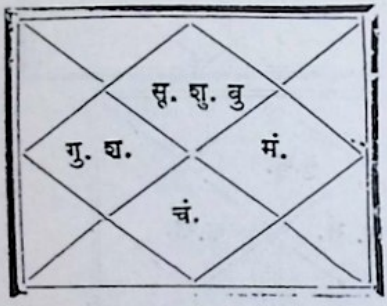

९. वापी योग--यह कमल योग का उल्टा है। अर्थात् सभी ग्रह केन्द्र के बाहर हों। केन्द्र में कोई ग्रह न हो इसके भी २ भेद हैं।

(१) सब ग्रह २,५,८,११ (पणफर) में।
(२) सब ग्रह ३,६,९,१२(आपोक्लिम)में।

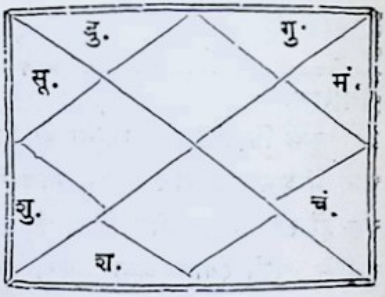

१०. यूप (यूपक) योग--लग्न से चतुर्थ तक सब ग्रह हों अर्थात्, १,२,३ और ४ भावों में सबग्रह हों।

११. शर (इणु या इषु) योग—चतुर्थ से सप्तम तक सब ग्रह हों जैसा यहाँ बताया है अर्थात् लग्न से ४,५,६,७ भाव में सब ग्रह होना।

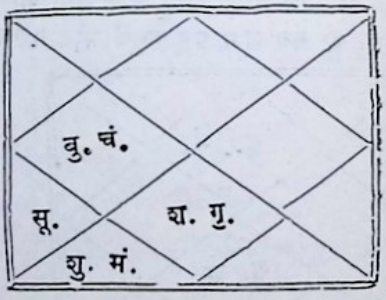

१२. शक्ति योग—सप्तम से दशम भाव तक सब ग्रह हों अर्थात् लग्न से ७,८,९,१० भाव में सब ग्रह हों।

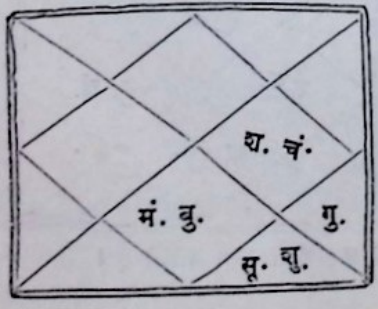

१३. दंड योग—दशम भाव से लग्न तक सब ग्रह हों अर्थात् लग्न से १०,११,१२ और १ स्थान में सब ग्रह हों।

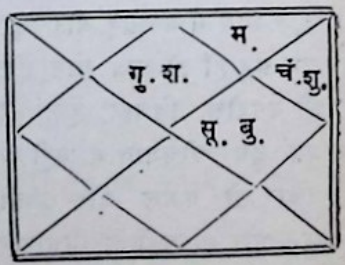

१४. नौका योग—लग्न से सप्तम तक प्रत्येक भाव में एक-एक ग्रह हो ७ भाव तक ७ ग्रह हों।

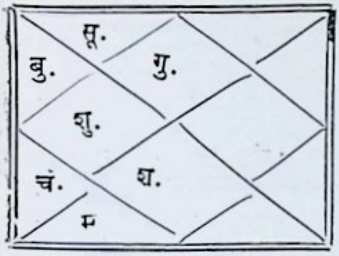

१५. कूट योग—चतुर्थ भाव से दशम भाव तक प्रत्येक भाव में एक-एक करके ७ ग्रह ७ स्थानों में हों।

१६—छत्र योग—सप्तम से लग्न तक सब ग्रह हों। प्रत्येक भाव में ग्रह हों।

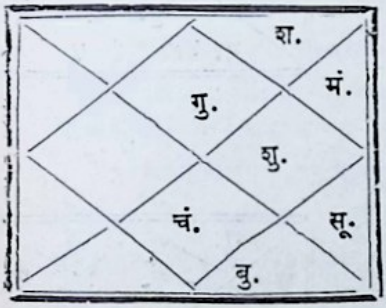

१७—चाप (धनुष-कार्मुक) योग—दशम भाव से चतुर्थ भाव तक सब ग्रह हों एक-एक करके ७ ग्रह ७ स्थानों में हों।

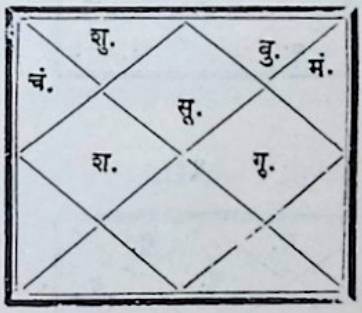

१८—अर्द्धचन्द्र योग—पूर्वोक्त नौका, कूट, छत्र और चाप में जो योग बताये हैं उनको छोड़ कर उनके विरुद्ध शेष किसी स्थान से लगातार सब ग्रह एक-एक करके ७ स्थानों में हों इसके ८ भेद हो जाते हैं।

[१] २ भाव से ८ भाव तक लगातार ७ घरों में १,१ ग्रह।
[२] ३ भाव से ९ भाव तक लगातार ७ घरों में १-१ ग्रह।
[३] ५ भाव से ११ भाव तक लगातार ७ घरों में १-१ ग्रह।
[४] ६ भाव से १२ भाव तक लगातार ७ घरों में १-१ ग्रह।
[५] ८ भाव से २ भाव तक लगातार ७ घरों में १-१ ग्रह।
[६] ९ भाव से ३ भाव तक लगातार ७ घरों में १-१ ग्रह।
[७] ११ भाव से ५ भाव तक लगातार ७ घरों में १-१ ग्रह।
[८] १२ भाव से ६ भाव तक लगातार ७ घरों में १-१ ग्रह।

१

बु.
सू.
+
शु.
–
चं.
गु.
मं.
श.

२

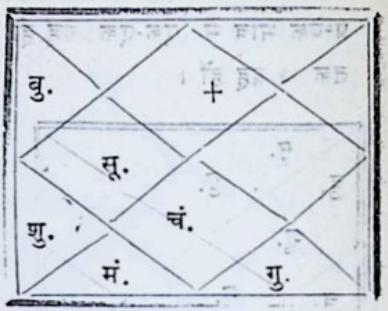
बु.
+
सू.
शु.
चं.
मं.
गु.

३

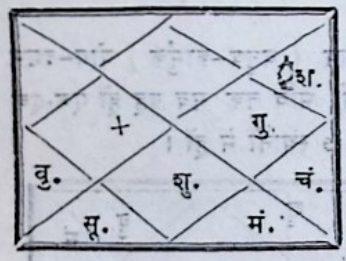
श.
+
गु.
बु.
शु.
चं.
सू.
मं.

४

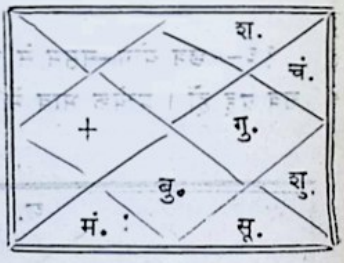
श.
चं.
+
गु.
बु.
शु.
मं.
सू.

५

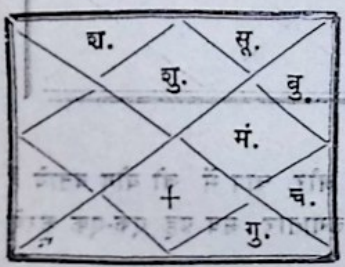
श.
सू.
शु.
बु.
मं.
+
चं.
गु.

६

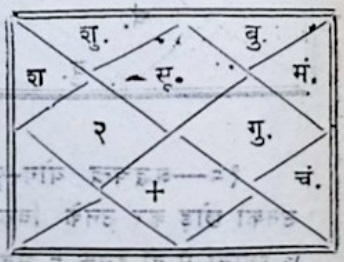
शु.
बु.
श
सू.
मं.
२
गु.
+
चं.

७

शु.
बु.
मं.
सू.
गु.
+
चं.

८

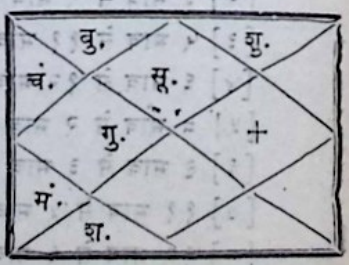
बु.
शु.
चं.
सू.
गु.
+
मं.
श.

१९—समुद्र (जलधि) योग–द्वितीय स्थान से द्वादश स्थान तक बीच में १-१ भाव छोड़कर सभी ग्रह हों। अर्थात् २,४, ६,८,१० और १२ इन भावोंमें ही ७ग्रह हैं।

२०—चक्र योग–लग्न से एकादश भाव तक १-१ घर छोड़कर सभी ग्रह हों अर्थात् १,३,५,७,९, ११ इन भावों में ही ७ ग्रह हों यह समुद्र का उल्टा है।

(६) वज्र, (७) यव, (८) कमल, (९) वापी योग पर विचार—

प्राचीन ग्रंथों के अनुसार वज्र आदि योग लिखे गये हैं परन्तु सूर्य से चौथे घर में बुध तथा शुक्र कैसे हो सकते हैं सूर्य से बुध या शुक्र २८ अंश और ४८ अंश से अधिक दूरी पर नहीं हो सकते अर्थात् सूर्य से बुध शुक्र दूसरे या तीसरे भाव से अधिक दूर नहीं हो सकते। भारतवर्ष में इन योगों का होना असंभव जान पड़ता है।

कुछ विद्वानों का कहना है कि सूर्य से बुध शुक्र चौथे स्थान पर इस प्रकार हो सकते हैं कि सूर्य अंतिम २९ अंश के अंत में एक भाव में हो और २ राशि छोड़कर चौथे ठिकाने थोड़े अंश से बुध या शुक्र हो।

२ संख्या योग—इसके ७ भेद हैं। पूर्वोक्त योगों में से कोई योग न हो तब इन योगों का विचार करना। १–वीणा (वल्ली–वल्लकी) योग–यदि ७ स्थानों में सब ग्रह हों। २–दाम (दमनिका–दामनी–रज्जू) योग = केवल ६ स्थानों में सब ग्रह हों। ३–पास योग = केवल ५ स्थानों में सब ग्रह हों। ४–केदार योग = केवल ४ स्थानों में सब ग्रह हों। ५–शूल योग = केवल ३ स्थानों में सब ग्रह हों। ६–युग योग = केवल २ स्थान में ही सब ग्रह हों। ७–गोल (गोलक) योग=केवल १ स्थान में ही सब ग्रह हों।

विचार—संख्या योग की प्राप्ति में आकृति योग हो तो संख्या योग का फल नहीं होगा आकृति योग का ही फल होगा।

संख्या योग के भेद—

१.	एक-एक ग्रह पृथक रहने से	— ७ भेद।
२.	२ ग्रह साथ रहने से	—२१ भेद।
३.	३ ग्रह साथ रहने से	—३५ भेद।
४.	४ ग्रह साथ रहने से	—३५ भेद।
५.	५ ग्रह साथ रहने से	—२१ भेद।
६.	६ ग्रह साथ रहने से	— ७ भेद।
७.	७ ग्रह साथ रहने से	— १ भेद।
		योग १२७

इनके भेदों के उदाहरण

१. एक ग्रह एक ही स्थान में होने से ७ होते हैं अर्थात् पृथक एक ही ग्रह रहने से सब ७ योग ७ ग्रहों के होते हैं (वीणा योग)।

२. दामनी योग = २ ग्रह एक साथ होने से २१ भेद होते हैं—

१ सूर्य चन्द्र	८ चन्द्र बुध	१५ मंगल शनि
२ सूर्य मंगल	९ चन्द्र गुरु	१६ बुध गुरु
३ सूर्य बुध	१० चन्द्र शुक्र	१७ बुध शुक्र
४ सूर्य गुरु	११ चन्द्र शनि	१८ बुध शनि
५ सूर्य शुक्र	१२ मंगल बुध	१९ गुरु शुक्र
६ सूर्य शनि	१३ मंगल गुरु	२० गुरु शनि
७ चन्द्र मंगल	१४ मंगल शुक्र	२१ शुक्र शनि

३. ३ ग्रह एक साथ होने से ३५ भेद हो जाते हैं (पाश योग के)

१ सू. च. मं.	८ सू. मं. शु.	१५ सू. शु. श.	२२ चं. बु. श.	२९ मं. गु. शु.
२ सू. चं. बु.	९ सू. मं. श.	१६ चं. मं. बु.	२३ चं. गु. शु.	३० मं. गु श.
३ सू. चं. गु.	१० सू. बु. गु.	१७ चं. मं. गु.	२४ चं. गु. श.	३१ मं. शु. श.
४ सू. चं. शु.	११ सू. बु. शु.	१८ चं. मं. शु.	२५ चं. शु. श.	३२ बु. गु. शु.
५ सू. चं. श.	१२ सू. बु. श.	१९ चं. मं. श.	२६ मं. बु. गु.	३३ बु. गु. श.
६ सू. मं. बु.	१३ सू. गु. शु.	१० चं. बु. गु.	२७ मं. बु. शु.	३४ बु. शु. श.
७ सू. मं. गु.	१४ सू. गु. श.	२१ चं. बु. शु.	२८ मं. बु. श.	३५ गु. शु. श.

४. केदार योग—४ ग्रह एक साथ रहने से ३५ भेद हो जाते हैं सूर्य सहित २० भेद, चन्द्र सहित १० भेद, मंगल सहित ४ भेद बुध सहित एक भेद सब ३५ भेद होते हैं।

१ सू. चं. मं. बु.	१० सू. चं. शु. श.	१९ सू. बु. शु. श.	२८ चं. बु. गु. श.
२ सू. चं. मं. गु.	११ सू. मं. बु. गु.	२० सू. गु. शु. श.	२९ चं. बु. शु. श.
३ सू. चं. मं. शु.	१२ सू. मं. बु. शु.	२१ चं. मं. बु. गु.	३० चं. गु शु. श.
४ सू. चं. मं. श.	१३ सू. मं. बु. श.	२२ चं. मं. बु. शु.	३१ मं. बु. गु. शु.
५ सू. चं. बु. गु.	१४ सू. मं. गु. शु.	२३ चं. मं. बु. श.	३२ मं. बु. गु. श.
६ सू. चं. बु शु.	१५ सू. मं. गु. श	२४ चं. मं. गु शु.	३३ मं. बु. शु. श.
७ सू चं. बु. श.	१६ सू. मं. शु. श	२५ चं. मं. गु. श.	३४ मं. गु. शु. श.
८ सू. चं. गु. शु.	१७ सू. बु. गु. शु.	२६ चं. मं. शु. श.	३५ बु. गु. शु. श.
९ सू. चं. गु. श.	१८ सू. बु. गु. श.	२७ चं. बु. गु. शु.	

५. शूल योग के भेद—५ ग्रह एक साथ होने ये २१ विकल्प होते है।

१ सू. चं. मं. बु. गु.	८ सू. चं. बु. गु. श.	१५ सू. बु. गु शु. श.
२ सू. चं. मं. बु शु.	९ सू. मं. बु. शु. श.	१६ च. मं. बु. गु. शु.
३ सू. चं. मं. बु श.	१० सू. चं. गु. शु. श.	१७ चं. मं. बु. गु. श.
४ सू. चं. मं. गु. शु.	११ सू. मं. बु गु. शु.	१८ चं. मं. बु. शु. श.
५ सू. चं मं गु. श.	१२ सू. मं. बु. गु. श.	१९ चं मं गु. शु. श.
६ सू. चं. मं. शु. श.	१३ सू. मं. बु. शु. श.	२० चं. बु. गु. शु. श.
७ सू. चं. बु. गु शु.	१४ सू. मं. गु. शु. श.	२१ मं बु. गु. शु. श.

६. युग योग में ६ ग्रह एक साथ होने से ७ भेद हो गये हैं।

१ सूर्य, चन्द्र, मंगल, बुध, गुरु, शुक्र
२ सूर्य, चन्द्र, मंगल, बुध, गुरु, शनि
३ सूर्य, चन्द्र, मंगल, बुध, शुक्र, शनि
४ सूर्य, चन्द्र, मंगल, गुरु, शुक्र, शनि
५ सूर्य, चन्द्र, बुध, गुरु, शुक्र, शनि
६ सूर्य, मंगल, बुध, गुरु, शुक्र, शनि
७ चन्द्र, मंगल, बुध, गुरु, शुक्र, शनि

७. गोल योग—७ ग्रह एक स्थान में होने से १ ही भेद होता है।

१. सूर्य, चन्द्र, मंगल, बुध, गुरु, शुक्र, शनि।

३. आश्रय योग—चर-स्थिर-द्विस्वभाव इन तीन प्रकार की राशियों के आश्रय में उत्पन्न होने के कारण "आश्रय योग" कहे जाते हैं।

१—रज्जू योग-सभी ग्रह चर राशियों में हों।
२—मूसल योग-सभी ग्रह स्थिर राशियों में हों।
३—नल योग-सभी ग्रह द्विस्वभाव राशियों में हों।

४. दल योग—इसके २ भेद हैं।

१—माला (स्रग) योग-सब शुभ ग्रह केन्द्र में हों पाप ग्रह केन्द्र में न हों।
२—सर्प योग-सब पाप ग्रह केन्द्र में हों शुभ ग्रह केन्द्र में न हों।

यहाँ तीनों केन्द्रों में सब शुभ ग्रह हों और पाप ग्रह केन्द्र के बाहर हों तो माला योग होता है। इसके विरुद्ध सर्प योग है जिसमें तीनों केन्द्रों में पाप ग्रह हों और शुभग्रह केन्द्र के बाहर हों।

इन योगों के फल पर विचार

१—संख्या योग की प्राप्ति में आकृति योग भी हो तो आकृति योग फल देगा। संख्या योग का फल नहीं होगा।

२—आश्रय योग में आकृति योग हो जावे तो आकृति योग ही फल देगा।

३—दल योग में संख्या योग की प्राप्ति हो तो दल योग ही फल देगा।

४—दल योग और आश्रय योग मिलवां हो तो उपरोक्त दल योग सरीखा साधारण फल होगा।

५—संख्या योग में पूर्वोक्त आश्रय योग भी हो तो आश्रय योग ही फल देगा। संख्या योग का फल नहीं होगा। आश्रय योग न हो तब संख्या योग फल देगा।

६—आश्रय योग में – शुभ ग्रह शुभ फल देते हैं पाप ग्रह पाप फल देते हैं आश्रय योग में उत्पन्न प्राणी कुल विख्यात होता है।

इन सब योगों के पूर्ण फल आगे दिये हैं।

१. आकृति योग के फल

१—गदा–सदा धनोद्योगी, यज्ञ करने वाला, शास्त्र और संगीत में निपुण, स्वर्ण रत्न आदि धनों से युक्त (वृ० पा०)। शस्त्र योग में प्रवीण, शीघ्र कहे हुए शब्द के अर्थ में तत्पर, यज्ञ करने वाला, धनी और सम्पन्न (ल० चं०)। अनेक शास्त्र और अनेक मंत्रों में तत्पर, गाने बजाने में चतुर, यज्ञ करने वाला, उग्र वैर करने वाला शत्रुओं से युक्त, भूषण सहित, स्त्रियों वाला (जा० भ०)।

२—शकट-गाड़ी, रथ, छकड़े आदि के काम आजीवन करे, नित्य रोगी, उसकी स्त्री निंदा के योग्य हो (वृ० जा०)। दीन हीन, मित्र और वैभव युक्त, कृश खोटी स्त्री को प्राप्त, त्याग करने वाला (जा० भ०)। निधि के काम में निपुण, स्थिर द्रव्य, सुखी, प्रसन्न मुख, और नेत्रों वाला, सदा ही तप्त, मूर्ख, कुसार्या वाला, रोगों से व्याकुल, कष्ट युक्त जीविका, दरिद्री, भाइयों से हीन (ल० चं०)। रोगी, कुनखी मूर्ख, गाड़ी से जीविका, निर्धन, मित्र आदि जन से रहित (वृ० पा०)।

३—विहग (पक्षी)-पराये भोजन से पर कार्य को जाने-आने वाला और भ्रमण करने वाला, कलह करने वाला (वृ० जा०)। भोगों सहित, त्यागों से उत्पन्न सौख्य वाला, यात्रा में प्रीति, नित्त ही परदेश जाने वाला, बहुत बोलने वाला, (जा० भ०)। घूमने में अत्यन्त रुचि, प्रसन्न, सुरत में जीविका प्राप्त होने वाला, निकृष्ट और लड़ाई प्रिय वाला (ल० चं०)। भ्रमण शील, परतंत्र, दूत, सुरत से जीविका करने वाला, ढ़ीठ, झगड़ालू (वृ० पा०)।

४—शृंगाटक-बुढ़ापे तक सुखी (वृ० जा०)। उत्कृष्ट राजा, साहसी, युद्ध का इच्छुक, सौख्य युक्त, बड़ा बुद्धिमान्, पहिली स्त्री से बैर करने वाला (जा० भ०)। हंसने में सुखी, सुन्दर स्त्री वाला, राजा से डरने वाला, लड़ाई में प्रसन्न, धनवान्, स्त्री का दास (ल० चं०)। कलह कारक, योद्धा, सुखी, राजा का प्रिय, सुन्दरी पत्नी, धनी, स्त्री का द्वेषी (वृ० पा०)।

५ हल—कृषि कर्म या पशु पालन आदि करे (वृ० जा०)। दूत, साधु और मित्रों से रहित, खेती से आजीविका, अत्यन्त दुःखों का भोग, क्लेशों को प्राप्त, धन हीन (जा० भ०)। बहुत भोजन करने वाला, दरिद्री, कृषि कर्म से वर्जित, उद्वेग युक्त, दुःखित और दास (ल० चं०)। बहु भक्षी, दरिद्र, कृशक, दुःखी, भाई बन्धुओं से युक्त (वृ० पा०)।

६. वज्र—बालक वृद्ध और प्रथम अवस्था में सुखी, युवावस्था में दुःखी, सब का प्यारा, अति शूर (वृ० जा०)। पहिली अवस्था में जीविका को प्राप्त, अंत में सौख्य को प्राप्त, भाग्यवान्, जवानी में भाग्यहीन, काम-क्रोध युक्त (जा० भ०)। सुखी सौभाग्यवान्, शूर, मध्य अवस्था में भाग्यहीन, स्नेह रहित, विरुद्ध करने वाला, दुष्ट (ल० चं०) बाल्य और वार्धक्य में सुखी, शूर, सुन्दर, निस्पृह, भाग्यहीन, खल और लोगों का विरोधी (वृ० पा०)।

७. यव—पराक्रमी, बाल वृद्ध अवस्था में दुःखी, तरुण अवस्था में सुखी (वृ० जा०) जवानी में धर्म काम अर्थ सम्पत्ति सहित, नम्रता सहित सदा, उत्साही, श्रेष्ठ वृत्त वाला शांत चित्त क्रोध रहित (जा० भ०)। दाता स्थिर चित्त, प्रतापी, नियमों से युक्त, मध्य अवस्था में सुख, द्रव्य और पुत्रों से युक्त (ल० चं०)। योग में वृत नियम सुकर्म में तत्पर, मध्यावस्था में सुखी, धन पुत्र से युक्त, दाता, स्थिर बुद्धि (वृ० पा०)।

८. पद्म (कमल)—सर्वत्र निंदित, कीर्ति और अगणित सुख, गुण, विद्या एवं पराक्रम

वाला (वृ० जा०) । सदा बड़े हर्ष वाला, बलवान्, सुन्दर कांति, यशवान, राजा के वंश से उत्पन्न बड़ी आयु वाला (जा० भ०) । स्थिर आयु वाला, बड़ी कीर्ति युक्त, मनोहर शुभ पुत्रों से युक्त, गुण और मद से भी युक्त (लं० च०) । धनी, गुणी, दीर्घायु, विख्यात यश, शुद्ध, सैकड़ों सुकर्म करने वाला राजा (वृ० पा०) ।

९. वापी—बहुत काल तक थोड़े सुख वाला, भूमि में धन गाड़ने वाला, कृपण (वृ० जा०) । बड़ी आयु अपने वंश में प्रतापी, सौख्य युक्त, अत्यन्त धीर, पंडित, सुन्दर वाणी, श्रेष्ठ मन, फूलों की वाटिका करने वाला, थोड़ा सुख (जा० भ०) । धन संग्रह में चतुर, स्थिर धन, स्थिर सुख, पुत्रवान्, नृत्य नाटक आदि से सुखी राजा होता है (वृ० पा०) । बहुत काल तक थोड़ा सुख वाला, धन बढ़ाने वाला, कृपण (जा० पारि०) ।

१०. यूप—दानी, प्रमाद न करने वाला, उत्तम यज्ञ करने वाला (वृ. जा.) धैर्य वान् उदार, यज्ञ कर्म में तत्पर, अनेक विद्या और श्रेष्ठ विचार करने वाला, लक्ष्मीयुक्त (जा. भ.) आत्म रक्षा में रत; त्यागी, सुखी, सत्य और कृतों से युक्त विशिष्ट और मंत्रवादी (लं० च०) आत्मज्ञानी, यज्ञ कर्ता, स्त्री से सुखी, बलवान्, व्रत नियम को पालन करने वाला, विशिष्ट पुरुष होता है (वृ. पा.) ।

११. शर (वाण)—जीव घाती, कैद खाने का मालिक, वाण, बन्दूक, गोली आदि का बनाने वाला (वृ. जा.) । अति हिंसा करने वाला, शिल्प का जानने वाला, दुःखों से सन्ताप को प्राप्त, शिल्प के कार्य से दुःखी (जा. भ.) बाणों का बनाने वाला, चोरों की सेवा करने वाला, मांस खाने वाला, मृगों को बांधने वाला, हिंसक, कारीगरियों को जानने वाला (लं. चं.) । शर बनाने वाला, जेल का मालिक, शिकार से धन वाला, मांस भक्षी, हिंसक, कुशिल्पकार (वृ. पा.) ।

१२. शक्ति—नीच कर्म करने वाला आलसी, योग और धन से वर्जित (वृ. जा.) । नीच ऊँच मनुष्यों से प्रीति करने वाला, आलसी, सौख्य और धन से रहित, विवाद और युद्ध में उसकी विशाल बुद्धि का सौख्य थोड़ा होता है (जा० भ०) । अति आयु वाला, युद्ध में निपुण, सौभाग्यवान्, नीच, दुःखी दरिद्री (ल० चं०) । धन हीन, निष्फल जीवन, दुःखी, नीच, आलसी दीर्घायु, युद्ध में निपुण, सुन्दर रूप (वृ० पा०) ।

१३. दंड—पुत्रादि से रहित, दास कर्म करने वाला (वृ० जा०) । दीन हीन उन्मत्तों से मित्रता को प्राप्त हुए सुख वाला, सेवकों से बैर करने वाला, अपने कुटुम्बियों से बैर करने वाला, स्त्री, पुत्र, धन, मित्रों से हीन, बुद्धि रहित (जा० भ०) । दरिद्री, नष्ट सुत और स्त्री वाला, बन्धुओं से बाहर, निर्धनी, नीच और दुखित (ल चं०) । पुत्र स्त्री, धन से हीन, निर्दय, अपने परिजन से त्यक्त दुःखी, नीचों का सेवक (वृ० पा०) ।

१४. नौका—यशस्वी, कमी दुःखी, कभी सुखी, कृपण (वृ०जा०) । प्रसिद्ध लोभी और भोग सौख्य से रहित, क्लेश पाने वाला, निरंतर चंचल चित्त, चोरी से उत्पन्न धान्य से जीविका (जा० भ०) । ऐश्वर्यवान्, बहुत आयु वाला, प्रसिद्ध यशो, कृपण, मलिन, लुब्ध और चंचल (ल० चं०) । जलोत्पन्न मोती आदि से जीविका, बहुत आशा करने वाला, विख्यात, दुष्ट, कंजूस, मलिन, लोभी (वृ० पा०) ।

१५. कूट—झूठ बोलने वाला, बंधन स्थान का रक्षा करने वाला (वृ० जा०)। वन में वास करने वाला, पहलवान्, भीलों से प्रीत करने वाला, धनहीन, निंदित कर्म करने वाला, धर्म अधर्म के ज्ञान रहित, कपटी (जा० भ०)। मिथ्या बोलने वाला, मूर्ख, क्रूर, कपटी, बंधुओं का पालन करने वाला, दरिद्री और पर्वत में वास करने वाला (ल० चं०)। मिथ्या भाषी, जेल का अधिकारी, धन हीन, शठ, क्रूर दुर्ग स्थान में रहने वाला (वृ० पा०)।

१६. छत्र - अपने जनों को सुख देने वाला, बुढ़ापे में सुखी (वृ० जा०)। चतुर राजाओं का कार्य करने वाला, दयावान् बालपने और बुढ़ापे में सब सौख्य को प्राप्त, श्रेष्ठ छत्र और चामर को प्राप्त करने वाला (जा० भ०)। उत्तम बुद्धि, दयालु, बड़ी, आयु, भाइयों का आश्रयी, बाल्यावस्था में सुखी (ल० चं०)। अपने कुटुम्बियों का पोषक, दयालु, अनेक राजाओं को मान्य, श्रेष्ठ बुद्धि, आदि अंत वयस में सुखी, दीर्घायु (वृ० पा०)।

१७. चाप (धनुष)—संग्राम में शूर, बाल्य व वृद्धावस्था में सुखी (वृ० जा०) बालपन और बुढ़ापे में सौख्य पाने वाला, वनों और पर्वतों में रहने वाला, बड़ा अभिमानी, गर्व की उन्मत्तता से आपत्ति को प्राप्त, धनुषधारी (जा० भ०)। मध्यावस्था में भाग्यहीन, गुप्त काम को नौकर रखने वाला, वन में रत, झूठ ही कलंक लगाने वाला, चोर, कामुक (ल० चं०)। मिथ्यावादी, जेल का अधिकारी, चोर, धूर्त, वन विहार प्रिय, भाग्यहीन और वयस के मध्य में सुखी (वृ० पा०)।

१८. अर्द्ध चन्द्र (अर्द्ध शशि)—सुभग, सर्वजन प्रिय, दर्शनीय वस्तुओं में श्रेष्ठ, सेना, आभरण, धन वस्त्रादि सहित, मनुष्यों के उत्सव के अर्थ चन्द्रमा समान होता है (जा० भ०)। बली, राजा को प्रिय, कांत, सुवर्ण और रत्नों से अलंकृत, सेनापति, सौभाग्यवान् (ल० चं०)। सेनापति, सुन्दर रहे, राज मान्य, बलवान्, सुवर्ण, रत्न आदि धन से युक्त (वृ० पा०)।

१९. समुद्र—राजा तुल्य ऐश्वर्यवान् और भोगवान् (वृ० जा०)। दानी, धैर्यवान्, सुन्दर, शीलवान्, दयावान्, राजा से सौख्य प्राप्त, धन्यवाद के योग्य (जा० भ०)। बहुत द्रव्य वाला, रत्नों से युक्त, पुत्रवान्, भोगवान्, जनों को प्रिय, स्थिर चित्त तथा सुखी (ल० चं०)। बहुत रत्न आदि धन से पूर्ण भोगी, लोकप्रिय, सुपुत्रवान्, स्थिर धन और सुशील (वृ० जा०)।

२०. चक्र—तपोज्ञानादि से राजाओं से प्रणाम करने योग्य (वृ० जा०)। लक्ष्मीवान्, रूप वाला, बड़ा प्रतापी, बारम्बार भेंट (नजर) लेने वाला, उस राजा का यश समग्र धरती पर होता है (जा० भ०)। सम्पूर्ण राजा जिसके चरण कमलों की सेवा करे ऐसा महाराजा हो (ज० चं०)। अनेक राजाओं से वंदित चक्रवर्ती राजा हो (वृ० पा०)।

२ संख्या योग का फल

१. वीणा (बल्ली)—सक्ष्म दृष्टि, बारीकी से विचार करने वाला, नाच और गीत

प्रिय (वृ० जा०)। धन युक्त, शास्त्र के पार जाने वाला, बहुत जनों का पालन करने वाला, अनेक सौख्य सहित, चतुर, गान विद्या में निपुण (जा० भ०)। नृत्य, गीत को प्रिय, नेता, बहुत नौकरों वाला, धनी, सुखी, कार्यों में निपुण (ल० चं०)। गीत, नृत्य और वाद्य में प्रेम, सुखी, धनी, नेता, बहुत नौकरों वाला (वृ० पा०)।

२. दाम (दामिनी)—उदार, परोपकार में तत्पर, पशुपालक, ग्रामाधिपति (वृ० जा०)। आनन्द को प्राप्त, पुत्रों से युक्त, धैर्यवान्, विद्वान्, आभूषण और कोप से संतोष को प्राप्त, विराजमान, शील से युक्त, उदार बुद्धि, श्रेष्ठ (जा० भ०)। उपकारी धनी, मूर्ख, पशु, पुत्र और समृद्धियों से युक्त, रत्नों से परिपूर्ण (ल० चं०)। परोपकारी, नीति से धनोपार्जक, महा ऐश्वर्यवान्, विख्यात, पुत्र रत्न आदि से युक्त विद्वान् (वृ० पा०)।

३. पाश—असन्मार्ग से धन संग्रह, इसके बंधु भृत्य भी ऐसे ही कर्ता होते हैं (वृ० जा०)। दीन के समान, बुराई करने में तत्पर, बंधन से दुःख, बहुत बोलने वाला, कपट युक्त, क्रोधी, अनेक अनर्थ करने वाला वन में प्रीति (जा० भ०)। कार्य में निपुण, प्रपंची, बहुत बोलने वाला, भाइयों की सेवा करने वाला, विशील, बहुत भक्षण करने वाला, दासों से युक्त (ल० चं०)। बंधन भागी, कार्य में दक्ष, प्रपंची, बहुत बोलने वाला, अधिक परिवार वाला (वृ० पा०)।

४. केदार—कृषि कर्ता, बहुतों का उपकार कर्ता (वृ० जा०)। सत्य युक्त, धनवान्, नम्र, खेती में प्रीति, आदर से उपकार करने वाला, धैर्यवान्, श्रेष्ठ आचरण (जा० भ०)। सत्य युक्त, धनवान्, नम्र, खेती में उत्कंठा, उपकार करने में आदर रखने वाला, धैर्यवान्, विशेषतः धीर, मनुष्यों कैसे आचार वाला (मान०)। बहुतों का उपकारी खेती करने वाला, सत्यवक्ता, सुखी, चंचल, धनवान् (वृ० पा०)।

५. शूल—शूर, रण में अंग में चोट, अत्यन्त धन की इच्छा करने वाला, दरिद्री (वृ० जा०)। युद्ध और विवाद में तत्पर, बड़ा शूर वीर, क्रूर स्वभाव, कठोर चित्त, धनहीन, संसारी मनुष्यों को शूल के समान होता है (जा० भ०)। तीक्ष्ण, आलसी, निर्धनी, हिंस्र, शूर, बाहर निकाला हुआ, संग्राम में लब्ध शब्द वाला (ल.चं.)। तीक्ष्ण स्वभाव, आलसी निर्धन, हिंसक, समाज के बाहर, शूर, युद्ध में विजयी (वृ.पा.)।

६. युग—धन रहित, पाखंडी, (तीनों मार्ग से वहिष्कृत) (वृ० जा०)। पाखण्ड में पूरी प्रीति, लज्जा रहित, धर्म कर्म रहित, पुत्र और धन से हीन, योग्य, अयोग्य ज्ञान से शून्य (जा० भ०)। पाखण्डी, द्रव्यहीन, माता पिता से वर्जित, मलिन (ल.चं.)। पाखण्डी, निर्धन, समाज के बाहर, माता, पुत्र और धर्म से हीन (वृ०पा०)।

७. गोल (गोलक)—निर्धन, मलीन, अज्ञानी, निंद्य, शिल्पी, आलसी, भ्रमण करने वाला (वृ०जा०)। विद्याबल उदारता और सामर्थ्य इन सबसे रहित अनेक दुःखों को प्राप्त, सदा परदेश जाने वाला, अनेक प्राणियों से प्रीत, अन्याय से युक्त

(जा० भ०)। विद्या धन और मान से हीन, अति दुःखी मलीन, (ल०चं०)। बलवान् धन हीन, विद्या और ज्ञान से शून्य, मलीन और दुःखी (वृ०पा०)।

३. आश्रय योग के फल

१. रज्जु—ईर्षावान्, निरंतर परदेशवासी, मार्ग चलने में बहुत रुचि (वृ० जा०)। श्रेष्ठ रूप, दुःख का भागी, दुष्ट कामों में निरंतर उत्साही, परदेश में विचरने वाला, धन को प्राप्त (जा० भ०)। परदेश में द्रव्य का भागी, सुरूपवान्, दान में तत्पर क्रूर और दुष्ट स्वभाव (ल० च०)। भ्रमण शील, सुन्दर, परदेश जाने में सुखी, क्रूर, दुष्ट स्वभाव (वृ० पा०)।

२. मूसल—मानी, गर्वित, धनवान्, बहुत कार्य करने वाला (वृ० जा०)। अनेक ज्ञान और ध्यान युक्त, पुत्र और लक्ष्मी से राज तेज से शोभा को प्राप्त, राजा का आश्रित, हर्ष युक्त, हर्ष की उत्कर्षता से पूर्णता को प्राप्त (जा० भ०)। राजाओं से पूज्य, धन से युक्त, प्रसिद्ध पुत्र वाला, राजा को प्रिय, स्थिर चित्त वाला, कर्मों से युक्त, (ल० चं०)। मानी, ज्ञानी, धनी, राजमान्य, विख्यात, बहुत पुत्र वाला स्थिर चित्त वाला। वृ० पा०)।

३. नल—व्यंग (कोई अंगहीन) दृढ़ निश्चय वाला, धनवान् सब कार्यों में सूक्ष्म दृष्टि (वृ० जा०)। निरंतर रत्नों के सहित, अपने घर में हो, राजा से प्रीत करने वाला, पुण्यवान् देह, सदा कीर्ति सहित (जा० भ०)। स्थूल देह, निपुण, धन का संचय करने वाला, बंधुओं का प्यारा, सुरूपवान् (ल० चं०)। हीन व अधिक अंग वाला, धन संग्रह कारी, अति चतुर बंधुओं का प्रिय और सुन्दर (वृ० पा०)।

४. दल योग के फल

१. स्रग (माला)—भोगी (अनेक अच्छे भोग वाला) (वृ० जा०)। पुत्र और मित्रों युक्त, श्रेष्ठ आभूषण युक्त, अनेक वाहन युक्त, स्त्रियों में क्रीड़ा करने वाला (जा० भ०)। वस्त्र वाहन और भोग आदि से युक्त, कांत और मित्रों को प्रिय, सदा, सुखी (ल० चं०)। नित्य वाहन वस्त्र भोग आदिकों से सुखी, सुन्दर, बहुत स्त्री वाला (वृ० पा०)।

२. सर्प—नाना प्रकार के अच्छे भाग-भोगने वाला (वृ० जा०)। पराये अन्न का भोगने वाला, क्रोधी, दरिद्री, निंद्रा का उत्साही, बड़े वेग सहित, अमंगल कारी, खोटे वाला, पराई बड़ाई करने वाला (जा० भ०)। क्रूर, दरिद्री, दुःखित, सदा पर का अन्न खाने वाला, दीन और विषम पुरुष हो (ल० चं०)।

चंद्र कृत सुनफा अनफा आदि योग

१. अधियोग—चन्द्र से ६,७,८ भाव में शुभ ग्रह गुरु शुक्र हो। ये ग्रह तीनों स्थानों में या २ स्थानों में या एक ही स्थान में हों तब भी अधियोग हो जाता है।

इसके ७ भेद हैं—सब शुभ ग्रह (१) छठे भाव में, (२) सप्तम भाव में, (३) अष्टम

भाव में, (४) ६,७ भाव में, (५) ६,८ भाव में, (६) ७,८ भाव में या (७) चन्द्र में ६,७,८ घर में हो।

यहाँ बुध यदि मंगल या शनि के साथ हो तो पाप ग्रह हो जाता है। सूर्य के साथ बहुधा बुध रहता है वह बुरा नहीं माना जाता। राहु केतु भी चन्द्र के बिन्दु मात्र है इनके साथ भी बुध रहने से दोष नहीं आता।

इससे ३ प्रकार के अधियोग हो जाते हैं।

१. शुक्र अधियोग—शुभ ग्रह से ६,७,८ घर में हो बुध गुरु शुक्र इनमें से पृथक पृथक या एक दूसरे के साथ हो परन्तु साथ में कोई पाप ग्रह न हो तब यह योग होता है।

२. मिश्र अधियोग—शुभ ग्रह गुरु बुध शुक्र कोई पाप ग्रह के साथ होकर चन्द्र से ६,७,८ घर में क्रमशः या किसी दूसरे प्रकार से हों।

३. पाप अधियोग—चन्द्र ६,७,८ घर में पाप ग्रह केवल हो।

फल—

१—शुभ अधियोग—राज्य का राजा या धनवान् या जिमीदार हो।

२—मिश्र अधियोग—मिनीस्टर सेक्रेटरी या कोई उच्च स्थान प्राप्त करे।

३—पाप अधियोग—कोई फौज या पुलिस में उच्च स्थिति प्राप्त करे।

२ सुनफा योग

चन्द्र से दूसरे स्थान में सूर्य को छोड़कर दूसरे मंगल आदि ग्रह हों तो सुनफा योग होता है।

अन्यमत—चन्द्र के केन्द्र और नवांश से भी इस योग का विचार होता है जैसे—

१—चन्द्र से चतुर्थ में मंगल आदि ग्रह में से एक या अधिक ग्रह हो तो सुनफा योग हो जाता है।

२—या चन्द्र जिस नवांश पर हो उससे दूसरी राशि पर मंगल आदि ग्रह हो तो भी सुनफा योग हो जाता है अनफा योग मंगल बुध गुरु, शुक्र शनि इन पाँचों ग्रह से ही होता है।

इसके ३१ भेद हैं।

१—चन्द्र से दूसरे घर में मंगल बुध गुरु शुक्र शनि—५ भेद

२—२ ग्रह योग

(१) मं. बु., (२) मं. गु., (३) मं शु., (४) मं. श., (५) बु. गु., (६) बु. शु., (७) बु. श., (८) गु. शु., (९) गु. श., (१०) शु. श., १० भेद

३—३ ग्रह के भेद

(१) मं. बु. गु.। (२) मं. बु. शु.। (३) मं. बु. श.। (४) मं. गु. शु.।

(५) मं गु. श.। (६) मं. शु. श.। (७) बु. गु. शु.। (८) बु. गु. श.।
(९) बु. शु. श.। (१०) गु. शु. श.। १० भेद

४—४ ग्रह के भेद—
(१) मं. बु. गु. शु.। (२) मं. बु. गु. श.। (३) मं. बु. शु. श.।
(४) मं. गु. शु. श.। (५) बु. गु. शु. श.। ५ भेद

५—५ ग्रह का भेद—
मं. बु. गु. शु. श.। १ भेद

सुनफा के ३१ भेद के अनुसार अनफा के भी ३१ भेद होते हैं। योग ३१

३. अनफा योग—चन्द्र से १२वें स्थान में सूर्य को छोड़कर और कोई मंगल आदि ग्रह में से कोई हो तो अनफा होता है।

मतांतर—चन्द्र से केन्द्र व नवांशक में भी इस योग का विचार होता है जैसे (१) चन्द्र से दशम स्थान में मंगल आदि ग्रह में से एक या अधिक ग्रह हो तो अनफा होता है। या (२) चन्द्र जिस नवांश पर हो उससे १२वीं राशि पर मंगल आदि ग्रह हो तो अनफा योग हो जाता है।

इसके भी सुनफा योग सदृश ३१ भेद हो जाते हैं। सुनफा में चन्द्र से दूसरे स्थान पर जैसे योग बनते हैं उसी प्रकार अनफा योग से भी चन्द्र से १२वें स्थान में ग्रह होने से उपरोक्त बताये प्रकार से ३१ भेद हो जाते हैं। इन दोनों योगों में केवल स्थान के भेद का ही अन्तर है परन्तु योग के ३१ भेद पूर्ववत् हैं। इस प्रकार दोनों के मिल कर ६२ भेद हो जाते हैं।

४ दुरुधरा—चन्द्र से दूसरे और बारहवें दोनों स्थानों में ग्रह हों तब वह योग होता है।

अन्यमत—चन्द्र के केन्द्र और नवांश से भी इस योग का विचार होता है जैसे :—
१. चन्द्र से चतुर्थ और दशम दोनों स्थान में ग्रह हो तो दुरुधरा योग हो जाता है। या २. चन्द्र जिस नवांश में हो उससे दूसरे और बारहवें दोनों स्थानों में ग्रह हो तो दुरुधरा योग हो जाता है।

इन तीनों योग में योग कारक ग्रह के साथ सूर्य भी हो तो योग का प्रभाव नहीं रहता।

दुरुधरा योग के १०८ भेद हो जाते हैं जो आगे दिये हैं।

दुरुधरा योग के १०८ भेद

चन्द्र से एक दूसरे भाव में दूसरा बारहवें भाव में या दूसरा बारहवें भाव में और पहिला दूसरे भाव में।

(१) २ ग्रह योग के २० भेद—

(१) मं. बु (१) बु. मं. (५) बु. गु. (५) गु. बु. (८) गु शु. (८) शु. गु.
(२) मं. गु. (२) गु. मं. (६) बु. शु. (६) शु. बु. (९) गु. श. (९) श. गु.
(३) मं. शु. (३) शु. मं. (७) बु. श (७) श. बु (१०)शु. श. (१०) शु. श.
(४) मं. श. (४) श. मं.।

यहाँ २ ग्रह के १० योग हैं और इन योगों के विरुद्ध १० योग और हैं जिनको मिलकर सब २० योग हो जाते हैं।

(२) ३ ग्रह के योग के ६० भेद हैं।

दूसरे भाव में एक और १२ वें भाव में २ ग्रह या इसके विरुद्ध १२ वें भाव में १ ग्रह और दूसरे भाव में २ ग्रह। इस प्रकार ३० योग होते हैं और उनके विरुद्ध योग ० हुये। सब मिलकर ६० योग हो जाते हैं।

१—मं०-बु० गु०	१—बु०-मं० गु०	१—गु०-मं० बु०
२—मं०-बु० शु०	२—बु०-मं० शु०	२—शु०-मं० बु०
३—मं०-बु० श०	३—बु०-मं० श०	३—श०-मं० बु०
४—मं०-गु० शु०	४—गु०-मं० शु०	४—शु०-मं० गु०
५—मं०-गु० श०	५—गु०-मं० श०	५—श०-मं० गु०
६—मं०-शु० श०	६—शु०-मं० श०	६—श०-मं० गु०
७—बु०-गु० शु०	७—गु०-बु० शु०	७—शु०-बु० गु०
८—बु०-गु० श०	८—गु०-बु० श०	८—श०-बु० गु०
९—बु०-शु० श०	९—शु०-बु० श०	९—श०-बु० शु०
१०-गु०-शु० श०	१०-शु०-गु० श०	१०-श०-गु० शु०

यहाँ ३ ग्रह के योग १० हैं तीनों ग्रहों को पृथक् २ करने से एक योग के ३ भेद हो जाते हैं इस प्रकार १० योग के ३० भेद हो जाते हैं। उपरोक्त बताये प्रकार से विरुद्ध ३० भेद और हो जाते हैं सब मिलकर ३ ग्रह के ६० भेद हो जाते हैं।

४ ग्रह के योग

२ ग्रह दूसरे भाव में २ ग्रह बारहवें भाव में-इसके ३० भेद

१—मं० बु०-गु० शु०	१—गु० शु०-मं० बु०
२—मं० बु०-गु० श०	२—गु० श०-मं० बु०
३—मं० बु०-शु० श०	३—शु० श०-मं० बु०
४—मं० गु०-बु० शु०	४—बु० शु०-मं० गु०
५—मं० गु०-बु० श०	५—बु० श०-मं० गु०
६—मं० गु०-शु० श०	६—शु० श०-मं० गु०
७—मं० शु०-बु० गु०	७—बु० गु०-मं० शु०
८—मं० शु०-बु० श०	८—बु० श०-मं० शु०

९–मं० शु०–गु० श०	९—गु० श०–मं० शु०
१०–मं० श०–बु० गु०	१०—बु० गु०–मं० श०
११–मं० श०–बु० शु०	११—बु० शु०–मं० श०
१२—बु० गु०–मं० श०	१२–मं० श०–बु० गु०
१३—बु० गु०–शु० श०	१३—शु० श०–बु० गु०
१४–बु० शु०–गु० श०	१४–गु० श०–बु० श०
१५–गु० शु०–बु० श०	१५– बु० श०–गु० शु०

यहाँ १५ योग हैं इनके विरुद्ध १५ और योग मिलकर कुल ३० योग हो जाते हैं।

४ ग्रह के और भी ४० योग हैं, जो नीचे बताये गये हैं।

एक ग्रह दूसरे भाव में और ३ ग्रह बारहवें भाव में

या ३ ग्रह दूसरे भाव में और १ ग्रह बारहवें भाव में

(१) मं.–बु. गु. शु. (१) बु. गु. शु.–मं. (११) गु.–मं. शु. श. (११) मं. शु. श.–गु.
(२) मं.–बु. गु. श. (२) बु. गु. श.–मं. (१२) गु,–बु. शु. श. (१२) बु. शु. श.–गु
(१) मं.–बु. शु. श. (३) बु. शु. श.–मं. (१३) शु.–मं. बु. गु. (१३) मं. बु. गु.–शु.
(४) मं.–गु. शु. श. (४) गु. शु. श.–मं. (१४) शु.–मं. बु. श. (१४) मं. बु. श.–शु.
(५) बु.–मं. गु. शु. (५) मं. गु. शु,–बु. (१५) शु.–मं. गु. श. (१५) मं. गु. श.–शु.
(६) बु.–मं. गु. श. (६) मं. गु. श.–बु. (१६) शु.–बु. गु. श. (१६) बु. गु. श.–शु.
(७) बु.–मं. शु. श. (७) मं. शु. श.–बु. (१७) श.–मं. बु. गु. (१७) मं. बु. गु–श
(८) बु.–गु. शु. श. (८) गु. शु. श.–बु. (१८) श–मं. बु. शु. (१८) मं. बु. शु.–श.
(९) गु.–मं. बु. शु. (९) मं. बु. शु.–गु. (१९) श.–मं. गु. शु. (१९) मं. गु. शु.–श.
(१०) गु.–मं.बु. श. (१०)मं. बु. शु.–गु. (२०) श.–बु. गु. शु. (२०) बु. गु. शु.–श.

(यहां २० योग हैं इनके विरुद्ध २० योग मिल कर कुल ४० योग हो जाते हैं।)

५ ग्रह के योग

दूसरे भाव में १ और १२ वें भाव में ४ ग्रह — इसके १० योग

या दूसरे भाव में ४ और १२ वें भाव में ४ ग्रह

१–मं०–बु० गु० शु० श०	१—बु० गु० शु० श०–मं०	५ ग्रह के ५ योग
२—बु०–मं० गु० शु० श०	२—मं० गु० शु० श०–बु०	इनके विरुद्ध ५ योग
३—गु०–मं० बु० शु० श०	३—मं० बु० शु० श०–गु०	मिलकर कुल १०
४—शु०–मं० बु० गु० श०	४–मं० बु० गु० श० शु०	योग हो गये।
५ –श०–मं० बु० गु० शु०	५—मं० बु० गु० शु० श०	

५ ग्रह के और भी २० योग हैं:—२ भाव में २ ग्रह १२ भाव में ३ ग्रह=१० योग

या २ भाव में ३ ग्रह १२ वें भाव में २ ग्रह=१० योग

२० योग

१—मं० बु०–गु० शु० श०	१—गु० शु० श०–मं० बु०	दुरुधरा के १८० भेद इस
२—मं० गु०–बु० शु० श०	२—बु० शु० श०–मं० गु०	प्रकार हैं–२ ग्रह योग=२०
३—मं० शु०–बु० गु० श०	३– बु० गु० श०–मं० शु०	३ ग्रह योग=६०
४—मं० श०–बु० गु० शु०	४—बु० गु० शु०–मं० श०	४ ग्रह योग=३०+४०=७०
५– बु० गु०–मं० शु० श०	५—मं० शु० श०–बु० गु०	५ ग्रह योग=१०+२०=३०
६ – बु० शु०–मं० गु० श०	६— मं० गु० श०–बु० शु०	योग=१८० भेद
७—बु० श०–मं० गु० शु०	७ – मं० गु० शु०–बु० श०	
८— गु० शु०–मं० बु० श०	८—मं० बु० श०–गु० शु०	
९—गु० श०–मं० बु० शु०	९—मं० बु० शु०–गु० श०	
१०—शु० श०–मं बु० गु०	१०—मं० बु० गु०–शु० श०	

५. केमद्रुम योग—चन्द्र से २,१२ इन दोनों स्थानों में कोई ग्रह न हो अर्थात् ये दोनों स्थान ग्रह रहित हों तो केमद्रुम योग होता है।

अन्यमत–चन्द्र से ४,१० स्थानों में से किसी में ग्रह न हो या चन्द्र जिस नवांश पर हो उससे २,१२ दोनों स्थानों में कोई ग्रह न हो तो केमद्रुम योग होता है।

चन्द्र के दोनों ओर सूर्य को छोड़कर और कोई ग्रह न हो अर्थात् चन्द्र से २,१२ घर में सूर्य हो तो कोई हानि नहीं परन्तु सूर्य के अतिरिक्त और कोई ग्रह नहीं होगा।

सुनफा, अनफा और दुरुधरा योग न हो तब यह केमद्रुम योग होता है इसमें निंदित और दरिद्र का जन्म होता है इससे राजयोग भी नष्ट हो जाते हैं।

अन्य प्रकार के केमद्रुम योग

१—चन्द्र के साथ या उससे २,१२ स्थान में या लग्न से केन्द्र में सूर्य को छोड़ कर अन्य कोई ग्रह नहीं हो तो केमद्रुम योग होता है। यह योग अन्य योगों के फल नाश कर अपना फल देता है इसे पहिले देखना चाहिये इसमें दरिद्र होता है (वृ० पा०)।

२—लग्न में या सप्तम में चन्द्र हो उसे गुरु न देखता हो तो केमद्रुम योग होता है (जा० पारि०)।

३– ग्रह अष्टकवर्ग में अल्प शुभ रेखा के हों और निर्बल हों तो केमद्रुम योग का फल देने वाला होता है (जा० पारि०)।

४—चन्द्रमा पाप ग्रहों से युक्त हो पाप ग्रह की राशि में हो या पाप नवांश में हो रात्रि के जन्म में दशमेश से दृष्ट हो निर्बल हो तो केमद्रुम योग होता है (जा० पारि०)।

५—चन्द्रमा खल ग्रह से युक्त नीचांशक में हो भाग्येश उसे देखता हो या रात्रि में क्षीण चन्द्रमा नीचगत हो उस समय उत्पन्न होने वाले का केमद्रुम योग होता है (जा० पारि०)।

६—आत्म कारक नवांश या लग्न या पद से द्वितीय और अष्टम भाव में तुल्य

पाप ग्रह हो तो केमद्रुम योग होता है। यदि चन्द्रमा को उस पर दृष्टि हो तो विशेष अशुभ होता है (वृ० जा०)।

७. कारक से जन्म लग्न से या जन्म पद से द्वितीय और अष्टम स्थान में पाप ग्रह बराबर हो अर्थात् पाप ग्रह की तुल्यता हो तो केमद्रुम योग होता है यदि उस पर चन्द्र की दृष्टि हो तो पूर्ण केमद्रुम योग होता है (जैमिनि)।

८—नवमेश व्यय में, व्ययेश धन में निर्बल हो, तीसरे भाव में पाप ग्रह हो तो केमद्रुम योग होता है (शंभु०)।

केमद्रुम भंग योग

जिन योगों के होने से केमद्रुम योग भंग हो जाता है।

१—सूर्य से चन्द्रमा केन्द्र में हो—यह अधम योग है।

२—सूर्य से चन्द्रमा पणफर में हो —मध्यम योग है।

३—सूर्य से चन्द्रमा आपोक्लिम में हो—उत्तम श्रेष्ठ।

इन योगों में नम्रता, धन, ज्ञान, बुद्धि, निपुणता चतुरता उपरोक्त प्रकार से होती है अर्थात् (१) अधम में—उपरोक्त अधम अर्थात् न्यून होती है। (२) मध्यम में सम होती है अर्थात् कम व अधिक होती है। (३) उत्तम में उपरोक्त धन आदि की प्राप्ति उत्तम अर्थात् अधिक होती है।

१—जन्म में चन्द्रमा को सब ग्रह देखते हों तो केमद्रुम योग का नाश होकर दीर्घायु, चक्रवर्ती और धनवान् होता है (जा० भ०)।

२—सभी ग्रह चारों केन्द्रों में हों तो केमद्रुम नाश योग होता है इससे केमद्रुम के दुष्ट फल को दूर कर श्रेष्ठ फल देता है (जा० भ०)।

३—पूर्ण चन्द्र शुभ ग्रह की राशि में हो या बुध गुरु शुक्र इनमें से किसी से युक्त हो तो केमद्रुम का फल नष्ट कर पुत्र धन सौख्य और मंगल की सिद्धि देता है (जा० सं०)।

४—जन्म लग्न से चन्द्र केन्द्र भाव में हो या चन्द्र भौमादि ग्रहों में से किसी से युक्त हो तो केमद्रुम नहीं होता (स० चि०)।

५—जन्म में मंगल सहित गुरु तुला राशि में, सूर्य कन्या राशि में, मेष में चन्द्रमा हो और बाकी के कोई ग्रह उसको नहीं देखते हों तो केमद्रुम योग नाश कर उसे राजा बना देता है (फल०)।

६—लग्न से केन्द्र में सूर्य चन्द्र छोड़कर और कोई ग्रह हो, चन्द्र के साथ भी कोई ग्रह हो तो केमद्रुम भंग हो जाता है (वृ० जा०)।

७—चन्द्रमा केन्द्र में हो और भौमादिक ५ ग्रहों में से किसी से युक्त हो तो केमद्रुम भंग हो जाता है (प्रा० यो०)।

८—केमद्रुम के लक्षण होने पर भी यदि चन्द्रमा या शुक्र केन्द्र में हो गुरु से दृष्ट हो तो यह केमद्रुम योग नहीं होता (जा० पा०)।

९—चन्द्रमा शुभ ग्रह से युक्त हो या शुभ ग्रहों के मध्य में हो उसे गुरु देखता हो तो केमद्रुम योग भंग हो जाता है (जा० पा०)।

१०—चन्द्रमा अति मित्र के घर में, अपनी उच्च राशि में, स्वगृह या स्वनवांश में हो उसे गुरु देखता हो तो के० द्रु० योग भंग हो जाता है (जा० पा०)।

११—पूर्ण चन्द्र लग्न में हो शुभ ग्रह से युक्त हो या दशम भाव में उच्च का हो उसे गुरु देखता हो तो के० द्रु० भंग हो जाता है (जा० पारि०)।

१२—केन्द्र में चन्द्र हो या अन्य कोई ग्रह हो तो के० द्रु० योग भंग हो जाता है (जा० पारि०)।

१३—लग्न या चन्द्र से ३,६,१०,११ घर में कोई शुभ ग्रह न हो तो दरिद्र हो जाता है। इससे ३,६,१०,११ में शुभ ग्रह हो तो यह योग भंग हो जाता है (जा० पा०)

१४—सब ग्रह ५ घरों में कोई भी क्रम से हों चाहे वे पाप या शुभ ग्रह के साथ हों या नीच या शत्रु गृही भी हों तो अच्छा फल देंगे बुरा प्रभाव दूर कर केमद्रुम योग भंग कर भाग्यवान् बना देंगे (ज्यो० रह०)।

चंद्र कृत योगों का फल

१ अधियोग—सेनापति मंत्री या राजा हो। इसमें भी विचार है कि योग कर्ता ग्रह उत्तम बली हो तो राजा, मध्यबली हो तो मंत्री, हीन बली हो तो सेनापति हो और सौख्य ऐश्वर्य युक्त हो, शत्रु नष्ट हो, दीर्घायु निरोग और निर्भय हो (वृ० जा०)। सुख विभव से सम्पन्न, शत्रु रहित, दीर्घायु, निरोग, निर्भय सेनापति मंत्री या राजा हो। चन्द्र से ६,७,८ घर में से १ घर में ग्रह हो तो सेना नायक, २ घर में ग्रह हो तो मंत्री, ३ घर में ग्रह हो तो राजा हो (स० चि०)।

२ सुनफा योग—अपने बाहु बल से कमाये हुए धन युक्त, राजा या राजा के तुल्य, बुद्धिमान्, विख्यात, कीर्तिवाला (वृ० जा०) राजमंत्री, पुण्यवान्, विद्वान्, अपने बाहु-बल से कमाये हुए धन से धनवान्, सम्पूर्ण मनुष्यों में बड़ी कीर्ति से विख्यात, बुद्धि में अधिक निश्चय होता है (शंभु०)। अपनी भुजाओं से मान को इकट्ठा करने वाला, बड़े यश वाला, बुद्धिमान्, सुखी, राजा का मंत्री, श्रेष्ट कृत्य करने वाला (जा० भ०)।

चन्द्र से दूसरे में मगल—पंडित, बहुत धन वाला, कठोर वचन, हिंसक, सदा विरोध युक्त, समर्थ, राजा।

चन्द्र से दूसरे में बुध—अतीत शास्त्र वेत्ता, चतुर, धर्मात्मा, काव्यकर्ता, शूरवीर, सबका प्रिय, सुन्दर शील।

चन्द्र से दूसरे में गुरु—सब विद्याओं का आचार्य, विख्यात और राजा, धर्मात्मा, कुटुम्ब और धन की वृद्धि।

चन्द्र से दूसरे में शुक्र—स्त्री क्षेत्र और गृह इनका स्वामी अर्थात् स्त्री, धन जगह जमीन घर वाला, चौपायों से युक्त, पराक्रमी राजा तथा सुन्दर कार्य कर्ता, सुन्दर वेष, चतुर।

चन्द्र से दूसरे में शनि—चतुर बुद्धि, ग्राम और पुर से पूजित, धनी, गुप्त रीति से काम करने वाला, मलिन।

३–अनफा—जिसकी आज्ञा को कोई भंग न करे, निरोगी, विनयवान्, गुणवान्, (ख्याति कीर्ति, शब्द स्पर्श रूप रस गंध का सुख भोगने वाला, सुन्दर, शरीर, मानसी दुःखों से रहित (वृ० जा०) उदार मूर्ति गुणवान्, यशवान्, काम कला युक्त, श्रेष्ठ वाणी, श्रेष्ठ वृत्ति, निरन्तर नम्रता सहित, स्वामी होता है (जा० भ०) राजा, निरोग, सब सुखों से युक्त, सुशील, यशस्वी, सुरूप (वृ० पा०)।

चन्द्र से १२वें मंगल—चोरों का स्वामी, दर्शन योग्य, इन्द्रियजित्, मानी, संग्राम में उत्साही, क्रोध से सम्पदाओं को सिद्ध करने वाला, सुन्दर शरीर, प्रगल्भ।

चन्द्र से १२ वें बुध—गान विद्या में चतुर, चित्रकारी में चतुर, पंडित, अतिवक्ता, राजा से सत्कार प्राप्त, मनोहर, सुन्दर ऐश्वर्य युक्त, विख्यात कर्मों वाला।

चन्द्र से १२ वें गुरु—गम्भीर, श्रेष्ठ बुद्धि, पुत्रों से युक्त, बुद्धिमान्, राजा के वश में चलने वाला, समर्थ विद्वान्।

चन्द्र से १२ वें शुक्र—स्त्रियों को अतिप्रिय, राजा का स्नेही, रक्षक, मनोहर सुवर्ण आदि धन से सम्पन्न।

चन्द्र से १२ वें शनि—आधीन जनों का पोषण कर्ता, जनपति, आज्ञाकारी चौपायों से युक्त, दुर्बलता युक्त, भोगी, गुणी पुत्रवान्।

४–दुरुधरा—यथासम्भव भोग भोगने में सुखी, धन तथा घोड़ा आदि वाहनों से युक्त, दाता, अच्छे चाकर (वृ० जा०)। उत्पन्न हुए भोगों को भोगने में सुखी, धन वाहन आदि युक्त, दानी अच्छे नौकर (मान०)। प्राप्त सुख को भोगने वाला, दानी, धन वाहन युक्त उत्तम नौकर (वृ० पा०)।

चन्द्र यदि मंगल और बुध के बीच हो– मरण पर्यंत बहुत-सा धन वाला, अति चतुर, अतीव टेढ़े अंतःकरण वाला, गुणी, लोभी, वृद्ध स्त्री से आसक्त, कुल में मुख्य।

चन्द्र यदि मंगल-गुरु के बीच हो—स्वकर्मों में सर्वत्र विख्यात, कपटी, अनेक के किये वैर युक्त, क्रोधी, वैर युक्त ढीठ, रक्षा करने में तत्पर, संग्रह करने वाला।

चन्द्र यदि मंगल और शुक्र के बीच हो—उत्तम स्त्री वाला, अति सुन्दर, प्रत्येक कार्य में खेद करने वाला, अस्त्रों का वेत्ता, शूरवीर कसरती, युद्ध में उत्साहपूर्वक लड़ने वाला।

चन्द्र यदि मंगल-शनि के बीच हो—उत्तम जनों से प्रीत करने वाला, बहुत धन संचय करने वाला, अनेक व्यसनों में आसक्त, क्रोधी, चुगल, शत्रु से युक्त।

चन्द्र यदि बुध-गुरु के बीच हो—धर्मात्मा, शास्त्रवेत्ता, वाक्य चतुर, समस्त वृद्धियों में समृद्ध, त्यागी, दान देने में विख्यात।

चन्द्र यदि बुध-शुक्र के बीच हो – प्रिय भाषी, सर्वप्रिय, प्रवृत्ति मार्ग में प्रवृत्ति, सुकृत करने वाला, सुख से पूर्ण, बड़ा शूर, मंत्र में चतुर, राज्य करने वाला।

चन्द्र यदि बुध-शनि के बीच हो—अनेक देशों में गमन करने वाला, धन के वश में न रहने वाला, सर्वोत्तम विद्या का ज्ञाता, अन्य जन पूज्य, स्वजनों का विरोधी।

चन्द्र यदि गुरु-शुक्र के बीच हो—धैर्य तथा बुद्धि का धारण करने वाला, स्थिरता युक्त नीतिज्ञ, सुवर्ण रत्नों से परिपूर्ण जगत् में विख्यात, राज कृत्यों का करने वाला।

चन्द्र यदि गुरु-शनि के बीच हो—सुख, नीति और विज्ञान से युक्त, प्रिय वचन कहने वाला, विद्वान्, प्रत्येक कार्य में भार को उठाने वाला, सुरूप, पुत्रवान्, धनवान्।

चन्द्र यदि शुक्र-शनि के बीच हो—आयु में बड़ी कन्या से विवाह, कुलाचार से युक्त चतुर, स्त्रियों का प्रिय, धन समृद्ध राजा से सत्कार पाने वाला, बहु वेत्ता, उपरोक्त फल कहे यदि योग कारक ग्रह उच्च में हो स्वगृही हो अपने नवांश या मित्र गृही हो तो सब फल देते हैं।

चन्द्रमा यदि राहु या केतु से युक्त हो या चन्द्र से १२वें राहु हो या दुरुधरा योग कारक ग्रह नीच या अस्तंगत हो तो मिश्र फल होता है।

५—केमद्रुम योग का फल—मलिन (स्नान आदि काम में आलसी), अनेक दुःखों से युक्त, नीच, अधम काम करने वाला, दरिद्री, प्रेष्य (दास कर्म करने वाला) दुष्ट स्वभाव, राजवंश में भी उत्पन्न हुआ हो तो इनमें से दो या सभी फल भोगे (वृ० जा०) उल्टी वृत्ति वाला, मलिन, बुरे वेष वाला, परदेश वासी, स्त्री और मित्र और पुत्र तथा धन से हीन होता है चाहे राजा का पुत्र हो (जा० भ०)। राज कुल का भी दुःखित नीच निर्धन, नौकर और खल हो (जा० पारि०)। पुत्र कलत्र से रहित सदा दुःखी होकर देशान्तरों में घूमे, ज्ञाति जनों के सुख में विरत, कई कार्यों में मुखर (मुखवीर) बने, बुरे वस्त्रों का पहिरने वाला, नीच प्रकृति, चिरायु, सदा भयभीत रहने वाला (मान०)।

चन्द्र कृत अन्य योग

१—चन्द्र से सूर्य केन्द्र में हो तो—सुशीलता, धन, ज्ञान और शस्त्र का बोध, बुद्धि में निपुणता अर्थात् कार्य में सूक्ष्म विचार। वे फल उसके अधम होंगे अर्थात् इतनी वस्तुएँ उसे नहीं मिलें।

२—चन्द्र से सूर्य पणफर में—उपरोक्त फल मध्यम अर्थात् थोड़ा-थोड़ा मिलें।

३—चन्द्र से सूर्य आपोक्लिम में—उपरोक्त फल उत्तम मिलें।

४—जन्म दिन का हो चन्द्र स्व या अधि मित्र के नवांश में हो गुरु की दृष्टि हो—धनवान्, सुखी।

जन्म रात का हो चन्द्र स्व या अधि मित्र के नवांश में हो शुक्र की दृष्टि हो—धनवान्, सुखी।

५—जन्म में चन्द्र दृश्य चक्रार्द्ध में हो तो अशुभ फल देता है दुःख दरिद्र से युक्त रहे।

जन्म में चन्द्र अदृश्य चक्रार्द्ध में हो तो— शुभ फल अर्थात् ऐश्वर्य आदि युक्त रहे।

६—लग्न या चन्द्र से सभी शुभ ग्रह उपचय में हों—अति धनवान्, उपचय में ३ शुभ ग्रह हों तो पूरा फल हो, २ हों तो मध्यम, यदि एक ही शुभ ग्रह हो तो अल्प फल हो। उपचय में यदि शुभ ग्रह न हो तो दरिद्री हो (वृ० जा०)।

७ - लग्न या चन्द्र से ३,६,११ स्थान में मंगल शनि या सूर्य हो—इनमें से १ ग्रह हो तो धनाढ्य हो, २ ग्रह हों तो मंत्री, ३ ग्रह हों तो राजा हो।

८—लग्न और चन्द्र दोनों से उपचय में सभी शुभ ग्रह हों तो अतिधनी हो यह केमद्रुम आदि योगों के दुष्ट फल को काट कर धनवान् करता है।

सूर्य कृत योग

४ योग—१–वोशि, २–वेशि, ३–उभय चरी, ४–कर्तरी।

१–वोशियोग - चन्द्र को छोड़कर सूर्य से बारहवें स्थान में मंगल आदि ५ ग्रहों में से कोई भी ग्रह हो।

२–वेशि योग - चन्द्र को छोड़कर सूर्य से दूसरे स्थान में मंगल आदि कोई भी ग्रह हो।

३–उभय चरी योग—चन्द्र को छोड़कर सूर्य से दूसरे और बारहवें दोनों स्थानों में कोई ग्रह हो।

४–कर्तरी योग—चन्द्र को छोड़कर जब सूर्य से दूसरे या बारहवें स्थान में कोई भी ग्रह न हो।

उपरोक्त योगों का फल

१—वोशि योग—धुन्धली आँखों वाला, बहुत कार्य करने वाला, नीचे को देखने वाला, ऊँचे देह वाला, झूठ बोलने वाला (जा० भ०)। सम दृष्टि, सत्यवक्ता, दीर्घ देह, आलसी, सुखी, धनी (वृ० पा०)। शुभ ग्रह युक्त—चतुर, दानी, विद्वान्, सदा आनंद, परम सुखी, यशस्वी, बलवान्।

पापयुक्त—विदेशी, अति मूर्ख, कामातुर, खून करने की इच्छा, विकृत मुख (जा० पारि०)।

वोशि योग में—गुरु हो—बहुत इकट्ठी की हुई सम्पत्ति, सुन्दर दृष्टि।

शुक्र—खेद वाला, शरीर से हीन, थोड़ा कार्य करने वाला, डरने वाला, पराधीन।

बुध—पराये तर्क से युक्त, दरिद्री, कोमल, विनयहीन, निर्लज्ज।

मंगल—माता को मारने वाला, पराया उपकार करने वाला।

शनि—पर स्त्री में आसक्त, वृद्धों के समान आकार वाला, दयालु।

२–वेशि योग—दयावान्, मोटी देह वाला, वाग्विलास में कुशल, आलसी तिरछी निगाह वाला (जा० भ०)।

कार्यों में निपुण, दानी, यश विद्या बल से युक्त (वृ० पा०)।

मंद दृष्टि, स्थिर वचन भाषी, बड़ा परिश्रमी, ऊपर से नवे हुए शरीर वाला, अधो-दृष्टि वाला (मान०)।

शुभ ग्रह युक्त—सुशील, वक्ता, धनी, अभय, शत्रुओं को जीतने वाला।

पाप ग्रह युक्त—दुष्टजनों का सेवक, पापात्मा, धन और सुखहीन (जा० पारि०)।

सूर्य से दूसरे में गुरु—धैर्य, सत्य; बुद्धि से युक्त, युद्ध में शूर।

सूर्य से दूसरे में शुक्र जगत में विख्यात बड़ा गुणी, आर्य, बड़ा शूर।

सूर्य से दूसरे में बुध—प्रिय वाणी, मनोहर शरीर, दूसरों को हँसी दिल्लगी में बेवकूफ बनाने वाला।

सूर्य से दूसरे में शनि – वाणिज्य कला में स्वभाव रखने वाला, पर द्रव्य का हरण कर्ता, गुरु जनों का द्वेषी।

सूर्य से दूसरे में मंगल—संग्राम में विख्यात, रथ हाँकने की विद्या में गुणवान् सर्वत्र विख्यात।

३—उभय चरी योग—सब की सहने वाला, स्थिर स्वभाव वाला, अत्यन्त समृद्धियों सहित, अधिक बलवान् एक सी देह वाला, अत्यन्त ऊँचा नहीं, सीधी दृष्टि, अधिक लक्ष्मी युक्त (जा० भ०)। राजा या राज तुल्य तथा सुखी (वृ० पा०)। बड़ा सुभग, अनेक भृत्यों को रखने वाला, भाई बंदों का रक्षक, राजा के तुल्य, नित्य उत्साह रखने वाला सदा प्रसन्न, नित्य अनेक भोगों को भोगने वाला (मान०)।

शुभ युक्त—श्रेष्ठ राजाओं के सदृश, धन, सुख, शील और दया से अनुरक्त हृदय।

पाप युक्त—पापी, रोगी दूसरे का कार्य करने वाला, दरिद्री (जा० पारि०)।

विचार—उपरोक्त योगों में सूर्य एवं योगकर्ता ग्रह या राशि अंश के अनुसार फलों में न्यून या अधिकता विचारना। ये ग्रह स्वगृही मित्र गृही या उच्च के हों तो बहुत धन और सुख युक्त राजा होता है।

४—कर्तरी योग—

शुभ कर्तरी—दीर्घायु, भय रहित, रोग रहित, शत्रु रहित, धनी और सुखी।

पाप कर्तरी—गरीब, अशुद्ध, दुःखी, स्त्री और सन्तान हीन, कुछ अंग से रहित, अल्पायु (फल०)।

इस पर विचार—

उपरोक्त चारों योग में जो शुभ या पाप योग कहे हैं उनमें योग कारक ग्रह शुभ हो तो शुभ योग होगा पाप ग्रह हो तो अशुभ या पाप योग होगा जैसे सूर्य से बारहवें स्थान में शुभ ग्रह हो तो शुभ वोशि, पाप ग्रह हो तो पाप वोशि होता है। यदि सूर्य से दूसरे स्थान में शुभ ग्रह हो तो शुभ वेशि पाप ग्रह हो तो पाप वेशि होगा। यदि सूर्य से २,१२ दोनों स्थानों में शुभ ग्रह हो तो शुभ उभय चरी, पाप ग्रह हो तो पाप उभय चरी योग होगा।

कर्तरी योग के शुभ पाप योग का विचार—लग्न से बारहवाँ और दूसरा घर शुभ ग्रह से युक्त हो तो शुभ कर्तरी होगा पाप ग्रहों से युक्त हो तो पाप कर्तरी होगा।

उपरोक्त शुभ योगों में सुनफा के शुभ प्रभाव के अनुसार एवं पाप योगों में सुनफा के अशुभ प्रभाव के अनुसार फल होता है।

१. शुभ योग—लग्न में केवल शुभ ग्रह हों तो शुभ योग होता है यदि लग्न में ग्रह नहीं हो और द्वितीय और द्वादश स्थान में शुभ ग्रह हों तो भी शुभ योग होता है। फल-वाग्मी (वक्ता) हो, रूप शील गुण युक्त हो। (वृ० पा०)।

अशुभ योग या पाप योग – लग्न में केवल पाप ग्रह हो तो पाप योग होता है। यदि लग्न में ग्रह न हो और द्वितीय द्वादश भाव में पाप ग्रह हो तब भी अशुभ योग होता है। फल –कामी हो, पाप कर्म करे, दूसरों का पैसा खाने वाला हो (वृ० पा०)।

२. सिंहासन योग—२, ६, ८, १२ इन ४ स्थानों में सब ग्रह हों। फल—राज सिंहासन प्राप्त हो।

३. ध्वज योग—सब पाप ग्रह अष्टम भाव में हों और सब शुभ ग्रह लग्न में हों। फल—पुरुष नायक या राजा हो।

४. कारिक योग—७, १० या ११ भाव में सब ग्रह हों अर्थात् या तो सप्तम में सब ग्रह हों या १० भाव में सब ग्रह हों या लाभ में सब ग्रह हों। फल – नीच वंश में होकर भी राजा होता है। यदि राजवंश में उत्पन्न हुआ हो तो राजा होने में क्या शंका है।

५. एकावली योग—लग्न से या अन्य भाव से क्रम से समस्त ग्रह हों। फल—महाराजा हो।

६. चतुः सागर योग—चारों केन्द्रों में सब शुभ और पाप ग्रह हों। फल—सब अरिष्ट दूर कर धन देता है। राजयोग होता है। बहुत रत्नों से युक्त, हाथी घोड़ा धनों से परिपूर्ण पृथ्वीपति होता है। (ल० चं०) अन्य मत—१, ४, ७, १० इन्हीं राशियों में सब शुभ और पाप ग्रह हों तो भी यह योग होता है (मान०)।

७. अमर योग—मेष व सिंह का सूर्य केन्द्र या त्रिकोण में हो और चन्द्र वृष या कर्क राशि ८ या १२ भाव में हो और दोनों पर क्रमशः गुरु शुक्र इनकी दृष्टि हो (जा० सं०)। फल—सब कष्ट का नाश करता है।

अन्यमत—सब पाप ग्रह या सब शुभ ग्रह चारों केन्द्रों में हों। सब क्रूर ग्रह केन्द्र में हों तो-पृथ्वीपति हो। सब शुभ ग्रह केन्द्र में होंतो–लक्ष्मीपति हो (मान०)।

८. हंस योग—लग्न से १, ५, ७, ९ इन्हीं घरों में सब शुभ या पाप ग्रह हों। फल–वंश का पालन करने वाला हो। अन्य प्रकार—१, ७, ८, ९, १०, ११ इन्हीं राशियों में सब ग्रह हों तो सब पदार्थों से परिपूर्ण राज पूज्य और राजा के समान हो (जा० सं०)। अन्यमत–१, ५, ७, ८, ९, ११ इन्हीं स्थानों में सब ग्रह हों तो उपरोक्त फल हो (मान०)।

९. राजहंस—१, ३, ५, ७, ९, ११ इन राशियों में सब ग्रह हों। फल—राज्य स्थान और सुख प्राप्त हो (जा० सं०)। अन्यमत–१, ३, ५, ७, ९ इन राशियों में सब ग्रह हों तो उपरोक्त फल हो (मान०)।

१०. दरिद्र विधायक योग—सूर्यादि सब ग्रह बाईं ओर को वामावर्त के ही क्रम से ७ स्थानों में स्थित हों तो यह योग होता है इसमें अन्य मत का विचार नहीं करना। फल—दरिद्री हो।

११. नंदा योग –३ घरों में २, २ ग्रह हों और ३ घरों में १, १ ग्रह हो। फल – दीर्घायु और सुख भोगी हो (मान०)। अन्यमत—२, २ राशियों में २ ग्रह होवें और ३ स्थानों में १, १ ग्रह हों तो उपरोक्त फल (जा० सं०)।

१२. दाता योग—लग्न में गुरु, चतुर्थ में शुक्र, सप्तम में बुध, दशम में मंगल हो ये चारों ग्रह चारों केन्द्र में हों। फल—उत्तम हो।

१३. चिल्ह पुच्छक योग—योगाधियोग।

(१) सिंहासन और डमरु योग में यदि लग्न में ७,१०,१ राशि पड़ जावे तो यह चि० पु० योग होता है।

(२) राजहंस योग में लग्न में ४,१०,११,३ राशि हो तो उपरोक्त योग होता है।

(३) ध्वज योग में मकर या कर्क लग्न हो।

(४) चतुःसागर योग में २,६,८ या १२ राशि लग्न में हो तो उपरोक्त योग होता है।

उपरोक्त योगों में चिल्ह पुच्छक उनके फल को दुगना कर देता है। और महाफल को देने वाला होता है। इसीसे इसे योगाधियोग कहते हैं। किसी का मत है कि यह लग्न में भी हो जाता है।

कुम्भ लग्न को छोड़कर अन्य लग्न में यह योग पड़े तो वह राजा का मन्त्री, गौ, भैंसे, घोड़ा, हाथी से युक्त, नीति जानने वाला अनेक पुत्रों से युक्त होता है।

१४. ललाटिका योग—चन्द्र से अष्टम भाव में चन्द्र की राशि में सूर्य, मंगल, शुक्र, शनि हो और केम द्रुम योग सम्पूर्ण हो तो यह योग होता है।

फल—जन्म से लेकर चित्रकारी में प्रसिद्ध, शिल्पकार्य में चतुर, अकुशल आकार वाला, वह जन्मान्तर में भी विविध धन की राशि को नहीं त्यागता (जा० सं०)।

अन्यमत—अष्टम स्थाम में चन्द्र हो और चन्द्र के घर कर्क में सूर्य, शुक्र, शनि हो, पूर्णतः केमद्रुम योग हो तभी यह योग होता है।

फल—जिसकी कुण्डली में कारक ग्रह हो और ललाटिका योग आ पड़े तो वह खूब प्रसिद्धि पाने वाला, शिल्प आदि कर्म में चतुर, कुशल की आकृति के समान आकृति वाला अनेक पुत्र संतान वाला, अनेक प्रकार लक्ष्मी युक्त हो लक्ष्मी उसे जन्मान्तर में भी नहीं छोड़ती (मान०)।

१५. महापातक योग—पाप ग्रह सहित चन्द्र राहु से युक्त हो और गुरु की दृष्टि हो तो यह योग होता है।

फल—वह इन्द्र के समान भी हो तो महापातकी होता है।

१६. वलीवर्दहन्ता योग—लग्न को मंगल न देखता हो और सूर्य लग्न को देखता हो और गुरु, शुक्र लग्न को न देखते हों तो यह योग होता है। फल—बैल के हेतु से मृत्यु पाता है।

१७. मदन योग—दशमेश शुक्र युक्त लग्न में हो, लाभेश उच्च गत धन स्थान में हो फल—दिव्यगुण से युक्त राजमंत्री, विलासिनी प्रिय हो २० वर्ष के अनन्तर स्वर्ग में इन्द्र पद पावे।

१८. वृक्षहंता योग लग्न में शनि सूर्य दोनों का योग हो और राहु की दृष्टि हो उसका वृक्ष पर मरण होता है चाहे शुक्र के समान भी हो (जा० सं०)। अन्यमत—कुण्डली में मदन योग हो और लग्न को राहु देखता हो तो वह वृक्ष से गिरकर मरे चाहे इन्द्र के बराबर क्यों न हो (मान०)।

१९. हठहंता योग—चन्द्रमा लग्न से ग्यारहवें स्थान में हो और कर्क में सूर्य हो उसका हठ से मरण होता है इसमें पंचरात्रि अवधि विशेषकर समझना।

२०. कर्णच्छेद रोग—लग्न में सूर्य शुक्र दोनों हों चन्द्रमा पर शनि की दृष्टि हो और कोई शुभ ग्रह चन्द्र को न देखते हों तो उसका कर्णच्छेद योग होता है।

२१. नासाच्छेद योग—शुक्र षष्ठ भाव में हो और मंगल लग्न में हो तो नासाच्छेदन करने वाला होता है।

२२. पाद खंज योग—शनि शुक्र से युक्त हो या शुक्र गुरु दोनों एकत्र हों और को शुभ ग्रह उसे न देखता हो तो वह पैर से लंगड़ा हो।

२३. सर्प हंता योग—लग्न से सप्तम घर में शनि सूर्य और राहु तीनों हों तो उसे सोते में सर्प काटता है जिससे मृत्यु हो।

२४. व्याघ्र हत योग—गुरु के स्थान में बुध हो और शनि के स्थान में मंगल हो तो २५ वर्ष में वन में सिंह से हत होता है।

२५. असिघात योग—शुक्र के घर में चन्द्र हो या चन्द्र के स्थान कर्क में शनि हो तो २८ वर्ष में तलवार लगने से मृत्यु हो।

२६. ब्रह्मघात—सूर्य के साथ मंगल हो और गुरु युक्त शनि हो तो २८ वर्ष में ब्रह्मघाती हो (जा० सं०)। अन्यमत—सूर्य के साथ मंगल हो या गुरु के साथ शनि हो तो उपरोक्त फल हो (मान०)।

२७. पद विच्छेद योग—लग्न में मंगल हो और शनि सूर्य राहु इनसे दृष्ट हो तो इन्द्र के समान ही क्यों न हो किसी प्राप्त हुए ऊँचे अधिकार के पद से च्युत हो जाता है।

२८. अपेच्छातो मृत्यु योग—केन्द्र में मंगल, सप्तम घर में राहु हो तो अंतः करण से मरण की इच्छा करे उसी समय मृत्यु हो।

२९. अल्प मृत्यु योग—लग्न से सप्तम में चन्द्र हो और पाप ग्रह अष्टम में हो तथा शुभ ग्रह लग्न में हो और लग्न में सूर्य हो तो बालक एक वर्ष के भीतर मर जावे (मान०)। अन्यमत—लग्न से सप्तम में चन्द्र हो, पाप ग्रह अष्टम नवम और लग्न में हो तो १ वर्ष के अन्त में बालक का मरण हो (जा० सं०)।

३०. पंच अपत्य नाश योग—(संतान नाश योग) सूर्य के स्थान सिंह में चन्द्र में चन्द्र गुरु स्वस्थानी हो तथा लग्न के विचार से चतु सागर योग भी हो तो यह योग होता है यह योग संतान नाश करने वाला है।

३१. दोला योग—सब ग्रह १२, १, ९ इन्हीं ३ घर में हो तो राज्य देने वाला होता है (मान०)। अन्यमत—१२, १, ६ इन राशियों में सब ग्रह हों तो यह योग राज्य दायक है (जा० सं०)।

३२. केन्द्री गुरु फल—पाप ग्रह से हीन होकर गुरु केन्द्र में हो अर्थात् और कोई भी पाप ग्रह केन्द्र में न हो केवल गुरु हो। फल—सन्मान, मान गुण इनका मात्र और सत असत की परीक्षा करने वाला, कलाओं का निधि चतुर, गाने बजाने में कुशल, मन्त्रियों का स्वामी, राज सभा में पंडित होता है।

३३. कुसुम योग—लग्न में गुरु सप्तम में चन्द्र, चन्द्र से अष्टम में सूर्य हो तो भूमि-पाल बंधुरक्षक हो, २० वर्ष के भीतर ग्राम अधिकारी हो।

३४. नाग योग—दशमेश किसी राशि के अंश चन्द्र में हो और उस राशि का स्वामी दशम में लग्नेश से युक्त हो तो १६ वर्ष के भीतर सफल विद्या सम्पन्न विनय संयुक्त राजप्रिय हो विशेष धन अर्जन करे।

३५. नाभि योग--नवम में गुरु हो गुरु स्थित राशि से एकादश घर में नवमेश शुभ ग्रह या चंद्र से युक्त हो तो--विद्यावान्, सुखयोगी, राज पूजित, अभिमान युक्त ये सब २१ वर्ष के भीतर हो, २३ वर्ष के भीतर एक हजार रुपया संपादित हो।

३६—भेरी योग–लग्नेश द्वितीय भाग में उच्च का हो वह दशमेश से दृष्ट हो तो ३६ वर्ष के भीतर भेरी मृदंग आदि से आनन्द प्राप्त हो अश्व गज आदि या अधिपति हो। अन्य भेरी योग प्रकार–(१) नवमेश बली हो १२,१,२ और ७ भाव में सब ग्रह हों। (२) या नवमेश बली हो और शुक्र गुरु और लग्नेश केन्द्र में हो तो धन स्त्री पुत्र युक्त राजा हो कीर्ति गुण युक्त आचारवान् सुखी भोगी हो (वृ० पा०)। अन्य–(१) दशमेश बली हो १२,१,२,७ भाव में सब ग्रह हों तो भेरी योग होता है। फल–दीर्घायु, रोग भय से रहित, राजा, बहुत धन भूमि पुत्र स्त्री से युक्त प्रसिद्ध आचारवान्, पूर्ण सुखी पराक्रम से युक्त महानुभाव, प्रत्येक कार्य में निपुण, कुलीन (जा० पारि०)।

३७—वसुमीन योग–नवम स्थान व नवमेश से नवम स्थान में दशमेश उच्च का हो तो २४ वर्ष के भीतर राजाओं से नमस्कृत युक्तकर्मकृत् जनाधिपति हो।

३८—पर्वत योग–लग्नेश जिस राशि पर हो उसका स्वामी केन्द्र त्रिकोण में स्वक्षेत्री या मूल त्रिकोण का हो तो ३० वर्ष के भीतर ग्रामाधिपति जन भूषित, रोग

रहित हो। अन्य—यदि राशि के स्वामी में लग्न का स्वामी हो और काहल योग के प्रकार से हो तो भी पर्वत योग होता है--इनसे स्थिर धन और सुख स्थिर कार्य कर्ता पृथ्वीपति हो। अन्यमत—सप्तम और अष्टम भाव में कोई ग्रह न हो (फल०) अथवा ग्रह हो तो शुभ हो तथा सब शुभ ग्रह केन्द्र में हों तो पर्वत योग होता है। फल—भाग्यवान् वक्ता शास्त्रज्ञ हास्यप्रिय, यशस्वी, तेजस्वी, ग्राम का प्रधान-मुखिया हो (वृ० पा०)।

३९—काहल योग–लग्नेश स्थिर राशि का स्वामी होकर चन्द्र से केन्द्र में हो और बली हो, बलीग्रहों से दृष्ट हो तो--वह भाग्यवान्, कामी, भोगी, १२ वर्ष के भीतर महान् पंडित व राजा हो। अन्य--राशि का स्वामी लग्नेश युक्त जहाँ हो उस राशि का स्वामी उच्च या स्वगृही कोण या केन्द्र हो तो काहल योग होता है--वह अच्छी उन्नति करे, सुमति प्रसन्न दयालु और क्षमाशील हो। अन्य०--(१) लग्नेश बली हो चतुर्थेश और गुरु परस्पर केन्द्र और नवमेश एक साथ में कोई अपने उच्च या स्वराशि में हों तो दोनों प्रकार से काहल योग होता है। फल--बली, साहसी, धूर्त, चतुर और कुछ गाँव का मालिक हो (वृ० पा०)। अन्य०--(१) नवमेश और लग्नेश बलवान् हो तो काहल योग होता है। (२) चतुर्थेश अपने उच्च या स्वस्थानी हो दशमेश से युक्त या दृष्ट हो तो भी काहल योग होता है। फल--और कुछ गाँवों का स्वामी होता है (जा० पारि०)

४०—श्री योग–धन और भाग्य स्थानाधिपति में इन स्वामियों से युक्त हो और गुरु की दृष्टि हो तो २२ वर्ष के भीतर बुद्धि प्रधान, राज्य, संतति युक्त हो शत्रु को जीतने वाला हो।

४१ – श्रीनाथ योग–सप्तमेश केन्द्र में हो, दशमेश उच्च में होकर नवमेश के साथ हो। फल – इन्द्र के समान राजा हो।

४२—मृदंग योग–लग्नेश शुक्र से युक्त परमोच्च स्थान में हो और परमोच्च स्थानाधिपति केन्द्र में हो तो राजा, ग्रामाधिपति; वाहनाधिपति व सुख युक्त हो। अन्य—लग्नेश बली हो और अपने उच्च या गृह में होकर अन्य ग्रह केन्द्र में हो तो मृदंग योग होता है। फल—सुखी, राजा, या राजा के तुल्य हो (वृ० पा०)। अन्य—उच्चगत ग्रह का नवांश पति केन्द्र या त्रिकोण में हो और अपने उच्चगृही या स्वगृह में होकर बलवान् हो लग्नेश भी बली हो तो मृदंग योग होता है। फल—कल्याण रूप, राजा के सदृश यश (जा० पारि०)।

४३—शारद योग–१ दशमेश पंचम में, बुध केन्द्र में, सूर्य स्वगृही हो, २–या चन्द्र से ५,९ भाव में गुरु व बुध हो, ११ भाव में मंगल हो तो शारद योग होता है। फल--राजमान्य तपस्वी धर्मात्मा (वृ० पा०)।

अन्य—१–दशमेश पंचम में हो, बुध केन्द्र में, सूर्य स्वगृही हो या, २–चन्द्रमा से त्रिकोण में गुरु, बुध से त्रिकोण में मंगल, बुधसे लाभ में ग्रह हो तो शारद योग होता

है। फल—स्त्री पुत्र बंधु सुख गुण में अनुरक्त, राजा का प्रिय, गुरु ब्राह्मण देवभक्त विद्या विना ही, कामुक तप तथा बल युक्त स्वधर्म में लीन (जा० पारि०)।

४४–सुख योग–धन, भाग्य लाभ स्थानेश कोई एक चन्द्र के केन्द्र में हो तो १६ वर्ष के भीतर सुखी राजा हो।

४५ - साम्राज्य योग–नवमेश अंश चक्र में जिस राशि पर हो उस राशि का स्वामी गुरु से युक्त धन राशि में हो (गुरु धन राशि का भाग्येश हो)। तो निसंदेह राजा हो।

४६—दुर्गेश योग–राहु स्थित अंश राशि का स्वामी पंचम नवम का उच्च का हो और मंगल षड़यन्त्र युक्त हो नवमेश सप्तम स्थान में हो तो वन भूमि का अधिपति हो।

४७—अर्थ योग–द्वितीयेश और चतुर्थेश नवम में हो नवमेश बलवान् होकर द्वितीय स्थान में हो, लग्नेश उच्चगत लाभ में हो तो कोटी का धन पति हो।

४८—त्रिकूट योग–लग्न चर राशि हो उसमें गुरु हो, स्थिर राशि में शुक्र हो द्वि-स्वभाव राशि में बुध हो तो दुर्ग का अधिपति हो।

४९—चामर योग–चतुर्थेश उच्च में हो, उच्च स्थानेश भाग्य स्थान में हो और लग्नेश से युक्त हो तो राज पूजित, देश अधीश्वर, विद्वान् ग्रंथकर्ता, सभा वादकारी, सुख सम्पन्न, गौरवशाली हो। अन्य १–लग्नेश उच्च का होकर केन्द्र में हो उस पर शुभ ग्रह की दृष्टि हो या, २—शुभ ग्रह ९,१० या ७ भाव में हो। फल—राजा या राज मान्य, दीर्घायु, पंडित, वक्ता, सब कलाओं का ज्ञाता (वृ० पा०)। अन्य—१–लग्नेश उच्च का होकर केन्द्र में हो गुरु से दृष्ट हो या २,१,७,९,१० भाव में २ शुभ ग्रह हों तो चामर योग होता है। फल—राज पूज्य, विद्वान्, वक्ता, पंडित, राजा, सर्वज्ञ, वेद शास्त्र अधिकारी, ७० वर्ष आयु (जा० पारि०)।

५०—शिव योग–पंचमेश नवम में, नवमेश दशम में दशमेश पंचम में हो प्रचंड वृत्तिक, बलाधिपति, युद्ध में विजयी, जितेन्द्रिय ज्ञानवान् हो।

५१—चतुर्मुख योग –भाग्येश केन्द्र में गुरु हो, लाभेश के केन्द्र में शुक्र हो, लग्न राजेश के केन्द्र में बुध हो–तो मिष्ठान्न भोजी, ब्राह्मण संतति, नाना विधि शास्त्र पाठक, पुर्णायु।

५२—गौरी योग–राज्येश स्थित अंश राशि का स्वामी राज्य स्थान में हो लग्नेश से युक्त गुरु हो तो ३६ वर्ष के उपरांत दाता, कीर्तिमान्, भूमि स्वामी भोगी, ब्राह्मण संतति होता है। अन्य - नवमेश चन्द्र हो वह स्वगृही या उच्च का केन्द्र या त्रिकोण में हो उस पर गुरु की दृष्टि हो तो गौरी योग होता है। फल—सुन्दर अंग, श्लाघित, राजा का मित्र, पुत्र अच्छे आचरण के हों, कमल सदृश मुख, विरोधियों पर विजय, सबसे स्तुति प्राप्त (फल०)।

५३—लक्ष्मी योग—भाग्येश स्थित अंश राशि का स्वामी भाग्य स्थान में हो, उच्चगत पंचमेश से युक्त हो तो आप्त, कीर्तिमान्, धनवान्, लक्ष्मीवान्, राजा हो अन्य–नवमेश शुक्र हो वह स्वगृही या उच्च का होकर त्रिकोण या केन्द्र में हो तो लक्ष्मी योग

होता है। फल - लक्ष्मी का पात्र अच्छे वाहन पर बैठे या यात्रा करे, राजाओं में श्रेष्ठ, अपने जनों को आनन्द देने वाला, दाता (फल०)। अन्य—लग्नेश बलवान् हो भाग्येश फल त्रिकोण या उच्च या स्वगृही होकर केन्द्र में हो तो लक्ष्मी योग होता है। फल—सुन्दर गुणी, राजा बहु पुत्र, धनी यशस्वी, धर्मात्मा हो (वृ० पा०)।

अन्य—भाग्येश परमोच्च या फल त्रिकोण में होकर केन्द्र में हो और लग्नेश बलवान् हो तो लक्ष्मी योग होता है।

फल—सुंदर गुण वाला, बहुत देश का स्वामी, विद्या और कीर्ति से युक्त, कामदेव सदृश सुंदर, दश दिशाओं में राजाओं से पूजित, श्रेष्ठ राजा, बहुत स्त्री तथा पुत्र युक्त हो (जा० पारि०)।

५४—भारती योग—२, ५, १०, स्थान के स्वामी उच्च में नवमेश युक्त हो। फल—त्रिलोक में विख्यात, सर्वज्ञ, दान प्रिय, उत्तम स्त्रियों का भोग कर्ता मृदु शरीर कमल नेत्र, ब्राह्मण भक्त कवि अल्पाहारी ये सब ४८ वर्ष में प्राप्त हो।

५५ - कलानिधि—३,११ भाव का स्वामी सप्तम स्थान में हो सप्तमेश द्वादश भाव में उच्च का हो, द्वादशेश गुरु युक्त नवम स्थान में हो। तो महामनस्वी, राज्याधिपति, यशस्वी मानी, ५० वर्ष से अधिक आयु।

अन्य—बुध शुक्र से युक्त या दृष्ट गुरु २,५ भाव में हो या बुध शुक्र के राशिस्थ हो।

फल—गुणी राज, मान्य, निरोग, सुखी, धनी, विद्यावान् (वृ० पा०)।

५६—देवेन्द्र योग—जन्म लग्न स्थिर हो उसका स्वामी लाभ में हो २,१० भाव के स्वामियों का परस्पर परिवर्तन हो लग्नेश बलवान् होकर लग्न में हो तो सौंदर्यवान, नारी प्रिय, कीर्तिमात्, दुर्ग का अधिकारी, बलाधिप, बल शौर्यवान् ६० वर्ष से अधिक आयु।

५७—विभावसु योग—मंगल स्वगृही व दशम स्थान में हो सूर्य उच्च का द्वितीय भाव में हो गुरु और चंद नवम स्थान में हो तो १२ वर्ष पर्यंत वंश प्रदीप, धनवान्, राजप्रिय भूमि स्वामी होता है।

५८—नालक योग—भाग्येश स्थित नवांशेश लग्न में उच्चगत हो तो १२ वर्ष के बाद राजा हो।

५९—इंद्र योग—पंचमेश लग्नेश का परस्पर परिवर्तन हो, चंद्र पंचम स्थान में हो तो सदा स्तुत, कीर्तिवान्, विशेष पराक्रमी, राजाधिराज भोगवान् हो।

अन्य० – चन्द्र से तीसरे मंगल, मंगल से सातवें शनि, और शनि से सातवें शुक्र हो, शुक्र से सातवें गुरु हो तो इन्द्र योग होता है।

फल—विख्यात शील वाला, गुणवान्, राजा हो या राजा के तुल्य धनी हो, वाचाल, अनेक प्रकार से धन भूषण यश रूप प्रताप से युक्त हो (जा० पारि०)।

६०—रवियोग – सूर्य दशम स्थान में हो और दशमेश सूर्य सहित तृतीय भाव में

हो तो शास्त्रार्थ प्रक्रिया का सम्पन्न ज्ञाता, यथेष्ट काम युक्त भूमंडल का स्वामी, स्वल्पाहारी, कमल सम नेत्र, राजाओं में वंदनीय होता है।

६१ - भास्कर योग—सूर्य से दूसरे बुध, बुध से ग्यारहवें चन्द्र, चन्द्र से त्रिकोण में गुरु हो।

फल—पराक्रमी, प्रभु के सदृश, शास्त्रार्थविद्, रूपवान्, गांधर्व विद्या का ज्ञाता, धनी, गणितज्ञ, धीर, समर्थ।

६१—पारिजात - लग्नेश जिस राशि में हो उस राशि का स्वामी जिस राशि में हो उसका स्वामी या उसका नवांशेश यदि केन्द्र या त्रिकोण में हो या अपनी उच्च राशि में हो।

फल—मध्य और अंत्य अवस्था में सौख्य युक्त, राजाओं से पूजित, युद्ध प्रिय, हाथी घोड़ों से युक्त, अपने कर्म धर्म में रत और दयालु राजा।

६३ - गजयोग—लग्नेश स्थित राशि से नवम राशि का स्वामी ११ वें स्थान में चन्द्र युक्त इस आवेश से दृष्ट हो तो अश्वगज आदि वाहन २० वर्ष अनन्तर होते हैं।

६४—गंगा प्रवाह योग—षष्ठ में गुरु शुक्र हों, बुध सप्तम मकर राशि में हो, ५,७,११ स्थानों में क्रमशः चन्द्र सूर्य शनि हों तो तेजस्वी, धनवान्, अनेक भार्या पुत्रादि युक्त राजा, विद्यावान्, विनोदी, गोष्ठी प्रिय, जितेन्द्रिय, पूर्णायुष्कः विनय सम्पन्न।

६५—अमरक योग—सप्तमेश, नवमेश बलवान् हो, परिवर्तन इनका हो तो आजानु बाहु, पद्म पत्र नेत्र, न्यायाधिकार निपुण, कलत्र सौख्यवान्, ५० वर्ष के अनन्तर सुखों का अनुभव होता है।

६६—कामिनी योग - गुरु द्वितीय, शुक्र चतुर्थ, चन्द्र सप्तम, मंगल लाभ भाव में हो तो नगर ग्रामाधिपत्य, भोग प्राप्त, प्रतापी हो।

६७—नालीक योग—पंचमेश नवम में, चन्द्र लाभेश से युक्त धन में हो तो राजाधिराज, राज मान्य, षोड़श विद्या दान कर्ता, ५० वर्ष से अधिक जीवे।

६८—भद्र योग—गुरु चन्द्र दशम में हों, धनेश लाभ में हो और लग्नेश शुभ ग्रहों से युक्त हो तो मानस ज्ञान और सब कार्य में समर्थ, धनवान् हो।

६९—नृप योग—लग्नेश स्थित अंश राशि का स्वामी, चन्द्र स्थित राशि युक्त हो राज्येश से दृष्ट हो तो आलोचन शक्ति युक्त मंडलाधिपति, धैर्यवान्, सैन्याधिपति प्रसिद्ध तथा सुखी होता है।

७० - धूम्र योग - मंगल स्थित अंश राशि का स्वामी त्रिकोण में शुक्र गुरु हो, दशम में उच्च का शनि हो तो सुखी, सुख दाता, धैर्य गुण सम्पन्न, धनवान् राज पूज्य हो।

७१—मृतयोग—अष्टमेश स्थित अंश राशि का स्वामी शुभ स्थान में शुभ ग्रह युक्त हो, नवमेश उच्च स्थान में हो तो कर्ण समान दाता, धर्मात्मा, धनवान्, बलवान् हो यह १९ वर्ष तक जीता है।

७२—गन्धर्व योग—सप्तम से त्रिकोण में दशमेश हो, बली सूर्य उच्च में हो, नवम स्थान में चन्द्र हो, लग्नेश गुरु युक्त हो तो गन्धर्व विद्या, नैपुण्य, बलवान्, कीर्तिमान्, भोगी हो ६५ वर्ष तक जीता है।

७३—चण्ड योग—लग्न में उच्च का ग्रह हो वह मंगल से दृष्ट हो और नवमेश तृतीय स्थान में हो तो सेनाधिपति, वाहनाध्यक्ष, बलवान्, ६० वर्ष तक जीवित रहे।

७४—नागेन्द्र योग—भाग्येश गुरु से दृष्ट होकर सप्तमेश स्थित राशि से नवम राशि पर हो तो सुन्दर विद्वान् ६ वर्ष बाद यावत् जीवन सुखी रहे।

७५—मुकुट योग—नवमेश स्थित राशि से नवम स्थान में गुरु हो गुरु से नवम स्थान पर शुभ ग्रह हो, दशम में शनि हो तो दुर्गाधीश, राजा कोल भिल्ल का स्वामी दुर्मार्गी हो।

७६—चित्र योग—धनेश नवम स्थान में, नवमेश लाभ में, लाभेश परमोच्च में हो तो बुद्धिमान्, शास्त्र निपुण, कुशील हो, राजवंशज हो तो राजा हो।

७७—वृष्टि योग—कर्म भावांश पति की मध्य स्थिति, चन्द्र उच्च स्थान में हो। जन्म रात्रि समय हो, लग्न में चर राशि हो तो व्यापारी, धनवान्, समर्थ २७ वर्ष के बाद सुखी हो।

७८—चन्द्रिका योग—षष्ठेश सहित नवमेश भाग्येश के अंश में सूर्य से युक्त हो, लग्न स्थिर हो षष्ठेश से दृष्ट हो तो शौर्यवान्, दाता, धनाध्यक्ष, कीर्तिमान्, मंत्री १०० वर्ष तक आयु।

७९—भूप योग—राहु स्थित अंश राशि का जो स्वामी हो उसके त्रिकोण स्थान में उसका स्वामी हो इस पर मंगल की दृष्टि हो तो—शत्रु नाश कर्ता, सेनाधिपति, राजेश्वर हो ३४ वर्ष के अनंतर राज्य भार वाही हो।

८०—नासीर योग—लग्नेश और गुरु चतुर्थ स्थान में, चन्द्र सप्तमेश के साथ एक राशि में हो, लग्नेश शुभ ग्रहों से दृष्ट हो तो अन्नदान में रत, भोगवान्, स्थूल काय, ३३ वर्ष अनंतर शुभ फल हो।

८१—कन्तुक योग - दशमेश नवम में, धनेश लग्न में, द्वितीय और दशम पर शुभ ग्रह की दृष्टि हो तो—चातुर्य युक्त वाणी, शत्रु नाश कर्ता, दान, धर्म, धन युक्त समर्थ १०० वर्ष आयु।

८२—चन्द्रिका योग—मंगल पञ्चम स्थान में, भाग्येश स्थित राशि का स्वामी भाग्य स्थान से पञ्चम में हो तो अनेक स्त्रियों से रमण कर्ता, स्त्री संतति पुत्र शोक से दुःख अनुभावक, सम वय में सुख का अनुशीलन होता है।

८३—रसातल योग—व्ययेश परमोच्च भाग में हो शुक्र चतुर्थेश से दृष्ट होकर व्यय स्थान में हो तो भूमि धन का रक्षण कर्ता राजा हो।

८४ - युग्म योग—चतुर्थेश नवम में शुभ ग्रहों से युक्त हो गुरु से दृट हो तो जीवनभर सुखी रहे राजलक्ष्मी युक्त रहे।

८५--अंगुल योग--पञ्चमेश स्थित अंश राशि का स्वामी उच्च स्थान में बुध और दशमेश युक्त हो तो वस्त्र आभरण सहित गौ भूमि धन युक्त मध्यायु हो।

८६--भव्य योग--दशम में चन्द्र हो, चन्द्र स्थित अंश राशि का स्वामी उच्च स्थान में भाग्येश, धनेश से युक्त हो तो मान धन ऐश्वर्य संयुक्त प्राप्त प्राज्ञ सुगुणवान् विद्या निपुण हो।

८७--योगि योग--भाग्येश के त्र्यंश में राज्येश हो, राज स्थान में गुरु हो तो सुखदाता, राज सभा में माननीय, स्त्रियों को प्रिय ४२ वर्ष से अधिक आयु।

८८--गारुड़ योग--चन्द्र स्थित अंश राशि का स्वामी उच्च में हो शुक्ल पक्ष में दिन का जन्म हो तो सज्जन पूजित, मृदुभाषी, शत्रु नाश कर्ता, बलवान्, ३५ वर्ष में विषय युक्त होता है।

८९--देव योग--लग्नेश के त्र्यंश में भाग्येश हो और इसके नवांश का स्वामी भी साथ हो और जन्म दिन का हो तो ऐश्वर्यवान्, कीर्ति युक्त, सुबुद्धि बलवान् हो ३२ वर्ष के पश्चात् फल हो।

९०--धर्म योग--गुरु शुक्र नवम भाव में लाभेश युक्त हों, धनेश से दृष्ट हो तो सेनापति, धनवान्, युद्धाभिलाषी, दाता, धार्मिक होता है।

९१--क्रोध योग--पञ्चमेश राहु युक्त हो मंगल से दृष्ट हो, लाभेश के अंश में हो तो पाप कर्म, धन आगम, दान परायण, साहसिक क्रोध दर्प, भयान्वित होता है।

९२--अंग योग--केन्द्र त्रिकोण के स्वामियों का त्रिंशांशेश शुभ ग्रह हो तो--जीवन भर सुखी रहे।

त्रिंशांशेश--मंगल हो तो--क्रोधी, शनि--क्रूर स्वभाव। गुरु--पुराण फलश्रोता। बुध--ज्ञानवान्। शुक्र--त्यागी।

९३--मारुत योग--राहु ३,६ या ११ भाव में हो और लग्न शुभ ग्रह से दृष्ट हो--तो इसमें भावोक्त पाप फल नहीं होता।

अन्य--शुक्र से कोण में गुरु हो, गुरु से पांचवें चन्द्र, चन्द्र से केन्द्र में सूर्य हो तो मरुत योग होता है।

फल--वाचाल विशाल हृदय, स्थूल, उदर शास्त्र का ज्ञाता, धन सम्पन्न, क्रय विक्रय में निपुण, राजा या राजा के सदृश धनी हो (जा० पारि०)।

९४--श्रीमत योग--भाग्येश, राज्येश का परस्पर परिवर्तन हो और गुरु की दृष्टि हो और लग्नेश से युक्त हो तो श्रीमान्, कार्यों में निपुण, भोक्ता, दाता, चिरायु हो।

९५--दक्ष योग - लग्न से ६,७ स्थानों में सब ग्रह बल युक्त हों तो प्रभु, धनवान् कीर्तिमान्, भोगवान् होता है।

९६--इष्ट पाल योग --जन्म में सब ग्रह आपोक्लिम (३,६,९,१२) में हो तो राज्य देने वाला होता है सुखी और पुण्यवान् हो।

९७—अमोघ योग—सब शुभ ग्रह स्वोच्च या मूल त्रिकोण में हों तो राज संबंधी धन प्राप्त हो।

९८—क्षेम योग—१,८,९,१० भाव के स्वामी स्वक्षेत्री हों तो कुटुम्ब क्षेत्र में आसक्त हो, ऐश्वर्यवान् हो।

९९—केशरी योग—चन्द्र के केन्द्र में गुरु हो तो सिंह समान सब शत्रुओं का नाश कर्ता, सभा में ढिठाई से बोलने वाला, राजस वृत्ति का, दीर्घ जीवी, अति यशस्वी, अति बुद्धिमान्, अपनी शक्ति से सब से जय प्राप्त करे।

१००—आयु योग—लग्नेश, गुरु, शुक्र ये ३ ग्रह केन्द्र में हों तो दीर्घायु हो।

१०१—उत्तम योग—सूर्य से आपोक्लिम में चन्द्रमा बलवान् होकर बैठा हो तो नीति कुशल, धनवान्, ज्ञानवान् कार्य निपुण हो।

१०२—धनाकर्षण योग—लग्नेश लाभ में लाभेश नवम में, नवमेश सप्तम में, सप्तमेश पंचम में, पंचमेश द्वितीय में द्वितीयेश लग्न में हो तो धन का आकर्षण करता है।

१०३—मत्स्य योग—लग्न और नवम में शुभ ग्रह, पंचम में शुभ अशुभ दोनों हों तथा ४,८ में पाप ग्रह हो तो काल ज्ञाता, दयालु, गुण बुद्धि बल रूप यश विद्या और तपस्या में युक्त।

अन्य—लग्न से नवम पाप ग्रह, पंचम भाव पाप और शुभ युक्त, ४ या ८ भाव में पाप ग्रह हो तो मत्स्य योग होता है उपरोक्त फल (जा० पारि०)।

१०४—उपचय योग—३,६,१०,११ स्थानों में सब शुभ ग्रह हों तो जातक बहुत धनवान् हो, दिन दिन वृद्धि हो, सौन्दर्य गुण युक्त, मानयुक्त, कीर्तिवान्, सुखी हो।

१०४ अ—वसुमतो योग—लग्न या चन्द्र से सब शुभ ग्रह उपचय में हों तो सदा अपने घर में रहे उसके पास बहुत धन रहे (फल०)।

१०५—कुल वर्द्धन योग—सब शुभ ग्रह सूर्य चन्द्र से पंचम में हों तो आयुष्मान्, आरोग्यवान्, धनवान्, पुत्र पौत्रादि संयुक्त होता है।

१०६—गो योग—गुरु बलवान् होकर धनेश सहित मूल त्रिकोण में हो लग्नेश उच्च में हो तो—उत्तम वंश जात, भूपति, धनवान् बलवान् हो।

१०७—जल योग—सूर्य चन्द्रमा शनि केन्द्र में हो या ९ या १२ भाव में हों और अन्य ग्रह निर्बल हों तो ऐश्वर्य, ज्ञान, धन से हीन, पराया अन्न चाहने वाला, चपल अति दुःखी लोभी शीत प्रकृति होता है।

१०८—काल सर्प योग - राहु केतु जिस घर में हों उसके भीतर सब ग्रह हों एक भी ग्रह बाहर न हो।

फल—गरीब हो, दीर्घ जीवन न हो। यदि ३,४ ग्रह उच्च में हों और काल सर्प योग हो तो गरीब तो न होगा परन्तु अधिक उन्नति शील न होगा। किसी की कुंडली में काल सर्प योग हो परन्तु केमद्रुम योग न हो और राजयोग हो जो केन्द्र और त्रिकोण स्वामियों के योग से बने हों तो उन्नतिशील होगा।

१०९—गज केशरी योग—चन्द्र से गुरु सातवें घर में हो।

फल –आदरणीय, धनवान्, दयालु उन्नतिशील बिना कोई पाप ग्रह के किसी प्रकार के सम्बन्ध हुए यह योग हो तो उपरोक्त फल होता है। यदि पाप ग्रह का योग दृष्टि हो तो उपरोक्त पूर्ण फल नहीं होगा।

अन्य––लग्न या चन्द्र से गुरु केन्द्र में हो और शुभ ग्रह मात्र से युत या दृष्ट हो तथा अस्त नीच शत्रु गृही न हो तब गज केशरी योग होता है।

फल –तेजस्वी, धनवान्, मेधावी, गुण सम्पन्न, राजप्रिय हो (वृ० पा०)।

अन्य—चन्द्र से गुरु केन्द्र में हो शुभ ग्रह से चन्द्र दृष्ट हो। शुभ ग्रह अस्त या नीच के न हों तो गज केशरी योग होता है। फल-उपरोक्त (जा० पारि०)।

११०—चन्द्र मंगल योग-–चन्द्र से मंगल सातवें घर में हो अन्यमत से चन्द्र मंगल एक साथ हो तो।

फल—कई शुभ उत्सव उसके घर में हों कीर्ति मिले सुखी जीवन व्यतीत करे।

१११—अमला योग या अमल कीर्ति योग––लग्न या चन्द्र से दशम स्थान में शुभ ग्रह हो।

फल—राजमान्य, भोगी, दानी, बंधुओं का प्रिय, परोपकारी, धर्मात्मा, गुणी, आचारवान्, सौभाग्यवान्, धनी, मृदु स्वभाव, भाषण के योग्य।

११२—महाभाग्य योग–पुरुष का दिन में जन्म लग्न और सूर्य चन्द्र में विषम राशि या स्त्री का रात्रि में जन्म लग्न और सूर्य चन्द्र में सम राशि हो तब यह योग होता है।

फल –सबको आनन्द देने वाला, दानी, विख्यात, पृथ्वी का राज करने वाला शुद्ध आचरण ८० वर्ष आयु। स्त्री इस योग में उत्पन्न हो तो धनी हो, पति दीर्घजीवी हो पुत्र पौत्र भी दीर्घ जीवी हों भाग्यशाली अच्छे चरित्र वाली हो।

११३––सरस्वती योग––शुक्र गुरु और बुध त्रिकोण या दूसरे घर में हों गुरु भी उच्च का स्वगृही या भिन्न गृही हो और बली हो तो बड़ा भारी बुद्धिमान् हो नाटक कविता करने या गद्य पद्य में अलंकार शास्त्र में निपुण हो, प्रबन्ध रचना शास्त्रार्थ करने में पारंगत, त्रिलोक में कीर्ति फैले, बहुत धनी हो स्त्री और सन्तान युक्त भाग्यवान्, उन्नतिशील और राजाओं में श्रेष्ठ, सबसे पूजित हो (फल०)।

११४––श्रीकंठयोग—लग्नेश सूर्य और चन्द्र केन्द्र और त्रिकोण में होकर उच्च स्वगृही या मित्र गृही हो तो रुद्राक्ष माला से सुशोभित विभूति शरीर में लेपन करे महात्मा, सदा शिव की आराधना करने वाला, सदा सुनियम पालन करने वाला, शिव व्रत में दीक्षित, साधुजनों का उपकार करने वाला, दूसरों के धर्म या विश्वास पर द्वेष भाव से रहित, बलवान् हो।

११५––श्रीनाथ योग––शुक्र नवमेश हो, बुध केन्द्र या त्रिकोण में उच्च का स्वगृही या मित्र गृही हो तो धनी, सरल वाक्य, चतुर, निपुण, शरीर में नारायण का

चिन्ह शंख चक्र आदि चिन्हित, सदा गुणी, ईश्वर का नाम जिसमें हो ऐसे सुन्दर पद्य कहने वाला, ईश्वर का पूजक, अच्छी स्त्री पुत्र युक्त, सब को प्रिय अति सुभग।

अन्य—दशमेश दशम में स्वोच्च का हो या दशमेश नवमेश युक्त हो।

फल—इन्द्र के समान राजा (वृ० पा०)।

११६—विरिञ्च योग—यदि गुरु पञ्चमेश और शनि केन्द्र और त्रिकोण में होकर उच्च स्वगृही या मित्र गृही हो तो ब्रह्म ज्ञान परायण, अतिशय बुद्धिमान्, दूसरे पवित्र लेखों के अतिरिक्त वेदों को प्राधान्य देने वाला अर्थात् वैदिक मार्ग पर चलने वाला, सब अच्छे गुणों से भूषित, सदा प्रसन्न, प्रख्यात, बहुत शिष्य हों, भाषण में सौम्य, बहुत धन स्त्री और संतान युक्त ब्रह्म तेज से प्रकाशवान्, राजाओं से वंदित दीर्घायु जितेन्द्रिय हो।

११७—कुल पांसल योग—(दरिद्र योग) केन्द्र में शुभाशुभ ग्रह हों, लग्नेश पर चन्द्र की दृष्टि न हो या शुभ ग्रह पंचमांशक में हों तो कुल को मलिन करता है विदेश वासी, अपने घर से भ्रष्ट, पुत्र स्त्री रहित, दोषों के समूह से पीड़ित हो।

११८—मालिका योग—लग्न से लगातार ५ घर में ५ ग्रह हों।

षड् ग्रह योग—लग्न से लगातार ६ घर में ६ ग्रह हों। } तो राजयोग होता है।
सप्त ग्रह योग—लग्न से लगातार ७ घर में ७ ग्रह हों। } बिना कोई शंका के लाभ
अष्ट ग्रह योग—लग्न से लगातार ८ घर में ८ ग्रह हों। } होता है।
नव ग्रह योग—लग्न से लगातार ९ घर में ९ ग्रह हों। }

११९—मालिका योग—अन्यमत—किसी भी भाव से ७ भावों में ७ ग्रह हों तो उस भाव सम्बन्धी मालिका योग होता है। यदि लग्न से लगातार ७ घर में ७ ग्रह हों तो लग्न मालिका योग होगा। लग्न मालिका का फल—राजा अनेक हाथी घोड़े का स्वामी धन आदि ७ भावों में हो तो—धनवान् पिता की भक्ति और गुणवान् मनुष्यों में चक्रवर्ती हो।

विक्रम मालिका—पराक्रमी राजा धनी और रोगी।
सुखादि मालिका—बहुत देशों में भाग्यवान् बड़ादानी, राजा।
पुत्रादि मालिका—यज्ञ करने वाला राजा वा कीर्तिमान्।
षष्ट गृह मालिका—कभी धन सुख प्राप्त हो कभी दरिद्र हो।
सप्तम गृह मालिका—बहुत स्त्रियों का स्वामी और राजा।
अष्टम गृह मालिका—दीर्घायु, दरिद्र, श्रेष्ठ और स्त्री से निश्चित।
धर्म गृह मालिका—गुण निधान यज्ञ कर्ता तपस्वी समर्थ।
कर्म गृह मालिका—राज्य स्त्री मणि का स्वामी सर्व क्रिया में दक्ष।
व्यय भाव मालिका—बहुत खर्च करने वाला सर्वत्र पूज्य।

१२०—राजयोग—९ और १० भाव के स्वामी शुभ भाव में हों। फल—राजा हो हाथी घोड़े आदि भूषित भेरी शंख नाद युक्त छत्र धारण भाट मागध आदि से वंदित प्रसिद्ध पुरुष कई प्रकार के उपहार से सेवित।

१२१—शंख योग–केन्द्र या कोण के स्वामी शुभ भाव में हों। फल–कई सुन्दर स्त्रियों के साथ सब प्रकार का भोग भोगे सम्पत्ति से पूर्ण हो।

अन्यमत—(१) लग्नेश वली हो और पञ्चमेश और षष्ठेश परस्पर केन्द्र में हों या भाग्येश बली हो। (२) या लग्नेश और दशमेश चर राशि में हों। फल–दयालु, पुण्यवान्, बुद्धिमान्, सुकर्मी, चिरजीवी। (वृ० पा०)।

अन्य०—(१) पञ्चमेश षष्ठेश परस्पर केन्द्र में हों लग्नेश वलवान् हो।

(२) लग्नेश दशमेश चर राशि में हों भाग्येश बली हो।

फल—योग शील, दयालु, स्त्रीवान् पुत्रवान्, क्षेत्रवान्, पुण्य कर्मी, शास्त्र ज्ञान द्वारा आचार और साधु क्रिया करने वाला, ८० वर्ष आयु (जा० पारि०)।

१२२—प्रतमांश योग—सब ग्रह अस्त नीच और शत्रु के अंश में हों तो फल–भय दुःख और मृत्यु कर्ता है।

१२३—गरलांश योग—लग्न में सूर्य और चन्द्र हो, सूर्य ग्रहण का समय हो अमावस्या का चन्द्र (कुहू) और अमावस्या की संधि में जन्मा हो, और जब विष घटी हो तो कैद, शोक, ज्ञात या अज्ञात रूप से पेचीदे रोग हों जीवन को भय हो।

१२४—बुधादित्य योग—बुध और सूर्य साथ हो, धर्मात्मा, पण्डित, धनवान्, बहु पुत्रवान्, भृत्यों सहित तथा जितेन्द्रिय। पिछले जो १. आकृति, २. संख्या ३. आश्रय और ४. दल योग बतलाये हैं उन्हीं नाम के और भी भिन्न योग है जो नीचे दिये हैं—

१२५—गदा—(१) आकृति योग का १ योग से भिन्न। चन्द्र द्वितीय स्थान में गुरु शुक्र से युक्त हो नवमेश से दृष्ट हो। फल—लोक प्रधान, गुणाढ्य, सुमट ५२ वर्ष तक सुख अनुभव करे।

अन्य०—सभी पाप ग्रह आठवें भाव में हों चन्द्रमा शुक्र केन्द्र में हों तो–वह मनुष्य पागल या बुद्धि भ्रंश या मृगी वाला हो संतप्त रहे (स० चि०)।

१२६—शकट योग—(१ आकृति योग के दूसरे योग से भिन्न) गुरु से चन्द्र बारहवें, आठवें और छठे घर में कहीं हो परन्तु लग्न से केन्द्र में चन्द्र हो तो शकट योग नहीं होता। फल–अभाग्यवान् और जो एक बार हानि हो चुकी हो उसे फिर से प्राप्त करे पृथ्वी में साधारण और महत्त्वहीन हो अर्थात् मानसिक दुःख प्राप्त हो तो टालने योग्य न हो अत्यन्त दुःखी हो (फल०)।

अन्य०—चन्द्र से छठे आठवें गुरु हो लग्न से केन्द्र में न हो तो शकट योग होता है। फल–राज्य कुल का भी दरिद्री हो अनेक कष्ट और प्रयास से नित्य संतप्त रहे, राजा का अप्रिय हो (जा० पारि०)।

१२७—पद्म योग—(१ आकृति योग के ८वें योग से भिन्न) लग्न से, चन्द्र से नवम स्थान में शुक्र से युक्त लाभेश हो तो १५ वर्ष के भीतर राज पूजित भोगी, पुण्यवान् हो।

१२८--दंड योग--(१ आकृति योग के १३वें से भिन्न) ३,४,६,९,१२ इन राशियों पर सब ग्रह हों। फल-राज पद मिले, बड़ा पुण्यवान्, पृथ्वोपति, तेजोमय, सिंह के समान पराक्रम वाला बड़े-बड़े धनी लोगों से सेवित हो (मान०)।

अन्य०--तृतोय स्थानेश उच्च का हो गुरु तृतीय स्थान में हो शुक्र से दृष्ट हो तो गोधन भूमि से समृद्ध ग्रामाधिपत्य हो (ज्यो०शा०)।

१२९--छत्र योग--(१ आकृति योग के १६वें योग के अतिरिक्त, अन्य प्रकार का) १,२,७,१२ भाव में सब ग्रह हों तो अपने वश में श्रेष्ठ होता है, राजा होता है।

१३०--चाप योग--(१ आकृति योग के १७वें योग से भिन्न प्रकार का) कुम्भ में शुक्र, मेष में मंगल, और स्वगृही गुरु हो तो राजा होता है (मान०)।

अन्य०--चतुर्थेश दशमेश का परस्पर परिवर्तन हो लग्नेश उच्च में हो तो ८ वर्ष के भीतर राज कोषाध्यक्ष हो महापराक्रमी कुल पूजित हो (ज्यो० शा०)

१३१--चक्र योग--(१ आकृति योग के २०वें योग से भिन्न) दशम में राहु, दशमेश लग्न में, लग्नेश नवम में हो तो २० ग्राम का अधिपति, सेनाधिपति हो, जन स्तुति को प्राप्त हो।

१३२—विद्युत (दामिनी) (२ संख्या के योग के दूसरे योग से भिन्न) लग्नेश के केन्द्र में उच्च का लाभेश शुक्र युक्त हो तो त्याग, भोग में आसक्त, धनाध्यक्ष प्रभु हो।

१३३—केदार (२ संख्यायोग के चौथा योग से भिन्न) सब ग्रह मेषादि द्वादश राशियों में क्रम से किसी चर राशि में हों तो—व्यापारवान्, सुखवान्, वित्तवान् हो।

१३४—गोल योग (२ संख्या योग के सातवें योग से भिन्न) पूर्ण चन्द्र गुरु शुक्र से युक्त हो, नवम स्थान में बुध लग्नांश में हो तो विद्या विनय सम्पन्न ग्रामाधिकारी चिरायु मिष्ठान्न भोजी हो।

१३५—रज्जु योग-(३ आश्रय योग के पहिले योग से भिन्न) नवमेश के द्वादशांश में पंचमेश पूर्ण चन्द्र से युक्त हो तो-विशाल नेत्र, धनवान्, मानवान्, कीर्तिमान्, पुत्रवान्, मध्य आयु का हो।

१३६ – मुसल योग (३ आश्रय योग के दूसरे योग से भिन्न) दशम राहु हो, दशमेश उच्च में हो शनि से दृष्ट हो तो विशाल नेत्र, निर्मल मुख, मंत्री, व्यापार से धनार्जन।

१३७—माला योग (४ दल योग के पहले योग से भिन्न) २, ९, ११ भाव के स्वामी क्रम से ९, ११, २ स्थान में हो तो ३३ वर्ष बाद मंत्री धनाधिपति बलाधिप कीर्तिमान् होता है।

अन्य०—शुभ माला—सब ग्रह प्रचलित क्रम से ५, ६, ७ घर में हों तो जनाधिकारी (गवर्नर डायरेक्टर आदि), राजा से सम्मानित, योगी, दाता, दूसरे के कार्य करने में सहायक, अपने सम्बन्धियों से प्रेम, अच्छी स्त्री और पुत्र हो, धीर हो (फल०)।

अशुभ माला—सब ग्रह प्रचलित क्रम से ८, ६ या १२ घर में हों तो कुमार्गी, दुःखी, दूसरों को त्रास देने वाला, कृतघ्न, डरपोक, ब्राह्मणों का अभक्त, लोक से शापित, कलह प्रिय होता है (फल०)।

१३८—खंग योग-नवमेश धन भाव में हो, धनेश नवम में हो, लग्नेश केन्द्र या कोण में हो तो खंग या खड्ग योग होता है। फल—वेद के अर्थ को जानने वाला, सभी शास्त्र तथा ज्योतिष और तंत्रों के तत्व को जानने वाला, बुद्धि प्रताप बल पराक्रम से सुखी रहे। मत्सरता विरहित, अपने पराक्रम में श्रेष्ठ, कार्य कुशल, कृतज्ञ।

१३९ - अंशावतार—शुक्र और गुरु केन्द्र में हों, शनि उच्च का होकर केन्द्र में हो, चर लग्न में जन्म हो। फल—पुण्य चरित्र वाला, तीर्थ सेवी, कलाविद, काम में आसक्त, सामयिक, जितेन्द्रिय, वेद तत्त्व ज्ञाता, वेद शास्त्र का अधिकारी, राज्य श्री वाला।

१४०—कूर्म योग—शुभ ग्रह ५, ६, ७, भाव मे और पाप ग्रह ३, ११, १ भाव में अपने उच्च में हो। फल—राजा, धीर, धर्मात्मा, गुणी, यशस्वी, उपकारी, नेता, सुखी (वृ० पा०)।

अन्य०— शुभ ग्रह स्वगृही उच्च या मित्रांशक का ५, ६, ७ घर में हो और पाप ग्रह लाभ या लग्न में मित्र गृही या उच्च का हो तो कूर्म योग होता है (जा० पा०)।

फल—विख्यात कीर्ति, राज सुख भोगी, धर्मात्मा, सत गुणी, धैर्यवान्, सुखी, वक्ता परोपकारी, मनुष्यों का नायक (राजा) (जा० पा०)।

१४१— कुसुम योग (३३ कुसुम योग से भिन्न) स्थिर राशि लग्न में हो, शुक्र केन्द्र में और चन्द्रमा त्रिकोण में शुभ ग्रह युत हो और शनि दशम में हो। फल— राजा या राजा के तुल्य, दाता, भोगी, सुखी, कुल में श्रेष्ठ, गुणी विद्वान् (वृ० पा०)।

अन्य०— स्थिर लग्न हो शुक्र केन्द्र में हो चन्द्रमा शुभ युक्त त्रिकोण या पांचवें भाव में हो और शनि दशम में हो।

फल—दानी, राजा से पूजित, भोगी, उत्तम कुल में उत्पन्न राजाओं में मुख्य, समस्त लोकों में यशस्वी प्रतापी राजा (जा० पा०)।

१४२ – कल्पद्रुम—लग्नेश तथा लग्नेश जिस राशि में हो उसका स्वामी फिर वह जिस राशि में हो उसका स्वामी और उसका नवांशपति ये सब यदि केन्द्र त्रिकोण में या अपने २ उच्च में हों। फल—सब सम्पत्ति से युक्त राजा, धर्मात्मा, बली, युद्ध-प्रिय और दयालु।

१४३ – बुध योग—लग्न मे गुरु, गुरु से केन्द्र में चन्द्र, चन्द्र से दूसरे राहु हो, पराक्रम से तीसरे स्थान में सूर्य और मंगल हो तो बुध योग होता है। फल—राज श्री से युक्त, विशेष बली, बड़ा नामी, शास्त्र ज्ञाता, व्यापार में चतुर, बुद्धिमान्, शत्रु रहित।

१४४—लग्न अधियोग—लग्न से ६, ७ और ८ स्थान मे शुभ ग्रह हो पाप ग्रह से युक्त या दृष्ट न हो, चतुर्थ में भी पाप ग्रह न तो तो लग्नाधि योग होता है। फल—बहुत शास्त्रों का रचने वाला, विद्या से निनीत, बहुत बल का अधिकारी, मुख्य, निष्कपट, महात्मा, लोक में यश वित्त गुण से युक्त (जा० पा०)।

अन्य० – लग्न से ७, ८ भाव में शुभ ग्रह हो उसपर पापग्रह की दृष्टि या योग न हो तो लग्नाधियोग होता है। फल–बड़ा ही विद्वान्, महात्मा और सुखी (वृ० पा०)।

१४५ –(१)हरि योग–लग्नेश से २, ८, १२ घर में शुभ ग्रह हो (जा० पा०)।

अन्य० –द्वितीयेश से २, ८, १२ घर में शुभ ग्रह हो (जा० पा०)।

(२) हर योग–सप्तमेश से ४, ९, ८ घर में शुभ ग्रह हो (वृ० पा०)।

अन्य०—सप्तमेश से ४, ९, ८ घर में यथा संभव गुरु चन्द्र बुध हो (जा० पा०)।

(३) ब्रह्म योग–लाभेश से ४, १०, ११ घर में शुभ ग्रह हो (वृ० पा०)।

अन्य०—लग्नेश से ४, १०, ११ घर में सूर्य शुक्र मंगल हो (जा० पा०)।

तो इन तीनों योगों में उत्पन्न सुखी विद्वान्, धन पुत्रादि से युक्त हो (वृ० पा०)।

अन्य –सभी शास्त्रों का ज्ञाता सत्यवादी, सफल, सुख भोगी, प्रिय वादी, काम शील, शत्रुजित्, उपकार कर्ता, पुण्य कर्मी (जा० पा०)।

१४६—दैन्य, खल और महायोग – लग्न से आरम्भ होकर १२ भाव तक भावेशों की जोड़ी से होने वाले ६।६ योग बनते हैं।

१—दैन्य योग–इसमें ६,८,१२ भाव के स्वामियों से ३० योग बनते हैं।

१—बारहवें भाव का स्वामी शेष किसी भी ११ भावों में हो परन्तु द्वादशेश जहां हो उस भाव का स्वामी १२ वें भाव में हो। ११भेद

२—षष्ठेश शेष १० किसी भाव में (१,२,३,४,५,७,८,९,१० या ११) भाव में हो और उसका स्वामी छठे भाव में हो। १० ,,

३—अष्टमेश शेष ९ भावों में से किसी में हो (१,२,३,४,५,७,९,१०,११) भाव में से किसी में हो और उस भाव का स्वामी ८ वें भाव में हो। ९ ,,

योग ३०

२—खल योग

१ – तीसरे भाव का स्वामी शेष १,२,४,५,७,९,१० और ११ इन ८ भाव में से कहीं हों और उस भाव का स्वामी तीसरे भाव में हो। ८ ,,

योग ८

३—महायोग

१—लग्नेश शेष २,४,५,७,९,१० या ११ इन ७ भाव में कहीं हो और उस भाव का स्वामी लग्न में हो। ७ भेद

२—दूसरे भाव का स्वामी शेष ६ घर (४,५,७,९,१० या ११ भाव) में हो और उसका स्वामी दूसरे भाव में हो। ६ ,,

३—चतुर्थेश शेष ५ घर (५,७,९,१० या ११ भाव) में से किसी में हो और उसका स्वामी चतुर्थ में हो। ५ ,,

४—पंचमेश शेष ४ घर (७,९,१०, या ११ भाव) में से किसी में हो और उसका स्वामी पंचम भाव में हो। ४ ,,

५—सप्तमेश शेष ३ घर (९, १० या ११ भाव) में से किसी में हो और उस भाव का स्वामी सप्तम में हो। ३ भेद

६—नवमेश शेष २ घर (१० या ११ भाव) में से किसी घर में हो परन्तु उसका स्वामी (जहाँ नवमेश है) ९ भाव में हो। २ ,,

७—दशमेश ११ वें भाव में हो और उसका स्वामी अर्थात् ग्यारहवें भाव का स्वामी दशम भाव में हो। १ ,,

फल:— सब मिलकर योग हो गये ६६

१—दैन्य-मूर्ख, दूसरों की बुराई करने वाला, दुष्ट कृत्य करने वाला, अपने शत्रुओं से दु:खित, क्रूरोक्ति बोलने वाला, चंचल मन, सब कार्यों में बाधा।

२—खल-कभी क्रोधी दुर्वचन बोलने वाला, कभी नम्र भाषी, कभी सब प्रकार की उन्नति प्राप्त करे कभी बहुत दु:ख आपत्ति, दरिद्रता या इसीप्रकार के कष्ट भोगे।

३—महायोग—देवी के आशीर्वाद से युक्त, धन का स्वामी, विचित्र रंग की वस्तु धारण करे, सुवर्ण अलंकार से विभूषित, राजा से बहु मान्य, कीमती उपहार प्राप्त हो और कुछ भी अधिकार उसे प्राप्त हो, वाहन, धन और संतान प्राप्त हो।

१४७—चामर आदि १२ योग।

ये योग पूर्व कथित योगों से भिन्न हैं।

लग्न में १२ भाव के १२ योग बनते हैं।

वह भाव शुभ ग्रह युक्त या दृष्ट हो या अपने उच्च या स्वक्षेत्र में हो तब ये क्रमानुसार १२ भाव के १२ योग बनते हैं।

१२ योग—

(१) चामर, (२) धेनु, (३) शौर्य, (४) जलधि, (५) छत्र, (६) अस्त्र, (७) काम, (८) आसुर, (९) भाग्य, (१०) ख्याति, (११) सुगारिजात, (१२) मुसल।

इनके फल—

(१) चामर—शुक्ल चन्द्र के अनुसार प्रतिदिन महत्व बढ़े, शीलवान्, प्रसिद्ध, जनपति, दीर्घजीवी, श्री देवी का निधि हो।

(२) धेनु—अच्छा भोजन, पानी प्राप्त, धनी, सब बात में अच्छी प्रकार से विद्या प्राप्त, कुटुम्ब से विभूषित, बहुत सुवर्ण, रत्न, धन अन्नादि से पूर्ण और कुबेर देव समान प्रकाशित हो।

(३) शौर्य—भाइयों से जो स्वत: कीर्तिलाभ कर चुके हों, प्रसंशित और विक्रम ऐसा प्राप्त हो जिससे दूसरे प्रशंसा करें और वह श्रीराम के समान प्रकाशित हो जिसे राज कार्य निरत और अति यशस्वी, प्रत्येक मनुष्यों का प्यारा हो।

(४) जलधि—(अम्बुधि)—अन्न, धन, गौ से धनी, बंधु से पूर्ण, सुन्दर घर अच्छी स्त्री, रत्न कपड़े और आभूषण प्राप्त हों। आदरणीय और उच्च पद प्राप्त हो, सुख स्थिर और अंत तक रहे। हाथी, घोड़ा आदि वाहन पर यात्रा करे, राजा से

सम्मानित, ब्राह्मण और देव के लिए भक्ति, सड़क पर कुआं, तालाब आदि बनवाने में उत्सुकता पूर्वक अपने को लगावे।

(५) छत्र--अच्छी स्त्री, और संतान प्राप्त, सुखी, धनी, प्रसिद्ध, सुन्दर भाषा, विद्वान्, राजा का मंत्री, तीक्ष्ण बुद्धि, आदरणीय।

(६) अस्त्र--अपने बड़े बली शत्रु को बलपूर्वक दमन करे, अपने वर्ताव में क्रूर और अभिमानी, अंग में व्रण के चिह्न, शरीर बलिष्ठ विवादकारी (झगड़ालू)।

(७) काम--दूसरे की स्त्री को ओर दृष्टि भी न डाले, अच्छी स्त्री, संतान और बंधु युक्त, अपने स्वतः के गुण से अपने पिता से अधिक प्रकाशित और उच्च पद को प्राप्त।

(८) आसुर--दूसरे का काम बिगाड़े, चुगल खोर, अपने स्वतः के कार्य में अपने कार्य बनाने में लगा हुआ, दरिद्री परन्तु जिद्दी, नीच कार्य कर्ता, अपने स्वतः उपद्रवी काम करने में दुःखी रहे।

(९) भाग्य--पालकी में चले साथ अच्छे बाजे बजते रहें ऊपर चौरी डोलती रहे, कभी अंत न होने वाला द्रव्य प्राप्त, प्रसिद्ध पुरुषों से वंदित, धर्म मार्ग में स्थित, मित्र देवताओं और ब्राह्मणों की पूजा कर उचित रीति से प्रसन्न करे, अपना आचार पालन करे, सब कुल का लोकाचार पालन करे सुहृद न हो।

(१०) ख्याति--राजा हो लोगों से अनुमोदित आचरण करके अपनी प्रजा की रक्षा करे, धन, संतान, स्त्री से भाग्यवान्, विशाल ख्याति प्राप्त करे, और उन्नति शील हो

(११) पारिजात--नित्य मंगल कार्यों के बोच रहे, राजा हो, जमा किए हुए धन का स्वामी हो, बहुत कुटुम्ब हो, सत्कथा श्रवण करे, विद्वान् हो, कुछ न कुछ शुभ कार्य करता रहे।

(१२) कुशल--बहुत कष्ट से उपार्जित द्रव्य का स्वामी हो, अनादर हो, उसका धन स्थिर न रहे, अपना धन उचित कार्य में खर्च करे। अपनी अन्त की दशा में कुछ निश्चय पूर्वक स्वर्ग प्राप्त हो, वह उजड्ड, अविचारणीय, चञ्चल चित्त का हो।

(१४८) अब आदि १२ योग—

यदि १२ भावों के स्वामी लग्न से विचारने पर लग्न के आगे ६,८,१२वें घर में हों या यदि भाव पाप युक्त या पाप दृष्ट हो तो लग्न से १२ भाव तक विचारने से १२ योग बनते हैं—

१—अब योग, २--निःस्व, ३--मृति, ४—कुहू, ५--पामर, ६--हर्ष, ७--दुष्कृति, ८—सरल, ९—निर्भाग्य, १०--दुर्योग, ११–दरिद्र योग, १२–विमल योग।

फल—

(१) अब योग—अप्रसिद्ध हो, अतिदरिद्री, अल्पजीवी, दुष्ट लोग उसे तुच्छ दृष्टि से देखें, दुष्ट आचरण, कुरूप, स्वतः डमाडोल स्थित।

(२) निःस्व योग--सुवचन शून्य हो, वन्ध्या स्त्री मिले, बुरे साथियों के बोच रहे, बुरे दांत, आँख हों, बुद्धि से हीन, अल्प संतान, विद्या रहित, शक्ति रहित, उसके शत्रु उसका धन लूट लेवें।

(३) मृति योग--शत्रु उसे जीत लेवें, भाइयों से रहित, लज्जा रहित, धन और शक्ति हीन, श्रम से जो अनुचित कार्यों के करने से उत्पन्न हो, थका हुआ, उत्तेजित मनोवृत्ति का हो।

(४) कुहू--मातृ, वाहन, मित्र, सुख, भूषण, बंधु इनसे रहित, स्थिति शून्य, पूर्व प्राप्त स्थान भी खो देवे, नीच स्त्री से प्रेम।

(५) पामर--दुःखी जीवन, अविचारणीय, झूठ बोलने वाला, वंचक, (दगाबाज) संतान हानि हो, या संतान ही न हो, नीच जनों का प्रयोग करे, नास्तिक, अधिक खान-पान करने वाला।

(६) हर्ष योग--सुख, भोग, भाग्य, दृढ़ अंग युक्त, शत्रुओं से जीते, पाप कर्म से डरे, उसका मित्र हो वह प्रसिद्ध मुखिया हो, द्युति मित्र, कीर्ति, और संतान प्राप्त हो।

(७) दुष्कृति योग--स्त्री की हानि हो, पर स्त्री रत, विना विचारे, आवारा विचरता रहे, प्रमेह आदि गुह्य रोग हों, राज से पीड़ा, बंधुजनों से परित्यक्त उसके कारण दुःख भोगे।

(८) सरल याग--दीर्घायु, दृढ़ मति, निर्भय, श्रीमान्, विद्या सुत धन युक्त, आरंभ में ही व्यापार में सफलता प्राप्त करे, शत्रुओं को दमन करे, निर्मल ख्याति हो।

(९) निर्भाग्य योग--अपनी पैत्रिकी सम्पत्ति जमीन आदि सब नष्ट करे, साधु और गुरुजनों का निंदक, अधार्मिक, पुराने और पहिने हुए कपड़े पहिने, अभागा, बहुत दुःख का पात्र हो।

(१०) दुर्योग--कोई कार्य अपने शरीर की महानता से करे तो असफलता हो, मनुष्यों की दृष्टि में लघु, दूसरों का द्रोही, अति स्वार्थी, केवल अपने पेट के पालन की चिन्ता करे, अपने घर से सदा गैर हाजिर रहे, और बाहर देशों में रहे।

(११) दरिद्र योग--कर्ज से लदा, क्रूर, दरिद्र शरोमणि, कर्ण रोगी, सौभ्रात्र हीन, (अच्छे भाई से रहित) पाप या अपराध के कार्य में चित्त, चालाकी से बात करे, दूसरों से नीचता का व्योहार करे।

(१२) विमल योग--कम खर्च करे अधिक बचावे, प्रत्येक के साथ अच्छा सुखी, स्वतन्त्र और आदर का पात्र, अपने अच्छे गुणों के कारण प्रसिद्ध।

दुर्योग पर विचार--यदि ६,८ या १२ घर के स्वामी वली होकर केन्द्र या कोण में हों और १,१०,४ और ९ वें घर का स्वामी बल हीन हो या अस्त हो और ६,८, १२ वें घर में हो तब अशुभ फल होता है।

परन्तु उपरोक्त के विपरीत स्थिति हो अर्थात् ६,८,१२ वें घर का स्वामी बलवान् होकर केन्द्र या कोण में न हो और १,४,९ या १० वें घर का स्वामी ६,८,१२ वें घर में न हो और वली हो और अस्तंगत न हो तो शुभ फल होगा--वह भाग्यवान् होगा, धनवान्, गुणी राजा, सुखी और धार्मिक हो।

पंच महापुरुष योग—

सूर्य और चन्द्र को छोड़कर शेष ५ ग्रह स्वगृही या उच्च के होकर केन्द्र में पड़ तो ५ प्रकार के पञ्च महापुरुष योग होते हैं। यदि सूर्य या चन्द्र के साथ ये योग पड़े तो फल घट जाता है। अर्थात् सूर्य चन्द्रमा सहित मंगल आदि कोई ग्रह उक्त प्रकार से हो तो राजा नहीं करते केवल अपनी दशा में शुभ फल देते हैं।

कुछ का मत है कि लग्न से केन्द्र का इन योगों में विचार होता है चन्द्रमा से भी केन्द्र में इन योगों का विचार करना।

(१) रुचक योग--मंगल स्वगृही या उच्च का होकर केन्द्र में हो।

(२) भद्र योग--बुध स्वगृ ही या उच्च का होकर केन्द्र में हो।

(३) हंस योग--गुरु स्वगृही या उच्च का होकर केन्द्र में हो।

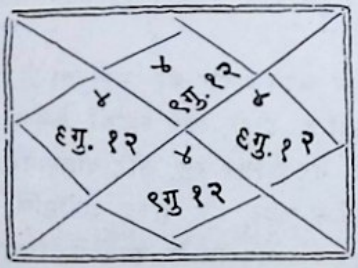

(४) मालव्य--शुक्र स्वगृही या उच्च का होकर केन्द्र में हो।

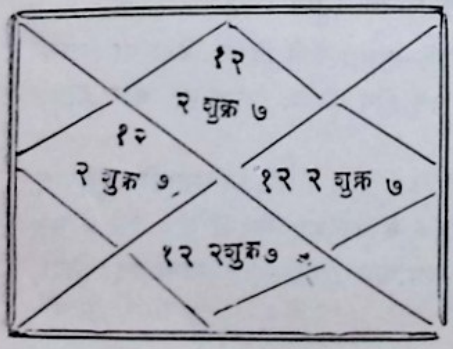

(५) शशक योग--शनि स्वगृही या उच्च का होकर केन्द्र में हो।

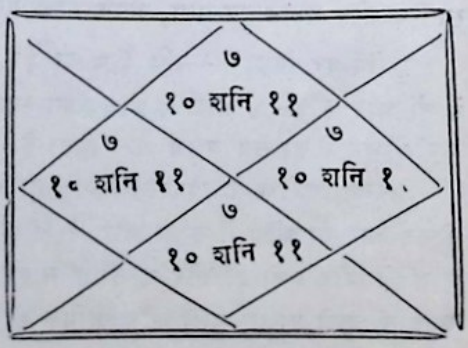

अन्य मत से स्वगृही, उच्च के अतिरिक्त मूल त्रिकोण का भी विचार करना।

पाँचों योगों का फल संक्षिप्त में

जिसके १, २, ३, ४ या पाँचों योग हों उसका फल।

(१) जिसके उपरोक्त १ ही योग हो–भाग्यवान् हो। (२) इनमें २ योग हों तो–राजा तुल्य हो। (३) तीन योग हों तो–राजा हो। (४) चार योग हों तो–राजेश्वर हो। (५) जिसके पाँचों उपरोक्त योग हों तो राजेश्वर से भी श्रेष्ठ हो।

पंचमहापुरुष योग का फल

(१) रुचक योग—मुँह लम्बा, परम उत्साही, निर्मल कांति, बलवान्, सुन्दर भ्रकुटी, कृष्ण केश, सब वस्तुओं में रुचि, संग्राम प्रिय, रक्तश्याम वर्ण, शत्रु को जीतने वाला, विवेकी, चोरों का पोषक (सरदार) क्रूर स्वभाव, दुर्बल जंघा, ब्राह्मणों का भक्त, हाथ में वीणा, वज्र, धनुष, पाश, वृष चिह्न और चक्र रेखा से युक्त, गुप्त विचार तथा अभिचार (मारण मोहन आदि) में चतुर, लम्बाई में १०० अंगुल, मुख को लम्बाई में, तुल्य कटि प्रदेश वाला, तौल में एक हजार तुला तुल्य, विन्ध्य और सह्यांचल प्रदेश का शासक होकर ७० वर्ष की आयु, शस्त्र या अग्नि के आघात से स्वर्ग जाता है। (वृ० पा०)। दीर्घायु, स्वच्छ कांति, रुधिर और बल से पूर्ण, साहसी, प्रत्येक कार्य में सफलता, उत्तम भृकुटी, नील केश, सम हाथ, पैर, मंत्रज्ञ, कीर्ति पवित्र, अरुणता युक्त श्याम वर्ण, शूरवीर शत्रुनाशक, शंख समान कंठ, बड़ा पराक्रमी, क्रूर स्नेही, ब्राह्मण गुरु से विनय युक्त घुटना पिंडली जंघा से दुबला, जिसके हाथ पैर में खट्वांग, पाश, वृष, धनुष, शर, चक्र, वीणा विद्या इनके चिह्न होते हैं, सीधी अंगुली वाला, सलाह लेने में कुशल, अकेला ही हजारों के तुल्य, मध्यम कटि, सह्य, विंध्य पर्वत उज्जयनी देश का राजा, आयु ७० वर्ष के लगभग शस्त्र और अग्नि से चिह्नित, देव मंदिर के समीप देह त्याग करने वाला (मान०)।

(२) भद्र योग—सिंह समान प्रतिभावान्, उच्च वक्षःस्थल, हाथी सदृश गमन, स्थूल और लम्बी भुजा, पंडित, चतुरस्त्र योग क्रिया जानने वाला, सत्व गुणी, सुन्दर पैर, सुन्दर दाढ़ी मूछ, भोगी, शंख, चक्र, गदा शर हाथी ध्वजा हल, इन रेखाओं से चिह्नित हाथ और पैर वाला सुन्दर नासिका, शास्त्र ज्ञाता, काले और धुँघराले केश, सब कार्यों में स्वतंत्र, अपने परिवार को पालने वाला, मित्रादि जन भी उसके धन का उपयोग करते हैं। वह तौल में पूर्ण और २० तुला होता है। स्त्री पुत्रादि से युक्त सकुशल, वह मध्य-देश का पालक होकर १०० वर्ष जीता है (वृ० पा०)।

तौल का अनुमान—वर्तमान रुपया–१ कर्ष। ४ कर्ष=१ पल।

३०० पल=१ तुला, २० तुला=१ भार।

१२०० तोला=१ तुला (१५ सेर) (वृ० पा०)।

सिंह समान चेहरे वाला, मत्त हाथी की चाल, पुष्ट उन्नत वक्षस्थल, सुन्दर मोटी

सुडौल भुजा, कामी, ऊँचा, कोमल, सूक्ष्म रोमों से युक्त कपोल, विद्वान्, कमल से कोमल हाथ पैर, सत्वाधिक्य युक्त, योग मार्ग का ज्ञाता हाथ पैर में शंख, खड्ग, हस्ती, गदा, पुष्प वाण ध्वजा चक्र कमल हल आदि के चिह्न यात्रा मार्ग में मत्त हाथियों के जल से भूमि गीली करने वाला, उत्तम केशर के समान गध युक्त अङ्ग वाला, मनोहर शब्द युक्त, उत्तम दोनों भौंह, अति बुद्धिमान, शास्त्र का जानने वाला मान और भाग्य से युक्त जिसके रहस्य कार्य छिपे हुए हों, उत्तम जिसका पेट, धर्म मार्ग में निरत, उत्तम ललाट से युक्त, बड़ा धीर, काले घुंघराले केश। काम करने में स्वतंत्र, स्वजनों पर भी क्षमा न करने वाला और उसके विभव को दूसरे ही अर्थिजन भोगते हैं, प्रयत्न से तुला में सोने चाँदी के भार को तौलने वाला अथवा रुपया मोहरों को गिन्ती की तो कहे कौन तराजू से भी तौलने से बड़ी कठिनाई से आवे जिसके लाखों मन सोना चाँदी यों ही पड़ा रहे। स्त्री पुरुषों के सुख से युक्त ८० वर्ष तक कान्यकुब्ज देश का राज्य भोगने वाला (मान०)।

(३) हंस योग—हंस के समान शब्द, सुन्दर मुख, उन्नत नासिका, कफ प्रकृति, मधु समान पिंगल वर्ण नेत्र, लाल नख, तीक्ष्ण बुद्धि, पुष्ट कपोल, गोल मस्तक, सुन्दर पैर वाला राजा होता है। उसके हाथ पैर में मत्स्य, अंकुश, धनुष, शंख कमल, खाटया, सदृश रेखाओं के चिह्न होते हैं। कामी होता है स्त्रियों से तृप्ति नहीं होती, लम्बाई में ६,६ अंगुल, जल क्रीड़ा का प्रेमी, सुख पूर्वक गङ्गा और यमुना के मध्यवर्ती देश का पालक होकर १०० वर्ष तक जीवित रह कर वन में शरीर त्याग करता है (वृ० पा०)।

अरुण मुख, उन्नत नासिका, सुन्दर चरण, सुन्दर अङ्ग, गौरांग, पुष्ट कपाल, रक्त नख, हंस कैसा शब्द, श्लेष्म प्रकृति, शंख, कमल, अंकुश, मत्स्य, माला युग्म, खट्वांग घट इन चिह्नों से युक्त पांव, मधुर नेत्र, गोल सिर, जलाशयों में प्रीति, अति कामी, स्त्रियों से कभी तृप्ति न हो ६० अंगुल ऊँची देह ६० वर्ष की आयु (मान०)।

(४) मालव्य याग—सुन्दर ओंठ, कृश कटि, चन्द्र के समान सुन्दर कांति, शरीर में सुगन्ध वाला, सामान्य रक्त वर्ण मझोला कद, सुंदर और स्वच्छ दांत हाथी के समान स्वर, घुटने तक लम्बी बाहु वाला, मुख लम्बाई में १३ और विस्तार में १० अंगुल ७० वर्ष तक सिंधु और मालव देशों में सुख पूर्वक पालन करके स्वर्ग जाता है (वृ० पा०)।

पतले ओंठ, समान अङ्ग, पतली कमर, लाल अंग, संधि रहित, चन्द्र समान कांति, हस्ति समान लम्बी नाक, सुन्दर कपोल, उत्तम नेत्र, संग्राम में विख्यात पराक्रम, आजानु बाहु, ७० वर्ष तक राज्य करने वाला, १३ अंगुल लम्बा मुँह, दोनों कान का अन्तराल १० अंगुल चौड़ा। अपने श्रेष्ठ पुत्र के साथ लाट नामक देश, मालव देश, सिंध नाम देश, पारियात्र पर्वत पर्यंत राज्य भोगने वाला (मान०)।

(५) शशक योग—छोटे-छोटे दांत और छोटा मुख किन्तु शरीर छोटा नहीं होता,

शूरवीर पतली कमर, सुन्दर जांघ, बुद्धिमान, वन और पर्वत पर विहार करने वाला, शत्रुओं के छिद्र को जानने वाला सेना नायक, कुछ ऊँचे दांत वाला, चंचल, धातु वादी, स्त्रियों में आसक्त, दूसरे का धन पाने वाला, हाथ पैर में माला, वीणा मृदंग और शस्त्र के समान रेखा के चिह्न। पृथ्वी के अनेक भाग में ७० वर्ष तक सुख पूर्वक राज्य करके अंत मे स्वर्ग को जाता है (वृ० पा०)।

छोटे दांत और मुख, चिर काल तक किसी पहाड़ पर घूमने वाला, क्रोधी, शठ, शूरवीर, निर्जन वन में घूमने वाला वन पर्वत आदि स्थानों के तथा नदी तट पर रहने में प्रीति, अतिथि जनों मे प्यार रखने वाला, सर्वत्र प्रसिद्ध, न अति लघु, न अति लम्बा हो, अनेक प्रकार की सेना रखने वाला, उन्नत दंत, धातु वाद में कुछ चतुर चंचल नेत्र, स्त्रियों में आसक्त, दूसरों का धन हरने वाला, मातृ भक्त, उत्तम जांघ, पतली कमर उत्तम बुद्धि, पर छिद्र देखने वाला, हाथ पांव में पलंग, शंख, शस्त्र मृदंग माला वीणा आदि रेखा हों। ७० वर्ष तक राज्य करने वाला यह शशक नाम का राजा होता है।

प्रव्रज्या (संन्यास या फकीरी योग)

प्रवज्या योग--जिस योग के होने से जातक घर छोड़ कर दूसरे सम्प्रदाय में चला जाता है ग्रह योग के अनुसार नाना प्रकार के साधू, भिक्षुक, संन्यासी आदि हो जाते हैं इस योग के प्रभाव से राजवंशी भी घरद्वार छोड़ कर वन वासी वन जाता है।

प्रवज्या योग--एक राशि में ४ या अधिक ग्रह एकत्र होने से यह प्रवज्या योग हो जाता है।

एक राशि का आशय--सब ग्रह समीप २ हों उन में कुछ ही अंशों का अन्तर हो। जैसे वृष राशि के १ अंशपर कोई ग्रह है दूसरा ग्रह वृष के २९ अंश पर है। इनमें अंशों का बहुत अन्तर पड़ जायगा। ग्रह चाहे दूसरी राशि में भी हो परन्तु बहुत अल्प अन्तर हो तो भी इस योग का प्रभाव होगा। जैसे कोई ग्रह वृष के २९॥ अंश पर है दूसरा ग्रह मिथुन के १ अंश पर है। यहाँ दोनों ग्रह समीप २ है अल्प अन्तर है यहाँ दूसरे भाव में भी ग्रह होने पर भी सामीप्य के कारण योग होगा। इस प्रकार ४ ग्रह अल्प अन्तर से समीप हो तो यह प्रव्रज्या योग हो जाता है।

कौन ग्रह क्या प्रवज्या करते हैं

१--सूर्य अधिक बली हो तो--तपस्वी दूध कंद मूल फल खाकर जो तप करे (वृ० जा०)। वानप्रस्थ तपस्वी जो वन पर्वतों में रहता है (जा० पारि०)। साधुओं का स्वामी या मुखिया जिसने दीक्षा ली हो ऐसा योगी (फल०)। वैखानस सन्यासी, तपस्वी अग्नि होत्र करने वाला वन पर्वतों में नदी किनारे आश्रम बनाकर तपस्या करने वाला, सूर्य का आराधक (जा० भ०)।

२--बलवान् चन्द्र--कपाली--(संन्यासी हिंसा से रहित भस्म से सफेद देह, कपालों

को धारण करने वाला शिव जी की दीक्षा वाला। सोम सिद्धान्त में तत्पर कपालो है (जा० भ०)। कापालिक व शैव व कनफड़ा (वृ० जा०)। तीर्थ आदि में भटकते फिरने वाला यात्री (फल०)। गुरु (राजश्रीयुक्त तपस्वी) (जा० पारि०)।

३—बलवान मंगल—लिंगी सन्यासी, गेरुआ वस्त्र धारण करने वाला अपनी बुद्धि से देवताओं की उपासना करने वाला, शिखा रहित, पांडु वस्त्र पहिरने वाला, भीख माँगने वाला, लाल कपड़ा पहिरने वाला, इन्द्रियों को जीतने वाला संन्यासो होता है (जा० भ०) बौद्ध धर्म का साधू बनेगा और बुरा सलाहकार बनायेगा (फल०)। शाक्य (दुराचार-वान्, कुशील, वंचक) साधू (जा० पारि०)।

४—बलवान् बुध—दंडी संन्यासी (कपट करने वाला, गारुड़ी मन्त्र का आराधक मयूर तंत्र के मत में स्थित, मांस खाने वाला दंडी कहलाता है) (जा० भ०)। साधु जो भिन्न २ मत के विषय में कुछ नहीं जानता (फल०)। जीवक (उदर पूर्ति करने वाला, भोजन में तत्पर, बहुत बोलने वाला) साधु (जा० पारि०)। एक डंडी और यती (वृ० जा०)।

५—बलवान् गुरु—यती, तपस्वी, एक दंड या ३ दंड का धारण करने वाला, गेरुवा कपड़े पहिरने वाला, वानप्रस्थ धर्म सहित, ब्रह्मचर्य को प्राप्त तीर्थों में स्नान करने वाला (जा० भ०)। वेदान्ती तत्ववेत्ता प्रसिद्ध साधु (फल०)। आजीविक वैष्णव (वृ० जा०)। भिक्षु (एक दंडी निरन्तर उपनिषद् का तत्वज्ञ महात्मा)।

६—बलवान् शुक्र—चक्र का धारण करने वाला पशुपति पक्ष की दीक्षा में स्थित, सदा व्रत करने वाला (जा० भ०)। रोगी साधु बनेगा जो जोविका के लिये साधुवेश धारण करता है जाति वहिष्कृत (फल०)। चक्रांकित (वृ० जा०)। चरक (नाना देश प्रवासी श्रेष्ठ यति) (जा० पारि०)।

७—बली शनि—नंगा सन्यासी, पाखंड व्रत में स्थित, नग्न व्रत धारण करने वाला श्रावक मत में स्थित कठिन तपस्या करने वाला (जा० भ०)। जाति से वहिष्कृत साधु (फल०)। विवास (सदा नंगा रहने वाला, विना वस्त्र के रहे)।

१—एक स्थान में ४ बली ग्रह-नित्य वनवास करने वाला होता है चाहे वह राज वंशी क्यों न हो।

एक स्थान में ५ बली ग्रह—नित्य कंदमूल खाने वाला अति शान्त स्वभाव जितेन्द्रिय हो।

एक स्थान में ६ बली ग्रह-राज कुल का भी हो तो भी नित्य पर्वत में शिला तल पर वास कर तपस्या करने वाला होता है।

२—सन्यास योग में राहु युक्त हो या क्रूरांशक में गुलिक युक्त हो तो सन्यास में विफलता होवे। अर्थात् सन्यास त्याग दे।

३--प्रवज्या कारक ग्रहों में २,३ ग्रह बली हों तो पहिले एक प्रकार की फकीरी लेगा फिर दूसरे प्रकार की, पश्चात् तीसरे प्रकार की। प्रथम जिस ग्रह की अंतर्दशा होगी तब उस ग्रह के अनुसार प्रवज्या होगी दूसरे की अंतर्दशा आने पर पहिली दीक्षा त्याग कर वर्तमान ग्रह की दीक्षा लेगा। इसी प्रकार ग्रहों के प्रभाव से एक छोड़ कर दूसरी ग्रहण करता रहेगा।

४--प्रवज्या कारक बली ग्रह अस्तंगत हो तो अदीक्षित अर्थात् बिना गुरु मंत्रोपदेश के संन्यास या फकीरी लेगा परन्तु उस सम्प्रदाय में उसको भक्ति या प्रेम होगा। या मुँह से कहे या विचार करे कि में दीक्षा लूंगा परन्तु उसमें प्रेम होते हुए भी दीक्षा न लेवे यदि ग्रह निर्बल हो (उच्चादि बलहीन हो) और सूर्य के साथ अस्त हो तो सूर्य जन्य प्रवज्या होगी अर्थात् वह तपस्वी होगा।

५—युद्ध में पराजित ग्रह को-मंगल आदि ग्रहों में एक ही अंश पर ग्रह रहने से ग्रह युद्ध समझा जाता है। इसमें शुक्र उत्तर या दक्षिण में हो दोनों में विजयी समझा जाता है अन्य ४ ग्रह बुध गुरु मंगल और शनि में जो उत्तर में रहता है वह जयी समझा जाता है और दक्षिण वाला पराजित समझा जाता है इस प्रकार जो ग्रह युद्ध में पराजित हो उसकी प्रवज्या में जातक उस प्रवज्या को ग्रहण कर छोड़ देता है। यदि न पराजित हुआ हो तो बलीग्रह की अंतर्दशा में दीक्षा पावे।

६--राजयोग प्रवज्या योग दोनों बलवान् हों तो वह विरुद्ध फल योग पर साधु होकर भी राजा हो।

७--फर्क ग्रहों में जिसका बल अधिक होगा उसकी दीक्षा पहिले होगी पश्चात् दूसरों की होगो।

८--यदि ग्रह बलवान् हो तो उसकी दीक्षा मरने तक रहे।

यदि ग्रह निर्बल हो तो उसकी दीक्षा लेकर छोड़ देवे।

सब ग्रह बली हों-तो नित्य भोजन त्याग कर नंगा रह कर योग मार्ग में तत्पर हो।

९--एक स्थान में ५,६ ग्रह हों तो वह दरिद्री और मूर्ख भी होता है।

१०--अन्यमत है कि प्रवज्या कारक ग्रहों में दशमेश भी होवे, दशमेश के वर्ग का साधु होगा।

अन्य प्रकार से प्रवज्या योग

१—जन्म समय चन्द्रमा जिस राशि पर रहता है उसका स्वामी जन्मेश कहलाता है। जन्म समय जन्मेश पर किसी ग्रह की दृष्टि न हो और चन्द्रमा शनि को देखे तो प्रवज्या योग होता है इसमें भी शनि चन्द्र में से जो बली हो उसकी अंतर्दशा में प्रवज्या होगी (वृ० जा०)।

२—जन्मेश निर्बल हो उस पर बलवान् शनि की दृष्टि हो (वृ० जा०)।

३—शनि चन्द्र के द्रेष्काण में हो या शनि व मंगल के नवांश में हो केवल शनि की दृष्टि हो और कोई ग्रह की दृष्टि न हो तो शनि युक्त प्रवज्या होगी (वृ० जा०)।

४—चन्द्र निर्बल हो उस पर पाप ग्रह की दृष्टि हो विशेष कर शनि की पूर्ण दृष्टि हो तो भाग्य हीन हो (वृ० जा०)।

५—गुरु नवम स्थान में हो, गुरु चन्द्र और लग्न इन तीनों को शनि देखता हो। इसमें यदि पूर्व कथित राजयोग का लक्षण भी हो तो भी जातक राजा होकर तीर्थंकर हो अर्थात् बुध आदि के समान स्वयं सम्प्रदाय चलाने वाला हो या शास्त्र कहने वाला होगा (वृ० जा०)।

६—शनि नवम हो और उसे कोई ग्रह न देखे। यदि उसे राजयोग भी पड़ा हो तो वह राजा होने पर भी फकीरी दीक्षा पायगा, ऐसे योग में कोई राजयोग न हो तो इस प्रवज्या का फल होगा (वृ० जा०)।

७—६, १२ या ४ राशि लग्न में हो, उसपर शनि की दृष्टि हो और गुरु नवम स्थान में हो तो अपना राज्य छोड़कर देश-देशान्तर घूमे भ्रमिष्ट हो। (प्रा० यो०)।

८—लग्नेश या केवल शनि की दृष्टि हो अन्य की दृष्टि न हो या शनि को लग्नेश देखे लग्नेश को शनि देखे बलरहित हो तो प्रव्रज्या योग हो। (स० चि०)।

९—चन्द्रमा शनि के द्रेष्काण में हो उसपर शनि की दृष्टि हो। (स० चि०)

१०—चन्द्रमा यह शनि के व मंगल के अंशक में हो शनि से दृष्ट हो या चन्द्रमा शनि सहित हो तो संन्यास योग हो। (स० चि०)

११—लग्नेश पर और ग्रहों की दृष्टि न हो, लग्नेश की दृष्टि शनि पर न हो और शनि भी बलहीन लग्नेश को न देखे तो दीक्षा लेकर संन्यासी होता है। (जा. भ.)

१२—लग्नेश शनि के द्रेष्काण में हो, मंगल व शनि के नवांश में हो उसपर शनि की दृष्टि हो तो वह कुटिल दुष्ट शील पाखंड का मंडन करनेवाला तपस्वी होता है। (जा. भ.)।

१३—नवम पंचम भाव में शुभ ग्रह हो और कोई यह न देखता हो तो संन्यासी हो। (जा. भ.)

१४—चन्द्रमा शनि के द्रेष्काण में हो उसपर मंगल और शनि की दृष्टि हो तो वह साधु हो। (फल.)

१५—चन्द्रमा मंगल के नवांश में हो अर्थात् नवांश स्वामी मंगल हो और शनि की दृष्टि हो तो मंगल से जो वर्ग प्रगट हो उसी वर्ग का साधु हो। (फल.)

१६—जन्म राशीश पर किसी ग्रह की दृष्टि न हो केवल शनि की दृष्टि हो तो वह साधु हो। (फल.)

१७—दशम में बलवान् ३ यह स्वोच्चादि वर्ग स्थित हों दशमेश अधिक बली हो तो वह यती या उसके समान शीलवाला हो।

१८—दशमेश बलहीन सप्तम में हो तो वह दुराचारी हो।

१९—प्रव्रज्या कारक ग्रहों के बीच द्वितीयेश और सप्तमेश हो तो वह काम बुद्धि होता है। (जा. पारि.)

२०—प्रवज्या प्रद ग्रह सूर्य शनि मंगल से युक्त हो तो धन पुत्र स्त्री से रहित सन्यासी हो।

२१—शुभ नवांश में सूर्य हो और वह उच्च के अंत भाग में स्थित ग्रह को देखता हो तो वह युवा या बालावस्था में सन्यासी हो। (जा. पारि.)

३२—शुक्र और बुध बलहीन होकर लग्न को देखें तो दरिद्र हो। (जा. पारि.)

(२३) कोई ग्रह उच्च राश्यंश में युक्त होकर चन्द्र को देखता हो तो भिक्षुक (सन्यासी) हो।

(२४) बहुत ग्रह एक स्थान में होकर लग्न को देखें तो दीक्षित हो।

(२५) जहाँ चन्द्र हो उस राशि के स्वामी को शनि या लग्नेश देखते हों तो दीक्षित हो (प्रवज्या हों)।

(२६) यदि चन्द्रमा मंगल की राशि में हो शनि के द्रेष्काण में हो शनि उसे देखता हो तो सन्यासी हो।

(२७) नवम भाव में चन्द्र हो उसे कोई ग्रह न देखता हो तो राजयोग में उत्पन्न होने पर भी दीक्षित राजा हो (जा० पारि०)।

अन्य विचार

(२८) एक राशि में इस प्रकार ग्रह हो।

सूर्य चन्द्र गुरु बुध
या मंगल, बुध, शुक्र शनि
या चन्द्र गुरु शुक्र शनि

तो वल्कल धारी फल भोजी सन्यासी हो।

(२९) चन्द्र क्षीण हो प्रवज्या योग हो लग्नेश चन्द्र को देखे तो जातक दुःखी तपस्वी, शोक तप्त, धन जन रहित, कष्ट से भोजन पाने वाला हो।

(३०) प्रवज्या योग में राजयोग होवे तो बुरा प्रभाव घट जायगा वह दीक्षित साधु शील राजा बना रहेगा जिसे सब नमन करेंगे।

(३१) यदि ४ ग्रह जिसमें एक दशमेश भी हो केन्द्र या त्रिकोण में हो या ३ बलवान् ग्रह अच्छे घर में पड़ें हो तो वह सिद्ध सन्यासी होगा।

(३२) प्रवज्या कारक ग्रहों में अधिक शुभ ग्रह हों और अच्छे घर में हों तो उसका सब लोग मान करेंगे। यदि ऐसा न हो तो उसका कोई मान न करेंगे।

(३३) जब दशमेश ४ और ग्रहों के साथ केन्द्र या त्रिकोण में हो तो वह मुक्ति प्राप्त करेगा।

(३४) यदि राशि का अंत उदय हो रहा हो और उसका स्वामी शुभ ग्रह हो गुरु केन्द्र या त्रिकोण में हो तो भी मुक्ति प्राप्त करेगा।

(३५) प्रवज्या योगों में शुभ ग्रहों से युक्त या दृष्ट न हो तो संन्यास लेने पर भी भंग हो जावे।

(३६) प्रवज्या योग में ग्रह युद्ध में पराजित ग्रह की भी प्रवज्या भंग हो जायगी अर्थात् वह फकीरी लेकर उसे छोड़ देगा। जितने ग्रह पराजित हैं उन सब की प्रवज्या छूटते जायगी केवल जीते हुए की प्रवज्या रहेगी।

———

MOTILAL BANARSIDASS PUBLISHERS
DELHI